AMARSINHA'S

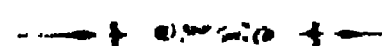
AMARKOSH

OR

NAM-LINGANUSHASHAN KOSH

WITH

COMMENTARIES AND NOTES IN HINDI.



BY

PANDIT SHAKTIDHAR SHASTRY.

WITH THE PERMISSION OF

THE LATE HON'BLE M. PRAYAG NARAYAN BHARGAVA.
Late Proprietor of the N. K. Press, Lucknow.

FIRST EDITION.

LUCKNOW :
PRINTED AND PUBLISHED BY K D SETH, AT THE NEWUL KISHORE PRESS.

1919.

Price Rs. 3.

॥ श्रीः ॥

अमरकोषः

अर्थात्

नामलिङ्गानुशासनंनामकोषः

श्रीमदमरसिंहविरचितः

भाषाव्याख्योपेतः ।



स्वर्गीय आनरेबुल धर्मपरायण मुंशी प्रयागनारायण रायबहादुराज्ञया शुक्लोपाह्वपण्डितशक्तिधरशास्त्रिकृतया रसालाख्यया व्याख्यया समलंकृतः टिप्पण्यादिपुरस्कृतः संशोधितश्च

सच

प्रथमावृत्तौ

लक्ष्मणपुरे

मुंशी नवलकिशोर (सी. आई. ई.,) इत्यस्य मुद्रणालये मुद्रितः प्रकाशितश्च ।

संवत् १९७५ वैक्रमीयः

विज्ञापन ।

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥ १ ॥

अहो प्रियपाठको ! चलते हुए पुरुष का प्रमादवश कहीं न कहीं पैर फिसलही जाता है परन्तु वहां दुर्जनलोग परिहास करते और सज्जनलोग समाधान करते हैं—इसलिये इस व्याख्या में जहां कहीं प्रमाद पाया जावे वहां विद्वान् लोग क्षमा प्रदान करेंगे ।

यह रसाला व्याख्यासमलंकृत अमरकोप की पुस्तक सर्वसज्जन महोदय गणों के करकमलों में समर्पण कर आशा की जाती है कि अवश्यही इसको अङ्गीकार कर मेरे श्रमको सफल करेंगे—और यदि समस्त विद्यार्थीगण इसे खरीदकर पठन-पाठन आदि अभ्यास करेंगे तो परमबोधको पावेंगे । इसलिये ग्राहकगण अवश्यही खरीद करें, उनको विलम्ब नहीं करना चाहिये ।

सर्वशुभाभिलाषी—शुक्लोपाह्वः

पण्डित शक्तिधरशर्मा शास्त्री

नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ.

ॐ परमात्मने नमः ।

अथ प्रस्तावना ।

अहो प्रियपाठक ! यह नामलिङ्गानुशासन कोष, अमरसिंह ने निर्माण किया है, क्योंकि "इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने"—यह प्रत्येक काण्ड की समाप्ति में आपही ने लिखा है । परन्तु यह अमरसिंह कब हुआ था इस प्रश्न के उत्तर में ग्यारह सौ खिस्ताब्दी के पहलेही हुआ था—ऐसा निर्णय कर कहा जाता है क्योंकि उक्तमिताब्दकाल में मम्मटने काव्यप्रकाश के सातवें उल्लास ३२८ पृष्ठ में "दैवतानि पुंसि वा" इस अमरकोष के प्रतीकको स्थापित किया है और कितेक आचार्यों ने यह अमरसिंह विक्रमादित्य के समय में हुआ था ऐसा कहा है । और भानुदीक्षितकृत व्याख्या में भी यह निश्चय किया गया है कि "यह अमरसिंह कब हुआ, कौन जाति वाला था, इसने किस महीमण्डल को मण्डित किया ?" यह निश्चय नहीं होता है; परन्तु "अमरानिर्जरादेवास्त्रिदशाविबुधाः सुराः" इत्यादि से देवसामान्य नामोंको कहकर देवविशेष नामों के आरम्भ में "सर्वज्ञः सुगतः बुद्धो धर्मराजस्तथागतः । समन्तभद्रो भगवान् मारजिल्लोकजिज्जिनः" इत्यादि बुद्धनामों के लिखने से बौद्धही जाना जाता है । और कितेक आचार्यों ने ऐसा भी कहा है कि

> धन्वन्तरिःक्षपणकोऽमरसिंहशंकू
> वेतालभट्टघटखर्परकालिदासाः ।
> ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां
> रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य ॥ १ ॥

धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि ये महाराजा विक्रमादित्य की सभा में नवरत्न गिने जाते थे ।

इस वैक्रम नवरत्नख्यापक श्लोक से विक्रमादित्य के समय में ही अमरसिंहनामक पण्डितवर विख्यात हुआ है, एवं पर आचार्योंने "इन्द्रश्चन्द्रः काशकृत्स्नाऽऽपिशलीशाकटायनः । पाणिन्यमरजैनेन्द्रा जयन्त्यष्टौ च शाब्दि-

का:" (इन्द्र, चन्द्र, काशकृत्स्न, आपिशली, शाकटायन, पाणिनि, अमर और जैनेन्द्र ये आठ वैयाकरण हैं वे जय करैं) इस पद्यानुरोधसे पाणिनि और समन्तभद्र के अन्तरालवर्ती बतलाया है। यहां पर यह जानना चाहिये कि यह क्रमबोधक नहीं है, क्योंकि पाणिनि और महाभाष्यप्रवृत्तिसमकालिक चन्द्रव्याकरणकर्ता चन्द्राचार्य का उल्लेख पाणिनि से पहलेही पाया जाता है। और इस अमरसिंह का वैयाकरणत्वभी संसूचित होता है कि "अमरसिंहोहि पापीयान्सर्वं भाष्यमचूचुरत्" इस पद्यसे समग्र महाभाष्यतत्त्वज्ञाता की ही प्रतीति होती है।

बौद्ध होनेसेही अमरसिंहने नानार्थवर्ग में "धर्मराजौ जिनयमौ" इस पद्य में जिन शब्द का पूर्वनिपात से निर्देश किया है कि 'जिनयमौ' यहां "तापसपर्वतौ" की समान "अल्पाच्तरम्" (२–२–३४) इस सूत्र की अप्राप्ति से "अभ्यर्हितं च"—इस वार्तिकसेही जिन शब्द का पूर्वनिपात किया है।

यदि कहा जावे कि, यह अमरसिंह बौद्ध नहीं है वरन वेदानुसारीही माना जावे तो वैदिकमत में जिनकी अपेक्षा से यमही का अभ्यर्हितत्व हो सक्ता है, इसलिये छन्दोभङ्ग आदि की भय से 'यमजिनौ' ऐसाही कहना चाहिये। इसके बौद्ध होने में भी बहुत से प्राचीन अमरकोषटीका ग्रन्थ अनुकूलता को प्रकाशित करते हैं।

यद्यपि कोषों की परिगणना के अवसर में किसी कविने "अमरोऽयं सनातनः" (यह अमर सनातन ग्रन्थ है) ऐसा कहा है, जैसे—

"मेदिन्यमरमाला च त्रिकाण्डो रत्नमालिका।
रन्तिदेवो भागुरिश्च व्याडिः शब्दार्णवस्तथा॥
द्विरूपश्च कलिङ्गश्च रभसः पुरुषोत्तमः।
दुर्गोऽभिधानमाला च संसारावर्तशाश्वतौ॥
विश्वो बोपालितश्चैव वाचस्पतिर्हलायुधौ।
हारावली साहसाङ्को विक्रमादित्य एव च॥
हेमचन्द्रश्च रुद्रश्च अमरोऽयं सनातनः।
एते कोषाः समाख्याताः संख्या षड्विंशतिः स्मृता॥

मेदिनी, अमरमाला, त्रिकाण्ड, रत्नमालिका, रन्तिदेव, भागुरि, व्याडि, शब्दार्णव, द्विरूप, कलिङ्ग, रभस, पुरुषोत्तम, दुर्ग, अभिधानमाला, संसारावर्त, शाश्वत, विश्व, बोपालित, वाचस्पति, हलायुध, हारावली, साहसाङ्क,

विक्रमादित्य, हेमचन्द्र, रुद्र और सनातन अमरकोष-ये छब्बीस कोष कहे हैं।

यह अमरकोष विश्व, हेमचन्द्र आदि कोषों की अपेक्षा प्राचीन व सनातनरूप गिना जाता है। यह ग्रन्थ महाकठिन है, जोकि तीन काण्डों में विभक्त है। प्रथम काण्ड-स्वर्ग, व्योम, दिशा, काल, धी, शब्दादि, नाट्य, पातालभोगि, नरक और वारि इन दशवर्गों से विभूषित है। द्वितीयकाण्ड-भूमि, पुर, शैल, वनौषधि, सिंह, मनुष्य, ब्रह्म, क्षत्र, वैश्य और शूद्र इन दशवर्गों से सुशोभित है। एवं तृतीयकाण्ड-विशेष्यनिघ्न, संकीर्ण, नानार्थ, अव्यय और लिङ्गादिसंग्रह इन पांच वर्गों से समलंकृत है और इसकी बहुतसी व्याख्यायें व्याख्याकारों ने की हैं—

व्याख्याः सन्ति विद्वांवरैर्विरचिता यद्यप्यनेकानघा
यासु स्वल्पधियो विवेकरहिता बाला विषीदन्ति ये।
तेषामेवकृते पदार्थवलिता व्याख्या रसाला कृता
सोयं मेऽत्र परोपकारकुशलैः संक्षम्यतां दुर्नयः॥ १॥

यद्यपि बड़े २ विद्वानों की निर्माण की हुई अनेकानेक व्याख्यायें हृदय में आनन्ददायक विद्यमान हैं; जिन व्याख्याओं में अल्पबुद्धि, विज्ञानरहित बालक विषादित होते हैं-उनके लिये पदार्थों से वलित "रसाला नाम व्याख्या" बनाई गई है, इसमें जो मेरा दुर्नय हुआ हो वह परोपकार कुशली पुरुषों को क्षमा करना चाहिये॥ १॥

अब जिन व्याख्याओं का सार लेकर इस रसालानाम व्याख्या का निर्माण किया गया है उनको कहते हैं—

१ अमरकोषोद्घाटनम्—इसको भट्टक्षीरस्वामी ने बनाया है। इसमें श्रीभोज, राजशेखर, भट्टि और माघ आदिकों के नाम पाये जाते हैं।

२ पदचन्द्रिका—इसको रायमुकुट ने तेरहसौ तिरपन शाके में निर्माण किया है। इसमें विद्यमान ग्रन्थों के नाम डाक्टर श्रीयुत भाण्डारकर ने प्रकाशित किये हैं।

३ बुधमनोहरा—इसको स्वयंप्रकाशशिष्य वेदान्ती महादेव ने बनाया है। इसमें मुकुट का नाम पाया जाता है।

४ पीयूषव्याख्या—इसको रामकृष्ण दीक्षित ने निर्माण किया है। यहाँ भी मुकुट का नाम पाया जाता है।

५ अमरचन्द्रिका—इसे परमानन्द मैथिल ने बनाया है जोकि मुकुटाचार्य के सार को प्रकाशित करती है।

६ पदविवृतिः—इसको लिङ्गसूरिने बनाया है ।

७ व्याख्यासुधा—इसको भानुजिदीक्षित ने निर्माण किया है ।

८ अमरबिवेकः—इसकी रचना महामाननीय महेश्वर ने की है ।

इन आठ व्याख्याओं को एकत्रित कर लखनऊ नरहीनिवासी शुक्लवंशीय पण्डित शक्तिधरशर्मा शास्त्री ने स्वर्गीय आनरेबुल श्रीमान् रायबहादुर भार्गव-वंशीय मुंशी प्रयागनारायणजी की आज्ञानुसार सर्वसाधारण पण्डित, शास्त्री, आचार्य, महामहोपाध्याय, सर्वविद्यार्थी, राजा, महाराजा तथा ताल्लुकेदार आदिकों को भलीभाँति बोध कराने के लिये इस "रसालानाम व्याख्या" का निर्माण किया है ।

एषा रसाला रचिता विशाला
व्युत्पत्तिमाला सरला सुधीनाम् ।
स्वान्ते कवीनामनिशं विभातु
बालाः सुबोधं नितरां लभन्ताम् ॥ १ ॥

इस रसाला व्याख्या को हमने निर्माण किया है, जोकि विशाला तथा पदों की व्युत्पत्तिमाला होकर विद्वानों को सरला है, वह निरन्तर कवियों के मानस में सुशोभित हो और बालकगण सदैव सुबोध को प्राप्त होवें ॥ १ ॥

इस समय संस्कृतसाहित्य में कोषों के विना किसी का निर्वाह नहीं देख पड़ता है, इसलिये महाकठिन परिश्रम को अङ्गीकार कर "अमरोऽयं सनातनः" इत्यादि प्रमाण से हमने सर्वकोषचूड़ामणि इस अमरकोष की विशद व्याख्या बनाई है । इस व्याख्या में अकारादि क्रम से शब्दों की अनुक्रमणिका स्थापित की है । तथा टीकान्तर और टिप्पणी आदिकों का भी पुरस्कार किया गया है ।

एवं शब्दों के ऊर्ध्वभाग में जो पुंलिङ्ग है, वहाँ ([पु.] रामः) और जो स्त्रीलिङ्ग है, वहाँ ([स.] रामा) और जो नपुंसक है, वहाँ ([न.] सलिलम्) इस चिह्न से विभूषित किया है । और जहाँ धातुओं का न्यास किया गया है, वहाँ 'दिवु क्रीडादौ' इसके समान चिह्न से सुशोभित किया है । और जहाँ कोषान्तर का प्रमाण दिया गया है वहाँ "ऊर्ध्वकर्मा नरायणः" इसके समान स्थापित किया है और श्लोकों के सामने सर्वपदार्थरूप मार्जन भी समझने के लिये रक्खा गया है ।

आर्यावर्तनिवासी सकलमान्यवर पण्डित महोदयगण प्रायः अपने प्रिय-बालकों को यही कठिन ग्रन्थ पढ़ाते हैं। परन्तु पढ़नेवाले तथा पढ़ानेवालों का समय व्यर्थ बीतता है, क्योंकि इसकी व्याख्यायें मूल से भी महाकठिन प्रतीत होती हैं उनसे बालकों को यथार्थलाभ नहीं मिल सक्ता है इसलिये उन सबों के परिबोधार्थ यह व्याख्या बनाई गई है।

सर्वेश्वर परमेश्वर की अनुकम्पा से यह रसालाव्याख्यासमलंकृत पुस्तक सर्वमहाशयों को गुरु के विना भी सहायता दे सक्ती है। इस पुस्तक को हाथ में लेतेही तुरन्त शब्दार्थ का भान होजाता है। इसलिये सज्जन, महज्जन, विद्वज्जन, महोदयों के निकट निवेदन करता हूं कि—

बुद्धिमान्द्यवशात्किञ्चिद्यदशु[illegible]मलेखि तत्।
द्वेषभावं समुत्सृज्य शोधनीयं मनीषिभिः॥ १॥

बुद्धि की मन्दतावश इस व्याख्या में जहाँ कहीं अशुद्ध लिखा गया हो वह विद्वानों को वैरभाव छोड़कर संशोधन करलेना चाहिये क्योंकि जो लिखता पढ़ता है वही मोहित होता है।

एवं इस व्याख्या के संशोधन विषय में भी जहाँ कहीं कुदृष्टि और कुमुद्रण आदि दोषों से अशुद्धता प्रतीत हो, वहाँ सर्वमहाशयों को क्षमा करना चाहिये इसके श्रम को गुणज्ञलोगही जानेंगे। अग्रे किमधिकं बहुज्ञेष्वित्यलम्—

पण्डित शक्तिधरशर्मा, शास्त्री

नवलकिशोर प्रेस,

लखनऊ.

अथ भाषाभाष्योपेतेऽमरकोषे मूलस्थशब्दानामकारादिक्रमेण

शब्दानुक्रमणिका [illegible]यायते ।

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
पूतिकाष्ठ	१०२	५४
	१७३	६०
पूतिगन्धि	३७	१२
पूतिफली	११२	९६
पूप	२४९	४८
पूर	४६९	२०
पूरणी	१००	४६
पूरित	३११	६८
पूरुष, टी.	३३	२९
	१४२	१
पूर्ण	३०२	६५
	३११	६८
पूर्णकुम्भ	२०७	३२
पूर्णमा, टी.	२७	७
पूर्णमासी, टी.	२७	७
पूर्णिमासी, टी.	२७	७
पूर्णिमा	२७	७
पूर्त	१८९	२८
पूर्ब	३८१	१४३
पूर्व	३०६	८०
पूर्वज	१५३	४३
पूर्वदेव	४	१२
पूर्वपर्वत	८६	२
पूर्वरात्र, टी.	४६४	१२
पूर्वाह्ण, टी.	४६४	१२
पूर्वेद्युस्	४५२	२०
पूषन्	२४	३९
पृक्का, टी.	१२१	१३३
पृक्ति	३१८	९
पृच्छा	४२	१०
पृतना	२२०	७८
	२२१	८१
पृथक्	४४१	३
पृथक्पर्णी	१११	९२
पृथगात्मता	३४	३१
	१९२	३८

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
पृथगात्मिका, टी.	३४	३१
पृथग्जन	२७४	१६
	३६६	११२
पृथग्विध	२१०	९३
पृथवी, टी.	७५	३
पृथिवी		
पृथु	२४४	३७
	२४५	४०
	३०१	६०
पृथुक	१४०	३८
	२४८	४७
	३२९	३
पृथुरोमन्	६६	१७
पृथुल	३०१	६०
पृथ्वी	७५	३
	२४४	३७
	२४५	४०
पृथ्वीका	११९	१२५
पृदाकु	५९	६
पृश्नि	१५५	४८
पृश्निपर्णी	१११	९२
पृषत्	६२	६
पृषत	६२	६
	१३३	१०
पृषताश्व	१४	६२
पृषन्ति	६२	६
पृषत्क	२२३	८६
पृषदश्व	१४	६२
पृषदाज्य	१८८	२४
पृष्ठ	१६३	७८
पृष्ठ्य	२११	४६
	३२७	४१
पृष्णि, टी.	१५५	४८
पृष्णिपर्णी, टी.	१११	९२
पेचक	१३४	१५
	३३०	६

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
पेटक	२७८	२९
	३३६	२०
पेटा	२७८	२९
पेटी	२७८	२९
	४८३	४२
पेडा, टी.	२७८	२९
पेयूष, टी.	२५१	५४
पेलव	३०२	६६
पेशल	२७५	१९
	४१२	२१४
पेशि, टी.	१४०	३७
पेशी	१४०	३७
पेशीकोष	१४०	३७
पेषल, टी.	२७५	१९
पेसल, टी.	२७५	१९
पैठर	२४८	४५
पैतृष्वसेय	१४८	२५
पैतृष्वस्रीय	१४८	२५
पैत्र	३१	२१
पोगण्ड	१५४	४६
पोटगल	१२८	१६२
	१२८	१६३
पोटा	१४४	१५
पोत	१४०	३८
	३५३	६७
पोतकी, टी.	१२७	१५७
पोतवणिज्	६४	१२
पोतवाह	६४	१२
पोताधान	६६	१९
पोतिका, टी.	१२७	१५७
पोती, टी.	१४०	३८
पोत्र	४०१	१८९
पोत्रिन्	१३१	२
पौण्ड्र, टी.	१२९	१६३
पौण्ड्रक, टि.		
पौण्डर्य, टी.	११९	१२७
पौत्री	१४९	२९

इति शुभम् ॥

ॐ परमात्मने नमः ॥

श्रीमदमरसिंहविरचितः

अमरकोषः ।

रसालाख्यया व्याख्यया समेतः ॥

प्रथमं काण्डम् ।

विघ्नव्यूहविनाशनैकनिपुणो विद्यानिधिः कामदो,
विद्वद्वृन्दकवीन्द्रवन्दितपदः कल्याणकल्पद्रुमः ।
यो गीतो वरगौरवेण गणितो गुणयो गणेशो गुरुः,
सोयं नो विदधातु वाञ्छितफलं श्रीविघ्नराजो विभुः ॥ १ ॥
नत्वा कृष्णं कञ्जाक्षं कलिमलहरणं कामिनीकेलिलोलं,
कालिन्दीतीरवासं कलितरवयुतं कल्पयन्तं सुखेलम् ।
केकीकण्ठाभनीलं करधृतकमलं कामदं कामयानं,
कुर्वे व्याख्यां रसालां बुधवरमतिदामामरीं भाषयाहम् ॥ २ ॥

यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्यानघा गुणाः ।
सेव्यतामक्षयो धीराः स श्रिये चामृताय च ॥ १ ॥

हे धीरलोगो ! जिस ज्ञान व दयाके सागर अपार महिमावाले परमात्मा के निष्पाप वा हृदय में टिकनेहारे गुण विद्यमान हैं उस अविनाशी को धर्म, अर्थ, काम और मोक्षके लिये आपलोग सेवन करें ॥ १ ॥

अथ परिभाषा ॥

समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः ।
संपूर्णमुच्यते वर्गैर्नामलिङ्गानुशासनम् ॥ २ ॥

अन्य सिद्धान्तों को संग्रहकर संक्षिप्त, असारांशरहित, वर्गों से नामों व लिङ्गों का अनुशासन (व्युत्पादकशास्त्र) संपूर्णता से कहाजाता है ॥ २ ॥

प्रायशो रूपभेदेन साहचर्य्याच्च कुत्रचित् ।
स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयं तद्विशेषविधेः क्वचित् ॥ ३ ॥

प्रायः रूपभेद से यानी ईयन्त, टाबन्त, विसर्गान्त व बिन्दुरूप से स्त्री, पुं, नपुंसकलिङ्ग जानना चाहिये जैसे कि 'लक्ष्मीः, पद्मालया, पद्मा, पिनाकः, अजगवम्, धनुः' ये होते हैं फिर कहीं साहचर्य्य से स्त्री, पुं, और नपुंसकलिङ्ग जानना चाहिये जैसे कि 'अश्वयुग्भानुवियन्ति' इन शब्दों को 'अश्विनी, भानुः विष्णुपदम्' के साहचर्य्य से स्त्री, पुं, नपुंसकलिङ्ग होते हैं और कहीं उन स्त्री, पुं, नपुंसकों के विशेषविधान से स्त्री, पुं, नपुंसक जानना चाहिये जैसे कि, 'भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान्' 'रोचिः शोचिरुभे क्लीबे' आदि होते हैं ॥ ३ ॥

भेदाख्यानाय न द्वन्द्वो नैकशेषो न संकरः ।
कृतोऽत्र भिन्नलिङ्गानामनुक्तानां क्रमादृते ॥ ४ ॥

इस कोष में अनुक्त भिन्नलिङ्गों का द्वन्द्व समास नहीं किया गया जैसे कि, "देवतादैवतामराः" यहां द्वन्द्वसमास नहीं होता है तथा एकशेष भी नहीं किया जैसे कि "नभः खं श्रावणो नभाः" नहीं तो "खश्रावणौ तु नभसी" ऐसा हो जाता और क्रम के विना भिन्नलिङ्गों का मेल भी नहीं किया जैसे कि "स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः" नहीं तो "स्तुतिः स्तोत्रं स्तवो नुतिः" ऐसा होजाता और जहां क्रममात्र विवक्षित है वहां अनुक्त भिन्नलिङ्गों के द्वन्द्व आदि भी किये हैं ॥ ४ ॥

त्रिलिङ्ग्यां (त्रिष्विति पदं) मिथुने (तु) द्वयोरिति ।
निषिद्धलिङ्गं शेषार्थं (त्वन्तःथादि) न पूर्वभाक् ॥ ५ ॥

'त्रिषु' यह पद तीनों लिङ्गोंमें जानना चाहिये जैसे कि "त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकणाः" यहां स्फुलिङ्ग शब्द तीनों लिङ्गों में होता है और 'द्वयोः' यह पद स्त्रीलिङ्ग व पुंलिङ्ग में जानना चाहिये जैसे कि "द्वयोर्ज्वालकीलौ" यहां ज्वाल व कील शब्द स्त्रीलिङ्ग व पुंलिङ्ग में होते हैं और निषिद्धलिङ्ग शेषके लिये जानना चाहिये जैसे कि 'वज्रमस्त्री स्यादिति' यहां वज्र शब्द स्त्रीलिङ्ग में निषिद्ध हुआ पुंलिङ्ग व नपुंसक लिङ्ग में होता है और जिसके अन्त में 'तु' हो और आदि में 'अथ' हो वह पूर्वान्वयी नहीं होता है जैसे कि, 'नगरी त्वमरावती' यहां नगरी त्वन्तपद इन्द्राणी के साथ सम्बन्ध नहीं रखता वरन अमरावती के साथ सम्बन्ध करता है तथा 'जवोऽथ शीघ्रं त्वरितम्' यहां अथादि शीघ्रपद 'जव' के साथ सम्बन्ध नहीं रखता है ॥ ५ ॥

अथ स्वर्गवर्गो व्याख्यायते ।

अ. पु. पु. पु. पु.
स्वर्ग **स्वरव्ययं स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशालयाः ।**
पु. स. स. न.
सुरलोको द्योदिवौ (द्वे स्त्रियां) 'क्लीबे' त्रिविष्टपम् ॥ ६ ॥

---

१ महाव्याहृतेः स्मरणात्स्वःशब्दस्य मङ्गलार्थमादौ प्रयोगः ॥

स्वः, स्वर्ग, नाक, त्रिदिव, त्रिदशालय, सुरलोक, द्यो, दिव् और त्रिविष्टप ये ६ स्वर्ग के नाम हैं इनमें स्वर् यह अव्यय है, द्यो और दिव् ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं पहला ओकारान्त और दूसरा वकारान्त है और त्रिविष्टप या " त्रिपिष्टप " यह नपुंसक में जानना चाहिये ॥ ६ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

देवता अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः।

पु. पु. पु. पु.

सुपर्वाणः सुमनसस्त्रिदिवेशा दिवौकसः ॥ ७ ॥

पु. पु. पु. पु.

आदितेया दिविषदो लेखा अदितिनन्दनाः।

पु. पु. पु. पु. पु.

आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना अमर्त्या अमृतान्धसः ॥ ८ ॥

पु. पु. पु. पु.

बर्हिर्मुखाः क्रतुभुजो गीर्वाणा दानवारयः।

पु. पु.न. स.

वृन्दारका दैवतानि (पुंसि वा) देवताः (स्त्रियाम्)॥६॥

अमर, निर्जर, देव, त्रिदश, विबुध, सुर, सुपर्वन्, सुमनस्, त्रिदिवेश, दिवौकस्, आदितेय, दिविषद्, लेख, अदितिनन्दन, आदित्य, ऋभु, अस्वप्न, अमर्त्य, अमृतान्धस्, बर्हिर्मुख, क्रतुभुक्, गीर्वाण, दानवारि, वृन्दारक, दैवत और देवता ये २६ देवताओं के नाम हैं इनमें दैवतशब्द विकल्पसे पुंलिङ्ग में होता है और देवता शब्द स्त्रीलिङ्ग में रहता है ॥ ७ । ६ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

गणदेवता आदित्यविश्ववसवस्तुषिताभास्वरानिलाः।

पु. पु. पु.

महाराजिकसाध्याश्च रुद्रा (श्च गणदेवताः) ॥ १० ॥

आदित्य १२ विश्वेदेव १० तुषित ३६ आभास्वर ६४ अनिल ४६ महाराजिक २२० साध्य १२ और रुद्र ११ कहाते हैं ये गणदेवताओं के नाम हैं ॥ १० ॥

---

१ आदित्या द्वादश प्रोक्ता विश्वेदेवा दश स्मृताः। वसवश्चाष्ट संख्याताः षट्त्रिंशत्तुषिता मताः॥ आभास्वराश्चतुष्षष्टिर्वाताःपञ्चाशदूनकाः। महाराजिकनामानो द्वे शते विंशतिस्तथा। साध्या द्वादश विख्याता रुद्राश्चैकादश स्मृताः॥

पु. स्त्री. पु. न. पु. पु.
देवजाति विद्याधरोऽप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः[1]।
पु. पु. पु. पु.
पिशाचो गुह्यकः[2] सिद्धो[3] भूतो(ऽमी देवयोनयः)॥ ११ ॥

विद्याधर, अप्सरस्, यक्ष, रक्षस्, गन्धर्व, किन्नर, पिशाच, गुह्यक, सिद्ध और भूत ये देवयोनियाँ हैं याने देवांशक कहाते हैं ॥ ११ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
असुर असुरा दैत्यदैतेयदनुजेन्द्रारिदानवाः।
पु. पु. पु. पु.
शुक्रशिष्या दितिसुताः पूर्वदेवाः[4] सुरद्विषः ॥ १२ ॥

असुर, दैत्य, दैतेय, दनुज, इन्द्रारि, दानव, शुक्रशिष्य, दितिसुत, पूर्वदेव और सुरद्विष् ये १० असुरों के नाम हैं ॥ १२ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
जिन या बुध सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथागतः।
पु. पु. पु. पु. पु.
समन्तभद्रो भगवान्मारजिल्लोकजिज्जिनः[5] ॥ १३ ॥
पु. पु. पु. पु.
षडभिज्ञो[6] दशबलो[7]ऽद्वयवादी विनायकः।
पु. पु. पु. पु. पु.
मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता मुनिः(शाक्यमुनिस्तु)यः॥१४॥

सर्वज्ञ, सुगत, बुद्ध, धर्मराज, तथागत, समन्तभद्र, भगवान्, मारजित्, लोकजित्, जिन, षडभिज्ञ, दशबल, अद्वयवादी, विनायक, मुनीन्द्र, श्रीघन, शास्ता, (तृ) और मुनि ये १८ जिन या बुद्ध के नाम हैं ॥ १३ । १४ ॥

पु. पु. पु.
बौद्धमती. (स) शाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च (सः)।
पु. पु. पु.
गौतमश्चार्कबन्धुश्च मायादेवीसुतश्च (सः)॥ १५ ॥

---

१ इः कामस्तस्येवाक्षिणी अस्येति, इरक्षिणु यस्येति वा ॥

२ 'निधिं रक्षन्ति ये यक्षास्ते स्युर्गुह्यकसंज्ञकाः' गुह्यं कुत्सितं कायतीति, गुह्यं गोपनीयं कं सुखं यस्येति वा॥

३ असेधीदिति सिद्धः षिधु हिंसासंराद्ध्योरित्यस्मात्कर्तरि क्तः ॥

४ पूर्वे देवा अन्यायाद्धि देवत्वाद्भ्रष्टाः ॥

५ क्वचित्पुस्तके इत उत्तरं "सर्वज्ञो वीतरागोऽर्हन् केवली तीर्थकृज्जिनः" जिनदेवतानामानि षट् इत्यधिकम्।

६ दिव्यं चक्षुः, श्रोत्रम्, परचित्तज्ञानम्, पूर्वनिवासानुस्मृतिः, आत्मज्ञानम्, वियद्गमनम्, कायव्यूहसिद्धिश्चेति षट् अभितो ज्ञायमानानि यस्येति ॥

७ दानं शीलं क्षमा वीर्यं ध्यानप्रज्ञाबलानि च । उपायः प्रणिधिर्ज्ञानं दश बुद्धबलानि वै ॥

शाक्यमुनि, शाक्यसिंह, सर्वार्थसिद्ध, शौद्धोदनि, गौतम, अर्कबन्धु और मायादेवीसुत ये ७ शाक्यमुनिभेद के नाम हैं ॥ १५ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
ब्रह्मा ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठः परमेष्ठी पितामहः।
पु. पु. पु. पु.
हिरण्यगर्भो लोकेशः स्वयम्भूश्चतुराननः ॥ १६ ॥
पु. पु. पु. पु. पु.
धाताब्जयोनिर्द्रुहिणो विरिञ्चिः कमलासनः।
पु. पु. पु. पु. पु. पु.
स्रष्टा प्रजापतिर्वेधा विधाता विश्वसृड्विधिः ॥ १७ ॥

ब्रह्मा (ब्रह्मन्) आत्मभू, सुरज्येष्ठ, परमेष्ठी (ष्ठिन्) पितामह, हिरण्यगर्भ, लोकेश, स्वयंभू, चतुरानन, धाता (तृ) अब्जयोनि, द्रुहिण, विरिञ्चि, विरञ्चि, विरिञ्च, कमलासन, स्रष्टा, (ष्टृ) प्रजापति, वेधाः, (धस्) विधाता, (तृ) विश्वसृड्, (ज्) और विधि ये २० ब्रह्मा के नाम हैं ॥ १६ । १७ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
विष्णु विष्णुर्नारायणः कृष्णो[1] वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः।
पु. पु. पु. पु. पु.
दामोदरो हृषीकेशः केशवो माधवः[2] स्वभूः ॥ १८ ॥
पु. पु. पु. पु.
दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो गरुडध्वजः।
पु. पु. पु. पु. पु.
पीताम्बरोऽच्युतः शार्ङ्गी विष्वक्सेनो जनार्दनः ॥१९॥
पु. पु. पु. पु.
उपेन्द्र इन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः।
पु. पु. पु. पु.
पद्मनाभो मधुरिपुर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः ॥ २० ॥
पु. पु. पु. पु.
देवकीनन्दनः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः।
पु. पु. पु. पु.
वनमाली बलिध्वंसी कंसारातिरधोक्षजः ॥ २१ ॥

---

१ कृषिरुत्कृष्टवचनो नश्च निर्वृतिवाचकः। तयोरैक्यं परं ब्रह्म कृष्ण इत्यभिधीयत इति त्वौपनिषदाः ॥
२ यदोर्ज्येष्ठःपुत्रो मधुस्तद्वंश्याः सर्वेपि माधवाः ॥

पु. पु. पु. पु.

विश्वम्भरः कैटभजिद्विधुः श्रीवत्सलाञ्छनः ।

विष्णु, नारायण (नरायण) कृष्ण, वैकुण्ठ, विष्टरश्रवस्, दामोदर, हृषीकेश, केशव, माधव, स्वभू, दैत्यारि, पुण्डरीकाक्ष, गोविन्द, गरुडध्वज, पीताम्बर, अच्युत, शार्ङ्गी (इन्) विष्वक्सेन, जनार्दन, उपेन्द्र, इन्द्रावरज, चक्रपाणि, चतुर्भुज, पद्मनाभ, मधुरिपु, वासुदेव, त्रिविक्रम, देवकीनन्दन, शौरि, श्रीपति, पुरुषोत्तम, वनमाली (लिन्) बलिध्वंसी (सिन्) कंसाराति, अधोक्षज, विश्वम्भर, कैटभजित्, विधु और श्रीवत्सलाञ्छन ये ३६ विष्णु के नाम हैं ।। १८ । २१ । १/२ ।।

पु. पु.

वसुदेव वसुदेवोऽस्य जनकः स एवानकदुन्दुभिः ॥ २२ ॥

इन श्रीकृष्णजी के पिता वसुदेव और वही ' आनकदुन्दुभि ' कहाते हैं ये २ वसुदेव के नाम हैं ।। २२ ।।

पु. पु. पु. पु.

बलदेव या बलदाऊ बलभद्रः प्रलम्बघ्नो बलदेवोऽच्युताग्रजः ।

पु. पु. पु. पु.

रेवतीरमणो रामः कामपालो हलायुधः ॥ २३ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

नीलाम्बरो रौहिणेयस्तालाङ्को मुशली हली ।

पु. पु. पु. पु.

संकर्षणः सीरपाणिः कालिन्दीभेदनो बलः ॥ २४ ॥

बलभद्र, प्रलम्बघ्न, बलदेव, अच्युताग्रज, रेवतीरमण, राम, कामपाल, हलायुध, नीलाम्बर, रौहिणेय, तालाङ्क, मुसली (लिन्) हली (लिन्) संकर्षण, सीरपाणि, कालिन्दीभेदन और बल ये १७ बलभद्र के नाम हैं ।। २३ । २४ ।।

पु. पु. पु. पु. पु.

प्रद्युम्न मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः ।

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

कन्दर्पो दर्पकोऽनङ्गः कामः पञ्चशरः स्मरः ॥ २५ ॥

पु. पु. पु. पु.

सम्बरारिर्मनसिजः कुसुमेषुरनन्यजः ।

पु. पु. पु. पु.

पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः ॥ २६ ॥

१ उन्मादनस्तापनश्च शोषणस्तम्भनस्तथा । संमोहनश्च कामस्य पञ्चबाणाः प्रकीर्तिताः ॥

पु. पु.
अनिरुद्ध ब्रह्मसूर्विश्वकेतुः स्यादनिरुद्ध उषापतिः ।

मदन, मन्मथ, मार, प्रद्युम्न, मीनकेतन, कन्दर्प, दर्पक, अनङ्ग, काम, पञ्चशर, स्मर, संबरारि या शंबरारि, मनसिज (मनोज) कुसुमेषु, अनन्यज, पुष्पधन्वा, (न्वन्) रतिपति, मकरध्वज, आत्मभू, ब्रह्मसू और विश्वकेतु ये २१ कामदेव के नाम हैं अनिरुद्ध, उषापति, (ऊषापति) ये २ अनिरुद्ध के नाम हैं ॥ २५ । २६ ॥

स. स. स. स. स. स.
लक्ष्मीजी लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला श्रीर्हरिप्रिया ॥ २७ ॥

लक्ष्मी, पद्मालया, पद्मा, कमला, श्री और हरिप्रिया ये ६ लक्ष्मीके नाम हैं ॥२७॥

शंख
चक्र
गदा
तलवार
मणि

पु. पु. न.
शङ्खो लक्ष्मीपतेः पाञ्चजन्यश्चक्रं सुदर्शनः ।
स. पु. पु. पु.
कौमोदकी (गदा) खड्गो (नन्दकः) कौस्तुभो (मणिः) २८ ॥

लक्ष्मीपति का शङ्ख 'पाञ्चजन्य' कहाता है यह १ विष्णुके शङ्ख का नाम है । उनका चक्र 'सुदर्शन' कहा जाता है यह १ विष्णुके चक्र का नाम है । उनकी गदा कौमोदकी कहाती है । यह १ विष्णु की गदा का नाम है । उनकी खड्ग (तलवार) नन्दक कहाती है यह १ विष्णु की तलवार का नाम है और उनकी मणि कौस्तुभ कहाती है यह १ विष्णुमणि का नाम है ॥ २८ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
गरुड गरुत्मान् गरुडस्तार्क्ष्यो वैनतेयः खगेश्वरः ।
पु. पु. पु. पु.
नागान्तको विष्णुरथः सुपर्णः पन्नगाशनः ॥ २९ ॥

गरुत्मान्, गरुड, तार्क्ष्य, वैनतेय, खगेश्वर, नागान्तक, विष्णुरथ, सुपर्ण और गाशन ये ९ गरुड के नाम हैं ॥ २९ ॥

पु. पु पु. पु. पु. पु.
शिव या शम्भुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः ।
महादेव पु. पु. पु. पु. पु.
ईश्वरः शर्व ईशानः शंकरश्चन्द्रशेखरः ॥ ३० ॥

१ श्रीलक्ष्मीशब्दौ (कृदिकारादिति) ङीषन्ताविति मैत्रेयः ।

* चापः शार्ङ्गो मुरारेस्तु श्रीवत्सो लाञ्छनं स्मृतम् । अश्वाश्च शैब्यसुग्रीवमेघपुष्पबलाहकाः ।सारथिर्दारुको मन्त्री ह्युद्धवश्चानुजो गदः ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
भूतेशः खण्डपरशुर्गिरीशो गिरिशो मृडः ।
पु. पु. पु. पु.
मृत्युञ्जयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः ॥ ३१ ॥
पु. पु. पु. पु. पु.
उग्रः कपर्दी श्रीकण्ठः शितिकण्ठः कपालभृत् ।
पु. पु. पु. पु.
वामदेवो महादेवो विरूपाक्षस्त्रिलोचनः ॥ ३२ ॥
पु. पु. पु. पु.
कृशानुरेताः सर्वज्ञो धूर्जटिर्नीललोहितः ।
पु. पु. पु. पु. पु.
हरः स्मरहरो भर्गस्त्र्यम्बकस्त्रिपुरान्तकः ॥ ३३ ॥
पु. पु. पु. पु.
गङ्गाधरोऽन्धकरिपुः क्रतुध्वंसी वृषध्वजः ।
पु. पु. पु. पु. पु. पु. †
व्योमकेशो भवो भीमः स्थाणू रुद्र उमापतिः ॥ ३४ ॥

शम्भु, ईश, पशुपति, शिव, शूली, (लिन्) महेश्वर, ईश्वर, शर्व (सर्व) ईशान, शङ्कर, चन्द्रशेखर, भूतेश, खण्डपरशु, गिरीश, गिरिश, मृड, मृत्युञ्जय, कृत्तिवासाः, (सस्) पिनाकी, (किन्) प्रमथाधिप, उग्र, कपर्दी, (दिन्) श्रीकण्ठ, शितिकण्ठ, कपालभृत्, वामदेव, महादेव, विरूपाक्ष, त्रिलोचन, कृशानुरेताः, (तस्) सर्वज्ञ, धूर्जटि, नीललोहित, हर, स्मरहर, भर्ग, (भर्ग्य) त्र्यम्बक, त्रिपुरान्तक, गङ्गाधर, अन्धकरिपु, क्रतुध्वंसी, (सिन्) वृषध्वज, व्योमकेश, भव, भीम, स्थाणु, रुद्र और उमापति ये ४८ शिवजी के नाम हैं ॥ ३० । ३४ ॥

पु. पु. न.
जटा कपर्दोऽ"स्य जटाजूटः" पिनाकोऽजगवं (धनुः) ।
धनुष्
सेवक पु.
मातायें प्रमथाः(स्युःपारिषदा)ब्राह्मी"त्याद्यास्तु मातरः"॥३५॥

इन शिवजी के जटाजूट (जटाबन्ध) को कपर्द कहते हैं यह १ जटाबन्ध का नाम है। पिनाक, अजगव या आजगव ये २ शिवधनुष् के नाम हैं । प्रमथ, पारिषद, पारिषद्य—पार्षद ये २ शिवानुचरों (गणों) के नाम हैं । और ब्राह्मी आदि मातायें कहाती हैं जैसे ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा और चर्चिका ये ब्रह्मादिदेवताओं की शक्तियों के नाम हैं ॥ ३५ ॥

---

† अहिर्बुध्न्योऽष्टमूर्तिश्च गजारिश्च महानटः ।

स. स. न.

सिद्धियां विभूतिर्भूतिरैश्वर्य 'मणिमादिकमष्टधा' ।

विभूति, भूति, ऐश्वर्य ये ३ अणिमादि सिद्धियों के नाम हैं 'अणिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, महिमा, ईशिता, वशिता और कामावशायिता ये ८ सिद्धियां कहाती हैं ॥

स. स. स. स. स. स.

पार्वती उमा कात्यायनी गौरी काली हैमवतीश्वरा* ॥ ३६ ॥

स. स. स. स. स.

शिवा भवानी रुद्राणी शर्वाणी सर्वमङ्गला

स. स. स. स. स. स.

† अपर्णा पार्वती दुर्गा मृडानी चण्डिकाम्बिका ॥ ३७ ॥

उमा, कात्यायनी, गौरी, काली, (काला) हैमवती, ईश्वरा, (ईश्वरी) शिवा, भवानी, रुद्राणी, शर्वाणी, सर्वमङ्गला, अपर्णा, पार्वती, दुर्गा, मृडानी, चण्डिका और अम्बिका ये १७ पार्वती के नाम हैं ॥ ३६ । ३७ ॥

पु. पु. पु. पु.

गणेश विनायको विघ्नराजद्वैमातुरगणाधिपाः ।

पु. पु. पु. पु.

(अप्ये) कदन्तहेरम्[१]बलम्बोदरगजाननाः ॥ ३८ ॥

विनायक, विघ्नराज, द्वैमातुर, गणाधिप, एकदन्त, हेरम्ब, लम्बोदर और गजानन ये ८ गणेश के नाम हैं ॥ ३८ ॥

पु. पु. पु. पु.

स्वामिकार्त्तिकेय कार्त्तिकेयो महासेनः शरजन्मा षडाननः ।

पु. पु. पु. पु. पु.

पार्वतीनन्दनः स्कन्दः सेनानीरग्निभूर्गुहः ॥ ३९ ॥

पु. पु. पु. पु.

बाहुलेयस्तारकजिद्विशाखः शिखिवाहनः ।

पु. पु. पु. पु.

षा[२]ण्मातुरः शक्तिधरः कुमारः क्रौञ्चदारणः ॥ ४० ॥

कार्त्तिकेय, महासेन, शरजन्मा, षडानन, पार्वतीनन्दन, स्कन्द, सेनानी, अग्निभू,

* ईष्टे, "स्थेशभास" वरचि, टापि च ईश्वरा । वनिपि, "वनोरच्" इति ङीपि ईश्वरी अपि ॥

† आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा ।

१ "हः शंकरे हरौ हंसे रणरोमाश्ववाजिषु" इति नानार्थरत्नमाला । हे उपसि रम्बते इति स्वामी ।

२ भृङ्गी भृङ्गी रिटिस्तुण्डी नन्दिकी नन्दिकेश्वरः । कर्ममोटी तु चामुण्डा चर्ममुण्डा तु चर्चिका ॥

गुह, बाहुलेय, तारकजित्, विशाख, शिखिवाहन, षाण्मातुर, शक्तिधर, कुमार और क्रौञ्चदारण या "क्रौञ्चदारण" ये १७ स्वामिकार्त्तिकेय के नाम हैं ॥ ३९।४० ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
इन्द्र इन्द्रोमरुत्वान्मघवा विडौजाः पाकशासनः ।
पु. पु. पु. पु.
वृद्धश्रवाः सुनासीरः पुरुहूतः पुरन्दरः ॥ ४१ ॥
पु. पु. पु. पु. पु.
जिष्णुर्लेखर्षभः शक्रः शतमन्युर्दिवस्पतिः ।
पु. पु. पु. पु. पु. पु.
सुत्रामागोत्रभिद्वज्री वासवो वृत्रहा वृषा ॥ ४२ ॥
पु. पु. पु. पु.
वास्तोष्पतिः सुरपतिर्बलारातिः शचीपतिः ।
पु. पु. पु. पु.
जम्भभेदी हरिहयः स्वाराण्नमुचिसूदनः ॥ ४३ ॥
पु. पु. पु. पु.
संक्रन्दनो दुश्च्यवनस्तुराषाण्मेघवाहनः ।
पु. पु. पु.
आखण्डलः सहस्राक्ष ऋभुक्षा (तस्य तु प्रिया) ॥४४॥

इन्द्र, मरुत्वान्, मघवा (मघवान्) विडौजा: (जस्) पाकशासन, वृद्धश्रवा:, (वस्) सुनासीर, (शुनाशीर) पुरुहूत, पुरन्दर, जिष्णु, लेखर्षभ, शक्र, शतमन्यु, दिवस्पति, सुत्रामा, (सूत्रामा) गोत्रभित्, वज्री, (ज्रिन्) वासव, वृत्रहा,(हन्) वृषा (षन्) वास्तोष्पति, सुरपति, बलाराति, शचीपति, जम्भभेदी (दिन्) हरिहय, स्वाराड्, (ज्) नमुचिसूदन, संक्रन्दन, दुश्च्यवन, तुराषाट् (ह्) मेघवाहन, आखण्डल, सहस्राक्ष और ऋभुक्षा (क्षिन्) ये ३५ इन्द्रके नाम हैं ॥ ४१ । ४४ ॥

स. स. स. स.
इन्द्राणी नगरी घोड़ा पुलोमजाशचीन्द्राणी (नगरी त्वमरावती) ।
पु. पु. न.
सारथी वन (हय)उच्चैःश्रवाः(सूतो)मातलिर्नन्दनं (वनम्) ॥४५॥

उन इन्द्रकी प्रिया (प्यारी) पुलोमजा, "पौलोमी" शची, 'सची' इन्द्राणी

---

१ श्वन्नुक्षन्नित्यादिना मघवन्निति निपातितं 'मघवा बहुल'मिति आदेशपक्षे तु मघवानित्यपि बोध्यम्—यत्तु आदेशे दीर्घाभावान्मघवन्निति स्वामिनोक्तं तन्न सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धाविति दीर्घसंभवात्—नच संयोगान्तलोपस्यासिद्धत्वम् मघवाबहुलमिति बहुलग्रहणेन तद्बाधनात् । अतएव मतुपा ऋन्तादेशप्रत्याख्यानपरं वार्तिकं तद्भाष्यं च संगच्छते 'हविर्जक्षिति निःशङ्को मखेषु मघवानसौ' विति भट्टिः एतेन मघवा,मघवन्, मघवानिति त्रैरूप्यमिति ।

कहाती हैं ये ३ इन्द्राणी के नाम हैं और नगरी (पुरी) अमरावती कही जाती है यह १ इन्द्रपुरी का नाम है । तथा उनका घोड़ा उच्चैःश्रवाः (वस्) कहाता है यह १ इन्द्रके घोड़े का नाम है । और उनका सारथी मातलि कहाजाता है यह १ इन्द्रके सारथी का नाम है । और उनका वन (बाग़ीचा) नन्दन कहलाता है यह १ इन्द्रके बाग़ का नाम है ॥ ४५ ॥

पु. पु. पु.
इन्द्रघर पुत्र — स्यात्प्रासादो वैजयन्तः जयन्तः पाकशासनिः ।
हाथी — पु. पुँ. पु. पु.
ऐरावतोऽभ्रमातङ्गैरावणाभ्रमुवल्लभाः ॥ ४६ ॥

उनका घर वैजयन्त होता है यह १ इन्द्र के घरका नाम है—और जयन्त, पाकशासनि ये २ इन्द्रपुत्रके नाम हैं और ऐरावत, अभ्रमातङ्ग, ऐरावण और अभ्रमुवल्लभ ये ४ इन्द्रके हाथी के नाम हैं ॥ ४६ ॥

स. पु. न. पु. न. न. पु.
वज्र — ह्लादिनी वज्रमस्त्री स्यात्कुलिशं भिदुरं पविः ।
पु. पु. पु. पु. पु. स.
शतकोटिः स्वरुः शम्बो दम्भोलिरशनि[2] (र्द्वयोः) ॥ ४७ ॥

ह्लादिनी, वज्र, कुलिश, भिदुर, पवि, शतकोटि, स्वरुः, (रुप्) शम्ब, (सम्ब) दम्भोलि और अशनि ये १० वज्रके नाम हैं इनमें वज्र, कुलिश शब्द पुं. नपुंसकमें होते हैं और अशनि दोनों लिङ्गों (स्त्री, पुं.) में कहाता है ॥ ४७ ॥

न. पु. न. पु.
विमान देवर्षि — व्योमयानं विमानो 'ऽस्त्री' (नारदाद्याः) सुरर्षयः ।
सभा — स. स. न. न. स.
अमृत — स्यात्सुधर्मा देवसभा पीयूषममृतं सुधा ॥ ४८ ॥

व्योमयान, विमान ये २ विमान के नाम हैं इनमें विमान शब्द स्त्रीलिङ्ग में नहीं होता है किन्तु पुं. नपुंसक में रहता है । नारद, पर्वत, तुम्बुरु, देवल आदि सुरर्षि कहाते हैं । सुधर्मा, देवसभा ये २ देवताओं की सभा के नाम हैं । और पीयूष (पीयुष) अमृत, सुधा ये ३ अमृत के नाम हैं ॥ ४८ ॥

स. स. स. स.
आकाशगङ्गा — मन्दाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्णदी सुरदीर्घिका ।

---

१ अस्त्रियौ वज्रकुलिशाविति संसारावर्तः "वज्रं स्याद्बालके धान्यां क्लीबं योगान्तरे पुमान् । वज्रास्तुद्यां गुडूच्यां च वज्री स्नुह्यन्तरे स्मृता ॥ दम्भोलौ हीरकेऽप्यस्त्री" इति ॥

२ दम्नोति खेदयति "दम्भु दम्भने" इत्यस्मादौणादिक ओलिरिति ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

सुमेरु मेरुः सुमेरुर्हेमाद्री रत्नसानुः सुरालयः ॥ ४९ ॥

मन्दाकिनी, वियद्गङ्गा, स्वर्णादी, सुरदीर्घिका ये ४ देवगङ्गा (आकाशगङ्गा) के नाम हैं । मेरु, सुमेरु, हेमाद्रि, रत्नसानु और सुरालय ये ५ सुमेरु पर्वत के नाम हैं ॥ ४९ ॥

पु. पु.

कल्पवृक्ष (पञ्चैते देवतरवो) मन्दारः पारिजातकः ।

पु. पु. न. पु.

सन्तानः कल्पवृक्षश्च (पुंसि वा) हरिचन्दनम् ॥ ५० ॥

ये पांच देववृक्ष हैं—मन्दार, पारिजातक, सन्तान, कल्पवृक्ष और हरिचन्दन यह एक २ पांच देववृक्षों के नाम हैं इनमें हरिचन्दन यह विकल्प से पुंलिङ्ग में होता है ॥ ५० ॥

पु. पु. पु. पु.

सनत्कुमार सनत्कुमारो वैधात्रः स्वर्वैद्यावश्विनीसुतौ ।

पु. पु. पु. पु.

स्वर्गवैद्य नासत्यावश्विनौ दस्रावाश्विनेयौ च (तावुभौ) ॥ ५१ ॥

सनत्कुमार, वैधात्र ये २ ब्रह्मपुत्रों (सनत्कुमारों) के नामहैं । स्वर्वैद्य, अश्विनीसुत, नासत्य, अश्विन, दस्र और आश्विनेय ये ६ अश्विनीकुमारों के नाम हैं ॥ ५१ ॥

स. स.

अप्सरा स्त्रियां बहुष्वप्सरसः[1] स्वर्वेश्या[2] (उर्वशीमुखाः) ।

पु. पु.

गन्धर्व हाहा हूहूश्चैवमाद्या[3] 'गन्धर्वास्त्रिदिवौकसाम्' ॥ ५२ ॥

उर्वशीआदि स्वर्वेश्या और अप्सरा: (रस्) कहाती हैं । ये २ स्वर्वेश्याओं के नाम हैं इनमें अप्सरस् यह स्त्रीलिङ्ग बहुवचन में है और भाष्य प्रयोगादिकों से एकवचन भी होता है ऐसेही हाहा, हहा, हाहास्—हूहू—हुहु-तुम्बुरु, विश्वावसु, चित्ररथ आदि देवताओं के गन्धर्व (गवैया) कहलाते हैं यह १ देवगायकों का नाम है ॥ ५२ ॥

---

१ " स्त्रियां बहुष्वप्सरसः स्यादेकत्वे अप्सरा अपि " इति शब्दार्णवात् ॥

२ घृताची मेनका रम्भा उर्वशी च तिलोत्तमा । सुकेशी मञ्जुघोषाद्याः कथ्यन्तेऽप्सरसो बुधैरिति ॥

३ अव्युत्पत्तिपक्षे "आतो धातोः" (६ । ४ । १४०) इत्यस्याप्राप्तेः शासि हाहान्—भ्योः सुपीत्यस्याप्राप्तेर्हूहूनित्यादि ॥ 'हहा, हुहू' इत्युभावादिह्रस्वौ च "गीतमाधुर्यसम्पन्नौ विख्यातौ च हहाहुहू " इति व्या गोक्तिश्च ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
अग्निदेव अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धनञ्जयः ।
पु. पु. पु. पु.
कृपीटयोनिर्ज्वलनो जातवेदास्तनूनपात् ॥ ५३ ॥
पु. पु. पु. पु.
बर्हिःशुष्मा कृष्णवर्त्मा शोचिष्केश उषर्बुधः ।
पु. पु. पु. पु. पु.
आश्रयाशो बृहद्भानुः कृशानुः पावकोऽनलः ॥ ५४ ॥
पु. पु. पु. पु.
लोहिताश्वो वायुसखः शिखावानाशुशुक्षणिः ।
पु. पु. पु. पु.
हिरण्यरेता हुतभुग् दहनो हव्यवाहनः ॥ ५५ ॥
पु. पु. पु. पु. पु.
सप्तार्चिर्दमुनाः शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसुः ।
पु. न. पु. पु. पु.
बड़वानल शुचिरप्पित्तमौर्वस्तु वाडवो वडवानलः ॥ ५६ ॥

अग्नि, वैश्वानर, वह्नि, वीतिहोत्र, धनञ्जय, कृपीटयोनि, ज्वलन, जातवेदाः (दस्) तनूनपात् (द्) बर्हिःशुष्मा, (मन्) कृष्णवर्त्मा, शोचिष्केश, उषर्बुध, आश्रयाश (आशयाश) बृहद्भानु, कृशानु, पावक, अनल, लोहिताश्व, वायुसख (खा) शिखावान्, आशुशुक्षणि, हिरण्यरेताः (तस्) हुतभुग्, (ज्) दहन, हव्यवाहन, सप्तार्चिः (र्चि) दमुनाः (नस्) शुक्र, चित्रभानु, विभावसु, शुचि और अप्पित्त ये ३४ अग्नि के नाम हैं। औौर्व, वाडव, वडवानल ये ३ बडवानल के नाम हैं ॥ ५३ । ५६ ॥

पु.स. पु.स. स. स. स.
अग्निज्वाला (वह्नेर्द्वयो)र्ज्वालकीलावर्चिर्हेतिः शिखा स्त्रियाम् ।
अग्निके टुकड़े पु.स.न. पु. पु. पु.
जलना (त्रिषु)स्फुलिङ्गोऽग्निकणःसन्तापः संज्वरः(समौ)॥५७॥

ज्वाल, कील, अर्चि, हेति और शिखा ये पांच अग्नि की ज्वाला के नाम हैं इनमें ज्वाल, कील ये२ पुं. स्त्री में होते हैं और शिखा स्त्रीलिङ्ग में होता है। स्फुलिङ्ग अग्निकण ये दो अग्निके टुकड़ों के नाम हैं इनमें स्फुलिङ्ग शब्द तीनों लिङ्गों में होता है । सन्ताप, संज्वर ये २ आगी जलने के नाम हैं ये दोनों समानार्थ व समानलिङ्ग कहेजाते हैं ॥ ५७ ॥

१ काली कराली मनोजवा सुलोहिता सुधूम्रवर्णा स्फुलिङ्गिनी विश्वदासाख्याः सप्तवह्नेर्जिह्वाः

पु. पु. पु. पु.
यमराज धर्मराजः पितृपतिः समवर्ती परेतराट् ।
पु. पु. पु. पु. पु.
कृतान्तो यमुनाभ्राता शमनो यमराड्यमः ॥ ५८ ॥
पु. पु. पु. पु. पु.
कालो दण्डधरः श्राद्धदेवो वैवस्वतोऽन्तकः ।

धर्मराज, पितृपति, समवर्ती, (र्तिन्) परेतराट्, (ज्) कृतान्त, यमुनाभ्राता, (तृ) शमन, यमराट् (ज्) यम, काल, दण्डधर, श्राद्धदेव, वैवस्वत और अन्तक ये १४ यमराज के नाम हैं ॥ ५८ । १ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
राक्षस राक्षसः कौणपः क्रव्यात्क्रव्यादोऽस्रप आशरः ॥ ५९ ॥
पु. पु. पु. पु.
रात्रिंचरो रात्रिचरो कर्बुरो निकषात्मजः ।
पु. पु. पु. न. न.
यातुधानः पुण्यजनो नैर्ऋतो यातुरक्षसी ॥ ६० ॥

राक्षस, कौणप, क्रव्यात्, क्रव्याद, अस्रप (अश्रप) आशर (आशिर) रात्रिंचर, रात्रिचर, कर्बुर, निकषात्मज, यातुधान (जातुधान) पुण्यजन, नैर्ऋत, यातु और रक्षः ये १५ राक्षसों के नाम हैं ॥ ५९ । ६० ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
वरुण प्रचेता वरुणः पाशी यादसांपतिरप्पतिः ।

प्रचेताः (तस्) वरुण या "वरण" पाशी (शिन्) यादसांपति और अप्पति ये ५ वरुण के नाम हैं ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
पवन श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा सदागतिः ॥ ६१ ॥
पु. पु. पु. पु. पु.
पृषदश्वो गन्धवहो गन्धवाहानिलाशुगाः ।
पु. पु. पु. पु. पु.
समीरमारुतमरुज्जगत्प्राणसमीरणाः ॥ ६२ ॥
पु. पु. पु. पु. पु.
नभस्वद्वातपवनपवमानप्रभञ्जनाः ।

श्वसन, स्पर्शन, वायु, मातरिश्वा, सदागति, पृषदश्व, गन्धवह, गन्धवाह, अनिल,

---

१ कलयत्यायुः कलसंख्याने, (चु. उ. से.) पचाद्यजन्तात् प्रज्ञाद्यणीति मुकुटः ।

आशुग, समीर, मारुत, मरुत्, जगत्प्राण, समीरण, नभस्वान्, वात, पवन, पवमान और प्रभञ्जन ये २० वायु के नाम हैं ॥ ६१ । ६२ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

शरीरस्थ पवन — प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ (च वायवः) ॥ ६३ ॥

न. न. पु. पु.

(शरीरस्था) इमे रंहस्तरसी तु रयःस्यदः ।

प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान ये प्राणादि पञ्च वायु शरीरस्थ कहलाते हैं। हृदय में प्राण, गुदा में अपान, नाभि में समान, कण्ठदेश में उदान और व्यान सारी देह में टिका रहता है—रंहः (हस्) तरः (रस्) रयः, स्यद और जव ये ५ वेग के नाम हैं ॥ ६३ ॥

पु. न. न. न. न. न. न.

शीघ्रता या वेग — जवो (ऽथ) शीघ्रं त्वरितं लघु क्षिप्रमरं द्रुतम् ॥ ६४ ॥

न. न. न. न. न.

सत्वरं चपलं तूर्णमविलम्बितमाशु (च) ।

शीघ्र, त्वरित, लघु, क्षिप्र, अर, द्रुत, सत्वर, चपल, तूर्ण, अविलम्बित और आशु ये ११ शीघ्र के नाम हैं ॥ ६४ । $\frac{१}{२}$ ॥

न. न. न. न. न. न.

नित्य या लगातार — सततानारताश्रान्तसन्तताविरतानिशम् ॥ ६५ ॥

न. न. न. पु. पु.

नित्यानवरताजस्रमप्यथातिशयो भरः ।

न. न. न. न. न. न.

बारंबार — अतिवेलभृशात्यर्थातिमात्रोद्गाढनिर्भरम् ॥ ६६ ॥

न. न. न. न. न. न.

तीव्रैकान्तनितान्तानि गाढबाढदृढानि (च) ।

(क्लीबे शीघ्राद्यसत्त्वे स्यात्त्रिष्वेषां सत्त्वगामि यत्) ॥ ६७ ॥

सतत, अनारत, अश्रान्त, संतत, विरत, अनिश, नित्य, अनवरत और अजस्र ये ६ नित्य के नाम हैं क्रियान्तर से अव्यवधान में संतत होता है और पुनः पुनः में अतिशब्द है यह दोनों में भेद है—अतिशय, भर, अतिवेल, भृश, अत्यर्थ, अतिमात्र, उद्गाढ, निर्भर, तीव्र, एकान्त, नितान्त, गाढ, बाढ और दृढ ये १४ अतिशय यानी बारम्बार के नाम हैं। शीघ्र आदि दृढपर्यन्त क्रियाविशेषण होनेसे अद्रव्य में वर्तमान होकर नपुंसक में रहते हैं जैसे 'शीघ्रं जुहोति' जल्द होमता है 'सततं भुङ्क्ते' हमेशा खाता है इन्हों के बीच में जो द्रव्यगामी है, वह तीनों लिङ्ग में होता है जैसे 'शीघ्रो मृत्युः, शीघ्रा जरा, शीघ्रं वयः आदि होते हैं ॥ ६५ । ६७ ॥

पु. पु. पु. पु.

कुबेर कुबेरस्त्र्यम्बकसखो यक्षराड्गुह्यकेश्वरः।

पु. पु. पु. पु.

मनुष्यधर्मा धनदो राजराजो धनाधिपः ॥ ६८ ॥

पु. पु. पु. पु.

किन्नरेशो वैश्रवणः पौलस्त्यो नरवाहनः।

पु. पु. पु. पु. पु.

यक्षैकपिङ्गैडविडश्रीदपुण्यजनेश्वराः ॥ ६९ ॥

कुबेर, त्र्यम्बकसख, यक्षराट्, गुह्यकेश्वर, मनुष्यधर्मा (र्मन्) धनद, राजराज, धनाधिप, किन्नरेश, वैश्रवण, पौलस्त्य, नरवाहन, यक्ष "यक्षेश्वर" एकपिङ्ग-एकपिङ्गल, ऐलविल 'ऐडविड' श्रीद और पुण्यजनेश्वर ये १७ कुबेर के नाम हैं ॥ ६८।६९ ॥

बाग न. पु.

पुत्र (अस्योद्यानं) चैत्ररथम्पुत्रस्तु नलकूबरः।

स्थान पुरी पु. स. न.

विमान कैलासः(स्थान)मलका'पू''विमानं"तु पुष्पकम्॥७०॥

इसका बागीचा चैत्ररथ कहलाता है यह १ कुबेरके बागीचा का नाम है। और पुत्र नलकूबर कहाजाता है यह १ कुबेर के पुत्र का नाम है। और स्थान 'कैलास' कहाजाता है यह १ कुबेर के स्थान का नाम है व इसकी पुरी 'अलका' कहाती है यह १ कुबेर की पुरी का नाम है और इसका विमान 'पुष्पक' कहलाता है यह १ कुबेर के विमान का नाम है ॥ ७० ॥

पु. पु. पु. पु.

किन्नर स्यात्किन्नरः किंपुरुषस्तुरंगवदनो मयुः।

खजाना पु. पु.

खजानेकेभेद निधिर्ना शेवधि (भेदाः पद्मशङ्खादयो निधेः) ॥ ७१ ॥

इति स्वर्गवर्गः ॥

किन्नर, किंपुरुष, तुरङ्गवदन और मयु ये ४ किन्नर के नाम हैं। निधि व शेवधि ये २ सामान्यनिधि के नाम हैं। ये दोनों पुंलिङ्ग में रहते हैं (काकाक्षिगोलक) यानी कौवे की आँख की पुतली के न्यायकी नाईं 'ना' शब्द का संबन्ध दोनों में रहता है और पद्म, शङ्ख आदि निधियों के भेद कहलाते हैं यानी पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और खर्ब ये ९ निधियां कहलाती हैं ॥ ७१ ॥

इति स्वर्गवर्गविवरणम् ॥

अथ व्योमवर्गो व्याख्यायते ॥

स्त्री. स्त्री. न. न. न. न.
आकाश द्योदिवौ "द्वे स्त्रियाः" मभ्रं व्योमपुष्करमम्बरम्।
न. न. न. न. न. न.
नभोन्तरीक्षं गगनमनन्तं सुरवर्त्म खम् ॥ १ ॥
न. न. पु.न. पु.न.
वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशविहायसी।

इति व्योमवर्गः ॥

द्यो, दिव्, अभ्र, व्योम (मन्) पुष्कर, अम्बर, नभ (स्) अन्तरीक्ष–अन्तरिक्ष, गगन, अनन्त, सुरवर्त्म (र्त्मन्) ख, वियत्, विष्णुपद, आकाश और विहायस् ये १६ आकाश के नाम हैं। इनमें द्यो, दिव् ये २ स्त्रीलिङ्ग में होते हैं और आकाश, विहायस् ये २ विकल्प से पुंलिङ्ग में रहते हैं ॥ १ । ½ ॥

इति व्योमवर्गविवरणम् ॥

अथ दिग्वर्गो व्याख्यायते ॥

१ स्त्री. स्त्री. स्त्री. स्त्री. स्त्री.
दिशा दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च (ताः)।
स्त्री. स्त्री. स्त्री.
दिशा के भेद प्राच्यऽपाचीप्रतीच्यस्ताः (पूर्वदक्षिणपश्चिमाः) ॥ १ ॥
स्त्री. पु.स्त्री.न.
दिशाकीवस्तु उत्तरा दिगुदीची स्याद्दिश्यन्तु (त्रिषु) दिग्भवे।

दिश्, ककुभ्, काष्ठा, आशा और हरित् ये ५ दिशाओं के नाम हैं। उनमें दिश् शब्द एकवचन में दिक् बहुवचन में 'दिशः' होता है। भागुरि के मत में टाबन्त भी है और ककुभ् भान्त है वे पूर्व, दक्षिण, पश्चिम क्रमसे प्राची, अवाची, प्रतीची दिशायें कहाती हैं। जैसे पूर्वदिशा प्राची, दक्षिणदिशा अवाची और पश्चिमदिशा प्रतीची कहाती है और उत्तरदिशा उदीची कहलाती है ये चारों दिशाओं के दो २ नाम हैं और जो दिशाओं में हुआ पदार्थ है उसे 'दिश्य' कहते हैं यह तीनों लिङ्गों में होता है ॥ १ । ½ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
दिशाओंकेस्वामी इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत् ॥ २ ॥
पु. पु.
कुबेर ईशः (पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात्)।

इन्द्र, वह्नि, पितृपति, नैर्ऋत, वरुण, मरुत्, कुबेर और ईश ये क्रम से पूर्वादि

---

१ भागुरिमतेन टापि दिशा–दिक् तु स्त्रियां दिशा दान्ती ककुद्देवबधूः पविरिति (शब्दार्णवः) ॥

दिशाओं के स्वामी कहाते हैं। जैसे कि पूर्व का स्वामी इन्द्र, आग्नेय का अग्नि, दक्षिण का पितृपति, नैर्ऋत्य का नैर्ऋत, पश्चिम का वरुण, वायव्य का मरुत्, उत्तर का कुबेर और ईशान का स्वामी ईश कहाता है॥ २। ३॥

पु. पु. पु. पु. पु.

दिग्गज ऐरावतःपुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः॥ ३॥

पु. पु. पु.

पुष्पदन्तः सार्वभौमःसुप्रतीकश्च (दिग्गजाः)।

ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अञ्जन, पुष्पदन्त, सार्वभौम और सुप्रतीक ये ८ दिग्गजों के नाम हैं। जैसे पूर्वदिशा का ऐरावत, आग्नेय का पुण्डरीक, दक्षिण का वामन, नैर्ऋत्य का कुमुद, पश्चिम का अञ्जन, वायव्य का पुष्पदन्त, उत्तर का सार्वभौम और ईशानका सुप्रतीक ये आठ दिग्गज दिशाओं के हाथी कहलाते हैं॥३।३॥

स. स. स. स.

हथिनियां (करिण्यो)ऽभ्रमुकपिलापिङ्गलानुपमाःक्रमात्॥ ४॥

स. स. स. स.

ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती चाङ्गना चाञ्जनावती।

न. स.

दिशाओंकामध्य या कोन क्लीबाव्ययं त्वपदिशं दिशोर्मध्ये विदिक् स्त्रियाम्॥५॥

अभ्रमु, कपिला, पिङ्गला, अनुपमा, ताम्रकर्णी, शुभ्रदन्ती, अङ्गना और अञ्जनावती ये ८ क्रम से ऐरावतादि गजों की हथिनियों के नाम हैं। जैसे ऐरावत की अभ्रमु, पुण्डरीक की कपिला, वामन की पिङ्गला, कुमुद की अनुपमा, अञ्जन की ताम्रकर्णी, पुष्पदन्त की शुभ्रदन्ती, सार्वभौम की अङ्गना और सुप्रतीक की अञ्जनावती हथिनी कहाती हैं। अपदिश, विदिक्, प्रदिक् ये २ दिशाओं के मध्य या कोन के नाम हैं। इनमें "अपदिशम्" यह नपुंसक और अव्यय है और 'विदिक्' स्त्रीलिङ्ग है॥४।५॥

न. न. पु.न. न.

बीच बवण्डर अभ्यन्तरं त्वन्तरालं चक्रवालं(तु)मण्डलम्।

अभ्यन्तर, अन्तराल ये २ मध्य या बीच के नाम हैं। चक्रवाल, 'चक्रवाड' और मण्डल ये २ घेर वा मण्डल के नाम हैं याने बवण्डर के नाम कहाते हैं॥

न. पु. पु. पु. पु.

बादल अभ्रं मेघो वारिवाहः स्तनयित्नुर्बलाहकः॥६॥

पु. पु. पु. पु. पु.

धाराधरो जलधरस्तडित्वान्वारिदोम्बुभृत्।

पु. पु. पु. पु. पु.

घनजीमूतमुदिरजलमुग्धूमयोनयः॥ ७॥

१ "मेघास्तु त्रिविधास्तत्र वह्निजा धूमयोनयः। निःश्वासजास्तु जीमूतास्ते ज्ञेया जीवरूपिणः। यज्ञजास्तु घना घे.राः पुष्करावर्तकादय" (इति शब्दार्णवः)।

अभ्र—अब्भ्र, मेघ, वारिवाह, स्तनयित्नु, बलाहक, धाराधर, जलधर, तडित्वान्, वारिद, अम्बुभृत, घन, जीमूत, मुदिर, जलमुक् और धूमयोनि ये १५ मेघ याने बादल के नाम हैं ॥ ६। ७॥

स. स. पु.म.न.
मेघों की पांति **कादम्बिनी मेघमाला (त्रिषु) मेघभवे 'ऽभ्रियम्'।**
मेघों की वस्तु न. न. पु. न.
मेघगर्जना **स्तनितं गर्जितं मेघनिर्घोषोरसितादि च ॥ ८॥**

कादम्बिनी, मेघमाला ये २ मेघपङ्क्ति के नाम हैं। मेघ से उपजे पदार्थ में अभ्रिय, यह १ मेघोत्पन्न वस्तु का नाम है। जोकि तीनों लिङ्गों में कहा जाता है। स्तनित, गर्जित, मेघनिर्घोष और रसित आदिपद से ध्वनित आदि ये ४ मेघगर्जना के नाम हैं ॥ ८॥

स. स. स. स. स.
बिजली **शंपा शतह्रदा ह्रादिन्यैरावत्यः क्षणप्रभा।**
स. स. स. स. स.
तडित्सौदामनी विद्युच्चञ्चला चपला (अपि) ॥ ६॥

शंपा—(शम्बा) शतह्रदा, ह्रादिनी, ऐरावती, क्षणप्रभा, तडित्, सौदामनी (सौदामिनी, सौदाम्नी) विद्युत्, चञ्चला और चपला ये १० बिजली के नाम हैं ॥ ६॥

बिजली का पु. पु. पु. पु.
तड़पना, मेघोंकी **स्फूर्जथुर्वज्रनिर्घोषे मेघज्योतिरिरंमदः।**
चमक, इन्द्रध- न. न. न.
नुष, सीधा इन्द्र
धनुष **इन्द्रायुधं शक्रधनु (स्तदेव ऋजु) रोहितम् ॥ १०॥**

वज्र के शब्द में स्फूर्जथु—स्फुर्जथु होता है यह १ वज्र की ध्वनि का नाम है। मेघज्योति, इरंमद ये २ मेघ की ज्योति के नाम हैं। इन्द्रायुध, शक्रधनु ये २ इन्द्रधनुष के नाम हैं और वही जब सीधा हो तो 'रोहित' कहाता है यह १ सरल इन्द्रधनुष का नाम है ॥ १०॥

स. न. पु. पु.
वर्षा झूरा मेघ **वृष्टिर्वर्षं तद्विघातेऽवग्राहावग्रहौ (समौ)।**
पु. पु. पु.
धारा फुहारा **धारासंपात आसारः शीकरोऽम्बुकणाः स्मृताः ॥ ११॥**

वृष्टि, वर्ष ये २ वर्षा के नाम हैं। अवग्राह, अवग्रह ये २ वर्षा के न होनेके यानी झूरा के नाम हैं। धारासंपात, आसार ये २ महावर्षा के नाम हैं। शीकर-सीकर यह १ जलकण या फुहारे का नाम है ॥ ११॥

पु. पु.स. न.

ओला दुर्दिन वर्षोपलस्तु करका "मेघच्छन्नेऽह्नि" दुर्दिनम् ।

वर्षोपल, करका, 'करक' ये २ पत्थर या ओला के नाम हैं । और मेघों से अँधेरा किये हुए दिन में 'दुर्दिन' कहाजाता है 'अह्नि' यह रात्रि का भी उपलक्षण है इसलिये रात्रि में भी दुर्दिन होता है यह १ मेघों से ढके हुए दिन का नाम है ॥

स. स. पु. न.

ढांपना या छिपजाना अन्तर्धा व्यवधा पुंसि त्वन्तर्धिरपवारणम् ॥ १२ ॥

न. न. न. न.

अपिधानतिरोधानपिधानाऽऽच्छादनानि (च) ।

अन्तर्धा, व्यवधा, अन्तर्धि, अपवारण, अपिधान, तिरोधान, पिधान और आच्छादन वा छदन ये आठ अन्तर्धान (छिपजाने) के नामहैं । इनमें अन्तर्धा-व्यवधा ये २ स्त्रीलिङ्ग हैं और अन्तर्धि यह पुंलिङ्ग में कहाजाता है ॥ १२ । ½ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

चन्द्रमा हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुःकुमुदबान्धवः ॥ १३ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

विधुः सुधांशुः शुभ्रांशुरोषधीशो निशापतिः ।

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

अब्जो जैवातृकः सोमो ग्लौर्मृगाङ्कः कलानिधिः॥१४॥

पु. पु. पु. पु.

द्विजराजः शशधरो नक्षत्रेशः क्षपाकरः ।

हिमांशु, चन्द्रमाः (मस्) चन्द्र 'चन्द' इन्दु, कुमुदबान्धव "कुमुदबन्धु" विधु, सुधांशु, शुभ्रांशु, ओषधीश, निशापति, अब्ज, जैवातृक, सोम, ग्लौ, मृगाङ्क, कलानिधि, द्विजराज, शशधर, शशाङ्क, शशी (शिन्) नक्षत्रेश और क्षपाकर उसी प्रकार निशाकर ये २० चन्द्रमा के नाम हैं ॥ १३ । १४ । ½ ॥

स. पु.न. पु.स.न.

कला,बिम्ब, कला(तु) षोडशो भागो बिम्बोऽस्त्रीमण्डलं(त्रिषु)॥१५॥

न. पु.न. पु.न. पु. न.

हिस्सा,आधा भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्द्धोऽर्धं (समेंऽशके) ।

चन्द्रमा का सोलहवां भाग 'कला' कहाती है यह १ चन्द्रमा के षोडशांश का नाम है । बिम्ब, मण्डल ये २ सूर्य और चन्द्रमण्डल के नाम हैं इनमें 'बिम्ब' स्त्रीलिङ्ग नहीं है किन्तु पुंलिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग है और 'मण्डल' तीनों लिङ्ग में है ।

भित्त, शकल, खण्ड और अर्ध ये ४ टुकड़ेमात्र के नाम हैं । इनमें 'भित्त' नपुंसक है शकल व खण्ड ये २ विकल्प से पुंलिङ्ग में रहते हैं और 'अर्धशब्द' वाच्यलिङ्ग है जैसे "अर्धा शाटी, अर्धः पटः, अर्धं वस्त्रम्" और समानभाग में अर्ध शब्द नपुंसकलिङ्ग में ही रहताहै यह १ बराबर दो खण्डों के बीच में से एक खण्ड का नाम है ॥ १५ । ½ ॥

स.　स.　स.　पु.　स.
चांदनी　**चन्द्रिका[1] कौमुदी ज्योत्स्ना प्रसाद(स्तु)प्रसन्नता॥१६॥**
स्वच्छता　पु.　पु.　न.　न.　न.　न.
कलङ्क　**कलङ्काङ्कौ लाञ्छनं च चिह्नं लक्ष्म (च) लक्षणम् ।**

चन्द्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना ये ३ चांदनी के नाम हैं । प्रसाद, प्रसन्नता ये २ स्वच्छता या निर्मलता के नाम हैं और कलङ्क, अङ्क, लाञ्छन, चिह्न, लक्ष्म, "लक्षण" 'लक्ष्मण' ये ६ चन्द्रमा के अन्तरीय निशान के नाम हैं ॥ १६ । ½ ॥

बड़ीशोभा　स.　स.　स.　स.　स.
या शोभामात्र　**सुषमा 'परमाशोभा' शोभाकान्तिर्द्युतिश्छविः ॥ १७ ॥**

सुषमा यह १ महाशोभा का नाम है और शोभा, कान्ति, द्युति–द्युती–द्युत्ति, छवि–छवी ये ४ शोभा के नाम हैं यानी शोभामात्र के नाम कहाते हैं ॥ १७ ॥

पु.　पु.　पु.　न.　न.
पाला　**अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुहिनं हिमम् ।**
न.　स.　स.　स.
महापाला　**प्रालेयं महिका चाथ हिमानी हिमसंहतिः ॥ १८ ॥**

अवश्याय, नीहार, तुषार, तुहिन, हिम, प्रालेय, महिका–मिहिका ये ७ हिम (पाला) के नाम हैं और हिमानी, हिमसंहति ये २ हिमसमूह (महापाला) के नाम हैं ॥ १८ ॥

न.　पु.स.न.　पु.स.न.　पु.स.न.
ठंढ　**शीतं (गुणेतद्वदर्थाः) सुषीमःशिशिरो जडः ।**
पु.स.न.　पु.स.न.　पु.स.न.　पु.स.न.
ठंढ पर्याय　**तुषारः शीतलः शीतो हिमः (सप्तान्यलिङ्गकाः)॥ १९॥**

गुणमें यानी स्पर्शविषय में शीत होता है यह १ शीतगुण का नाम है और सुषीम, शिशिर, जड, तुषार, शीतल, शीत और हिम ये ७ शीतआदि के पर्यायवाची हैं और जिन्हों का शीतगुणवान् अर्थ है वे अन्यलिङ्ग यानी वाच्यलिङ्ग हैं जैसा वाच्यका लिङ्ग होता है उसीके समान इनका भी लिङ्ग कहाजाता है॥१९॥

---

१ चन्द्रं कायतीति व्युत्पत्त्या चन्द्रका इत्यपि स्यात् ।

पु. पु. पु. पु.

ध्रुव अगस्त्य ध्रुव औत्तानपादिः स्यादगस्त्यः कुम्भसंभवः ।

पु. स.

अगस्त्यभार्या मैत्रावरुणिरस्यैव लोपामुद्रा (सधर्मिणी) ॥ २० ॥

ध्रुव, औत्तानपादि ये २ ध्रुव के नाम हैं । अगस्त्य—अगस्ति, कुम्भसंभव, मैत्रावरुणि ये ३ अगस्त्य के नाम हैं । और इनकी सधर्मिणी (पत्नी) 'लोपामुद्रा' कहाती है यह १ अगस्त्य की भार्या का नाम है ॥ २० ॥

न. न. न. स. स. स.न.

तारा नक्षत्रमृक्षं भं तारा तारकाप्युडु (वा स्त्रियाम्) ।

दक्षकीकन्या स. स. स.

अश्विनी दाक्षायण्यो(ऽश्विनीत्यादितारा)अश्वयुगश्विनी॥२१॥

नक्षत्र, ऋक्ष, भ, तारा—तारका—तारक और उडु ये ६ नक्षत्र सामान्य के नाम हैं । इनमें उडु विकल्प से स्त्रीलिङ्ग में होता है और अपिशब्द से तारका शब्द भी वैसाही रहता है और अश्विनी आदि २७ नक्षत्र दाक्षायणीसंज्ञक कहलाते हैं । यह १ अश्विन्यादिनक्षत्रों का नाम है और अश्वयुक्, अश्विनी ये २ अश्विनी नक्षत्र के नाम हैं ॥ २१ ॥

विशाखा स. स. पु. पु. स.

पुष्य धनिष्ठा राधाविशाखा पुष्ये तु सिध्यतिष्यौ (श्रविष्ठया) ।

पूर्व और उत्तर स. स. स.

भाद्रपद (समा)धनिष्ठा स्युः प्रोष्ठपदा भद्रपदाः (स्त्रियः)॥ २२ ॥

राधा, विशाखा ये २ विशाखा के नाम हैं । पुष्य, सिध्य, तिष्य ये ३ पुष्य के नाम हैं । धनिष्ठा, श्रविष्ठा के समान है यानी श्रविष्ठा, धनिष्ठा ये २ धनिष्ठा के नाम हैं । प्रोष्ठपदा—प्रौष्ठपदा, भद्रपदा—भाद्रपदा ये २ पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपद के नाम हैं । पूर्वे—प्रोष्ठपदे २ और उत्तरे—प्रोष्ठपदे २ ऐसे चार होने से इनमें बहुवचन है और ये स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ २२ ॥

पु.न. पु.न. स.

मृगशिरा मृगशीर्षमृगशिरस्तस्मिन्नेवाग्रहायणी ।

स.

इल्वल इन्वका[2] (स्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः) ॥ २३ ॥

---

१ एवं चाद्याश्चतस्रः स्त्रियां बहुत्वे, मृगशिरोऽस्त्रियामेकत्वे, आर्द्रा स्त्र्येकत्वे, पुनर्वसुपुष्यौ पुंस्येकत्वे, आश्लेषाद्ये स्त्रीबहुत्वे, फल्गुन्यौ स्त्रीद्वित्वे, हस्तो मिथुनैकत्वे, चित्रा स्त्र्येकत्वे, स्वातिर्मिथुनैकत्वे, विशाखाद्ये स्त्रीबहुत्वे, ज्येष्ठा स्त्र्येकत्वे, मूलमस्त्रियामेकत्वे, आषाढाद्वये स्त्रीबहुत्वे, श्रवणो मिथुनैकत्वे, धनिष्ठाद्ये स्त्रीबहुत्वं, भाद्रपदाद्वयं स्त्रीद्वित्वे, रेवती स्त्र्येकत्व इति ॥

२ इन्वका नक्षत्रमिति भतेः ।

मृगशीर्ष, मृगशिर (स्) मृग, आग्रहायणी ये ३ मृगशिरा के नाम हैं। और उसी मृगशिरा के शिरोदेश में जो छोटी सी पांच तारायें रहती हैं उन्हें इन्वका—इल्वका या इल्वला कहते हैं॥ २३॥

पु. पु. पु. पु. पु.
बृहस्पति **बृहस्पतिः सुराचार्यो गीर्पतिर्धिषणोगुरुः।**
पु. पु. पु. पु.
जीवआङ्गिरसोवाचस्पतिश्चित्रशिखण्डिजः॥ २४॥

बृहस्पति, सुराचार्य, गीर्पति, गीःपति, गीः पति, गीष्पति, धिषणा, गुरु, जीव, आङ्गिरस, वाचस्पति और चित्रशिखण्डिज ये ६ बृहस्पति के नाम हैं॥ २४॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
शुक्र, **शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना भार्गवः कविः।**
पु. पु. पु. पु. पु.
मंगल **अङ्गारकः कुजो भौमो लोहिताङ्गो महीसुतः॥ २५॥**

शुक्र, दैत्यगुरु, काव्य, उशना (स्) भार्गव और कवि ये ६ शुक्र के नाम हैं और अङ्गारक, कुज, भौम, लोहिताङ्ग और महीसुत ये ५ मंगल के नाम हैं॥२५॥

पु. पु. पु. पु. पु.
बुध, शनैश्चर, **रौहिणेयो बुधः सौम्यः(समौ) सौरिशनैश्चरौ।**
न. पु. पु. पु. पु.
राहु, केतु **तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैंहिकेयो विधुंतुदः॥ २६॥**

रौहिणेय, बुध, सौम्य ये ३ बुध के नाम हैं और सौरि (सौर) शनैश्चर-"शनि" ये २ शनैश्चर के नाम हैं। तम, राहु, स्वर्भानु, सैंहिकेय और विधुन्तुद ये ५ राहुके नाम हैं और केतु, शिखी ये २ केतु के नाम हैं॥ २६॥

पु.
सप्तर्षि, **सप्तर्षयोमरीच्यत्रिमुखाश्चित्रशिखण्डिनः।**
न.
लग्न, राशि **राशीनामुदयो लग्नं (ते तु मेषवृषादयः)॥ २७॥**

मरीचि, अत्रिआदि सप्तर्षि चित्रशिखण्डिसंज्ञक होते हैं। मुखशब्द से पुलस्त्य, पुलह आदि सप्तर्षि हैं वे सब ये हैं मरीचि, अङ्गिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वसिष्ठ ये ७ सात चित्रशिखण्डिनामक सप्तर्षि कहलाते हैं। राशियों के उदय को 'लग्न' कहते हैं वे राशियां मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ और मीन बारह होती हैं॥ २७॥

---

१ मरीचिरङ्गिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः। वसिष्ठश्चेति सप्तैते ज्ञेयाश्चित्रशिखण्डिनः॥
२ मेषो वृषोऽथ मिथुनं कर्कटः सिंहकन्यके। तुलाथ वृश्चिको धन्वी मकरः कुम्भमीनकाविति॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
सूर्य सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः ।
पु. पु. पु. पु. पु.
भास्कराऽहस्करब्रध्नप्रभाकरविभाकराः ॥ २८ ॥
पु. पु. पु. पु. पु.
भास्वद्विवस्वत्सप्ताश्वहरिदश्वोष्णरश्मयः ।
पु. पु. पु. पु. पु. पु.
विकर्तनार्कमार्तण्डमिहिरारुणपूषणः ॥ २९ ॥
पु. पु. पु. पु. पु.
द्युमणिस्तरणिर्मित्रश्चित्रभानुर्विरोचनः ।
पु. पु. पु. पु.
विभावसुर्ग्रहपतिस्त्विषांपतिरहर्पतिः ॥ ३० ॥
पु. पु. पु. पु. पु. पु.
भानुर्हंसः सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः ।

सूर, (शूर) सूर्य, अर्यमा (मन्) आदित्य, द्वादशात्मा (त्मन्) दिवाकर, भास्कर, अहस्कर, ब्रध्न, प्रभाकर, विभाकर, भास्वान् (स्वत्) विवस्वान् (स्वत्) सप्ताश्व, हरिदश्व, उष्णरश्मि, विकर्तन, अर्क, मार्तण्ड, "मार्ताण्डः" मिहिर, अरुण, पूषा (षन्) द्युमणि (दिनमणि) तरणि, मित्र, 'मित्र' चित्रभानु, विरोचन, विभावसु, ग्रहपति, त्विषांपति, अहर्पति, भानु, हंस, सहस्रांशु, तपन (तापन) सविता और रवि ये ३७ सूर्य के नाम हैं ॥ २८ । ३० । १ ॥

पु. पु. पु.
आसपास रहने वाले सूर्यगण माठरःपिङ्गलोदण्ड (श्चण्डांशोःपारिपार्श्वकाः) ॥३१॥
पु. पु. पु. पु. पु.
सारथि सूर्यसूतोऽरुणोनूरुः काश्यपिर्गरुडाग्रजः ।
पु. पु. न. न.
मण्डल परिवेषस्तु परिधिरुपसूर्यकमण्डले ॥ ३२ ॥

माठर, पिङ्गल, दण्ड ये ३ सूर्य के आसपास रहनेवाले गणों के नाम हैं । सौर-तन्त्र में इन्द्र आदि अठारह सूर्य परिचारक हैं उनमें प्रधानता से माठर आदि तीन कहे हैं और सूर्यसूत, अरुण, अनूरु, काश्यपि और गरुडाग्रज ये ५ सूर्यसारथी के नाम हैं । और परिवेष—परिवेश, परिधि, उपसूर्यक और मण्डल ये ४ सूर्य व चन्द्रमा के उत्पातादि से उपजे मण्डल (घेर) के नाम हैं ॥ ३१ । ३२ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु. पु.
किरण किरणोस्रमयूखांशुगभस्तिघृणिरश्मयः ।
पु. पु. पु.स. स.
भानुःकरो मरीचिः(स्त्रीपुंसयो)दीधितिः(स्त्रियाम्)॥३३॥

किरण, उस्र, मयूख, अंशु, गभस्ति, घृणि, रश्मि-"वृष्णि-पृश्नि" भानु, कर, मरीचि और दीधिति ये ११ सूर्यकिरणों के नाम हैं । इनमें मरीचि स्त्री व पुंलिङ्ग है और दीधिति स्त्रीलिङ्ग में रहता है ॥ ३३ ॥

स. स. स. स. स. स. स. स. स.
प्रभा (स्युः)प्रभारुग्रुचिस्त्विड्भाभाश्छविद्युतिदीप्तयः ।
न. न. पु. पु. पु.
घाम रोचिः शोचि (रुभे क्लीबे) प्रकाशो द्योत आतपः॥ ३४ ॥

प्रभा, रुक् (चू) रुचि, त्विट् (ष्) भा, भाः (स्) छवि, 'छवी' द्युति, दीप्ति, रोचिः, शोचिः ये ११ प्रभामात्र के नाम हैं । इनमें भास् सान्त पुंलिङ्ग भी है और दीप्तिपर्यन्त स्त्रीलिङ्ग हैं और रोचिः, शोचिः ये २ सान्त व नपुंसकलिङ्ग हैं । प्रकाश, द्योत, आतप ये ३ सूर्य की प्रभा या घाम के नाम हैं ॥ ३४ ॥

न. न. न. न.
थोड़ागरम कोष्णं कवोष्णं मन्दोष्णं कदुष्णं (त्रिषु तद्वति) ।
न. न. न. स. स.
बड़ागरम मृगतृष्णा तिग्मं तीक्ष्णं खरं(तद्वत्)मृगतृष्णा मरीचिका ॥ ३५ ॥

इति दिग्वर्गः ॥

कोष्ण, कवोष्ण, मन्दोष्ण, कदुष्ण ये गुण में नपुंसक लिङ्ग होते हैं और गुणवान् में तीनों लिङ्ग रहते हैं ये ४ कुछेक गरम के नाम हैं । तिग्म, तीक्ष्ण और खर ये गुण में नपुंसक हैं और गुणवान् में विशेष्यनिघ्न कहाते हैं । जैसे कि "तीक्ष्णोऽसिः, तीक्ष्णा गदा, तीक्ष्णं चक्रम्" आदि होते हैं ये ३ बड़े गरम के नाम हैं । मृगतृष्णा, मरीचिका ये २ मृगतृष्णा के नाम हैं ॥ ३५ ॥

इति दिग्वर्गविवरणम् ॥

अथ कालवर्गो व्याख्यायते ॥

पु. पु. पु. पु. स.
समय, कालो दिष्टोऽप्यनेहापि समयो (ऽप्यथ) पक्षतिः ।
स.
पहली तिथि तिथियां प्रतिपद् (द्वे इमे स्त्रीत्वे) तदाद्यास्तिथयो (द्वयोः) ॥ १ ॥

---

१ भातीति किप् आकन्तत्वाभावात् हलोमादिः 'भाः' विसर्गान्तः ॥

काल, दिष्ट, * नेहा (स्) समय ये ४ सामान्यकाल के नाम हैं। पक्षति, प्रतिपद् ये दोनों स्त्रीलिङ्ग में रहते हैं। ये २ परेवा के नाम हैं। और परेवा आदि तिथियां पुंलिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग में रहती हैं यह १ सामान्यतिथि का नाम है ॥ १ ॥

पु. न. न. पु. न. पु. न.

दिन घस्रोदिनाहनी (वा) तु (क्लीबे)दिवसवासरौ।

पु. न. न. न. न.

प्रभात प्रत्यूषोहर्मुखं कल्यमुषः प्रत्युषसी (अपि) ॥ २ ॥

न. पु.न.अ. स. स.

शाम गोधूली प्रभातं च दिनान्ते तु सायः सन्ध्या पितृप्रसूः।

घस्र, दिन, अहः, (न्) दिवस, वासर—वाशर, ये पांच दिनके नाम हैं इनमें दिवस—वासर ये दो पुं. नपुंसक हैं। प्रत्यूष, अहर्मुख, कल्य—काल्य उषः (स्) 'उषा' प्रत्यूषः (स्) प्रभात—विभात—भात ये ६ प्रातःकाल (सुबह) के नाम हैं और दिनान्त में साय वा सायम् होता है यह १ सायंकाल (शाम) का नाम है। इसमें साय शब्द पुं. व नपुंसक है और मान्त अव्यय भी अव्यय वर्ग में कहा जावेगा। और सन्ध्या, (सन्धा) पितृप्रसू ये २ सन्ध्या के नाम हैं ॥ २ । ½ ॥

पु. पु. पु. स.

दिनके भाग प्राह्णापराह्णमध्याह्ना(स्त्रिसन्ध्य)मथ शर्वरी ॥ ३ ॥

स. स. स. स. स. स.

रात्रि निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा क्षणदा क्षपा।

स. स स. स. स.

विभावरीतमस्विन्यौ रजनी यामिनी तमी ॥ ४ ॥

प्राह्ण, अपराह्ण, मध्याह्न—इनमें प्रातःकाल से लेकर दोपहर तक 'प्राह्ण' कहाता है। ठीक दोपहर को 'मध्याह्न' व तीसरे पहर को 'अपराह्ण' कहते हैं और जब इन तीनों को एक शब्द से कहना होता है तो 'त्रिसन्ध्य' वा 'त्रिसन्ध्या' कहते हैं। यह एक त्रिलाद्यन्त मध्यों का नाम है। शर्वरी, शार्वरी, निशा, निशीथिनी, रात्रि—रात्री, त्रियामा, क्षणदा, क्षपा, विभावरी, तमस्विनी, रजनी, रजनि, यामिनी, तमि—तमी 'तमा' भी ये बारह रात्रि के नाम हैं ॥ ३ । ४ ॥

अँधेरी राति स. * स. स.

चाँदनीराति तमिस्रा तामसी रात्रिर्ज्यौत्स्नी (चन्द्रिकयान्विता)।

पूर्व व परदिन स.

संयुत राति (आगामिवर्तमानाहर्युक्तायां निशि) पक्षिणी ॥ ५ ॥

जो बड़े अँधेरे से संयुक्त रात्रि है उसको 'तमिस्रा' कहते हैं यह १ बड़ी अँधेरी राति का नाम है। अथवा तमिस्रा व तामसी ये २ नाम अँधेरी राति के कहाते हैं

और जो चाँदनी से संयुक्त रात्रि है उसे 'ज्यौत्स्नी' कहते हैं यह १ चाँदनी राति का नाम है। पूर्व व परदिन से युक्त रात्रि को 'पक्षिणी' कहते हैं यह १ दो दिन के बीच में प्राप्त हुई राति का नाम है ॥ ५ ॥

न. पु. न.
रात्रिसमूह प्रदोष **गणरात्रं(निशाबह्व्यः) प्रदोषो रजनीमुखम् ।**
पु. पु. पु. पु.
आधी रात पहर **अर्धरात्रनिशीथौ द्वौ द्वौ यामप्रहरौ(समौ) ॥ ६ ॥**

बहुत रात्रियों को 'गणरात्र' कहते हैं यह १ रात्रिसमुदाय का नाम है। प्रदोष, रजनीमुख ये २ रात्र्यारम्भ के नाम हैं। अर्धरात्र, निशीथ ये २ आधी-रात्रि के नाम हैं। ये दोनों समानार्थ व समानलिङ्ग कहाते हैं और याम, प्रहर ये भी दोनों समानार्थ व समानलिङ्ग कहे जाते हैं। ये २ पहर यानी रात्रि व दिनके आठवें भागके नाम हैं ॥ ६ ॥

पु.
पर्वसन्धि अमा व पूर्णिमा **(स)पर्वसन्धिः(प्रतिपत्पञ्चदश्योर्यदन्तरम्) ।**
स. स. स.
पूर्णमासी **पक्षान्तौ पञ्चदश्यौ द्वे पौर्णमासी(तु)पूर्णिमा ॥ ७ ॥**

परेवा और पौर्णमासी का जो अन्तर (मध्य) है उसे पर्व या सन्धि या पर्व-सन्धि कहते हैं यह १ पर्वसन्धि का नाम है। पूर्णिमा, अमावास्या दोनों पक्षान्त कहाती हैं अथवा पक्षान्त, पञ्चदशी ये २ अमा व पूर्णिमा के नाम हैं और 'पौर्णमासी–पूर्णमासी–पूर्णिमासी–पूर्णिमा–पूर्णमा–पौर्णिमा' ये २ पौर्णमासी के नाम हैं ॥ ७ ॥

स. स.
कलाहीन पूर्णिमा, कला सहित पूर्णिमा **(कलाहीने)सानुमतिः (पूर्णे) राका (निशाकरे) ।**
स. स. पु. पु.
अमावास्या **अमावास्या त्वमावस्या दर्शः सूर्येन्दुसंगमः ॥ ८ ॥**

उदयकाल में परेवा के योग से कलाहीन चन्द्रमा के रहने पर वह पूर्णमासी 'अनु-मति' कहाती है यह १ कलाहीन पूर्णिमा का नाम है। और पूर्णचन्द्रमा के रहने पर वही पूर्णिमा 'राका' कही जाती है यह १ कलासहित पूर्णिमा का नाम है। और अमावास्या, अमावस्या, अमावासी, अमावसी, अमामासी, अमामसी, अमा, दर्श और सूर्येन्दुसंगम ये चार अमावस्या के नाम हैं ॥ ८ ॥

स. स.

अमा विशेष (साऽदृष्टेन्दुः) सिनीवाली (सानष्टेन्दुकला) कुहूः ।

कुहू पु. पु.

ग्रहण उपरागो ग्रहो (राहुग्रस्ते त्विन्दौ च पूष्णि च) ॥ ९ ॥

पु. पु. पु. पु.

धूमकेतु सोपप्लवोपरक्तौ द्वावग्न्युत्पात उपाहितः ।

चतुर्दशी के योग से जिस अमावस्या में चन्द्रमा देखा गया हो उसे सिनीवाली कहते हैं व जिसमें चन्द्रकला नष्ट होगई हो उसे कुहू या कुहु कहते हैं ये २ अमाविशेष के नाम हैं । राहु से चन्द्रमा व सूर्य के ग्रस्त होने पर उपराग, ग्रह, सोपप्लव, उपरक्त ये ४ ग्रहण के नाम हैं । अग्न्युत्पात, उपाहित ये २ आकाशादिकों में अग्निकृत उत्पात के नाम हैं । या जो तारा टूटकर गिरता है उसे कहते हैं या धूमकेतु तथा उल्का को भी कहते हैं ॥ ९ । १ ॥

एकत्र स्थित पु.

चन्द्र सूर्य (एकयोक्त्या) पुष्पवन्तौ (दिवाकरनिशाकरौ) ॥१०॥

साधारण वचन से सूर्य चन्द्रमा पुष्पवन्त कहाते हैं यह मतुबन्त व अकारान्त भी कहाता है और कहीं पुष्पदन्त भी है यह १ एकत्र स्थित चन्द्रसूर्य का नाम है ॥ १० ॥

स. स.

काष्ठा, कला, (अष्टादश निमेषास्तु) काष्ठा 'त्रिंशत्तु ताः' कला ।

२
पु. पु.न.

क्षण, मुहूर्त (तास्तु) त्रिंशत्क्षणस्ते तु मुहूर्तो (द्वादशास्त्रियाम्) ॥११॥

दो क्षणों का लव कहाता है और दो लवों का निमेष इत्यादि शास्त्रसिद्ध अठारह निमेषों की काष्ठा होती है तीस काष्ठाओं की कला कहाती है व तीस कलाओं का क्षण होता है और बारह क्षणों का मुहूर्त कहा जाता है यह स्त्रीलिङ्ग में नहीं होता है वरन पुं. नपुंसक में रहता है यह एक २ काष्ठादिकों का नाम है ॥ ११ ॥

पु.न. पु.

दिनरात ते तु त्रिंशदहोरात्रः पक्ष (स्ते दशपञ्च च) ।

पक्ष पु. पु. पु.

पक्षभेद पक्षौ पूर्वापरौ शुक्लकृष्णौ मासस्तु तावुभौ ॥ १२ ॥

मास

उन तीस मुहूर्तों का 'अहोरात्र' होता है व उन पन्द्रह अहोरात्रों का 'पक्ष' कहा

१ जो पूर्व अमावास्या है वह सिनीवाली और जो उत्तर अमावास्या है उसे कुहू कहते हैं यह श्रुति का प्रमाण है ॥

२ निमेषोऽक्षिस्पन्दनकालः " अक्षिपक्ष्मपरिक्षेपो निमेषः परिकीर्तितः " इत्युक्तम् ॥

जाता है और शुक्लपक्ष पूर्वसंज्ञक व कृष्णपक्ष अपरसंज्ञक कहाता है और उन दोनों पक्षों का मास और (माम्) भी होता है यह एक२ अहोरात्रादिकों का नाम है॥१२॥

पु. न.

ऋतु आधा वर्ष (द्वौ द्वौ मार्गादिमासौ)स्यादृतुस्तैरयनं (त्रिभिः)।

१ पु.

वर्ष (अयनेद्वे) (गतिरुदग्दक्षिणार्कस्य) वत्सरः॥ १३॥

मार्गशीर्ष आदि दो २ मासों का ऋतु होता है वह हेमन्तादिसंज्ञक है और कहीं "माघादी" भी पाठ है उसका जो उपक्रम है वह अयनारम्भ के वश से जानना चाहिये यह १ ऋतु का नाम है। उन तीन ऋतुओं का 'अयन' होता है यह १ अयन का नाम है। वह अयन सूर्य की गतिभेद से दो भाँति का है जैसे कि सूर्य की उत्तर गति को 'उत्तरायण' और दक्षिण गति को 'दक्षिणायन' कहते हैं इस भाँति दो अयनों का बरस कहाजाता है॥ १३॥

न. न.

समरात्रिदिन (समरात्रिंदिवे काले) विषुवद्विषुवं (च तत्)।

विषुवत्, विषुवान्, विषुव, विषुय और विषुण ये २ समरात्रिदिन के नाम हैं। यानी जिस समय तुला की संक्रान्ति और मेष की संक्रान्ति में दिन व राति बराबर होते हैं उस काल को कहते हैं॥

पु. पु. पु. पु.

अगहन मार्गशीर्षे सहा मार्ग आग्रहायणिकश्च सः॥ १४॥

मार्गशीर्ष, सहा (स्) सह, मार्ग, आग्रहायणिक और अग्रहायण भी ये ४ मार्गमास (अगहन) के नाम हैं॥ १४॥

पु.२ पु. पु. पु. पु. पु.

पूष, माघ, पौषतैषसहस्यौ(द्वौ)तपामाघे(ऽथ) फाल्गुने।

पु. पु. पु. पु. पु.

फागुन, चैत स्यात्तपस्यः फाल्गुनिकः स्याच्चैत्रे चैत्रिको मधुः॥१५॥

पौष, तैष, सहस्य ये ३ पौष (पूस) मास के नाम हैं। तपाः (स्) तप, माघ ये २ माघमास के नाम हैं। फाल्गुन, तपस्य, फाल्गुनिक ये ३ फाल्गुनमास के नाम हैं। और चैत्र, चैत्रिक, मधु ये ३ चैत्रमास (चैतमहीना) के नाम हैं॥ १५॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

बैशाख ज्येष्ठ वैशाखे माधवो राधो ज्यैष्ठे शुक्रश्शुचि (स्त्वयम्)।

पु. पु. पु. पु.

आषाढ़ सावन आषाढे श्रावणे तु स्यान्नभाः श्रावणिकश्च (सः)॥१६॥

---

१ 'अर्कस्य' इति ग्रहणं चान्द्रत्वव्यावृत्त्यर्थं पक्षादिकं तु चान्द्रमुक्तम्—अयनन्तु न चान्द्रं किन्तु सौरमेवेति दीक्षितः॥

२ पुष्ययुक्ता पौर्णमासी पौषी मासे तु यत्र सा। नाम्ना स पौषो माघाद्याश्चैवमेकादशापरे॥ १॥ इति कश्चित्स्पष्टनानं व्याख्यातम्॥

वैशाख, माधव, राध ये ३ वैशाखमास के नाम हैं। ज्येष्ठ 'ज्येष्ठ' और शुक्र ये २ ज्येष्ठमास के नाम हैं। शुचि, आषाढ 'अषाढक' ये २ आषाढ मास के नाम हैं। और श्रावण, नभाः (स्) नभ, श्रावणिक–ये ३ श्रावण मास के नाम हैं ॥ १६ ॥

पु. पु. पु. पुं.

भादों, **स्युर्नभस्यप्रौष्ठपदभाद्रभाद्रपदाः (समाः)।**

कुआर, पु. पु. पु. पु.

कार्तिक **स्यादाश्विनइषोऽप्याश्वयुजोऽपि स्यात्तु कार्त्तिकः ॥ १७ ॥**

नभस्य, प्रौष्ठपद, भाद्र, भाद्रपद–ये ४ भाद्रमास (भादों) के नाम हैं। ये समानार्थ व समानलिङ्ग कहाते हैं और आश्विन, इष, आश्वयुज 'अश्वयुज' ये ३ आश्विन (कार) मास के नाम हैं ॥ १७ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.न.

हेमन्त **बाहुलोर्जौ कार्त्तिकिको हेमन्तः शिशिरो (ऽस्त्रियाम्)।**

शिशिर पुं. पु. पु. पु. पु.

वसन्त **वसन्ते पुष्पसमयः सुरभिर्ग्रीष्म ऊष्मकः ॥ १८ ॥**

पु. पु. पु. पु. पु.

ग्रीष्म **निदाघ उष्णोपगम उष्ण ऊष्मागमस्तपः।**

कार्तिक, बाहुल, ऊर्ज, कार्त्तिकिक ये ४ कार्त्तिक (कातिक) मास के नाम हैं। हेमन्त यह १ मार्ग पौष से उपजे (हेमन्त) ऋतु का नाम है। शिशिर स्त्रीलिङ्ग में नहीं किन्तु पुं. नपुंसक में होता है यह १ माघ फाल्गुन से उपजे शिशिर ऋतु का नाम है। वसन्त, पुष्पसमय, सुरभि ये ३ चैत्र वैशाख से उपजे (वसन्त) ऋतु के नाम हैं। और ग्रीष्म, ऊष्मक–ऊष्मा–ऊष्म, निदाघ, उष्णोपगम, उष्ण, ऊष्मागम और तप ये सात ज्येष्ठ आषाढ़ से उपजे (ग्रीष्म) ऋतु के नाम हैं ॥ १८ ॥ ३ ॥

स. स.

वर्षा **स्त्रियां प्रावृट् (स्त्रियां भूम्नि) वर्षा (अथ) शरत्स्त्रियाम् ॥ १९ ॥**

पु.

शरत् **(षडमी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां युगैः क्रमात्)।**

प्रावृट्–'प्रावृष' वर्षा ये २ वर्षा ऋतु के नाम हैं। उनमें 'प्रावृट्' शब्द षकारान्त होकर स्त्रीलिङ्ग में रहता है और वर्षा शब्द स्त्रीलिङ्ग व बहुवचनान्त है और शरद्–शरदा यह १ शरद् ऋतु का नाम है। ये हेमन्त आदि ६ ऋतुसंज्ञक पुंलिङ्ग में रहते हैं और वे मार्गशीर्षादि मासों के षट्युग्मों के क्रम से जानना चाहिये यह १ हेमन्तादि षट्ऋतुओं का नाम है ॥ १९ ॥ ३ ॥

---

१ आदाय मार्गशीर्षाच्च द्वौ द्वौ मासौ ऋतुर्मतः।

उ॰ उ॰ पु॰ पु॰ न॰ स॰ स॰

वर्ष या साल **संवत्सरो वत्सरोऽब्दो हायनो(ऽस्त्री) शरत्समाः ॥ २० ॥**

संवत्सर, वत्सर, अब्द, हायन, शरत्, (शरद) सम ये ६ संवत्सर (साल) के नाम हैं । इनमें हायन शब्द स्त्रीलिङ्ग में नहीं बरन पुं. नपुंसक में रहता है और सम शब्द प्रायः बहुवचनान्त है और कहीं एकवचनान्त भी पायाजाता है ॥ २० ॥

पु॰ पु॰ पु॰

पितृदिन देवदिन **(मासेन स्या) दहोरात्रः पैत्रो(वर्षेण) दैवतः ।**

प॰ पु

ब्रह्माका दिन कल्प **(दैवे युगसहस्रे द्वे) ब्राह्मःकल्पौ तु (तौ नृणाम्) ॥२१॥**

मनुष्यों के एक मास से पितरों का 'अहोरात्र' होता है यानी एक रात्रि दिन होते हैं वहां कृष्णपक्ष दिन कहाता है व शुक्लपक्ष रात्रि कहाती है यह एक पैत्रदिन का नाम है । वैसेही मनुष्यों के एक वर्ष से देवताओं का 'अहोरात्र' होता है वहां उत्तरायण दिन और दक्षिणायन रात्रि कहाती है । यह १ दैवत दिन का नाम है । और देवताओं के दो सहस्र युग से ब्रह्मा का अहोरात्र होता है यानी देवताओं के एक सहस्रयुगसे ब्रह्मा का १ दिन होता है उसमें प्राणियों का स्थितिकाल कहाजाता है और उतनीही रात्रि होती है उसमें प्राणियों का प्रलयकाल होजाता है । यह १ ब्रह्मा के दिनका नाम है । और जो देवताओं के दो सहस्रयुग हैं वे मनुष्यों के स्थिति व प्रलयकाल कहाते हैं यह १ कल्पका नाम है ॥ २१ ॥

न॰

मन्वन्तर **मन्वन्तरन्तु(दिव्यानां युगानामेकसप्ततिः) ।**

पु॰ पु॰ पु॰ पु॰ पु॰

प्रलय **संवर्तः प्रलयः कल्पः क्षयः कल्पान्त(इत्यपि) ॥ २२ ॥**

एकहत्तर दिव्य युगों का एक मन्वन्तर होता है यह १ मन्वन्तर का नाम है संवर्त, प्रलय, कल्प, क्षय और कल्पान्त ये ५ प्रलय के नाम हैं ॥ २२ ॥

पु॰ न॰ पु॰ न॰ न॰ न॰

पाप **(अस्त्री)पङ्कं पुमान्पाप्मा पापं किल्बिषकल्मषम् ।**

न॰ न॰ न॰ न॰ न॰ न॰ न॰

कलुषं वृजिनैनोघमंहो दुरितदुष्कृतम् ॥ २३ ॥

---

१ कृतं त्रेता द्वापरं च कलिश्चेति चतुर्युगम्। प्रोच्यते तत्सहस्रन्तु ब्रह्मणो दिनमुच्यत इति विष्णुपुराणतो युगनामानि ज्ञेयानि। तन्मानमाह मनूक्तवाक्यान्यवलोक्य । कृतयुगमानम् देववर्षैः४८००वर्ष दिन३६०गुणितं जातं मानुषवर्षमानम् १७२८००० त्रेतादिव्यवर्षैः ३६०० मानुषैः १२९६००० द्वापरं दिव्यैः २४०० मानुषैः ८६४००० कलिर्दिव्यैः १२०० मानुषैः ४३२००० चतुर्युगं दिव्यैः १२००० मानुषैः ४३२०००० ब्रह्मादिनं दिव्यैः १२०००००० मानुषैः ४३२०००००००० इत्थमवसेयः ॥

२ तथा चैकस्य मन्वन्तरस्य ३०८५७१४२८ वर्षाणि, ६ मासाः, २५ दिनानि, ४२ घटिकाः सामाख्येकपञ्चाशत्पलानि भवन्तीति प्रकटाशयः ॥

पङ्क, पाप्मा, (न्) पाप, किल्बिष, कल्मष, कलुष, वृजिन, एनः (स्) अघ, अंहः (स्) अङ्कस्, दुरित और दुष्कृत ये १२ पापके नाम हैं। इनमें पङ्क शब्द स्त्रीलिङ्ग नहीं है बरन पुं. नपुंसक में होता है और नकारान्त पाप्मा पुंलिङ्ग में रहता है ॥ २३॥

पु. म. न. न. न. पु.

पुण्य स्याद्धर्ममस्त्रियां पुण्यश्रेयसी सुकृतं वृषः।

स. स. पु. पु. पु. पु. पु.

हर्ष मुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षप्रमोदामोदसंमदाः ॥ २४ ॥

पु. पु. न. न. न.

स्यादानन्दथुरानन्दः शर्मशातसुखानि (च)।

धर्म, पुण्य, श्रेयस्, सुकृत और वृष ये ५ सुकृत यानी धर्म या पुण्य के नाम हैं। इनमें धर्म शब्द पुं. नपुंसक में है और वृष पुंलिङ्ग में है और पुण्य शब्द जब विशेषण होता है तो इसका लिङ्ग विशेष्य के समान होजाता है और–मुत्–मुदा मुदिता, प्रीति, प्रमद, हर्ष, प्रमोद, आमोद, संमद, आनन्दथु, आनन्द, आनन्दि–नन्दि, शर्म, शात–सात, सुख–सौख्य ये १२ सुख या हर्ष के नाम हैं ॥ २४ । १/२ ॥

न. न. न. न. न. न.

कल्याण श्वःश्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मङ्गलं शुभम् ॥ २५ ॥

न. न. न. न. पु.न.

भावुकं भविकं भव्यं कुशलं क्षेम (मस्त्रियाम्)।

न.

शस्तं (चाथ त्रिषु द्रव्ये)पापं पुण्यं सुखादि (च) ॥२६॥

श्वःश्रेयस, शिव, भद्र–भद–भन्द, शिव, कल्याण स्त्री–"कल्याणी", मङ्गल, शुभ, भावुक, भविक, भव्य, कुशल–कुषल–कुसल, क्षेम और शस्त ये १२ कल्याणमात्र के नाम हैं। इनमें क्षेम व शस्त पुं. नपुंसक हैं और पाप पुण्य शब्द व सुखादि तथा शस्तान्त शब्दजात द्रव्य में वर्तमान तीनों लिङ्गों में होते हैं यानी इनका लिङ्ग विशेष्य के समान कहाजाता है जैसे कि, "पापो वैरी पापा वैरिणी, पापं धनम्" आदि होते हैं ॥ २५ । २६ ॥

स. स. पु.न. पु. पु.

अच्छा या प्रशस्त शुभभाग्य मतल्लिका मचर्चिका प्रकाण्डमुद्धतल्लजौ[1]।

पु.

प्रशस्तवाचकान्यमून्ययः (शुभावहो विधिः) ॥ २७ ॥

मतल्लिका, मचर्चिका, प्रकाण्ड, उद्घ और तल्लज ये ५ प्रशस्त (अच्छे) के नाम हैं। जैसे कि प्रशस्तो ब्राह्मणो ब्राह्मणमतल्लिका, प्रशस्तो ब्राह्मणोब्राह्मण-

१ मतल्लिकादयो नियतलिङ्गाः, अव्युत्पन्नाश्चेति प्राञ्चः ॥

मचर्चिका, प्रशस्ता गौर्गोप्रकाण्डः, प्रशस्तो मनुष्यो मनुष्योद्घः, प्रशस्ता कुमारी कुमारीतल्लजः—ये पांचो नित्य द्रव्यवाची हैं । लिङ्गान्तर के साथ होने पर भी अपने लिङ्गको नहीं त्यागते हैं इसीसे 'प्रशंसावचनैश्च' (२।१।६६) इस सूत्र से "कृष्णसर्पः, वाप्यश्वः" आदि के समान नित्यसमास हैं और उद्घ शब्द तो समासरहित भी है ये ५ प्रशस्त के नाम हैं । और शुभप्रापक भाग्य को 'अय' कहते हैं वह अदन्त पुंलिङ्ग एकवचनान्त है यह १ शुभभाग्य का नाम है ॥ २७ ॥

पु.न. पु.न. पु.न. पु.न. स. पु.

भाग्य　**दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं (स्त्री) नियतिर्विधिः ।**

कारण　पु. न. न. न.

आदिकारण　**हेतु (र्ना) कारणं बीजं (निदानं) त्वादिकारणम्॥२८॥**

दैव, दिष्ट, भागधेय, भाग्य, नियति और विधि ये ६ प्राक्तन (पूर्वजन्म) के शुभ व अशुभ कर्म के नाम हैं । इनमें नियति स्त्रीलिङ्ग व विधि पुंलिङ्ग है । हेतु, कारण, बीज ये ३ कारणमात्र के नाम हैं । इनमें हेतुशब्द पुंलिङ्ग है और निदान, आदि कारण ये २ मुख्यकारण के नाम हैं ॥ २८ ॥

पु. पु. पु. न. स.

चैतन्यपुरुष　**क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः प्रधानं प्रकृतिः(स्त्रियाम्) ।**

प्रकृति　स. न. न. न.

अवस्था गुण　**(विशेषःकालिको)वस्था(गुणाः)सत्त्वं रजस्तमः ॥ २९ ॥**

क्षेत्रज्ञ, आत्मा, पुरुष—'पूरुष' ये ३ आत्मा यानी शरीर के अधिदेवता के नाम हैं । प्रधान, प्रकृति ये २ सत्त्वादिगुणों की साम्यावस्था के नाम हैं और जो कालिक यानी कालकृत देहादि का यौवन आदि विशेष है उसे अवस्था कहते हैं यह १ अवस्था का नाम है । और सत्त्व, रजः (स्) तमः (स्) ये ३ गुण कहाते हैं और ये तीनों प्रकृति के धर्म भी कहे जाते हैं इन तीनों का भी एक २ नाम है ॥ २९ ॥

न. न. न. स. स. पु.

जन्म　**जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ।**

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

जीवधारी　**प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तुजन्युशरीरिणः ॥ ३० ॥**

जनुः (स्) जनन, जन्म (न्) या जन्म अदन्त भी है । जनि, उत्पत्ति और उद्भव ये ६ उत्पत्ति के नाम हैं । इनमें जनि शब्द उत्पत्ति के साहचर्य से स्त्रीलिङ्ग है और "किमर्थं जनिना जन्तोः" आदि प्रयोगों के दर्शन से पुंलिङ्ग भी कहाता है और प्राणी (न्) चेतन, जन्मी (न्) जन्तु, जन्यु और शरीरी (न्) ये ६ प्राणियों के नाम हैं ॥ ३० ॥

स. न. न. स. स.
जाति व्यक्ति जातिर्जातं च सामान्यं व्यक्तिस्तु पृथगात्मता ।
न. न. न. न. न. न. न.
मन चित्तन्तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसं मनः ॥ ३१ ॥

इति कालवर्गः ॥

जाति, जात, सामान्य ये ३ घटत्व आदि जाति के नाम हैं। व्यक्ति, पृथगात्मता ये २ घट आदि व्यक्ति या स्वरूप के नाम हैं। और चित्त, चेत: (स्) हृदय, स्वान्त, हृत्, मानस और मनः (स्) और कितेक आचार्य (अर्धर्चादि) मानकर पुंलिङ्ग भी कहते हैं ये ७ मन के नाम हैं ॥ ३१ ॥

इति कालवर्गविवरणम् ॥

अथ धीवर्गो व्याख्यायते ॥

स. स. स. स. स. स. स.
बुद्धि या बुद्धिर्मनीषा धिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः ।
स. स. स. स. स. स. स.
अक्ल प्रेक्षोपलब्धिश्चित्संवित्प्रतिपज्ज्ञप्तिचेतनाः ॥ १ ॥

बुद्धि, मनीषा, धिषणा, धी, प्रज्ञा—'प्राज्ञा' शेमुषी—सेमुषी, मति, प्रेक्षा, उपलब्धि, चित्, संवित्, प्रतिपत्, ज्ञप्ति और चेतना ये १४ बुद्धि के नाम हैं। इनमें चित् तान्त और संवित्, प्रतिपत् दान्त कहाते हैं ॥ १ ॥

स. पु.
मेधा संकल्प (धीर्धारणावती) मेधा संकल्पः (कर्म मानसम्) ।
पु. पु. स. स. स.
सुखेच्छा विचार चित्ताभोगो मनस्कारश्चर्चा संख्या विचारणा ॥ २ ॥

धारणावती बुद्धि को मेधा कहते हैं यह १ धारणावती बुद्धि का नाम है। मानस व्यापार को संकल्प व विकल्प भी कहते हैं यह १ मनोव्यापार का नाम है। चित्ता-भोग, मनस्कार ये २ सुखादि में परायण मन के नाम हैं। और चर्चा, संख्या, विचा-रणा ये तीन विचार के नाम हैं ॥ २ ॥

पु. पु. पु. स. पु.
तर्क संदेह अध्याहारस्तर्क ऊहो विचिकित्सा तु संशयः ।
पु. पु. पु. पु.
निश्चय संदेहद्वापरौ चाथ (समौ) निर्णयनिश्चयौ ॥ ३ ॥

---

१ हृदयस्य "पद्वन्नसिति हृदादेशः प्रभृतिग्रहणस्य [illegible] ॥
२ कृन्तति कृत्यते वा अच्—धमौ पृषोदरादित्वाद्वर्णविपर्ययः ॥

अभ्याहार, तर्क, ऊह ये ३ तर्क के नाम हैं । विचिकित्सा, संशय, सन्देह और द्वापर ये ४ सन्देह "विरुद्ध अनेक कोटि के अवगाहन करनेवाले ज्ञान" के नाम हैं । और निर्णय, निश्चय ये दोनों समानार्थ होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ निश्चयज्ञान के नाम हैं ॥ ३ ॥

स. स. पु. न.

मिथ्याज्ञान / परद्रोह — मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता व्यापादो द्रोहचिन्तनम् ।

पु. पु. स. स. पु.

सिद्धान्त / भ्रान्तिज्ञान — (समौ) सिद्धान्तराद्धान्तौ भ्रान्तिर्मिथ्यामतिर्भ्रमः ॥४॥

मिथ्यादृष्टि, नास्तिकता ये २ "परलोक नहीं है इत्यादि बुद्धि" यानी मिथ्याज्ञान के नाम हैं । व्यापाद, द्रोहचिन्तन ये २ परद्रोहचिन्तन के नाम हैं । सिद्धान्त, राद्धान्त ये दोनों समानार्थ होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ सिद्धान्त के नाम हैं । और भ्रान्ति, मिथ्यामति, भ्रम ये ३ भ्रमज्ञान के नाम हैं ॥ ४ ॥

स. स. न. पु. पु. पु.

अङ्गीकार — संविदागूः प्रतिज्ञानं नियमाश्रवसंश्रवाः ।

पु. पु. पु. पु.

अङ्गीकाराभ्युपगमप्रतिश्रवसमाधयः ॥ ५ ॥

संवित्, आगू, प्रतिज्ञान, नियम, आश्रव, संश्रव, अङ्गीकार, अभ्युपगम, प्रतिश्रव और समाधि ये १० अङ्गीकार के नाम हैं । इनमें संवित् दान्त स्त्रीलिङ्ग है और आगू वधू के समान या क्विबन्त होनेसे वर्षाभू के समान या रेफान्त होने से धुर् के समान है और समाधि शब्द पुंलिङ्ग है ॥ ५ ॥

न. न.

ज्ञान / विज्ञान — (मोक्षे धी) ज्ञान (मन्यत्र) विज्ञानं (शिल्पशास्त्रयोः) ।

स. न. न. न. न. न.

मोक्ष — मुक्तिः कैवल्यनिर्वाणश्रेयोनिःश्रेयसामृतम् ॥ ६ ॥

पु. पु. न. स. स.

अज्ञान — मोक्षोपवर्गोथाज्ञानमविद्याहंमतिः (स्त्रियाम्) ।

मोक्ष के विषय में जो बुद्धि है उसे ज्ञान या 'धी' कहते हैं यह १ मोक्षविषयक बुद्धि का नाम है । और अन्यविषयिणी शिल्प (कारीगरी) व शास्त्र में जो बुद्धि है उसे विज्ञान कहते हैं यह एक शिल्पादिविषयक बुद्धि का नाम है । और मुक्ति, कैवल्य, निर्वाण, श्रेयः (स्) निश्श्रेयस, अमृत, मोक्ष, अपवर्ग ये ८ मोक्ष के नाम हैं । अज्ञान, अविद्या, अहंमति ये ३ अज्ञान के नाम हैं ॥ ६ ॥ [१] ॥

---

१ स्थाणौ पुरुषोऽयमितिज्ञानं भ्रान्तिः, स्थाणुर्वा पुरुषो वायमित्येककोटिकं ज्ञानं संशयः, स्थाणौ स्थाणुरिति ज्ञानं निश्चयोऽवगन्तव्यः ॥

न. पु. पु. पु. पु.

विषय **रूपं शब्दो गन्धरसस्पर्शाश्च विषया (अमी) ॥ ७ ॥**

पु. पु. न. न. न.

इन्द्रिय **गोचरा इन्द्रियार्थाश्च हृषीकं विषयीन्द्रियम् ।**

रूप, शब्द, गन्ध, रस, स्पर्श ये ५ विषय-गोचर व इन्द्रियार्थ कहलाते हैं ये रूपादि पांचों के प्रत्येक तीन २ नाम हैं। और हृषीक, विषयि और इन्द्रिय ये ३ चक्षुरादि इन्द्रियों के नाम हैं ॥ ७ । ३ ॥

न. न.

कर्मेन्द्रिय ज्ञानेन्द्रिय **कर्मेन्द्रियं (तु पाय्वादि) मनोनेत्रादि (धीन्द्रियम्) ॥ ८ ॥**

पु.न. पु.न. पु. पु. पु.

रस मीठा **तुवरस्तु कषायो (ऽस्त्री) मधुरो लवणः कटुः ।**

पु. पु.

तीखा आदि **तिक्तोऽम्ललश्च रसाः पुंसि (तद्वत्सु षडमी त्रिषु) ॥ ९ ॥**

पायु आदि यानी पायु, उपस्थ, पाणि, पाद और वाक् ये पांच कर्मेन्द्रियां कहाती हैं और उत्सर्ग, आनन्द, आदान, गति, आलाप ये पांच कर्मेन्द्रियों की क्रियायें हैं और मन, नेत्र आदि यानी मन, कान, नेत्र, जीभ, खाल और नासिका ये ६ ज्ञानेन्द्रियां कहलाती हैं यह एक २ कर्मेन्द्रिय वा ज्ञानेन्द्रियों का नाम है "अब रसों का निरूपण करते हैं" तुवर, 'तूवर' कषाय ये २ स्त्रीलिङ्ग नहीं हैं बरन पुंलिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग कहाते हैं ये २ कषाय (कषैले) रस के नाम हैं। मधुर यह १ मीठे रस का नाम हैं। लवण यह १ नोनखरे रस का नाम है। कटु—कटूवी, यह एक कडुये चर्फरे रस का नाम है। तिक्त यह १ तीखे रस का नाम है । अम्ल—अम्ल यह १ खट्टे रसका नाम हैं। तूवर आदि ६ रस शब्द वाच्य हैं और वहां तूवर कषाय दोनों का अस्त्रीत्व कहा गया है इसलिये इतर शब्दों का लिङ्ग निर्णय कहते हैं कि गुणमात्र में मधुर आदि पांच पुंलिङ्ग हैं ये ६ गुणवानों में वर्तमान होकर तीनों लिङ्गों में रहते हैं इनमें तूवर हड़ आदिकों में, मधुर जलादि में, लवण सैन्धवादि में, कटु मरिचादि में, तिक्त निम्बादि में और अम्ल इमली आदिकों में विख्यात है॥ ८ । ९ ॥

पु.

सुगन्ध या **(विमर्दोत्थे) परिमलो (गन्धे जनमनोहरे) ।**

पु.

अतर खुशबू **आमोदः (सोतिनिर्हारी) (वाच्यलिङ्गत्वमागुणात्) ॥ १० ॥**

सुरत आदि विमर्द से उठे "माल्यादिकों में" व घिसने की आगि से उपजे "चन्दनादि में" व जनों के मन हरनेवाले गन्ध (खुशबू) में 'परिमल' कहाता है यह १ परिमल गन्ध का नाम है। और यदि वही परिमल गन्ध अतिनिर्हारी यानी अत्यन्त मनो-

दूर हो तो 'आमोद' कहाता है यह १ आमोद गन्धका नाम है। इससे आगे " गुणे शुक्लादयः" इससे पूर्व वाच्यलिङ्गता का अधिकार किया जाता है ॥ १० ॥

पु. पु. पु. पु.
बड़ी दूर जाने वाला सुगन्ध समाकर्षी तु निर्हारी सुरभिर्घ्राणतर्पणः।
पु. पु. पु. पु.
बड़ा सुगन्ध पान की गन्ध इष्टगन्धः सुगन्धिः स्यादामोदी मुखवासनः ॥ ११ ॥

समाकर्षी (र्षिन्) निर्हारी (रिन्) ये २ दूर जानेवाले गन्ध के नाम हैं। सुरभि—सुरभी, घ्राणतर्पण, इष्टगन्ध, सुगन्धि ये ४ इष्टगन्ध के नाम हैं। और आमोदी, मुखवासन ये २ मुखवास गुटिकादि के नाम हैं। शब्दार्णव में कहा है (कस्तूरिकायामामोदः कर्पूरेमुखवासनः। बकुले स्यात्परिमलश्चम्पके सुरभिस्तथा) कस्तूरी में आमोद, कपूर में मुखवासन, बकुल में परिमल और चम्पक में सुरभिगन्ध रहता है ॥ ११ ॥

पु. पु. न. न.
दुर्गन्ध विना पके मांस का गन्ध पूतिगन्धिस्तु दुर्गन्धो विस्रं (स्या)दामगन्धि (यत्)।

पूतिगन्धि, दुर्गन्ध ये २ दुर्गन्ध (बदबू) के नाम हैं और जो कच्चे मांसादि का गन्ध है उसे विस्र, या विश्र कहते हैं अथवा विस्र, आमगन्धि ये २ कच्चे मांसादिकी गन्ध के नाम हैं ॥

पु. पु. पु. पु.१ पु. पु. पु.
सफ़ेद या शुक्लशुभ्रशुचिश्वेतविशदश्येतपाण्डराः ॥ १२ ॥
पु. पु. पु. पु. पु. पु.
उजला अवदातः सितो गौरोवलक्षो धवलोऽर्जुनः।

शुक्ल, शुभ्र, शुचि, श्वेत—श्वेता, विशद, विषद, श्येत—श्येता—श्येनी, पाण्डर, "पाण्डुर", अवदात, सित—सिता, गौर, वलक्ष, अवलक्ष, धवल और अर्जुन ये १३ सफ़ेद वर्ण के नाम हैं ॥ १२ । ½ ॥

पु. पु. पु. पु.
कुछ उजला व पीला हरिणः पाण्डुरः पाण्डु (रीषत्पाण्डुस्तु) धूसरः॥ १३॥
कुछ उजला काला पु. पुं. पु. पु. पु. पु. पु.
कृष्णो नीलासितश्यामकालश्यामलमेचकाः।

हरिण, पाण्डुर, पाण्डु ये ३ पीलेसे मिले सफ़ेद वर्ण के नाम हैं। और कुछ एक पीला धूसर कहाता है अथवा ईषत्पाण्डु, धूसर ये २ थोड़े सफ़ेद के नाम हैं। और कृष्ण, नील—नीला, असित, श्याम, काल, श्यामल, मेचक ये ७ श्यामवर्ण के नाम हैं ॥ १३ । ½ ॥

---

१ " श्वेतस्तु समपीतोसौ रक्तेतरजपारुचिः। वलक्षस्तु सितः शावः कदलीकुसुमोपमः॥ अर्जुनस्तु सितः कुन्दलेशवान् कुमुदच्छविः। पाण्डुरस्तु पीतभागार्धः केतकीधूलिसन्निभः" (इति शब्दार्णवः) ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

पीला हरा — पीतोगौरोहरिद्राभः पालाशोहरितोहरित् ॥ १४ ॥

लाल — पु. पु. पु. पु. पु.

लालकमलसम — रोहितोलोहितोरक्तः शोणः कोकनदच्छविः ।

पीत, गौर, हरिद्राभ ये ३ पीले वर्ण के नाम हैं । पालाश, हरित, हरित् ये ३ हरे वर्ण के नाम हैं । इनमें हरित् तान्त है हरिता—हरिणी स्त्रीलिङ्ग में होता है रोहित—रोहिता, रोहिणी, लोहित—लोहिता—लोहिनी, रक्तरक्ता ये ३ लालवर्ण के नाम हैं । और शोण—शोणा—शोणी, कोकनदच्छवि ये २ लालकमल के समान वर्ण के नाम हैं ॥ १४ । ३ ॥

पु. पु.

थोड़ालाल उजला लाल — (अव्यक्तराग) स्त्वरुणः (श्वेतरक्तस्तु) पाटलः ॥ १५ ॥

वानरसमपीला — पु. पु. पु. पु. पु.

धूमिल — श्यावः स्यात्कपिशो धूम्रधूमलौ कृष्णलोहिते ।

अव्यक्तराग, अरुण ये २ कुछेक लालवर्ण के नाम हैं । श्वेतरक्त, पाटल ये २ सफ़ेद से मिले लालवर्ण के नाम हैं । श्याव, कपिश ये २ काले से मिले पीले वर्ण के नाम हैं और धूम्र, धूमल, कृष्णलोहित ये ३ काले से मिले लालवर्ण के नाम हैं ॥ १५ । ३ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

पीला — कडारः कपिलः पिङ्गपिशङ्गौ कद्रु पिङ्गलौ ॥ १६ ॥

पु.न. पु. पु. पु. पु. पु.

चित्रविचित्र — चित्रं[1] किर्मीरकल्माषशबलैताश्च कर्बुरे ।

"गुणे शुक्लादयः पुंसि गुणिलिङ्गास्तु तद्वति" ॥ १७ ॥

इति धीवर्गः ॥

कडार, कपिल, पिङ्ग, पिशङ्ग—पिशङ्गा, कद्रु या बभ्रु, पिङ्गल, पिङ्गला ये ६ पीले वर्ण के नाम हैं । ये गोरे बालक या महर्षि आदिकों की जटा में विख्यात हैं । चित्र—चित्रा, किर्मीर'कर्मीर', कल्माष, शबल, एत—एता—एनी, कर्बुर और कर्बुरा ये ६ चितकबरे या चित्र विचित्र वर्ण के नाम हैं । शुक्ल आदि शब्द गुणमात्र में वर्तमान होते हुए पुंलिङ्ग में होते हैं और गुणवान् में वर्तमान शुक्लादि विशेष्य के समान लिङ्ग में रहते हैं जैसे 'शुक्लं वस्त्रम्' यहां वस्त्र के समान नपुंसक हुआ 'शुक्लः पटः' इसमें पट के समान पुंलिङ्ग हुआ और 'शुक्ला शाटी' इसमें शाटी के समान स्त्रीलिङ्ग हुआ इत्यादि जानना चाहिये ॥ १६ । १७ ॥

इति धीवर्गविवरणम् ॥

---

१ चित्रं किर्मीर इति समासमकृत्वा पृथक्पाठे दर्शनं "गुणे शुक्लादयः पुंसि" इत्यस्य बाधनार्थम् ॥

अथ शब्दादिवर्गो व्याख्यायते ॥

स. स. स. स. स. स. स.

सरस्वती **ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग्वाणी सरस्वती ।**

पु. स. न. न. न. न.

बोलना **व्याहार उक्तिर्लपितं भाषितं वचनं वचः ॥ १ ॥**

ब्राह्मी, 'ब्राह्मणी' भारती, भाषा, गीः (र्) गिरा, वाक्, वाणी—वाणि, सरस्वती ये ७ वाग्देवता (सरस्वती) के नाम हैं । व्याहार, उक्ति, लपित, भाषित, वचन और वचः (स्) ये ६ वचन के नाम हैं और कितेक आचार्य ब्राह्मी आदि १३ वचन के पर्याय कहते ह ॥ १ ॥

पु. पु. पु. पु.

अपशब्द / शब्द **अपभ्रंशोपशब्दःस्या (च्छास्त्रे) शब्द (स्तु) वाचकः ।**

अपभ्रंश, अपशब्द ये २ व्याकरण से नहीं सिद्ध हुए । गात्री—गोता व गोणी आदि अपशब्द के नाम हैं और व्याकरण आदि शास्त्र में जो वाचकशब्द है वह शब्द कहाता है जैसे कि ओत प्रोत तन्तुओं का वाचक पट कहा जाता है यह १ शब्द का नाम है ॥

न.

वाक्य **(तिङ्सुबन्तचयो)वाक्यं क्रिया(वा)कारकान्विता ॥ २॥**

तिङन्त व सुबन्तके पदसमूह को वाक्य कहते हैं जैसे सुबन्तचय (चैत्रेण शयितव्यम्) व जैसे तिङन्तचय (पचति भवति, पाको भवतीत्यर्थः) और जैसे सुप्तिङन्तचय 'चैत्रः पचति' अथवा कारकविशिष्ट क्रिया को वाक्य कहते हैं जैसे (यज्ञदत्त ! घटमानय, गां पालय घासादिना) भो यज्ञदत्त ! घट लावो, व घास आदिकों से गौकी पालना करो यहां कारकविशिष्ट क्रियाबोधक शब्दजात वाक्य हुआ यह १ वाक्य का नाम है ॥ २ ॥

स. पु. पु. स. पु.

वेद धर्म **श्रुतिः (स्त्री) वेदआम्नायस्त्रयीधर्मस्तु (तद्विधिः) ।**

श्रुति, वेद, आम्नाय, त्रयी ये ४ वेद के नाम हैं । इनमें श्रुति और त्रयी ये २ स्त्रीलिङ्ग हैं और वेद व आम्नाय पुंलिङ्ग कहाते हैं । उस वेद से विधान किया हुआ यज्ञादि कर्म धर्म कहाता है यह १ वेदविहित कर्म का नाम है ॥

---

१ प्रयुज्यमानमप्रयुज्यमानं वाख्यातं प्रयुज्यमानैरप्रयुज्यमानैर्वा कर्त्रादिभिर्विशेषणैः सहितं वाक्यमुच्यते यथा ' धर्मो वो रक्षतु ' अप्रयुज्यमानमाख्यातं यथा 'शीलन्ते स्वम्' अत्र सर्वपदेषु चास्ति वाक्यश[illegible]स्तीति गम्यते अप्रयुज्यमानविशेषणं यथा—'प्रविश' अत्र गृहमिति गम्यते । अनयोरर्थात्प्रकरणाद्वा आख्यातादे[illegible]ः आख्यातमित्यत्र चैकत्वस्य विवक्षितत्वात् "ओदनं. पच तव भविष्यती"त्यादौ वाक्यभेदः । एकतिङ् वाक्यमिति भाष्यकारः । आख्यातं सविशेषणं वाक्यमिति वार्त्तिककारश्चेति ॥

स. न. न. स.

वेदभेद स्त्रियामृक्सामयजुषी (इतिवेदास्त्रय)स्त्रयी ॥ ३ ॥

ऋक्, साम, यजुः यह एक२ वेदों का नाम है और ये तीनों 'वेदत्रयी' कहाते हैं यह १ तीनों वेद के समूह का नाम है ॥ ३ ॥

१ न. पु. पु.

वेदाङ्ग,वेदारम्भ, (शिक्षेत्यादि श्रुते) रङ्गमोङ्कारप्रणवौ (समौ) ।

महाभारत आदि, पु. न. पु.

स्वर इतिहासः पुरावृत्त (मुदात्ताद्यास्त्रयः) स्वराः ॥ ४ ॥

शिक्षा आदि यानी शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द ये ६ वेदाङ्ग कहाते हैं यह १ वेदाङ्गों का नाम है । ॐकार, प्रणव ये दोनों समानार्थ हो कर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ ॐकार के नाम हैं । इतिहास, पुरावृत्त ये २ पूर्वाचरित-प्रतिपादक महाभारतादि ग्रन्थों के नाम हैं और उदात्त, अनुदात्त, स्वरित ते तीनों स्वर कहाते हैं यह १ उदात्तादि स्वरों का नाम है ॥ ४ ॥

स. स.

न्याय आन्वीक्षिकी दण्डनीति (स्तर्कविद्यार्थशास्त्रयोः) ।

कहानी स. न. न.

पुराण आख्यायिकोपलब्धार्था पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ ५ ॥

आन्वीक्षिकी यह १ गौतम आदि की रची तर्कविद्या यानी न्यायशास्त्र का नाम है । दण्डनीति यह १ बृहस्पतिके रचे अर्थशास्त्र यानी नीतिशास्त्र का नाम है । आख्यायिका, उपलब्धार्था ये २ जानी हुई सत्यार्थभूत कथा (कहानी) का नाम है और जिसमें "सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर व वंश्यानुचरित " ये पांच लक्षण हों उसे पुराण कहते हैं यानी पुराण, पञ्चलक्षण ये २ व्यासादिप्रणीत मत्स्यपुराण आदिकों के नाम हैं ॥ ५ ॥

स. स. स. ४

कथा,पहेली "प्रबन्धकल्पना" कथा प्रवल्हिका प्रहेलिका ।

स. स. स. पु.

स्मृति, संग्रह स्मृतिस्तु धर्मसंहिता समाहृतिस्तु संग्रहः ॥ ६ ॥

प्रबन्धकल्पना, कथा ये २ कादम्बरी, नाटक व रामायण आदि कथा के नाम हैं ।

---

१ शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं ज्योतिषां गतिः । छन्दोविचितिरित्येतैः षडङ्गो वेद उच्यते ॥

२ "मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वा चतुष्टयम् । अनापलिङ्गकूस्कानि पुराणानि पृथक् पृथक्"(इति देवीभागवते)

३ सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च । वंश्यानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥

४ पानीयं पातुमिच्छामि त्वत्तः कमललोचने । यदि दास्यसि नेच्छामि नो दास्यसि पिबाम्यहम् ॥

प्रवल्हिका–प्रवल्हि–प्रवल्ही, प्रहेलिका–प्रहेलि ये २ दुर्विज्ञानार्थ प्रश्न याने पहेली के नाम हैं। जैसे स्वरूपार्थ के छिपाने से किसी अर्थ को भी ज़ाहिर कर जहां बाहिरी अर्थ का संबन्ध होता है उसे प्रहेलिका (पहेली) कहते हैं। स्मृति, धर्मसंहिता ये २ मन्वादि स्मृति के नाम हैं और समाहृति, संग्रह ये २ संग्रह ग्रन्थ के नाम हैं ॥६॥

समस्या पूरा करना, गौगा, वृत्तान्त, नाम

स.　　स.　　स.　　स.
समस्या तु समासार्था किंवदन्ती जनश्रुतिः ।
स.　स.　पु.　पु.　पु.
वार्ताप्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्यादथाह्वयः ॥ ७ ॥
स.　स.　न.　न.　न.१
आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च ।

समस्या, समासार्था–'असमासार्था' ये २ समस्या के नाम हैं। जैसे "शतचन्द्रं नभस्तलम्" इसका पूर्ण करना जैसे "दामोदरकराघातविह्वलीकृतचेतसा। दृष्टं चाणूरमल्लेन" इससे पूरा हुआ। किंवदन्ती–किंवदन्ति, जनश्रुति ये २ लोकापवाद यानी (गौगा) के नाम हैं। वार्ता, प्रवृत्ति, वृत्तान्त, उदन्त ये ४ वृत्तान्त के नाम हैं और आह्वय, आख्या, आह्वा, अभिधान, अभिधा, अभिख्या–नामधेय, नाम ये ६ संज्ञा के नाम हैं। इनमें आख्या–आह्वा–अभिधा–अभिख्या ये स्त्रीलिङ्ग हैं और नाम यह नान्त है ॥ ७ । १/२ ॥

पुकारना, गप्प, झगड़ा, आरम्भ, उदाहरण, सौगन्द

स.　स.　न.　स.
हूतिराकारणाह्वानं संहूति (र्बहुभिःकृता) ॥ ८ ॥
पु.　२पु.　पु.　न.
विवादो व्यवहारः स्यादुपन्यासस्तु वाङ्मुखम् ।
पु.३　पु.　न.　पु.
उपोद्घात उदाहारः शपनं शपथः (पुमान्) ॥ ६ ॥

हूति, आकारणा–आकरणा, आह्वान ये ३ बुलाने या पुकारने के नाम हैं और जो बहुत जनों से की हुई हूति है वह 'संहूति' कहाती है। यह १ संहूति यानी गप्प का नाम है। विवाद, व्यवहार–व्यवहरण ये २ क़र्ज़ आदि लेने या देने में झगड़ा के नाम हैं। उपन्यास, वाङ्मुख ये २ वचनारम्भ के नाम हैं। उपोद्घात, उदाहार ये २ चिन्ता या उदाहरण के नाम हैं और शपन, शपथ ये २ सौगन्द के नाम हैं। इनमें 'शपथ' पुंलिङ्ग में रहता है ॥ ८ । ६ ॥

१ उणाद्यन्तं कृदन्तं च तद्धितं च समासजम् । शब्दानुकरणं चैव नाम पञ्चविधं स्मृतम् ॥
२ "विनानार्थेऽवसंदेहे हरणं हार उच्यते। नानासंदेहहरणाद्व्यवहार इति स्मृतः" (इति कात्यायनः)॥
३ चिन्तां प्रकृतसिद्ध्यर्थामुपोद्घातं प्रचक्षत इति ॥

पूछना सवाल पु. पु. स. म. न.
प्रत्युत्तर जवाब प्रश्नोनुयोगः पृच्छा च प्रतिवाक्योत्तरे (समे)।
सांच को पु. न. न.
झूठ करना मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यानमथमिथ्याभिशंसनम्॥१०॥
झूठ दोष
लगाना पु. पु.
प्रीतिसे उपजा
शब्द अभिशापः प्रणादस्तु (शब्दस्स्यादनुरागजः)।

प्रश्न, अनुयोग, पृच्छा ये ३ प्रश्न (सवाल) करने के नाम हैं। इनमें प्रश्न शब्द में "प्रश्ने चासन्नकाले" इस पाणिनीय शास्त्र के प्रमाण से संप्रसारण नहीं होता है। प्रतिवाक्य, उत्तर ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं। ये २ उत्तर (जवाब) देने के नाम हैं। मिथ्याभियोग, अभ्याख्यान ये २ सचे को मिथ्या करने के नाम हैं अथवा 'मेरे सौ चाहते हो' इत्यादि झूंठे झगड़े के नाम हैं। मिथ्याभिशंसन, अभिशाप ये २ झूठे दोष लगाने यानी सुरापान आदि मिथ्या पाप प्रकट करने के नाम हैं। प्रीति से उपजे शब्द को 'प्रणाद' कहते हैं यह १ विशेष प्रीति से पैदा हुए मुख व कण्ठ आदि के शब्द का नाम है॥ १० । ½ ॥

न. स. स. पु. न. स. स.
यश
स्तुति यशःकीर्तिःसमज्ञा च स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः॥ ११॥
द्विरुक्त न. न. स.
ऊंचे घोषना आम्रेडितं(द्विस्त्रिरुक्त) मुच्चैर्घुष्टं तु घोषणा।
शोकादि से स.
बोलना काकुः"स्त्रियां विकारो यः शोकभीत्यादिभिर्ध्वनेः"॥१२॥

यशः (स्) कीर्ति, समज्ञा-समाज्ञा, समज्या-समाज्या ये ३ यश के नाम हैं। स्तव, स्तोत्र, स्तुति, नुति ये ४ स्तुति (बड़ाई करना) के नाम हैं और जो दो तीनबार कहा गया है उसे 'आम्रेडित' कहते हैं जैसे (सर्प, सर्प) यह १ दो तीनबार कहने का नाम है। उच्चैर्घुष्ट, घोषणा ये २ ऊंचे स्वर से घोषने या पढ़ने के नाम हैं। शोक, भीति, काम व क्रोधादि की ध्वनि से जो विकार उपजता है उसे 'काकु' कहते हैं यह स्त्रीलिङ्ग में रहता है। यह १ शोक आदि से बोलने का नाम है॥ ११ । १२ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
निन्दा या अवर्णाक्षेपनिर्वादपरीवादापवाद (वत्)।
पु. स. स. स. न.
बुराई करना उपक्रोशो जुगुप्सा च कुत्सा निन्दा च गर्हणे॥ १३॥

अवर्ण, आक्षेप, निर्वाद, परिवाद-परीवाद, अपवाद-अववाद, उपक्रोश, जुगुप्सा, कुत्सा, निन्दा और गर्हण-गर्हा ये १० निन्दा (बुराई करना) के नाम हैं। इनमें 'अपवादवत्' इस वत्प्रत्यय से अवर्ण आदि उपक्रोश पर्यन्त पुंलिङ्ग कहाते हैं॥ १३॥

न. पु. न. स.

कठोर, डराना, 'पारुष्य'मतिवादःस्याद्भर्त्सनं त्वपकारगीः।

न.

खिझाना यः सनिन्द उपालम्भ(स्तत्र स्यात्)परिभाषणम्॥१४॥

पारुष्य, अतिवाद—अभिवाद ये २ अप्रिय यानी कठोर वचनके नाम हैं। भर्त्सन, अपकारगीः ये २ 'चोर है तुझे मारूंगा' इत्यादि अपकारार्थ वाक्य के नाम हैं अथवा जो अपकार के लिये कहना है यानी 'चोर है तुझको मारूंगा' इत्यादि को 'भर्त्सन' कहते हैं यह १ डरवाने या घुड़कने का नाम है और जो निन्दा समेत उपालम्भ यानी उलहाना देनाहै उसे "परिभाषण" कहते हैं। उपालम्भ दोभांतिके हैं। गुण का प्रकाश करना वा निन्दा का प्रकाश करना तहां पहिला जैसे अहो महाकुलीन! आपको क्या यही उचित है, दूसरा जैसे अहो कुलटानन्दन! तुझे यह ऐसाही उचित है इनमें जो दूसरा है वह " परिभाषण " कहा जाता है यह १ बोलने या खिझाने का नाम है॥ १४॥

स.न.

निन्दा करना तत्र त्वाक्षारणा यः स्या "दाक्रोशो मैथुनं प्रति"।

प्रिय बोलना न. पु. पु.

बकना स्यादाभाषणमालापः प्रलापो (ऽनर्थकं वचः)॥१५॥

मैथुन (रति) के लिये जो आक्रोश (कहना या निन्दा करना) है वहां आक्षारणा—क्षारणा और आक्षारण भी होता है यह १ भोग करने के निमित्त परस्त्री के लिये पुरुष का और परपुरुष के लिये स्त्री का जो आक्रोशन यानी बात चीत करना है उसका नाम है। आभाषण, आलाप ये २ परस्पर संबोधनपूर्वक कहने के नाम हैं और जो अर्थशून्य वचन है उसे प्रलाप कहते हैं। यह १ प्रयोजनशून्य मतवाले आदि के बकने का नाम है॥ १५॥

बार२ कहना पु. स. पु. न.

रोना उल्टा कहना अनुलापो मुहुर्भाषा विलापः परिदेवनम्।

परस्पर कहना पु. स. पु.

विप्रलापो विरोधोक्तिः संलापो (भाषणं मिथः)॥१६॥

अनुलाप, मुहुर्भाषा ये २ बारम्बार कहने के नाम हैं। विलाप, परिदेवन—'परिदेवना' ये २ रोदनपूर्वक वचन के नाम हैं। विप्रलाप, विरोधोक्ति ये २ परस्पर विरुद्ध वचन के नाम हैं और जो परस्पर उक्ति व प्रत्युक्ति से भाषण होता है उसे 'संलाप' कहते हैं और 'आलाप' एकही से किया जाता है। यह १ परस्पर कहने का नाम है॥ १६॥

पु. न. पु. पु.

सुन्दर कहना छिपाना सुप्रलापः सुवचनमपलापस्तु निह्नवः ।

स. न.

दूतका कहना संदेशवाग्वाचिकं स्या "द्वाग्भेदास्तु त्रिषूत्तरे" ॥ १७ ॥

सुप्रलाप, सुवचन ये २ सुन्दर वचन के नाम हैं। अपलाप, निह्नव ये २ धारता करते हुए नहीं धारता हूं इत्यादि वचन के नाम हैं या छिपाने या नाहीं करने के नाम हैं। संदेशवाक्, वाचिक ये २ संदेश वचन के नाम हैं या दूत आदि के मुख से निकले हुए वचन के नाम हैं। इसके आगे कहे जानेवाले वाणी के भेद तीनों लिङ्गों में होते हैं ॥ १७ ॥

पु.स. स.

बुरी वाणी भली वाणी रुशतीवाग "कल्याणी" स्यात्कल्या "तु शुभात्मिका"।

न. न. न.

मधुर कहना ठीक कहना "अत्यर्थमधुरं" सान्त्वं संगतं हृदयंगमम् ॥ १८ ॥

जो अकल्याणी वाक् (वाणी) है उसे रुशती—उशती और उषती कहते हैं ऐसेही रुशन्—उशन् व उषन् ' शब्द ' कहाता है और रुशत्—उशत् व उषत् वचन हैं ये तीनों लिङ्ग में रहते हैं यह १ कल्याणविहीन वाणी का नाम है। जो शुभात्मिका (कल्याणवती) वाणी है उसे 'कल्या' या 'काल्या' कहते हैं यह १ शुभवाणी का नाम है। जो बड़ा मीठा वचन है उसे 'सान्त्व' कहते हैं यह १ अत्यन्त मधुर वचन का नाम है और संगत, हृदयंगम ये २ युक्ति से मिले हुए (ठीक) वचन के नाम हैं ॥ १८ ॥

कठोर वचन न. न. न. न. न.

गमेला वचन निष्ठुरं परुषं ग्राम्यमश्लीलं सूनृतं (प्रिये)।

प्रिय व सत्य न. न. न.

व असंभव कहना सत्येऽथ संकुलक्लिष्टे परस्परपराहते ॥ १९ ॥

निष्ठुर, परुष ये २ कर्कश वचन के नाम हैं। ग्राम्य, अश्लील ये २ भांड आदिकों के कहे वचन के नाम हैं। जो प्रिय व सत्य वचन है उसमें 'सूनृत' कहा जाता है यह १ प्यारे व सच्चे वचन का नाम है और परस्पर पराहत में संकुल, क्लिष्ट ये दोनों होते हैं अथवा संकुल, क्लिष्ट और परस्परपराहत ये ३ मेरी " मा बाँझ है " इसके समान विरुद्ध अर्थवाले वचन के नाम हैं ॥ १९ ॥

न. न. न.

ग्रस्त "लुप्तवर्णपदं" ग्रस्तं निरस्तं त्वरितोदितम्।

धमकाया न. न. न. न.

थूकसहित अर्थशून्य (अम्बूकृतं) सनिष्ठेवमबद्धं स्यादनर्थकम् ॥ २० ॥

लुप्तवर्णपद, ग्रस्त ये २ अशक्ति आदि से असंपूर्ण उच्चारित वचन के नाम हैं । निरस्त, त्वरितोदित ये २ शीघ्र कहे (धमकाये) हुए वचन के नाम हैं । अम्बूकृत, सनिष्ठेव—सनिष्ठीव ये २ लार—थूक व कफ समेत वचन के नाम हैं और अबद्ध या 'अवध्य' अनर्थक ये २ समुदायार्थशून्य वचन के नाम हैं ॥ २० ॥

अयोग्य वचन　न.　न.　न.　न.
असंभावित
हाससमेत　**अनक्षरमवाच्यं स्यादाहतं तु मृषार्थकम् ।**
कहना　न.　न.　न.　न.
रतिकूजित　**सोल्लुण्ठनं तु सोत्प्रासं मणितं रतिकूजितम् ॥ २१ ॥**

अनक्षर, अवाच्य ये २ निन्दा (कहने के अयोग्य) वचन के नाम हैं । आहत, मृषार्थक ये २ ' यह बन्ध्या का सुत जाता है ' इत्यादि वचन के नाम हैं अथवा मृषार्थक जो अत्यन्त अभूतार्थक वचन है वह आहत कहाता है यह १ असंभावित वचन का नाम है । सोल्लुण्ठन, सोत्प्रास ये २ उपहाससमेत वचन के नाम हैं और मणित, रतिकूजित ये २ रतिकूजित के नाम हैं ॥ २१ ॥

न.　न.　न.　न.
अस्पष्ट
असत्य　**अथ म्लिष्टमविस्पष्टं वितथं त्वनृतं वचः ।**
न.　न.　न.　न.
सत्य　**सत्यं तथ्यमृतं सम्य "गमूनि त्रिषु तद्वति" ॥ २२ ॥**

म्लिष्ट, अविस्पष्ट ये २ अप्रकटित वचन के नाम हैं । वितथ, अनृत ये २ अनृत (असत्य) वचन के नाम हैं । अथवा जो अनृत (झूठ) वचन है उसे वितथ कहते हैं यह १ झूठे वचन का नाम है और सत्य, तथ्य, ऋत, सम्यक् ये ४ सत्य वचन के नाम हैं । इनमें सम्यक् चकारान्त है ये सत्यादिक सत्यवान् वस्तु में वर्तमान होते हुए तीनों लिङ्ग में होते हैं जैसे—' सत्यः पुरुषः, सत्या स्त्री, सत्यं कुलम् ' आदि जानना चाहिये ॥ २२ ॥

पु.　पु.　पु.　पु.　पु.　पु.　पु.
शब्द　**शब्दे निनादनिनदध्वनिध्वानरवस्वनाः ।**
पु.　पु.　पु.　पु.　पु.　पु.
स्वाननिर्घोषनिर्ह्रादनादनिस्वाननिस्वनाः ।
पु.　पु.　पु.　पु.　पु.
खड़खड़ाना　**आरवारावसंरावविरावा (अथ) मर्मरः ॥ २३ ॥**
न.
गहनोंका शब्द　**"स्वनिते वस्त्रपर्णानां भूषणानां च" शिञ्जितम् ।**

१ मर्मरो वस्त्रभेदे च शुष्कपर्णध्वनौ तथा । पुंसि स्त्रियां पुनः प्रोक्ता मर्मरी पीतदारुणि ॥

शब्द—शब्दन, निनाद, निनद, ध्वनि, ध्वान, रव—राव, स्वन—स्वान, निर्घोष, निर्ह्राद, नाद, निस्वान, निस्वन, आरव, आराव, संराव, विराव ये १७ शब्दमात्र के नाम हैं। वस्त्र और पत्तों के शब्द में 'मर्मर' होता है यह १ वस्त्र व पत्तों की ध्वनि का नाम है और भूषणों यानी नूपुर आदिकों के शब्द में शिञ्जित या शिञ्जा भी होता है यह १ भूषणों की ध्वनि का नाम है ॥ २३ । १/२ ॥

पु. पु. पु. पु. न.

वीणाआदि का शब्द **निक्वाणो निक्वणः क्वाणः क्वणः क्वणनमित्यपि ॥ २४ ॥**

पु. पु.

"वीणायाःक्वणिते प्रादेः" प्रक्वाणप्रक्वणादयः ।

वीणा के शब्द में निक्वाण, निक्वण, क्वाण, क्वण, क्वणन ये होते हैं ये ५ वीणा आदि शब्द के नाम हैं और प्रादि उपसर्ग से प्रक्वाण, प्रक्वण तथा आदि शब्द से उपक्वण—सुक्वण ये भी वीणा के शब्द में ही जानना चाहिये ॥ २४ । १/२ ॥

पु. पु. न. न.

कुल पक्षियों का शब्द **कोलाहलः कलकल (स्तिरश्चां) वासितं रुतम् ॥ २५ ॥**

स. पु. न. न.

प्रतिध्वनि **स्त्री प्रतिश्रुत्प्रतिध्वाने गीतं गानमिमे(समे) ॥ २६ ॥**

इति शब्दादिवर्गः ॥

कोलाहल, कलकल ये २ बहुत लोगों के किये अप्रकटित शब्द के नाम हैं। तिरीछे चलनेवाले जीवों का जो शब्द है उसे वाशित या वासित कहते हैं अथवा वाशित, रुत ये २ पक्षियों के शब्द के नाम हैं। प्रतिध्वान=प्रतिशब्द में प्रतिश्रुत स्त्रीलिङ्ग होता है अथवा प्रतिश्रुत्, प्रतिध्वान ये २ प्रतिध्वनि (गूंज) के नाम हैं और गीत, गान ये दोनों समानार्थ व समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ गाने के नाम हैं ॥ २५।२६ ॥

इति शब्दादिवर्गविवरणम् ॥

अथ नाट्यवर्गो व्याख्यायते ॥

१पु. पु. पु. पु. पु. पु.

गाने के स्वर **निषादर्षभगान्धारषड्जमध्यमधैवताः ।**

पु.

पञ्चम (श्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः) ॥ १ ॥

---

१ निषादःस्वरभेदेपि चण्डाले धीवरान्तरे—ऋषभस्त्वौषधान्तरे । स्वरभिद्वृषयोः कर्णरन्ध्रकुम्भीरपश्चयोः । उत्तरस्थः स्मृतः श्रेष्ठे स्त्रीनराकारयोषिति । " गान्धारोरागसिन्दूरस्वरेषुनीवृदन्तरे " इति हैमः । नासाकण्ठमुरस्तालुजिह्वां दन्तांश्च संस्पृशन् । षड्भ्यः संजायते यस्मात्तस्मात्षड्ज इति स्मृतः ॥ तद्वदेवोत्थितो वायुरुरःकण्ठसमाहतः । नाभिं प्राप्तो महानादो मध्यस्थस्तेन मध्यमः ॥ धीमत्प्रमयामित्यत्र संज्ञायामिति वत्वम् । वायुः समुद्गतोनाभेरुरोहृत्कण्ठमूर्धसु । विचरन्पञ्चमस्थानप्राप्त्या पञ्चम उच्यते ॥ तज्जन्यत्वात्पञ्चमःस्वर इति ॥

निषाद—निषद, ऋषभ, गान्धार, षड्ज, मध्यम, धैवत और पञ्चम ये ७ तन्त्री व कण्ठ से निकले हुए स्वर कहाते हैं और दारवी (काष्ठमयी) तथा गात्रवीणा ये स्वर की धारनेवाली २ वीणायें कहाती हैं और बांसुरी व मुरचङ्ग आदि अनुकरणमात्र के उपयोगी होते हैं। यह भाव जानना चाहिये "मयूर षड्ज स्वर से बोलता है, गौवें ऋषभ से बोलती हैं, बकरी व भेड़ गान्धार से बोलती हैं, कराकुल नामक पक्षी मध्यम स्वर से बोलता है, वसन्त समय में कोकिला पञ्चम स्वर से नाद करती है, घोड़ा धैवत स्वर से बोलता है और हाथी निषाद से बोलता है यह नारदजीका वचन है" यह सात स्वरा का एक २ नाम है॥ १॥

सूक्ष्मस्वर, मधुरस्वर, गम्भीरस्वर, उच्चस्वर

स.
काकली "तु कले सूक्ष्मे" ध्वनौ तु मधुरास्फुटे।
पु. पु. पु.
कलो मन्द्रस्तु गम्भीरे तारोत्युच्चै(स्त्रयस्त्रिषु)॥ २॥

सूक्ष्मकल में 'काकली, काकलि' कहा जाता है इसीसे कुलीनों ने काकली स्वरों से अच्छा कहा यह प्रयोग संगत होता है। यह १ सूक्ष्म स्वर का नाम है। कानों को सुखदायक अव्यक्ताक्षरवाले ध्वनि में 'कल' होता है। यह १ मधुर स्वर का नाम है व गम्भीर ध्वनि में यानी मेघादिकों के शब्द में मन्द्र—मद्र होता है यह १ गम्भीर स्वर का नाम है और बड़े ऊंचे शब्द में 'तार' होता है यह १ बड़े उच्चस्वर का नाम है कल—मन्द्र—तार ये ३ तीनों लिङ्ग में होते हैं यानी विशेष्य के समान इनके लिङ्ग कहे जाते हैं॥ २॥

पु. स. स.
वीणा (समन्वितलयस्त्वे)कतालो वीणा तु वल्लकी।
स. स.
वीणाविशेष विपञ्ची (सा तु तन्त्रीभिःसप्तभिः) परिवादिनी॥ ३॥

जो अच्छी लय से संयुक्त होकर नाच, गान व बाजा के समान है उसे एकताल या एकतान कहते हैं यह १ एकताल याने तुल्यस्वर का नाम है। वीणा, वल्लकी, विपञ्ची ये ३ वीणा के नाम हैं और वही वीणा जब सात तन्त्रियों (तारों) से उपलक्षित होती है तो उसे 'परिवादिनी' कहते हैं यह १ वीणाविशेष का नाम है॥ ३॥

वीणाशब्द, मृदङ्ग आदि, वंशी आदि, घण्टाझालरिआदि

न. न.
ततं "वीणादिकंवाद्य" मानद्धं "मुरजादिकम्"।
न. न.
वंशादिकं तु शुषिरं कांस्यतालादिकं घनम्॥ ४॥

१ सूर्ये सुषिरामिव पस्पशाह्निकभाष्यस्थश्रुताविति प्रयोगात्सुषिरं दन्त्याद्यपि—प्राच्यास्तु तालव्याद्यमेवेत्याहुः॥

वीणा—सैरन्ध्री—रावणा—हस्त व किन्नरादिकों का जो वाद्य है उसे 'तत' कहते हैं यह १ वीणादि वाद्य का नाम है। मुरज, पटह आदिकों का जो वाद्य है उसे "आनद्ध या अवनद्ध" कहते हैं यह १ मुरजादि वाद्य का नाम है। बांसुरी व शंख आदिकों का जो वाद्य है उसे शुषिर या सुषिर कहते हैं यह १ वंशादि वाद्य का नाम है और जो कांस्यमय तालादिक घण्टा—झालर व मंजीरा आदिकों का वाद्य है उसे 'घन' कहते हैं यह १ कांस्यतालादि वाद्य का नाम है ॥ ४ ॥

वाद्य भेद — न. न. न.
"चतुर्विधमिदं" वाद्यवादित्रातोद्यनामकम्।

मृदङ्ग, मृदङ्ग भेद — पु. पु. पु. पु. पु.
मृदङ्गा मुरजाभेदास्त्वङ्क्याालिङ्ग्योर्ध्वकास्त्रयः ॥ ५ ॥

ये जो तत आदि चार प्रकार के वाद्य हैं उनको वाद्य, वादित्र और आतोद्य कहते हैं ये ३ तत आदि चतुष्टय के नाम हैं। मृदङ्ग, मुरज ये २ मृदङ्ग के नाम हैं। ये अनेक भांति के हैं इसलिये बहुवचनान्त हैं और अङ्क्य, आलिङ्ग्य, ऊर्ध्वक यानी 'अङ्के एव निधाय वादनादङ्क्यः, आलिङ्ग्य वादनादालिङ्ग्यः, ऊर्ध्वीकृतेन मुखेन वादनादूर्ध्वकः" गोद में धारकर वजाने से हड़ के समान अङ्क्य, आलिङ्गन कर बजाने से गोपुच्छसम आलिङ्ग्य, ऊपर किये मुँह से बजाने में जवतुल्य मध्य वाला ऊर्ध्वक कहा जाता है ये ३ मृदङ्ग भेद के नाम हैं ॥ ५ ॥

ढोल नगाड़ा, तुरही, बड़ा नगाड़ा बजाने का दण्ड — पु. स. स. पु.
स्याद्यशःपटहो ढक्का भेरी (स्त्री) दुन्दुभिः (पुमान्)।

पु. पु. न. पु.
आनकः पटहोऽस्त्री स्यात्कोणो 'वीणादिवादनम्'॥ ६॥

यशःपटह, ढक्का ये २ ढोलक-डंका व डमरू के नाम हैं। भेरी-भेरि-दुन्दुभि ये २ नगाड़ा या तुरही के नाम हैं इनमें भेरी स्त्रीलिङ्ग है और दुन्दुभि पुंलिङ्ग कहाता है अथवा कितेक आचार्य 'भेर्यामानकदुन्दुभी' ऐसा पाठ पढ़ते हैं उनके मत में भेरी, आनक, दुन्दुभि ये ३ तुरही या नगाड़ियों के नाम हैं। आनक, पटह ये २ बड़े नगाड़े के नाम हैं इनमें 'पटह' स्त्रीलिङ्ग नहीं, पुं० नपुंसक में रहता है और जिससे वीणा आदि बाजे बजाये जाते हैं उस धनुषादि आकार वाले काष्ठ को 'कोण' कहते हैं यह १ वीणा आदि बजाने के दण्ड का नाम है ॥ ६ ॥

---

१ ततं चैवावनद्धं च घनं सुषिरमेव च। चतुर्विधन्तु विज्ञेयमातोद्यं लक्षणान्वितमिति ॥

२ नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्। उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धानेतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम्॥

वीणा का दण्ड पु. पु. पु. पु.
वीणा की मढी **वीणादण्डः प्रवालः स्यात्ककुभस्तु प्रसेवकः ।**
तुम्बी वीणा का पु. पु. न.
स्वरूप वीणाका बन्धन **कोलम्बकस्तु कायोस्या उपनाहो निबन्धनम् ॥ ७ ॥**

वीणादण्ड, प्रबाल ये २ वीणादण्ड के नाम हैं । ककुभ, प्रसेवक—प्रसेव ये २ वीणा दण्ड के नीचे स्थित शब्द की गम्भीरता के लिये चमड़े से मढ़े काष्ठमय भाण्ड के नाम हैं । अथवा वीणा के प्रान्त में स्थित काष्ठविशेष के नाम हैं । इस वीणा के तन्त्रीरहित दण्ड आदि समुदायरूप कायको 'कोलम्बक' कहते हैं यह १ वीणा के स्वरूप का नाम है । उपानाह, निबन्धन ये २ जहां तन्त्रियां बांधी जाती हैं उसके ऊपरले भाग के नाम हैं ॥ ७ ॥

पु. पु. पु. पु.
बाजों का भेद **“वाद्यप्रभेदा” डमरुमड्डुडिण्डिमझर्झराः ।**
पु. पु. स. स.
नाचने वाली **मर्दलः पणवोन्ये च नर्तकीलासिके (समे) ॥ ८ ॥**

डमरु आदि वाद्य विशेषों के भेद होते हैं वहां डमरु—डमरुक यह १ डमरू का नाम है । यह बाजा प्रायः कापालिकों का होता है, वही जब अच्छा बजाया जावे तो ' मड्डु ' कहा जाता है यह १ महाडमरू का नाम है । 'डिण्डिम' यह १ तम्बूरा का नाम है । 'झर्झर' यह १ झांझ का नाम है । 'मर्दल' यह १ मृदङ्ग के समान वाद्य विशेष का नाम है । पणव यह १ छोटी ढोल आदिकों का नाम है और अन्य गोमुख (नरसिंहा) हुडुक आदि भी वाद्यों के भेद होते हैं यह १ अलग२ एक २ वाद्य विशेषों का नाम जानना चाहिये और नर्तक, नर्तकी, लासक, लासकी ये दोनों समानार्थ व समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ नाचनेवाली वेश्या के नाम हैं ॥८॥

न. पु. न.
विलम्ब,शीघ्र **विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो घनं (क्रमात्) ।**
मध्यताल देना पु. पु.
ताल मिलाना **तालः “कालक्रियामानं” लयः साम्यमथास्त्रियाम् ॥९॥**
पु.न. न. न. न. न. न.
नाचना **ताण्डवं नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं च नर्तने ।**

विलम्बित, द्रुत, मध्य इन तीनों में तत्त्व, ओघ व घन ये क्रम से होते हैं यानी जो विलम्ब से नृत्य आदि होते हैं उसे ' तत्त्व ' कहते हैं व जो शीघ्रता से नृत्य आदि होते हैं उसे ' ओघ ' कहते हैं और जो मध्य रीति से नृत्यादि होते हैं यानी न विलम्ब हो न शीघ्रता हो उसे 'घन' कहते हैं ये तत्त्वादि क्रम से एक २

विलम्बित द्रुत मध्यवाले नाच गीत वाद्यों के नाम हैं। काल और क्रिया के मानको 'ताल' कहते हैं यह १ ताल देनेका नाम है। गीत, वाद्य व पादादि रखने और क्रिया, काल की साम्यता को 'लय' कहते हैं यह १ ताल मिलाने का नाम है। इस के अनन्तर ताण्डव आदि स्त्रीलिङ्ग में नहीं होते हैं बरन पुंलिङ्ग, नपुंसक में कहाते हैं। ताण्डव, नटन, नाट्य, लास्य, नृत्य, नर्तन—नृत्त ये ६ नाच के नाम हैं॥ ६।३ ॥

न. न.
नाचना,गाना,बजाना इनका **तौर्यत्रिकं "नृत्यगीतवाद्यं" नाट्यमिदं त्रयम्॥ १०॥**

पु. पु. पु.
एकस्वर नाच-नेवाला पुरुष **भ्रकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रूकुंस (श्चेति नर्तकः)।**

स.
नाचकी वेश्या **स्त्रीवेषधारी पुरुषो "नाट्योक्तौ" गणिकाज्जुका ॥११॥**

नाचना, गाना, बजाना ये तीनों मिलकर 'तौर्यत्रिक' व 'नाट्य' कहाते हैं ये २ नाचने, गाने व बजाने के नाम हैं। जो पुरुष स्त्रीवेषधारी (सखी) होकर नाचता है उसमें भ्रकुंस, भृकुंस, भ्रुकुंस और भ्रूकुंस ये होते हैं ये ३ स्त्रीवेषधारी नाचनेवाले पुरुष के नाम हैं और "अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपः" इसके पूर्वपर्यन्त "नाट्योक्तौ" इसका अधिकार किया जाता है और जो गणिका है उसे 'अज्जुका' कहते हैं यह १ नाच की वेश्या का नाम है॥ १० । ११ ॥

पु. पु. पु.
बहनोई,पण्डित **"भगिनीपति" रावुत्तो भावो विद्वानथावुकः।**

पु. पु. पु. पु.
बाप,राजकुमार **जनको युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः॥ १२॥**

नाट्य के वचन में बहिन का पति 'आवुत्त' या 'आवुत्त' कहाजाता है। यह १ (बहनोई) का नाम है। जो विद्वान् है उसे 'भाव' कहते हैं यह १ पण्डित का नाम है। जो पिता है उसे 'जनक' कहते हैं यह १ बाप का नाम है और जो युवराज है उस कुमार, भर्तृदारक कहते हैं ये २ राजकुमार के नाम हैं॥ १२॥

पु. पु. पु. स.
राजा राजकन्या **राजा भट्टारको देवस्तत्सुता भर्तृदारिका।**

स. स.
महारानी अन्यरानी **देवी कृताभिषेकायामितरासु तु भट्टिनी॥ १३॥**

नाट्य की उक्ति में जो राजा है उसे भट्टारक व देव कहते हैं ये २ राजाके नाम हैं। जो राजपुत्री है उसे 'भर्तृदारिका' कहते हैं यह १ राजकुमारी का नाम है। जिसका अभिषेक किया गया हो उसे 'देवी' कहते हैं यह १ महारानी का नाम है और जो इतर रानियां हैं उनको 'भट्टिनी' कहते हैं यह १ अन्य रानियों का नाम है॥ १३॥

न. पु.

अवध्यकथन, **अब्रह्मण्य (मवध्योक्तौ) 'राजश्यालस्तु' राष्ट्रियः ।**
राजाका साला, स. स. स. स. पु. पु.
माता, कन्या, मान्य **अम्बा माताथ बाला स्याद्वासूरार्यस्तु मारिषः॥ १४ ॥**

वध के योग्य नहीं ऐसे कथन में 'अब्रह्मण्य' होता है यह १ ब्राह्मणादि अवध्य का नाम है। जो राजा का साला है उसे 'राष्ट्रिय' कहते हैं यह १ राजा के साले का नाम है। जो माता है उसे 'अम्बा' कहते हैं यह १ मा का नाम है। व जो बालिका है उसे 'वासू' कहते हैं यह १ बालिका (लड़की) का नाम है और जो आर्य (श्रेष्ठ) है उसे 'मारिष' कहते हैं यह १ मान्य का नाम है ॥ १४ ॥

स. स. न.

जेठी बहन **अत्तिका"भगिनी ज्येष्ठा" निष्ठानिर्वहणे समे ।**
नाट्यसन्धि स. स. स.
ठीक कहना **हण्डे हञ्जे हलाह्वानं नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १५ ॥**

जो जेठी बहिन है उसे 'अत्तिका' या 'अन्तिका' कहते हैं यह १ बड़ी बहिन का नाम है। निष्ठा, निर्वहण ये दोनों समानार्थ होकर समानलिङ्ग नहीं होते हैं ये २ पांचवीं सन्धि के नाम हैं। नीच सहेली के पुकारने में 'हण्डे' होता है यह १ नीच के बुलाने का नाम है। चेटी के पुकारने में 'हञ्जे' होता है यह १ चेटी के बुलाने का नाम है और सखी के बुलाने में 'हला' होता है यह १ सखी के पुकारने का नाम है ॥ १५ ॥

लचककरना- पु. पु. पु. पु.
चना, अभि- **अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपो व्यञ्जकाभिनयौ (समौ) ।**
प्रायकाप्रकाशक पु.स.न. पु.स.न.
शरीर और मन की चेष्टा **निर्वृत्ते त्वङ्गसत्त्वाभ्यां द्वे त्रिष्वाङ्गिकसात्त्विके ॥ १६ ॥**

अङ्ग के स्थान से स्थानान्तर में ले जाने को 'अङ्गहार' अँगुली आदि से मन के अभिप्राय जताने को 'अङ्गविक्षेप' कहते हैं ये २ नृत्यविशेष में लचकने के नाम हैं। व्यञ्जक, अभिनय ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ मनोगत भाव बताने के नाम हैं। अङ्ग से सिद्ध अर्थ को 'आङ्गिक' कहते हैं यह १ भौंह मटकाने आदिका नाम है और सत्त्व याने अन्तःकरण से सिद्ध अर्थ को 'सात्त्विक' कहते हैं। "स्तम्भ—स्वेद, रोमाञ्च, स्वरभङ्ग, वेपथु, वैवर्ण्य, आंसू, प्रलय ये सात्त्विक गुण हैं" यह १ अन्तःकरण के भाव बताने का नाम है ये दोनों तीनों लिङ्ग में रहते हैं ॥ १६ ॥

---

१ "कर्तव्यमाचरन्काममकर्तव्यमनाचरन् । तिष्ठति प्रकृताचारे स तु आर्य इति स्मृत" (इति वसिष्ठः) ॥
२ हण्डे-हञ्जे-हलेति त्रीण्यप्यव्ययानि ॥

आठरस **शृङ्गारवीरकरुणाद्भुतहास्यभयानकाः ।**

पु. पु. पु. पु.

शृङ्गाररस **बीभत्सरौद्रौ च रसाः शृङ्गारः शुचिरुज्ज्वलः ॥ १७ ॥**

शृङ्गार, वीर, करुणा, अद्भुत, हास्य, भयानक, बीभत्स, रौद्र ये ८ रस हैं और च शब्द से नववां शान्त और दशवां वात्सल्य रस है उनमें शान्त को अलौकिक होने से व वात्सल्य को पुत्र आदि स्नेहरूप रत्यात्मक होनेसे नहीं दिखलाया है इसलिये आठों काही विवरण कहते हैं शृङ्गार, शुचि, उज्वल ये ३ शृङ्गार रस के नाम हैं ॥ १७ ॥

पु. पु. न. स. स.

वीर करुणा **उत्साहवर्धनो वीरः कारुण्यं करुणा घृणा ।**

हास्य स. स. स. पु. पु.

बीभत्स रस **कृपा दयानुकम्पा स्यादनुक्रोशोऽप्यथो हसः ॥ १८ ॥**

पु. न. पु.स.न. पु.स.न.

था चिह्नाना **हासो हास्यं च बीभत्सं विकृतं (त्रिष्विदं द्वयम्) ।**

उत्साहवर्धन, वीर ये २ वीर रस के नाम हैं। कारुण्य, करुणा, घृणा, कृपा, दया, अनुकम्पा, अनुक्रोश ये ७ करुणा रस के नाम हैं। हस, हास, हास्य ये ३ हास्य रस के नाम हैं। बीभत्स, विकृत, 'वैकृत' ये २ बीभत्स रस के नाम हैं। ये दोनों त्रिलिङ्ग में जानना चाहिये अर्थात् रस में वर्तमान ये २ पुंलिङ्ग हैं और रसवान् में त्रिलिङ्ग कहाते हैं ॥ १८ । १ ॥

पु. न. न. न. न.

आश्चर्य **विस्मयोऽद्भुतमाश्चर्यं चित्रमप्यथ भैरवम् ॥ १९ ॥**

न. न. न. न. न. न.

भयानक **दारुणं भीषणं भीष्मं भीमं घोरं भयानकम् ।**

---

१ "विभवैरनुभावैश्च युक्तो वा व्यभिचारिभिः । आस्वाद्यत्वात्प्रधानत्वात् स्थाय्येव तु रसो भवेदित्युक्तेः रत्यादिः स्थायीभाव एव सामाजिकैश्चर्व्यमाणो रसपदव्यपदेश्यो भवति तत्र रतिस्थायिभावकः कान्ताद्यालम्बनकः स्रक्चन्दनाद्युद्दीपितः कटाक्षाद्यनुभावितो व्रीडादिसंचारितः शृङ्गारः १ उत्साहस्थायिभावको द्विषद्द्विजनादीनालम्बनकोऽपकारगुणापद्युद्दीपितः प्रतीकारकरणदानाद्यनुभावितो हर्षवेगचिन्तादिसंचारितो वीरः २ शोकस्थायिभावको मृताद्यालम्बनकस्तद्गुणाद्युद्दीपितारोदनाद्यनुभावितो दैन्यादिसंचारितः करुणः ३ विस्मयस्थायिको विस्मयजनककर्मकर्तालम्बनको विस्मयकर्माद्युद्दीपितश्चकितताद्यनुभावितो हर्षादिसंचारितोऽद्भुतः ४ हासस्थायिभावको विकृतकृपालम्बनको वैकृताद्युद्दीपितो गलफुल्लाद्यनुभावितः श्रमादिसंचारितो हास्यः ५ भयस्थायिभावको विकटाद्यालम्बनकस्तद्विकटकर्मोद्युद्दीपितः पलायताद्यनुभावितो जडतादिसंचारितो भयानकः ६ जुगुप्सास्थायिभावको विण्मूत्राद्यालम्बनको दुर्गन्धाद्युद्दीपितो निष्ठीवनाद्यनुभावितो ग्लान्यादिसंचारितो बीभत्सः ७ क्रोधस्थायिभावको द्विपदालम्बनकस्तदपकाराद्युद्दीपितो विकत्थनाद्यनुभावितो गर्वादिसंचारितो रौद्रः ८" इत्यष्टानां लक्षणम् ॥

न. न. न. न.

उग्ररस भयंकरं प्रतिभयं रौद्रं तूग्र (ममी त्रिषु) ॥ २० ॥

पु.न. स. स. न. न.

भय चतुर्दश दरत्रासौ भीतिर्भीः साध्वसं भयम् ।

विस्मय, अद्भुत, आश्चर्य, चित्र ये ४ अद्भुत रस के नाम हैं । भैरव, दारुण, भीषण, भीष्म, भीम, घोर, भयानक, भयंकर, प्रतिभय ये ९ भयानक रस के नाम हैं । रुद्र, उग्र ये २ उग्र रस के नाम हैं । ये अद्भुत आदि १४ शब्द तद्वान् में तीनों लिङ्ग होते हैं यानी विशेष्यलिङ्ग कहाते हैं । दर, त्रास—उत्त्रास—वित्रास—संत्रास, भीति, भी, भिया, साध्वस, भय ये ६ भय (डर) के नाम हैं ॥ १९ । २० । ½ ॥

पु.

मन का विकार अर्थप्रकाशक "विकारोमानसो"भावोऽनुभावो (भावबोधकः) ॥२१॥

पु. पु. पु. पु. स.

गर्व या घमण्ड प्रतिष्ठा या बड़प्पन गर्वोऽभिमानोहंकारो मानश्चित्तसमुन्नतिः ।

मन के विकार को 'भाव' कहते हैं यह १ मनोविकार का नाम है । जो भाव का सूचक गुण क्रियादि है उसे 'अनुभाव' कहते हैं यह १ रत्यादिसूचक रोमांच आदि का नाम है । गर्व, अभिमान, अहंकार ये ३ गर्व (घमण्ड) के नाम हैं और मान, चित्तसमुन्नति ये २ बड़प्पन के नाम हैं ॥ २१ । ½ ॥

पु. पु. ३ पु. स.

अपमान अनादरः परिभवः परीभावस्तिरस्क्रिया ॥ २२ ॥

स. स. स. न. न.

लज्जा रीढावमाननावज्ञावहेलनमसूर्क्षणम् ।

न. स. स. स. स. स.

औरसे लज्जा मन्दाक्षं ह्रीस्त्रपा व्रीडा लज्जा (सापत्रपान्यतः) ॥ २३ ॥

अनादर, परिभव, परिभाव—परीभाव, 'पराभव' तिरस्क्रिया, रीढा, अवमानना, विमानना, अवहेलन—अवहेला—हेला, असूर्क्षण—असूक्षण—असुक्षण—संसुर्क्षण ये ६ अनादर के नाम हैं । मन्दाक्ष, 'मन्दास्य' ह्री, त्रपा, व्रीडा—व्रीडन, व्रीडित, लज्जा—लज्या ये ५ लज्जा के नाम हैं और वही लज्जा यदि दूसरे से हो तो 'अपत्रपा' कहाती है यह १ पिता आदि के आगे उपजी हुई लाज (शर्म) का नाम है॥२२।२३॥

स. स. स.

सहना पर-धन की चाह क्षान्तिस्तितिक्षाभिध्या (तु परस्वाविषये स्पृहा) ।

स. स. स.

असहना पै लगाना अक्षान्तिरीर्ष्यासूया तु "दोषारोपो गुणेष्वपि" ॥ २४ ॥

---

१ "भृङ्गारी विष्णुदेवः स्याद्धास्यः प्रमथदैवतः । करुणो यमदैवस्तु स्याद्रौद्रो रुद्रदैवत इति भरतः ॥

२ दर्पोऽवलेपोऽवष्टम्भश्चित्तोद्रेकस्स्मयो मदः इति षट्मदस्य ॥

३ भजन्ति ते मूढधियः पराभवमिति प्रयोगश्च ॥

४ क्षपितः क्षाम्यतेः क्षान्तिः चितस्तु क्षमतेः क्षमेति कौमुद्याम् ॥

क्षान्ति, तितिक्षा ये २ क्षमा (सहने) के नाम हैं। पराये द्रव्य के विषय में चोरी आदि से वाञ्छा को ' अभिध्या ' कहते हैं यह १ परधन हरने की चिन्ता का नाम है। अक्षान्ति, ईर्ष्या ये २ पराये अनभल चाहने के नाम हैं अथवा पराये ऐश्वर्य के असहन के नाम हैं और जो गुणों में दोष लगाना है उसे 'असूया' या 'अभ्यसूया' कहते हैं यह १ अर्थ दान आदि गुणों में दम्भकत्वादिरूप दोषारोपण का नाम है ॥ २४ ॥

न. पु. पु. पु. पु. स.

वैर शोक **वैरं विरोधो विद्वेषो मन्युशोकौ तु शुक् (स्त्रियाम्)।**

पु. पु. पु.

पछितावा **पश्चात्तापोनुतापश्च विप्रतीसार (इत्यपि) ॥ २५ ॥**

वैर, विरोध, विद्वेष ये ३ वैर के नाम हैं। मन्यु, शोक, शुक् ये ३ शोच के नाम हैं इनमें संपदादि क्विबन्त शुक्शब्द स्त्रीलिङ्ग में रहता है और पश्चात्ताप, अनुताप, विप्रतीसार—विप्रतिसार ये ३ कुछ कर पीछे से पछिताने के नाम हैं ॥ २५ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. स. स.

क्रोध **कोपक्रोधामर्षरोषप्रतिघारुट्क्रुधौ (स्त्रियाम्)।**

न. पु. पु.

शील,पागल **शुचौ तु चरिते शीलमुन्मादश्चित्तविभ्रमः॥ २६ ॥**

कोप, क्रोध, 'अमर्ष—आमर्ष,'[1] रोष, प्रतिघ, रुट्—रुषा, क्रुध्—क्रुधा और भामी ये ७ क्रोध के नाम हैं। इनमें षकारान्त रुट् और धान्त क्रुध् ये २ स्त्रीलिङ्ग हैं और शुद्ध चरित यानी यश आदि के आचरण में ' शील ' होता है यह १ शील का नाम है और उन्माद—चित्तविभ्रम ये २ उन्माद (पागलपने) के नाम हैं ॥ २६ ॥

पु. स. न. न. पु. पु.न.

प्रेम **प्रेमा (ना) प्रियता हार्दं प्रेम स्नेहो (ऽथ) दोहदम्।**

स. स. स. स. स. स. स. पु.

मनोरथ **इच्छा कांक्षा स्पृहेहातृड्वाञ्छा लिप्सा मनोरथः॥ २७ ॥**

पु. पु. पु. पु.स.

बड़ी चाहना **कामोभिलाषस्तर्षश्च सोत्यर्थं लालसा (द्वयोः)।**

धर्मचिन्ता पु. स. पु. स.

मानसी पीड़ा **उपाधि (र्ना) धर्मचिन्ता पुंस्याधि (र्मानसी व्यथा) ॥ २८ ॥**

प्रेमा, प्रियता, हार्द, प्रेम—स्नेह ये ५ स्नेह (प्रेम) के नाम हैं इनमें प्रेमा पुंलिङ्ग

---

१ अमर्षो ह्रस्वादिः "किमप्यमर्षोऽनुनये भृशायते" (इति भारविः) 'दीर्घादिरपि' इति हट्टचन्द्रः निरुद्योगं निरामर्षं निर्वीर्यमरिनन्दनमिति विशालः ॥

है और प्रेम नपुंसक है। दोहद, इच्छा, काङ्क्षा—आकाङ्क्षा, स्पृहा, ईहा, तृट्—तृषा, वाञ्छा, लिप्सा, मनोरथ, काम, अभिलाष (स) तर्ष ये १२ इच्छा (चाहना) के नाम हैं। इनमें 'दोहद' यह इच्छामात्रवाची होकर विशेषता से गर्भिणी की इच्छा में प्रयोग किया जाता है और वह तर्ष यदि बड़ी भारी हो तो लालसा—लालषा भी कहाती है यह पुंलिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग में रहता है यह १ बड़ी चाहना का नाम है। उपाधि, धर्मचिन्ता ये २ धर्मविचार के नाम हैं। इनमें उपाधि पुंलिङ्ग है और जो मानसी पीड़ा है उसे 'आधि' कहते हैं यह पुंलिङ्ग में रहता है यह १ मानसी व्यथा (मनोदुःख) का नाम है॥ २७। २८॥

स्मरण मित्र मिलने की — स. स. न. स. स.
स्याच्चिन्ता स्मृतिराध्यानमुत्कण्ठोत्कलिके (समे)।
जल्दी उत्साह बड़ा उत्साह — पु. पु. पु.न.
उत्साहोऽध्यवसायस्स्यात्सवीर्यमतिशक्तिभाक्॥ २९॥

चिन्ता—चिन्तिया, स्मृति, आध्यान—आध्या ये ३ स्मरण के नाम हैं। उत्कण्ठा, उत्कलिका ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ कामादिकों से उपजी स्मृति के नाम हैं। अथवा मित्र मिलने की उतावली के नाम हैं। उत्साह, अध्यवसाय ये २ उत्साह के नाम हैं और वही उत्साह यदि बड़ी शक्तिवाला हो तो वीर्य—वीर्या कहा जाता है यह १ बड़े उत्साह का नाम है॥ २९॥

पु.न. पु. पु. पु. न. न.
छल या ठगई **कपटोऽस्त्री व्याजदम्भोपधयश्छद्मकैतवे।**
स. स. न. पु. स.
भूल **कुसृतिर्निकृतिः शाठ्यं प्रमादोऽनवधानता॥ ३०॥**

कपट, व्याज, दम्भ, उपधि, छद्म, कैतव, कुसृति, निकृति, शाठ्य ये ९ कपट के नाम हैं। इनमें कपट पुं०नपुंसक में होता है। छद्म—कैतव—शाठ्य ये नपुंसक में रहते हैं और प्रमाद, अनवधानता ये २ असावधानी या भूल के नाम हैं॥ ३०॥

न. न. न. न.
खेल **कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम्।**
स्त्रियों का रस विशेष या चोचला, नखरा आदि **स्त्रीणां विलासविव्वोकविभ्रमा ललितं तथा॥ ३१॥**
हेला लीलेत्यमी हावाः क्रियाः शृङ्गारभावजाः।

कौतूहल, कौतुक, कुतुक, कुतूहल ये ४ कौतुक (खेल) के नाम हैं। विलास, विव्वोक, विभ्रम, ललित, हेला, लीला, विच्छित्ति, किलकिञ्चित, मोट्टायित, कुट्टि-

१ लीला विलासो विच्छित्तिर्विभ्रमः किलकिञ्चितम्। मोट्टायितं कुट्टमितं विब्बोको ललितं तथा॥ विहृतं चेति मन्तव्या दश स्त्रीणां स्वभावजाः (इति नाट्यरत्नकोषः)॥

मित और विहृत ये ११ स्त्रियों के शृङ्गार रससे व मनोविकार से उपजीं क्रिया व चेष्टा 'हाव' कहाते हैं यानी चोचले व नखरे आदि कहे जाते हैं उनमें सुन्दरियों की आंखें मुँह व भौंह आदिकों से जो कुछ विशेषरस उपजता है उसे 'विलास' कहते हैं। अहंकार से उपजे अनादरात्मक विशेष को 'विव्वोक' कहा है। वाणी, वस्त्र व आभूषण आदि का जो स्थान से उलट पलट, होजानाहै वह 'विभ्रम' कहाता है। समस्त अङ्गों के अच्छे विन्यास को 'ललित' कहते हैं। अवगणनपूर्वक दीनता दिखाने को 'हेला' कहते हैं। पतिके भूषण वचन आदि के अनुकरण को 'लीला'। प्यारे से दिये प्रीति के लिये थोड़े से आभूषणों को 'विच्छित्ति'। हर्ष से सूखे रोने गाने आदि को 'किलकिञ्चित' और प्यारे की कथाओं में अँगड़ाने, जँभुआने, कान खुजलाने आदि को 'मोट्टायित' व हर्ष से सुखमें भी दुःख करने को 'कुट्टिमित' कहते हैं और अवसर में आये वचन को छल आदिकों से हरने को 'विहृत' कहते हैं ये क्रम से स्त्रियों के हावभाव जानना चाहिये ॥ ३१ । १ ॥

क्रीड़ामात्र — पु. पु.स. पु. स. स. न.

द्रवकेलिपरीहासाः क्रीडा खेला नर्म च ॥ ३२ ॥

स्वरूप का छिपाना — पु. पु. न. स. स. न.

कूदना — **व्याजोपदेशो लक्ष्यं च क्रीडा खेला च कूर्दनम् ।**

द्रव, केलि—केली, परीहास, क्रीडा, खेला, नर्म (न) ये ६ क्रीड़ामात्र के नाम हैं। व्याज, अपदेश, लक्ष्य—लक्ष ये ३ स्वरूप छिपाने के नाम हैं। क्रीड़ा, खेला, कुर्दन—कूर्दन ये ३ गेंद आदि खेलने के नाम हैं ॥ ३२ । १ ॥

पु. पु. पु. पु. स.

पसीना, मूर्च्छा — **घर्मो निदाघः स्वेदः स्यात्प्रलयो नष्टचेष्टता ॥ ३३ ॥**

स. स. पु. पु.

आकारगोपन, दौड़ादौड़ — **अवहित्थाकारगुप्तिः (समौ) संवेगसंभ्रमौ ।**

सशब्दहास — न.

थोड़ा हास — **स्यादाच्छुरितकं(हासः सोत्प्रासः)समनाक् स्मितम्॥३४**

घर्म, निदाघ, स्वेद ये ३ पसीना के नाम हैं। प्रलय, नष्टचेष्टता ये २ मूर्च्छा के नाम हैं। अवहित्था, आकारगुप्ति ये २ शोक से उपजी मुखादि की ग्लानि या आकार छिपाने के नाम हैं। संवेग, संभ्रम ये दोनों समानार्थ होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ हर्ष आदि से कार्यों में शीघ्रता करने के नाम हैं। अधिकता समेत हासको 'आच्छुरितक' या 'आच्छुरित' कहते हैं यह १ ठट्ठाकर हँसने का नाम है और जो थोड़ा हास्य है उसे 'स्मित' कहते हैं यह १ अल्पहास का नाम है ॥३३।३४॥

---

१ "ईषद्विकसितैर्दन्तैः कटाक्षैः सौष्ठवान्वितम्। अलक्षितद्विजद्वारमुत्तमानां स्मितं भवेत्" ॥ १ ॥

मध्यमहास रोमखड़ा होना रोना जँभुआना

न. पु. न.
"मध्यमः स्याद्वि"हसितं रोमाञ्चो रोमहर्षणम् ।
न. न. न. पु.स.न. न.
क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं जृम्भस्तु(त्रिषु)जृम्भणम् ॥ ३५ ॥

वह हास मध्यम हो यानी अधिकता या अल्पता से हीन हो तो 'विहसित' कहा जाता है यह १ मध्यम हास का नाम है । (आकुञ्चितकपोलाक्षं सस्वनं निःस्वनं तथा । प्रस्तावोत्थं सानुरागमाहुर्विहसितं बुधाः) । रोमाञ्च, रोमहर्षण ये २ रोमाञ्च (रोमखड़े होने) के नाम हैं । क्रन्दित, रुदित, क्रुष्ट ये ३ रोने के नाम हैं और जृम्भ, जृम्भण ये २ जँभुआने के नाम हैं इनमें जृम्भ तीनों लिङ्ग में रहता है ॥ ३५ ॥

आशाभङ्ग करना रेंगना निद्रा

पु. पु. न. न.
विप्रलम्भो विसंवादो रिङ्गणं स्खलनं (समे) ।
स. न. पु. पु. पु.
स्यान्निद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः संवेश (इत्यपि) ॥ ३६ ॥

विप्रलम्भ, विसंवाद ये २ छलयुक्तभाषण आशाभङ्ग करने के नाम या अङ्गीकृतके असंपादन के नाम हैं । रिङ्गण या 'रिङ्खण' स्खलन ये २ धर्मादि चालन या बालकों के हाथ पैर चलाने या रपटने के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहलाते हैं और निद्रा, शयन, स्वाप, स्वप्न, '[1]सुप्ति' संवेश ये ५ निद्रा के नाम हैं ॥ ३६ ॥

आलस्य भौंहें टेढ़ी करना टेढ़ा देखना

स. स. स. स. स.
तन्द्री प्रमीला भ्रकुटिर्भ्रुकुटिर्भ्रूकुटिः (स्त्रियाम्) ।
स. स. स.
अदृष्टिः(स्यादसौम्येक्षिणि)संसिद्धिप्रकृती(त्विमे) ३७ ॥

तन्द्री—तन्द्रि—तन्द्रा, प्रमीला ये २ बड़े श्रम आदिकों से समस्त इन्द्रियों की असामर्थ्य के नाम हैं । भ्रकुटि—भ्रकुटी, भ्रुकुटि—भ्रुकुटी, भ्रूकुटि—भ्रूकुटी, भृकुटि—भृकुटी ये ३ क्रोध आदिकों से ललाट के सिकोड़ने के नाम हैं अथवा भौंह चढ़ाने के नाम हैं । क्रोधयुक्त आंखि में अदृष्टि होता है यह १ क्रूरदृष्टि का नाम है और [2]संसिद्धि, प्रकृति ये २ स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ ३७ ॥

स्वभाव, कांपना उत्सव या महफिल

न. पु. पु. पु.
स्वरूपं (च) स्वभावश्च निसर्गश्चाथ वेपथुः ।
पु. पु. पु. पु. पु. पु.
कम्पोऽथ क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः ॥ ३८ ॥

इति नाट्यवर्गः ॥

स्वरूप, स्वभाव, निसर्ग ये ५ स्वभाव के नाम हैं । वेपथु, कम्प, 'वेपन, कम्पन' ये२

---

१ इतिरप्यत्र—"सुप्तिः स्पर्शाज्ञता निद्रा विश्रम्भे शयने स्त्रियाम्" (इति मेदिनी) ॥
२ "संसिद्धिः प्रकृतौ सिद्धौमदोमायामपि स्त्रियाम्" ॥

काँपने के नाम हैं। क्षण, उद्धर्ष, महस्, मह, उद्धव, उत्सव ये ५ उत्सव (महफ़िल) के नाम हैं। इनमें मह शब्द अदन्त है ॥ ३८ ॥

इति नाट्यवर्गविवरणम् ॥

अथ पातालवर्गो व्याख्यायते ॥

न. न. न. न.
पाताल बिल **अधोभुवनपातालबलिसद्मरसातलम् ।**
पु. न. न. न. न.
या पोलमात्र **नागलोकोथ कुहरं शुषिरं विवरं बिलम् ॥ १ ॥**
न. न. न. न. न. स. स.
पृथ्वी में पोल **छिद्रं निर्व्यथनं रोकं रन्ध्रं श्वभ्रं वपा शुषिः ।**
पु.स. पु. पु.स.न.
छेदसमेत वस्तु **गर्तावटौ "भुवि श्वभ्रे" सरन्ध्रे शुषिरं (त्रिषु) ॥ २ ॥**

अधोभुवन, पाताल, बलिसद्म (न्) रसातल, नागलोक "अधोलोक–फणिभुवन आदि भी" ये ५ पाताल के नाम हैं। कुहर, शुषिर या "सुषिर" विवर, बिल, छिद्र, निर्व्यथन, रोक, रन्ध्र, श्वभ्र, वपा, शुषि–सुषि, ये ११ बिलमात्र के नाम हैं। पृथ्वी में गढ़हे के होनेपर गर्त, 'अवट–अवटि' होते हैं ये २ भूरन्ध्र के नाम हैं। और छिद्रसमेत वस्तु में शुषिर तीनों लिङ्ग में होता है यह १ सरन्ध्र (छेदकिये) वस्तु का नाम है ॥ १ । २ ॥

पु.न. न. न. न. न.
अँधेरा बड़ा अँधेरा **अन्धकारो (ऽस्त्रियां) ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः ।**
न. न.
थोड़ा अँधेरा **(ध्वान्ते गाढे) ऽन्धतमसं (क्षीणे) ऽवतमसं (तमः) ॥ ३ ॥**

अन्धकार, ध्वान्त, तमिस्र, "तमिस्रा" तिमिर, तम 'तमस्' ये ५ अन्धकारके नाम हैं। इनमें अन्धकार पुंनपुंसक है और तम अदन्त व सान्तभी है। घने अन्धकार में 'अन्धतमस' होता है यह १ बड़े अँधेरे का नाम है और अल्प अन्धकार में अवतमस कहलाता है यह १ थोड़े से अँधेरे का नाम है ॥ ३ ॥

न. पु. पु.
चारों ओर अँधेरा **विष्वक् सन्तमसं नागाः काद्रवेयाः (स्तदा वरः) ।**
नाग पु. पु. पु. पु. पु.
नागेश्वर **शेषोऽनन्तो वासुकिस्तु सर्पराजो (ऽथ) गोनसे ॥ ४ ॥**
नागराज पु. पु. पु. पु.
छोटा सांप अजगर **तिलित्सः स्या (दजगरे) शयुर्वाहस (इत्युभौ) ।**

१ "रन्ध्रं दूषणेच्छिद्रे (इति विश्वमेदिन्यौ) ॥
२ "गोनासाय नियोजितागदरजाः" (इति राजशेखरः) ॥

सर्वव्यापी अन्धकार को 'संतमस' कहते हैं यह १ व्यापक अँधेरे का नाम है। नाग, काद्रवेय ये सर्पों से अन्य देवयोनियां कहलाती हैं ये २ फन पूंछधारी नराकार सर्पों के नाम हैं अथवा नागों के नाम हैं। उनके स्वामी शेष व अनन्त कहाते हैं ये २ नागेश्वर के नाम हैं। वासुकि, सर्पराज ये २ सर्पराज के नाम हैं। गोनस, गोनास, तिलित्स ये २ सर्पविशेष (घोणास) या छोटे सांप के नाम हैं। अजगर, शयु, वाहस ये ३ अजगर सांप के नाम हैं॥ ४ । ३ ॥

पु. पु. पु.
विषशून्य डेंडहा — अलगर्दो जलव्यालः (समौ) राजिलडुण्डुभौ ॥ ५ ॥
कराइत केंचुलीहीन — पु. पु. पु. पु.
मालुधानो मातुलाहिर्निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः।

अलगर्द—"अलगर्ष" जलव्याल ये २ पनिहां सांप के नाम हैं। राजिल, डुण्डुभ ये दोनों समानार्थ होकर समानलिङ्ग कहलाते हैं ये २ निर्विष दोमुहां सांप के नाम हैं। मालुधान, मातुलाहि ये २ चित्रसर्प के नाम हैं और निर्मुक्त, मुक्तकञ्चुक ये २ केंचुल छोड़े हुए सांप के नाम हैं॥ ५ । ३ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
सर्पमात्र — सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजङ्गोहिर्भुजंगमः॥ ६ ॥
पु. पु. पु. पु. पु.
आशीविषो विषधरश्चक्री व्यालः सरीसृपः।
पु. पु. पु. पु. पु.
कुण्डली गूढपाच्चक्षुःश्रवाः काकोदरः फणी ॥ ७ ॥
पु. पु. पु. पु.
दर्वीकरो दीर्घपृष्ठो दन्दशूको बिलेशयः।
पु. पु. पु. पु. पु.
उरगः पन्नगो भोगी जिह्मगः पवनाशनः॥ ८ ॥

सर्प—सर्पा—सर्पिणी, पृदाकु, भुजग, भुजङ्ग, अहि, भुजंगम, आशीविष, विषधर, चक्री (क्रिन्) व्याल—व्याड, सरीसृप, कुण्डली (लिन्) गूढपाद्—गूढपद—गूढपाद, चक्षुःश्रवाः (स्) काकोदर, फणी (णिन्) दर्वीकर, दीर्घपृष्ठ, दन्दशूक, बिलेशय—बिलशय, उरग—"उरङ्ग—उरंगम" पन्नग, भोगी, (गिन्) जिह्मग और पवनाशन ये २५ सांपों के नाम हैं॥ ६ । ८ ॥

पु.स.न. पु.स. पु.स.
सर्पसम्बन्धी फण — त्रिष्वाहेयं "विषास्थ्यादि" (स्फटायान्तु) फणा (द्वयोः)।
केंचुली विषमात्र — पु. पु. पु. पु.३ पु.
(समौ) कञ्चुकनिर्मोकौ क्ष्वेडस्तु गरलं विषम् ॥ ९ ॥

---

१ "निर्मुक्तो निर्विषः सर्पो राजिलः परिकीर्तितः इति स्मरणात् ॥

२ लेलिहानो द्विरसनो गोकर्णः कञ्चुकी तथा। कुंभीनसः फणधरो हरिर्भोगधरस्तथा॥ अहेः शरीरं भोगः स्यादाशीर्प्यहिदंष्ट्रिका। द्वयोर्वर्तमानत्वात्कयायांफणापि द्वयोरिति केचित् ॥

३ "गरलं पन्नगविषे तृणपूलकमानयोः (इति हैमः) ॥

सर्पसम्बन्धी विष, हड्डी व केंचुलि आदिकों को 'आहेय' कहते हैं यह १ सर्प के विषादिकों का नाम है। स्फटा—फटा, फणा ये दोनों पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग कहलाते हैं ये २ फणा के नाम हैं। कंचुक, निर्मोक ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ केंचली के नाम हैं और क्ष्वेड, गरल, विष ये ३ विषमात्र के नाम हैं। इनमें क्ष्वेड पुंलिङ्ग, गरल नपुंसक और विष पुं० नपुंसक में रहता है॥ ९॥

विष भेद "पुंसि क्लीबे च" काकोलकालकूटहलाहलाः।
सौराष्ट्रिकः शौक्लिकेयो ब्रह्मपुत्रः प्रदीपनः॥ १०॥
दारदो वत्सनाभ (श्च विषभेदा अमी नव)।

काकोल, कालकूट, हलाहल—"हालाहल—ह्लालहल" ये तीनों पुंलिङ्ग नपुंसक हैं। सौराष्ट्रिक, 'सारोष्ट्रिक' शौक्लिकेय, ब्रह्मपुत्र, प्रदीपन, दारद, वत्सनाभ ये नव विषों के भेद हैं यह एक २ स्थावर विष भेदों का नाम है॥ १०। ½॥

विषवैद्य सांप का पकड़नेवाला विषवैद्यो जाङ्गुलिको व्यालग्राह्याहितुण्डिकः॥ ११॥

इति पातालभोगिवर्गः॥

विषवैद्य, जांगुलिक ये २ गारुडिक या मदारी के नाम हैं। व्यालग्राही, आहितुण्डिक, 'अहितुण्डिक' ये २ सांप पकड़नेवाले के नाम हैं॥ ११॥

इति पातालभोगिवर्गविवरणम्।

अथ नरकवर्गो व्याख्यायते॥

नरक, स्यान्नारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिः (स्त्रियाम्)।
नरकभेद, तद्भेदास्तपनावीचिमहारौरवरौरवाः॥ १॥
प्रेत, संहारः कालसूत्रं (चेत्याद्याः) "सत्त्वास्तु" नारकाः।
वैतरणीनदी अलक्ष्मी प्रेता वैतरणी (सिन्धुः) स्यादलक्ष्मीस्तु निर्ऋतिः॥ २॥

नारक, नरक, निरय, दुर्गति ये ४ नरक के नाम हैं। इनमें दुर्गति स्त्रीलिङ्ग में रहता है उनके भेद ये हैं। तपन, अवीचि, महारौरव, रौरव, संहार—संघात, कालसूत्र

---

१ "स्निग्धं भवत्यमृततुल्यमहो कलत्रं हालाहलं विषमिवाऽसुखं तदेव। यद्वा काममनुभाविमयेन्द्रिय-कुण्डैर्यद्यपि दुष्कृतहालहलौघः"॥

ये ६ नरकों के भेद हैं आद्यपद से तामिस्र, अन्धतामिस्र, असिपत्रवन, कुम्भीपाक आदिकों को जानना चाहिये जो जलके समान देखने में आता है परन्तु जिसमें पत्थरसमान पीठ होने से लहर या सुख न हो तो उसे 'अवीचि' कहते हैं । कच्चे मांसाहारी अतिक्रूरप्राणी का नाम (महारुरु) है उसके नरकको 'महारौरव' कहते हैं। सर्प से भी अधिक हिंसाकारी प्राणी 'रुरु' कहाताहै उसके नरकको 'रौरव' कहते हैं। जिसमें कालरूप सूत्र होते हैं उसे 'कालसूत्र' कहते हैं । नरकमें रहनेवाले प्राणी प्रेत या परेत भी होते हैं यह १ नरकस्थ प्राणियों का नाम है । नरककी नदीको वैतरणी या 'वैतरणि' कहते हैं यह १ नारकीय नदी का नाम है और अलक्ष्मी, निर्ऋति ये २ नारकीय अशोभा के नाम हैं ॥ १ । २ ॥

१स. स. स. स. स.

नरकमें हठकेलना विष्टिराजूः कारणा तु यातना तीव्रवेदना ।

तीव्रपीड़ा स. स. स. न. न. न.

दुःख यामानसी पीडा बाधा व्यथा दुःखमामनस्यं प्रसूतिजम् ॥ ३ ॥

व्यथा न. न. न.

शारीरपीड़ा स्यात्कष्टं कृच्छ्रमाभीलं (त्रिष्वेषां भेद्यगामि यत्) ।

इति नरकवर्गः ॥

विष्टि, आजू ये २ हठ से नरक में फेंकने के नाम हैं । कारणा, कारिका, यातना—यातना, तीव्रवेदना ये ३ नारकीय तीव्र दुःख के नाम हैं । पीडा, बाधा—आबाधा, व्यथा, दुःख, अमानस्य—आमनस्य, प्रसूतिज ये ६ मनोवेदना के नाम हैं । कष्ट, कृच्छ्र, आभील ये ३ शारीरपीड़ा के नाम हैं । अथवा ये ६ दुःख केही नाम हैं । ऐसा कितेक आचार्य मानते हैं परन्तु स्वामी के मत में पीड़ा आदि ४ मानसी व्यथाके नाम हैं । आमनस्य, प्रसूतिज ये २ वैमनस्य के नाम हैं और कष्ट आदि ३ शारीरपीड़ा के नाम हैं । यह भेद जानना चाहिये इन्होंके बीच जो द्रव्यगामी (विशेष्यवाची) हैं वे त्रिलिङ्ग कहाते हैं जैसे "दुःखा सेवा, दुःखः सुतो निर्गुणः, सर्वं दुःखं विवेकिनः" आदि जानना चाहिये और भेद्यगामी के अभावमें उनके पूर्वोक्त लिङ्ग होते हैं ॥ ३ । ३ ॥

इति नरकवर्गविवरणम् ॥

अथ वारिवर्गो व्याख्यायते ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

समुद्र समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः ।

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

समुद्रभेद उदन्वानुदधिः सिन्धुः सरस्वान्सागरोऽर्णवः ॥ १ ॥

---

१ विष्टिः कर्मकरे तु वाच्यलिङ्गो यथा "विशन्तु विष्टयः सर्वे वत्रा इव महौजसः" ॥

२ "हठादमर्षितिकः क्लेशो विष्टिराजूश्च कीर्त्यते" (इति कार्यान्तरम्) ॥

पु. पु. पु. पु.

रत्नाकरो जलनिधिर्यादःपतिरपांपतिः ।

पु. पु.

समुद्रभेद (तस्य प्रभेदाः) क्षीरोदो लवणोद (स्तथापरे) ॥ २ ॥

समुद्र, अब्धि, अकूपार–आकूवार, कूवार–कूपार, पारावार–पारापार–अवार-पार, सरित्पति, उदन्वान्, उदधि, सिन्धु, सरस्वान्, सागर, अर्णव, रत्नाकर, जलनिधि, यादःपति, अपांपति ये १५ सागरमात्र के नाम हैं। उनके ये भेद हैं–क्षीरोद, लवणोद तथा इक्षुरसोद, सुरोद, दधिमण्डोद, स्वादूद और घृतोद ये अपरभेद कहाते हैं यह अलग २ एक २ समुद्रविशेषों का नाम है ॥ १ । २ ॥

स.बहु.व. न. न. न. न. न.

जलमात्र आपः(स्त्री भूम्नि) वार्वारि सलिलं कमलं जलम् ।

न. न. न. न. न. न.

पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥ ३ ॥

न. न. न. न. न.

कबन्धमुदकं[2] पाथः पुष्करः सर्वतोमुखम् ।

न. न. न. न. न. न. न. न.

अम्भोर्णस्तोयपानीयनीरक्षीराम्बुशंवरम् ॥ ४ ॥

न. पु.न. पु.स.न. पु.स.न.

जलविकार मेघपुष्पं घनरस (स्त्रिषु द्वे) आप्यमम्मयम् ।

अप्–आपस्, वार्, वारि, सलिल, कमल, जल, पयः (स्) कीलाल, अमृत, जीवन, भुवन, वन, कबन्ध–"कम्, अन्धम्", उदक, 'उद–दक', पाथः (स्) सर्वतोमुख, अम्भः (स्) अर्णः (स्) तोय, पानीय, नीर, 'नार' क्षीर, अम्बु, शंवर–शम्बर, मेघपुष्प, घनरस ये २७ जलके नाम हैं। इनमें अप् शब्द स्त्रीलिङ्ग बहुवचन में रहता है और सान्त आपस् नपुंसक भी है घनरस पुंलिङ्ग नपुंसक है और आप्य–आप्या, अम्मय–अम्मयी ये दोनों तीनों लिङ्ग में रहते हैं ये दो जल विकार के नाम हैं ॥ ३ । ४ । ५ ॥

पु. पु. पु.स. पु.स.

लहर भङ्गस्तरङ्ग ऊर्मि(र्वा स्त्रियां)वीचि "रथोर्मिषु" ॥ ५ ॥

हिलकोरा पु. पु. पु.

भँवर महत्सूल्लोलकल्लोलौ स्यादावर्तो (ऽम्भसां भ्रमः) ।

न. पु. पु. स.

बूंद पृषन्ति[3]बिन्दुपृषताः (पुमांसो) विप्रुषः(स्त्रियः) ॥ ६ ॥

---

१ "आपोभिर्मार्जनं कृत्वेति स्मृतेः" ॥

२ उदकशब्दसमानार्थ उदशब्दो विद्यते । तथा च 'प्रसन्नोदम्' इत्यसंज्ञायामप्युदशब्दः प्रयुज्यते इति कैयटः । 'प्रोक्तं प्राज्ञैर्भुवनममृतं जीवनीयं दकं चेति' हलायुधः ॥

३ "पयः पृषन्तिभिः स्पृष्टा वान्ति वाताः शनैः शनैः" (इति भाग्यवतीविजयवाक्यम्) ॥

भङ्ग, तरङ्ग, ऊर्मि—ऊर्मी, वीचि-वीची, विचि—विची ये ४ लहरियोंके नाम हैं । इनमें ऊर्मि,वीचि ये २ स्त्रीलिङ्ग हैं और बड़ी लहरियों में उल्लोल, कल्लोल होते हैं ये २ महातरङ्ग (हलकोरे) के नाम हैं व जलों का भ्रम 'आवर्त' कहलाता है यह १ भँवर का नाम है और पृषत्–पृषन्ति, बिन्दु, पृषत, विप्रुष् ये ४ जलकणों के नाम हैं इनमें पृषत् नपुंसक, बिन्दु–पृषत पुंलिङ्ग और विप्रुट् स्त्रीलिङ्ग है ॥ ५ । ६ ॥

न. पु. पु. पु.

जल का निक- वक्राणि पुटभेदाः स्युर्भ्रमाश्च जलनिर्गमाः ।

लना नाली या न. न. न. न. पु.स.न.

नल,किनारा कूलं रोधश्च तीरं (च) प्रतीरं (च) तटं (त्रिषु) ॥ ७ ॥

वक्र या चक्र, पुटभेद ये २ चक्राकार से जलों के नीचे जाने के नाम हैं । भ्रम, जलनिर्गम ये २ जल निकलनेवाले जालके या नदी आदिकों में नीचे टिके जल के ऊपर निकलनेके नाम हैं अथवा ये ४ जो जलचक्र के आकार नीचे जाते हैं उनके नाम हैं । कूल, रोध, तीर, प्रतीर, तट ये ५ किनारे के नाम हैं । इनमें रोध सान्त व अदन्त है और तट तीनों लिङ्ग में रहता है ॥ ७ ॥

न. न. न.

दोनों किनारा पारावारे (परार्वाची तीरे) पात्रं (तदन्तरम्) ।

दोनोंका मध्य पु.न. पु.न.

द्वीप या टापू द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपं (यदन्तर्वारिणस्तटम्) ॥ ८ ॥

परतीर व अवारतीर ये पारावारे कहाते हैं यानी परतीरको पार व अवरतीर को अवार कहते हैं यह १ नदी आदि के इस पार और उस पारका नाम है। पार व अवार दोनों के मध्यको 'पात्र' कहते हैं यह १ दोनों किनारों के बीचका नाम है । जल के मध्यका जो तट है उसे 'द्वीप' व 'अन्तरीप' कहते हैं ये दोनों स्त्रीलिङ्ग में नहीं होते हैं वरन पुं० नपुंसक में रहते हैं ये २ द्वीप या टापू के नाम हैं ॥ ८ ॥

न. न. न.

जलमध्य का स्थल, बालू (तोयोत्थितं) तत्पुलिनं सैकतं सिकतामयम् ।

का स्थल, पु. पु. पु.न. पु. पु.

कीचड़ निषद्वरस्तु जम्बालः पङ्को (ऽस्त्री) शादकर्दमौ ॥ ९ ॥

जलसे उठा हुआ जो स्थल है उसे 'पुलिन' कहते हैं यह १ जलसे थोड़े समय से निकले तटका नाम है । सैकत, सिकतामय ये २ बालूसे युक्तस्थान के नाम हैं और निषद्वर, जम्बाल, पङ्क, शाद, कर्दम ये ५ कीचड़ (घोदा) के नाम हैं इनमें पङ्क शब्द स्त्रीलिङ्ग नहीं है वरन पुं० नपुंसक में रहता है ॥ ९ ॥

पु. पु. पु. पु.
नहर गड्ढा जलोच्छ्वासाः परीवाहाः कूपकास्तु विदारकाः ।
जल पु.स.न. स. स. स.
नाव नाव्यं (त्रिलिङ्गं नौतार्ये) स्त्रियां नौस्तरणिस्तरिः ॥१०॥

जलोच्छ्वास, परीवाह–'परिवाह' ये २ बढ़े हुए जलके निकलने की मार्ग के नाम या बहुत बढ़े जलके चारों तरफ़ बहने (नहर) के नाम हैं। नावसे तरने योग्य जलमें 'नाव्य' तीनों लिङ्ग में होता है यह १ नौकासे पार होने योग्य जलका नाम है और नौ–नौका, तरणि–तरणी, तरि–तरी ये तीनों स्त्रीलिङ्ग कहलाते हैं ये ३ नौका के नाम हैं ॥ १० ॥

बेड़ा पु.न. पु. पु. पु.न.
सोता उडुपं (तु) प्लवः कोलः स्रोतो (म्बुसरणं स्वतः) ।
उतराई पु. न. स. स.
डोंगी आतरस्तरपण्यं स्याद् द्रोणी[2] काष्ठाम्बुवाहिनी॥ ११ ॥

उडुप, प्लव, कोल ये ३ बेड़ा या घन्नई के नाम हैं। जो आपसे ही जल बहता या निकलता है उसे स्रोतः– स्रोत या श्रोतभी कहते हैं यह १ अकृत्रिम जल बहने या सोताके नाम हैं । आतर–आतार–अनुतर, तरपण्य ते २ खेवाई या उतराई के नाम हैं और काष्ठमयी जलवाहिनी को द्रोणी, द्रोणि, द्रुणी, द्रुणि, काष्ठाम्बुवाहिनी, अम्बुवाहिनी, अम्बुसेचनी ये २ काठ से बनी नौकाकार अम्बुसेचनी (डोंगी) के नाम हैं ॥ ११ ॥

नाविक या जहाजी पु. पु. पु. पु.
पतवार पकड़ने सांयात्रिकः[3] पोतवणिक् कर्णधारस्तु नाविकः ।
वाला खेवैया पु. पु. पु. पु.
मस्तूल नियामकाः पोतवाहाः कूपको गुणवृक्षकः ॥ १२ ॥

सांयात्रिक, पोतवणिक् ये २ नाविक या जहाजी के नामहैं अथवा नावसे व्यवहार करनेवाले के नाम हैं । कर्णधार, नाविक ये २ पतवार पकड़नेवालेके या नावकेपीछे खड़े हुए लकड़ी घुमानेवाले के नाम हैं । नियामक, पोतवाह ये २ खेवैया के नाम हैं और कूपक, गुणवृक्षक ये २ नाव के मध्य में स्थित रस्सी बांधनेवाले काष्ठके या जिस में नाव बाँधी जाती है उस खूंटे या मस्तूलके नाम हैं ॥ १२ ॥

---

१ उपार्जितानामर्थानां त्याग एव हि रक्षणम् । तडागोदरसंस्थानां परीवाह इवाम्भसामिति दीर्घलक्ष्यम्, दीर्घाभावे 'परिवाहो जगतः करोति किमिति माघः' ॥

२ "द्रोणीभिरम्भसि चरन्ति महार्णवस्य" इत्यनेकार्थकैरवाकारकौमुदी ॥

३ संपूर्वस्य यातेर्द्वीपान्तरगमने वृत्तिः इति वाचस्पतीकेति कलिङ्गः ॥

डांड पु. स. न. पु.
पतवार **नौकादण्डः क्षेपणी स्यादरित्रं केनिपातकः।**
काठ की कुदार स. पु. न. न.
डोलची **अभ्रिः (स्त्री) काष्ठकुद्दालः सेकपात्रं (तु) सेचनम्॥१३॥**

नौकादण्ड, "क्षेपणी–क्षेपणि–क्षिपणी–क्षिपणि" ये २ नौका के दोनों तरफ़ बँधे चलानेवाले काष्ठ या डांड़ के नाम हैं। अरित्र, केनिपातक ये २ करिया या पतवार के नाम हैं। अभ्रि–अभ्री, अभ्रि–अभ्री, काष्ठकुद्दाल–काष्ठकूद्दाल–कुद्दाल ये २ नावआदि के मैलके दूर करने के लिये काठकी बनी कुदाली के नाम हैं और सेकपात्र, सेचन ये २ चमड़े आदिकी बनी जल फेंकनेवाली डोलचीके नाम हैं॥१३॥

न. पु.स.न.
आधीनाव, **(क्लीबे)ऽर्धनावं)नावोऽर्धे)"ऽतीतनौके"ऽतिनु (त्रिषु)।**
तैरनेवाला, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
निर्मल,गन्दा **(त्रिष्वागाधात्)प्रसन्नोच्छः कलुषोनच्छ आविलः॥१४॥**

नौका के आधे भाग में 'अर्धनाव' नपुंसक में होता है यह एक आधी नाव का नाम है। जिसने नौका को अतिक्रामण किया है उस पुरुष को 'अतिनु' कहते हैं यह तीनों लिङ्गमें रहताहै यह १ बड़े तैरनवाले का नाम है। इसके अनन्तर अगाध पर्यन्त तीनों लिङ्ग जानना चाहिये। प्रसन्न, अच्छ ये २ निर्मल (साफ़) के नाम हैं और कलुष, अनच्छ, आविल ये ३ मैले जलके नाम हैं॥ १४ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
गहरा, उथला **निम्नं गभीरं गम्भीरमुत्तानं (तद्विपर्यये)।**
बड़ा गहरा पु.स.न. पु.स.न. पु. पु. पु.
मलाह **अगाधमतलस्पर्शे कैवर्ते दासधीवरौ॥ १५॥**

निम्न, गभीर, गम्भीर ये ३ गहरे के नाम हैं। गहरे से भिन्नस्थल में 'उत्तान' कहाजाता है यह १ उथले का नाम है। अगाध, "आगाध", अतलस्पर्श ये २ महागम्भीर के नाम हैं अथवा अत्यन्त गहरे में 'अगाध' होताहै यह १ बड़े गहरेका नाम है और कैवर्त, दास–दाश, धीवर ये ३ मलाह के नाम हैं॥ १५ ॥

पु. न. न. न.
जाल, सुतरी **आनायः (पुंसि) जालं स्याच्छणसूत्रं पवित्रकम्।**
स. स. न. न.
टोकरी, बंसी **मत्स्याधानी कुवेणी स्याद् बलिशं मत्स्यवेधनम्॥१६॥**

आनाय, जाल ये २ जालक नाम हैं। इनमें आनाय पुंलिङ्ग है। शणसूत्र, पवित्रक ये २ सनसूत (सुतरी) के नाम हैं। मत्स्याधानी, कुवेणी "कुवेणि–कुवेणा"

१ "इवे प्रतिकृतौ" इति कन्। पवित्रात्द्विपरीतलक्षणया संज्ञायां कः॥

ये २ मछली धरनेके पात्र यानी टोकरी के नाम हैं और बलिश–बलिशी–बलिशा, बडिश–बडिशी–बडिशा, मत्स्यवेधन–मत्स्यवेधनी ये २ मछली पकड़ने की कटिया (बंसी) के नाम हैं ॥ १६ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
मछली गलफटी मछली **पृथुरोमा झषो मत्स्यो मीनो वैसारिणोऽण्डजः ।**
पु. पु. पु. पु.
या बच्चे **विसारः शकली(चाथ)गडकः शकुलार्भकः ॥ १७ ॥**

पृथुरोमा (मन्) झष–झस, मत्स्य–मत्सी–मत्स, मीन, वैसारिण, अण्डज, विसार, शकली (लिन्) शक्ली (न्) ये ८ सामान्य मछली के नाम हैं और गडक, शकुलार्भक ये २ मछलियों के बच्चे या गलफटी मछली के नाम हैं ॥ १७ ॥

पु. पु. पु. पु.
पढ़िना **सहस्रदंष्ट्रः[२] पाठीन उलूपी शिशुकः (समौ) ।**
सूस पु. पु. पु.स. पु.स.
झिंगवा सहरी **नलमीनश्चिलिचिमः प्रोष्ठी(तु)शफरी (द्वयोः) ॥ १८ ॥**

सहस्रदंष्ट्र, पाठीन ये २ बहुतसे दांतवाली या पढ़िना मछली के नाम हैं। उलूपी, शिशुक ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ सूसमछली के नाम हैं। नलमीन–नडमीन–तलमीन, चिलिचिम–चिलीचिमी–चिलीचिमि ये २ नलवनचारी मत्स्यविशेष (झींगा) के नाम हैं और प्रोष्ठी, शफरी, प्रोष्ठ, शफर ये दोनों स्त्रीलिङ्ग व पुंलिङ्ग में होते हैं ये २ सहरी मछली के नाम हैं ॥ १८ ॥

पु. न. पु.
छोटी मछली **क्षुद्राण्डमत्स्यसंघातः पोताधानमथो झषाः ।**
बहुतही छोटी पु. पु. पु. पु. पु. पु.
तिमिंगिल **रोहितो मद्गुरःशालो राजीवः शकुलस्तिमिः ॥ १९ ॥**

पु. न. पु.
जलजन्तु **तिमिंगिलादयश्चाथ यादांसि जलजन्तवः ।**
पु. पु. पु. पु.
जलजीव भेद **(तद्भेदाः)शिशुमारोद्रशङ्कवो मकरा "दयः" ॥ २० ॥**

क्षुद्राण्डमत्स्यसंघात, पोताधान ये २ छोटे अण्डे से उपजी छोटी मछली समूहों के नाम हैं। "अब मत्स्यविशेषों को कहते हैं" रोहित–रोहित्–'लोहित' यह १ रोहू मछली का नाम है। 'मद्गुर' यह १ मगरी का नाम है। शाल या साल यह १ चक्राङ्कित सौरी मछली का नाम है। 'राजीव' यह १ राया मछली का नाम है।

---

१ "अण्डजः कृकलासे स्यात्खगे मीने भुजंगमे । कस्तूर्यामण्डजा प्रोक्ता" इत्युपलभ्यते ॥

२ "सहस्रदंष्ट्रे वादालः पाठीने चित्रवल्लिकः । शकुले स्यात्कलकः" इति विशेषमत्स्यत्वेनोक्तः ॥

शकुल, सकुल यह १ महाबलवान् सौरा मछली का नाम है । 'तिमि' यह १ बड़ी भारी मछलीका नाम है । 'तिमिंगिल' यह १ तिमिकी निगलनेवाली मछलीका नाम है । आदि शब्दसे 'तिमिंगिलगिल' व 'नन्दावर्त' आदि जानना चाहिये यह अलग २ एक २ मछली विशेषों का नाम है । यादस्, जलजन्तु ये २ जलजन्तुओं के के नाम हैं । (अब उन जलजन्तुओं के भेद कहे जाते हैं) कि 'शिशुमार' यह १ शिरस का नाम है । 'उद्र' यह १ जलबिलाव का नाम है । 'शङ्कु' यह १ मछली विशेष का नाम है । 'मकर' यह १ मगरका नाम है और आदिशब्द से 'ग्रह' व 'कुम्भीर' आदि जानना चाहिये यह अलग एक २ जलजन्तु विशेषों का नाम है ॥ १९।२०॥

पु. पु. पु. पु. पु.
केकड़ा, कछुआ **स्यात्कुलीरः कर्कटकः कूर्मे कमठकच्छपौ ।**
पु. पु. पु. पु. स.
घड़ियाल, नाक **ग्राहोऽवहारो नक्रस्तु कुम्भीरो(ऽथ) महीलता ॥ २१ ॥**
पु. पु. स. स.
केंचुआ, गोह **गण्डूपदः किञ्चुलको निहाका गोधिका (समे) ।**

कुलीर, 'कुलिर' कर्कटक "कर्कट, करकट व कर्कड" ये २ केकड़ाके नाम हैं । कूर्म, कमठ, कच्छप ये ३ कछुआ के नाम हैं । ग्राह, अवहार, "अवराह" ये २ घड़ियाल के नाम हैं । नक्र, कुम्भीर, कुम्भील ये २ नाक के नाम हैं । महीलता, गण्डूपद, किञ्चुलक–किंचुलु–किञ्चलूक–किञ्चिलिक ये ३ केचुवा के नाम हैं । इनमें महीलता स्त्रीलिङ्ग है और निहाका, गोधिका–गोधा ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ गोह के नाम हैं ॥ २१ । ३ ॥

स. स.
जोंक **रक्तपा तु (जलौकायां) "स्त्रियां भूम्नि" जलौकसः॥२२॥**
पु. स. पु.न. पु.न.
सीपी, शंख **मुक्तास्फोटः(स्त्रियां)शुक्तिः शङ्खः स्यात्कम्बु(रस्त्रियाम्)।**
पु. पु. पु.स. स.
छोटा शंख, घोंघा **क्षुद्रशङ्खाः शङ्खनकाः शम्बूका जलशुक्तयः ॥ २३ ॥**

रक्तपा, जलौका– "जलोका–जलूका–जलजन्तुका, जलोरगी, जलौकस–जलौकसी–जलौकस्" ये ३ जोंकके नाम हैं । इनमें जलौकस् स्त्रीलिङ्ग बहुवचनान्त वा एकवचनान्त भी है । मुक्तास्फोट, शुक्ति, शुक्तिका ये २ सीपी के नामहैं । शङ्ख, कम्बु ये दोनों पुंलिङ्ग व नपुंसक में रहते हैं ये २ शङ्खके नाम हैं । क्षुद्रशङ्ख–शङ्खनख, शङ्खनक–शङ्कनक ये २ छोटे शङ्खके नाम हैं और शम्बूक–शम्बुक–शम्बु–शाम्बुक–

---

१ "ग्राहो ग्रहे जलचरे" (इति हैमः) ॥
२ "नक्रं नासाग्रदारुणोः" नक्रो यादसि (इति हैमः) ॥
३ "जलौकापि जलोका स्याज्जलूका जलजन्तुका:" (इति तारपालः) ॥

शम्बूक, जलशुक्ति ये २ घोंघा के नाम हैं। इनमें शम्बूक पुंलिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग है और जलशुक्ति स्त्रीलिङ्ग कहाता है और बहुवचनान्त व एकवचनान्त भी है ॥ २२।२३॥

मेघा या मेड़क, छोटे कीड़े, — पु. पु. पु. पु. पु. पु.
भेके मण्डूकवर्षाभूशालूरप्लवदर्दुराः।

मेड़की, कछुई — स. स. स. स. स. स.
शिली गण्डूपदी भेकी वर्षाभ्वी कमठी दुलिः ॥ २४ ॥

भेक, मण्डूक, वर्षाभू, वृष्टिभू, शालूर- 'सालूर' लव, दर्दुर ये ६ मेड़क या मेघा के नाम हैं। शिली, गण्डूपदी ये २ केचुवा की भार्या या छोटे केचुवों के नाम हैं। भेकी, वर्षाभ्वी ये २ मेड़कीके नाम या छोटे मेड़कके नाम हैं। इनमें 'वर्षाभ्वी' असाधु है ङीव्विधायक सूत्रका अभाव है इसलिये (वर्षाभू) ऐसाही स्त्रीलिङ्ग में भी होगा अन्य आचार्य गौरादित्वसे 'ङीष्' चाहते हैं उनके मतमें (वर्षाभ्वी) भी सिद्ध होता है। इसीसे भागुरि और अमरमाला में भी देखा जाता है और कमठी, दुली-दुलि-डुलि-दुडि ये २ कछुई के नाम हैं ॥ २४ ॥

मद्गुरी, जोंकभेद — स. पु. स.
(मद्गुरस्य प्रिया)श्रृङ्गी दुर्नामा दीर्घकोशिका।

जलाशय, कुण्ड — पु. पु. पु.
जलाशया जलाधारा (स्तत्रागाधजलो)ह्रदः ॥ २५ ॥

मद्गुरनामक मत्स्यविशेष की प्यारी (भार्या) को श्रृङ्गी वा मद्गुरी कहते हैं। यह १ मद्गुरीका नाम है। दुर्नामा-दुर्नामन्-दुर्नाम्नी, दीर्घकोशिका-'दीर्घकोषिका' ये २ जोंकभेद या झिनाई (घिनाई) के नाम हैं। जलाशय, जलाधार ये २ तालाब व झील आदि के नाम हैं और उनमें जो अगाध (अथाह) जलाशय है उसे ह्रद या (द्रुह) भी कहते हैं यह १ अथाह जलाशय (कुण्ड) का नाम है ॥ २५ ॥

चरही या प्याऊ — पु. न.
आहावस्तु निपानं(स्यादुपकूपजलाशये)।

कूआं — पु. पु. पु. पु.न.
पुंस्येवान्धुःप्रहिःकूप उदपानं तु (पुंसि वा) ॥ २६ ॥

कुआं के समीप जलाशय में आहाव, निपान होते हैं ये २ चरही या प्याऊ के नाम हैं। इनमें आहाव पुंलिङ्ग व निपान नपुंसक है और अन्धु, प्रहि, कूप, उदपान ये ४ कुआं के नाम हैं। इनमें अन्धु, प्रहि, कूप ये ३ पुंलिङ्ग हैं और उदपान विकल्प से पुंलिङ्ग में रहता है ॥ २६ ॥

गड़ाड़ी जगति — स. स. पु.
नेमिस्त्रिकास्य वीनाहो (मुखबन्धनमस्य यत्)।

पुखरिया, विना बनाया तालाब — स. न. पु.न. पु.न.
पुष्करिण्यान्तु खातं स्यादखातं देवखातकम् ॥ २७ ॥

इस कुआं के नेमिको 'त्रिका' कहते हैं अथवा नेमि, त्रिका ये २ कुआंके ऊपर रस्सी आदि के धारने के लिये जो काठ का यंत्र (गड़ारी) है उसके नाम हैं या पाढ़ि के नाम हैं और इस कुआंका जो मुखबन्धन है उसे "वीनाह, विनाह" भी कहते हैं यह १ पक्की जगति का नाम है । पुष्करिणी, खात ये २ पुखरिया या तलैया के नाम हैं अथवा चौकोन ताल के नाम हैं और अखात, देवखातक ये २ विना बनाये जलाशयके या देवालय के समीप वाले तालके नाम हैं ये नपुंसक व पुंलिङ्ग भी हैं ॥ २७ ॥

पु. पु.न. पु. स. न.

तालाव, बड़ा सरोवर — **पद्माकरस्तडागो (ऽस्त्री) कासारः सरसी सरः ।**

पु. पु.न. न. स. स.

छोटा सरोवर, बावड़ी — **वेशन्तः पल्वलं चाल्पसरो वापी (तु) दीर्घिका ॥ २८ ॥**

पद्माकर, तडाग, तडाक, तटाक, तटाग ये २ पद्मसमेत अगाध जलाशय (तालाव) के नाम हैं । इनमें तडाग पुंलिङ्ग व नपुंसक है । कासार, सरसी, सर ये ३ बनायेहुए सामान्य तालावके नाम हैं । इनमें सरसी स्त्रीलिङ्ग है और सर (स्) सान्त नपुंसक है अथवा पद्माकर आदि पांचों भी तडागमात्रके नाम हैं । वेशन्त, पल्वल, अल्पसर ये ३ छोटी तलैयाके नाम हैं । इनमें वेशन्त पुंलिङ्ग है और पल्वल नपुंसक व पुंलिङ्ग भी है और वापी–वापि, दीर्घिका ये २ बावली के नाम हैं ॥ २८ ॥

न. स. पु.

खांई, बांध — **खेयन्तु परिखाधार (स्त्वम्भसां यत्र धारणम्) ।**

न. न. पु. स. स.

थावला — **स्यादालवालमावालमावापो (ऽथ) नदी सरित् ॥२९॥**

स. स. स. स. स.

नदी — **तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्रादिनी धुनी ।**

स. स. स. स. स.

स्रोतस्वती द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगापगा ॥ ३० ॥

खेय, परिखा ये २ क़िला आदि के चारों तरफ़ जो खात बनाया जाता है उसके या खांवां के नाम हैं । जहां खेत आदि के सींचने के लिये जलों का धारण होता है उसे 'आधार' कहते हैं । यह १ बांधका नाम है । आलवाल–अलवाल–आवाल–आवाप ये ३ वृक्षकी जड़ में किये जलाधार (थाल्हा) के नाम हैं (अब नदियों को कहते हैं) नदी, सरित्, तरङ्गिणी, शैवलिनी, तटिनी, ह्रदिनी–ह्रादिनी, धुनी–धुनि–धूनी, स्रोतस्वती–स्रोतस्विनी, स्रोतोवहा, द्वीपवती, स्रवन्ती, निम्नगा, आपगा–अपगा ये १२ नदी के नाम हैं ॥ २९ । ३० ॥

---

१ "इहैव जम्बूतरुमालवालवत्परीयुषोब्धैर्भरतेऽधिनावृते" इति प्रयोगाद्दीर्घादिः । अलनालरोधिगुदयः ह्यविभ्रतः स पलाशिराशिरिव मूलसंततिः " इति माघाद्ध्स्वादिरपि ॥

स. स. स. स.

गङ्गा **गङ्गा विष्णुपदी जह्नुतनया सुरनिम्नगा ।**

स. स. स. स.

भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोता भीष्मसूरपि ॥ ३१ ॥

गङ्गा, विष्णुपदी, जह्नुतनया, सुरनिम्नगा, भागीरथी, त्रिपथगा, त्रिस्रोता, भीष्मसू ये ८ गङ्गाजी के नाम हैं ॥ ३१ ॥

स. स. स. स.

यमुना **कालिन्दी सूर्यतनया यमुना शमनस्वसा ।**

स. स. स. स.

नर्मदा **रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यका ॥ ३२ ॥**

कालिन्दी, सूर्यतनया–'सूर्यात्मजा' यमुना, शमनस्वसा (सृ) ये ४ यमुनाके नाम हैं और रेवा, नर्मदा, सोमोद्भवा–सोमभवा, मेकलकन्यका–मेखलकन्यका ये ४ नर्मदा के नाम हैं ॥ ३२ ॥

नदी विशेष स. स. स. स.

कार्तवीर्य की **करतोया सदानीरा बाहुदा सैतवाहिनी ।**

नदी,सतलज स. स. स. स.

व्यासानदी **शतद्रुस्तु शुतुद्रिःस्याद्विपाशा तु विपाट्(स्त्रियाम्)॥३३॥**

करतोया, सदानीरा ये २ गौरी के ब्याह में शङ्करजी के हाथसे गिरेहुए जल से उपजी नदीके नाम हैं । 'बाहुदा, सैतवाहिनी' ये २ कार्तवीर्य की नदी के नाम हैं । शतद्रु, शुतुद्रि ये २ "सतलज" नदी के नाम हैं । विपाशा, विपाट् ये २ व्यासा नदीके नामहैं। इनमें विपाशा टाबन्त व विपाट् पान्त होकर दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं ॥३३॥

पु. पु. स.

शोणभद्र नहर **शोणो हिरण्यबाहुः स्यात्कुल्या(ल्पा कृत्रिमा सरित्)।**

शरावती,वेत्रवती स. स. स. स.

चन्द्रभागा,सरस्वती **शरावती वेत्रवती चान्द्रभागा सरस्वती ॥ ३४ ॥**

कावेरी, नद्यादि, स. स. पु. पु.

संगम **कावेरी (सरितोऽन्याश्च) संभेदः सिन्धुसंगमः ।**

शोण, हिरण्यबाहु, 'हिरण्यवाह' ये २ शोणभद्रके नाम हैं । छोटी बनाई नदी

---

१ तथा च भारते " क्षितौ तारयते मर्त्यान्नागांस्तारयतेप्यधः । दिवि तारयते देवांस्तेन त्रिपथगा स्मृता" (इति मुकुटः) ॥

२ "प्रथमं कर्कटे देवी त्र्यहं गङ्गा रजस्वला । सर्वा रक्तवहा नद्यः करतोयाम्बुवाहिनी" (इति स्मृतेः)॥

३ चन्द्रभागयोः पर्वतयोरियम्, तत्प्रभवत्वात् " तस्येदमित्यणि " टिड्ढेति ङीप् प्राप्तः चन्द्रभागाख्या-मिति बह्वादिगणसूत्रान्न भवति स्वरूपयोरविशेषादिति ॥

को 'कुल्या' कहते हैं यह १ नहर का नाम है । शरावती, वेत्रवती, चान्द्रभागा, चन्द्रभागा, चान्द्रभागी–चन्द्रभागी, चन्द्रिका, सरस्वती, कावेरी ये ५ नदी विशेषों के नाम हैं। यानी 'शरावती' यह १ शरावती का नाम है। 'वेत्रवती' बेतवा का नाम है। 'चन्द्रभागा' यह चिनाब नदीका नाम है। 'सरस्वती' सरस्वती का नाम है। 'कावेरी' कावेरी का नाम है और अन्य भी कौशिकी, गण्डकी, चर्मण्वती, तापी, तपती, गोदावरी आदि नदियां हैं व जहां पर दो नदियों का मेल हुआ है उसे संभेद, सिन्धुसंगम कहते हैं ये २ नद्यादिसंगम के नाम हैं ॥ ३४ । १/२ ॥

पु.स.
पनारा (द्वयोः)प्रणाली(पयसःपदव्यां) त्रिषु (तूत्तरौ) ॥ ३५ ॥
दाविक पु.स.न. पु.स.न.
सारव (देविकायां सरय्वां च) भवे दाविकसारवौ ।

जलके निकलने की राहमें 'प्रणाली, प्रणाल' यह दोनों लिङ्गमें यानी स्त्री, पुंलिङ्ग में होता है यह १ पनारा या पनरिया का नाम है। इसके उपरान्त आनेवाले दाविक, सारव ये दोनों तीनों लिङ्ग में होते हैं यानी देविका नदी में जो हुआ है उसे 'दाविक' कहते हैं और जो सरयू नदी में हुआ है वह 'सारव' कहलाता है यह क्रम से एक २ नाम हैं ॥ ३५ । १/२ ॥

न. न. न. न.
कुई, सफ़ेद कमल, सौगन्धिकन्तु कह्लारं हल्लकं रक्तसन्ध्यकम् ॥ ३६ ॥
लालकमल, न. न. न.
फफूला, स्यादुत्पलं कुवलय (मथ) नीलाम्बुजन्म (च)।
नील कमल, न. न. न.
सफ़ेद कमल इन्दीवरं (च नीलेस्मिन्)(सिते) कुमुदकैरवे ॥ ३७ ॥

सौगन्धिक, कह्लार ये २ सन्ध्या समय फूलनेहारे सफ़ेद कमल या कोई के नाम हैं। हल्लक, रक्तसन्ध्यक ये २ लाल कमल या तीनों समय फूलनेवाले फूलके नाम हैं। उत्पल, कुवलय, "कुवल, कुव" ये २ कुमुद या साधारण कमलके नाम हैं। नीलाम्बुजन्म, इन्दीवर–इन्दिवर–इन्दीवार भी ये २ काले कमल के नाम हैं और 'कुमुद–कुमुद,' कैरव ये २ सफ़ेद कमल के नाम हैं ॥ ३६ । ३७ ॥

न. स. स.
मकरन्द या कमलकन्द शालूक(मेषां कन्दः) स्याद्वारिपर्णी (तु) कुम्भिका ।
पुरइन, सेवार स. न. पु. स.
कुमुदिनी कमलिनी जलनीली (तु) शैवालं शैवलोथ कुमुद्वती[2] ॥ ३८ ॥

१ "शैवलश्चैव शैवालः शैवलो जलनीलिका" (इति वाचस्पतिः) ॥
२ "कुमुद्वती कैरविण्यां दयितायां कुशस्य च" (इति कोषान्तरम्) ॥

स. स. स. स.
कुमुदिन्यां नलिन्यां विसिनी पद्मिनी (मुखाः)।

इन सौगन्धिक आदि उत्पल विशेषोंकी मूलको 'शालूक' कहते हैं यह १ कमल-कन्दका नाम है। वारिपर्णी, कुम्भिका ये २ जलकुम्भी (पुरइन) के नाम हैं। जलनीली, शेवाल—शैवल—शेवल—शेवाल, शेपाल—शेयाल ये ३ सेवारके नाम हैं। कुमुद्वती—कुमुदवती, कुमुदिनी ये २ कुमुदयुक्त देश या फफूली के नाम हैं। नलिनी—नडिनी, विसिनी, पद्मिनी ये ३ पद्मसमूह या कमलिनी के नाम हैं और मुख शब्द आद्यर्थ है इसलिये "मृणालिनी, कमलिनी, पुटकिनी, सरोजिनी" आदि भी जानना चाहिये॥ ३८। ½॥

पु.न. न. न. न.
कमल (वा पुंसि) पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम्॥ ३९॥
न. न. न. न.
सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम्।
न. न. न. न.
पङ्केरुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम्[३]॥ ४०॥
न. न. न. न.
विसप्रसूनराजीवपुष्कराम्भोरुहाणि (च)।

पद्म, नलिन, अरविन्द, महोत्पल, सहस्रपत्र, कमल, शतपत्र, कुशेशय, पङ्केरुह, तामरस, सारस, सरसीरुह—सरसिरुह—सरोरुह, विसप्रसून, राजीव, पुष्कर, अम्भोरुह ये १६ सामान्य कमलके नाम हैं। इनमें "पद्म" विकल्प से पुंलिङ्ग है॥३९।४०।½॥

न. न. न.
सफ़ेद कमल, पुण्डरीकं सिताम्भोज (मथ) रक्तसरोरुहे॥ ४१॥
लाल कमल,
न. न. स. न.
कमलदण्ड, भसीड़ा, रक्तोत्पलं कोकनदं नाला नाल (मथास्त्रियाम्)।
पु.न. न. पु.न.
कमल समूल मृणालं[४] विस (मब्जादिकदम्बे) षण्ड (मस्त्रियाम्)॥४२॥

पुण्डरीक, सिताम्भोज ये २ सफ़ेद कमल के नाम हैं। रक्तसरोरुह, रक्तोत्पल, कोकनद ये ३ लाल कमल के नाम हैं। नाला—नाली, नाल ये २ पद्मादि के नाल

---

१ "नलः पोटगले राशि पितृदेवे कपीश्वरे। नली मनःशिलायां तु नलिनेऽपि नलं मतम्" (इति विश्वः) नलिनी पुनः। "पद्माकरे गङ्गाब्जिन्योः" (इति हैमः)॥

२ "पद्मिनी पद्मसंघाते स्त्रीविशेषे सरोऽम्बुजे" (इति मेदिनी)॥

३ सरसि रोहतीति विग्रहे "तत्पुरुषे कृति बहुलम् (६।३।१४) इत्यलुकि ह्रस्वेकारोऽपि। तथा च भारविः "अयमच्युतस्य वचनैः सरसिरुहजन्मनः" इति मुकुटः॥

४ "सान्द्रं चन्दनमङ्कके वलयिता पाणौ मृणालीलता" (इति राजशेखरः)॥

या दण्ड के नाम हैं। मृणाल, मृणाली, बिस–बिश–बिष ये २ कमलादिकोंकी मूल या भँसीड़े के नाम हैं। ये स्त्रीलिङ्ग नहीं हैं। वरन पुंलिङ्ग व नपुंसक में रहते हैं परन्तु अपचय विवक्षा में गौरादित्व से मृणाली भी होता है उसीसे (पाणौ मृणालीलता) यह भी संगत होता है और पद्मादिकों के समूह में षण्ड व शण्ड भी पुंलिङ्ग व नपुंसक में रहता है यह १ कमलादिसमूह का नाम है॥ ४१। ४२॥

कमल की जड़ पु. पु. पु. पु.न.
कमलकी धूलि
कमल आदि के नये पत्ते
कमलगट्टा

करहाटः शिफाकन्दः किञ्जल्कः केसरो (ऽस्त्रियाम्)।
स. न. पु. पु.
संवर्तिका नवदलं बीजकोषो वराटकः॥ ४३॥

करहाट, शिफाकन्द अथवा कितेक आचार्यों के मतमें शिफा, कन्द ये दो नाम कहाते हैं ये २ कमल की जड़ के नाम हैं। किञ्जल्क, केसर या "केशर" ये २ कमलकी केसर (धूलि) के नाम हैं। इनमें 'किञ्जल्क' पुंलिङ्ग है और केसर पुंलिङ्ग व नपुंसक में रहता है। संवर्तिका, संवर्ति, नवदल और "नवपत्रिका" ये २ कमलादि के नवीन पत्तों के नाम हैं और बीजकोष–बीजकोश, वराटक ये २ कमलबीज (कमलगट्टे) के नाम हैं॥ ४३॥

इति वारिवर्गविवरणम्॥

उक्तवर्गसंग्रहेणोपसंहरन्नाह—

उक्तं स्वर्व्योमदिक्कालधीशब्दादिसनाट्यकम्।
पातालभोगिनरकं वारि चैषां च संगतम्॥ ४४॥
इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने।
स्वरादिकाण्डः प्रथमः साङ्ग एव समर्थितः॥ ४५॥

स्वर्ग, व्योम, दिशा, काल, धी, शब्दादि, नाट्य, पातालभोगि, नरक और वारिवर्ग इन्होंको कहा और इन्हींके सम्बन्धवश से प्राप्त जो देव, असुर, मेघ आदि वह भी मैंने कहा इस भांति अमरसिंह के बनाये नामों व लिङ्गों के कहनेवाले ग्रन्थ में अङ्ग उपाङ्गों समेत पहला स्वरादिकाण्ड कहा गया आदि शब्द से पातालवर्ग का ग्रहण किया जाता है यहां यह भाव है कि इस काण्ड में दोही मुख्य वर्ग कहे हैं पहला स्वर्गवर्ग और दूसरा पातालवर्ग है वहां नाट्यवर्गपर्य्यन्त स्वर्ग के साधारण पदार्थों का निरूपण किया है इसलिये स्वर्गवर्ग कहाता है उसके उपरान्त पाताल

के संगत अर्थों के निरूपण करने से पातालवर्ग कहाजाता है यह जानना चाहिये ॥ ४४ । ४५ ॥

दो० अमरसिंह कृत कोष महँ, काण्डत्रय सुबखान ।
प्रथमकाण्ड वर्णन कर्यो, द्विजवर शक्ति सुजान ॥ १ ॥

इति श्रीमदमरसिंहविरचितेऽमरकोषे श्रीमद्रायबहादुरभार्गवप्रयागनारायणाज्ञया द्विजवरशक्तिधरविरचितायां सभाषायां रसालाख्यायां व्याख्यायां प्रथमः काण्डः समाप्तिमगादिति शिवम् ॥ १ ॥



ॐ परमात्मने नमः ॥

श्रीमदमरसिंहविरचितः

अमरकोषः ।

सभाषया रसालाख्यया व्याख्यया समेतः ॥

द्वितीयं काण्डम् ।

वर्गाः पृथ्वीपुरक्ष्माभृद्वनौषधिमृगादिभिः ।
नृब्रह्मक्षत्रविट्शूद्रैः साङ्गोपाङ्गैरिहोदिताः ॥ १ ॥

इस दूसरे काण्डमें अङ्ग व उपाङ्ग समेत, पृथ्वी, पुर, क्ष्माभृत, (शैल) वनौषधि, मृगादि, (सिंह) नृ, ब्रह्म, क्षत्र, विट् और शूद्र इन दशवर्गों से उपलक्षित वर्गों को कहने के लिये आरम्भ करते हैं ॥ १ ॥

स. स. स. स. स. स. स.
पृथ्वी **भूर्भूमिरचलानन्ता रसा विश्वंभरा स्थिरा ।**
स. स. स. स. स. स. स.
धरा धरित्री धरणी क्षोणी ज्या काश्यपी क्षितिः॥ २ ॥
स. स. . स. स.
सर्वसहा वसुमती वसुधोर्वी वसुंधरा ।
स. स. स. स. स. स. स. स.
गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्ष्माऽवनिर्मेदिनी मही ॥ ३ ॥

भू, भूमि–भूमी अचला, अनन्ता, रसा, विश्वम्भरा, स्थिरा, धरा, धरित्री, धरणी–धरणि, क्षोणी–क्षोणि, ज्या, काश्यपी, क्षिति, सर्वसहा, वसुमती, वसुधा, उर्वी, वसुंधरा, गोत्रा, कु, पृथिवी–पृथवी–पृथ्वी, क्ष्मा–क्षमा, अवनि–अवनी, मेदिनी, मही-महि ये २७ पृथ्वी के नाम हैं और "विपुला गह्वरी धात्री गौरिला कुम्भिनी क्षमा । भूतधात्री रत्नगर्भा जगती सागराम्बरा" विपुला, गह्वरी, धात्री, इला–इडा, कुम्भिनी, क्षमा, भूतधात्री, रत्नगर्भा, जगती, सागराम्बरा ये भी ११ पृथ्वी के नाम हैं॥२।३॥

---

१ "मृगशब्द आरण्यपशुमात्रपरः "आरण्याः पशवो मृगाः" (इति स्मृतेः) आदिशब्देन पक्षिकीटादीनां ग्रहणम् तस्य चाङ्गोपाङ्गानि पक्षिपक्षादीनि । मृगानत्तुं शीलं यस्येति मृगादी सिंहस्तावच्छील्ये णिनिर्वा ॥

स. स. स. स.
मिट्टी / अच्छी मिट्टी — मृन्मृत्तिका(प्रशस्ता तु)मृत्सा मृत्स्ना च मृत्तिका।
स. पु. स.
सर्वसस्ययुक्त / खार मिट्टी — उर्वरा "सर्वसस्याढ्या"स्यादूषः क्षारमृत्तिका ॥ ४ ॥

मृत्—मृदा—मृत्ति, मृत्तिका ये २ मिट्टी के नाम हैं। मृत्सा, मृत्स्ना ये २ अच्छी मिट्टी के नाम हैं। जो सर्वधान्यों से सम्पन्न मिट्टी है उसे उर्वरा कहते हैं यह १ सर्व सस्ययुक्त मिट्टी का नाम है। ऊषः क्षारमृत्तिका ये २ लोना मिट्टी के नाम हैं॥४॥

पु.स.न. पु.स.न. न. स.
ऊसर / कृत्रिम स्थान — ऊषवानूषरो(द्वावप्यन्यलिङ्गौ) स्थलं स्थली।
पु. पु. पु.स.न. पु.स.न.
मरुस्थल / जंगल — (समानौ)मरुधन्वानौ द्वे खिलाप्रहते(समे) ॥ ५ ॥
स. पु. न. न. न.
जगत् या भूतल — (त्रिष्वथो)जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत्।

ऊषवान्, ऊषर ये दोनों अन्यलिङ्ग हैं ये २ ऊसर के नाम हैं। स्थल, स्थली ये २ अकृत्रिमस्थान के नाम हैं और कृत्रिमस्थल को स्थला कहते हैं। मरु, धन्वा ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ मरुस्थल (माड़वार आदि निर्जलदेश) के नाम हैं। खिल, अप्रहत ये दोनों समानार्थक होकर तीनों लिङ्ग में होते हैं ये २ विना जोते खेत या धरती के नाम हैं इसके अनन्तर जगती, लोक, विष्टप 'पिष्टप' भुवन, जगत् ये ५ भूतल के नाम हैं "एकं महाभूतं पृथ्वी, पञ्चमहाभूतेन्द्रियविषयात्मकं जगदिति पृथ्वीजगतोर्भेदोऽवगन्तव्य इति" एक महाभूत पृथ्वी है और पञ्चभूत, इन्द्रियविषयात्मक जगत् (दुनिया) है यह पृथ्वी और जगत् का भेद जानना चाहिये॥ ५ । ½ ॥

न.
भारत या वर्ष — (लोकोऽयं)भारतं वर्षं शरावत्यास्तु योऽवधेः ॥ ६ ॥
पु. पु.
सब देश / पूर्व उत्तर — (देशः प्राग् दक्षिणः) प्राच्य उदीच्यः(पश्चिमोत्तरः)।
पु. पु. पु.
म्लेच्छदेश / मध्यदेश — प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्यान्मध्यदेश(स्तु)मध्यमः ॥७॥

इस जम्बूद्वीप के वर्ती नवम अंशवाले लोक को भारतवर्ष या भरतवर्ष कहते हैं "समुद्रके उत्तर व हिमाचल के दक्षिण जो वर्ष है उसको भारत (हिन्दुस्थान) कहते हैं जहां भारती सन्तान रहती है। भारत, वर्ष इन दोनों में से भारत नपुंसक व वर्ष पुंलिङ्ग व नपुंसक है इस भांति इलावृत आदि ८ वर्ष और भी हैं और शरावती

नदी से पूर्व व दक्षिण देशको 'प्राच्य' कहते हैं यह १ शरावती से पूर्व दक्षिणादेशका नामहै। तथा पश्चिम व उत्तर देशको 'उदीच्य' कहते हैं यह १ शरावती से पश्चिमोत्तर देश का नाम है और प्रत्यन्त, म्लेच्छदेश "जिस देशमें चारों वर्णों की व्यवस्था न हो उसको 'म्लेच्छदेश' कहते हैं इसके अनन्तर 'आर्यावर्त' कहाता है" ये २ शिष्टाचाररहित खशादि देशों (फारस, रूम आदिकों) के नाम हैं और मध्यदेश, मध्यम "विन्ध्याचल से उत्तर, हिमालयसे दक्षिण, कुरुक्षेत्र से पूर्व और प्रयाग से पश्चिम देश को मध्यदेश कहते हैं" ये २ मध्यदेश के नाम हैं ॥ ६ । ७ ॥

पु. पु.
आर्यावर्त **आर्यावर्तः पुण्यभूमि (र्मध्यं विन्ध्यहिमागयोः) ।**
राज्य या देश पु.स. पु. पु. पु. न.
देशयानगरग्राम **नीवृज्जनपदो देशविषयौ तूपवर्तनम् ॥ ८ ॥**

विन्ध्याचल व हिमालय के मध्य को यानी बङ्गाल के समुद्र से पश्चिम, अरब समुद्र से पूर्व, हिमालय से दक्षिण व विन्ध्याचल के उत्तर देश को आर्यावर्त व पुण्य भूमि कहते हैं ये २ विन्ध्याचल व हिमाचल के मध्य देश के नाम हैं। नीवृत्, जनपद ये २ राज्य व जनों के निवासस्थान (बस्ती) के नाम हैं और देश, विषय, उपवर्तन ये ३ देशमात्र के नाम हैं ॥ ८ ॥

पु.स.न. पु.स.न.
नरसलकादेश **(त्रिष्वागोष्ठान्नडप्राये)नड्वान्नड्वल (इत्यपि) ।**
फफूलाकादेश पु.स.न. पु.स.न.
बहुवेतका **कुमुद्वान् (कुमुदप्राये) वेतस्वान् (बहुवेतसे) ॥ ९ ॥**

गोष्ठ शब्द पर्यन्त वक्ष्यमाण शब्द तीनों लिङ्ग में जानना चाहिये जिस देश में नरकुल अधिकता से होते हैं उसे 'नड्वान्' व 'नड्वल' कहते हैं ये २ नडाधिक देश के नाम हैं व जहां कुमुद (फफूला) अधिकतासे होते हैं उसको 'कुमुद्वान्' कहते हैं यह १ कुमुदाधिक देशके नाम हैं व जहां बहुत से वेत होते हैं उस देशको 'वेतस्वान्' कहते हैं यह १ बहुतबेतवाले देशका नाम है ॥ ९ ॥

पु.स.न. पु.स.न.
घासवालादेश **शाद्वलः (शादहरिते) (सजम्बाले तु) पङ्किलः ।**
कीचड़युक्त सजल पु.स.न. पु.स.न. पु.
जलप्रायमनूपं स्यात्पुंसि कच्छ (स्तथाविधः)॥१०॥

जहां हरी घास होती है उस देश को 'शाद्वल' कहते हैं यह १ हरी घासवाले देशका नाम है जो कीचड़समेत देश है उसे 'पङ्किल' कहते हैं यह १ कीचड़ देश का नाम है। जहां जल अधिकता से होता है उसे जलप्राय व अनूप कहते हैं ये २

बहुत जलवाले देशके नाम हैं तैसेही अनूप के समान किसी नदी आदिके समीप देशको 'कच्छ' कहते हैं यह १ कछारदेशका नाम है यह पुंलिङ्ग में रहता है यहां (त्रिषु) इसके बाधनके लिये 'पुंसि' ऐसा कहा है ॥ १० ॥

स. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

बालूयुक्त **स्त्री शर्करा शर्करिलः शार्करः शर्करावति ।**

कंकड़युक्त पु.स.न.

बालूवाला **'देशएवादि' मावेवमुन्नेयाः सिकतावति ॥ ११ ॥**

शर्करा, शर्करिल, शार्कर, शर्करावान् ये ४ बहुत पथरीली अधिक मिट्टी के नाम हैं। शर्करा, शर्करिल ये २ बालूयुक्त देश के नाम हैं इनमें शर्करा स्त्रीलिङ्ग है और शार्कर, शर्करावान् ये २ देश या प्रदेश के नामहैं इसी प्रकार सिकता, सिकतिल ये२ कङ्कड़युक्त देशके नाम हैं और सैकत, सिकतावान् ये २ देश वा प्रदेशमें होते हैं ये ४ बहुतसी बालूवाले या सिटकहे देश के नाम हैं ॥ ११ ॥

नदीमातृक **(देशो) नद्यम्बुवृष्ट्यम्बुसपन्नव्रीहिपालितः ।**

पु.स.न. पु.स.न.

देवमातृक **स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च (यथाक्रमम्) ॥ १२ ॥**

नदी के जलसे सींचेहुए धान्य से पालित देशको 'नदीमातृक' कहते हैं यह १ नदीके जल से सींचे खेतवाले देशका नाम है और जो वर्षा के जल से सींचे हुए धान्य से पालित देश है उसको 'देवमातृक' कहते हैं यह १ बरसाती पानी से सींचे खेतवाले देशका नाम है ॥ १२ ॥

पु.स.न. पु.स.न.

नीतिमान्राजा राजाज्ञायुक्त **(सुराज्ञि देशे) राजन्वान् स्या(त्ततोऽन्यत्र) राजवान् ।**

न. न. न.

गैयों का स्थान पहलास्थान **गोष्ठं गोस्थानकं (तत्तु) गौष्ठीनं (भूतपूर्वकम्) ॥ १३ ॥**

जहां धर्मात्मा राजा हो उस देश में 'राजन्वान्' होता है यह १ सुराजयुक्त देश का नाम है व जहां सामान्य राजा रहताहै उस देश में 'राजवान्' होताहै यह १ सामान्य राजयुक्त देश का नाम है। गोष्ठ, गोस्थानक ये २ गोस्थान (गोठ) के नाम हैं व जहां पहले गौवों का स्थान रहा हो उसको 'गौष्ठीन' कहते हैं यह १ भूतपूर्व गोस्थान का नाम है ॥ १३ ॥

स. पु. पु. स.

नदी पहाड़ के निकटका पुल **पर्यन्तभूः परिसरः सेतुरालौ (स्त्रियां पुमान्) ।**

पु. पु. पु.न.

बमौर **वामलूरश्च नाकुश्च वल्मीकं (पुंनपुंसकम्) ॥ १४ ॥**

पर्यन्तभू, परिसर ये २ नदी पर्वतादि के समीप भूमि के नाम हैं। सेतु, आलि-आली ये २ सेतु या पुल के नाम हैं। इनमें सेतु पुंलिङ्ग है और आलि स्त्रीलिङ्ग है। वामलूर, नाकु, वल्मीक ये ३ चींटी आदिकों से निकाली मिट्टी के ढेर (व्यमौर) के नाम हैं इनमें ब (व) ल्मीक पुंलिङ्ग व नपुंसक में रहता है ॥ १४ ॥

न. न. पु. पु. पु. स. स.
सड़क या रास्ता **अयनं वर्त्ममार्गाध्वपन्थानः पदवी सृतिः ।**
स. स. स. स. स.
सरणिः पद्धतिः पद्यावर्तन्येकपदीति च ॥ १५ ॥

अयन, वर्त्म (न्) मार्ग, अध्वा (न्) पन्था (थिन्) पथ, पथन (वाट) पदवी-पदवि, सृति-सरणि-सरणी, शरणि-शरणी, पद्धति (पद्धती) पद्या, वर्तनी-वर्तनि-वर्त्मनी-वर्त्मनि, एकपदी, एकपाद् ये १२ मार्ग (गली-सड़क) के नाम हैं ॥ १५ ॥

पु. पु. पु.
अच्छी रास्ता **अतिपन्थाः सुपन्थाश्च सत्पथ(श्चार्चितेऽध्वनि) ।**
पु. पु. पु. पु. पु.
कुमार्ग **व्यध्वो दुरध्वो विपथः कदध्वा कापथः (समाः) ॥१६॥**

अतिपन्था (थिन्) सुपन्था, सत्पथ ये ३ अच्छे मार्ग के नाम हैं और व्यध्व, दुरध्व, विपथ, कदध्वा (न्) कापथ और कुपथ ये समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये ५ बुरीमार्ग के नाम हैं ॥ १६ ॥

अमार्ग पु. न. न. न.
चौराहा **अपन्थास्त्वपथं तुल्ये शृङ्गाटकचतुष्पथे ।**
दूर या शून्य न. पु. न.
दुर्गममार्ग **प्रान्तरं(दूरशून्योऽध्वा)कान्तारं (वर्त्मदुर्गमम्) ॥१७॥**

अपन्था, अपथ ये दोनों समानार्थक कहाते हैं ये २ जहां मार्ग न हो उसके नाम हैं इनमें 'अपन्था' पुंलिङ्ग है और 'अपथ' नपुंसक कहाता है। शृङ्गाटक, चतुष्पथ ये २ चौराहे के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं। दूर और सूने मार्ग को 'प्रान्तर' कहते हैं यह १ जहां बड़ी दूरतक छाया, जल व मनुष्यादि न हों उसका नाम है और दुर्गम मार्ग को 'कान्तार' कहते हैं यह १ चोर व कांटे आदिकों से घिरे मार्ग का नाम है ॥ १७ ॥

दो कोस स. पु. न. पु.
चार सौ हाथ **गव्यूतिः (स्त्री) क्रोशयुगं नल्वः(किष्कुचतुःशतम्) ।**
राजमार्ग पु. न. न.
पुरमार्ग **घण्टापथः संसरणं तत्पुरस्योपनिष्करम् ॥ १८ ॥**

इति भूमिवर्गः ॥

---

१ धनुर्हस्तचतुष्टयम्, द्वाभ्यां धनुस्सहस्राभ्यां गव्यूतिः पुंसि भाषित (इति शब्दार्णवः) ॥

गव्यूति, क्रोशयुग ये २ दो कोस के नाम हैं इनमें गव्यूति स्त्रीलिङ्ग है चार हाथ का धनुष होता है, दो हज़ार धनुषों की गव्यूति कहाती है वह शब्दार्णव व वाचस्पति के प्रमाण से पुंलिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग है चारसौ हाथों का 'नल्व' होता है व कात्यने सौ हाथका व भट्टक्षीर स्वामी तथा मुकुटने एकसौ बीस हाथका 'नल्व' दिखलाया है और घण्टापथ, संसरण ये २ राजमार्ग के नाम हैं और यदि वह मार्ग पुरके निकलने का हो तो 'उपनिष्कर' या उपस्कर कहत हैं "द्यावापृथिव्यौरोदस्यौद्यावाभूमी च रोदसी। दिवस्पृथिव्यौ गञ्जातु रूमास्याल्लवणाकर:" यह क्षेपक है ॥ १८ ॥

इति भूमिवर्गविवरणम् ॥

अथ पुरवर्गो व्याख्यायते ॥

नगर या नगरी, पूः (स्त्री) पुरी नगर्यौ (वा) पत्तनं पुटभेदनम्।
(स. स.न. स.न. न. न.)

उपनगर या शाखानगर, स्थानीयं निगमो "ऽन्यत्तु यन्मूलनगरात्पुरम्" ॥ १ ॥
(न. पु.)

वेश्या का घर तच्छाखानगरं वेशो वेश्याजनसमाश्रयः।
(न. पु. पु.)

पूः, पुरी, नगरी, पत्तन, पट्टन-पट्टनी, पुटभदन-पटभेदन, स्थानीय, निगम ये ७ नगर या राजधानी के नाम हैं इनमें पूः स्त्रीलिङ्ग है और पुरी-नगरी ये विकल्प से स्त्रीलिङ्ग हैं पक्षमें पुर- नगर नपुंसक में रहते हैं परन्तु यहां पर कितेक आचार्यों ने भेद प्रकट किया है कि जहां अनेक व्यापारी व कारीगरों का व्यवहार होता है उसको पुर आदि कहते हैं व जहां राजा व राजसेवक रहते हैं उस पुर (शहर) को पत्तन आदि कहते हैं और जो परकोटों से घिरकर विस्तीर्ण हो उसे स्थानीय आदि कहते हैं और जो मूलनगर (राजधानी) से अन्यपुर है वह शाखानगर कहाता है यह १ उपनगर का नाम है और वेश, वेश्याजनसमाश्रय ये २ वेश्याघर के नाम हैं "नेपथ्ये गृहमात्रे च वेशो वेश्यागृहेपि चेति तालव्यान्ते रभसः" गृहमात्र व वेश्याके घरमें वेश और अहङ्कार में पान्त वा शान्त भी कहाता है ॥ १ । ३ ॥

बाज़ार हाट आदि आपणस्तु निषद्यायां विपणिः पण्यवीथिका ॥ २ ॥
(पु. स. पु.स. स.)

भीतरकीरास्ता खाई रथ्या प्रतोली विशिखा स्याच्चयोवप्र (मस्त्रियाम्)।
(स. स. स. पु. पु.न.)

आपण, निषद्या 'हट्ट' ये २ बाज़ारके नामहैं। विपणि-विपणी, पण्यवीथिका,

---

१ पट्टनं पुटभेदनमिति वाचस्पतिः ॥

२ "निगमाः पूर्वणिग्वेदनिश्चयाध्ववणिक्पथाः (इति हैमः) ॥

पण्यवीथी ये २ बाज़ार रहित विक्रयस्थान के नामहैं व किसीके मतमें चारो बाजार के नामहैं। रथ्या, प्रतोली, विशिखा ये ३ गाँव की भीतरी मार्ग के नाम हैं। चय, वप्र ये २ रक़बा के पक्षेड़ के नामहैं इनमें वप्र पुंलिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग है (वप्रश्चावरणे वृन्दे प्राकारे मूलबन्धने इति धरणिः) यह धरणीकोषमें कहा है ॥ २ । ½ ॥

पु. पु. पु. न.

घेर घिरा भीति **प्राकारो वरणः सालः प्राचीनं (प्रान्ततो वृतिः)॥३॥**

या दीवाल स. न. न.

पत्थर वा हड्डी आदि की **भित्तिः (स्त्री) कुड्यमेडूकं (यदन्तर्न्यस्तकीकसम्)।**

प्राकार, वरण, शाल, साल ये ३ प्राकार (घेर या रक़बा) के नामहैं या बांस व कण्टकादिकों से घिरे के नामहैं। नगर आदिकों के किनारे जो बांस व कण्टकादिकों से घिरा स्थानहै उसे 'प्राचीन' या 'प्राचीर' कहते हैं यह १ बारी या व्यनई का नामहै। भित्ति, कुड्य, कुद्य, ये २ भीत या दीवार के नाम हैं। इनमें भित्ति स्त्रीलिङ्ग है और वही 'कुड्य' कि जिसके भीतर हड्डियां हों उसे एडूक, एडुक वा एडोक भी कहते हैं यह १ जिस भीत में पुष्टता के लिये हड्डियां रक्खी गई हों उसका नाम है ॥ ३ । ½ ॥

न. पु. न. न. न. न. न.

घर **गृहं गेहोदवसितं वेश्म सद्म निकेतनम् ॥ ४ ॥**

न. न. न. न. न. न.

निशान्तवस्त्यसदनं भवनाऽऽगारमन्दिरम्।

पु. पु. पु. पु.

गृहाः(पुंसि च भूम्न्येव)निकाय्यनिलयाऽऽलयाः॥५॥

पु. पु.स. स. स. न.

कचहरी चौक **वासः कुटी (द्वयोः) शाला सभा संजवनं (त्विदम्)।**

न. स. पु.न.

झोपड़ी **चतुःशालं (मुनीनां तु) पर्णशालोटजो (ऽस्त्रियाम्)॥६॥**

गृह, गेह, उदवसित, वेश्म (न्) सद्म (न्) निकेतन, निशान्त, वस्त्य, सदन, भवन, आगार–अगार, मन्दिर, गृह, निकाय्य, निकाय, निलय, आलय ये १६ घरके नाम हैं। इनमें गृह नित्य बहुवचनान्त होकर पुंलिङ्गमें रहताहै चकार से नपुंसक भी है। वास, कुटी–कुटि, कुटीर, कुट, शाला, साला, सभा ये ४ सभाघरके नामहैं व किसी के मत में येभी चार घरही के नाम हैं इनको मिलाकर २० नाम हैं। संजवन, संद-मन, चतुरशाल–चतुरशाला ये २ चौक के नाम हैं। पर्णशिला, उटज ये २ मुनियों की कुटी घर के नाम हैं इनमें 'उटज' घास व पत्तों से छाये झोपड़े को कहते हैं यह पुंलिङ्ग व नपुंसक है ॥ ४ । ६ ॥

यज्ञवेदी, अश्वशाला — न. चैत्यमायतनं न. (तुल्ये) वाजिशाला (तु) मन्दुरा स. ।
सुनार आदिका घर, जलशाला प्याऊ — आवेशनं न. शिल्पिशाला स. प्रपा स. पानीयशालिका स. ॥ ७ ॥

चैत्य, आयतन ये २ यज्ञस्थान या उद्देश्यवृक्षके नाम हैं। ये दोनों समानार्थ होकर समानलिङ्ग कहाते हैं। वाजिशाला, मन्दुरा ये २ घोड़साल (स्तवल) के नाम हैं। आवेशन, शिल्पिशाला, शिल्पिशाल, शिल्पशाला, शिल्पशाल ये २ सोनार आदिकों की शाला के नाम हैं और प्रपा, पानीयशालिका—पानीयशाला ये २ पय-शाला (प्याऊ) के नाम हैं ॥ ७ ॥

पाठशाला, मद्यघर — मठ पु. (श्छात्रादिनिलयो) गञ्जा स. (तु) मदिरागृहम् न. ।
घर का मध्य, सोवरि — गर्भागारं न. वासगृहम् न. अरिष्टं न. सूतिकागृहम् न. ॥ ८ ॥

विद्यार्थी, परिव्राजक व क्षपणाक आदिकों के निवासस्थान को 'मठ' कहते हैं यह १ विद्यार्थी आदिके निवासस्थान का नाम है। गञ्जा, गुञ्जा, मदिरागृह ये २ जहां शराब निकालाजाता या धराजाता है उसके नाम हैं। गर्भागार, वासगृह ये २ घरके मध्यके नाम हैं और अरिष्ट, सूतिकागृह—सूतकागृह ये २ प्रसवस्थान (सोवरिघर) के नाम हैं अथवा ये चारो पर्यायवाचक हैं यह कितेक आचार्योंका मत है "कुट्टिमोऽस्त्रीनिबद्धा भूश्चन्द्रशाला शिरोगृहम्" जिसमें पाषाण आदिसे बँधी भूमिहै उसे 'कुट्टिम' कहते हैं यह पुंलिङ्ग व नपुंसक है और चन्द्रशाला, शिरोगृह ये २ घरके धुर ऊपर अटारीके नामहैं ॥ ८ ॥

झरोखा, मण्डप — वातायनं न. गवाक्षो पु. ऽथ मण्डपो पु.न. (ऽस्त्री) जनाश्रयः पु. ।
धनियों का घर, देवालय, महल — हर्म्यादि न. "धनिनां वासः" प्रासादो पु. (देवभुजाम्) ९॥

वातायन, गवाक्ष ये २ झरोखे के नाम हैं। मण्डप, जनाश्रय ये २ मण्डप के नामहैं। इनमें मण्डप पुंलिङ्ग व नपुंसक है। धनियों के घरको 'हर्म्य' कहते हैं आदि शब्द से 'स्वस्तिक' आदिकों का ग्रहण किया जाता है। देवता व राजाओं के घरको प्रासाद कहते हैं यह १ देवमन्दिर या राजमहल का नाम है ॥ ९ ॥

राजघर — सौधो पु.न. (ऽस्त्री) राजसदनम् न. उपकार्यो स. पकारिका स. ।

---

१ भाष्येतु वा सूतकापुत्रिकावृन्दारकाणामित्युपलभ्यते ॥
२ "उपकार्य्युपकारिका" इति द्विरूपकोषदर्शनादुपकारीत्यपि ॥

डेरा या तंबू गृह भेद　पु.न.　पु.न.　पु.न.
स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्द्यावर्तादयोपि च ॥ १० ॥
पु.न.
विच्छन्दक "प्रभेदा हि भवन्तीश्वरसद्मनाम्" ।

सौध, राजसदन ये २ राजघर के नाम हैं। इनमें सौध पुंलिङ्ग व नपुंसक है । उपकार्या 'उपकारी,' उपकारिका ये २ सामान्य राजघर के या डेरा तम्बूके नाम हैं अथवा ये ४ राजघर के ही नामहैं 'स्वस्तिक' आदि और ईश्वरसद्म पर्यन्त राजघरों के भेद हैं उनमें चार दरवाज़े व तोरण समेत जो घर है उसे (स्वस्तिक) कहते हैं । दुमहले पँचमहले घरको 'सर्वतोभद्र' कहते हैं । गोलाकार बँगलेनुमा घरको नन्द्यावर्त कहते हैं और बड़े सुन्दर घरको 'विच्छन्दक' या 'विच्छर्दक' कहते हैं और आदि शब्द से 'रुचक' व 'वर्धमान' आदिकों का ग्रहण किया जाता है यह एक २ ईश्वरगृहविशेषों के नाम हैं ॥ १० । ½ ॥

रनिवास　न.　न.
"स्त्र्यगारं भूभुजा"मन्तःपुरं स्यादवरोधनम् ॥ ११ ॥
पु.　पु.　पु.　पु.न.
अटा　शुद्धान्तश्चावरोधश्च स्यादट्टः क्षौममस्त्रियाम् ।
दरवाज़े के बाहर का चौतरा या चौपार　पु.　पु.　पु.
प्रघा ग्प्रघणालिन्दा 'बहिर्द्वारप्रकोष्ठके' ॥ १२ ॥

राजाओं की रानियों के घरको अन्तःपुर, अवरोधन, शुद्धान्त और अवरोध कहते हैं ये ४ रनिवासके नामहैं । अट्ट, क्षोम-क्षौम ये २ हर्म्य आदिके पिछले या ऊपरले भाग या अटारी के नाम हैं इनमें 'क्षोम' पुंलिङ्ग व नपुंसक में रहता है और दरवाज़ेके बाहिरी प्रकोष्ठमें प्रघाण, प्रघण, आलिन्द अलिन्द, ये ३ द्वारप्रकोष्ठ के बाहर या द्वार के आगे चौपार के नाम हैं ॥ ११ । १२ ॥

स.　स.　न.　न.　न.
देहली　गृहावग्रहणी देहल्यङ्गनं चत्वराजिरे ।
आंगन　स.　स.
मस्तकपट्टी　'अधस्ताद्दारुणि' शिला नासा 'दारूपरिस्थितम्' ॥१३॥

गृहावग्रहणी, देहली ये २ चौकठे के नाम हैं। अङ्गन, (अङ्गण) चत्वर, अजिर, 'प्राङ्गण' ये ३ आंगन के नामहैं । शिला, शिल, शिली यह १ द्वारस्तम्भके नीचे धरे काष्ठ का नाम है अथवा लतखोरा का नामहै 'नासा' यह द्वारस्तम्भ के ऊपर स्थित काष्ठ या उत्तरङ्ग का नाम है अथवा मस्तकपट्टी या गणेशपट्टी का नाम है ॥ १३ ॥

न. न. न. पु.

खिड़की, गुप्तद्वार प्रच्छन्नमन्तर्द्वारं स्यात्पक्षद्वारन्तु पक्षकः ।

घरके छाने का पु.न. न. पु. न. स.

सामान छावना वलीकनीध्रे पटलप्रान्ते(ऽथ) पटलं छदिः ॥ १४ ॥

प्रच्छन्न, अन्तर्द्वार ये २ गुप्तद्वार (खिड़की) के नाम हैं । पक्षद्वार, पक्षक ये २ बगल के द्वार के नाम हैं । वलीक, नीध्र, (नीव्र) पटलप्रान्त (पट–चाल) ये ३ वरौनी के नाम हैं अथवा घर छाने के लिये भीतिसे बाहर गड़े घोरा या धुरिया या बड़ेर के नाम हैं और पटल, छदि (स्) ये २ छानी के नाम हैं इनमें इसन्त छदि शब्द नपुंसक व स्त्रीलिङ्ग भी है ॥ १४ ॥

स. स.

धरानि, कूवा या गोपानसी (तु) वलभी (छादने वक्रदारुणि) ।

छज्जा, कबूतरों स. पु.न.

का घर कपोतपालिकायान्तु विटङ्कं (पुंनपुंसकम्) ॥ १५ ॥

गोपानसी, वलभी–वलभि ये २ छाने के लिये जो टेढ़ा काष्ठ है उसमें रहते हैं, ये २ भित्तियों में छाने के लिये दिये टेढ़े काष्ठ के या छाने के आधारवंश पत्थर के या छज्जा के नाम हैं । कपोतपालिका, विटङ्क ये २ कबूतरखाने के नाम हैं इनमें कपोतपालिका स्त्रीलिङ्ग है और विटङ्क पुंलिङ्ग व नपुंसक में रहता है ॥ १५ ॥

मोहरा या द्वार स. न. पु. स. स.

वेदी या चौतरा (स्त्री)द्वाद्वारं प्रतीहारः स्याद्वितर्दिस्तु वेदिका ।

बाहिरी फाटक पु. न. न. न. न.

नगरका फाटक तोरणो(ऽस्त्री) बहिर्द्वारं पुरद्वारन्तु गोपुरम् ॥ १६ ॥

द्वाः, द्वार, प्रतीहार–प्रतिहार ये ३ द्वार या मोहार के नाम हैं इनमें रेफान्त द्वार् स्त्रीलिङ्ग है । वितर्दि–वितर्दी, वेदिका, वेदि–वेदी ये २ वेदी या आंगन आदि में बनाये बैठने के स्थान (नहा) के नाम हैं । तोरण, बहिर्द्वार ये २ घरके बाहिरी फाटक के नाम हैं इनमें तोरण पुंलिङ्ग व नपुंसक है और पुरद्वार, गोपुर ये २ शहरके बाहिरी फाटक के नाम हैं ॥ १६ ॥

पु.

सुखसे आनेजाने के लिये बनी ' कूटं पूर्द्वारि य ' हस्तिनखस्तस्मि(न्नथ त्रिषु) ।

मिट्टीकीसीढ़ी पु.स.न. पु.स.न. न.स.

केवार, बेंवड़ा कपाटमररं(तुल्ये)तद्विष्कम्भोऽर्गलं (न ना) ॥ १७ ॥

पुरद्वार यानी नगरद्वार में सुखसे आने जाने के लिये जो मृत्कूट है उसे 'हस्तिनख' कहते हैं यह १ पुरद्वार में उतरने के लिये बनाये ज़ीना (खुरा, खजुरा) का नाम है

इसके अनन्तर वक्ष्यमाण शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं। कपाट-कपाटी, कवाट-कवाटी, अरर–अररी–अररि ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं और उस कपाट को रोकने के लिये जो बेंड़ना है उसे अर्गल या अर्गला या अर्गली कहते हैं यह पुंलिङ्ग नहीं है बरन स्त्री व नपुंसक कहाता है यह॥१ बेवड़ा या शाकल या अगरी का नाम है॥१७॥

सीढ़ी काठ आदि की सीढ़ी — न. न. स. स.

आरोहणं स्यात्सोपानं निश्रेणिस्त्वधिरोहणी ।

बढ़नी या झाड़ू, कूड़ा, करकट — स. स. पु. पु.

संमार्जनी शोधनी स्यात्संकरोवकर (स्तथा) ॥ १८ ॥

आरोहण, सोपान ये २ मिट्टी व पत्थर आदि की बनी सीढ़ी के नाम हैं। निश्रेणि-निश्रेणी–निश्रणी, अधिरोहणी–अधिरोहिणी ये २ काठ की सीढ़ी के नाम हैं। संमार्जनी, शोधनी ये २ बढ़नी या झाड़ू (बुहारी) के नाम हैं और संकर–संकार, अवकर–अवकार ये २ कूड़े या करकट के नाम हैं ॥ १८ ॥

निकलनेके द्वार, अच्छा स्थान — न. न. पु. पु.

'क्षिते' मुखं निःसरणं संनिवेशो निकर्षणः ।

ग्राम या गांव, घर बनाने की भूमि — पु. पु. स. पु.न.

(समौ) संवसथग्रामौ वेश्मभूर्वास्तु (रस्त्रियाम्)॥१९॥

मुख, निःसरण ये २ निकलने व पैठने की मार्ग के नाम हैं। संनिवेश, निकर्षण ये २ पुरादिकों में गृहादिकों की रचना से युतदेश के नाम हैं या अच्छे बासस्थान के नाम हैं। संवसथ, ग्राम ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ गांव के नाम हैं और वेश्मभू, वास्तु ये २ घर बनाने की भूमि के नाम हैं इनमें वास्तु पुंलिङ्ग व नपुंसक में रहता है ॥ १९ ॥

गोंयड़ या पड़ोस, डांड़ या सीमा — पु. न. स. स.

ग्रामान्त उपशल्यं स्यात्सीमसीमे (स्त्रियामुभे) ।

अहीरों का गांव, जंगलियों का गांव — पु. स. पु. पु.

घोष आभीरपल्ली स्यात्पक्कणः शबरालयः ॥ २० ॥

इति पुरवर्गः ॥

ग्रामान्त, उपशल्य ये २ ग्रामादि के समीप देश (पड़ोस) के नाम हैं। सीमा, सीमा (आघाट) भी ये २ ग्रामादि की मर्य्यादा (हद-डांड़) के नाम हैं। इनमें पहिला नान्त व दूसरा डाबन्त है ये दोनों स्त्रीलिङ्ग में रहते हैं। घोष, आभीरपल्ली-आभीरपल्लि ये २ अहीरों के पुर के नाम हैं और पक्कण, शबरालय ये २ भिल्लों (जंगलियों) के ग्राम के नाम हैं ॥ २० ॥

इति पुरवर्गविवरणम् ॥

---

१ "बिल्वनेर्भुट् चोदात्तः" इत्यत्र आदेर्मुडागमः ॥

अथ शैलवर्गो व्याख्यायते ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

पर्वत — महीध्रेशिखरिक्ष्माभृदहार्यधरपर्वताः ।

पु. पु. पु. पु. पु. पु. पु.

अद्रिगोत्रगिरिग्रावाचलशैलशिलोच्चयाः ॥ १ ॥

महीध्र–'महीधर, महिध्र' शिखरी (रिन्) क्ष्माभृत्, अहार्य्य, धर, पर्वत, अद्रि, गोत्र, गिरि, ग्रावा (न्) अचल, शैल, शिलोच्चय ये १३ सामान्य पर्वत के नाम हैं ॥ १ ॥

पु. पु. पु. पु.

पृथ्वीको घेरेहुआ पर्वत, त्रिकूट जिसपर लंका बसती है — लोकालोकश्चक्रवालस्त्रिकूटस्त्रिककु (त्समौ) ।

पु. पु. पु.

अस्ताचल, उदयाचल — अस्तस्तु चरमक्ष्माभृदुदयः (पूर्वपर्वतः) ॥ २ ॥

लोकालोक, चक्रवाल–'चक्रवाड' ये २ सप्तद्वीपवती पृथ्वी को जिसने घेर लिया है उस पर्वत के नाम हैं। त्रिकूट, त्रिककुत् (द्) ये २ त्रिकूटाचल कि जिस पर लङ्का बसी है उसके नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । अस्त, चरमक्ष्माभृत् ये २ अस्ताचल के नाम हैं और उदय, पूर्वपर्वत ये २ उदयाचल के नाम हैं ॥ २ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

पर्वतों के भेद — हिमवान्निषधो विन्ध्यो माल्यवान्पारियात्रकः ।

न. पु.

गन्धमादन (मन्ये च हेमकूटादयो) नगाः ॥ ३ ॥

हिमवान्, निषध, माल्यवान्, पारियात्रक–पारियात्रिक, गन्धमादन और अन्य भी हेमकूट, मलय, मन्दर, दर्दुर, चित्रकूट, मैनाक, सह्य आदि पर्वत हैं ये पर्वतभेदों के नाम हैं ॥ ३ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. स. स.

पत्थर पहाड़ की चोटी बीहड़ या पर्वत से पानी गिरनेका स्थान — पाषाणप्रस्तरग्रावोपलाश्मानः शिला दृषत् ।

पु.न. * न. न. पु. पु. पु.

कूटो(ऽस्त्री) शिखरं शृङ्गं प्रपातस्त्वतटोभृगुः ॥ ४ ॥

पाषाण, प्रस्तर, ग्रावा (न्) उपल, अश्म (न्) शिला, दृषत् ये ७ पत्थर के नाम हैं इनमें शिला के साहचर्य से दृषत् स्त्रीलिङ्ग है यानी शिला–दृषत् ये दोनों

---

१ दृषत्पाषाणमात्रके निष्पेषणोपलेऽपि ॥

स्त्रीलिङ्ग में रहते हैं। कूट, शिखर, शृङ्ग ये ३ पर्वत के शिखर या चोटी (कँगूरा) के नाम हैं इनमें कूट पुंलिङ्ग व नपुंसक है (अस्त्री) यह पूर्व या उत्तर पदों से संबन्ध रखता है व शिखरवाची शृङ्गशब्द नपुंसक में ही रहता है और प्रपात, अतट या कितेक आचार्य (प्रपातस्तु तटो भृगुः) ऐसा पढ़ते हैं उनके मतमें प्रपात, तट, भृगु ये ३ बीहड़ या पर्वत से जल गिरने के स्थान के नाम हैं ॥ ४ ॥

पर्वतका बीच पु.न. पु.न. पु.न. पु.न.
पर्वतोंकासमभू- **कटकोऽस्त्री (नितम्बोऽद्रेः) स्नुःप्रस्थः सानु (रस्त्रियौ)।**
भागया किनारा पु. न. पु. पु. पु.
झरनाकास्थान झरना **उत्सः प्रस्रवणं वारिप्रवाहो निर्झरो झरः ॥ ५ ॥**

पर्वत के मध्यभाग को 'कटक' कहते हैं यह १ पर्वत के बिचले भाग का नाम है यह स्त्रीलिङ्ग नहीं है बरन पुंलिङ्ग व नपुंसकमें रहताहै। स्नु, प्रस्थ, सानु ये ३ पर्वत के समभूभाग या किनारे के नाम हैं इनमें स्नु नितम्ब के साहचर्य से पुंलिङ्ग व नपुंसक है और सर्वधर आदिकों के मत में पुंलिङ्गही है व सानु-प्रस्थ ये दोनों पुंलिङ्ग व नपुंसक हैं। उत्स, प्रस्रवण ये २ जहां पर्वत से जल गिरकर अधिकतासे भर जाताहै उस (कुण्ड) के नाम हैं और वारिप्रवाह, निर्झर, झर-झरा, झरी-झरि ये ३ झरना के नाम हैं अथवा ये ५ झरना के ही पर्य्याय हैं ऐसा कितेक आचार्यों का मतहै ॥५॥

बनाईहुई गुफा स. पु.स. न. न. स.
विना बनाई **दरी तु कन्दरो (वा स्त्री) देवखातबिले गुहा।**
गुफा पु.न. पु.
भारी पत्थर **गह्वरं गण्डशैलास्तु "च्युताःस्थूलोपलागिरेः" ॥६॥**

दरी, कन्दर-कन्दरा-कन्दरी ये २ घर के समान पर्वत में बनाये बिल (गुफा के नाम हैं इनमें 'कन्दर' पुंलिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग है। देवखात, बिल, गुहा, गह्वर ये ४ अपने आप बनी गुफा के नाम हैं और पर्वत से गिरे मोटे पत्थर 'गण्डशैल' कहाते हैं और "दन्तकास्तु बहिस्तिर्य्यक्प्रदेशान्निर्गतागिरेः," पर्वत के वक्र प्रदेश से गिरे नोकदार टुकड़ों को "दन्तक" कहते हैं ॥ ६ ॥

खानि पर्वतस- स. पु. पु. पु.
मीपीछोटेपर्वत **खनिः स्त्रियामाकरः स्यात्पादाः प्रत्यन्तपर्वताः।**
पहाड़ की नि- स. स.
चलीभूमि,ऊपर की भूमि **उपत्यका "द्रेरासन्ना भूमि" "रूर्ध्व"मधित्यका॥७॥**

खनि, खनी, खानि, खानी, आकर ये २ खानि (जहां रत्न आदि उपजते हैं उस स्थान) के नाम हैं इनमें खनि स्त्रीलिङ्ग में रहता है[१] पाद, प्रत्यन्तपर्वत ये २ महापर्वत के निकटवर्ती छोटे पर्वत के नाम हैं पर्वत के नीचे निकट भूमि को

१ "अधित्यकायामिव धातुमय्यामिति" रघुः ॥

'उपत्यका' कहते हैं यह १ पर्वत की निचली भूमि का नाम है और पर्वत की उपरली भूमि को 'अधित्यका' कहते हैं यह १ पहाड़ की ऊपर की भूमिका नाम है॥ ७॥

पु. पु.स.न.

पहाड़से उपजी वस्तु मनःशिला आदि व गेरू — धातु'र्मनःशिलाद्यद्रे' गैरिक'न्तु' विशेषतः ।

कुञ्ज — पु.न. पु.न. निकुञ्जकुञ्जौ (वा क्लीबे लतादिपिहितोदरे) ॥ ८ ॥

इति शैलवर्गः ॥

पर्वत से उपजी जो मनःशिला आदि हैं वे धातु कहाती हैं आदि शब्द से सोना, चाँदी, तांबा, हरतार, मनःशिला, गेरु, आंजन, कसीस, लोह, इंगुर, गन्धक और अभ्रक आदि पहाड़ी धातु हैं और 'गैरिक' यह विशेषता से धातु कहाती है यह १ गेरू का नाम है और लता, तृण आदिकों से ढँके उदरवाले स्थान में निकुञ्ज, कुञ्ज ये दोनों विकल्प से नपुंसक में होते हैं ये २ कुञ्ज के नाम हैं ॥ ८ ॥

इति शैलवर्गविवरणम् ॥

अथ वनौषधिवर्गो व्याख्यायते ॥

स. न. न. न. न. न.

बन या जंगल बड़ावन — अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम् ।

न. स. पु. पु.

घर के समीपी बाग — महारण्यमरण्यानी गृहारामास्तु निष्कुटाः ॥ १ ॥

अटवी, अरण्य, विपिन, गहन, कानन, वन ये ६ वनके नाम हैं । इनमें 'अटवी' स्त्रीलिङ्ग है । महारण्य, अरण्यानी ये २ बड़े वनके नाम हैं इनमें 'अरण्यानी' स्त्रीलिङ्ग है और गृहाराम, निष्कुट ये २ घर के निकट बनाये बागीचा के नाम हैं॥ १॥

पु. न. न.

बनाया बाग — आरामः स्यादुपवनं (कृत्रिमं वनमेव यत्) ।

स.

राजमन्त्री व वेश्या का बाग — "अमात्यगणिकागेहोपवने" वृक्षवाटिका ॥ २ ॥

जो बनाने से सिद्धवन है उसे आराम और उपवन कहते हैं ये २ उपवन के नाम हैं और राजमन्त्री व वेश्याओं के घर में जो उपवन है उसे 'वृक्षवाटिका' कहते हैं यह १ राजमन्त्री व वेश्याओं के बाग का नाम है ॥ २ ॥

पु. न.

राजा का बाग — (पुमाना)ऽऽक्रीड उद्यानं "राज्ञःसाधारणं वनम्" ।

न.

रानी का बाग — 'स्यादेत[१]देवं' प्रमदवन "मन्तःपुरोचितम्" ॥ ३ ॥

---

१ प्रविष्टः प्रमदावनमिति भट्टिः ॥

राजा का जो साधारण वन है उसे 'आक्रीड' व 'उद्यान' कहते हैं ये २ राजा के सर्वोपभोग्य वन के नाम हैं और जो रानियों के क्रीड़ा करने योग्य वन है उसको ही 'प्रमद्वन' या 'प्रमदावन' कहते हैं यह १ रानी समेत राजा जहां क्रीडा करता है उस वनका नाम है ॥ ३ ॥

पंक्ति या पांति स. स. स. स. स. स. स.
लेखा या लकीर वीथ्यालिरावलिः पंक्तिः श्रेणीलेखास्तु राजयः ।
वनसमूह स. पु. पु. पु.
अखुआ वन्या (वनसमूहे)स्यादङ्कुरो (ऽभिनवोद्भिदि) ॥ ४ ॥

वीथी, 'वीथि' आलि, आली, आवलि, आवली, पङ्क्ति, पङ्क्ती, श्रेणी, श्रेणि ये ५ अन्तरसमेत पङ्क्ति (पांति) के नाम हैं । लेखा, राजि, 'राजी' ये २ निरन्तर पङ्क्ति अपङ्क्ति साधारण यानी लकीर के नाम हैं । वन्या, वनसमूह ये २ वनसमुदाय के नाम हैं अथवा वनसमूह को 'वन्या' कहते हैं यह १ वनसमूह का नाम है और अङ्कुर, अभिनवोद्भिद् ये २ अङ्कुर या 'अँखुआ' के नाम हैं ॥ ४ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
वृक्ष या पेड़ वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः ।
पु. पु. पु. पु. पु. पु. पु.
अनोकहः कुटः सालः पलाशी द्रुद्रुमागमाः ॥ ५ ॥

वृक्ष, महीरुह, शाखी (न्) विटपी (न्) पादप, तरु, अनोकह, कुट, साल, पलाशी, द्रु, द्रुम, अगम ये १३ वृक्ष (पेड़) के नाम हैं ॥ ५ ॥

वानस्पत्य पु. पु.
वनस्पति वानस्पत्यः "फलैः पुष्पा" त्तैरपुष्पाद्वनस्पतिः ।
ओषधी स. पु. पु.
फलवान् ओषध्यः ('फलपाकान्ताः')स्यादवन्ध्यः फलेग्रहिः॥६॥

फूलों से उपजे फलों से जाना हुआ वृक्ष "वानस्पत्य" कहाता है यह १ आम्र आदि वानस्पत्य का नाम है । फूलों के विना उपजे फलों से जाना हुआ वृक्ष "वनस्पति" कहाता है यह १ कटहर, गूलर आदि या वृक्षमात्र का नाम है । जिन्हों का फल पकनाही अन्त है वे "ओषध्यः" हैं यानी ओषधियां कहाती हैं यह १ धान व यव आदि अन्न का नाम है यह इकारान्त व ङीषन्त भी है इसीसे (यत्रौषधयो रजन्यामिति कुमारः) यह पद भी संगत होता है और अवन्ध्य, फलेग्रहि ये २ फल समय में फलनेहारे वृक्ष के नाम हैं ॥ ६ ॥

१ अनोकहाकम्पितपुष्पगन्धिरिति रघुः ॥ २ यत्रान्या ओषधयो म्लायन्त इति श्रुतिः ॥

पु.स.न.　पु.स.न. पु.स.न.　पु.स.न.　पु.स.न. पु.स.न.
बांझ　बन्ध्योऽफलोऽवकेशी (च) फलवान् फलिनः फली ।
पु.स.न.　पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.　पु.स.न.　पु.स.न.
सफल　प्रफुल्लोत्फुल्लसंफुल्लव्याकोशविकचस्फुटाः ॥ ७ ॥
पु.स.न.　पु.स.न.
फूले हुए　फुल्लश्चैते विकसिते स्यु "रवन्ध्यादयस्त्रिषु" ।

बन्ध्य, अफल, अवकेशी ये ३ ऋतु में भी जो न फले उस वृक्ष (बाँझ) के नाम हैं। फलवान्, फलिन, फली ये ३ फले हुए वृक्ष के नाम हैं। इनमें फलिन अदन्त है। प्रफुल्ल, उत्फुल्ल, संफुल्ल, व्याकोप—व्याकोश, विकच, स्फुट, फुल्ल और विकसित ये ८ फूले हुए वृक्ष के नाम हैं और अबन्ध्य आदि व विकसितान्त शब्द तीनों लिङ्ग में वर्तमान रहते हैं ॥ ७ । ३ ॥

शाखापत्रशून्य　पु.न.　पु.　पु.　पु.
छोटा वृक्ष　स्थाणु(र्वा ना)ध्रुवः शङ्कु(र्ह्रस्वशाखाशिफः)क्षुपः ॥८॥
शाखाशून्य या　पु.　पु.　स.　स.　स.
ठूंठ लता या　(अप्रकाण्डे) स्तम्बगुल्मौ वल्ली(तु)व्रततिर्लता ।
बेल,　स.　स.　पु.
फैली लता　(लता प्रतानिनी) वीरुद्गुल्मिन्युलप (इत्यपि) ॥ ९ ॥

स्थाणु, ध्रुव, शंकु ये ३ शाखापत्ररहित यानी छांटे हुए वृक्ष के नाम हैं इनमें 'स्थाणु' विकल्प से पुंलिङ्ग है व रूपभेद से नपुंसक भी है जिसकी शाखायें व जड़ें छोटीसी हों उसको 'क्षुप' कहते हैं यह १ छोटी डाल व मूलवाले वृक्ष का नाम है। स्तम्ब, गुल्म ये २ स्कन्धरहित (ठूंठ) के नाम हैं। वल्ली, वल्लि, वेल्लि, प्रतति, व्रतति, व्रतती, लता ये ३ लतामात्र के नाम हैं और वीरुत्, गुल्मिनी, उलप ये ३ अतिविस्तृत शाखा आदि से बढ़ी लता के नाम हैं इनमें वीरुत् धान्त है ॥ ८ । ९ ॥

पु.　पु.　पु.
वृक्ष व पर्वत की उँचाई　नगाद्यारोह उच्छ्राय उत्सेधश्चोच्छ्रयश्च (सः) ।
पु.न.　पु.
वृक्षका भाग　अस्त्री प्रकाण्डःस्कन्धःस्यान्मूलाच्छाखावधिस्तरोः १०

वृक्ष, पर्वत और देवालय आदिकों की जो उँचाई है उसे उच्छ्राय, उत्सेध और उच्छ्रय भी कहते हैं ये ३ वृक्षादिकों की दीर्घता के नाम हैं और वृक्ष की जड़ से लेकर शाखा पर्यन्त जो भाग है उसे 'प्रकाण्ड' व 'स्कन्ध' कहते हैं इनमें प्रकाण्ड स्त्रीलिङ्ग नहीं है वरन पुंलिङ्ग व नपुंसक में रहता है ये २ वृक्ष की पीड़ के नाम हैं ॥१०॥

शाखा — स. स. स. स. स. स.
बड़ीशाखा वृक्ष (समे) शाखालते स्कन्धशाखाशाले शिफाजटे ।
मूल बरोह — पु. स.
ऊपरगई लता (शाखाशिफा) वरोहः स्या“न्मूलाच्चाग्रंगता” लता॥११॥

शाखा, लता ये २ शाखा (डाल) के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । स्कन्धशाखा, शाला ये २ स्कन्ध से पहले उपजी शाखा या मोटी जंघा के नाम हैं । शिफा, जटा ये २ वृक्ष की जड़ के नाम हैं । बरगद आदि की शाखा को अवलम्बन करती हुई जड़ ‘अवरोह’ कहाती है यह १ बरोह का नाम है । मूल से ऊपर गई ‘शिफा’ भी लता कहाती है और प्रसंग से यहां पर मुकुटने अवरोह का अर्थान्तर कहा है कि, वृक्ष की मूल से लेकर वृक्षाग्र पर्यन्त गई गुड़च व कुम्हड़ा आदि की लता भी ‘अवरोह’ कहाती है यह १ ऊपर गई लता का नाम है ॥ ११ ॥

वृक्षकी चोटी — न. न. पु.न. न. पु. पु.
वृक्ष की जड़ — शिरोग्रं शिखरं (वा ना) मूलं बुध्नोङ्घ्रिनामकः ।
सार या हीर — पु. पु. स. पु.न. पु.न.
बकला या छिलका — सारोमज्जा(नरि)त्वक्(स्त्री)वल्कंवल्कलमस्त्रियाम्॥१२॥

शिर (स्) अग्र, शिखर ये ३ वृक्ष आदि की चोटी के नाम हैं । शिर आदि तीनों भी पर्याय हैं यह किसीका मत है शिखर पक्ष में पुंलिङ्ग है[1] । मूल, अघ्न-बुध्न, अंघ्रिनामक ये ३ मिट्टी के भीतरी जड़ के नाम हैं । सार, मज्जा (न्) ये २ वृक्ष आदि के हीर (गूदा) के नाम हैं इनमें मज्जा शब्द नान्त होकर पुंलिङ्ग में रहता है और “मज्जोक्ता मज्जयासह” इस द्विरूपकोष के प्रमाण से टाबन्त भी पाया जाता है । त्वक्–त्वचा, वल्क, वल्कल ये ३ बकला के नाम हैं इनमें चान्त त्वक् स्त्रीलिङ्ग है और वल्क, वल्कल ये दोनों पुंलिङ्ग व नपुंसक में रहते हैं ॥ १२ ॥

काठ — न. पु.न. न. न. न. न. स.
इन्धन — काष्ठं दार्विन्धनं त्वेध इध्ममेधः समित् (स्त्रियाम्) ।
खोंखला — पु. पु.न. स. स.
मंजरी — निष्कुहः कोटरं (वा ना) वल्लरिर्मञ्जरिः (स्त्रियौ)॥१३॥

काष्ठ, दारु ये २ काष्ठमात्र के नाम हैं इनमें ‘दारु’ पुंलिङ्ग व नपुंसक है । इन्धन, एध (स्) इध्म, एध, समित् ये ५ सूखे तृण काष्ठ आदि (इन्धन) के नाम हैं अथवा आदि के तीन आगि जलाने के लिये तृण व काष्ठादि के नाम हैं । अन्त्य के २ यज्ञादि में होम के लिये समिधों के नाम हैं यह मत है इनमें पहला एध सान्त

१ शिखरोऽस्त्रीद्रुमाग्रे चाद्रिशृङ्गपुलकाग्रयोः (इति कोषान्तरम्) ॥

नपुंसक है और दूसरा घञन्त पुंलिङ्ग है और समित् धकारान्त है। निष्कुह, कोटर ये २ वृक्ष में हुए खोड़र (खुढ़िला) के नाम हैं इनमें 'कोटर' विकल्प से पुंलिङ्ग है और वल्लरि-वल्लरी, मञ्जरि-मञ्जरी ये २ तुलसी आदि की मञ्जरी के नाम हैं ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ १३ ॥

न. न. न. न. न. पु.
पत्ता नया पत्ता **पत्रं पलाशं छदनं दलं पर्णं छदः (पुमान्)।**
पु.न. न. पु. पु.न.
डालोंका फैलना **पल्लवो(ऽस्त्री)किसलयं विस्तारो विटपो(ऽस्त्रियाम्)॥१४॥**

पत्र, पलाश, छदन, दल, पर्ण, छद ये ६ पत्तों के नाम हैं इनमें अदन्त 'छद' पुंलिङ्ग है। पल्लव, किसलय ये २ नये पत्तों के नाम हैं इनमें 'पल्लव' पुंलिङ्ग व नपुंसक है और दन्त्य सकारवान् 'किसलय' नपुंसक है और विस्तार, विटप ये २ डालों के फैलने के नाम हैं इनमें 'विटप' पुंलिङ्ग व नपुंसक है॥ १४ ॥

न न. न. न.
फल, गुच्छा, गीला **(वृक्षादीनां) फलं सस्यं वृन्तं प्रसवबन्धनम् ।**
पु.स.न. पु.स.न.
फल, सूखाफल **(आमे फले)शलाटुःस्या'च्छुष्के'वान (मुभे त्रिषु)॥१५॥**

वृक्ष आदिकों के फल को 'फल' व 'सस्य' या 'शस्य' भी कहते हैं ये २ सस्य के नाम हैं। वृन्त, प्रसवबन्धन ये २ गुच्छा के नाम हैं। कच्चे फल में 'शलाटु' होता है यह १ गीले फलका नाम है और सूखे फल में 'वान' कहाता है यह १ सूखे फल का नाम है ये दोनों तीनों लिङ्ग में रहते हैं ॥ १५ ॥

नई कली, पु. न. स. पु.
कली, फूलका **क्षारको जालकं 'क्लीबे' कलिका कोरकः (पुमान्)।**
गुच्छा, पु. पु. पु.न. पु.न.
फूलती कली **स्याद्गुत्सकस्तुस्तबकः कुड्मलो मुकुलो(ऽस्त्रियाम्)॥१६॥**

क्षारक, जालक ये २ नई कली के नाम हैं। इनमें 'जालक' नपुंसक मेंही रहता है। कलिका, कलि-कली, कोरक ये २ बिना फूली कली के नाम हैं इनमें कोरक पुंलिङ्ग है और मेदिनी आदि कोषों के प्रमाण से नपुंसक भी है। गुत्सक-गुच्छक, स्तबक-स्तबक ये २ फूलने के सन्मुख कली या कलियों के समूह या गुच्छा के नाम हैं और कुड्मल, कुट्मल, मुकुल ये २ कुछेक फूलती कली के नाम हैं ये दोनों पुंलिङ्ग व नपुंसक म रहते हैं ॥ १६ ॥

---

१ स्तबके हारभेदे च गुत्सः स्तम्बेऽपि कीर्तित इति दन्त्यान्ते (रुद्रः)। पुष्पादिस्तबके गुच्छ इति तालव्यान्ते (रन्तिदेवः)॥

स. न. न. न. न.

फूल,फूलकारस (स्त्रियः) सुमनसः पुष्पं प्रसूनं कुसुमं समम्।

पु. पु. पु. न.

फूलकी धूलि मकरन्दः पुष्परसः परागः सुमनोरजः॥ १७॥

सुमनस्–सुमनाः (स्) पुष्प, प्रसून, सून, कुसुम, सम और सुम भी ये ५ फूलके नाम हैं। इनमें सुमनस् बहुवचनान्त स्त्रीलिङ्ग है और रत्नकोष व मेदिनी आदि कोषों के प्रमाण से एकवचनान्तभी है (पुष्पं सुमनाःकुसुममिति नाममाला) इस नाममाला के प्रमाण से भी एकवचनान्त पाया जाता है। मकरन्द, पुष्परस ये २ फूल के रस के नाम हैं और पराग, सुमनोरज (स्) ये २ पुष्पधूलि के नाम हैं॥ १७॥

वृक्षों का फल द्विहीनं प्रसवे सर्वं हरीतक्यादयः[1] (स्त्रियाम्)।

न. न. न. न. न.

आश्वत्थवैणवप्लाक्षनैयग्रोधैङ्गुदं[2] (फले)॥ १८॥

फल, फूल व पत्र में वर्तमान सम्पूर्ण कहे जानेवाले अश्वत्थ व कपित्थ आदि स्त्रीलिङ्ग व पुंलिङ्गसे रहित होकर नपुंसकमें रहतेहैं और हरीतकी आदि फल पुष्पादि में भी स्त्रीलिङ्ग होते हैं जैसे 'हरीतक्याः फलं हरीतकी' आदि शब्द से कोशातकी, बदरी, कण्टकारिका आदिकों का ग्रहण होता है और फल में अश्वत्थ का फल 'आश्वत्थम्' वेणुका वैणवम्, प्लक्षका प्लाक्षम्, न्यग्रोधका नैयग्रोधम्, इंगुदीका फल ऐंगुदम् कहाता है यह अलग २ एक २ का नाम है॥ १८॥

भटकटैयाका बार्हतं च (फले जम्ब्वा) जम्बूः (स्त्री) जम्बु जाम्बवम्।

फल जामुन (पुष्पे) जातिप्रभृतयः स्वलिङ्गाः व्रीहयः (फले)॥१९॥

बृहती के फल को 'बार्हत' कहते हैं यह १ भटकटैया के फलका नाम है। जामुन के फल में जम्बू, जम्बु, जाम्बव ये होते हैं ये ३ जामुन फल के नाम हैं इन में 'जम्बू' स्त्रीलिङ्ग है फूल में वर्तमान जाती, यूथिका, शेफालिका और मल्लिका आदि स्त्रलिङ्ग होते हैं। जाती (चमेली) के फूल को 'जाति' या 'जाती' कहते हैं एवं यूथिका के फूल को 'यूथिका' शेफालिका के फूल को शेफालिका, मल्लिका के फूल को 'मल्लिका' कहते हैं इत्यादि जानना चाहिये और फल में वर्तमान धान्य-वाचक यवादि शब्द अपने लिङ्गवाले होते हैं जैसे यव के फलों को (यवाः) कहते हैं एवं माषों के फलों को (माषाः) और मुद्गों (मूंगों) के फलों को (मुद्गाः) कहते हैं इत्यादि जानना चाहिये॥ १९॥

---

१ हरीतक्यादिभ्यश्च (४। ३। १६७) २ प्लक्षादिभ्योऽण् (४। ३। १६४)॥

स.

कुम्हड़ा आदि "विदार्याद्यास्तु मूलेपि पुष्पे क्लीबेऽपि"पाटला।

पु.

बोधिद्रुमश्चलदलः पिप्पलः कुञ्जराशनः ॥ २० ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

पीपर अश्वत्थे (ऽथ)कपित्थे स्युर्दधित्थग्राहिमन्मथाः।

पु. पु. पु.

कैथा "तस्मि"न्दधिफलः पुष्पफलदन्तशठावपि ॥ २१ ॥

मूल में वर्तमान विदारी आदि भी स्त्रलिङ्ग होते हैं जैसे विदारी (भूमिकूष्माण्ड) का मूल, फूल व फल भी 'विदारी' कहाता है आदि शब्द से गम्भारी के मूलादिको 'गम्भारी' व शालपर्णी के मूलादि को 'शालिपर्णी' कहते हैं इत्यादि जानना चाहिये व फूल में वर्तमान 'पाटला' शब्द नपुंसक है व अपि शब्द से स्वलिङ्ग भी होताहै जैसे पाटला के फूल को 'पाटल' या 'पाटला' कहते हैं और मेदिनीकोष के प्रमाण से 'पाटल' पुंलिङ्ग नहींहै परन्तु शाश्वतके प्रमाणसे पुंलिङ्ग भी पाया जाताहै। बोधिद्रुम, चलदल, पिप्पल, कुञ्जराशन, अश्वत्थ ये ५ पपिल वृक्षके नाम हैं और कपित्थ-कत्थ, दधित्थ, ग्राही (हिन्) मन्मथ, दधिफल, पुष्पफल, दन्तशठ ये ७ कैथाके नाम हैं ॥ २०।२१ ॥

पु. पु. पु. पु.

गूलर उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञाङ्गो हेमदुग्धकः।

पु. पु. पु. पु.

कचनार कोविदारे चमरिकः कुद्दालो युगपत्रकः ॥ २२ ॥

उदुम्बर (उडुम्बर) जन्तुफल, यज्ञाङ्ग, हेमदुग्धक ये ४ गूलर के नाम हैं और कोविदार, चमरिक, कुद्दाल, युगपत्रक ये ४ कचनार के नाम हैं ॥ २२ ॥

पु. पु. पु.स. पु.

सातपत्तोंवाला सप्तपर्णो विशालत्वक् शारदो विषमच्छदः।

पु. पु. पु. पु.

छितिवन आरग्वधे राजवृक्षसंपाकचतुरङ्गुलाः ॥ २३ ॥

पु. पु. पु. पु.

अमिलतास आरेवतव्याधिघातकृतमालसुवर्णकाः।

पु. पु. पु. पु. पु.

जम्भीरीनींबू (स्यु)र्जम्बीरे दन्तशठजम्भजम्भीरजम्भलाः ॥ २४ ॥

सप्तपर्णा, विशालत्वक्, शारद—शारदी, विषमच्छद ये ४ सतवना (छितिवन)

१ पाटलः कुसुमे वर्णेप्याशुव्रीहिश्च पाटल इति शाश्वतात्पुंलिङ्गोपि ॥

या सातपत्ते वाले वृक्ष के नाम हैं। आरग्वध, अर्ग्वध, आर्ग्वध, राजवृक्ष, संपाक-शंपाक, शम्याक, चतुरंगुल, आरेवत, व्याधिघात, कृतमाल, सुवर्णाक या सुपर्णाक ये ८ सोनालु, घन बहेड़ या (अमिलतास) के नाम हैं। जम्बीर, दन्तशठ, जम्भ, जम्भीर, जम्भल ये ५ जम्बीरी नींबू के नाम हैं ॥ २३ । २४ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
बरना **वरणे वरुणः सेतुस्तिक्तशाकः कुमारकः।**
पु. पु. पु. पु. पु.
नागकेसर **पुंनागे पुरुषस्तुङ्गः केसरो देववल्लभः ॥ २५ ॥**

वरण, वरुण, सेतु, तिक्तशाक, कुमारक ये ५ बरना के नाम हैं और पुंनाग, पुरुष, तुङ्ग, केसर-केशर, देववल्लभ ये ५ नागकेसर के नाम हैं अथवा गुर्जर देश में 'संदेशरा' इस प्रख्यात वृक्ष के नाम हैं 'केसरो नागकेशरे' "तुरङ्गसिंहयोः स्कन्ध-केशेषु बकुलद्रुमे। पुंनागवृक्षे किंजल्के स्यात्केसरं तु हिंगुनीति हैमः" ॥ २५ ॥

पु. पु. पु. पु.
नींब बड़ा तेंदुआ **पारिभद्रे निम्बतरुर्मन्दारः पारिजातकः।**
पु. पु. पु. पु. पु.
या तिनिस **तिनिशे स्यन्दनो नेमीरथद्रुरतिमुक्तकः ॥ २६ ॥**
पु. पु. पु. पु.
अम्बाडा या **वञ्जुलश्चित्रकृच्चाथ (द्वौ) पीतनकपीतनौ।**
पु. पु. पु. पु.
अमरा महुआ **आम्रातके मधूके (तु) गुडपुष्पमधुद्रुमौ ॥ २७ ॥**
पहाड़ी या पु. पु. पु.
जली महुआ **वानप्रस्थमधुष्ठीलौ (जलजेऽत्र) मधूलकः।**

पारिभद्र, निम्बतरु, मन्दार, पारिजातक ये ४ नींब या बकायन के नाम हैं। तिनिश, स्यन्दन, नेमि-नेमी, नेमिन् "पुंलिङ्गस्तिनिशे नेमिश्चक्रप्रान्ते स्त्रियामपीति" (रुद्रः) रथद्रु, अतिमुक्तक, वञ्जुल, चित्रकृत् ये ७ तिनिश या बड़े तेंदुआ के नाम हैं। पीतन, कपीतन, आम्रातक ये ३ 'अम्बाडा' या 'अमरा' के नाम हैं। मधूक—मधुक, मधूल, मधुल, मधु, गुडपुष्प, मधुद्रुम, वानप्रस्थ, मधुष्ठील ये ५ महुआ के नाम हैं और जल से उपजे इस महुआ में 'मधूलक' होता है यदि (गिरिजेत्र मधूलकः) ऐसा सुभूति के मत में मूलपाठ है तो यह १ पहाड़ी महुआ का नाम है "गौरशाकोमधूकोन्योगिरिजः सोल्पपत्रकः" (इति माधवः) "मधूकोऽन्यो मधूलस्तु जलजो दीर्घपत्रक" (इति स्वामी) जो पहाड़ी महुआ है वह छोटे पत्तोंवाला होता है यह माधवका मत है और जो जल से उपजा महुआ है वह बड़े पत्तोंवाला होता है यह स्वामी का मत है ॥ २६ । २७ । ½ ॥

पु. पु. पु.
पीलुआ पहाड़ी पीलौ गुडफलः स्रंसी (तस्मिंस्तु गिरिसंभवे) ॥ २८ ॥
पीलुआ पु. पु. पु. पु.
अंकुहर या पिस्ता अक्षोटकर्परालौ द्वावङ्कोटे तु निकोचकः[1] ।

पीलु, गुडफल, स्रंसी (न्) ये ३ गुजरात में प्रख्यात पीलू के नाम हैं और वह पीलू यदि पहाड़ी हो तो उसम अक्षोट, कर्पराल या 'कन्दराल' भी ये दो होते हैं ये २ पहाड़ी पीलू (अखरोट) के नाम हैं। अङ्कोट, 'अङ्कोल' निकोचक, 'लिकोचक' भी ये २ अंकुहर या पिस्ता के नाम हैं ॥ २८ । १/२ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
ढाख या छिउल पलाशे किंशुकः पर्णो वातपोथो (ऽथ वेतसे) ॥ २९ ॥
पु. पु. पु. पु. पु. पु.
वेत रथाभ्रपुष्पविदुलशीतवानीरवञ्जुलाः ।
पु. पु. स. पु.
जलवेत (द्वौ) परिव्याधविदुलौ नादेयी (चाम्बुवेतसे)॥ ३० ॥

पलाश, किंशुक, पर्ण, वातपोथ ये ४ ढाख या छिउल के नाम हैं। वेतस, रथ, अभ्रपुष्प, विदुल, शीत, वानीर, वञ्जुल ये ७ वेत के नाम हैं और परिव्याध, विदुल, नादेयी, अम्बुवेतस ये ४ जलवेत के नाम हैं इनमें परिव्याध, विदुल ये दोनों पुंलिङ्ग हैं और नादेयी स्त्रीलिङ्ग में रहता है ॥ २९ । ३० ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
सहँजना लाल शोभाञ्जने शिग्रुतीक्ष्णगन्धकाक्षीवमोचकाः ।
पु. पु. पु.
फूलका सहँजना रीठा (रक्तोऽसौ) मधुशिग्रुः स्यादरिष्टः फेनिलः (समौ)॥ ३१ ॥

शोभाञ्जन, शौभाञ्जन, सौभाञ्जन, शिग्रु, तीक्ष्णगन्धक, आक्षीव—अक्षीव, मोचक ये ५ सहिंजना के नाम हैं और यदि यह सहिंजना लाल फूलवाला हो तो 'मधुशिग्रु' कहलाता है यह १ लाल फूलवाले सहिंजने का नाम है और अरिष्ट, फेनिल ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ रीठा के नाम हैं (अरिष्टो लशुने निम्बे फेनिले काककङ्कयोः 'रिष्टोपि' रिष्टंक्षेमाशुभाभावे पुंसि खड्गे च फेनिले) इस मेदिनीकोष के प्रमाण से 'रिष्ट' भी होता है ॥ ३१ ॥

[1] लयनं लीरतयाकोचको व्यथाजनकः 'लिकोचकः' (इति श्रीकरः) ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
बेल, बिल्वेशाण्डिल्यशैलूषौ मालूरश्रीफलावपि।
पु. पु.स. पु.स. पु. पु. पु.
पाकरि बरगद प्लक्षो जटी पर्कटी स्यान्न्यग्रोधो बहुपाद्वटः॥ ३२॥

बिल्व, शाण्डिल्य, शैलूष, मालूर, श्रीफल ये ५ बिल्व (बेल) वृक्ष के नाम हैं। प्लक्ष, जटी, जटि, जटिन्, पर्कटी, पर्कटि, पर्कटिन् ये ३ पकरिया के नाम हैं। न्यग्रोध, बहुपाद्, वट ये ३ बरगद के नाम हैं॥ ३२॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
लोध, गालवः शाबरो लोध्रस्तिरीटस्तिल्वमार्जनौ।
आँब, पु. पु. पु. पु.
खुरासानी आँब आम्रश्चूतो रसालो (सौ)सहकारो (ऽतिसौरभः)॥३३॥

गालव, शाबर–साबर, लोध्र–रोध्र, तिरीट, तिल्व, मार्जन ये ६ लोध्र के नाम हैं। इनमें गालव, शाबर ये २ सफ़ेद लोध के नाम हैं और लोध्र, तिरीट, तिल्व, मार्जन ये ४ लाल लोध के नाम हैं यह स्वामी का मत है। आम्र, चूत, रसाल ये ३ आम के नाम हैं और यदि यह आम महासुगन्धित हो तो उसे 'सहकार' कहते हैं यह १ अति सुगन्धित आम का नाम है॥ ३३॥

पु. न. पु. पु. पु.
गुग्गुल कुम्भोलूखलकं (क्लीबे)कौशिको[1] गुग्गुलुः पुरः।
पु. पु. पु. पु. पु.
लसोड़ा शेलुः श्लेष्मातकः शीत उद्दालो बहुवारकः॥ ३४॥

कुम्भ, उलूखलक, कुम्भोलु, खलक, कुम्भोलूखलक, कौशिक, गुग्गुलु–गुग्गुल, पुर ये ५ गुग्गुल (गूगुल) के नाम हैं इनमें पुर शब्द अकारान्त है। शेलु–सेलु, श्लेष्मातक, शीत, उद्दाल, बहुवारक और बहुवार भी ये ५ लसोड़ा के नाम हैं॥ ३४॥

पु.न. पु. पु. पु.
चिरौंजी राजादनं पियालः "स्या"त्सन्नकद्रुर्धनुष्पटः।
खंभारी या स. स. स. स.
कंभारी गम्भारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका॥ ३५॥
स. स. पु.
श्रीपर्णी भद्रपर्णी (च) काश्मर्यश्चा (प्यथ द्वयोः)।

---

१ " कौशिको नकुले व्यालग्राहे गुग्गुलशुक्रयोः। कोशाणोलूकयोश्च स्यादिन्द्रवामित्रसुनावपि॥ कौशिकी चण्डिकायां च नदीभेदे च योषिति " (इति कोषान्तरम्)॥

राजादन, 'राजातन' पियाल–प्रियाल, सन्नकद्रु (सन्न, कद्रु) धनुष्पट (धनुः-पट) ये ४ चिरौंजी के नाम हैं इनमें राजादन, राजातन ये दोनों पुंलिङ्ग व नपुंसक हैं और 'धनु' उकारान्त वा सान्त भी है। गम्भारी–कम्भारी, सर्वतोभद्रा, काश्मरी, मधुपर्णिका, श्रीपर्णी, भद्रपर्णी, काश्मर्य ये ७ खम्भारी के नाम हैं। इसके अनन्तर वक्ष्यमाण 'कर्कन्धू' दोनों लिङ्ग में होता है ॥ ३५ । ३६ ॥

पु.स. स. स. न. न. न.

बेर कर्कन्धूर्बदरी कोली कोलं कुवलफेनिले ॥ ३६ ॥

बेरके फल न. न. स. पु.

कंटाय या शमी सौवीरं बदरं घोएटा "प्यथ स्या" त्स्वादुकएटकः।

पु. पु. पु. पु.

विकङ्कतःस्रुवावृक्षो ग्रन्थिलो व्याघ्रपा(दपि) ॥ ३७ ॥

कर्कन्धू, बदरी, कोली–कोलि, कुवली भी ये ३ बदरी (बेरी) वृक्ष के नाम हैं इनमें कर्कन्धू पुंलिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग है। कोल, कुवल, फेनिल, सौवीर, बदर, घोएटा ये ६ बेरीफल (बेर) के नाम हैं इनमें घोएटा स्त्रीलिङ्ग है (बदरीसदृशाकारो वृक्षः सूक्ष्मफलो भवेत्। अटव्यामेव सा घोएटा गोपघएटेति चोच्यते) बेरी के समान आकारवाला वृक्ष सूक्ष्म फलवाला होता है और वन में वही बेरी घोएटा और गोपघोएटा कहाती है यह वृक्ष व फल दोनों का वाचक है। स्वादुकएटक, विकङ्कत–वैकङ्कत, स्रुवावृक्ष, ग्रन्थिल, व्याघ्रपाद् ये ५ कंटाय या शमी (यज्ञीयवृक्ष) के नाम हैं ॥ ३६ । ३७ ॥

पु. पु. स. स.

नारंगी ऐरावतो नागरङ्गो नादेयी भूमिजम्बुका।

पु. पु. पु. पु.

तेंदुआ तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्कन्धश्च (शितिसारके) ॥३८॥

ऐरावत, नागरङ्ग, नारङ्ग–नार्यङ्ग, नादेयी, भूमिजम्बुका ये ४ नारङ्गी के नाम हैं। इनमें आदि के दो पुंलिङ्ग हैं और अन्त के दो स्त्रीलिङ्ग में रहते हैं और तिन्दुक, स्फूर्जक, कालस्कन्ध, शितिसारक ये ४ तेंदुआ के नाम हैं ॥ ३८ ॥

पु. पु. पु. पु.

कड़वा तेंदुआ काकेन्दुः कुलकः काकपीलुकः काकतिन्दुके।

पु. पु. पु.स. पु. पु.

काली पादरि गोलीढो झाटलो घएटापाटलिर्मोक्षमुष्ककौ ॥ ३९ ॥

---

१ उक्तं च समन्वयप्रदीपे–यत्र वाक्यार्थविश्रान्तिः श्लोकेनैकेन जायते। तन्मुक्तकं युगं द्वाभ्यां त्रिभिः स्यात्तिलकं पुनः। चतुर्भिः स्याच्च कलकं पञ्चभिः कुलकं ततः। महाकुलकमित्यार्याः कथयन्ति ततः परमिति ॥

काकेन्दु, कुलक, काकपीलुक, काकतिन्दुक ये ४ कडुवेतेंदुआ या कुचिला के नाम हैं। गोलीढ, गोलिह, झाटल, घगटापाटलि, मोक्ष, मुष्कक ये ५ काली पाढ़रि या लोध्रविशेष के नाम हैं। इनमें 'घगटापाटलि' पुंलिङ्ग है और स्वामी के मत में घगटा, पाटलि ये २ नाम हैं॥ ३६॥

पु. पु. पु. पु. पु.

तिलक,झाऊ तिलकः क्षुरकः श्रीमा (न्समौ) पिचुलझावुकौ।

स. स. स. पु. पु.

कायफर श्रीपर्णिका कुमुदिका कुम्भी कैटर्यकट्फलौ॥ ४०॥

तिलक, क्षुरक, श्रीमान् ये ३ तिलकवृक्ष के नाम हैं। पिचुल, झावुक ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ झाऊ के नाम हैं। श्रीपर्णिका, कुमुदिका, कुम्भी, कैटर्य, कैडर्य, कट्फल ये ५ कयफरा के नाम हैं। इनमें "पृश्निकायां च कुम्भी स्यात्पाटलौ कट्फलेपि चेति"(रन्तिदेव:)इस प्रमाण से 'कुम्भी' स्त्रीलिङ्ग है॥४०॥

पु. पु. स. पु.

लाल लोध क्रमुकः पट्टिकाख्यः स्यात्पट्टी लाक्षाप्रसादनः।

पु. पु. पु. पु. न.

शहतूत नूद (स्तु) यूपः क्रमुको ब्रह्मण्यो ब्रह्मदारु (च)॥ ४१॥

न. पु. पु. पु. पु.

कदम्ब तूलं (च) नीपप्रियककदम्बास्तु हलिप्रिये।

पु. पु. स. पु.स.न.

भिलावां वीरवृक्षोऽरुष्करोऽग्निमुखी भल्लातकी (त्रिषु)॥ ४२॥

क्रमुक, पट्टिकाख्य, पट्टी (अ) पट्टी, पट्टि, लाक्षाप्रसादन ये ४ पठानीलोध के नाम हैं। नूद—तूद, यूप, क्रमुक, ब्रह्मण्य, ब्रह्मदारु, तूल "पुंलिङ्गस्तु पिचौ क्लीबं स्याद्ब्रह्मदारुणीति" (रुद्र:) इस प्रमाण से 'तूल' पुंलिङ्ग भी है ये ६ अश्वत्थाकार, पार्श्वपिप्पल या शहतूत के नाम हैं। नीप, प्रियक, कदम्ब, हलिप्रिय ये ४ कदम्ब के नाम हैं। वीरवृक्ष, अरुष्कर, अग्निमुखी, भल्लातकी ये ४ भिलावां के नाम हैं इनमें 'भल्लातकी' तीनों लिङ्ग में रहता है॥ ४१। ४२॥

पु. पु. पु. पु.

गेंठी अमिली गर्दभाण्डे कन्दरालकपीतनसुपार्श्वकाः।

पु. स. स. स. पु.

विजयसार प्लक्षश्च तिन्तिडी चिञ्चाम्लिकाथो पीतसालके॥ ४३॥

---

२ पिचुः स्यात्तूलकर्पासयोरिति (धरणिः)॥

पु. पु. पु. पु. पु.
सँखुआ या **सर्जकासनबन्धूकपुष्पप्रियकजीवकाः ।**
पु. पु. पु. पु. पु.
शाल या कोरों **साले (तु) सर्जकार्ष्याश्वकर्णकाः सस्यसंवरः ॥ ४४ ॥**

गर्दभाण्ड, कन्दराल, कपीतन, सुपार्श्वक, प्लक्ष ये ५ गेढ़ी या पारसपीपल के नाम हैं । तिन्तिडी, तिन्तिडीका, चिञ्चा, अम्लिका, अम्लीका ये ३ अमिली के नाम हैं । पीतसालक, सर्जक, असन—आसन, अशन, बन्धूकपुष्प, प्रियक, जीवक ये ६ विजयसार के नाम हैं । साल—शाल, सर्ज, कार्ष्य—कार्श्य, अश्वकर्णक, सस्य-संवर, 'शस्यसम्बर' ये ५ सालवृक्ष या सँखुआ या कोरोंवृक्ष के नाम हैं ॥ ४३ । ४४ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
अर्जुन,खिन्नी **नदीसर्जो वीरतरुरिन्द्रद्रुः ककुभोऽर्जुनः ।**
पु.न. पु. स.
या खिरिणी **राजादनः फलाध्यक्षः क्षीरिकायामथ (द्वयोः) ॥४५॥**
पु.स. पु. पु. पु. पु.
गोंदी,या पांखी **इङ्गुदी तापसतरुर्भूर्जे चर्मिमृदुत्वचौ ।**
स. स. स. पु. पु.स.
भोजपत्र,सेमर **पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुःशाल्मलि (द्वयोः) ४६॥**

नदीसर्ज, वीरतरु, इन्द्रद्रु, ककुभ, अर्जुन ये ५ अर्जुन वृक्ष के नाम हैं। राजादन, फलाध्यक्ष, क्षीरिका ये ३ खिन्नी के नाम हैं । इंगुदी, तापसतरु ये २ गोंदी या पांखी या जियापोता के नाम हैं । इनमें इंगुदी दोनों में यानी स्त्रीलिङ्ग व पुंलिङ्ग में रहता है । भूर्ज, चर्मी, (न्) मृदुत्वच ये ३ भोजपत्र वृक्ष के नाम हैं और पिच्छिला, पूरणी, मोचा, स्थिरायुः, शाल्मली—शाल्मलि—शाल्मल ये ५ सेमर के नाम हैं इनमें शाल्मलि स्त्रीलिङ्ग व पुंलिङ्ग है ॥ ४५ । ४६ ॥

स. पु. पु. पु.
सेमर का गोंद **पिच्छा (तु) शाल्मलीवेष्टे रोचनः कूटशाल्मलिः ।**
पु. पु. पु. पु.
काला सेमर करंज या कंजा **चिरबिल्वो नक्तमालः करज (श्च) करञ्जके ॥ ४७ ॥**

पिच्छा, शाल्मलीवेष्ट[1] ये २ सेमर गोंद के नाम हैं । रोचन, कूटशाल्मलि ये २ काले सेमर या निन्दित सेमर के नाम हैं । चिरबिल्व, "चिरिबिल्व," नक्तमाल, "रक्तमाल" करज, करञ्जक ये ४ कञ्जा के नाम हैं ॥ ४७ ॥

---

१ " क्वाथः कषायो निर्यूषो निर्यासो वेष्टकस्तथा " (इति रभसः) ॥

पु. पु. पु. पु.

काँटेदार कंजा **प्रकीर्यः पूतिकरजः पूतीकः कलिमारकः ।**

पु. स. स.

कंजा के भेद **(करञ्जभेदाः) षड्ग्रन्थो मर्कट्यङ्गारवल्लरी ॥ ४८ ॥**

प्रकीर्य, पूतिकरज, पूतिकरञ्ज, पूतीकरज, पूतीकरञ्ज, पूतिक—पूतीक—कलिमारक, कलिकारक भी ये ४ कांटेदार कञ्जा के नाम हैं । षड्ग्रन्थ "षड्ग्रन्थातु वचायां स्त्री स्यात्करजान्तरे पुमान्" मर्कटी, "करञ्जभिच्छूकशिम्ब्योः पुंसि वानरलूतयोः" अङ्गारवल्लरी ये ३ कञ्जा के भेद के नाम हैं ॥ ४८ ॥

पु. पु. पु. पु.

लालकंजा **रोही रोहितकः प्लीहशत्रुर्दाडिमपुष्पकः ।**

पु.स. पु. पु. पु.

खैर या कत्था **गायत्री बालतनयः खदिरो दन्तधावनः ॥ ४९ ॥**

रोही (हिन्) रोहितक, 'रोहीतक' प्लीहशत्रु, दाडिमपुष्पक ये ४ लालकञ्जा या गुलेनार या रुहेड़ावृक्ष के नाम हैं और गायत्री, बालतनय, बालपत्र—बालदलक, खदिर, दन्तधावन ये ४ कत्था के नाम हैं। इनमें गायत्री ङीषन्त व इन्नन्त भी है ॥४९॥

पु. पु. पु.

दुर्गन्धवाला खैर **अरिमेदो विट्खदिरे कदरः (खदिरे सिते) ।**

पु. पु. पु.

सफ़ेद कत्था **सोमवल्को (ऽथ) व्याघ्रपुच्छगन्धर्वहस्तकौ ॥ ५० ॥**

पु. पु. पु. पु.

एरण्ड **एरण्ड उरुवूकश्च रुचकश्चित्रकश्च (सः) ।**

पु. पु. पु. पु. पु.

चञ्चुः पञ्चाङ्गुलो मण्डवर्धमानव्यडम्बकाः ॥ ५१ ॥

अरिमेद, विट्खदिर ये २ दुर्गन्धयुक्त कत्था के नाम हैं । सफ़ेद कत्था में कदर, सोमवल्क ये दोनों होते हैं ये २ सफ़ेद कत्था या खयरसार के नाम हैं । व्याघ्रपुच्छ, गन्धर्वहस्तक, एरण्ड, उरुवूक, उरुवुक, रुचक, रूवुक, रुबुक—रुवूक, चित्रक, चञ्चु, पञ्चाङ्गुल, मण्ड, "अमण्ड, आमण्ड," वर्धमान, व्यडम्बक और व्यडम्बन भी ये ११ एरण्ड (रेंड़) के नाम हैं ॥ ५० । ५१ ॥

पु. स. स. स.

छोटी शमी **(अल्पा शमी) शमीरः "स्या"च्छमी सक्तुफला शिवा ।**

पु. पु. पु. पु.

शमी या छौंकरा **पिण्डीतको मरुवकः श्वसनः करहाटकः ॥ ५२ ॥**

---

१ "खदिरो रक्तसारश्च गायत्री दन्तधावनः । कण्टकी बालपत्रश्च जिह्मशल्यः क्षितिक्षमः" ॥

पु. पु. पु. पु.

मयनफर शल्यश्च मदने शक्रपादपः पारिभद्रकः ।

पु.न. न. न. न.

देवदारु भद्रदारुद्रुकिलिमं पीतदारु (च) दारु (च) ॥ ५३ ॥

न. पु.न.

पूतिकाष्ठं च (सप्त स्यु) र्देवदारुण्यथ (द्वयोः) ।

छोटे आकारवाली शमी को 'शमीर' कहते हैं यह १ छोटी शमी का नाम है । शमी, सक्तुफला, शिवा ये ३ शमी के नाम हैं । पिण्डीतक, मरुवक, श्वसन, करहाटक, शल्य, मदन ये ६ मयनफल के नाम हैं । शक्रपादप, पारिभद्रक, भद्रदारु, द्रुकिलिम, पीतदारु, दारु, पूतिकाष्ठ ये सात "देवदारु" में होते हैं ये ८ देवदारु के नाम हैं ॥ ५२ । ५३ । १/२ ॥

पु.स. स. स. स. स.

पाढ़रि पाटलिः पाटलामोघा काचस्थाली फलेरुहा ॥ ५४ ॥

स. स. स. स.

कांकुनि कृष्णवृन्ता कुबेराक्षी श्यामा (तु) महिलाह्वया ।

स. स. स. स. स. स.

लता गोवन्दनी गुन्द्रा प्रियङ्गुः फलिनी फली ॥ ५५ ॥

स. स. स. पु.

विष्वक्सेना गन्धफली कारम्भा प्रियक (श्च सा)।

पाटलि, पाटली, पाटला, आमोघा, 'मोघा' काचस्थाली, काला, स्थाली, फलेरुहा, कृष्णवृन्ता, कुबेराक्षी ये ७ पाढ़रि के नाम हैं इनमें 'पाटलि' पुंलिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग दोनों में रहता है । श्यामा, महिलाह्वया, लता, गोवन्दनी, गोवन्दिनी, गुन्द्रा, प्रियङ्गु, फलिनी, फली, विष्वक्सेना, गन्धफली, कारम्भा, प्रियक ये १२ ककुनी के नाम हैं । इनमें 'प्रियक' पुंलिङ्ग में रहता है ॥ ५४ । ५५ । १/२ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

सरिवन मण्डूकपर्णपत्रोर्णनटकट्वङ्गटुण्टुकाः ॥ ५६ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

आंवला स्योनाकशुकनासर्क्षदीर्घवृन्तकुटन्नटाः ।

पु. पु. स. पु.स.न.

बहेड़ा शोणकश्चारलौ तिष्यफलात्वामलकी (त्रिषु) ॥ ५७॥

---

१ नित्यमामलके लक्ष्मीर्नित्यं हरितगोमये । नित्यं शङ्खे च पद्मे च नित्यं शुक्ले च वाससीति भगवद्वचनात् ॥

स. स. पु.
अमृता (च) वयस्था (च) 'त्रिलिङ्गस्तु' विभीतकः ।
पु. पु. पु. पु. पु.
नाक्षस्तुषः कर्षफलो भूतावासः कलिद्रुमः ॥ ५८ ॥

मण्डूकपर्णा, पत्रोर्णा, नट, कट्वङ्ग, टुण्टुक, स्योनाक, " श्योनाक—शोणाक, " शुकनास, ऋक्ष, दीर्घवृन्त, कुटन्नट, शोणाक 'शोनक' 'अरल—अरलु' और अरटु भी ये १२ स्योनाक (सरिवन) के नाम हैं । तिष्यफला, आमलकी, अमृता, वयस्था—वयःस्था, कायस्था भी ये ४ आँवला के नाम हैं इनमें "तिष्ये कलियुगे फलमस्याः सेवया इति वा" 'तिष्यफला' स्त्रीलिङ्ग है और "आमलकी, आमलकः, आमलकम्" तीनों लिङ्ग में रहता है । विभीतक, अक्ष, तुष, कर्षफल, भूतावास, कलिद्रुम ये ६ बहेड़ा के नाम हैं । इनमें "विभीतकः, विभीतकी, विभीतकम्" यह तीनों लिङ्ग में रहता है और 'अक्ष' पुंलिङ्ग है और "धान्यत्वचि तुषः पुंसि बिभीतकतरावपि" (इति रुद्रः) इस प्रमाण से 'तुष' भी पुंलिङ्ग है ॥ ५६ । ५८ ॥

स. स. स. स. स. स.
हड़ अभया त्वव्यथा पथ्या कायस्था पूतनामृता ।
स. स. स. स. स.
हरीतकी हैमवती चेतकी श्रेयसी शिवा ॥ ५९ ॥

अभया, अव्यथा, पथ्या, कायस्था, वयस्था—वयस्स्था—वयःस्था, पूतना, अमृता, हरीतकी, हैमवती, चेतकी, श्रयसी, शिवा ये ११ हरीतकी (हड़) के नाम हैं ॥ ५६ ॥

पु. पु. न. पु.
सरल पीतद्रुः सरलः पूतिकाष्ठं (चाथ) द्रुमोत्पलः ।
कठचम्पा पु. पु. पु. पु. पु.
बड़हल कर्णिकारः परिव्याधे लकुचो लिकुचो डहुः ॥ ६० ॥

पीतद्रु, सरल, पूतिकाष्ठ ये ३ सरला के नाम हैं । द्रुमोत्पल, कर्णिकार, परिव्याध ये ३ कठचम्पा के नाम हैं । इनमें "कर्णिकारः पुमानारग्वधद्रौ च द्रुमोत्पले" और "परिव्याधस्तु पुंसि स्याद्वेतसे च द्रुमोत्पले" इस मेदिनीकोषके प्रमाण से कर्णिकार, परिव्याध ये दोनों पुंलिङ्ग में रहते हैं । लकुच, लिकुच, डहु और 'अडहु' भी ये ३ बड़हर के नाम हैं ॥ ६० ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
कटहल पनसः कण्टकिफलो निचुलोहिज्जलोम्बुजः ।
समुद्रफल स. स. स. स.
कठूंबरि काकोदुम्बरिका फल्गुर्मलपूर्जघनेफला ॥ ६१ ॥

पनस, 'पनास' कण्टकिफल, कण्टकीफल, कण्टकफल ये २ कटहर के नाम हैं। निचुल, हिज्जल–इज्जल, अम्बुज ये ३ स्थलवेतस या समुद्रफल के नाम हैं और काकोदुम्बरिका, फल्गु, मलपू, या "मलयू" जघनेफला ये ४ कालेगूलर या कठूंबरि के नाम हैं ॥ ६१ ॥

पु. पु. पु. पु.

नींब **अरिष्टः सर्वतोभद्रहिङ्गुनिर्यासमालकाः ।**

पु. पु. स. न. स.

शीशम **पिचुमर्दश्च निम्बे(ऽथ) पिच्छिलागुरु शिंशपा ॥६२॥**

अरिष्ट, सर्वतोभद्र, हिङ्गुनिर्यास, मालक, पिचुमर्द, 'पिचुमन्द' निम्ब ये ६ नींबके नाम हैं। पिच्छिला, अगुरु, शिंशपा ये ३ सीसम के नाम हैं इनमें 'शिंशपा' स्त्रीलिङ्ग है और स्वामी के मत में " अगुरुशिंशपा " यह एकही नाम है सो रुद्रकोष के विरोध से ठीक नहीं समझना चाहिये ॥ ६२ ॥

स. स. पु. पु.

काला शीशम **कपिला भस्मगर्भा (सा) शिरीष(स्तु) कपीतनः ।**

सिरसा पु. पु. पु. पु.

चम्पा **भण्डिलो(ऽप्यथ) चाम्पेयश्चम्पके हेमपुष्पकः ॥ ६३ ॥**

कपिला, भस्मगर्भा ये २ काली शीशम के नाम हैं। वास्तव में कपिलादिक भी शिंशपा के सामान्य पर्याय हैं इसलिये पिच्छिला, अगुरु, शिंशपा, कपिला, भस्मगर्भा ये ५ नाम सीसम के हैं ऐसे अर्थ का होना योग्य है। शिरीष, कपीतन, भण्डिल, भण्डिर भी है ये ३ शिरीस (सिरसा) के नाम हैं। चाम्पेय, चम्पक, हेमपुष्पक ये ३ चम्पा के नाम हैं ॥ ६३ ॥

स. पु.

चम्पा की कली **(एतस्य कलिका) गन्धफली स्यादथ केसरे ।**

मौलसिरी पु. पु. पु. पु. पु.

अशोक

अनार **वकुलो वञ्जुलोऽशोके (समौ) करकदाडिमौ ॥ ६४ ॥**

इस चम्पा की कली को 'गन्धफली' कहते हैं यह १ चम्पा की कली का नाम है। केसर, केशर, वकुल ये[2] २ मौलसिरी (मवशली) के नाम हैं इनमें 'वकुल' अन्तःस्थादि है इसीसे मुकुटने (उच्यते वर्ण्यते कविभिः) ऐसा विग्रह दिखलाया है यहां (वबयोरेकत्वात्) इससे निर्वाह नहीं हो सक्ता है। वञ्जुल, अशोक ये २ अशोक के नाम हैं। करक, दाडिम ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २

१ न षट्पदो गन्धफलीमजिघ्रदिति संगच्छते ॥

२ मुकुटमते वकुलशब्दोऽन्तःस्थादिरन्येषां मते तु पवर्गादिरपि ॥

अनार के नाम हैं इनमें "दाडिमस्तु त्रिलिङ्गः स्यादेलायां करके त्रिष्विति" (मेदिनी) इस प्रमाण से त्रिलिङ्ग है और "दाडिम्बसारपिण्डीरस्वाद्वम्लशुकवल्लभा" (इति रभसः) इस प्रमाण से "दाडिम्ब" भी है ॥ ६४ ॥

पु. पु. पु. पु.
नागकेसर चाम्पेयः केसरो नागकेसरः काञ्चनाह्वयः ।
स. स. स. स. स.
जाही जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका ॥ ६५ ॥

चाम्पेय, केसर—केशर, नागकेसर—नागकेशर, काञ्चनाह्वय ये ४ नागकेसर के नाम हैं । जया, जयन्ती, तर्कारी, नादेयी, वैजयन्तिका ये ५ जाही के नाम हैं अथवा अरणी के नाम कहाते हैं ॥ ६५ ॥

न. पु. स. स.
अरणी श्रीपर्णमग्निमन्थः 'स्या'त्कणिका गणिकारिका ।
पु. पु. पु. पु. स.
कुरैया जयो(ऽथ)कुटजः शक्रो वत्सको गिरिमल्लिका ॥ ६६ ॥

श्रीपर्ण, अग्निमन्थ, कणिका, गणिकारिका, जय ये ५ जयपर्ण या अरणी के नाम हैं इनमें "जया जयन्ती तिथिभित्पथ्योमा तत्सखीषु च । अग्निमन्थे ना जयन्ते विजये च युधिष्ठिर" (इति मेदिनी) इस प्रमाण से 'जय' पुंलिङ्ग में रहता है । कुटज, कौटज, कोटी, शक्र, वत्सक, गिरिमल्लिका ये ४ कुरैया के नाम हैं ॥ ६६ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
इन्द्रयव (एतस्यैव) कलिङ्गेन्द्रयवभद्रयवं (फले) ।
पु. पु. पु. पु.
करौंदा कृष्णपाकफलाविग्नसुषेणाः (करमर्दके) ॥ ६७ ॥

इस कुरैया केही फलमें कलिङ्ग, इन्द्रयव, भद्रयव ये तीनों होते हैं ये ३ इन्द्रयव के नाम हैं इनमें "कलिङ्गेन्द्रयवः पुमानित्यमरमालादर्शनात्" इस प्रमाण से कलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग भी है और इन्द्रयव भी पुंलिङ्ग है यानी ये तीनों लिङ्ग में होते हैं । कृष्णपाकफल, "कृष्णपाक, पाकफल, कृष्णफल," आविग्न, 'अविग्न, सुषेण, करमर्दक ये ४ करौंदा के नाम हैं ॥ ६७ ॥

पु. पु. पु. पु.
तमाल कालस्कन्धस्तमालः'स्या' त्तापिच्छो(ऽप्यथ)सिन्दुकः ।
पु. पु. स. स.
म्योंकी सिन्दुवारेन्द्रसुरसौ निर्गुण्डीन्द्राणिके (त्यपि) ॥ ६८ ॥

१"सिन्दुवारः श्वेतपुष्पः सिन्दुकः सिन्धुवारितः । नीलपुष्पः शतिसहो निर्गुण्डी नीलसिन्धुकः"॥१॥

कालस्कन्ध, तमाल, तापिच्छ, "तापिञ्ज" भी है ये ३ तमाल वृक्ष के नाम है। सिन्दुक, सिन्धुक, सिन्दुवार, सिन्धुवार, इन्द्रसुरस, 'इन्द्रसुरिस' निर्गुण्डी, निर्गुण्ठी भी है। इन्द्राणिका-'इन्द्राणी' ये ५ म्योड़ी के नाम हैं इनमें "इन्द्राणी करणे स्त्रीणां पौलोमीसिन्दुवारयोरिति" (मेदिनी) इस कोष के प्रमाण से 'इन्द्राणिका' स्त्रीलिङ्ग है ॥ ६८ ॥

स. स. स. पु. पु.

बन्दाल,हाथी- **वेणी खरागरी देवताडो जीमूत (इत्यपि)।**

स. स. न. स.

शुण्डा या घु- **श्रीहस्तिनी (तु) भूरुण्डी तृणशून्यं (तु) मल्लिका॥६९॥**

इयां बेला स. पु. स.

जंगली बेला **भूपदी शीतभीरुश्च (सैवा)ऽऽस्फोता (वनोद्भवा)।**

वेणी, खरा, गरी, खरागरी, 'गरागरी' देवताड, जीमूत ये ५ बन्दाल वृक्ष या देवताली के नाम हैं अथवा गुजराती गोड़ी के नाम हैं। श्रीहस्तिनी, भूरुण्डी ये २ घुइयां या हाथीशुण्डा के नाम हैं। तृणशून्य, 'तृणशूल्य' मल्लिका, भूपदी, शीतभीरु, 'शतभीरु' ये ४ बेला के नाम हैं और यदि वही मल्लिका वन में उपजी हो तो उसे 'आस्फोता' कहते हैं "आस्फोता विष्णुक्रान्तायां वनमल्ल्यर्कपर्णयोरिति" (रभसः) यह १ जंगली बेला या मोगरा का नाम है ॥ ६९। $\frac{१}{२}$ ॥

स. स. स. स.

स्याह फूल वाली नेवारी **शेफालिका[1] (तु) सुवहा निर्गुण्डी नीलिका (च सा)॥७०॥**

स. स. स.

सफ़ेद फूल वाली नेवारी **(सितासौ) श्वेतसुरसाभूतवेश्यथ मागधी।**

जूही पीले फूल वाली जूही स. स. स.

गणिका यूथिकाम्बष्ठा (सा पीता) हेमपुष्पिका ॥७१॥

शेफालिका, 'शेफाली' शेफालि, शीफालिका, सुवहा, निर्गुण्डी, नीलिका ये ४ कालेफूल की नेवारी के नाम हैं। यदि यही नेवारी सफ़ेद फूलवाली हो तो श्वेतसुरसा व भूतवेशी कहाती है ये २ सफ़ेद फूल की नेवारी के नाम हैं। मागधी, गणिका, यूथिका, अम्बष्ठा ये ४ जूही के नाम हैं और यदि वह जूही पीले फूलवाली हो तो उसे 'हेमपुष्पिका' कहते हैं यह १ पीले फूल की जूही का नाम है ॥ ७० । ७१ ॥

---

१ कथमितरथाशेफालीषु स्खलत्कुसुमास्वपीति प्रयोगदर्शनात् ॥

वासन्तीलता या बेल मालती — पु. अतिमुक्तः पु. पुण्ड्रकः "स्या" स. द्वासन्ती स. माधवी स. लता ।
या चमेली, नेवारी या वर्षाकी बेल — स. सुमना स. मालती स. जातिः स. सप्तला स. नवमालिका ॥ ७२ ॥

अतिमुक्त, पुण्ड्रक, वासन्ती, माधवी, लता, माधवीलता ये ५ वासन्तीलता या बेल के नाम हैं । सुमनाः (स्) सुमना, मालती, जाति, जाती ये ३ मालती या चमेली के नाम हैं इनमें सुमना यह सान्त है और "सुमनायाश्च पत्रेण" इस सुश्रुत के प्रमाण से टाबन्त भी पाया जाता है और सप्तला, नवमालिका ये २ प्रशंसनीयमाला, नेवारी, वासन्ती या वर्षा की बेल के नाम हैं ॥ ७२ ॥

कुन्द, दुपहरिया — पु.न. माघ्यं पु.न. कुन्दं पु. रक्तक (स्तु) पु. बन्धूको पु. बन्धुजीवकः ।
घीकुआरि कटसरैया — स. सहा स. कुमारी स. तरणि पु. रम्लान (स्तु) स. महासहा ॥ ७३ ॥

माघ्य, कुन्द ये २ कुन्द के नाम हैं और रत्नकोष तथा मेदिनीकोष के प्रमाण से पुंलिङ्ग भी हैं । रक्तक, बन्धूक, बधुक, बन्धुजीवक ये ३ दुपहरिया के नाम हैं । सहा, कुमारी, तरणि ये ३ घीकुवारि के नाम हैं । अम्लान, महासहा ये २ सामान्य कटसरैया के नाम हैं इनमें "अम्लानो महासहायां ना वाच्यलिङ्गस्तु निर्मले" (इति मेदिनी) इस कोष के प्रमाण से 'अम्लान' पुंलिङ्ग है और "महासहामाषपर्याम्लानेपि च योषिति" इस मेदिनीकोषके प्रमाण से 'महासहा' स्त्रीलिङ्ग है ॥ ७३ ॥

लालफूलवाली पीलेफूलवाली — (तत्र शोणे) कुरवक (स्तत्र पीते) कुरुण्टकः ।
कालेफूलवाली या झिण्टी — (नीला झिण्टी द्वयो) पु.स. र्बाणा स. दासी पु. चार्तगलश्च (सा) ७४ ॥

यदि वह कटसरैया लाल हो तो उसे 'कुरवक' या 'कुरुवक' कहते हैं यह १ लालकटसरैया का नाम है और यदि वह कटसरैया पीले फूलवाली हो तो उसे 'कुरुण्टक' या 'कुरण्टक' या 'कुरण्टी' कहते हैं यह १ पीली कटसरैया या पियावासा का नाम है । यदि काले फूलवाली झिण्टी हो तो उसे बाणा, दासी और 'आर्तगल' कहते हैं ये ३ नीली झिण्टी या पियावासा के नाम हैं इनमें बाणा स्त्रीलिङ्ग व पुंलिङ्ग है ॥ ७४ ॥

पियावासामात्र या झिण्टीमात्र — पु. सैरीयक (स्तु) स. झिण्टी (स्यात्तस्मि) पु. न्कुरवको (ऽरुणे) ।
लालफूलवाली बैंगनी सोनहरी — (पीता) पु. कुरण्टको (झिण्टी) तस्मिन् पु स. सहचरी (द्वयोः) ७५ ॥

सैरीयक, सैरेयक, झिण्टी ये २ झिण्टीमात्र के नाम हैं। यदि वह झिण्टी लाल फूलवाली हो तो उसे 'कुरवक' कहते हैं यह १ लालझिण्टी का नाम है। यदि पीली (सोनहरी) झिण्टी हो तो उसे 'कुरण्टक' कहते हैं और उसी कुरण्टक में सहचरी, सहाचरी दोनों स्त्रीलिङ्ग व पुंलिङ्ग में रहते हैं ये २ पीली झिण्टी के नाम हैं इनमें "सैरीयकः सहचरः सैरेयश्च सहाचरः। पीतो रक्तोथ नीलश्च कुसुमैस्तं विभावयेत्। पीतः कुरण्टको ज्ञेयो रक्तः कुरवकः स्मृतः। नील आर्तगलो दासी बाणाओदनपाक्यपीति" (मेदिनी) इस प्रमाण से सैरीयक पुंलिङ्ग है और सहचरी दोनों लिङ्गों में बना रहता है॥ ७५॥

न. न. न.
गुड़हर **ओड्रपुष्पं जवापुष्पं वज्रपुष्पं (तिलस्य यत्)।**
तिलपुष्प पु. पु. पु. पु.
कनेर **प्रतिहासशतप्रासचण्डातहयमारकाः॥ ७६॥**
पु. पु. पु. पु.
करील **करवीरे करीरे (तु) क्रकरग्रन्थिला (वुभौ)।**

ओड्रपुष्प, जवापुष्प, 'जपापुष्प' ये २ गुड़हर फूल के नाम हैं और जो तिल का फूल है उसे 'वज्रपुष्प' कहते हैं यह १ तिल के फूलका नाम है। प्रतिहास, प्रतीहास, शतप्रास, चण्डात, हयमारक, करवीर ये ५ कनेर (कँदइल) के नाम हैं और करीर, क्रकर, ग्रन्थिल ये ३ करील के नाम हैं इनमें "वंशांकुरोकरीरोऽस्त्री वृक्षभिद्घटयोः पुमान्। करीरीचीरिकायान्तु दन्तमूले च दन्तिनामिति" (मेदिनी) इस प्रमाण से 'करीर' पुंलिङ्ग है॥ ७६। १/२॥

पु. पु. पु. पु. पु.
धतूरा **उन्मत्तः कितवो धूर्तो धत्तूरः कनकाह्वयः॥ ७७॥**
पु. पु. पु.
धतूरा का फल **मातुलो मदनश्चा (स्य फले) मातुलपुत्रकः।**

उन्मत्त, कितव, धूर्त, धुस्तूर, धुस्तुर, धूस्तूर, धत्तूर, कनक, कनकाह्वय, मातुल, मदन ये ७ धतूरा के नाम हैं और इसके फल को "मातुलपुत्रक" कहते हैं यह १ धतूरा के फल का नाम है॥ ७७। १/२॥

पु. पु. पु. पु.
बिजौरा नींबू **फलपूरो बीजपूरो रुचको मातुलुङ्गके[1]॥ ७८॥**
पु. पु. पु. पु.
मरुआयादवना **समीरणो मरुवकः प्रस्थपुष्पः फणिज्जकः।**
पु. पु. पु. पु.
बबई या पर्णास **जंबीरो (प्यथ) पर्णासे कठिंजर[illegible]ठेरकौ॥ ७९॥**

---

१ सौवर्चलं मातुलुङ्गं शिला चन्दनपेषणी। ग्रीवाभरणकं चैषु चतुर्षु रुचकं स्मृतम्॥ १॥

फलपूर, बीजपूर, रुचक, मातुलुङ्गक ये ४ बिजौरा नींबू के नाम हैं "फलपूरो बीजपूरः केशरी बीजपूरकः। बीजकः केशराम्लश्च मातुलुङ्गश्च पूरकः" इस प्रमाण से स्वामी के मत में चार नाम हैं। समीरण, मरुवक, प्रस्थपुष्प, फणिज्झक—फणिज्जक, जंबीर—जम्बीर, 'जम्भीर' ये ५ दवना या मरुआ के नाम हैं। पर्णास, कठिञ्जर, कुठेरक ये ३ पर्णास या बवई के नाम हैं॥ ७८। ७६॥

पु. पु. पु. पु.
उजली बवई चीता (सिते)ऽर्जको (ऽत्र) पाठी (तु) चित्रको वह्निसंज्ञकः।
पु. पु. पु. पु. पु.
मदार अर्काह्ववसुकास्फोतगणरूपविकीरणाः॥ ८०॥
पु. पु. पु. पु.
सफ़ेद मदार मन्दारश्चार्कपर्णो (ऽत्रशुक्ले)ऽलर्कप्रतापसौ।

यदि यह 'पर्णास' सफ़ेद हो तो उसे 'अर्जक' कहते हैं यह १ उजली बवई या सफ़ेद पर्णास का नाम है। पाठी, चित्रक, वह्निसंज्ञक ये ३ चीता के नाम हैं। अर्काह्व, वसुक, 'वसूक' आस्फोत, 'आस्फोट' गणरूप, विकीरण, 'विकिरण' मन्दार, अर्कपर्ण ये ७ मदार या आक के नाम हैं और अलर्क, प्रतापस ये २ सफ़ेद आक के नाम हैं॥ ८०। ½॥

स. पु. पु. पु. पु.
बक या गूमा शिवमल्ली पाशुपत एकाष्ठीलो बुको वसुः॥ ८१॥
स. स. स. स.
बांदा बन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिके (त्यपि)।

शिवमल्ली, पाशुपत, एकाष्ठील, बुक, 'बक' वसु ये ५ बकपुष्प या गूमा के नाम हैं। बन्दा, वृक्षादनी, वृक्षरुहा, जीवन्तिका ये ४ वृक्ष के ऊपर उपजी लताविशेष या बांदा के नाम हैं इनमें "बन्दा लतान्तरे स्मृता। भिक्षुक्यामपि बन्धां चेति स्पर्शादौ मेदिनी" इस कोष के प्रमाण से 'वन्दा' स्पर्शादि भी है॥ ८१। ½॥

स. स. स. स. स.
नींब गिलोय वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची तन्त्रिकामृता॥ ८२॥
स. स. स. स.
या गुडच जीवन्तिका सोमवल्ली विशल्या मधुपर्ण्यपि।

वत्सादनी, छिन्नरुहा, गुडूची, 'गुडुची' तन्त्रिका, अमृता, जीवन्तिका, सोमवल्ली, विशल्या, मधुपर्णी ये ६ गुडुच या गिलोय के नाम हैं॥ ८२। ½॥

स. स. स. स. स. स.

मूर्वा,मुहार **मूर्वा देवी मधुरसा मोरटा तेजनी स्रवा ॥ ८३ ॥**

स. स. स. स.

या चिनार **मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्य(पि) ।**

मूर्वा, देवी, मधुरसा, मोरटा, तेजनी, स्रवा, 'स्रुवा' मधूलिका, मधुश्रेणी, गोकर्णी, पीलुपर्णी ये १० मूर्वा या धनुष की उपयोगी लता विशेष या चिनार या मुहार के नाम हैं ॥ ८३ । १/२ ॥

स. स. स. स. स. स.

पाढ़ा या **पाठाम्बष्ठा विद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी रसा ॥ ८४ ॥**

स. स. स. स.

पाढ़रि **एकाष्ठीला पापचेली प्राचीना वनतिक्तिका ।**

पाठा, अम्बष्ठा, विद्धकर्णी, प्राचीना, अविद्धकर्णी, स्थापनी, श्रेयसी, रसा, एकाष्ठीला, पापचेली, वनतिक्तिका ये १० विद्धकर्णी, पहाड़मूल, पाठा (पाढ़रि) के नाम हैं ॥ ८४ । १/२ ॥

स. स. स. स.

कुटकी **कटुः कटंवराशोकरोहिणी कटुरोहिणी ॥ ८५ ॥**

स. स. स. स.

मत्स्यपित्ता कृष्णभेदी चक्राङ्गी शकुलादनी ।

कटु, कटंवरा, "कटम्वरा—कटम्भरा" अशोकरोहिणी, 'अशोक' कटुरोहिणी), मत्स्यपित्ता, कृष्णभेदी, चक्राङ्गी, शकुलादनी ये ८ कुटकी के नाम हैं ॥ ८५ । १/२ ॥

स. स. स. स. स.

कयवांच **आत्मगुप्ता जडाऽव्यण्डा कण्डूरा प्रावृषायणी ॥ ८६ ॥**

स. स. स. स.

ऋष्यप्रोक्ता शूकशिम्बिः कपिकच्छूश्च मर्कटी ।

आत्मगुप्ता, जडा, 'अजहा' 'अव्यण्डा-'अध्यण्डा' कण्डूरा, कण्डुरा, प्रावृषायणी, ऋष्यप्रोक्ता, शूकशिम्बि, 'शूकशिम्बा' कपिकच्छू, 'कपिकच्छु' मर्कटी ये ९ कयवांच के नाम हैं ॥ ८६ । १/२ ॥

स. स. स. स. स. स.

मूसरि या **चित्रोपचित्रान्यग्रोधी द्रवन्ती शंवरी वृषा ॥ ८७ ॥**

स. स. स. स.

मूसाकर्णी **प्रत्यक्श्रेणी सुतश्रेणी रण्डामूषिकपर्ण्यपि ।**

चित्रा, उपचित्रा, न्यग्रोधी, द्रवन्ती, शंवरी, 'संवरी' वृषा, प्रत्यक्श्रेणी, सुतश्रेणी, रण्डा, चण्डा, मूषिकपर्णी अपिशब्द से 'आखुपर्णिका' भी है ये १० मूसाकर्णी या मूसरी के नाम हैं ॥ ८७ । १/२ ॥

अपामार्ग चिचिड़ा या आँधीझाड़ा
अपामार्गःशैखरिको धामार्गवमयूरकौ ॥ ८८ ॥
प्रत्यक्पर्णी कीशपर्णी किणिही खरमञ्जरिः।

अपामार्ग, शैखरिक, 'शैखरेय' धामार्गव, 'अधामार्गव,' मयूरक, प्रत्यक्पर्णी, 'प्रत्यक्पुष्पी' कपिपर्णी, कीशपर्णी, केशपर्णी, किणिही, खरमञ्जरि, खरमञ्जरी ये ८ अपामार्ग या चिचिड़ा, आँधीझाड़ या लटजीरा के नाम हैं ॥ ८८ । १/२ ॥

स. स. स. स. स.
भँगरा या
हञ्जिका ब्राह्मणी पद्मा भार्गी ब्राह्मणयष्टिका: ॥ ८९ ॥
स. पु. पु. पु.
भँगरैया
अङ्गारवल्ली वालेयशाकवर्वरवर्धकाः।

हञ्जिका, 'फञ्जिका,' ब्राह्मणी, पद्मा, भार्गी ब्राह्मणयष्टिका, अङ्गारवल्ली, वालेय, वालेयशाक, वर्वर, वर्धक ये ९ भारङ्गी के नाम हैं ॥ ८९ । १/२ ॥

स. स. स. स. स.
मंजीठ
मञ्जिष्ठा विकसाजिङ्गी समङ्गा कालमेशिका ॥ ९० ॥
स. स. स. स.
मण्डूकपर्णी भण्डीरी भण्डी योजनवल्ल्यपि।

मञ्जिष्ठा, विकसा, "विकषा," जिङ्गी, समङ्गा, कालमेशिका, "कालमेषिका," मण्डूकपर्णी, भण्डीरी, भाण्डीरी, भण्डीरिका, भण्डी, योजनवल्ली और 'योजनपर्णी' भी है ये ९ मंजीठ के नाम हैं ॥ ९० । १/२ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
यवासा या
यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ॥ ९१ ॥
पु. पु. स. स. स.
धमासा
रोदनी कच्छुरानन्ता समुद्रान्ता दुरालभा।

यास, यवास, 'पासः,अपवास' दुःस्पर्श, "धन्वयास, धन्वयवास, धनुर्यास" कुनाशक, रोदनी, 'चोदनी,' कच्छुरा, 'कच्छूरा,' अनन्ता, समुद्रान्ता, दुरालभा ये १० यवासा या धमासा के नाम हैं ॥ ९१ । १/२ ॥

स. स. स. स.
पिठवन
पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी चित्रपर्ण्यङ्घ्रिपर्णिका ॥ ९२ ॥
स. स. स. स. स.
क्रोष्टुविन्ना सिंहपुच्छी कलशिर्धावनिर्गुहा।

पृश्निपर्णी, 'पृष्णिपर्णी' पृथक्पर्णी, चित्रपर्णी, अङ्घ्रिपर्णिका 'अङ्घ्रिवल्लिका, क्रोष्टुविन्ना, सिंहपुच्छी, कलशि, 'कलशी,' 'कलसि,' धावनि, धावनी, गुहा ये ९ सिंहपुच्छी या पिठवन के नाम हैं ॥ ९२ । १/२ ॥

स. स. स. स. स.
भटकटैया निदिग्धिकास्पृशीव्याघ्री बृहतीकण्टकारिका ॥ ९३ ॥
स. स. स. स. स.
प्रचोदनी कुली क्षुद्रा दुःस्पर्शा राष्ट्रिकेत्यपि ।

निदिग्धिका, स्पृशी, व्याघ्री, बृहती, कण्टकारिका, प्रचोदनी, कुली, क्षुद्रा, दुःस्पर्शा, राष्ट्रिका ये १० कण्टकारी (भटकटैया) के नाम हैं ॥ ९३ । १/२ ॥

स. १ स. स. स. स.
नील नीली काला क्लीतकिका ग्रामीणा मधुपर्णिका ॥ ९४ ॥
स. स. स. स. स. स.
रञ्जनी श्रीफली तुत्था द्रोणी दोला (च) नीलिनी ।

नीली, काला, क्लीतकिका, ग्रामीणा, मधुपर्णिका, रञ्जनी, श्रीफली, तुत्था, द्रोणी, "तूणी, तूली", दोला, "मेला" नीलिनी ये ११ नील यानी वस्त्र आदि के रंगने के लिये काले वर्ण के नाम हैं ॥ ९४ । १/२ ॥

पु. पु. स. स. स.
बकुची अवल्गुजः सोमराजी सुवल्लिः सोमवल्लिका ॥ ९५ ॥
स. स. स. स.
कालमेषी कृष्णफला वाकूची पूतिफल्यपि ।

अवल्गुज, सोमराजी (इन्) वा (जी) सुवल्लि, सोमवल्लिका, कालमेषी, "कालमेशी" कृष्णफला, वाकूची, वाकुची, " वागुजी " पूतिफली ये ८ बकुची के नाम हैं ॥ ९५ । १/२ ॥

स. स. स. स. स. स.
गजपीपरि कृष्णोपकुल्यावैदेही मागधी चपला कणा ॥ ९६ ॥
स. स. स. स. स.
उषणा पिप्पली शौण्डी कोला (थ) करिपिप्पली ।
स. स. स.
छोटी पीपरि कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वसिरः (पुमान्) ॥ ९७ ॥

कृष्णा, उपकुल्या, वैदेही, मागधी, चपला, कणा, उषणा, ऊषणा, पिप्पली, 'पिप्पलि' शौण्डी, कोला ये १० पीपली (पीपरि) के नाम हैं । करिपिप्पली, कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रेयसी, वसिर, वशिर ये ५ गजपीपरि के नाम हैं इनमें वशिर पुंलिङ्ग में रहता है ॥ ९६ । ९७ ॥

---

१ नीलादौषधाविति ङीष् ॥

न. १ न. स. स. स.
चव्य या चव्यं (तु) चविकं काकचिञ्चागुञ्जे (तु) कृष्णला ।
स. स. पु.स. पु.
पीपरि की ल- पलंकषा त्विक्षुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टकः ॥ ९८ ॥
कड़ी घुंघुची पु. पु. पु.
गोखुरू गोकण्टको गोक्षुरको वनशृङ्गाट (इत्यपि) ।

चव्य, 'चव्या' चविक, 'चविका' ये २ पीपरि की लकड़ी या चाव के नाम हैं । काकचिञ्चा, 'काकचिञ्ची' काकचिञ्चि, गुञ्जा, कृष्णला ये ३ लाल या घुंघुची के नाम हैं । पलंकषा, इक्षुगन्धा, श्वदंष्ट्रा, स्वादुकण्टक, गोकण्टक, गोक्षुरक, वनशृङ्गाट ये ७ गोखुरू के नाम हैं ॥ ९८ । ½ ॥

स. स. स. स. स. स.
अतीस विश्वा विषा प्रतिविषातिविषोपविषारुणा ॥ ९९ ॥
स. न. स. स.
दुधिया शृङ्गी महौषधं (चाथ) क्षीरावी दुग्धिका (समे) ।

विश्वा, विषा, प्रतिविषा, अतिविषा, उपविषा, अरुणा, शृङ्गी, महौषध ये ८ अतीस के नाम हैं इनमें "महौषधन्तु शुण्ठ्यां स्याद्विषायां लशुनेपि च" इस मेदिनीकोष के प्रमाण से "महौषध" शब्द नपुंसक में रहता है । क्षीरावी, दुग्धिका ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ दूधी या दुधिया के नाम हैं ॥ ९९ । ½ ॥

स. स. स. स. स.
शतावरि शतमूली बहुसुताभीरुरिन्दीवरी वरी ॥ १०० ॥
स. स. स. स.
दारुहल्दी ऋष्यप्रोक्ताभीरुपत्रीनारायण्यः शतावरी ।
स. पु. पु. पु.
अहेरु (रथ) पीतद्रुकालेयकहरिद्रवः ॥ १०१ ॥
स. स. स. स.
दार्वी पचंपचा दारुहरिद्रा पर्जनी (त्यपि) ।

शतमूली, बहुसुता, अभीरु, इन्दीवरी, वरी, ऋष्यप्रोक्ता, अभीरुपत्री, नारायणी, शतावरी, अहेरु ये १० शतावरी के नाम हैं । पीतद्रु, कालेयक, "कालीयक" हरिद्रु, दार्वी, पचंपचा, "पचंवचा" दारुहरिद्रा, पर्जनी ये ७ दारुहल्दी के नाम हैं ॥ १०० । १०१ । ½ ॥

---

१ केचित्तु पूर्वान्वयमाहुः, यदाह चन्द्रनन्दनः– "चव्या कोलाथ चविका श्रेयसी गजपिप्पली । च्यवना कोलवल्ली तु चव्यं कुञ्जरापिप्पली" अत्र पक्षे तुस्थाने चः पाठ्यः ॥

स. स. स. स. स.
खुरासानीवच **वचोग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका ॥ १०२ ॥**

स. स. स. स.
सफ़ेदवच **(शुक्ला) हैमवतीवैद्यमातृसिंह्यौ(तु) वाशिका।**

पु. पु. पु. पु. पु.
रूसा **वृषोटरूषः सिंहास्यो वासको वाजिदन्तकः ॥ १०३ ॥**

वचा, उग्रगन्धा, षड्ग्रन्था, गोलोमी, शतपर्विका ये ५ बच या खुरासानी बच के नाम हैं । यदि सफ़ेद बच हो तो उसे "हैमवती" कहते हैं यह १ उजली बच का नाम है । वैद्यमाता, सिंही, वाशिका, वासिका, "वाशा, वासा" वृष, अटरूष "अटरुष" सिंहास्य, वासक, वाशक, वाजिदन्तक ये ८ अडूसा (रूसा) के नाम हैं ॥ १०२ । १०३ ॥

स. स. स. स.
विष्णुकान्ता **आस्फोता गिरिकर्णी "स्या" द्विष्णुक्रान्तापराजिता।**

स. पु. पु. पु. पु.
तालमखाना **इक्षुगन्धा(तु)काण्डेक्षुकोकिलाक्षेक्षुरक्षुराः ॥ १०४ ॥**

आस्फोता, "आरफोटा" गिरिकर्णी, विष्णुक्रान्ता, अपराजिता ये ४ अपराजिता या विष्णुक्रान्ता के नाम हैं । इक्षुगन्धा, काण्डेक्षु, कोकिलाक्ष, इक्षुर, क्षुर ये ५ तालमखाना के नाम हैं ॥ १०४ ॥

पु. पु. स. स. स.
सौंफ **शालेयः 'स्या'च्छीतशिवश्छत्रा मधुरिका मिसिः।**

स. पु. पु. स. स. स.
सेहुँड **मिश्रेया(प्यथ)सीहुण्डो वज्रद्रुः स्नुक्स्नुहीगुडा ॥१०५॥**

स. पु.न. स. स.
बायबिडङ्ग **समन्तदुग्धा(थो)वेल्लममोघा चित्रतण्डुला।**

पु. पु. पु.न.
तण्डुलश्च कृमिघ्नश्च विडङ्गं(पुंनपुंसकम्) ॥ १०६ ॥

शालेय, "सालेय" शीतशिव, छत्रा, मधुरिका, मिशी, "मिशि–मिसी–मिसि" मिश्रेया ये ६ सौंफ के नाम हैं। सीहुण्ड, "सिहुण्ड–शीहुण्ड–शिहुण्ड" वज्रद्रु, वज्र, स्नुक्, स्नुही "स्नुहा" गुडा, "गुड" समन्तदुग्धा ये ६ सेहुँड के नाम हैं । वेल्ल, अमोघा, "मोघा" चित्रतण्डुला, तण्डुल, "तन्तुल" कृमिघ्न, विडंग ये ६ विडंग या बायबिडङ्ग के नाम हैं इनमें "बिडङ्गोऽस्त्रियाम्भिद्धे स्यात्कृमिघ्ने पुंनपुंसकम्" इस मेदिनीकोषके प्रमाण से विडङ्ग पुंलिङ्ग व नपुंसक में रहता है ॥ १०५ । १०६ ॥

स. पु. स. स.

बरिआरा सनई बला वाट्यालको घण्टारवा (तु) शणपुष्पिका।

स. स. स. स. स.

दाख मृद्वीका गोस्तनी द्राक्षा स्वाद्वी मधुरसेति (च) ॥१०७॥

बला, वाट्यालक ये २ बरियारा के नाम हैं। घण्टारवा, शणपुष्पिका ये २ सनई के नाम हैं यानी शणशब्द उसके पुष्पों की समता में लाक्षणिक है। मृद्वीका, गोस्तनी, "गोस्तना" द्राक्षा, स्वाद्वी, मधुरसा ये ५ दाख या मुनक्का के नाम हैं ॥ १०७॥

स. स. स. स. स.

निसोत या त्रिधारा सर्वानुभूतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिवृत्।

स. स. स. स. स.

त्रिभण्डीरोचनीश्यामापालिन्द्यौ (तु) सुषेणिका १०८॥

स. स. स. स.

कालानिसोत कालामसूरविदलार्धचन्द्रा कालमेषिका।

सर्वानुभूति, सरला, "सरणा, सवहा, सुवहा, सरसा" त्रिपुटा, त्रिपुटी, त्रिवृता, त्रिवृत्, त्रिभण्डी, रोचनी, "रेचनी" ये ७ सफ़ेद त्रिधारा या निसोथ या उपविषादि के नाम हैं। श्यामा, पालिन्दी, "पालिन्धी" सुषेणिका, काला, मसूरविदला, अर्धचन्द्रा, कालमेषिका ये ७ काले त्रिधारा या काले निसोथ के नाम हैं ॥ १०८ । ई ॥

न. न. स. स.

मुलेठी मधुकं क्लीतकं यष्टिमधुका मधुयष्टिका ॥ १०९ ॥

स. स. स. स.

काला गंगा फल विदारी क्षीरशुक्लेक्षुगन्धा क्रोष्ट्री (च या सिता)।

स. स. स.

उजला गंगा फल (अन्या) क्षीरविदारी 'स्या'न्महाश्वेतर्क्षगन्धिका ११०॥

मधुक, क्लीतक, यष्टिमधुका, यष्टीमधुका, यष्टी, यष्टिमधुक, यष्टीमधुक, मधुयष्टिका ये ४ जेठी मधु या मुलेठी के नाम हैं। विदारी, क्षीरशुक्ला, इक्षुगन्धा ये ३ सफ़ेद-भूमि कुम्हड़ा या कोहड़ा या गंगाफल के नाम हैं। क्रोष्ट्री, क्षीरविदारी, महाश्वेता, ऋक्षगन्धिका ये ४ कालेभूमि कुम्हड़ा के नाम हैं ॥ १०९ । ११० ॥

स. स. स. स.

जलपीपरि लाङ्गली शारदी तोयपिप्पली शकुलादनी।

स. स. पु. पु. पु.

अजमोद या मोरशिखा खराश्वा कारवी दीप्यो मयूरो लोचमस्तकः ॥ १११ ॥

---

१ एवं च विदार्यादित्रयं शुक्लवाचकम्। क्रोष्ट्र्यादिचतुष्टयं कृष्णवाचकमिति मन्तव्यम् ॥

लाङ्गली, शारदी, तोयपिप्पली, शकुलादनी ये ४ जलपीपरि या शाकभेद के नाम हैं। खराश्वा, कारवी, दीप्य, "दीपक" मयूर, लोचमस्तक "लोचमर्कट" ये ५ अजमोदा या मयूरशिखा के नाम हैं ॥ १११ ॥

स. स. स. स. स.

काली सारिवा **गोपी श्यामा शारिवा(स्या)दनन्तोत्पलशारिवा ।**

ऋद्धि न. स. स. स. १

वृद्धि **योग्यमृद्धिःसिद्धिलक्ष्म्यौ वृद्धे(रप्याह्वया इमे) ॥११२॥**

गोपी, "गोपा" श्यामा, शारिवा, "सारिवा" अनन्ता, उत्पलशारिवा ये ५ काली सारिवा, पीपरि, करियाट, करिघट या श्यामलता के नाम हैं। योग्य, ऋद्धि, सिद्धि, लक्ष्मी ये ४ ऋद्धिनामक औषधि के नाम हैं और ये कहेहुए चारो वृद्धयाख्य औषधि के भी नाम हैं यानी योग्य, ऋद्धि, सिद्धि, लक्ष्मी, वृद्धि ये ५ वृद्धयाख्य औषधि के नाम हैं ॥ ११२ ॥

स. स. स. स. स.

केला **कदली वारणबुसा रम्भा मोचांशुमत्फला ।**

स. स. स. स.

वनमूंग **काष्ठीला मुद्गपर्णी (तु) काकमुद्गा सहे (त्यपि) ॥ ११३ ॥**

कदली, 'कदला' वारणबुसा, वारणबुषा, रम्भा, मोचा, अंशुमत्फला, "भानुफला" काष्ठीला ये ६ कदली (केला) के नाम हैं। मुद्गपर्णी, काकमुद्गा, सहा ये ३ मुगौनी या वनमूंग के नाम हैं ॥ ११३ ॥

स. स. स. स. स.

बैंगन या भांटा **वार्ताकी हिङ्गुली सिंही भण्टाकी दुष्प्रधर्षणी ।**

स. स. स. स. स.

रासन या **नाकुली सुरसा रास्ना सुगन्धा गन्धनाकुली ॥ ११४ ॥**

स. स. स. स.

लताविशेष **नकुलेष्टा भुजङ्गाक्षी छत्राकी सुवहा (च सा) ।**

वार्ताकी, "वार्ताक, वार्ता, वार्ताकु" हिङ्गुली, सिंही, भण्टाकी, दुष्प्रधर्षणी, "दुष्प्रधर्षिणी" ये ५ बैंनभांटा या बैंगन के नाम हैं इनमें रभसकोष के प्रमाण से वार्ताकी पुंलिङ्ग भी है। नाकुली, सुरसा, रास्ना, सुगन्धा, "नागसुगन्धा" "सर्पसुगन्धा" गन्धनाकुली, नकुलेष्टा, भुजङ्गाक्षी, छत्राकी, सुवहा ये ६ रास्ना (रासन) या लताविशेष के नाम हैं ॥ ११४ । १/२ ॥

१ "वृद्धिस्तु वर्धने योगेऽप्यष्टवर्गौषधान्तरे । कालान्तरे चाभ्युदये समृद्धावपि योषितीति" (मेदिनी) ॥

स. स. स. स. स.
सरिवन विदारिगन्धांशुमती सालपर्णी स्थिरा ध्रुवा ॥ ११५ ॥
स. स. स. स.
कपास तुण्डिकेरी समुद्रान्ता कार्पासी बदरेति (च)।

विदारिगन्धा, "विदारीगन्धा, विदारी" अंशुमती, सालपर्णी, शालपर्णी, स्थिरा, ध्रुवा ये ५ शालपर्णी या सरिवन के नाम हैं। तुण्डिकेरी, समुद्रान्ता, कर्पासी, "कार्पासी" बदरा ये ४ कपास के नाम हैं ॥ ११५ । ½ ॥

स. स. पु. पु.
नर्माकपास काकड़ासिंगी भारद्वाजी (तु सा वन्या) शृङ्गी (तु) ऋषभो वृषः ॥ ११६॥
स. स. स. स.
कंकही या गंगेरन गाङ्गेरुकी नागबला झषा ह्रस्वगवेधुका।

यदि वह कपास वनमें उपजी हो तो उसे "भारद्वाजी" कहते हैं यह १ बनैली कपास या नर्माकपास का नाम है। शृङ्गी, ऋषभ, वृष ये ३ काकड़ासिंगी के नाम हैं। गाङ्गेरुकी, नागबला, झषा, ह्रस्वगवेधुका ये ४ कंकही या गँगेरन के नाम हैं ॥ ११६ । ½ ॥

पु. पु. स.
सफ़ेद फूल की तुरई पीले फूल की तुरई धामार्गवो घोषकः "स्या"न्महाजाली (स पीतकः) ११७॥
स. स. स. स. स.
चचेड़ा भूमिजामुन ज्योत्स्नी पटोलिका जाली नादेयी भूमिजम्बुका।
स. स. स. स.
कलिहारी कौआठोढी स्याल्लाङ्गलिक्यग्निशिखा काकाङ्गी काकनासिका ॥ ११८॥

धामार्गव, घोषक ये २ सफ़ेद फूलवाली तोरई के नाम हैं। यदि वह पीले फूल वाली हो तो उसे "महाजाली" कहते हैं यह १ घियातोरई का नाम है। ज्योत्स्नी, पटोलिका, जाली ये ३ चचेड़ा के नाम हैं। नादेयी, भूमिजम्बुका ये २ भूमिजामुनि या अम्बुवेतस के नाम हैं। लाङ्गलिकी, अग्निशिखा ये २ विषविशेष या कलि (रि) हारी के नाम हैं। काकाङ्गी, काकनासिका ये २ काकजङ्घा या कौआठोढ़ी के नाम हैं ॥ ११७ । ११८ ॥

स. स. स. स.
हंसपदी या लजालू मुसली गोधापदी (तु) सुवहा मुसली तालमूलिका।
स. स. स. स.
मेढ़ासिंगी गोभी अजशृङ्गी विषाणी (स्याद्) गोजिह्वादार्विके (समे) ११९॥

गोधापदी, सुवहा ये २ हंसपदी या लाल लजालू या करमुआ के नाम हैं।

मुशली, मुषली, तालमूलिका ये २ मुसली के नाम हैं। अजशृङ्गी, विषाणी ये २ मेढ़ासिंगी के नाम हैं। गोजिह्वा, दार्विका, "दार्विका" ये २ गोभी या बनगोभी के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ ११६ ॥

स. स. स. स.

ताम्बूल या पान **ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवल्ल्य(प्यथ) द्विजा ।**

स. स. स. स. स.

गगनधूरि **हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ॥ १२० ॥**

ताम्बूलवल्ली, ताम्बूली, नागवल्ली ये ३ नागवेलि या पानके नाम हैं। द्विजा, हरेणु, "हरेणुका", रेणुका, कौन्ती, कपिला, भस्मगन्धिनी ये ६ हरेणुका या गगनधूरि के नाम हैं इनमें "कपिला रेणुकायां च शिंशपागोविशेषयोः। पुण्डरीककरिण्यां स्त्री वर्णभेदे त्रिलिङ्गकम्। नानले वासुदेवे च मुनिभेदे च कुक्कुरे" (इति मेदिनी) इस कोषके प्रमाण से कपिला रेणुका में स्त्रीलिङ्ग है ॥ १२० ॥

न. न. न. न.

एलुवा **एलवालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ।**

पालक न. स. पु. पु. पु.स.न.

या कुंदरू **वालुकं (चाथ) पालङ्क्यां मुकुन्दः कुन्दकुन्दुरू ॥१२१॥**

एलावालुक, "एलवालुक" एलेय, सुगन्धि, हरिवालुक, 'हरिवासुक' वालुक ये ५ एलुआ, गन्धद्रव्य, हरिवालुक या मूसघर के नाम हैं। पालङ्क्या, पालकी, मुकुन्द, मुकुन्दु, कुन्द, कुन्दु, कुन्दुरु, कुन्दुर ये ४ पालकसाग या कुँदुरू या पोई के नाम हैं ॥ १२१ ॥

न. न. न. न. न.

नेत्रवाला **वालं ह्रीबेरबर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बुनाम (च) ।**

न. न. न. न.

शिलाजीत **कालानुसार्यवृद्धाश्मपुष्पशीतशिवानि तु ॥ १२२ ॥**

न. स. स. स. स.

तालीसपत्र **शैलेयं तालपर्णी (तु) दैत्या गन्धकुटी मुरा ।**

स. स. स. स. स.

साल या **गन्धिनी गजभक्ष्या (तु) सुवहा सुरभी रसा ॥ १२३ ॥**

स. स. स. स.

सालई **महेरणा कुन्दुरुकी सल्लकी ह्लादिनीति (च) ।**

वाल, ह्रीवेर, 'ह्रिबेर' बर्हिष्ठ, उदीच्य, केशाम्बुनाम या "केश और अम्बु" ये ५ नेत्रवाला या हाऊबेरके नाम हैं। कालानुसार्य, वृद्ध, अश्मपुष्प, शीतशिव,

शैलेय ये ५ शिलाजित के नाम हैं। तालपर्णी, दैत्या, गन्धकुटी, मुरा, गन्धिनी ये ५ मुरा, मरोरफली या तालीसपत्र के नाम हैं। गजभक्ष्या, गजभक्षा, सुवहा, सुरभि, सुरभी, रसा, सुरभीरसा, महेरणा, महेरुणा, कुन्दुरुकी, सल्लकी, सिल्लकी, शल्लकी, शिल्लकी, ह्लादिनी, ह्रादिनी ये ८ सालवृक्ष या सालईके नामहैं ॥ १२२।१२३। ½ ॥

स. स. स. स.

धवई या धाय **अग्निज्वाला सुभिक्षे(तु)धातकी धातृपुष्पिका॥१२४॥**

स. स. स. स. स.

बड़ी इलायची **पृथ्वीका चन्द्रबालैला निष्कुटिर्बहुला (थ सा)।**

स. स. स. स. स.

छोटी इलायची **(सूक्ष्मो)पकुञ्चिका तुत्था कोरङ्गी त्रिपुटा त्रुटिः१२५॥**

अग्निज्वाला, सुभिक्षा, धातकी, धातृपुष्पिका "धातुपुष्पिका" ये ४ धवई या धायके नाम हैं। पृथ्वीका, चन्द्रबाला, एला, निष्कुटि, "निष्कुटी" बहुला ये ५ इलायची के नाम हैं और यदि वह छोटी इलायची हो तो उसे उपकुञ्चिका, तुत्था, कोरङ्गी, त्रिपुटा और त्रुटि कहते हैं ये ५ गुजराती इलायची के नाम हैं ॥ १२४। १२५ ॥

पु. न. न. न. न. न.

कूट **व्याधिः कुष्ठं पारिभाव्यं वाप्यं पाकलमुत्पलम्।**

स. स. स. पु.

शंखाहूली **शङ्खिनी चोरपुष्पी(स्यात्)केशि(न्यथ)वितुन्नकः१२६॥**

स. स. स. स. स. स.

भूमिआंवला **झटाऽमलाऽज्झटा ताली शिवातामलकीति (च)।**

व्याधि, कुष्ठ, पारिभाव्य, व्याप्य, "वाप्य, आप्य" पाकल, उत्पल ये ६ कूट के नाम हैं। शङ्खिनी, चोरपुष्पी, केशिनी ये ३ शङ्खाहूली, चोरवल्ली, लाहुला या शङ्खकौड़ी के नाम हैं। वितुन्नक, झटा, अमला, "झटामला, झाटामला" अज्झटा, ता[illegible] नामलकी [illegible] ७ भूमिआंवला के नाम हैं ॥ १२६। ½ ॥

न. पु. पु.

[illegible] **पुण्डर्य (मथ) तुन्नः कुबेरकः॥ १२७॥**

पु. पु. स.

कपूर तून या कु[illegible] **[illegible]: कान्तलको नन्दिवृक्षो (थ) राक्षसी।**

पु. पु. पु.

तूनी धनहरी **[illegible]री क्षेमदुष्पत्रगणहासकाः॥ १२८॥**

प्रपौण्डरी [illegible] ण्डर्य ये २ गुलाब या स्थलकमलके नाम हैं। तुन्न, कुबे-

रक, कुणि, "तुणि" कच्छ, कान्तलक, नन्दिवृक्ष, "नन्दीवृक्ष" ये ६ तून या नन्दीवृक्ष या पीपलपत्रके समान पत्तेवाले वृक्ष के नाम हैं। राक्षसी, चण्डा, धनहरी, क्षेम, दुष्पत्र, गणहासक, "गण" ये ६ धनहरी या चोराख्य गन्धद्रव्य के नाम हैं ॥ १२७ । १२८ ॥

नखनामक गन्धद्रव्य — न. न. न. न.
व्याडायुधं व्याघ्रनखं करजं चक्रकारकम् ।

माल-कांगनी, पवारी या नलीनामक गन्धद्रव्य — स. स. स. स. स.
शुषिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रिर्नटी नली ॥ १२९ ॥

व्याडायुध, "व्यालायुध" व्याघ्रनख, करज, चक्रकारक ये ४ व्याघ्रनखनामक गन्धद्रव्य के नाम हैं। शुषिरा, "सुषिरा" विद्रुमलता, कपोताङ्घ्रि, नटी, नली ये ५ मालकांगनी या पवारी या नलीनामक गन्धद्रव्य के नाम हैं ॥ १२९ ॥

स. स. स. स.
कर्कुदनि **धमन्यञ्जनकेशी (च) हनुर्हट्टविलासिनी ।**

स. पु. पु. न. न. स.
अरहर या अर्हीं **शुक्तिः शङ्खः खुरः कोलदलं नख (मथा) ढकी॥१३०॥**

स. स. स. न. न.
काक्षी मृत्स्ना तुवरिका मृतालकसुराष्ट्रजे ।

धमनी, "धमनि" अञ्जनकेशी, हनु, हट्टविलासिनी ये ४ कर्कुदनि के नाम हैं। इनमें धमनी, अञ्जनकेशी इन दोनों का पूर्व में अन्वय होता है ऐसा कितेक आचार्यों ने कहा है। शुक्ति, शङ्ख, खुर, कोलदल, नख, "नखी" ये ५ कोलदल या नखीनामक गन्धद्रव्य के नाम हैं। इनमें "नखी स्त्रीक्लीबयोः शुक्तौ नखरे पुंनपुंसकम्" (इति मेदनी) इस कोषके प्रमाण से नख स्त्री व नपुंसक है। आढकी, काक्षी, मृत्स्ना, तुवरिका, 'तूवरी' "मृतालक" मृत्तालक, सुराष्ट्रज ये ६ अरहर या अर्हीं या खरी मिट्टी के नाम हैं ॥ १३०।½ ॥

न. न. न. न.
नागरमोथा, जलमोथा, **कुटन्नटं दाशपुरं वानेयं परिपे[illegible]**

गोया या छोटा मोथा — न. न. न.
प्लवगोपुरगोनर्दकैवर्तीमुस्तकानि

कुटन्नट, दाशपुर "दाशपूर–दशपुर–दशपूर" वानेय [illegible] व "परिपेल–पारिपेल" प्लव, गोपुर, गोनर्द, कैवर्तीमुस्तक, कैवर्तमुस्त [illegible] रमोथा, जलमोथा, गोया या छोटे मोथा के नाम हैं ॥ १३१ ।½॥

न. न. न. न. न.
कुकरौंधा ग्रन्थिपर्णं शुकं बर्हिपुष्पं स्थौणेयकुक्कुरे ॥ १३२ ॥
स. स. स. स. स. स.
असपरक मरुन्माला (तु) पिशुना स्पृक्का देवी लता लघुः।
स. स. स. स.
समुद्रान्ता वधूः कोटिवर्षा लङ्कोपिके (त्यपि) ॥ १३३ ॥

ग्रन्थिपर्ण, शुक "शुकबर्ह" बर्ही, पुष्प, बर्हिपुष्प, बर्हपुष्प, 'बर्ह', स्थौणेय, कुक्कुर ये ५ कुकुरौंधा या भटोरा या गठिवन के नाम हैं। मरुन्माला, मरुत्, माला, पिशुना, स्पृक्का, पृक्का, देवी, लता, लघु, समुद्रान्ता, वधू, कोटिवर्षा, कोटी, वर्षा, लङ्कोपिका, लङ्कापिका और लङ्कायिका ये १० असपरक या बिडारनामक शाकविशेष के नाम हैं ॥ १३२ । १३३ ॥

स. स. स. स. स.
जटामांसी तपस्विनी जटामांसी जटिला लोमशा मिसी।
दालचीनी न. न. न. न. न. न.
या तज त्वक्पत्रमुत्कटं भृङ्गं त्वचं चोचं वराङ्गकम् ॥ १३४ ॥

तपस्विनी, जटा, मांसी, जटामांसी, जटिला, लोमशा, मिसी, मिसि, मसी, मसि, मिशी, मिशि, मषी, मषि, मिषी, मिषि ये ६ जटामांसी के नाम हैं। त्वक्पत्र, त्वक् (च्) पत्र, उत्कट, भृङ्ग, त्वच, चोच, वराङ्गक ये ६ तज या दालचीनी के नाम हैं ॥ १३४ ॥

कचूर कर्चूरको द्राविडकः काल्पको वेधमुख्यकः।
अन्नमात्र
औषध ओषध्यो जातिमात्रे स्युरजातौ सर्वमौषधम् ॥ १३५ ॥

कर्चूरक, "कर्बूरक" द्राविडक, काल्पक, काल्यक, वेधमुख्यक ये ४ कचूर के नाम हैं। जातिमात्र की विवक्षा में ओषधीशब्दका प्रयोग होता है यानी जिन्होंका फल पकनाही अन्त है ऐसे व्रीहि, जव आदिकों की जाति में "ओषध्यः" ऐसा प्रयोग कहाजाता है यहां बहुत्व की विवक्षा में बहुवचन हुआ है नित्य नहीं है। जैसे कहा है कि ओषधी को रोगहारित्वमात्र जानाजाता है और अन्य कुछ नहीं तब "औषध" शब्द का प्रयोग होता है क्योंकि ओषधिशब्दसे "ओषधेरजातौ" इस सूत्र से 'अण्' प्रत्ययका विधान किया है, केवल "ओषधिरेव" इससे औषधीशब्द वाच्य नहीं है वरन रोगहारित्व से घृत, मधु, तैल व त्रिफलादि के कषायादिकों का भी औषधत्व है यह "सर्व" इस विशेषण से जानना चाहिये। ओषधी, ओषधि ये २ अन्नमात्र के नाम हैं और "औषध" यह १ औषधमात्रका नाम है ॥ १३५ ॥

न. पु. पु.

साग या तर- **शाकाख्यं (पत्रपुष्पादि) तण्डुलीयोल्पमारिषः ।**

कारी,चौराई, स. स. स. स. स.

इन्द्रपुष्पी **विशल्याग्निशिखानन्ता फलिनी शक्रपुष्प्यपि ॥१३६॥**

पत्र, पुष्प, फल, मूल आदि शाक कहाते हैं, जैसेकि-(मूलपत्रकरीराग्रफल-काण्डाधिरूढकम् । त्वक्पुष्पं कवकं चैव शाकं दशविधं स्मृतम्) मूली आदिकों की मूल, बथुई आदिकों का पत्र, बांस का अँखुवा, करीर, वेत्रआदिकोंका अग्र, कुम्हड़ा आदिकों का फल, काण्डईपका दण्ड, अधिरूढक-बीजांकुर, बिजौरा आदिकों की त्वचा, इमली आदिकों का फूल और कवकछत्रिका-(भुइँफोड़ या धरतीका फूल) यह दशभांति का शाक कहा है यह १ शाक या तरकारीमात्र का नाम है । तण्डु-लीय, अल्पमारिष ये २ चौराई साग के नाम हैं । विशल्या, अग्निशिखा, अनन्ता, फलिनी, शक्रपुष्पी ये ५ इन्द्रपुष्पी के नाम हैं ॥ १३६ ॥

स. स. स. पु.

विधारा **(स्यात्)क्षगन्धा छगलान्त्र्यावेगी वृद्धदारकः ।**

ब्राह्मी, क्ष्योंटा पु. स. स. स. स.

या उजली दूब **जुङ्गो ब्राह्मी तु मत्स्याक्षी वयस्था सोमवल्लरी ॥१३७॥**

ऋक्षगन्धा, "ऋष्यगन्धा," छगलान्त्री, "छगलान्घ्री, छगला, अन्त्री" आवेगी, वृद्धदारक, जुङ्ग, जुङ्गा ये ५ विधारा के नामहैं । ब्राह्मी, ब्रह्मी, मत्स्याक्षी, वयस्था, वयःस्था, वयस्स्था, सोमवल्लरी, सोमवल्लरि, चन्द्रवल्लरी, सोमलता ये ४ ब्राह्मी, क्ष्योंटा या उजली दूब या सोमलता के नाम हैं ॥ १३७ ॥

स. स. स. स.

मकोय **पटुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी हिमावती ।**

स. स. स. स.

माषपर्णी **हयपुच्छी (तु) काम्बोजी माषपर्णी महासहा ॥१३८॥**

पटुपर्णी, हैमवती, स्वर्णक्षीरी, हिमावती ये ४ मकोय के नाम हैं । हयपुच्छी, काम्बोजी, माषपर्णी, मासपर्णी, महासहा ये ४ माषपर्णी या मूंग के नाम हैं॥१३८॥

स. स. स. स.

कुंदरू **तुण्डिकेरी रक्तफला बिम्बिका पीलुपर्ण्य (पि) ।**

स. स. स. स. स.

बबई **वर्वरा कवरी तुङ्गी खरपुष्पाजगन्धिका ॥ १३९ ॥**

तुण्डिकेरी, "तुण्डकेरी" रक्तफला, बिम्बिका, पीलुपर्णी ये ४ कुन्दुरू के नाम हैं । वर्वरा, कवरी, तुङ्गी, खरपुष्पा, अजगन्धिका ये ५ बबई के नाम हैं ॥ १३९ ॥

स. स. स. स.
कोलिन्दण एलापर्णी(तु) सुवहा रास्ना युक्तरसा (च सा)।
अम्लोनियां स. स. स. स. स.
या चूक चाङ्गेरी चुक्रिका दन्तशठाम्बष्ठाम्ललोणिका ॥ १४० ॥

एलापर्णी, सुवहा, रास्ना, युक्तरसा ये ४ एलापर्णी या कोलिन्दग के नाम हैं। चाङ्गेरी, चुक्रिका, दन्तशठा, अम्बष्ठा, अम्ललोणिका "अम्ललोलिका" ये ५ अम्लोनियां या चूक के नाम हैं ॥ १४० ॥

पु. पु. पु. पु.
अम्लवेतस सहस्रवेधी चुक्रोम्लवेतसः शतवेध्य(पि)।
स. स. स. स.
लजालू नमस्कारी गण्डकाली समङ्गा खदिरे[1] (त्यपि) ॥ १४१ ॥

सहस्रवेधी, चुक्र, अम्लवेतस, शतवेधी ये ४ अमलवेतसके नाम हैं अथवा चाङ्गेरी आदि व शतवेधी पर्यन्त नव नाम अमलवेतस के ही हैं यह मुकुटका मत है। नमस्कारी, गण्डकाली, समङ्गा, खदिरा ये ४ लजालू या हाताजोड़ी के नाम हैं॥ १४१॥

स. स. स. स. स.
जीवन्ती या जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुस्रवा।
पु. पु. पु. पु. पु.
डोड़ी जीवक कूर्चशीर्षो मधुरकः शृङ्गह्रस्वाङ्गजीवकाः ॥ १४२ ॥

जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवनीया, मधु, स्रवा, मधुस्रवा, मधुस्रुवा ये ५ जीवन्ती या गुर्जर देश में उपजी "डोड़ी" के नाम हैं। कूर्चशीर्ष, मधुरक, शृङ्ग, ह्रस्वाङ्ग, जीवक ये ५ जीवक या अष्टवर्गान्तर्गत जीवक के नाम हैं ॥ १४२ ॥

पु. पु. पु. स.
चिरायता किराततिक्तो भूनिम्बोऽनार्यतिक्तो (ऽथ) सप्तला।
स. स. स. स.
सेहुंड के भेद विमला सातला भूरिफेना चर्मकषे (त्यपि) ॥ १४३ ॥

किराततिक्त, भूनिम्ब, अनार्यतिक्त, "चिरात्तिक्त" ये ३ चिरायता के नाम हैं। सप्तला, विमला, सातला, भूरिफेना, चर्मकषा ये ५ सीहुण्डभेद या चर्मघास के नाम हैं ॥ १४३ ॥

स. स. स. पु.
काकोली या वायसोली स्वादुरसा वयस्था (थ) मकूलकः।
कफोड़ी दँतिया पु. स. स. स.
या जयपाल निकुम्भो दन्तिका प्रत्यक्श्रेण्युदुम्बरपर्ण्य(पि)१४४॥

---

[1] "खदिरा शाकभेदे स्त्री ना चन्द्रे दन्तधावने" (इति मेदिनी)॥

वायसोली, स्वादुरसा, वयस्था, "कयस्था, कायस्था" ये ३ काकोली या काकोड़ी के नाम हैं। मकूलक, "मुकूलक" निकुम्भ, निष्कुम्भ, दन्तिका, "दन्तिजा" प्रत्यक्श्रेणी, उदुम्बरपर्णी ये ५ वज्रदन्ती या दँतिया (जमालगोटा) जिसके बीज को 'जयपाल' कहते हैं उसके नाम हैं ॥ १४४ ॥

स. स. स. स.

अजवाइन **अजमोदा तूग्रगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका।**

न. न. न.

पुष्करमूल **(मूले) पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि (पौष्करे)॥१४५॥**

अजमोदा, उग्रगन्धा ये २ अजमोदा के नाम हैं। ब्रह्मदर्भा, यवानिका, "यमानिका" यवानी, "यमानी" ये २ अजवाइन के नाम हैं अथवा ये चारो अजवाइनि केही नाम हैं यह कितेक आचार्यों का मत है। पुष्कर, काश्मीर, पद्मपत्र, "पद्मपर्णा" ये ३ पुष्करमूल के नाम हैं ॥ १४५ ॥

स. स. स. स. स.

कपिला या **अव्यथातिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी।**

स्थलकमलिनी पु. पु. पु. पु. स.

कबीला **काम्पिल्यः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रोचनी(त्यपि) ॥१४६॥**

अव्यथा, अतिचरा, पद्मा, चारटी, पद्मचारिणी ये ५ पद्माक, कपिला या स्थलकमलिनी के नाम हैं। काम्पिल्य, "काम्पिल, कम्पिल, कम्पील" कर्कश, चन्द्र, रक्ताङ्ग, रोचनी, रेचनी ये ५ कबीला, गुण्डारोचनी या कपीला के नाम हैं ॥ १४६ ॥

पु. पु. पु. पु.

चकवड़ **प्रपुन्नाडस्त्वेडगजो दद्रुघ्नचक्रमर्दकः।**

पु. पु. पु. पु.

प्याज **पद्माट उरणाख्य(श्च)पलाण्डु(स्तु)सुकन्दकः॥१४७॥**

प्रपुन्नाड, "प्रपुन्नड, प्रपुनाड," एडगज, दद्रुघ्न, चक्रमर्दक, पद्माट, उरणाख्य, "उरणाक्ष" ये ६ पवांड़ या चकवड़ या बाकला के नाम हैं। पलाण्डु, सुकन्दक, "मुकन्दक, मुकुन्दक" ये २ पलाण्डु या कांदा या प्याज के नाम हैं ॥ १४७ ॥

पु. पु. न.

हराप्याज **लतार्कदुर्द्रुमौ (तत्र हरिते) 'थ' महौषधम्।**

न. पु. पु. पु. पु.

लहसुन **लशुनं गृञ्जनारिष्टमहाकन्दरसोनकाः॥ १४८ ॥**

---

१ लशुनं गृञ्जनं चैव पलाण्डु कवकानि च । वृत्ताकारालिकालाबुजातीया जातिदूषितमिति । श्वेतकन्दः पलाण्डुविशेषो गृञ्जनम् । लशुनं दीर्घपत्रश्च पिच्छगन्धो महौषधम् । फरणश्च पलाण्डुश्च लतार्कश्चापराजितः । गृञ्जनं यवनेष्टश्च पलाण्डोर्दश जातयः" इति सुश्रुतेनोक्तत्वात् ॥

लतार्क, दुद्रुम "दुर्द्रुम" ये २ हरे प्याज या कांदा के नाम हैं । महौषध, लशुन, "लशून" गृञ्जन, अरिष्ट, महाकन्द, रसोनक ये ६ लहसुन के नाम हैं ॥ १४८ ॥

स. स. न. न.

गदहपुन्ना विसखपरिया **पुनर्नवा (तु) शोथघ्नी वितुन्नं सुनिषण्णकम् ।**

पु. पु. स. स.

पटसन या पटुआ **स्याद्वातकः शीतलोऽपराजिता शणपर्ण्य(पि) ॥१४९॥**

पुनर्नवा, शोथघ्नी ये २ गदहपुन्ना के नाम हैं । वितुन्न, सुनिषण्णशाक ये २ बिसखपरिया के नाम हैं । वातक, शीतल, "शीतलवातक" अपराजिता, शणपर्णी, "अशनपर्णी, असनपर्णी, आसनपर्णी" ये ४ पटसन या पटुआ के नाम हैं॥ १४९ ॥

स. स. स. स. स.

मालकांगनी **पारावताङ्घ्रिः कटभी पण्या ज्योतिष्मती लता ।**

न. स. स. स.

चिरायता के बीज **वार्षिकं त्रायमाणा (स्यात्) त्रायन्ती बलभद्रिका ॥१५०॥**

पारावताङ्घ्रि, कटभी, पण्या, "पिण्या" ज्योतिष्मती, लता ये ५ मालकांगनी के नाम हैं । वार्षिक, त्रायमाणा, त्रायन्ती, बलभद्रिका ये ४ त्रायमाणा या चिरायताबीज के नाम हैं ॥ १५० ॥

स. स. स. स.

बिलाईकन्द **विष्वक्सेनप्रिया गृष्टिर्वाराही बदरेति (च) ।**

पु. पु. स. स.

भँगरा, काकजंघा या काकमाची **मार्कवो भृङ्गराजः (स्यात्) काकमाची (तु) वायसी १५१॥**

विष्वक्सेनप्रिया, गृष्टि, " घृष्टि " वाराही, बदरा ये ४ वाराहीकन्द या बिलाईकन्द के नाम हैं । मार्कव, "मार्कर" " भृङ्गराज, भृङ्गराजा, भृङ्गरजः " 'सुजागर' ये २ भृङ्गराज (भँगरा) के नाम हैं । काकमाची, वायसी ये २ काकमाची या काकप्रिया या कौवाहाड़ीगोड़ी के नाम हैं ॥ १५१ ॥

स. स. स. स. स.

सौंफ **शतपुष्पा सितच्छत्राऽतिच्छत्रा मधुरा मिसिः ।**

स. स. स. स.

आकाशबेलि भँवरि या लता विशेष **अवाक्पुष्पी कारवी (च) सरणा (तु) प्रसारिणी ॥१५२॥**

स. स. स.

(तस्यां) कटंभरा राजबला भद्रबले (ति च) ।

शतपुष्पा, सितच्छत्रा, अतिच्छत्रा, मधुरा, मिसि, " मिशि, मिषि " अवाक्पुष्पी, कारवी ये ७ सौंफ के नाम हैं । सरणा, सरणी, प्रसारिणी, प्रसारणी,

सारिणी, सारणी, कटम्भरा, राजबला, भद्रबला ये ५ कुब्जप्रसारिणी या चांद-बेल या पसारनि के नाम हैं ॥ १५२ । ३ ॥

स. स. स. स. स.

चकवत ना- जनी जतूका रजनी जातुकृच्चक्रवर्तिनी ॥ १५३ ॥

मक औषध स. स. स. स.

कचूर या संस्पर्शा (थ) शटी गन्धमूली षड्ग्रन्थिकेत्यपि ।

आंबाहल्दी पु. पु. पु. पु.

करेला कर्चूरो (पि) पलाशो (थ) कारवेल्लः कटिल्लकः ॥१५४॥

स. न. पु. पु. पु.

परवर सुषवी (चाथ) कुलकं पटोलस्तिक्तकः पटुः ।

जनी, जनि, जतूका, " जतुका, " रजनी, "जननी" जतुकृत्, चक्रवर्तिनी, संस्पर्शा ये ६ चकवतनामक औषधी के नाम हैं। शटी, शठी, सटी, षटी, गन्धमूली, "गन्धमूला, गन्धशटी," षड्ग्रन्थिका, कर्चूर, " कर्बूर, कर्बुर " पलाश ये ५ छोटे कचूर या आंबाहल्दी के नाम हैं । कारवेल्ल, कटिल्लक, कठिल्लक, सुषवी, " सुसवी, सुशवी," ये ३ करेला के नाम हैं । कुलक, कूलक, पटोल, तिक्तक, पटु ये४ परवर या परोरा के नाम हैं ॥ १५३ । १५४ । ३ ॥

पु. पु. पु.स. स.

कुम्हड़ा ककड़ी कूष्माण्डक (स्तु) कर्कारुरीर्वारुः कर्कटी (स्त्रियौ) १५५॥

कड़ई लौकी स. स. स. स.

लौकी जेठऊ इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी (स्यात्) तुम्ब्यलाबू (रुभे समे) ।

ककड़ी स. स. स. स. स.

इन्द्रायनि चित्रा गवाक्षी गोडुम्बा विशाला (त्वि) न्द्रवारुणी१५६॥

कूष्माण्डक, कुष्माण्डक, कूष्माण्ड, कर्कारु ये २ कुम्हड़ा या गंगाफल के नाम हैं । इर्वारु, ईर्वारु, "ईर्वालु, उर्वारु," एर्वारु, कर्कटी ये २ ककड़ी के नाम हैं ये दोनों स्त्रीलिङ्ग में रहते हैं । इक्ष्वाकु, कटुतुम्बी ये २ कडुई लौकी के नाम हैं । तुम्बी, तुम्बि, अलाबू, " अलाबु, आलाबु, लाबु " ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ लौकी के नाम हैं । चित्रा, गवाक्षी, गोडुम्बा ये ३ जेठऊ ककड़ी के नाम हैं "दशाङ्गुलं तु खर्बूजं" दशाङ्गुल, खर्बूज ये २ खर्बूजा के नाम हैं । विशाला, इन्द्रवारुणी ये २ इन्द्रारुणि या इन्द्रायनि के नाम हैं ॥ १५५ । १५६ ॥

१ " रञ्जेः क्युन् " (उ. २ । ७९) इति क्युनि कित्त्वान्नलोपः गौरादित्वान्ङीप्-इति बोध्यम् ॥
२ कारोवधे निश्चये च बलौ यत्ने यतावपि । तुषारशैलेपि पुमान् स्त्रियां दूत्यां प्रसेवके । सुवर्णकारिण्यां च बन्धनागारबन्धयोः (इति मेदिनी) ॥

पु. पु. पु. पु. स.
जिमींकन्द या अर्शोघ्नः सूरणः कन्दो गण्डीर (स्तु) समष्ठिला ।
स. स. पु.न. स.
सूरन गांड़रि कलम्ब्युपोदिका (स्त्री तु) मूलकं हिलमोचिका १५७ ॥

अर्शोघ्न, शूरण, "सूरण" कन्द ये ३ सूरण या ज़िमींकन्द के नाम हैं। गण्डीर, समष्ठिला ये २ गांड़रि या गँड़री साग के नाम हैं। कलम्बी, "कलम्बू, कलम्ब" यह १ करमुवा साग का नाम है। उपोदिका, "उत्पादिका, उपोदकी, अपोदिका, पोतकी, पोतिका, पूतिका" यह १ पोई का नाम है। मूलक यह १ मूली का नाम है। हिलमोचिका यह १ हिलसा या (हुलहुल) साग का नाम है ॥ १५७ ॥

बथुई या क- न. स. स.
लम्बी आदि- वास्तूकं (शाकभेदाःस्यु) र्दूर्वा (तु) शतपर्विका ।
पांच शाकों स. स. स. स.
के भेद सहस्रवीर्या भार्गव्यौ रुहानन्ता (थसा सिता)॥१५८॥
दूब स. स. स. स.
उजली दूब गोलोमी शतवीर्या (च) गण्डाली शकुलाक्षकः ।

वास्तूक, 'वास्तुक' यह १ बथुवा या बथुई का नाम है, ये कलम्बी आदि पांच शाकों के भेद होते हैं। दूर्वा, शतपर्विका, "शतपर्णिका" सहस्रवीर्या, भार्गवी, रुहा, अनन्ता ये ६ दूब के नाम हैं और यदि वह दूब सफ़ेद हो तो गोलोमी, शतवीर्या, गण्डाली, शकुलाक्षक ये ४ उजली दूब के नाम हैं ॥ १५८ । ३ ॥

मोथा नागर- पु. पु. स. पु. न.
मोथा या कुरुविन्दो मेघनामा मुस्तामस्तक (मस्त्रियाम्)॥१५९॥
पु. स. स. स. स.
निर्विषी घास (स्याद्भ) द्रमुस्तको गुन्द्रा चूडाला चक्रलोच्चटा ।

कुरुविन्द, मेघनामा, मुस्ता, मुस्तक ये ४ मोथा के नाम हैं इनमें "मुस्तक" स्त्रीलिङ्ग नहीं है बरन पुंलिङ्ग व नपुंसक में रहता है। भद्रमुस्तक, "भद्र" गुन्द्रा ये २ नागरमोथा या भद्रमोथा के नाम हैं। चूडाला, चक्रला, उच्चटा ये ३ मोथा-विशेष या निर्विषी घास के नाम हैं ॥ १५९ । ३ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
बांस वंशे त्वक्सारकर्मारत्वचिसारतृणध्वजाः ॥ १६० ॥
पु. पु. पु. पु. पु.
शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ।

१ "मण्डूकपर्णी पालङ्क्या चिल्लिका वाप्यपोदिका । चाङ्गेरी हिलमोचा च कलम्बी शाकजातयः" (इति माला) ॥

वंश, त्वक्सार, कर्मार, त्वचिसार, तृणध्वज, शतपर्वा, यवफल, वेणु, मस्कर, तेजन ये १० बांस के नाम हैं इनमें वंश शब्द "वंशो वेणौ कुले वर्गे पृष्ठाद्यवयवेपि च" (इति विश्वः) इस कोष के प्रमाण से बांस, कुल, वर्ग व पीठ आदि के अवयव में भी रहता है ॥ १६० । ३ ॥

हवासे बजने वाले बांस पु. **वेणवः कीचका (स्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः)॥१६१॥**

गांठि या पोर न. न. पु. रामसर, पु. सरकण्डा या सरई पु. पु.

ग्रन्थि (र्ना) पर्वपरुषी गुन्द्रस्तेजनकः शरः ।

जो बांस हवा से ताड़ित या चालित होते हुए चीकते हैं वे "कीचक" कहाते हैं यहां बहुत्व से बहुवचन है यह १ हवासे बजते बांस का नाम है। ग्रन्थि, पर्व (न) परुष्, "परु" ये ३ गांठि या पोर के नाम हैं। इनमें ग्रन्थि पुंलिङ्ग है और उका-रान्त परु भी पुंलिङ्ग में रहता है। गुन्द्र, तेजनक, शर "सर" ये ३ रामसर, सरहरी, सरकण्डा या सरई के नाम हैं ॥ १६१ । ३ ॥

पु. पु. पु. पु.न.

नरकुल या नरई **नडस्तु धमनः पोटगलो(ऽथो)काश(मस्त्रियाम्)॥१६२॥**

काश या कास स. पु. पु.

बगई या वेद

ईख या ऊँख **इक्षुगन्धा पोटगलः (पुंभूम्नि तु) वल्वजाः ।**

पौंड़ा पु. पु.

काला पौंड़ा **रसाल इक्षु (स्तद्भेदाः) पुण्ड्रकान्तारकादयः ॥ १६३ ॥**

नड, "नल" धमन, पोटगल ये ३ नरकुल या नरई के नाम हैं। काश, "कास" इक्षुगन्धा, पोटगल ये ३ काश के नाम हैं इनमें काशशब्द स्त्रीलिङ्ग नहीं है बरन पुंनपुंसक में रहता है। वल्वज यह १ बगई या वेद या तृणविशेष (बाइ) का नाम है यह पुंलिङ्ग में बहुवचनान्त है और (एको वल्वजः १ । २ । ४५) इस सूत्र में भाष्यकार के वचन से एकवचनान्त भी पाया जाता है। रसाल, इक्षु ये २ ऊख या ईख के नाम हैं। पुण्ड्र, "पौण्ड्र" यह १ पौंड़ा का नाम है। का-न्तार यह १ केतारा या काले गन्ना का नाम है आदि शब्द से कोषकार आदिकों का ग्रहण किया जाता है ये ईख के भेद कहाते हैं ॥ १६२ । १६३ ॥

१ सकीचकैर्मारुतपूर्णरन्ध्रैरिति (रघुवंशकाव्ये) ॥

२ "पौण्ड्रको भीरुकश्चैव वंशकः शतपोरकः । कान्तारस्तापसेक्षुश्च काण्डेक्षुः सूचिपत्रकः । नैपालो दीर्घपत्रश्च नीलपोरोथ कोषकः । इत्येता जातयस्तेषां कथयामि गुणानपीति (भावप्रकाशः) ॥

न. न. पु.न.

गांडर (स्या)द्वीरणं वीरतरं (मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम्)।

न. न. न. न. न.

खस अभयं नलदं सेव्यममृणालं जलाशयम् ॥ १६४ ॥

न. न. न. न. न.

लामज्जकं लघुलयमवदाहेष्टकापथे।

वीरण, वीरतर ये २ गांड़र के नाम हैं इसकी मूल में उशीर, "उषीर" अभय, नलद, सेव्य, अमृणाल, "मृणाल," जलाशय, लामज्जक, लघु, लय, लघुलय, अवदाह, "अवदान, अवदाहेष्ट, कापथ," "इष्टकापथ" ये १० गांड़र की जड़ "खस" के नाम हैं इनमें उशीर स्त्रीलिङ्ग नहीं बरन पुंनपुंसकमें रहताहै॥१६४।½॥

न. स. स.

तृणजातियां 'नलादय' स्तृणं गर्मुच्छ्यामाकप्रमुखा(अपि) ॥१६५॥

न. पु. पु. न. न.

कुश या डाभ (अस्त्री) कुशं कुथो दर्भः पवित्र (मथ) कत्तृणम्।

सुगन्धतृण न. न. न. न. न.

या रोहिष पौरसौगन्धिकध्यामदेवजग्धकरौहिषम् ॥ १६६ ॥

नल आदि या नड़ आदि तृण की जातियां कहाती हैं और जो गर्मुत्-श्यामाक "सांवां" आदि हैं वे भी तृणधान्यविशेष हैं, प्रमुख शब्द से वक्ष्यमाण कुशआदि व कोदव आदि हैं वे भी तृणजाति हैं यहां पर प्रमुख शब्द से "नीवार" आदि मुनि अन्न का ग्रहण करना चाहिये नहीं तो कोदव आदिकों का हविष्यत्व होजायगा यह १ नड़ादि, गर्मुत्, श्यामा आदिकों का नाम है। कुश, कुथ, दर्भ, पवित्र ये ४ कुश या डाभ के नाम हैं। कत्तृण, पौर, सौगन्धिक, ध्याम, देवजग्धक, रौहिष ये ६ सौधियातृण या तृणविशेष के नाम हैं ॥ १६५ । १६६ ॥

पानी के तृण स. पु. पु. न. न.

या खर छत्रातिच्छत्रपालघ्नौ मालातृणकभूस्तृणे।

नये तृण या न. न. पु. न. न. न.

खर घास

तृणमात्र शष्पं बालतृणं घासो यवासं तृणमर्जुनम् ॥ १६७ ॥

छत्रा, अतिच्छत्र, पालघ्न ये ३ जल से उपजे तृणविशेष के नाम हैं। मालातृणक, मालातृण, भूस्तृण ये २ तृणविशेष के नाम हैं अथवा स्वामी के मत में ये ५ खरविशेष के नाम हैं। शष्प, बालतृण ये २ नये तृण या खर के नाम हैं। घास, यवास, "यवस" ये २ गौ आदि की भक्षणीय घास के नाम हैं। तृण, अर्जुन ये २ तृणमात्र के नाम हैं ॥ १६७ ॥

स. स.
खरही या घूर नरई का ढेर (तृणानां संहति)स्तृण्या नड्या(तु नडसंहतिः) ।
पु. पु. पु. स.
ताड़ वृक्ष नारियल तृणराजाह्वयस्तालो नालिकेर(स्तु)लाङ्गली ॥ १६८ ॥

तृणों के समूह को "तृण्या" कहते हैं यह १ तृणसमुदाय या खरही या घूर का नाम है । नलों या नडों के समुदाय को "नड्या" कहते हैं यह १ नड-समूह या नरई आदि के ढेर का नाम है । तृणराज, ताल, "तल" ये २ ताड़ वृक्ष के नाम हैं । नालिकेर, "नारिकेल, नाड़िकेल, नारीकेल, नारिकेली, नारिकेलि" लाङ्गली (लिन) ये २ नारियर के नाम हैं इनमें लाङ्गलीशब्द स्त्रीलिङ्ग व पुंलिङ्ग है ॥ १६८ ॥

स. पु. पु. पु. पु.
सुपारी सुपारी घोण्टा तु पूगः क्रमुको गुवाकः खपुरो (ऽस्य तु) ।
न. पु.
का फल खजूर (फल) मुद्वेगमेते च हिन्तालसहितास्त्रयः) ॥
पु. पु.स. स. स. पु.
केतकी वृक्ष ताल भेद वनखजूरी खर्जूरः केतकी ताली खर्जूरी (च)तृणद्रुमाः ॥ १६९ ॥

इति वनौषधिवर्गः ॥

घोण्टा, पूग, क्रमुक, गुवाक, "गूवाक," खपुर ये ५ सुपारी के नाम हैं और इसके फल को "उद्वेग" कहते हैं यह १ सुपारी के फल का नाम है । ये नालिकेर आदि तीन चौथे हिन्ताल समेत और खर्जूर आदि चार ये आठ तृणजातीय वृक्ष कहाते हैं । "हिन्ताल" यह १ छोटे ताड़ वृक्ष का नाम है । "खर्जूर" यह १ खजूर का नाम है । "केतकी" यह १ केतकीवृक्ष का नाम है । ताली, "तालि, ताड़ी, ताडि" यह १ ताड़भेद का नाम है । खर्जूरी यह १ वनखजूरी का नाम है ॥ १६९ ॥

इति वनौषधिवर्गविवरणम् ॥

अथ सिंहवर्गो व्याख्यायते ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
सिंह बाघ सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः केसरी हरिः ।
पु. पु. पु. पु. पु.
चीता शार्दूलद्वीपिनौव्याघ्रे तरक्षुस्तु मृगादनः ॥ १ ॥

सिंह, मृगेन्द्र, पञ्चास्य, हर्यक्ष, केसरी, केशरी (रिन्) हरि "कण्ठीरव, मृगरिपु, मृगदृष्टि, मृगाशन" ये ६ सिंह के नाम हैं । शार्दूल, द्वीपी, व्याघ्र ये ३ बाघ

के नाम हैं। तरक्षु, मृगादन ये २ तेंदुवा, चीता या हुँड़ार के नाम हैं॥ १॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु. पु.

सूअर **वराहः शूकरो घृष्टिः कोलः पोत्री किरः किटिः।**

पु. पु. पु. पु. पु.

दंष्ट्री घोणी स्तब्धरोमा क्रोडो भूदार (इत्यपि)॥ २॥

वराह, सूकर, "शूकर" घृष्टि "गृष्टि" कोल, पोत्री, (त्रिन्) किर, "किरि" किटि, दंष्ट्री, (ष्ट्रिन्) घोणी, (णिन्) स्तब्धरोमा, (मन्) क्रोड, भूदार ये १२ सूअर के नाम हैं॥ २॥

पु. पु. पु. पु. पु.

वानर या बन्दर **कपिप्लवंगप्लवगशाखामृगवलीमुखाः।**

पु. पु. पु. पु. पु.

भालू **मर्कटो वानरःकीशो वनौका(अथ)भल्लुके॥ ३॥**

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

गैंड़ा **ऋक्षाच्छ[1]भल्लभालूका गण्डके खड्गखड्गिनौ।**

कपि, प्लवंग, प्लवंगम, प्लवग, शाखामृग, वलीमुख, मर्कट, वानर, कीश, वनौका ये ६ वानर के नाम हैं। भल्लुक, भल्लूक, भाल्लुक, भाल्लूक, ऋक्ष, अच्छभल्ल, "भल्लः स्यात्पुंसि भल्लूके शस्त्रभेदे तु न द्वयोः। भल्लातक्यां स्त्रियां भल्लीति" (मेदिनी) भालूक ये ४ भालू के नाम हैं। गण्डक, खड्ग, खड्गी ये ३ गैंड़ा के नाम हैं॥ ३। १॥

पु. पु. पु. पु. पु.

भैंसा **लुलापो[2] महिषोवाहद्विषत्कासरसैरिभाः॥ ४॥**

स. पु. पु. पु.

(स्त्रियां) शिवा भूरिमायगोमायुमृगधूर्तकाः।

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

सियार **सृगालवञ्चकक्रोष्टुफेरुफेरवजम्बुकाः॥ ५॥**

लुलाप, "लुलाय" महिष, "महिषी" वाहद्विषन्, कासर, सैरिभ ये ५ भैंसा के नाम हैं। शिवा, भूरिमाय, गोमायु, मृगधूर्तक, सृगाल, शृगाल, वञ्चक, क्रोष्टा, क्रोष्ट्री, फेरु, फेरव, जम्बुक, जम्बूक ये १० सियार या गीदड़ के नाम हैं इनमें

---

१ संघातविगृहीतंनाम, "अच्छः स्फटिकभल्लूकनिर्मलेष्वच्छमव्ययम्। आभिमुख्ये" (इति मेदिनी)॥ अच्छभल्लपरिषद्विहरन्तीत्यभिनन्दः॥ २ खुरविधुतधरित्री चित्रकायो लुलायः इति॥

३ "तालव्या अपि दन्त्याश्च शम्बशम्बरशूकराः। रशनापि च जिह्वायां शृगालः कलशोपि च" (इति शभेदः)॥

" शिवः कीलः शिवा क्रोष्टा भवेदामलकी शिवा " इस शाश्वतकोष के प्रमाण से " शिवा " स्त्रीलिङ्ग है ॥ ४ । ५ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

बिलार गोह **ओतुर्विडालो मार्जारो वृषदंशक आखुभुक् ।**

पु. पु. पु.

बिसखोपड़ा **(त्रयो) गौधारगौधेरगौधेया (गोधिकात्मजे) ॥ ६ ॥**

ओतु, विडाल, "बिलाल, विराल," मार्जार, वृषदंशक, आखुभुक् ये ५ बिलार या बिल्ली के नाम हैं । गौधार, गौधेर, गौधेय ये ३ गोहके बच्चे या चन्दनगोह या बिसखोपड़ा के नाम हैं ॥ ६ ॥

साही साही पु. पु. स. न. न.

के लोम **श्वावित्तु शल्य (स्तल्लोम्नि) शलली शललं शलम् ।**

वातचारी मृग पु. पु. पु. पु. पु.

भेड़िया या बीग **वातप्रमीर्वातमृगः कोक ईहामृगो वृकः ॥ ७ ॥**

श्वावित्, शल्य ये २ साही या सेही के नाम हैं । उसके लोम में शलली, शलल, शल ये तीनों होते हैं ये ३ साही लोम के नाम हैं । वातप्रमी, वातमृग ये २ हवा के सामने दौड़नेवाले हिरन के नाम हैं । इनमें वातप्रमी पुंलिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग भी है । कोक, ईहामृग, वृक ये ३ भेड़िया या भ्यड़हा या बीगके नाम हैं ॥ ७ ॥

हरिण हरिणी पु. पु. पु. पु. पु.

के चाम आदि **मृगे कुरङ्गवातायुहरिणाजिनयोनयः ।**

हरिण के चाम पु.स.न. पु.स.न.

आदि **ऐणेयमेण्याश्चर्माद्यमेणस्यैण (मुभे त्रिषु) ॥ ८ ॥**

मृग, कुरङ्ग, वातायु "वानायु" हरिण, अजिनयोनि ये ५ हरिण के नाम हैं । हरिणी के चाम, हड्डी व मांस आदिको "ऐणेय" कहते हैं यह १ हिरनी के चाम आदिका नाम है और हिरन के चाम आदिको " ऐण " कहते हैं ये दोनों ऐणेय, ऐण तीनों लिङ्ग में रहते हैं यह १ हिरन के चाम आदि का नाम है ॥ ८ ॥

स. स. पु. पु. पु.

हरिणों के **कदली[1] कन्दली चीनश्चमूरुप्रियकावपि ।**

पु.

भेद **समूरु(श्चेति हरिणा अमी अजिनयोनयः) ॥ ९ ॥**

कदली, कन्दली, चीन[2], चमूरु, प्रियक, समूरु ये ६ हरिणों के भेद "अजिन-

---

१ रम्भावृक्षे च कदली पताकामृगभेदयोरिति (लान्तेषु मेदिनी) ॥

२ चीनो देशांशुकव्रीहिभेदे तन्तौ मृगान्तरे (इति मेदिनी) ॥

योनि" कहाते हैं अथवा ये ६ हरिण और वक्ष्यमाण कृष्णसार आदि "अजिनयो-नयः" कहलाते हैं क्योंकि ये चाम में उपकारी होते हैं ॥ ६ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

मृगभेद **कृष्णसाररुरुन्यङ्कुरङ्कुशंवररौहिषाः।**

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

गोकर्णपृषतैणर्श्यरोहिताश्चमरो (मृगाः) ॥ १० ॥

कृष्णसार, "कृष्णशार" रुरु, न्यङ्कु, रङ्कु, शंवर "संवर" रौहिष, रौहिट् (ष्) गोकर्ण, पृषत, "पृषत्, पृषती" ऐण, ऋश्य, "ऋष्य, रिष्य" रोहित, "रोहित्" लोहित, चमर ये १२ मृगभेद के नाम हैं ॥१०॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

मृग वा हरिण **गन्धर्वः शरभो रामः सृमरो गवयः शशः।**

भेद पशुजाति **(इत्यादयो मृगेन्द्राद्या गवाद्याः) पशुजातयः ॥ ११ ॥**

गन्धर्व, शरभ, "सरभ" राम, सृमर, गवय, शश ये ६ हरिणभेद के नाम हैं इनमें "गन्धर्व" यह गन्धविशिष्ट मृग का नाम है। "शरभ" यह लड़ीसरा या वानर विशेष का नाम है। "राम" यह रमणीयरूप मृगभेदका नाम है। "सृमर" यह भागनेवाले मृगका नाम है। "गवय" यह नीलगाह या वनगैयाका नाम है। "शश" यह खरहा का नाम है इत्यादि व मृगेन्द्रादि व गवादि ये पशुजातियां कहातीहैं यानी सिंह आदि चमर पर्यन्त जो शब्द व वक्ष्यमाण गवय, गो, मेढ़ा, हाथी, घोड़ा आदि शब्द हैं वे समस्त पशुशब्दवाच्य हैं ॥ ११ ॥

पु. पु. पु. स. स.

मूसा या चूहा, **उन्दुरुर्मूषिकोऽप्याखुर्गिरिका बालमूषिका।**

छोटे चूहे, पु. पु. स स.

गिरगिट **सरटः कृकलासः स्यान्मुशली गृहगोधिका ॥ १२ ॥**

उन्दुरु, "उन्दुर" मूषिक "मूषक, मूषी" आखु ये ३ मूसे या चूहे के नाम हैं। गिरिका, बालमूषिका ये २ छोटे जाति के चूहे या मुसरियों के नाम हैं। सरट, "सरट्-शरट" कृकलास या कृकुलास ये २ गिरगिट "गिरगिटान" के नाम हैं। मुसली, "मुशली-मुषली" गृहगोधिका "गृहगोधा, गृहालिका" ये २ छिपकली या बिस्तुइया के नाम हैं ॥ १२ ॥

स. पु. पु. पु.

मकड़ी **लूता (स्त्री) तन्तुवायोर्णनाभमर्कटकाः (समाः)।**

छोटे कीड़े पु पु. स. स.

कनखजूर **नीलङ्गु(स्तु)क्रिमिः कर्णजलौकाः शतपद्युभे ॥ १३ ॥**

लूता, तन्तुवाय "तन्त्रवाय" ऊर्णनाभ, "ऊर्णनाभि" मर्कटक ये ४ मकड़ी के नाम हैं । इनमें लूता स्त्रीलिङ्ग है और तन्तुवाय आदि तीनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । नीलङ्गु, "नीलाङ्गु" क्रिमि या कृमि ये २ सोनकीड़ा या छोटे कीड़े के नाम हैं । कर्णजलौकाः (कस्) शतपदी ये २ गोजर या खनखजूर के नाम हैं ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ १३ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

कीड़े, बीछी, **वृश्चिकः शूककीटः स्यादलिद्रुणौ (तु) वृश्चिके ।**

परेवा पु. पु. पु. पु.

बाज **पारावतः कलरवः कपोतो (ऽथ)शशादनः ॥ १४ ॥**

पु. पु. पु. पु. पु.

उल्लू, भर्दूल, **पत्त्री श्येन उलूके तु वायसारातिपेचकौ ।**

पु. पु. पु. पु.

खँड़रेचा **व्याघ्राटः (स्याद्भ)रद्वाजः खञ्जरीट (स्तु)खञ्जनः॥१५॥**

वृश्चिक, शूककीट ये २ ऊनके खानेवाले कीड़े या केचुआ के नाम हैं । अलि, अली, "आलि, आली" द्रुण "द्रोण" वृश्चिक ये ३ बिच्छू या बीछी के नाम हैं । इनमें आलि इदन्त व इन्नन्त भी है । पारावत, "पारापत" कलरव, कपोत ये ३ कबूतर या जङ्गली कबूतर के नाम हैं । शशादन, पत्त्री, श्येन ये ३ बाज (शिकरा) के नाम हैं । उलूक, वायसाराति, पेचक ये ३ उल्लू या घुग्घू के नाम हैं । व्याघ्राट, भरद्वाज और भारद्वाजभी ये २ लवा या भर्दूल के नाम हैं और खञ्जरीट, खञ्जन ये २ खँड़रैचा के नाम हैं ॥ १४ । १५ ॥

पु. पु. पु. पु.

उजली चील्ह नीलकण्ठ **लोहपृष्ठ(स्तु)कङ्कः(स्यादथ)चाषः किकीदिविः ।**

पु. पु. पु. पु.

भुजेंगा **कलिङ्गभृङ्गधूम्याटा(अथ)स्याच्छतपत्रकः ॥ १६ ॥**

पु. पु. पु. पु.

कठफोरवा पपीहा **दार्वाघाटो(थ)शारङ्गः स्तोककश्चातकः(समाः) ।**

पु. पु. पु. पु.

मुर्गा **कृकवाकुस्ताम्रचूडः कुक्कुटश्चरणायुधः ॥ १७ ॥**

लोहपृष्ठ, कङ्क ये २ उजली चील्ह के नाम हैं । चाष, 'चास' किकीदिवि, "किकि–दिवि" 'किकीदिव' ये २ नीलकण्ठ के नाम हैं । कलिङ्ग, भृङ्ग, धूम्याट ये ३

१ अथ शकाख्यो दिवान्धो वक्रनासिकः । हरिनेत्रो दिवाभीतो नखाशीपीयुषघरौ । काकभीरुर्नक्तचारी (इति त्रिकाण्डशेषः) ॥

भुजैटा या भुजेंगा के नाम हैं । शतपत्रक, दार्वाघाट ये २ कठफोरवा के नाम हैं । शारङ्ग, " सारङ्ग " स्तोकक, चातक ये ३ पपीहा के नाम हैं और कृकवाकु, ताम्रचूड, कुक्कुट, चरणायुध ये ४ मुर्गा के नाम हैं ॥ १६ । १७ ॥

पु. पु. स.

गगौंवा, गगैंया चटकः कलविङ्कः "स्या" "त्तस्य स्त्री" चटका (तयोः) ।

पु. स.

बच्चा, बच्ची (पुमपत्ये) चाटकैरः (स्त्र्यपत्ये) चटकैव (हि) ॥ १८ ॥

चटक, कलविङ्क ये २ गगौंवा " घल्पक्षी " के नाम हैं । उसकी स्त्रीको "चटका" कहते हैं यह १ गगैंया का नाम है । उन दोनों का बच्चा " चाटकैर " कहाता है और उनकी बच्ची को "चटका" कहते हैं यह १ छोटी गगैंया का नाम है ॥ १८ ॥

पु.स. पु. पु. पु.

कौड़िला कर्करेटुः करेटुः (स्यात्) कृकणक्रकरौ (समौ) ।

मुआचिड़ी पु. पु. पु. पु.

कोयल वनप्रियः परभृतः कोकिलः पिकः (इत्यपि) ॥ १९ ॥

कर्करेटु, " कर्कराटु " करेटु, " करटु " ये २ अशुभभाषी पक्षी या देशान्तरीय सारस या कौड़िला के नाम हैं । कृकण, क्रकर ये २ तीतरविशेष या मुआचिरई के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं और वनप्रिय, परभृत, कोकिल, पिक ये ४ कोकिला या कोयल के नाम हैं ॥ १९ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

कौवा काके (तु) करटारिष्टबलिपुष्टसकृत्प्रजाः ।

पु. पु. पु. पु. पु.

ध्वाङ्क्षात्मघोषपरभृद्बलिभुग्वायसा (अपि) ॥ २० ॥

काक, करट, अरिष्ट, बलिपुष्ट, सकृत्प्रज, ध्वांक्ष, आत्मघोष, परभृत, बलिभुक् और वायस ये १० कौवा के नाम हैं और अपि शब्द से "चिरञ्जीवी, एकदृष्टि, मौकुलि या मौकली ये भी ३ कौवा के नाम हैं ॥ २० ॥

पु. पु. पु. पु.

वनकौवा द्रोणकाक'स्तु' काकोलो दात्यूहः कालकण्ठकः ।

काला कौवा पु. पु. पु. पु. पु. पु.

चील, गीध, सुआ आतायिचिल्लौ दाक्षाय्यगृध्रौ कीरशुकौ (समौ) ॥ २१ ॥

---

१ वष्टिभागुरिरित्यल्लोपः ॥

२ स एव च चिरंजीवी चैकदृष्टिश्च मौकुलिः ॥

द्रोणकाक, "द्रोण"काकोल ये २ वनकौवा या डोमकौवा के नाम हैं। दात्यूह, कालकण्ठक ये २ कालेकौवा या जलकौवा के नाम हैं । आतायी "आतापी" चिल्लये २ चील्ह के नाम हैं । दाक्षाय्य, गृध्र ये २ गीध के नाम हैं और कीर, शुक ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ सुआ के नाम हैं आतायी से लेकर शुकपर्यन्त तीनों में 'समौ' इस पदकी योजना करना चाहिये ॥२१॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

कराकुल, बगला, सारस, चक्रवाक

क्रुङ् क्रौञ्चो (थ) बकः कह्वः पुष्कराह्वस्तु सारसः ।

पु. पु. पु. पु.

कोकश्चक्रश्चक्रवाको रथाङ्गाह्वयनामकः ॥ २२ ॥

क्रुङ्, क्रौञ्च, क्रुञ्चः, क्रुञ्चा ये २ कराकुल के नाम हैं । बक, कह्व ये २ बगुला के नाम हैं । पुष्कराह्व, सारस ये २ सारस के नाम हैं । कोक "कुक" चक्र, चक्रवाक, रथाङ्ग ये ४ चक्रवाक या चकवा चकई के नाम हैं यानी रथाङ्गचक्र के नाम वाले कहाते हैं ॥ २२ ॥

पु. पु. पु. पु.

बत्तख, कुररी, हंस

कादम्बः कलहंसः स्यादुत्क्रोशकुररौ (समौ) ।

पु. पु. पु. पु.

हंसा (स्तु) श्वेतगरुतश्चक्राङ्गा मानसौकसः ॥ २३ ॥

कादम्ब, कलहंस ये २ बत्तख के नामहैं । उत्क्रोश, कुरर "कुररी" ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ कुररी के नाम हैं और हंस, श्वेतगरुत, चक्राङ्ग, मानसौकस् ये ४ हंस के नामहैं ये बहुत्व की विवक्षा में बहुवचनान्तहैं ॥२३॥

पु.

राजहंस, हंसभेद, हंसविशेष

राजहंसा (स्तु ते चञ्चुचरणैर्लोहितैः सिताः) ।

पु. पु.

(मलिनै, र्मल्लिका(ख्यास्ते)धार्तराष्ट्राः(सितेतरैः)॥२४॥

लालवर्णवाले चोंच समेत चरणों से उपलक्षित जो हंस वे 'राजहंस' कहाते हैं यह १ राजहंसों का नाम है । कुछेक धूमिल वर्णवाले चोंच समेत चरणों से उपलक्षित जो हंस वे मल्लिकनामवाले कहाते हैं यह १ हंसभेद का नाम है और जो काले चोंच समेत चरणों से उपलक्षित हंस वे 'धार्तराष्ट्र' कहाते हैं यह १ काले चरण व चोंचवाले हंसविशेष का नाम है ये बहुत्व की विवक्षा में बहुवचनान्त हैं ॥२४॥

स. स. स. स. स.

आडी, बगुला भेद, हंसी, सारसी

शरारिराटिराडिश्च बलाकाबिसकण्ठिका ।

स. स.

हंसस्य योषिद्वरटा (सारसस्य तु) लक्ष्मणा ॥ २५ ॥

शरारि, "शरालि, शराली, शराति, शराटि, शराडि" आटि, आटी, आडि, आडी ये ३ आडीनामक पक्षीविशेष या देशान्तरीय तीतर के नाम हैं। ये तीनों रत्नकोष के प्रमाण से स्त्रीलिङ्ग में रहते हैं। बलाका, बिसकण्ठिका ये २ बगुला भेद के नाम हैं। हंस की स्त्री को "वरटा या वरटी" कहते हैं यह १ हंसी का नाम है और सारस की स्त्री को "लक्ष्मणा या लक्ष्मणा" कहते हैं यह १ सारस की स्त्री का नाम है॥ २५॥

स. स. स. स.

चमगीदड़ी, गीदड़ — **जतुकाऽजिनपत्रा 'स्या'त्परोष्णी तैलपायिका ।**

स. स. स. स. स.

मक्खी, मधुमक्खी — **वर्वणा मक्षिका नीला सरघा मधुमक्षिका ॥ २६ ॥**

जतुका "जतूका" अजिनपत्त्रा ये २ चमगीदड़ी या चमगूदरी पक्षिविशेष के नाम हैं। परोष्णी "परोष्टी" तैलपायिका ये २ गीदड़ या पंखसमेत कीड़े के नाम हैं। वर्वणा 'बर्बणा' मक्षिका, नीला या नीली ये ३ नीलमक्खी के नाम हैं और सरघा, मधुमक्षिका ये २ शहदमक्खी के नाम हैं॥ २६॥

स. स. पु. स.

पतङ्ग, वनमक्खी, मसा, बरै — **पतङ्गिका पुत्तिका 'स्या' द्दंश 'स्तु' वनमक्षिका ।**

स. स. पु.स.

दंशी(तज्जातिरल्पा स्याद्)गन्धोली वरटा(द्वयोः)॥२७॥

पतङ्गिका, पुत्तिका ये २ मधुमक्खी विशेष या पांखी के नाम हैं। दंश, वनमक्षिका ये २ वनमक्खी या डांस के नाम हैं। दंशी यह १ उन डांसों की जातिवाली छोटी मक्खी का नाम है या मसा का नाम है। गन्धोली, वरटा, वरटी, वरट ये २ बरों के नाम हैं इनमें "वरटा" स्त्रीलिङ्ग व पुंलिङ्ग में रहता है॥ २७॥

स. स. स. स.

झींगुर, फनिगा, जुगनू — **भृङ्गारी चीरुका चीरी झिल्लिका (च समा इमाः) ।**

पु. पु. पु. पु.

(समौ) पतङ्गशलभौ खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ॥ २८ ॥

भृङ्गारी, चीरुका, झीरुका, झिरुका, झीरिका, झीरीका, चीरी, चीरिका, झिल्लिका, चिल्लिका ये चारों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये ४ झींगुर के नाम हैं। पतङ्ग, शलभ ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ दीपपतङ्ग या फनिगा के नाम हैं और खद्योत, ज्योतिरिङ्गण ये दो जुगनू के नाम हैं॥ २८॥

पु. पु. पु. पु. पु.
भौंरा मधुव्रतो मधुकरो मधुलिण्मधुपालिनः ।
पु. पु. पु. पु. पु. पु.
द्विरेफपुष्पलिड्भृङ्गषट्पदभ्रमरालयः ॥ २६ ॥

मधुव्रत, मधुकर, मधुलिट्, मधुपा, अली, 'मधुपायी' द्विरेफ, पुष्पलिड्, भृङ्ग, षट्पद, भ्रमर और अलि ये ११ भ्रमर (भौंरा) के नाम हैं ॥ २६ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
मोर या मयूरो बर्हिणो बर्हीं नीलकण्ठो भुजङ्गभुक् ।
पु. पु. पु. पु.
मुरैला शिखावलः शिखी केकी मेघनादानुलास्य (पि)॥ ३० ॥

मयूर, बर्हिण, बर्हीं (र्हिन्) नीलकण्ठ, भुजङ्गभुक् (ज्) शिखावल, शिखी (खिन्) केकी (किन्) मेघनादानुलासी (सिन्) ये ६ मयूर के नाम हैं ॥ ३० ॥

मोर की बोली स. पु. पु.
चन्द्रिका केका (वाणी मयूरस्य) (समौ) चन्द्रकमेचकौ ।
चोटी स. स. पु. न. न.
पंख शिखा चूडा शिखण्डश्च पिच्छबर्हे (नपुंसके)॥ ३१ ॥

मोर की वाणी (बोली) को 'केका' कहते हैं यह १ मोर की वाणी का नाम है । चन्द्रक, मेचक ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ मोरपङ्ख की चन्द्रिका के नाम हैं । शिखा, चूडा ये २ मोर की चोटी या शिखा के नाम हैं और शिखण्ड, पिच्छ, बर्ह ये ३ मोरपङ्ख के नाम हैं इनमें पिच्छ, बर्ह ये दोनों नपुंसक में रहते हैं ॥ ३१ ॥.

पु. पु. पु. पु. पु.
पक्षिमात्र खगे विहंगविहगविहंगमविहायसः ।
पु. पु. पु. पु. पु. पु.
शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनद्विजाः ॥ ३२ ॥
पु. पु. पु. पु. पु. पु.
पतत्त्रिपत्त्रिपतगपतत्पत्त्ररथाण्डजाः ।
पु. पु. पु. पु. पु. पु.
नगौको वाजिविकिरविविष्किरपतत्त्रयः ॥ ३३ ॥
पु. पु. पु. पु.
नीडोद्भवा गरुत्मन्तः पित्सन्तो नभसंगमाः ।

खग, विहङ्ग, विहग, विहङ्गम, विहायाः (यस्) शकुन्ति, पक्षी (क्षिन्) शकुनि, शकुन्त, शकुम, द्विज, पतत्त्री, पत्त्री (त्रिन्) पतग, पतन् (तृ) पत्त्ररथ, अण्डज, नगौकाः (कस्) वाजी (जिन्) विकिर, वि, विष्किर, पतत्रि, नीडोद्भव, गरुत्मान्, पित्सन् और नभसङ्गम ये २७ पक्षीमात्र के नाम हैं इनमें विहायस्, नगौकस् ये २ सान्त हैं शकुन्ति इकारान्त है, शकुन्त अकारान्त है, वि इकारान्त, पतत्त्री-पत्त्री इन्नन्त हैं, पतन्-पित्सन् ये शत्रन्त हैं ॥ ३२ । ३३ । ३ ॥

पु. पु. पु. पु.

हारिल, जलमुर्गा, बत्तख, तीतर, बनमुर्गा, लवा, चकोर, बटेर आदि

(तेषां विशेषा) हारीतो मद्गुः कारण्डवः प्लवः ॥ ३४ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

तित्तिरिः कुक्कुभो लावो जीवंजीवश्चकोरकः ।

पु. पु. पु. स.

कोयष्टिकष्टिट्टिभको वर्तको वर्तिका (दयः) ॥ ३५ ॥

अब इन्हींके बीच विशेषभेदों को कहते हैं—'हारीत' यह १ हारिल का नाम है। मद्गु यह १ जलकौवा या जलमुर्गा का नाम है। कारण्डव, प्लव ये २ बत्तख के नाम हैं इनमें कौवा के समान चोंच, दीर्घ पैरवाले काले पक्षी को 'कारण्डव' कहते हैं। तित्तिर या तित्तिरि यह १ तीतर का नाम है। कुक्कुभ यह १ बनमुर्गा का नाम है। लाव यह १ लवा पक्षी का नाम है। जिसके दर्शन से विष का विनाश होता और जीव को जिलाता है इसलिये वह जीवंजीव कहाता है यह १ मोरपंख के समान पंखवाले पक्षीविशेष का नाम है व अथवा जीवंजीव, चकोरक या कोरक ये २ चकोर पक्षी के नाम हैं। कोयष्टिक, टिट्टिभक, "टिटिभक" ये २ टिटहरी के नाम हैं और वर्तक, वर्तका, वर्तिका ये २ बटेर के नाम हैं। आदि शब्द से सारिका व कपिञ्जल आदि पक्षियों को जानना चाहिये ॥ ३४ । ३५ ॥

पु. पु. पु.न. न. न. न.

पंख, पंख की जड़, चोंच

गरुत्पक्षच्छदाः पत्त्रं पतत्त्रं (च) तनूरुहम् ।

स. न. स. स.

(स्त्री) पक्षतिः पक्षमूलं चञ्चुस्त्रोटिरुभे (स्त्रियौ) ॥ ३६ ॥

गरुत्, पक्ष, 'पक्षत्' छद, पत्त्र, पतत्त्र, तनूरुह ये ६ पंख या पखना के नाम हैं। इनमें गरुत् पुंलिङ्ग है, अदन्तपक्ष पुंनपुंसक होकर सान्त भी है और छद पुंनपुंसक है। पक्षति, पक्षमूल ये २ पंख की जड़ के नाम हैं। इनमें पक्षति या पक्षती स्त्रीलिङ्ग है और चञ्चु, त्रोटि ये २ चोंच के नाम हैं ये दोनों स्त्रीलिङ्ग में रहते हैं। इनमें चञ्चु उदन्त और चञ्चू ऊदन्त भी है त्रोटि इदन्त और त्रोटी ईदन्त भी कहाता है ॥ ३६ ॥

न. न. न.
उड़ना प्रडीनोड्डीनसंडीनान्येताः (खगगतिक्रियाः)।
अण्डा स. पु. न. पु. पु.न.
घोंसला पेशीकोषो(द्विहीनो)ऽण्डं कुलायो नीड(मस्त्रियाम्)३७॥

प्रडीन, उड्डीन, संडीन ये ३ पक्षियों (चिड़ियों) की गति की क्रिया या गमनविशेष के नाम हैं। इनमें तिरीछे गमन को 'प्रडीन' ऊपर के गमन को 'उड्डीन' और बारंबार के गमन को 'संडीन' कहते हैं। पेशी 'पेशि' कोष, कोश, "पेशीकोष" अण्ड ये ३ अण्डा के नाम हैं इनमें 'पेशी' स्त्रीलिङ्ग, 'कोश' पुंलिङ्ग और 'अण्ड' नपुंसक में रहता है। कुलाय, नीड ये २ पक्षियों के घर या घोंसला के नाम हैं इनमें "कुलाय" पुंलिङ्ग और नीड पुंनपुंसक में रहता है॥ ३७॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
बच्चे पोतः पाकोऽर्भको डिम्भः पृथुकः शावकः शिशुः।
नरमादा न. न. न. न. न.
दो (स्त्रीपुंसौ) मिथुनं द्वन्द्वं युग्मं (तु) युगलं युगम्॥ ३८॥

पोत, पोती, पाक, पाका, अर्भक, अर्भका, डिम्भ, डिम्भा, पृथुक, पृथुका, शावक, शिशु ये ७ चिड़ियों के बच्चे या बच्चेमात्र के नाम हैं। स्त्रीपुंस, मिथुन, द्वन्द्व ये ३ स्त्रीपुरुष के जोड़े या नरमादा के नाम हैं और युग्म, युगल, युग ये ३ दो के नाम हैं॥ ३८॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
समूह या झुण्ड समूहनिवहव्यूहसन्दोहविसरव्रजाः।
पु. पु. पु. पु. पु. पु. पु.
स्तोमौघनिकरव्रातवारसंघातसंचयाः॥ ३९॥
पु. पु. पु. पु. पु.
समुदायः समुदयः समवायश्चयो गणः।
स. न. न. न.
(स्त्रियान्तु) संहतिर्वृन्दं निकुरम्बं कदम्बकम्॥ ४०॥

समूह, निवह, व्यूह, सन्दोह, विसर, व्रज, स्तोम, ओघ, निकर, व्रात, वारसंघात, संचय, समुदाय, समुदय, समवाय, चय, गण, संहति, वृन्द, निकुरम्ब और कदम्बक ये २२ समूह या झुण्ड के नाम हैं इनमें संहति स्त्रीलिङ्ग में रहता है। वृन्द, निकुरम्ब और कदम्बक ये ३ नपुंसकलिङ्ग हैं॥ ३९। ४०॥

पु. पु. पु.
समूहविशेष (वृन्दभेदाः) समैर्वर्गः सङ्घसार्थौ (तु) (जन्तुभिः) ।
न. पु.न.
(सजातीयैः) कुलं यूथं (तिरश्चां) पुंनपुंसकम् ॥ ४१ ॥

अब समूहों के विशेषभेद कहते हैं—सजातीय प्राणियों या अप्राणियों के समूह को 'वर्ग' कहते हैं। जैसे "मनुष्यवर्ग, शैलवर्गः" कहाता है। फिर सजातीय, विजातीय प्राणियों के समूह को सङ्घ या सार्थ कहते हैं जैसे 'पशुसङ्घः वणिक्सार्थः' फिर सजातीय जन्तुओं के समूह को 'कुल' कहते हैं जैसे "विप्रकुलम्" और टेढ़े जन्तुओं केही सजातीय समूह को 'यूथ' कहते हैं जैसे "मृगयूथम्" कहा जाता है यह 'यूथ' पुंनपुंसक लिङ्ग में रहता है ॥ ४१ ॥

पु. पु.
पशुसमूह (पशूनां) समजो (न्येषां) समाजो (थ सधर्मिणाम्) ।
अन्यसमूह पु. पु. पु.स. पु. पु.न.
सधर्मिसमूह अनाज का ढेर (स्या) न्निकायः पुञ्जराशी तूत्करः कूट (मस्त्रियाम्) ॥ ४२ ॥

पशुओं के समूह को 'समज' कहते हैं। औरों के समूह को यानी पशुओं से भिन्नों के समुदाय को 'समाज' कहते हैं जैसे "श्रोत्रियसमाजः, क्षत्रियसमाजः" वेदपाठी ब्राह्मणों के समुदाय को 'श्रोत्रियसमाज' और क्षत्रियों के समूह को 'क्षत्रियसमाज' कहते हैं। सधर्मियों (एक धर्मवालों) के समूह को "निकाय" कहते हैं जैसे "विप्रनिकायः" बुद्धिमान् ब्राह्मणों के समूह को 'विप्रनिकाय' कहते हैं यह वृन्द भेदों का अलग २ निरूपण किया गया पुञ्ज, "पिञ्ज, पुञ्जि" राशि उत्कर, कूट ये ४ अनाज आदि के ढेर के नाम हैं इन में 'कूट' पुंनपुंसक में रहता है ॥ ४२ ॥

कबूतर,सुवा,मोर, न. न. न. न.
तीतर आदि का कापोतशौकमायूरतैत्तिरा (दीनि तद्गणे) ।
समुदाय पु. पु.
पलाऊपक्षी,हिरन (गृहासक्ताः पक्षिमृगा) श्छेका (स्ते) गृह्यका (श्च ते) ४३ ॥

इति सिंहादिवर्गः ॥

उन कबूतर, सुवा, मोर, तीतर आदिकों के समुदाय में कापोत, शौक, मायूर और तैत्तिर आदि होते हैं जैसे कपोतों के समूहको "कापोत" कहते हैं यह १ कबूतरों के समूहका नाम है। सुवाओं के समूह को "शौक" कहते हैं यह १ सुवा समूह का नाम है। मोरों के समूहको "मायूर" कहते हैं यह १ मोरसमूहों का नाम है। तीतरों के समूह को "तैत्तिर" कहते हैं यह १ तीतरसमूह का नाम है। आदि शब्द से कौवों के समूह को "काक" कहते हैं यह १ काकसमूह का नाम

है। बटेरों के समूह को "वार्तक" कहते हैं यह १ बटेरसमूहका नाम है। उलूकों के समूह को "औलूक" कहते हैं यह १ उल्लूसमुदाय का नाम है और जो घरमें आसक्त हैं यानी खेलने के लिये पिंजरा आदि में रक्खेगये हैं वे पक्षी और मृग "छेक" और "गृह्यक" कहाते हैं। ये पुंलिङ्ग होकर बहुत्व की विवक्षा में बहुवचनान्त और एकत्वकी विवक्षा में एकवचनान्त हैं ॥ ४३ ॥

इति सिंहादिवर्गविवरणम् ॥

अथ मनुष्यवर्गो व्याख्यायते।

पु. पु. पु. पु. पु. पुं.

मनुष्य या पुरुषमात्र **मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः।**

पु. पु. पु. पु. पु.

(स्युः) पुमांसः पञ्चजनाः पुरुषाः पूरुषा नरः ॥ १ ॥

मनुष्य, मानुष, मर्त्य, मनुज, मानव, नर ये ६ मनुष्यमात्र के नाम हैं। ये एकत्व की विवक्षा में एकवचनान्त और बहुत्व की विवक्षा में बहुवचनान्त रहते हैं। पुमान्, पञ्चजन, पुरुष, पूरुष, ना ये ५ मनुष्यजाति में पुरुष के नाम हैं। अथवा कितेक आचार्यों के मत में ये ११ मनुष्यों के नाम हैं इनमें मनुष्य व मानुष शब्द से ङीष् व ङीप् करने पर मनुषी व मानुषी ये प्रयोग होते हैं ॥ १ ॥

स. स. स. स. स. स. स.

स्त्रीमात्र **स्त्री योषिदबला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः।**

स. स. स. स.

प्रतीपदर्शिनी वामा वनिता महिला(तथा) ॥ २ ॥

स्त्री, योषित्, 'जोषित्' "योषिता, जोषिता" अबला, "योषा, जोषा" नारी, सीमन्तिनी, वधू, प्रतीपदर्शिनी, वामा, वनिता, महिला, "महीला, महेला" ये ११ स्त्रीमात्र के नाम हैं ॥ २ ॥

स. स. स. स.

विशेष स्त्रियां **(विशेषा)स्त्वङ्गना भीरुः कामिनी वामलोचना।**

स. स. स. स. स.

प्रमदा मानिनी कान्ता ललना(च)नितम्बिनी ॥ ३ ॥

स. स. स. स. स.

कोपवती **सुन्दरी रमणी रामा कोपना(सैव)भामिनी।**

स. स. स. स.

बहुत उत्तम **वरारोहामत्तकाशिन्युत्तमा वरवर्णिनी ॥ ४ ॥**

---

१ शीते सुखोष्णसर्वाङ्गी ग्रीष्मे या सुखशीतला। भर्तृभक्ता च या नारी सा भवेद्वरवर्णिनी (इति रुद्रः) ॥

अब स्त्रियों के विशेष भेद कहते हैं—"अङ्गना" यह १ अच्छे अङ्गवाली स्त्री का नाम है। "भीरु" यह १ डरपुतही स्त्री का नाम है। "कामिनी" यह १ कामयुत स्त्री का नाम है। "वामलोचना" यह १ सुन्दर नयनोंवाली का नाम है। "प्रमदा" यह १ बहुत कामवाली का नाम है। "मानिनी" या "भाविनी" यह १ प्रणयकोपवाली का नाम है। "कान्ता" यह १ मन हरनेवाली का नाम है। "ललना" यह १ लाड़िली लुगाई का नाम है और "नितम्बिनी" यह १ कटि के पीछे सुन्दर या मोटे भाग की रखनेहारी का नाम है। "सुन्दरी या सुन्दरा" यह १ सुन्दर अङ्गवाली का नाम है। "रमणी, रमणा" यह १ क्रीड़ा को प्रिय करनेवाली का नाम है। "रामा, रमा" यह १ खेलने या खेलानेवाली का नाम है। "कोपना, कोपिनी" भामिनी ये २ कोप करनेवाली के नाम हैं। "वरारोहा" मत्तकाशिनी, 'मत्तकासिनी' "मत्तकाषिणी" उत्तमा, वरवर्णिनी ये ४ बहुतही उत्तम या गुणों से बड़ी मर्यादावाली के नाम हैं॥ ३। ४॥

स. स.

पटरानी अन्यरानी (कृताभिषेका) महिषी भोगिन्यो (ऽन्या नृपस्त्रियः)।

जिस राजा की स्त्री का अभिषेक हुआ है उसे "महिषी" कहते हैं यह १ पटरानी का नाम है। जिन राजा की स्त्रियों का अभिषेक नहीं हुआ है उन्हें "भोगिन्यः" कहते हैं यह एकत्व की विवक्षा में एकवचनान्त और बहुत्व की विवक्षा में बहुवचनान्त बना रहता है॥ ५॥

स. स. स. स.

ब्याही पत्नी पाणिगृहीती(च)द्वितीया सहधर्मिणी॥ ५॥

स. स. पु. ब. स.

पतिपुत्रवती भार्या जाया (थ पुंभूम्नि) दाराः(स्यात्तु) कुटुम्बिनी।

स. स. स. स. स.

पतिव्रता पुरन्ध्री सुचरित्रा (तु) सती साध्वी पतिव्रता॥ ६॥

पत्नी, पाणिगृहीती, द्वितीया, सहधर्मिणी, "सधर्मिणी" भार्या, जाया, दारा ये ७ ब्याही स्त्री के नाम हैं इनमें दारा पुंलिङ्ग व नित्य बहुवचनान्त होकर टाबन्त एकवचनान्त भी है। कुटुम्बिनी, पुरन्ध्री, 'पुरन्धि' ये २ पतिपुत्रादिवती स्त्री के नाम हैं। सुचरित्रा, सती, साध्वी, पतिव्रता ये ४ पतिव्रता के नाम हैं॥ ५। ६॥

स. स. स. स.

सवति स्वयं पतिकी कृतसपत्निकाऽध्यूढाऽधिविन्ना(ऽथ) स्वयंवरा।

स. स. स. स.

चाहनेवाली कुलवती पतिंवरा(च)वर्या(च) कुलस्त्री कुलपालिका॥ ७॥

कृतसपत्निका, "कृतसापत्निका, कृतसापत्नका" अध्यूढा, अधिविन्ना ये ३ अनेक ब्याह करनेवाले पुरुष की जो पहिली विवाहित स्त्री है उसके नाम हैं। स्वयंवरा, पतिंवरा, वर्या ये ३ जो अपनी चाहना से पतिको स्वीकार करती है उसके नाम हैं। कुलस्त्री, कुलपालिका "कुलपाली" ये २ व्यभिचार के बचाने से कुलकी रक्षा करनेवाली के नाम या कुलवती स्त्री के नाम हैं ॥ ७ ॥

स. स. स. स. स.

कन्या — **कन्या कुमारी गौरी (तु) नग्निकाऽनागतार्तवा ।**

अदृष्ट रजोवती — स. स. स. स.

दृष्टरजोवतीयुवती — **(स्या) न्मध्यमा दृष्टरजास्तरुणी युवतिः (समे)॥ ८ ॥**

कन्या "कन्यका" कुमारी "कुमारिका" ये २ प्रथम वय में वर्तमान कन्या के नाम हैं। गौरी, नग्निका, अनागतार्तवा ये ३ अदृष्टरजवाली कन्या के नाम हैं। मध्यमा, दृष्टरजा ये २ प्रथम रजोवती के नाम हैं। तरुणी "तलुनी" युवति, "युवती, यूनी" ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ युवती (जवान) स्त्री के नाम हैं ॥ ८ ॥

बहू, सुवासिनी, — स. स. स. स. स.

धनादीच्छा- — **(समाः) स्नुषा जनी वध्वश्चिरण्टी (तु) सुवासिनी ।**

वती, मैथुनेच्छा- — स. स. स. स.

वती — **इच्छावती कामुका (स्याद्) वृषस्यन्ती (तु) कामुकी ॥ ९ ॥**

स्नुषा, जनी, वधू "वधु" ये तीनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये ३ पुत्रआदि की भार्या (बहू या पतोहू) के नाम हैं। चिरण्टी, "चिरिण्टी, चरिण्टी, चरण्ठी" सुवासिनी, "स्ववासिनी" ये २ कुछ युवती ब्याही पिता के घर रहती हुई स्त्री के नाम हैं। इच्छावती, कामुका ये २ धनादि की अभिलाषावाली के नाम हैं। वृषस्यन्ती, कामुकी ये २ बैल या घोड़े के समान मैथुन की चाहने वाली के नाम हैं ॥ ९ ॥

स.

संकेतगामिनी — **(कान्तार्थिनी तु या याति संकेतं सा) ऽभिसारिका ।**

स. स. स. स. स. स.

स्वैरिणी अपुत्रा — **पुंश्चली चर्षिणी बन्धक्यसती कुलटेत्वरी ॥ १० ॥**

स. स. स.

पतिपुत्रवती — **स्वैरिणी पांशुला (च) स्यादशिश्वी (शिशुना विना) ।**

स. स. स.

विधवा — **अवीरा (निष्पतिसुता) विश्वस्तोविधवे (समे) ॥ ११ ॥**

---

१ "विश्वस्ताविधवे तुल्ये विशस्ता पतिनी च सा" (इति वाचस्पतिः) ॥

जो कान्तार्थिनी होती हुई संकेत स्थान को जाती है उसे "अभिसारिका" कहते हैं यह १ भर्ता की चाहना से रतिस्थान में जानेवाली का नाम है या जो पति की इच्छा से कामार्ता होकर इशारे को जाती है उसका नाम है। पुंश्चली, चर्षिणी, "धर्षणी, धर्षिणी" बन्धकी, असती, कुलटा, इत्वरी, स्वैरिणी, पांशुला, 'पांसुला' ये ८ स्वैरिणी (छिनारि) के नाम हैं। जो विना पुत्रकी स्त्री है उसे 'अशिश्वी' कहते हैं यह १ पुत्ररहित स्त्री का नाम है। जो पति, पुत्र से विहीन स्त्री है उसे 'अवीरा' कहते हैं यह १ विना पति पुत्र की स्त्री का नाम है और "पतिपुत्रवती वीरा" (इति नाममाला) इस कोष के प्रमाण से पतिपुत्रवती को 'वीरा' कहते हैं। विश्वस्ता, "विश्वस्था" विधवा ये दोनों समानार्थक व समानलिङ्ग होकर बने रहते हैं ये २ विधवा या रांड़ के नाम हैं॥ १०। ११॥

सखी सुहागिन बूढ़ी बुद्धिमती　स.　स.　स.　स.　स.
आलिः सखी वयस्या (च) पतिवत्नी सभर्तृका।

महामतिमती　स.　स.　स.　स.　स.　स.
वृद्धा पलिक्नी प्रज्ञा (तु) प्राज्ञी प्राज्ञा (तु) धीमती॥१२॥

आलि, "आली" सखी, वयस्या ये ३ सहेली या सखी के नाम हैं। पतिवत्नी, सभर्तृका ये २ जीते पतिवाली स्त्री के नाम हैं। वृद्धा, पलिक्नी "पलिता" ये २ बूढ़ी या पके केशवाली के नाम हैं। प्रज्ञा, प्राज्ञी ये २ आपही जाननेवाली या बुद्धिमती स्त्री के नाम हैं। प्राज्ञा, धीमती ये २ बड़ी बुद्धिवाली के नाम हैं॥ १२॥

सजातीय　स.　स.
शूद्री (शूद्रस्य भार्या स्यात्) शूद्रा (तज्जातिरेव च)।

विजातीय अहिरिन　स.　स.
आभीरी (तु) महाशूद्री (जातिपुंयोगयोःसमा)॥१३॥

जो शूद्रकी सजातीय भार्या है उसे 'शूद्री' कहते हैं यह १ शूद्रकी सजातीय भार्या का नाम है और जो शूद्रजाति की अन्य भार्या है उसे 'शूद्रा' कहते हैं यह १ शूद्रकी विजातीय भार्या का नाम है। आभीरी, महाशूद्री ये २ अहिरिन के नाम हैं ये दोनों जाति और पुंयोग में समानार्थक होकर समानलिङ्ग रहते हैं॥ १३॥

बनियाइनि क्षत्रियाइनि　स.　स.　स.　स.
अर्याणी स्वयमर्या (स्यात्) क्षत्रिया क्षत्रियाण्यपि।

पढ़ानेवाली स्वयंव्याख्यात्री　स.　स.　स.
उपाध्यायाप्युपाध्यायी स्यादाचार्यापि (च स्वतः)॥१४॥

अर्याणी, अर्या ये २ वैश्यजाति में उपजी स्त्री के नाम हैं यानी आप वैश्यजाति होकर जिस किसीकी भार्या हो ऐसा अर्थ करना चाहिये। एवं क्षत्रिया, क्षत्रियाणी

ये २ क्षत्रियजाति में उपजी जिस किसीकी भार्या के नाम हैं। उपाध्याया, उपाध्यायी ये २ पढ़ानेवाली के नाम हैं यानी जो आप पढ़ाती है उसके नाम हैं। जो आपही मन्त्र की व्याख्या करती है उसे 'आचार्या' कहते हैं यह १ स्वयं मन्त्र व्याख्या करनेवाली का नाम है ॥ १४ ॥

आचार्यपत्नी, वैश्यपत्नी, क्षत्रियपत्नी — स. स. स.
आचार्यानी (तु पुंयोगे) स्यादर्यी क्षत्रियी(तथा)।
पण्डिताइनि, स्त्रीपुंसलक्षणवती — स. स. स.
उपाध्यायान्युपाध्यायी पोटा(स्त्रीपुंसलक्षणा) ॥ १५ ॥

आचार्य की भार्या को 'आचार्यानी' कहते हैं यह १ आचार्यपत्नी का नाम है। अर्य की भार्या को 'अर्यी' कहते हैं यह १ अन्यजातिवाली वैश्यभार्या का नाम है। क्षत्रिय की भार्या को 'क्षत्रियी' कहते हैं यह १ अन्य जातिवाली क्षत्रियभार्या का नाम है। उपाध्यायानी, उपाध्यायी ये २ पढ़ानेवाले की भार्या के नाम हैं। स्त्री पुरुषों के लक्षणोंवाली स्त्री को 'पोटा' कहते हैं यह १ स्तन, मूछ, दाढ़ी आदि चिह्नोंवाली स्त्री का नाम है ॥ १५ ॥

वीर की स्त्री, वीर की माता — स. स. स. स.
वीरपत्नी वीरभार्या वीरमाता (तु) वीरसूः।
लड़के की उपजानेवाली — स. स. स. स.
जातापत्या प्रजाता (च) प्रसूता (च) प्रसूतिका ॥ १६ ॥

वीरपत्नी, वीरभार्या ये २ वीरभार्या के नाम हैं। वीरमाता, वीरसू ये २ वीर की माता के नाम हैं। जातापत्या, प्रजाता, प्रसूता, प्रसूतिका ये ४ लड़के उपजाने वाली (सौरिही) के नाम हैं ॥ १६ ॥

नङ्गी दूती — स. स. स. स.
(स्त्री) नग्निका कोटवी (स्याद्) दूतीसंचारिके (समे)।
आधी बूढ़ी रांड — स.
कात्याय(न्यर्धवृद्धा या कषायवसनाधवा) ॥ १७ ॥

नग्निका, कोटवी, "कोट्टवी, कोटरी, कोटरा" ये २ नंगी स्त्री के नाम हैं। दूती, दूति, संचारिका ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं। ये २ दूती के नाम हैं। आधी बूढ़ी गेरुवा वस्त्रवाली विधवा स्त्री को "कात्यायनी" कहते हैं यह १ अधवयसू गेरुवे वस्त्रों की पहननेवाली पतिहीन स्त्री का नाम है ॥ १७ ॥

लौंडी — स.
सैरन्ध्री[1] (परवेश्मस्था स्ववशा शिल्पकारिका)।
जवान लौंडी — स.
असिक्नी (स्यादवृद्धा या प्रेष्यान्तःपुरचारिणी) ॥ १८ ॥

---

[1] "अन्तःपतिकलाभिज्ञा शीलरूपादिसेविनी। प्रसाधनोपचारज्ञा सैरन्ध्री परिकीर्तिता" (इति कात्यः) ॥

जो पराये घर में टिकी हुई अपने वश में रहकर शृङ्गार आदि की करनेवाली स्त्री हो उसे सैरन्ध्री, स्वैरन्ध्री या सैरिन्ध्री कहते हैं यह १ लौंडी या सेवकिन का नाम है। जो बूढ़ी न होकर आज्ञा को पालती हुई रनिवास में रहती हो उसे असिक्नी या 'असिता' कहते हैं यह १ ज्वानी लौंडी का नाम है ॥ १८ ॥

स. म. स. स.

वेश्या **वारस्त्री गणिका वेश्या रूपाजीवा(ऽथ)साजनैः।**

स. स. स.

प्रधानवेश्या कुटनी **सत्कृता वारमुख्या(स्यात्) कुट्टनी शम्भली(समे)१६॥**

वारस्त्री, गणिका, वेश्या, "वेष्या" रूपाजीवा ये ४ वेश्या (रण्डी) के नाम हैं। वही वेश्या गुणों के कारण जनों से सत्कार को पाती हुई वारमुख्या कहाती है यह १ प्रधान वेश्या का नाम है। कुट्टनी, "कुटनी," शंभली "संभली" ये २ कुटनी के नाम हैं ॥ १६ ॥

स. स. स. स.

शुभाशुभज्ञा, **विप्राश्निका त्वीक्षणिका दैवज्ञा(थ)रजस्वला।**

स. स. स. स. स.

रजस्वला **स्त्रीधर्मिण्यविरात्रेयी मलिनी पुष्पवत्यपि ॥ २० ॥**

स. स. न. न. न.

स्त्रीरज **ऋतुमत्यप्युदक्यापि स्याद्रजः पुष्पमार्तवम्।**

विप्रश्निका, ईक्षणिका, दैवज्ञा ये ३ शुभाशुभ की जाननेवाली के नाम हैं। रजस्वला, स्त्रीधर्मिणी, अवी, 'अवि' आत्रेयी, मलिनी, पुष्पवती, ऋतुमती, उदक्या ये ८ रजस्वला के नाम हैं। रजः (जस्) रज, पुष्प, आर्तव ये ३ स्त्रीरज के नाम हैं ॥ २० । ½ ॥

स. स. स. स.

गर्भिणी की अभिलाषा बिना रजकी **श्रद्धालुर्दोहदवती निष्कला विगतार्तवा ॥ २१ ॥**

श्रद्धालु, दोहदवती ये २ गर्भ के वश से अन्न आदि विशेष अभिलाषावाली के नाम हैं। निष्कला, "निष्कली, निष्फला, निष्फली" विगतार्तवा ये २ रजविहीन स्त्री के नाम हैं ॥ २१ ॥

स. स. स. स.

गर्भिणी **आपन्नसत्त्वा (स्याद्) गुर्विण्यन्तर्वत्नी (च)गर्भिणी।**

न. न. न.

गणिकासमूह गर्भिणीसमूह युवतीसमूह **(गणिकादेस्तु) गाणिक्यं गार्भिणं यौवतं(गणे)॥२२॥**

आपन्नसत्त्वा, गुर्विणी, अन्तर्वत्नी, गर्भिणी ये ४ गर्भिणी स्त्री के नाम हैं।

गणिका आदि के समूह में 'गाणिक्य' आदि होते हैं जैसे गणिका के समूह 'गाणिक्य' कहते हैं यह १ गणिकासमूह का नाम है । गर्भिणी के समूह को 'गार्भिण' कहते हैं यह १ गर्भिणीसमूह का नाम है और युवतीसमूह को 'यौवत' कहते हैं यह १ युवतीगण का नाम है ॥ २२ ॥

स. स. पु.
उढ़री पुनर्भूर्दिधिषू (रूढा द्वि) स्तस्या दिधिषूः (पतिः) ।
उढ़रा पु.
उढ़रा विशेष (सतुद्विजो)ऽग्रे[1]दिधिषूः(सैव यस्य कुटुम्बिनी) ॥ २३ ॥

जो दो बार ब्याही गई हो उसे 'पुनर्भू' और 'दिधिषू' या 'दिधिषु' भी कहते हैं ये २ पहले एककी स्त्री होकर फिर किसी अन्य की भार्या होती है उस के नाम हैं । उस दो बेर ब्याही स्त्री के स्वामी को 'दिधिषू' कहते हैं यह १ उढ़री के पति का नाम है वह 'पुनर्भू' जिस द्विज के कुटुम्ब आदि पोष्यवर्ग की पालिका हो वह 'अग्रेदिधिषू' कहाता है यहां द्विज शब्द से तीनों वर्णों का ग्रहण किया जाता है ॥ २३ ॥

पु. पु. पु.
कन्यापुत्र कानीनःकन्यकाजातः(सुतोथ)सुभगासुतः ।
सुभगासुत पु. पु.
परस्त्रीसुत सौभागिनेयःस्यात्पारस्त्रैणेय (स्तु परस्त्रियाः) ॥ २४ ॥

कानीन, कन्यकाजात ये २ विना ब्याही कन्याके पुत्र के नाम हैं इनमें 'कानीन' यह हेमकोष के प्रमाण से कर्ण व व्यास का भी नाम कहाजाता है और स्त्रीलिङ्ग में 'कानीनी' होता है । सुभगासुत, सौभागिनेय ये २ सुभगा पुत्र के नाम हैं । जो परस्त्री का पुत्र है उसे 'पारस्त्रैणेय' कहते हैं यह १ परस्त्री के पुत्रका नाम है ॥ २४ ॥

पु. पु.
बुआ के पुत्र पैतृष्वसेयः"स्या"त्पैतृष्वस्रीयश्च(पितृष्वसुः) ।
मौसी के पुत्र
सौतेली मा के पु. पु.
पुत्र सुतो(मातृष्वसुश्चैवं) वैमात्रेयो विमातृजः ॥ २५ ॥

पैतृष्वसेय, पैतृष्वस्रीय ये २ बुआ या फूफू के लड़के के नाम हैं । मातृष्वसेय, मातृष्वस्रीय ये २ मौसी के लड़के के नाम हैं । वैमात्रेय, विमातृज ये २ सौतेली मा के लड़के के नाम हैं ॥ २५ ॥

पु. पु. पु.
कुलटापुत्र (अथ)बान्धकिनेयः(स्याद्ब)न्धुलश्चासतीसुतः ।

---

१ ज्येष्ठायां यद्यनूढायां कन्यायामुह्यतेऽनुजा । सा चाग्रे दिधिषूर्ज्ञेया पूर्वा तु दिधिषूर्मता (इति मनुः) ॥

पु. पु.

भिक्षुकीपुत्र कौलटेयः कौलटेरो(भिक्षुकी तु सती यदि) ॥ २६ ॥

पु. पु.

तदा कौलटिनेयो(ऽस्याः)कौलटेयो(पि चात्मजः)।

बान्धकिनेय, बन्धुल, असतीसुत, कौलटेय, कौलटेर ये ५ कुलटापुत्र के नाम हैं इनमें कौलटेय व कौलटेर ये स्त्रीलिङ्ग में कौलटेयी व कौलटेरा कहाते हैं और जो सती भिक्षुकी (भिखारिन) होजावे तो इसके सन्तान को कौलटिनेय या कौल-टेय कहते हैं ये २ जार को छोड़कर भीख मांगने के लिये जो कुलमें जाती है उस कुलटाके पुत्र के नाम हैं॥ २६ । ½ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

पुत्र आत्मजस्तनयःसूनुः सुतः पुत्रः स्त्रियां त्वमी ॥ २७ ॥

पुत्री स. न. न.

अपत्य (आहु)र्दुहितरं (सर्वे)ऽपत्यं तोकं(तयोःसमे)।

औरसपुत्र पु. पु. पु. पु. पु.

बाप (स्वजाते) त्वौरसोरस्यौ तातस्तु जनकः पिता ॥२८॥

आत्मज, तनय, सूनु, सुत, पुत्र " पुत्त्र " ये ५ पुत्रके नाम हैं और जब ये आत्मज आदि सब स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान होते हैं तब दुहिता को कहते हैं जैसे आत्मजा, तनया, सूनु, सुता, पुत्री, " पुत्रिका या पुत्रका " दुहिता ये ६ पुत्री के नाम हैं। अपत्य, तोक ये दोनों पुत्र, पुत्री में समानलिङ्ग रहते हैं । ये २ पुत्र कन्या के नाम हैं। औरस, उरस्य, "औरस्य" ये २ सवर्णा विवाहिता स्त्री में अपना से उपजे पुत्रके नाम हैं। तात, जनक, पिता ये ३ बापके नाम हैं॥ २७ । २८ ॥

स. स. स. स. स. स.

माता, जनयित्री प्रसूर्माता जननी भगिनी स्वसा।

बहिन, स. स. स. स.

ननन्द, पौत्री ननन्दा(तु स्वसा पत्युः)नप्त्री पौत्री सुतात्मजा ॥२९॥

जनयित्री, " जनित्री " प्रसू, माता, जननी " जननि" ये ४ माता के नाम हैं। भगिनी " भग्नी " स्वसा ये २ बहिन के नाम हैं। जो पतिकी बहिन है उसे न-नन्दा, " ननान्दा, नन्दना " कहते हैं यह १ ननन्द का नाम है। नप्त्री, पौत्री, सुतात्मजा ये ३ पुत्र व पुत्री की लड़की के नाम हैं॥ २९ ॥

स.

देवरानी, जेठानी, (भार्यास्तु भ्रातृवर्गस्य) यातरः (स्युः परस्परम्)।

भौजाई स. स. स. स.

मामी प्रजावती भ्रातृजाया मातुलानी 'तु' मातुली ॥ ३० ॥

१ स्वक्षेत्रे संस्कृतायां तु स्वयमुत्पादयेद्धि यम् । तमौरस्यं विजानीयात्पुत्रं प्रथमकल्पितमिति मनुः ॥

जो भाइयों की स्त्रियां हैं वे परस्पर 'यातरः' कहाती हैं एकवचनमें याता द्विवचन में यातरौ होता है यहां बहुत्वकी विवक्षा में बहुवचन हुआ है यह १ देवरानी या जेठानी का नाम है। प्रजावती, भ्रातृजाया ये २ भाई की भार्या (भौजाई) के नाम हैं और मातुलानी, मातुली " मातुला " ये २ मामा की भार्या (मामी) के नाम हैं ॥ ३० ॥

स. पु.

सासु श्वशुर (पतिपत्न्योः प्रसूः)श्वश्रूः श्वसुर (स्तु पिता तयोः)।

पु. पु.

चाचा मामा (पितुर्भ्राता)पितृव्यःस्या(न्मातुर्भ्राता)तु मातुलः॥३१॥

पति और पत्नी की उपजानेवाली माको 'श्वश्रू' कहते हैं यानी पतिकी माता पत्नीकी सासु और पत्नीकी माता पतिकी सासु कहाती है यह १ सासुका नाम है और उन पति पत्नी के बापको 'श्वशुर' कहते हैं यानी पतिका बाप पत्नीका श्वशुर और पत्नीका बाप पतिका श्वशुर कहाता है यह १ श्वशुरका नाम है । पिता के भाईको 'पितृव्य' कहते हैं यह १ चाचाका नाम है और माता के भाई को 'मातुल' कहते हैं यह १ मामाका नाम है ॥ ३१ ॥

पु. पु. पु.

साला देवर श्यालाःस्यु(र्भ्रातरःपत्न्याः) (स्वामिनो) देवृदेवरौ।

पु. पु. पु. पु.

भानजा दामाद स्वस्रीयो भागिनेयःस्याज्जामाता दुहितुःपतिः ॥ ३२ ॥

पत्नी के भाई पति के साले कहाते हैं, एकत्व में श्यालः और बहुत्व में श्यालाः और स्यालः दन्त्यादि भी है यह १ सालेका नाम है । स्वामी के भाई पत्नीके देवर कहाते हैं देवा (वृ) देवर, "देवा" (वन्) ये २ देवरके नाम हैं । स्वस्रीय, "स्वस्रेय" भागिनेय ये २ भानजे या भैने के नाम हैं तथा स्त्रीलिङ्गमें स्वस्रीया, भागिनेयी ये २ भानजी के नाम हैं और जामाता, " यामाता " दुहितुःपति, ये २ दामाद के नाम हैं ॥ ३२ ॥

पु. पु. पु.

दादा, दादी, परदादा, परदादी, नाना, नानी, परनाना, परनानी, भाई बन्धु

पितामहः पितृपिता (तत्पिता) प्रपितामहः।

पु. पु. पु.

(मातु) र्मातामहाद्येवं सपिण्डा(स्तु) सनाभयः॥३३॥

पितामह, पितृपिता ये २ पिताके पिता (बाबा) के नाम हैं और स्त्रीलिङ्ग में 'पितामही' यह १ आजी का नाम है और पितामह के पिताको 'प्रपितामह' कहते

हैं यह १ परबाबा का नाम है और स्त्रीलिङ्ग में 'प्रपितामही' कहते हैं यह १ परदादी का नाम है । ऐसेही माता के पिता को 'मातामह' कहते हैं यह १ नाना का नाम है और स्त्री को 'मातामही' कहते हैं यह १ नानी का नाम है और मातामह के पिता को "प्रमातामह" स्त्री को प्रमातामही कहते हैं यह १ परनाना व परनानी का नाम है और सपिण्ड, सनाभि ये २ सपिण्ड भाई बन्धुओं के नाम हैं ॥ ३३ ॥

पु. पु. पु. पु.

सगेभाई **समानोदर्यसोदर्यसगर्भ्यसहजाः (समाः) ।**

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

सगोत्री भाई **सगोत्रबान्धवज्ञातिबन्धुस्वस्वजनाः (समाः) ॥ ३४ ॥**

समानोदर्य, सोदर्य, सगर्भ्य, सहज "सोदर, सहोदर" ये चारो समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये ४ सहोदर (सगे) भाई के नाम हैं । सगोत्र, बान्धव, ज्ञाति, बन्धु, स्व, स्वजन ये समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये ६ सगोत्री भाई के नाम हैं ॥ ३४ ॥

न. स.

ज्ञातिभाव बन्धुसमूह **ज्ञातेयं बन्धुता (तेषां क्रमाद्भावसमूहयोः) ।**

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

मुख्यपति जारपति **धवः प्रियः पतिर्भर्ता जारस्तूपपतिः (समौ) ॥ ३५ ॥**

उन सबों के भाव और समूह में क्रम से ज्ञातेय और बन्धुता होती है जैसे ज्ञातियों के भाव को "ज्ञातेय" कहते हैं यह १ ज्ञातिभाव का नाम है और बन्धुओं के समूह को 'बन्धुता' कहते हैं यह १ बन्धुसमूह का नाम है । धव, प्रिय, पति, भर्त्ता ये ४ पति के नाम हैं और जार, उपपति ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ जारपति के नाम हैं ॥ ३५ ॥

पु. पु.

कुण्ड, गोल, **(अमृते जारजः) कुण्डो (मृते भर्तरि) गोलकः ।**

भतीजा, पु. पु. पु. पु.

भाई, बहिन **भ्रात्रीयो भ्रातृजो भ्रातृभगिन्यौ भ्रातरा (वुभौ) ॥ ३६ ॥**

स्वामी के नहीं मरने पर जार (व्यभिचार) से उपजे पुत्र को 'कुण्ड' कहते हैं और स्त्रीलिङ्ग में 'कुण्डी' होता है यह १ कुण्ड का नाम है । भर्ता के मरने पर जार से उपजा हुआ पुत्र 'गोल' कहलाता है । यह १ गोल (विधवापुत्र) का नाम है । भ्रात्रीय "भ्रातृव्य" भ्रातृज ये २ भाई के पुत्र के नाम हैं । भ्रातृभगिन्यौ, भ्रातरौ ये २ भाई बहिन के नाम हैं अथवा भाई और बहिन ये दोनों "भ्रा-

तरौ" कहाते हैं यहां (उभौ) इस पद से साथ कहना यह सूचित किया जाता है और " भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम्" (१ । २ । ६८) इस सूत्र से एकशेष समास होता है ॥ ३६ ॥

पु. पु. पु. पु.

मा बाप **मातापितरौ पितरौ मातरपितरौ प्रसूजनयितारौ ।**

पु. पु. पु.

सासु ससुर कन्या पुत्र **श्वश्रूश्वशुरौ श्वशुरौ पुत्रौ(पुत्रश्च दुहिता च)॥३७॥**

मातापितरौ, पितरौ, मातरपितरौ, प्रसूजनयितारौ ये ४ द्विवचनान्त होकर माता के साथ पिता के नाम हैं यानी माता पिता के नाम हैं । श्वश्रूश्वशुरौ, श्वशुरौ ये २ साथ कहे सासु व श्वशुर के नाम हैं और पुत्र व दुहिता (कन्या) को 'पुत्रौ' कहते हैं यह १ कन्या पुत्र के नाम हैं ॥ ३७ ॥

पु. १ पु. पु. पु.

स्त्रीपुरुष **दम्पती जम्पती जायापती भार्यापती (च तौ) ।**

ओझरी या जेर, रजबीज का मेल

पु. पु. पु.न. पु. न.

गर्भाशयो जरायुः 'स्या'दुल्वं(च)कललो(ऽस्त्रियाम्) ३८॥

दम्पती, जम्पती, जायापती, भार्यापती ये चारो ' तौ ' इसके कहने से पुंलिङ्ग हैं और " वाचस्पतिकोप " के प्रमाण से स्त्रीलिङ्ग भी हैं ये ४ स्त्री पुरुष के नाम हैं । गर्भाशय, जरायु ये २ जिस चामसे कोखि में गर्भ घिरा रहता है उसके नाम हैं और उल्व, कलल ये २ रजबीज के मिलने के नाम हैं अथवा ये ४ गर्भवेष्टन चर्म केही नाम हैं इनमें उल्व, कलल ये दोनों स्त्रीलिङ्ग में नहीं होते हैं बरन पुंनपुंसक में बने रहते हैं अथवा गर्भाशय, जरायु, उल्व, उल्व ये ३ गर्भाशय के नाम हैं । ' कलल ' यह १ रजबीज के मिलने का नाम है ॥ ३८ ॥

पु. पु. पु. पु.

जन्ममास **सूतिमासो वैजननो गर्भो भ्रूण (इमौसमौ) ।**

गर्भ

स. पु. पु.न. पु. पु.न.

हिजरा **तृतीयाप्रकृतिः शण्ढः क्लीबः पण्डो नपुंसकम् ॥ ३९ ॥**

सूतिमास, वैजनन ये २ जिस नवयें या दशवें महीने में उपजता है उसके नाम हैं यानी जन्ममास के नाम हैं । गर्भ, भ्रूण ये २ कुक्षि में स्थित गर्भ के नाम हैं । तृतीयाप्रकृति, ' तृतीयप्रकृति, ' शण्ढ, " षण्ढ, सण्ड, शण्ड " क्लीब, पण्ड, नपुंसक ये ५ नपुंसक के नाम हैं उनमें पहली प्रकृति स्त्री, दूसरी पुमान् और

---

१ राजदन्तादि (२ । २ । ३१) गणेपाठाज्जायाशब्दस्य दंजंभावो वा निपात्यते । दाराः पुंसि बहुत्वे च दं कलत्रे नपुंसकमित्यमरमाला " पत्न्यां जंदमलिङ्गते " इति नामप्रपञ्चः ॥

तीसरी क्लीब है और 'शयढ' पुंलिङ्ग है, 'क्लीब' पुंनपुंसक है और पण्ड भी पुंनपुंसक है ॥ ३९ ॥

न. न. न. न. न.

बालपन युवापन **शिशुत्वं शैशवं बाल्यं तारुण्यं यौवनं (समे) ।**

न. न. पु. न.

बूढ़ापन बूढ़ोंका समूह **स्यात्स्थाविरं(तु)वृद्धत्वं वृद्धसंघे (ऽपि)वार्धकम् ॥ ४० ॥**

शिशुत्व, शैशव, बाल्य ये ३ बालकपने के नाम हैं । तारुण्य, यौवन ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ युवापन (जवानी) के नाम हैं । स्थाविर, वृद्धत्व ये २ बूढ़ेपन के नाम हैं । वृद्धसंघ, वार्धक, "वार्धक्य" ये २ वृद्धसमूहों के नाम हैं ॥ ४० ॥

पु.न. स. स.

अतिबुढ़ापा बुढ़ाई **पलितं(जरसा शौक्ल्यं केशादौ)विस्रसा जरा ।**

स. स. स. स.

दूध पीनेवाले बच्चे **स्यादुत्तानशया डिम्भा स्तनपा (च)स्तनन्धयी ॥ ४१ ॥**

केश आदिकों में जो बुढ़ाई से शुक्लता (सफ़ेदीपना) आती है उसे 'पलित' कहते हैं । आदि पद से लोम, दाढ़ी व मूछों का ग्रहण किया जाता है और यह पुंनपुंसक में रहता है यह १ अत्यन्त बुढ़ापे का नाम है । विस्रसा, जरा ये २ बुढ़ाई के नाम हैं । उत्तानशया "उत्तानशयः" डिम्भा, स्तनपा, स्तनंधया "स्तनंधयी" ये चारो तीनों लिङ्ग में रहते हैं क्योंकि "त्रिषु जरावराः" यह कहा जावेगा स्त्रीलिङ्ग का निर्देश स्त्रीप्रत्ययों के दिखलाने के लिये है ये ४ दूध पीनेवाले बच्चे व बच्चियों के नाम हैं ॥ ४१ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

बालक युवापुरुष **बाल'स्तु स्या'न्माणवको वयस्थस्तरुणो युवा ।**

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

वृद्धपुरुष **प्रवयाः स्थविरो वृद्धो जीनो जीर्णो जरन्न'पि' ॥ ४२ ॥**

बाल, "बालक" माणवक ये २ बालक के नाम हैं और स्त्रीलिङ्ग में 'बाला' यह होता है । वयस्थ, तरुण, युवा (वन) ये ३ युवापुरुष के नाम हैं । प्रवयाः (यस्) स्थविर, वृद्ध, जीन, जीर्ण, जरन् (रतृ) ये ६ वृद्धपुरुष के नाम हैं ॥ ४२ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

बड़ाबूढ़ा जेठाभाई **वर्षीयान्दशमी ज्यायान् पूर्वजस्त्वग्रियोऽग्रजः ।**

पु. पु. पु. पु. पु.

छोटा भाई **जघन्यजे (स्युः) कनिष्ठयवीयोऽवरजानुजाः ॥ ४३ ॥**

---

१ "वयःपक्षिणि बाल्यादौ वयो यौवनमात्रके" (इति विश्वः) ॥

वर्षीयान्, दशमी (मिन्) ज्यायान् (यस्) ये ३ महावृद्ध के नाम हैं । पूर्वज, अग्रिय, अग्रिम " अग्रीय–अग्रय " अग्रज ये ३ जेठे भाई के नाम हैं । जघन्यज, कनिष्ठ, कनीयान्, " यवीयान्, यविष्ठ " यवीय, अवरज, अनुज ये ५ छोटे भाई के नाम हैं ॥ ४३ ॥

दुर्बल, बलवान्, तुँदीला

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
अमांसो दुर्बलश्छातो बलवान्मांसलोंसलः ।
पु. पु. पु. पु. पु.
तुन्दिलस्तुन्दिकस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिचिण्डिलः ॥४४॥

अमांस, दुर्बल, छात ' शात ' ये ३ दुर्बल के नाम हैं । बलवान्, मांसल, अंसल ये ३ बलवान् के नाम हैं । तुन्दिल, " तुण्डिल " तुन्दिक, " तुन्दिभ, तुण्डिभ " तुन्दी (न्दिन्) तुण्डी (ण्डिन्) बृहत्कुक्षि, पिचिण्डिल " पिचण्डिल, पिचिण्डवान् " ये ५ तुन्दिल (बड़े पेटवाले) के नाम हैं ॥ ४४ ॥

नकचपठा सुन्दर केशवाला सिमटी खालवाला

पु. पु. पु. पु.
अवटीटोऽवनाटश्चावभ्रटो (नतनासिके) ।
पु. पु. पु. पु. पु.
केशवः केशिकः केशी बलिनो बलिभः(समौ)॥४५॥

अवटीट, अवनाट, अवभ्रट, नतनासिक ये ४ चपठे नाकवाले के नाम हैं । अथवा कितेक आचार्यों के मत में (नतनासिके) इस अर्थ में तीनही नाम होते हैं । केशव, केशिक, केशी (शिन्) ये ३ अच्छे केशवाले या मोटे केशवाले के नाम हैं । बलिन, बलिभ ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ बुढ़ाई से सिमटी या ढीली खालवाले के नाम हैं ॥ ४५ ॥

विकल अङ्गवाला वामन, तीखी नाकवाला, नकटा

पु. पु. पु. पु. पु.
विकलाङ्ग(स्तु)पोगण्डः खर्वो ह्रस्व (श्च)वामनः ।
पु. पु. पु.
खरणाःस्यात्खरणसः विग्र (स्तु गतनासिकः) ॥४६॥

विकलाङ्ग, पोगण्ड, "अपोगण्ड" ये २ स्वभाव से न्यून या अधिक अङ्गवाले के नाम हैं अथवा जिसका कोई अङ्ग अपनेही से अधिक या कम हो उसके नाम हैं । खर्व, ह्रस्व, वामन स्त्री में 'वामनी' ये ३ वामन (बौना) के नाम हैं । खरणाः (णस्) खरणस ये २ तीखी नाकवाले के नाम हैं । विग्र, " विखु, विखू, विख्य" गतनासिक ये २ नकटे के नाम हैं ॥ ४६ ॥

खुरसमान नाकवाला लयचरा ऊंचीजांघवाला मिलीजांघवाला

पु. पु. पु. पु.
खुरणाः(स्या)त्खुरणसः प्रज्ञुः प्रगतजानुकः ।
पु. पु. पु. पु.
ऊर्ध्वज्ञुरूर्ध्वजानुः (स्या) त्संज्ञुः संहतजानुकः ॥४७॥

खुरणाः (णास्) खुरणास ये २ पशुखुर के समान नासिकावाले के नाम हैं। प्रज्ञु, प्रगतजानुक, "प्रगतजानु" ये २ वातादि विकारसे विरल जानुवाले (ल्यचरा) के नाम हैं। ऊर्ध्वज्ञु "ऊर्ध्वज्ञ" ऊर्ध्वजानु ये २ जिसके बैठने पर जङ्घा ऊपरको होजाती हैं उसके नाम हैं। संज्ञु, संहतजानुक "संहतजानु" ये २ मिलीफीलीवाले के नाम हैं॥ ४७॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

बहिरा, कुबड़ा, टुंडा छोटी देह वाला, पँगुला, मुण्डा

स्यादेडे बधिरः कुब्जे गडुलः कुकरे कुणिः।

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

पृश्निरल्पतनौ श्रोणः पङ्गौ मुण्डस्तु मुण्डिते॥ ४८॥

एड, बधिर ये २ बहिरे के नाम हैं। कुब्ज, गडुल "गण्डुर, गण्डुल" ये २ कुबड़े के नाम हैं। कुकर, कुणि "कूणि–कोणि" ये २ रोग आदि से टेढ़े हाथवाले "टुंडा" के नाम हैं। पृश्नि, "पृष्णि" अल्पतनु ये २ छोटी कायावाले के नाम हैं। श्रोण, पङ्गु, स्त्री में पङ्गू ये २ पंगुला के नाम हैं। मुण्ड, मुण्डित स्त्री में मुण्डा ये २ खण्डित केशवाले (मुंडिया) के नाम हैं॥ ४८॥

पु. पु. पु. पु.

कञ्जा, लँगड़ा, लहसन, तिल

वलिरः केकरे खोडे खञ्ज (स्त्रिषु जरावराः)।

पु. पु. पु. पु. पु.

जडुलःकालकःपिप्लुस्तिलकस्तिलकालकः॥ ४९॥

वलिर, केकर ये २ काने, कयरे, ऐंचाताने या कञ्जे के नाम हैं। खोड, "खोर, खोल" खञ्ज ये २ लँगड़े के नाम हैं। "जरावराः" जरा शब्द से पहले पढ़े हुए 'उत्तानशय' आदि और खञ्ज पर्यन्त तीनों लिङ्ग में रहते हैं या वाच्यलिङ्ग कहाते हैं। जडुल "जटुल" कालक, पिप्लु ये ३ काले लसुनाकार चिह्न के नाम हैं। तिलक, तिलकालक ये २ देहस्थ तिलचिह्न के नाम हैं॥ ४९॥

न. न. स. स.

आरोग्य, उपाय, औषध

अनामयं (स्यादा)ऽऽरोग्यं चिकित्सा रुक्प्रतिक्रिया।

न. न. न. पु. पु.

भेषजौषधभैषज्यान्यगदो जायु(रित्यपि)॥ ५०॥

अनामय, आरोग्य ये २ आरोग्य (विनारोग) के नाम हैं। चिकित्सा, रुक्प्रतिक्रिया ये २ रोगहारी उपाय के नाम हैं। भेषज, औषध, भैषज्य, अगद और जायु ये ५ औषध (इलाज) के नाम हैं॥ ५०॥

स. स. पु. पु. पु. पु. पु.

रोग, क्षयी, पीनस

(स्त्री)रुग्रुजा चोपतापरोगव्याधिगदामयाः।

पु. पु. पु. पु. पु.

क्षयःशोषश्च यक्ष्मा(च) प्रतिश्यायस्तु पीनसः॥ ५१॥

---

१ "निसर्गतः कूणिपंगुपौगण्डाः" इति नाममालायामार्यापाठाद्दीर्घोकारवानपि॥

२ "मुण्डो मुण्डितशीर्षयोः। राहौ दैत्यान्तरे" (इति हैमः)॥

रुक्, रुजा, उपताप, रोग, व्याधि, गद, आमय ये ७ रोगमात्र के नाम हैं। इनमें रुक्, रुजा ये २ स्त्रीलिङ्ग हैं और शेष पुंलिङ्ग कहाते हैं । क्षय, शोष, यक्ष्मा, जक्ष्मा (न्) यक्ष्म, राजयक्ष्मा (न्) ये ३ क्षयीरोग (कंज्यंसन्) के नाम हैं । "प्रतिश्याय, प्रतिस्याय, प्रतिश्या " पीनस, " आपीनस, पितस " ये २ पीनसरोग के नाम हैं ॥ ५१ ॥

स. न. पु. पु. पु.

छींक, खांसी (स्त्री) क्षुत् क्षुतं क्षवः(पुंसि)कास(स्तु) क्षवथुः(पुमान्)।

पु. पु. पु. पु. स.

सूजन, ब्यँवाई शोफ (स्तु) श्वयथुः शोथः पादस्फोटो विपादिका॥५२॥

क्षुत, क्षुत, क्षव ये ३ छींक के नाम हैं "स्त्रियां क्षुत् क्षुतं हंछिका" (इति रभसः) इस कोष के प्रमाणसे भी क्षुत् स्त्रीलिङ्ग है, क्षुत नपुंसक और क्षव पुंलिङ्ग है । कास, "काश" क्षवथु ये २ खांसी के नाम हैं। ये दोनों पुंलिङ्ग हैं । शोफ, श्वयथु, शोथ ये ३ शोथ (सूजन) के नाम हैं । पादस्फोट, विपादिका ये २ ब्यँवाई के नाम हैं इनमें ' विपादिका ' स्त्रीलिङ्ग में रहता है ॥ ५२ ॥

न. न. १ न. स. स.

सेहुवां ओदी किलाससिध्मे कच्छ्वां (तु) पाम पामा विचर्चिका ।

खाज,खुजली, स. स. स. पु. पु.स.न.

फोड़ा,फुड़िया कण्डूः खर्जूश्च कण्डूया विस्फोटः पिटक (स्त्रिषु)॥५३॥

किलाससिध्म, सिध्म (मन्) ये २ सफ़ेद कोढ़ या सेहुवां के नाम हैं इनमें 'सिध्म' अदन्त होकर किसीके मत में नान्त भी है । कच्छू , पाम (मन्) पामा द्वित्वमें पामानौ बहुत्व में 'पामानः' डाबन्त होने पर पामा द्वित्व में 'पामे' बहुत्व में पामाः और शेष रमाके समान है, विचर्चिका ये ४ ओदी खुजली के नाम हैं इनमें कच्छू, पामा, विचर्चिका ये तीन स्त्रीलिङ्ग हैं और पाम (मन्) नपुंसक है । कण्डू, ख़र्जू, कण्डूया ये ३ सूखी खाज (खुजली) के नाम हैं । विस्फोट , "विस्फोटा" पिटक, "पिटका, विटिका" ये २ फोड़ा-फुड़िया के नाम हैं इनमें ' पिटक ' तीनों लिङ्ग में रहता है ॥ ५३ ॥

पु.न. न. न. पु.

घाव नसूर गण्डलाकार व्रणो(ऽस्त्रिया)मीर्ममरुः(क्लीबे)नाडीव्रणः(पुमान्)।

कोढ़ सफ़ेदकोढ़ पु. न. न. न. न. न.

बवासीर कोठो मण्डलकं कुष्ठश्वित्रे दुर्नामकार्शसी ॥ ५४ ॥

व्रण, ईर्म, अरुः (स्) ये ३ घावके नाम हैं इनमें "व्रण, ईर्म " ये दो पुंलिङ्ग व नपुंसक हैं और "अरुः" नपुंसक में रहता है । जो घाव सदा गलता रहता है

१ " सिध्मं किलासं त्वक्पुष्पं सिध्म " (इति हैमनाममालायाम्) ॥

उसे "नाडीव्रण" कहते हैं यह पुंलिङ्ग है यह १ नसूर का नाम है । कोठ, मण्डलक ये २ मण्डलाकार कुष्ठ या गजचर्म के नाम हैं । कुष्ठ, श्वित्र " श्वेत-श्वेत्र " ये २ सफ़ेद कोढ़ के नाम हैं । दुर्नामक, अर्शः (स्) " अर्शस् " ये २ बवासीर के नाम हैं ॥ ५४ ॥

कब्जियत — पु. आनाहस्तु पु. विबन्धः (स्याद्) स. ग्रहणी स. रुक्प्रवाहिका ।
संग्रहणी वमन — स. प्रच्छर्दिका स. वमिश्च (स्त्री) "पुमांस्तु" पु. वमथुः (समाः) ५५॥

आनाह, विबन्ध ये २ मलमूत्रनिरोध या मलबद्ध रोग (पेट फूलना) के नाम हैं । जो प्रवाहिका रोग है उसे ग्रहणी कहते हैं । ग्रहणी, प्रवाहिका या ग्रहणी, ग्रहणि, ग्रहणी, रुक्, प्रवाहिका ये २ संग्रहणीरोग के नाम हैं । प्रच्छर्दिका, "छर्दी, छर्दि, छर्दिः" वमि, वमथु ये ३ वमन, उछार या उलटी के नाम हैं ये समानार्थक कहाते हैं इनमें 'प्रच्छर्दिका, वमि' ये दो स्त्रीलिङ्ग हैं और 'वमथु' पुंलिङ्ग में रहता है ॥ ५५ ॥

रोगविशेष — (व्याधिभेदा) [१]स. विद्रधिः (स्त्री) पु. ज्वर पु. मेह पु. भगन्दराः ।
पथरी — स. अश्मरी न. मूत्रकृच्छ्रं 'स्यात्' (पूर्वे शुक्रावधेस्त्रिषु) ॥५६॥

अब व्याधियों के भेद कहते हैं—'विद्रधि' यह १ उदर आदि में गण्डभेद या व्यरथिया या एक प्रकार के फोड़े का नाम है यह स्त्रीलिङ्ग में रहता है परन्तु वैद्यक ग्रन्थों में पुंलिङ्ग है । 'ज्वर' यह १ बुखार का नाम है । 'मेह' यह १ प्रमेह का नाम है जोकि वैद्यकशास्त्र में बहुत प्रकार का है । 'भगन्दर' यह १ भगन्दर (गुदा के समीप फोड़े) का नाम है " श्लीपदं पादवल्मीकं केशघ्नस्त्विन्द्रलुप्तकः " श्लीपद, पादवल्मीक ये २ पादरोग या हाडारोग के नाम हैं । केशघ्न, इन्द्रलुप्तक ये २ चांईचूंई के नाम हैं । अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र ये २ पथरीरोग या करकरोग के नाम हैं इससे परे शुक्र से पूर्व मूर्च्छित पर्यन्त पढ़े हुए शब्द तीनों लिङ्ग में रहते हैं यानी [illegible] कहाते हैं ॥ ५६ ॥

वैद्य—हकीम, डाक्टर — पु. रोगहार्य पु. गदंकारा पु. भिषग् पु. वैद्यौ पु. चिकित्सके ।
नीरोगी — पु.स.न. वार्तो पु.स.न. निरामयः पु.स.न. कल्य पु.स.न. उल्लाघो (निर्गतोगदात्) ॥ ५७ ॥

१ त्वक्रक्तमांसमेदांसि प्रदूष्यास्थिसमाश्रिताः । दोषाः शोथं शनैर्घोरं जनयन्त्युच्छ्रिताभृशम् ॥१॥ महाशलं रुजावन्तं वृत्तं वाप्यथवायतम् । स विद्रधिरिति ख्यातो विज्ञेयः षड्विधश्च सः ॥२॥ इति भावप्रकाशात्पुंलिङ्गोपि ॥

रोगहारी (न्) अगदंकार, भिषक् (ज्) वैद्य, चिकित्सक ये ५ वैद्य (हकीम, डाक्टर) के नाम हैं । वार्त (वार्त्ता) निरामय, कल्य ये ३ नीरोगी के नाम हैं और जो रोग से छूट गया है उसे "उल्लाघ" कहते हैं यह भी एक पूर्वका पर्याय है यानी वार्त से लेकर उल्लाघ पर्यन्त चार नीरोगी के नाम हैं ॥ ५७ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
रोगक्षीण रोगी **ग्लानग्लास्नू आमयावी विकृतो व्याधितोऽपटुः ।**
पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
खाजवाला **आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तः(समौ)पामनकच्छुरौ॥५८॥**

ग्लान, ग्लास्नु ये २ रोग से क्षीणपुरुष के नाम हैं । आमयावी (न्) विकृत, व्याधित, अपटु, आतुर, अभ्यमित, अभ्यान्त ये ७ रोगी के नाम हैं । पामन, कच्छुर ये २ खसरा या खाजुवाले के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समान-लिङ्ग कहाते हैं ॥ ५८ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
दादवाला बवासीरवाला **दद्रुणो दद्रुरोगी'स्याद'र्शोरोगयुतोऽर्शसः ।**
पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
वातरोगी अतीसारवाला **वातकी वातरोगी'स्या'त्सातिसारोऽतिसारकी ॥ ५६ ॥**

दद्रुणः, " दद्रूणः, दर्द्रुः, दर्द्रूः, दद्रुः, दद्रूः " दद्रुरोगी (न्) ये २ दादवाले के नाम हैं । अर्शरोगयुत, अर्शस ये २ बवासीरवाले के नाम हैं । वातकी (किन्) वातरोगी (गिन्) ये २ वातरोगवाले के नाम हैं । सातिसार, अतिसारकी (किन्) ये २ अतीसार (दस्त) वाले के नाम हैं यानी जिसको बहुत से दस्त आते हों उसके नाम हैं ॥ ५६ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
चिपका चोंधर चिपड़ी आंखें **स्युःक्लिन्नाक्षेचुल्लचिल्लपिल्लाः(क्लिन्नेऽक्ष्णिचाप्यमी) ।**
पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
पागल कफी **उन्मत्त उन्मादवति श्लेष्मलः श्लेष्मणः कफी ॥ ६० ॥**

क्लिन्नाक्ष, चुल्ल, चिल्ल, पिल्ल ये ४ चिपरा या चोंधरा के नाम हैं । और ये चुल्ल आदि चिपरी, चोंधरी आंखों के भी नाम हैं । उन्मत्त, उन्मादवान् ये २ वातविकार से चित्तविभ्रमवाले, पागल या बावले के नाम हैं । श्लेष्मल, श्लेष्मण, कफी ये ३ कफवाले के नाम हैं ॥ ६० ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
कुबड़ा तुंदीला **न्युब्जो (भुग्नेरुजा) "वृद्धनाभौ" तुण्डिभतुण्डिलौ ।**
पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
सेहुवांवाला अन्धा मूर्छित **किलासी सिध्मलोऽन्धो दृ[illegible]च्छाले मूर्त[illegible]र्छितौ॥६१॥**

रोग से टेढ़ी पीठ व अधोमुखवाले पुरुष में न्युब्ज होता है यह १ कुबड़े का नाम है। वृद्धनाभि, तुण्डिभ, तुण्डिल "तुन्दिल" ये ३ वात आदि से ऊंची नाभि वाले के नाम हैं। किलासी (सिन्) सिध्मल ये २ सेहुँवावाले के नाम हैं। अन्ध, अदृक् (श्) ये २ अन्धे के नाम हैं। मूर्च्छाल, मूर्त, मूर्च्छित ये ३ मूर्च्छावाले के नाम हैं ॥ ६१ ॥

न. न. न. न. न. न.
बीज, पित्त **शुक्रं तेजोरेतसी (च) बीजवीर्येन्द्रियाणि (च)।**
पु. न. पु. पु. स. स.
कफ, खाल **मायुः पित्तं कफः श्लेष्मा (स्त्रियां तु) त्वगसृग्धरा ॥ ६२ ॥**

शुक्र, तेजः (स्) रेतः (स्) बीज, वीर्य, इन्द्रिय ये ६ वीर्य के नाम हैं। मायु, पित्त ये २ पित्त के नाम हैं। कफ, श्लेष्मा (मन्) ये २ कफ के नाम हैं। त्वक् (च्) "त्वचा, त्वच" असृग्धरा "असृग्धारा, असृग्वरा" ये २ खाल या चाम के नाम हैं ये दोनों स्त्रीलिङ्ग में रहते हैं और अदन्त त्वचशब्द नपुंसक में रहता है ॥ ६२ ॥

न. न. न. न. न. न.
मांस **पिशितं तरसं मांसं पललं क्रव्यमाऽऽमिषम्।**
न. न. पु.स.न.
सूखामांस **उत्तप्तं शुष्कमांसं (स्यात्तद्वल्लूरं त्रिलिङ्गकम्) ॥ ६३ ॥**

पिशित, तरस, मांस, पलल, क्रव्य, आमिष और "अमिष" ये ६ मांस के नाम हैं। उत्तप्त, शुष्कमांस, बल्लूर "वल्लुर, बल्लूरा" ये ३ सूखे मांस के नाम हैं। इनमें जो वल्लूर वह तीनों लिङ्गवाला होता है ॥ ६३ ॥

न. न. न. न. न. न. न.
रुधिर **रुधिरेऽसृग्लोहितास्त्ररक्तक्षतजशोणितम्।**
कलेजा पु.स.न. न. न. न. न. स. स.
हृदय चर्बी **बुक्काग्रमांसं हृदयं हृन्मेद (स्तु) वपा वसा ॥ ६४ ॥**

रुधिर, असृक् (ग्) द्वित्वे असृजी, बहुत्वे असृञ्जि, लोहित, अस्र, "अश्र" रक्त, क्षतज, शोणित ये ७ रक्त के नाम हैं। बुक्का, वुक्का (न्) वुक्क, वूक्का, बूक, वृक्का, वृक्का (न्) वृक्क, अग्रमांस या बुक्काग्रमांस ये २ कलेजा या हृदय के भीतर पद्माकार मांस के नाम हैं। हृदय, हृत् (द्) द्वित्व में हृदी बहुत्व में हृन्दि ये २ हृदयकमल के नाम हैं अथवा बुक्का, अग्रमांस, हृदय, हृत् ये ४ हृदयकमल के ही पर्याय हैं। मेदः (स्) "मेद," वपा, वसा ये ३ मांस से उपजे चिकनाहट या चर्बी के नाम हैं ॥ ६४ ॥

१ बुक्का हृद् हृदयं वृक्का सुरसं च तदग्रिमामिति (हैमनाममालायाम्) ॥

गले की पिछली नस, (पश्चाद्ग्रीवा शिरा) मन्या (स.) नाडी (स.) (तु) धमनिः (स.) (शिरा) (स.)।
नाड़ी, फेफड़ा मैल तिलकं (न.) क्लोम (न.) मस्तिष्कं (न.) गोर्दं (न.) किट्टं (न.) मलो (पु.न.) (ऽस्त्रियाम्)॥६५॥

पिछले भाग में स्थित ग्रीवा की शिरा को "मन्या" कहते हैं यह १ गले की पिछली नस का नाम है। नाडी, "नाडि," धमनी, "धमनि" शिरा, "सिरा" ये ३ नाड़ी के नाम हैं। तिलक, क्लोम (न्), "क्लोम" ये २ मांसपिण्ड विशेष, तिल, फुप्फुस या फेफड़ा के नाम हैं इनमें क्लोम नान्त, नपुंसक होकर अदन्त भी है। मस्तिष्क, गोर्द ये २ मस्तक में उपजे घीसमान चिकनाहट या गूदा के नाम हैं। किट्ट, मल ये २ कान आदि के निकले मल के नाम हैं, इनमें "मलोऽस्त्री पापविट्किट्टे कृपणे त्वभिधेयवदिति" (मेदिनी) इस प्रमाण से 'मल' पुंनपुंसक में रहता है॥ ६५॥

आंत पिलही अन्त्रं (न.) पुरीतद् (पु.न.) गुल्म (पु.) (स्तु) प्लीहा (पु.) पुंस्य (थ) वस्नसा (स.)।
नस कलेजा या जिगर स्नायुः (स.) (स्त्रियां) कालखण्ड (न.) यकृती (न.) (तु समे इमे)॥६६॥

अन्त्र "आन्त्र" पुरीतत् "परितत्" ये २ आंतों के नाम हैं इनमें "पुरीतत्" वाचस्पतिकोष के प्रमाण से पुंनपुंसक में रहता है। गुल्म, प्लीहा (न्) और टावन्त 'प्लीहा' ये २ बाईं कोखि में स्थित विशेष मांसपिण्ड तापतिल्ली या पिलही के नाम हैं। वस्नसा, स्नायु ये दोनों स्त्रीलिङ्ग में रहते हैं ये २ वायुवाहिनी नाड़ी कि जिससे अङ्ग प्रत्यङ्ग के जोड़ बँधे रहते हैं उस नाड़ी या नस के नाम हैं। कालखण्ड, यकृत् ये २ दाहिनी कोखि में स्थित मांसपिण्ड या कलेजा के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं॥ ६६॥

लार, कीचड़ सृणिका (स.) स्यन्दिनी (स.) लाला (स.) दूषिका (स.) (नेत्रयोर्मलम्)।
मूत्र मूत्रं (न.) प्रस्राव (पु.) उच्चारावस्करौ (पु. पु.) शमलं (न.) शकृत् (न.)॥६७॥
विष्ठा गूथं (न.) पुरीषं (न.) वर्चस्क (पु.न.) (मस्त्री) विष्ठाविषे (स. स.) (स्त्रियौ)।

सृणिका "सृणीका" स्यन्दिनी, लाला ये ३ लार के नाम हैं। नेत्रों के मल को दूषिका "दूषि, दूषी, दूषीका" कहते हैं यह १ कीचड़ का नाम है (नासा-

१ वसाशुक्रमसृग्मज्जाकर्णविण्मूत्रविड्नलाः। श्लेष्माश्रुदूषिकाः स्वेदो द्वादशैते नृणां मलाः॥

मलं तु सिंघाणं पिञ्जूषः कर्णयोर्मलम्) नासिकाके मलको 'सिंघाण' कहते हैं यह १ नाक के मल का नाम है। कानों के मल को 'पिञ्जूष' कहते हैं यह १ कानों के खूंट का नाम है। मूत्र, प्रस्राव ये २ मूत्र के नाम हैं। उच्चार, अवस्कर, शमल, शकृत्, पुरीष, गूथ, वर्चस्क, विष्ठा, "विट्-विषा, विट् विशा" ये ६ विष्ठा के नाम हैं इनमें वर्चस्क पुंनपुंसक में रहता है और विष्ठा, विट् ये दोनों स्त्रीलिङ्ग कहाते हैं॥६७।६६॥

कपाल हड्डी — पु. पु.न. न. न. न.

(स्या)त्कर्परःकपालो(ऽस्त्री)कीकसं कुल्यमस्थि(च)६८॥

मांजरि रीढ़ — पु. स.

(स्याच्छरीरास्थ्नि) कङ्कालः (पृष्ठास्थ्नि तु) कशेरुका।

खोपड़ी पशुड़ी — स. स.

(शिरोस्थनि)करोटिः(स्त्री)पार्श्वास्थनि(तु)पर्शुका॥६६॥

कर्पर, कपाल ये २ शीश की हड्डी के टुकड़े के नाम हैं। इनमें 'कपाल' पुंनपुंसक में रहता है। कीकस, कुल्य, अस्थि ये ३ हाड़मात्र के नाम हैं 'कङ्काल' शरीर की हड्डी में रहता है यह १ मांजरि का नाम है 'कशेरुका' पीठ की हड्डी में रहता है यह १ रीढ़ का नाम है। "करोटि-करोटी" शीश की हड्डी में बर्तता हुआ स्त्रीलिङ्ग में रहता है यह १ खोपड़ी का नाम है। पर्शुका, "पर्शू" यह पार्श्वों की हड्डी में रहता है यह १ पशुड़ी (पांजर की हड्डी) का नाम है॥६८।६६॥

न. पु. पु. पु. न.

अङ्ग **अङ्गं प्रतीकोवयवोऽपघनो (ऽथ) कलेवरम्।**

न. न. न. न. न. पु.

गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः॥ ७०॥

पु. पु.न. स. स. स.

देह **कायो देहः (क्लीबपुंसोः) स्त्रियां मूर्तिस्तनुस्तनूः।**

अङ्ग, प्रतीक, अवयव, अपघन ये ४ देह के अवयवों यानी हिस्सों के नाम हैं। कलेवर, गात्र, वपुः (स्) संहनन, शरीर, वर्ष्म (न्) विग्रह, काय, देह, मूर्ति, तनु "तनु" (स्) तनू ये १२ देह के नाम हैं इनमें 'देह' पुंनपुंसक में रहता है मूर्ति, तनु, तनू ये तीनों स्त्रीलिङ्ग में रहते हैं॥ ७०। ३॥

न. न. पु. पु. पु. पु.न.

पादाग्र पैर **पादाग्रं प्रपदं पादः पदंह्रिश्चरणो (ऽस्त्रियाम्)॥ ७१॥**

स. पु.न. पु.

गण्ठा ऐंडी **(तद्ग्रन्थी)घुटिके गुल्फौ (पुमा)न्पार्ष्णि(स्तयोरधः)।**

स. स. पु न. पु.न. पु.न.

जंघा जानु **जङ्घा (तु) प्रसृता जानूरुपर्वाष्ठीव (दस्त्रियाम्)॥ ७२॥**

पादाग्र, प्रपद ये २ पैर के अग्रभाग के नाम हैं । पाद, पद्, "पद" अंह्रि, "अङ्घ्रि" चरण ये ४ चरण के नाम हैं। इनमें पाद, पद पुंनपुंसक हैं और चरण स्त्रीलिङ्ग में नहीं रहता अगन पुंनपुंसक में बना रहता है पैरों की गांठों को घुटिका "घुटि, घुटी" गुल्फ ये २ टखना या पैर की गांठि (गंठे) के नाम हैं इनमें 'घुटिका' स्त्रीलिङ्ग द्विवचनान्त है और 'गुल्फ' पुंनपुंसक है । उन गुल्फों के निचले भाग को 'पार्ष्णि' कहते हैं यह पुंलिङ्ग में रहता है यह १ एँड़ी का नाम है । जङ्घा, प्रसृता ये २ जङ्घा के नाम हैं । जानु, ऊरुपर्व, अष्ठीवत ये तीनों पुंनपुंसक में रहते हैं ये ३ जानू या घुटनू के नाम हैं ॥ ७१ । ७२ ॥

न. पु. पु.

निरोंह जांघ का **सक्थि (क्लीबे पुमा) नूरु (स्तत्सन्धिः पुंसि) वङ्क्षणः ।**

जोड़ गुदा न. न. पु. पु.स.

मूत्राशय **गुदं त्वपानं पायु (र्ना) बस्ति (र्नाभेरधो द्वयोः) ॥ ७३ ॥**

सक्थि, ऊरु ये २ जानु के ऊपरले भाग या निरोंह के नाम हैं इनमें 'सक्थि' नपुंसक है और 'ऊरु' पुंलिङ्ग में रहता है । उस ऊरु की सन्धि (जोड़) को 'वङ्क्षण' कहते हैं वह पुंलिङ्ग में रहता है यह १ जांघों के जोड़ का नाम है । गुद, अपान, पायु ये ३ गुदा या विष्ठा निकलने की मार्ग के नाम हैं इनमें 'पायु' पुंलिङ्ग में रहता है । नाभि के निचले भाग को बस्ति, बस्ती कहते हैं यह पुंलिङ्ग व स्त्रीलिङ्ग में रहता है यह १ मूत्राशय का नाम है ॥ ७३ ॥

कमर स्त्री की पु. न. स. स. स.

कमरकापिछला **कटो (ना) श्रोणिफलकं कटिः श्रोणिः ककुद्मती ।**

भाग कमर का पु. न.

अगिला भाग **(पश्चा) न्नितम्बः (स्त्रीकट्याः) (क्लीबे तु) जघनं (पुरः) ७४ ॥**

कट, श्रोणीफलक, कटि "कटी" श्रोणि, "श्रोणी" ककुद्मती ये ५ कमर के नाम हैं। इनमें 'कट' पुंलिङ्ग में रहता है और श्रोणीफलक नपुंसक है । स्त्रीकी कमर के पिछले भाग को 'नितम्ब' कहते हैं यह १ स्त्रीकी कमर के पिछले भाग (चूतर) का नाम है । स्त्रीकी कमर के अगिले भाग को 'जघन' कहते हैं यह १ स्त्री की नाभि या पेडू का नाम है यह नपुंसकलिङ्ग में रहता है ॥ ७४ ॥

न.

नितम्बोंके गड्हे **(कूपकौ तु नितम्बस्थौ द्वयहीने) ककुन्दरे ।**

स. पु. पु.

कूले भग, लिङ्ग **(स्त्रियां) स्फिचौ कटिप्रोथावुपस्थो (वक्ष्यमाणयोः) ७५ ॥**

नितम्बों में टिकनेहारे, पृष्ठवंश के निचले भाग में विद्यमान कूपरूप गड्हों को

' ककुन्दर या कुकुन्दर ' कहते हैं ये स्त्री पुंलिङ्ग से हीन होकर नपुंसक में रहते हैं यह १ पीठवांस के अधोभाग में स्थित गड्हों का नाम है । स्फिक् (च्) कटिप्रोथ, " कटी, प्रोथ " ये २ कूले के नाम हैं इनमें चकारान्त स्फिक् स्त्रीलिङ्ग में रहता है एकवचन में स्फिक् कटिप्रोथ: द्विवचनमें स्फिचौ, कटिप्रोथौ कहाते हैं । कहे जाने वाले भग, लिङ्गों को ' उपस्थ ' कहते हैं यह १ भगलिङ्ग का नाम है ॥ ७५ ॥

न. पु.स. पु. न. न. न.

भग-लिङ्ग **भगं योनि (र्द्वयोः) शिश्नो मेढ्रं मेहनशेफसी ।**

पु. पु. पु. न.

वृषण, मेकड़ **मुष्कोऽण्डकोशो वृषणः (पृष्ठवंशाधरे) त्रिकम् ॥ ७६ ॥**

भग, योनि " योनी " ये २ भग के नाम हैं इनमें ' योनि ' स्त्रीलिङ्ग व पुंलिङ्ग में रहता है । शिश्न, मेढ्र, मेहन, शेफ (स्) शेप (स्) " शेफ, शेप " ये ४ लिङ्ग के नाम हैं । इनमें 'शिश्न' पुंलिङ्ग है और मेढ्र, मेहन, शेफ ये तीनों नपुंसक में रहते हैं उनमें शेफ सान्त व अदन्त है । मुष्क, अण्डकोश—" अण्डकोष " वृषण ये ३ अण्डकोष के नाम हैं । पृष्ठवंश के अधोभाग में तीन हड्डियों से बने स्थानको ' त्रिक ' कहते हैं यह १ मेकड़ का नाम है ॥ ७६ ॥

१पु. पु. पु.न. न. न. पु. पु.

पेट कुच **पिचण्डकुक्षी जठरोदरतुन्दं स्तनौ कुचौ ।**

पु.न. न. स.न. न.

कुचाग्र गोद **चूचुकं (तु) कुचाग्रं स्या(न्न ना)क्रोडं भुजान्तरम् ॥७७॥**

पिचण्ड, " पिचिण्ड " कुक्षि, " कुक्ष " जठर, उदर, तुन्द ये ५ जठर यानी पेट के नाम हैं । स्तन, कुच ये २ कुचों (चूचियों) के नाम हैं । चूचुक, कुचाग्र ये २ कुचोंके अग्रभाग या चूचियों की ढेपुनियों के नाम हैं इनमें " चूचुको ना कुचाननमिति" (रत्नकोषः) इस कोष के प्रमाण से 'चूचुक' नपुंसक होकर पुंलिङ्ग भी है । क्रोड, भुजान्तर ये २ कोरा या गोद के नाम हैं इनमें ' क्रोड ' पुंलिङ्ग नहीं है बरन स्त्री नपुंसक में रहता है ॥ ७७ ॥

न. न. न. न.

छाती पीठ **उरो वत्सं (च) वक्ष (श्च) पृष्ठन्तु (चरमं तनोः) ।**

पु. न. पु.न. न.

कन्धे हँसुली **स्कन्धो भुजशिरोंऽसो(ऽस्त्री)(सन्धी तस्यैव) जत्रुणी ७८॥**

उरः (स्) वत्स, वक्षः (स्) ये ३ छाती के नाम हैं अथवा कितेक आचार्यों के मतमें क्रोड, भुजान्तर, उरः, वत्स, वक्षः ये ५ वक्षस्थल के नाम हैं । शरीर के

---

१ वृद्धि भागुरिरित्यल्लोपः ॥

पिछले भागको ' पृष्ठ ' कहते हैं यह १ पीठ का नाम है। स्कन्धः (स्) स्कन्ध, भुजशिरः, (स्) अंस " अंश " ये ३ कन्धों के नाम हैं। इनमें स्कन्ध सान्त व अदन्त होकर पुंनपुंसक है और ' अंस ' स्त्रीलिङ्ग नहीं है वरन पुंनपुंसक में रहता है उसकी सन्धि को ' जत्रु ' द्वित्व में ' जत्रुणी ' कहते हैं यह १ हँसुली का नाम है ॥ ७८ ॥

न. पु. पु.न.

कांख बगल बाहुमूले (उभौ)कक्षौ पार्श्वं (मस्त्री तयोरधः)।

पु.न. पु.न. पु.न.

शरीर का मध्य मध्यमं चावलग्नं (च) मध्यो(ऽस्त्री)द्वौपरौ द्वयोः॥७९॥

बाहुमूल, कक्ष ये २ कक्ष या कांख के नाम हैं। उन कांखों के निचले भाग को ' पार्श्व ' कहते हैं वह पुंनपुंसक में रहता है यह १ कांखों के अधोभाग (बग़ल) का नाम है। मध्यम, अवलग्न, " विलग्न " मध्य ये ३ शरीर के मध्य या कमर के नाम हैं ये तीनों पुंनपुंसक में रहते हैं ॥ ७९ ॥

पु.स. पु.स. पु. पु. पु.स. पु.स.

भुजा कोहनी भुजबाहू प्रवेष्टो दोः(स्यात्)कफोणिस्तु कूर्परः।

ऊपरला भाग पु. पु.

निचला भाग (अस्योपरि)प्रगण्डः(स्यात्)प्रकोष्ठ(स्तस्यचाप्यधः)८०॥

भुज, " भुजा " बाहु, वाह, " वाहा " प्रवेष्ट, दोः (स्) " दोषा " ये ४ भुजा या बाहु के नाम हैं। इनमें भुज, बाहु ये दोनों स्त्री, पुंलिङ्ग में रहते हैं। ' प्रवेष्ट ' पुंलिङ्ग है और ' दोः ' पुंलिङ्ग है व स्त्रीलिङ्ग में ' दोषा ' होता है। कफोणि, कफोणी, " कफणि, कफणी " कूर्पर, " कूर्परा " ये २ कोहनी के नाम हैं। इस कोहनी के ऊपरले भाग को ' प्रगण्ड ' कहते हैं यह १ कोहनी के ऊर्ध्वभाग का नाम है और कोहनी के निचले भाग को ' प्रकोष्ठ ' कहते हैं यह १ मणिबन्धपर्यन्त कोहनी के अधोभाग का नाम है ॥ ८० ॥

पु.

पहुँचा वाहिरी (मणिबन्धादाकनिष्ठं करस्य) करभो (बहिः)।

भाग हाथ पु. * पु. पु. स. स.

तर्जनी पञ्चशाखः शयःपाणिस्तर्जनी (स्यात्)प्रदेशिनी॥८१॥

प्रकोष्ठ और हाथ की सन्धि को 'मणिबन्ध' कहते हैं उससे लेकर कनिष्ठापर्यन्त हाथ के मोटे बाहिरी भाग को ' करभ ' कहते हैं यह १ कर के बाह्यभाग का नाम है। पञ्चशाख, शय, " शम " पाणि, "कर-हस्त " ये ३ हाथ के नाम हैं। तर्जनी, प्रदेशनी " प्रदेशिनी " ये २ अँगूठे के समीप रहनेवाली अँगुली के नाम हैं ॥ ८१ ॥

स. स. पु. स.
अँगुलियां अँ· अङ्गुल्यः करशाखाः (स्युः) पुंस्यङ्गुष्ठः प्रदेशिनी।
गूठा समस्त स. स. स.
अँगुली मध्यमानामिका(चापि)कनिष्ठा(चेति ताः क्रमात्)॥८२॥

अंगुलि, अंगुली बहुत्व में अंगुल्यः, "अंगुरि, अँगुरी, अंगुल" करशाखा ये २ नाम अँगुलीमात्र के नाम हैं। 'अङ्गुष्ठ' यह पुलिङ्ग है यह १ अँगूठे का नाम है। 'प्रदेशिनी' यह १ तर्जनी का नाम है। 'मध्यमा' यह १ विचली अँगुली का नाम है। 'अनामा' यह १ अनामिका अँगुली का नाम है और 'कनिष्ठा' यह १ कनीनी, कनीनिका या छोटी अँगुली का नाम है इस प्रकार उन पांचों अँगुलियों को क्रम से जानना चाहिये॥ ८२॥

पु. पु. पु.न. पु.न.
नख=नह तीन पुनर्भवः कररुहो नखो(ऽस्त्री)नखरो(ऽस्त्रियाम्)।
पु. पु. पु.
प्रमाण विशेष प्रादेशतालगोकर्णा (स्तर्जन्यादियुते तते)॥ ८३॥

पुनर्भव, "पुनर्नव" कररुह, नख, नखर "नखरा" ये ४ नाखूनके नाम हैं। इनमें 'नख' पुंनपुंसक है और नखर भी पुंनपुंसक है परन्तु अमरमाला के प्रमाण से तीनों लिङ्ग में पाया जाता है। तर्जनी आदि तीनों अँगुलियों समेत फैले अँगूठे को प्रादेश आदि क्रम से कहते हैं। जैसे तर्जनी सहित फैले अँगूठे को प्रादेश या प्रदेश, मध्यमा समेत फैले अँगूठे को 'ताल' और अनामिका समेत फैले अँगूठे को 'गोकर्ण' कहते हैं यह एक २ क्रमसे तर्जन्यादि समेत फैले अँगूठे का नाम है॥८३॥

पु.स. पु.
बित्ता (अङ्गुष्ठे सकनिष्ठे स्या) द्वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलः।
चटकना (पाणौ) चपेटप्रतलप्रहस्ता (विस्तृताङ्गुलौ)॥ ८४॥

कनिष्ठा समेत फैले अँगूठे को वितस्ति, द्वादशाङ्गुल कहते हैं ये २ बित्ता—बीता या बिलस्तके नाम हैं इनमें वितस्ति पुंस्त्रीलिङ्ग है और द्वादशाङ्गुल पुंलिङ्ग है। चपेट "चर्पट, चपट" प्रतल 'तल' प्रहस्त ये ३ फैली अँगुलीवाले हाथ या चपेटा के नाम हैं॥ ८४॥

पु.
दुहत्था चटकना (द्वौ संहतौ) सिंहतलः (प्रतलौ वामदक्षिणौ)।
पु. पु.
पसर अँजुरी (पाणिर्निकुब्जः) प्रसृति (स्तौ युता) वञ्जलिः (पुमान्)८५॥

"अङ्गुलस्तु मतो मतः" (इत्यमरदत्तः) "अङ्गुलो ना यवमानमिति" (वाचस्पतिः) तत्राङ्गे-ऽङ्गुलकाङ्गुलः॥

वाम और दक्षिण दोनों हाथ तर ऊपर मिले हों तो उसे 'सिंहतल' या 'संहतल' कहते हैं यह १ दुहत्था चटकने का नाम है। टेढ़ा किया हुआ हाथ 'प्रसृति' या 'प्रसृत' कहाता है यह १ 'पसर' का नाम हैं और जो दो प्रसृत मिलें तो उसे "अञ्जलि" कहते हैं यह १ अंजुरी का नाम है यह पुंलिङ्ग में रहता है॥८५॥

हाथ मुगडाहाथ कनिष्ठारहित (प्रकोष्ठे विस्तृतकरे) हस्तो (मुष्ट्या तु बद्धया)।

मूठींवाला हाथ सरत्निः स्यादरत्नि (स्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना) ॥ ८६ ॥

जिसमें हाथ फैलाया गया हो ऐसे 'प्रकोष्ठ' यानी कोहनी के निचले भाग को हस्त (हाथ) कहते हैं यह चौबीस अङ्गुल का सब सिद्धान्तों में कहा गया है यह १ हाथ का नाम है फिर वही बँधी मूठी से जाना गया हो तो 'रत्नि' कहते हैं यह १ मुगडा हाथ का नाम है। फैली कनिष्ठा से संयुक्त मूठी से उपलक्षित हाथ को 'अरत्नि' कहते हैं यह १ कानी अँगुली को छोड़ मूठी से उपलक्षित हाथ का नाम है ॥ ८६ ॥

फैला हाथ व्यामो(बाह्वोः सकरयोस्ततयोस्तिर्यगन्तरम्)।

ऊपर उठा हाथ(ऊर्ध्वविस्तृतदोःपाणि नृमाने) पौरुषं (त्रिषु) ॥ ८७ ॥

टेढ़े फैले हाथों समेत बाहुओं के अन्तर (बिचले भागको) 'व्याम' कहते हैं यह १ फैले हाथों का नाम है। जिसने भुजा और पाणिको ऊर्ध्वभागमें फैलाया है उस पुरुषका जो प्रमाण है उसे 'पौरुष' कहते हैं वह तीनों लिङ्ग में रहता है यह १ ऊपर उठे हाथों का नाम है और यह वाच्यलिङ्ग भी कहाता है जैसे "पौरुषो नदः, पौरुषी नदी, पौरुषं सरः" आदि होते हैं ॥ ८७ ॥

कण्ठ ग्रीवा तीन रेखावाली कण्ठो गलो (थ) ग्रीवायां शिरोधिः कन्धरे (त्यपि)।

ग्रीवा घांटी कम्बुग्रीवा (त्रिरेखा सा) ऽवटुर्घाटा कृकाटिका ॥ ८८ ॥

कण्ठ "कण्ठा, कण्ठी" गल ये २ ग्रीवा के अग्रभाग या कण्ठके नाम हैं। ग्रीवा, शिरोधि, कन्धरा 'कन्धर' ये ३ ग्रीवा के नाम हैं। जो ग्रीवा तीन रेखाओं से संयुक्त हो उसे "कम्बुग्रीवा" कहते हैं यह १ शङ्खसमान ग्रीवा का नाम है। अवटु, घाटा, कृकाटिका ये ३ गला व शिरकी सन्धि के पिछले भाग या गले में ऊंचे भाग या घांटी के नाम हैं ॥ ८८ ॥

न. न. न. न. न. न. न.
मुख **वक्त्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम्।**
न. स. स. स. स.
नासिका **(क्लीबे)घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा(च)नासिका॥८९॥**

वक्त्र, आस्य, वदन, तुण्ड, आनन, लपन और मुख ये ७ मुख के नाम हैं। घ्राण, गन्धवहा, घोणा, नासा, "नसा, नस्या" नासिका ये ५ नासिका(नाक) के नाम हैं इनमें "कुल्या गन्धवहा घोणा घ्राणं नासा च नासिका" (इति कात्य:) इस कोष के प्रमाण से 'घ्राण' नपुंसक है॥ ८९॥

पु. पु. पु. न.
ओठ, दाढ़ी **ओष्ठाधरौ(तु) रदनच्छदौ दशनवाससी।**
न. पु. पु. पु.स.
गाल, कनपटी **(अधस्ता)च्चिबुकं गण्डौ कपोलौ (तत्परो)हनुः॥९०॥**

ओष्ठ, अधर, "ओष्ठौ, अधरौ, ओष्ठाधरौ" रदनच्छद, दशनवास: (स्) ये ४ ओष्ठ के नाम हैं अथवा कितेक आचार्यों के मत में ऊपरले ओष्ठ को ओष्ठ और निचले ओष्ठ को अधर कहते हैं। निचले अधर के अधोभाग को 'चिबुक' या 'चिबु' कहते हैं यह १ दाढ़ी का नाम है। गण्ड, कपोल ये २ गाल के नाम हैं। उनमें नेत्र और कपोल के मध्यदेश को आचार्यों ने "गण्ड" कहा है। उन कपोलों से पर और चिबुक के अधोभाग को हनु या हनू कहते हैं यह १ कनपटी का नाम है यह स्त्री पुंलिङ्ग में बना रहता है॥ ९०॥

पु. पु.न. पु. पु. न. न.
दांत, तालु, **रदना दशना दन्ता रदास्तालु (तु) काकुदम्।**
जीभ स. स. स. न.
ओठका किनारा **रसज्ञा रसना जिह्वा (प्रान्तावोष्ठस्य) सृक्कणी॥९१॥**

रदन, दशन, दन्त (दत्) रद ये ४ दांत के नाम हैं। इनमें दशन पुंनपुंसक में रहता है और ये बहुत्व से बहुवचनान्त हैं। तालु, काकुद ये २ तालु के नाम हैं। रसज्ञा, रसना, 'रशना' जिह्वा ये ३ जीभ के नाम हैं इनमें 'रसना' स्त्री नपुंसक में व 'जिह्वा' पुंस्त्रीलिङ्ग में रहता है। बायें व दाहिने ओठों के किनारों को 'सृक्कणी' कहते हैं यह १ ओठों के किनारों का नाम है यह नकारान्त नपुंसक होकर द्विवचनान्त है या कवयुक्त (सृक्कणी) है या क्वीबन्त है या अदन्त सृक्क है या इकारान्त नपुंसक 'वारि' के समान जानना चाहिये॥ ९१॥

न. न. पु. स.
भाल, भौंह, **ललाटमलिकं गोधि (रूर्ध्वे दृग्भ्यां) भ्रुवौ (स्त्रियौ)।**
भ्रूमध्य, पु.न. स. स.
नेत्र, तिल **कूर्च(मस्त्री भ्रुवोर्मध्यं)तारका(क्ष्णः)कनीनिका॥९२॥**

ललाट, अलिक, " अलीक " गोधि " भाल " ये ३ माथ या ललाट के नाम हैं इनमें " गोधि " पुंनपुंसक में रहता है । आखों के ऊपरले भाग को " भ्रुवौ " कहते हैं एकत्व में ' भ्रूः ' द्वित्व में " भ्रुवौ " होता है यह स्त्रीलिङ्ग में रहता है यह १ भौंहों का नाम है । नासिका के ऊपर भौंहों के बिचले भाग को ' कूर्च ' कहते हैं यह पुंनपुंसक में रहता है । आंखों के बीच जो कृष्णमण्डल है उसे ' तारका ' व ' कनीनिका ' कहते हैं ये २ आंखों के तिलके नाम हैं ॥ ९२ ॥

न. न. न. न. न. न.

आंख **लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुरक्षिणी ।**

स. स. न. न. न. न. न.

आंसू **दृग्दृष्टी चास्रु नेत्राम्बु रोदनं चास्रमश्रु (च) ॥ ९३ ॥**

लोचन, नयन, नेत्र, ईक्षण, चक्षु (स्) उदन्त भी ' चक्षु, ' अक्षि " अक्ष " दृक्, दृष्टि ये ८ आंखों के नाम हैं इनमें ' लोचन ' से लेकर अक्षि पर्यन्त नपुंसक हैं और दृक् (श्) दृष्टि ये २ स्त्रीलिङ्ग में रहते हैं । अस्रु, नेत्राम्बुरोदन, अस्र, ' अश्र ' अश्रु ये ५ आंसू के नाम हैं ॥ ९३ ॥

आंखों के पु. पु.

किनारे **अपाङ्गौ (नेत्रयोरन्तौ) कटाक्षो (ऽपाङ्गदर्शने) ।**

किनारों से देखना पु. पु. न. स. पु.न. न.

कान **कर्णशब्दग्रहौ श्रोत्रं श्रुतिः(स्त्री)श्रवणं श्रवः ॥ ९४ ॥**

नयनों के अन्तों (किनारों) को 'अपाङ्ग' कहते हैं एकत्व में ' अपाङ्गः ' और द्वित्व में 'अपाङ्गौ' होता है यह १ आंखों के किनारों का नाम है । अपाङ्गों से देखने व चेष्टा करनेको 'कटाक्ष' कहते हैं यह १ आंखों के किनारों से देखने का नाम है अथवा कटाक्ष, अपाङ्गदर्शन ये २ नेत्रप्रान्त से देखने के नाम हैं । कर्ण, शब्दग्रह, श्रोत्र, श्रुति, श्रवण और श्रवः (स्) या अदन्त श्रव ये ६ कान के नाम हैं इनमें 'श्रुति' स्त्रीलिङ्ग व 'श्रवण' पुंनपुंसक है ॥ ९४ ॥

न. न. न. पु. पु.न.

शिर, मस्तक **उत्तमाङ्गं शिरःशीर्षं मूर्धा(ना)मस्तको(ऽस्त्रियाम्) ।**

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

केश, बाल **चिकुरः कुन्तलो बालः कचः केशः शिरोरुहः ॥ ९५ ॥**

उत्तमाङ्ग, शिरः (स्) 'शिर' शीर्ष, मूर्धा (न्) मस्तक 'मस्त' ये ५ शिर के नाम हैं इनमें शिर सान्त व अदन्त है जैसे 'शिरांसि पेतुरन्येषाम्' अदन्त में जैसे "निचकर्त शिराद्द्रौणिः"(इति महाभारते) नान्त 'मूर्धा' पुंलिङ्ग में है और 'मस्तक' पुंनपुंसक में रहता है । चिकुर "चिकूर" कुन्तल, बाल, कच, केश और शिरोरुह ये ६ केशों (बालों) के नाम हैं ॥ ९५ ॥

न. न. पु. उ.

केशसमूह टेढ़े बाल (तद्वृन्दे) कैशिकं कैश्यमलकाश्चूर्णकुन्तलाः।

ललाट पर झुके जुल्फें पु. पु. पु.

(ते ललाटे) भ्रमरकाः काकपक्षः शिखण्डकः॥ ९६॥

कैशिक, कैश्य ये २ केशसमूहों के नाम हैं और ये दोनों नपुंसक में रहते हैं। अलक, चूर्णकुन्तल ये २ टेढ़े बालों के नाम हैं और पुंलिङ्ग होकर एकत्व की विवक्षा में एकवचनान्त व बहुत्व की विवक्षा में बहुवचनान्त रहते हैं। और यदि वे बाल ललाट पै लम्बायमान होकर प्रतीत हों तो उनको 'भ्रमरक' कहते हैं यह १ ललाट पर झुके केशों का नाम है और पुंलिङ्ग में रहता है। काकपक्ष, शिखण्डक, "शिखाण्डक, शिखण्ड" ये २ कुमारों की चोटी या जुलफ़ों के नाम हैं ये दोनों पुंलिङ्ग में रहते हैं॥ ९६॥

स. पु. पु.

पटिया जूड़ा कवरी केशवेशो (ऽथ) धम्मिल्लः (संयताः कचाः)।

स. स. स. स. स.

चोटी जटा शिखा चूडा केशपाशी (व्रतिनस्तु) जटा सटा॥९७॥

कवरी, केशवेश ये २ केश बांधने की रचना (पटिया) के नाम हैं। इनमें 'कवरी' स्त्रीलिङ्ग और 'केशवेश' पुंलिङ्ग में रहता है। यदि मोती व मालादिकों से बँधे या गुथे केश हों तो उनको "धम्मिल्ल" कहते हैं यह १ जूड़ा का नाम है यह पुंलिङ्ग में रहता है। शिखा, चूडा, केशपाशी ये ३ चोटी के नाम हैं। व्रत करनेवाले तपस्वी आदिकों की शिखा को 'जटा' या 'सटा' कहते हैं ये २ तपस्वी की जटा के नाम हैं॥ ९७॥

स. स. पु. पु.

बेनी लुटरी वेणिः प्रवेणी शीर्षण्यशिरस्यौ (विशदे कचे)।

साफ पु. पु. पु.

केशसमूह पाशः पक्ष(श्च) हस्त(श्च कलापार्थाः कचात्परे)॥९८॥

वेणि "वेणी" प्रवेणि "प्रवेणी" ये २ सर्पाकार बनाये केश (बेनी) के नामहैं अथवा तैल आदि लगाने के कारण लटरे बाल होजानेके नामहैं। शीर्षण्य, शिरस्य ये २ स्नानादिकों से निर्मल या सुन्दर केश के नाम हैं। इनमें "शीर्षण्यं तु शीर्षके, सुकेशे पुंसि" इस (मेदिनीकोष) के प्रमाण से 'शीर्षण्य' पुंलिङ्ग में रहता है। कचवाचक से परे हुए पाश आदि तीनों केश समूहवाची होते हैं जैसे कचपाश, केशपाश, केशपक्ष और कुन्तलहस्त आदि कहाते हैं ये ३ केशसमूह के नाम हैं॥ ९८॥

पु.न. न. न. न.

रोम दाढ़ी तनूरुहं रोम लोम (तद्वृद्धौ) श्मश्रु (पुंमुखे) ।

मोछ अलंकार पु. पु. न. न. न.

की शोभा आकल्पवेषौ नेपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ ९९ ॥

तनूरुह, रोम, लोम ये ३ रोवां या लोम के नाम हैं । इनमें अदन्त 'तनूरुह' पुंनपुंसक है और नान्त रोम, लोम ये दोनों नपुंसक में रहते हैं । पुरुष के मुख में लोम के बढ़ने पर उन रोमों को 'श्मश्रु' कहते हैं यह १ दाढ़ी या मोछ का नाम है । आकल्प, वेष "वेश" नेपथ्य, प्रतिकर्म, प्रसाधन ये ५ किये हुए अलंकार की शोभा के नाम हैं ॥ ९९ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

अलंकार करने (दशैते त्रिष्व) लंकर्तालंकरिष्णुश्च मण्डितः ।

वाला पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

अलंकारयुत प्रसाधितोऽलंकृतश्च भूषितश्च परिष्कृतः ॥ १०० ॥

ये कहे जानेवाले 'अलंकर्ता' से लेकर 'रोचिष्णु' पर्यन्त दश शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं या वाच्यलिङ्ग कहाते हैं । अलंकर्ता, अलंकरिष्णु ये २ अलंकार करनेवाले के नाम हैं । मण्डित, प्रसाधित, अलंकृत, भूषित और परिष्कृत ये ५ अलंकार किये हुए के नाम हैं ॥ १०० ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. स. स.

अलंकारादिकों विभ्राड्भ्राजिष्णुरोचिष्णूभूषा (तु स्या) दलंक्रिया ।

से अति शोभित पु. न. पु. न.

अलंकारस्त्वाभरणं परिष्कारो विभूषणम् ॥ १०१ ॥

शृङ्गार गहना न. न. पु.न.

मुकुट मण्डनं (चाथ) मकुटं किरीटं (पुंनपुंसकम्) ।

विभ्राट् (ड्) भ्राजिष्णु, रोचिष्णु ये ३ महाशोभायमान के नाम हैं । इनमें क्विबन्त जकारान्त विभ्राज् है एकत्व में विभ्राट् द्वित्व में विभ्राजौ बहुत्व में विभ्राजः होता है । भूषा, 'भूषण' अलंक्रिया ये २ भूषण क्रिया के नाम हैं । अलंकार, आभरण, परिष्कार 'परिस्कार' विभूषण, मण्डन ये ५ अलंकार (गहना) के नाम हैं । मकुट, 'मुकुट' किरीट ये २ किरीट (शिरोभूषण) के नाम हैं इनमें मुकुट नपुंसक है और किरीट पुंनपुंसक में रहता है ॥ १०१ । ३ ॥

चोटीकी मणि पु. म. पु.

हारके बीच की चूडामणिः शिरोरत्नं तरलो (हारमध्यगः) ॥ १०२ ॥

बड़ी मणि चोटी स. स. स. स.

की सोनेकी पट्टी बालपाश्या पारितथ्या पत्रपाश्या ललाटिका ।

कर्णभूषण या स. न. न. न.

तर्की कुण्डल कर्णिका तालपत्रं (स्या)त्कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ॥ १०३ ॥

चूडामणि, शिरोरत्न ये २ चोटी की मणि या शीशमणि के नाम हैं । हार के बीच में प्राप्त महामणि को 'तरल' कहते हैं यह १ हार के मध्यगत बड़ीमणि का नाम है । बालपाश्या, पारितथ्या ये २ सीमन्तभूषण या स्वर्णपट्टी के नाम हैं । पत्त्रपाश्या, ललाटिका ये २ बन्दी या टीका के नाम हैं । कर्णिका, तालपत्त्र या ताडपत्त्र ये २ कर्णभूषण (कर्णफूल या तर्की) के नाम हैं यहां 'ताटङ्क' भी पढ़ा जाता है यह १ सोने से बनी ढारों का नाम है । कुण्डल, कर्णवेष्टन ये दो कुण्डलों के नाम हैं ॥ १०२ । १०३ ॥

कण्ठा, कण्ठी　न.　स.　न.　स.

लम्बीकण्ठी　**ग्रैवेयकं कण्ठभूषा लम्बनं (स्या) ल्ललन्तिका ।**

सोने की लम्बी　स.　स.

कण्ठी मोतियों से गुथी कण्ठी　**(स्वर्णैः)प्रालम्बिकाथोरःसूत्रिका(मौक्तिकैः कृता)१०४॥**

ग्रैवेयक, [1] " ग्रैवेय, ग्रैव " कण्ठभूषा ये २ कण्ठभूषण या कण्ठा के नाम हैं । लम्बन, ललन्तिका ये २ नाभिपर्यन्त लम्बीकण्ठी के नाम हैं यदि वही ललन्तिका सोने से बनाई गई हो तो उसे 'प्रालम्बिका' कहते हैं यह १ सोने की लम्बी कण्ठी का नाम है । और यदि वही 'ललन्तिका' मोतियों से गुही जावे तो उसे 'उरस्सूत्रिका' कहते हैं यह १ मोतियों से गुथी कण्ठी का नाम है ॥ १०४ ॥

पु.　स.　पु.

मोतियोंका हार　**हारो मुक्तावली देवच्छन्दो (ऽसौ शतयष्टिकः) ।**

पु.　पु.　पु.

सौलरका हार　**(हारभेदा यष्टिभेदा) द्गुत्सगुत्सार्धगोस्तनाः ॥ १०५ ॥**

पु.　पु.　स.

हारभेद　**अर्धहारो माणवक एकावल्ये (कयष्टिका) ।**

स.

(सैव) नक्षत्रमाला (स्यात्सप्तविंशतिमौक्तिकैः)॥१०६॥

हार, मुक्तावली ये २ मोतियों के हार के नाम हैं । वही मुक्तावली सौ लरों या एकसौआठ लरों या ८१ लरों से बनाईगई हो तो उसे देवच्छन्द कहते हैं यह १ सौ लरवाले हार का नाम है । लरों के भेद से गुत्स आदि हारों के भेद होते हैं जैसे कि ३२ लरोंवाले हार को 'गुत्स' या 'गुच्छ' तथा २४ लरोंवाले हार को गुत्सार्ध या गुच्छार्ध कहते हैं, चार लरवाले हारको 'गोस्तन' बारह लरवाले हार को 'अर्धहार' बीस लरवाले हारको 'माणवक' और एक लरवाले हार को 'एकावली' कहते हैं और यदि वही एकावली २७ मोतियों से बनाईगई हो तो उसे 'नक्षत्रमाला' कहते हैं यह प्रत्येक का एक २ नाम है ॥ १०५ । १०६ ॥

---

१ " स ग्रैवेयस्त्वमसि फणिना " (इति रामशेखरः) ॥

पु. पु. पु. न. पु. न.
पहुँची व कड़े आवापकः पारिहार्यः कटको वलयो (ऽस्त्रियाम्)।
बाजूबन्द पु.न. पु.न. पु. न. स.
आदि अंगूठी केयूरमङ्गद (न्तुल्ये) अङ्गुलीयकमूर्मिका ॥ १०७ ॥

आवापक, पारिहार्य, कटक, वलय ये ४ कङ्कण, कड़े या पहुँची आदि के नाम हैं। इनमें 'कटक' वलय ये दोनों पुंनपुंसक में बर्तते हैं। केयूर, अङ्गद ये २ बिजायठ या बाजूबन्द आदि के नाम हैं और ये दोनों समानार्थक व समानलिङ्ग होकर पुंनपुंसक में रहते हैं। अङ्गुलीयक, "अङ्गुरीयक" ऊर्मिका ये २ अंगूठी व छल्ले आदिकों के नाम हैं इनमें अङ्गुलीयक, अङ्गुरीयक ये २ पुंनपुंसक हैं और 'ऊर्मिका' स्त्रीलिङ्ग है ॥ १०७ ॥

स. पु.न. न.
मोहर करने-वाली कङ्कण (साक्षरा)ङ्गुलिमुद्रा(सा)कङ्कणं करभूषणम्।
स. स. स. स.
व कड़ा अंगूठी स्त्रियों की (स्त्रीकट्यां)मेखला काञ्ची सप्तकी रशना(तथा)॥१०८॥
पु.स.न.
करधनी पुरुषों की करधनी (क्लीबे)सारसनं(चाथ पुंस्कट्यां)शृङ्खलं(त्रिषु)।

वही 'ऊर्मिका' राम नाम आदि अक्षरों से अङ्कित होवे तो वह 'अङ्गुलिमुद्रा' कहाती है। यह १ मोहर करने की अँगूठी का नाम है। कङ्कण, करभूषण ये २ कङ्कण या कड़े के नाम हैं इनमें 'कङ्कण' पुंनपुंसक है। मेखला, काञ्ची 'काञ्चि' सप्तकी, रशना "रसना" सारसन ये ५ स्त्रियों के कटिभूषण या करधनी के नाम हैं इनमें "सारसन" नपुंसक में रहता है और "शृङ्खल" यह त्रिलिङ्ग में वर्तमान रहता है यह पुरुषों की करधनी का नाम है ॥ १०८ । [१][२] ॥

न. पु. पु.न. पु.न.
बिछिया या पायजेब पादाङ्गदं तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरो(ऽस्त्रियाम्) ॥ १०९ ॥
पु. पु. स. स.
घुंघुरू हंसकः पादकटकः किङ्किणी क्षुद्रघण्टिका।
स.
वस्त्रों के बनाने का कारण (त्वक्फलकृमिरोमाणि) वस्त्रयोनि (र्दश त्रिषु) ॥११०॥

पादाङ्गद, तुलाकोटि "तुलाकोटी" मञ्जीर, "मञ्जील" नूपुर, हंसक, पादकटक ये ६ बिछिया या पायजेब के नाम हैं। अथवा पादाङ्गद, तुलाकोटि, "तुला-

---

१ "ऊर्मिः स्त्रीपुंसयोर्वीच्यां प्रकाशे वेगभङ्गयोरिति" (मेदिनी) ॥
२ "एका यष्टिर्भवेत्काञ्ची मेखला त्वष्टयष्टिका। रसना षोडश ज्ञेयाः कलापः पञ्चविंशकः" इति भेदस्त्विह न विवक्षितः ॥

कोटी ये ३ बिछिया या पलनिया के नाम हैं । मञ्जीर, नूपुर ये २ पैंजनियां के नाम हैं और ये दोनों पुंनपुंसक हैं । हंसक, पादकटक ये २ कड़ा के नाम हैं । किङ्किणी, "किङ्किणि" "कङ्कणी" क्षुद्रघंटिका ये २ घुंघुरू के नाम हैं । त्वक् आदि चार 'वस्त्रयोनि' वस्त्रों के कारण हैं इन कारणों को चार भांति होनेसे वस्त्र भी चारही प्रकार के हैं यह १ वस्त्रकारणों का नाम है । और कहे जानेवाले क्षौमादि को छोड़कर 'वाल्क' से लेकर 'निष्प्रव' पर्यन्त दश शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं और चकारसे ग्यारहवां 'तन्त्रक' भी तीनों लिङ्गमें रहता है ॥ १०९।११०॥

पु.स.न   १   पु.स.न.   पु.स.न.   पु.स.न.

अलसी से बने, कपास से रचे — **वाल्कं(क्षौमादि)फालं'तु' कार्पासं बादरं (च तत्) ।**

पु.स.न.   पु.स.न.   पु.स.न.   पु.स.न.

रेशमी कपड़े पशमीना आदि — **कौशेयं कृमिकोशोत्थं राङ्कवं मृगरोमजम् ॥ १११ ॥**

क्षौम आदि वस्त्रको 'वाल्क' कहते हैं यह १ अलसी आदि के बकले से बने वस्त्रका नाम है यानी अलसी से बने वस्त्र को 'क्षौम' शण से बने वस्त्र को 'शाण' और बकले से बने वस्त्र को 'वाल्क' कहते हैं । फाल, कार्पास, बादर ये ३ कपास से बने वस्त्र के नाम हैं । कौशेय, "कौषेय" कृमिकोशोत्थ ये २ रेशम से बने वस्त्रके नाम हैं । राङ्कव, मृगरोमज ये २ पशुरोमों से रचे वस्त्र के नाम हैं यहां पर मृग शब्दसे पशुमात्रका ग्रहण किया जाता है उसीसे कम्बल आदि वस्त्रों को भी 'राङ्कव' जानना चाहिये ॥ १११ ॥

पु.स.न.   पु.स.न.   पु.स.न.   न.

नवीन वस्त्र, **अनाहतं निष्प्रवाणि तन्त्रकं (च) नवाम्बरे ।**

न.

धोये वस्त्र **(तत्स्यादु) द्गमनीयं (यद्धौतयोर्वस्त्रयोर्युगम[2]) ॥ ११२ ॥**

अनाहत, निष्प्रवाणि, तन्त्रक, नवाम्बर ये ४ नये कपड़े के नाम हैं यानी कोरे मढ़िहाये वस्त्र के नाम हैं । इनमें 'नवाम्बर' यह नपुंसक है । धोयेहुए वस्त्रों का जो जोड़ा है उसे 'उद्गमनीय' कहते हैं यह भी नपुंसक है यह १ धोये वस्त्रों के जोड़े का नाम है ॥ ११२ ॥

न.   न.   न.   न.

धोये रेशमी दुशाला आदि — **पत्त्रोर्णं धौतकौशेयं बहुमूल्यं महाधनम् ।**

न.   न.   पु.स.न.   पु.स.न.

पट्ट वस्त्र वस्त्रों का किनारा — **क्षौमं दुकूलं (स्याद्) द्वे तु निवीतं प्रावृतं(त्रिषु) ॥ ११३ ॥**

---

१ "वाल्कक्षौमफालकार्पासबादरकौशेयराङ्कवानाहतनिष्प्रवाणितन्त्रकाणि" (इति स्वामी) ॥

२ युगमित्यविवक्षितम् ॥

पत्त्रोर्णा, धौतकौशेय "धौतकौषेय" ये २ धोये रेशमी कपड़े के नाम हैं। बहुमूल्य, महाधन ये २ शाल, दुशाले आदि के नाम हैं। क्षौम, 'क्षोम' दुकूल ये २ पट्टवस्त्र या पीताम्बर आदि के नाम हैं। और निवीत, निवीता, "निवृत्त" प्रावृत, 'प्रावृता' ये दोनों तीनों लिङ्ग में रहते हैं ये २ वस्त्रों के किनारे या वस्त्र से ढकेहुए के नाम हैं ॥ ११३ ॥

स॰ पु.स.
वस्त्रों का छोर (स्त्रियां बहुत्वे वस्त्रस्य) दशाः (स्यु) र्वस्तयो (द्वयोः) ।
न. पु. पु. पु. स.
लम्बाई चौड़ाई दैर्घ्यमायाम आनाहः परिणाहो विशालता ॥ ११४ ॥

दशाः, वस्तयः ये २ वस्त्रों के दोनों किनारों या छोरोंके नाम हैं इनमें 'दशा' स्त्रीलिङ्ग में नित्य बहुवचनान्त है और 'वस्ति' एकत्व में 'वस्तिः' और बहुत्व में 'वस्तयः' होता है यह स्त्री, पुंलिङ्ग दोनों के बहुवचन में रहता है। दैर्घ्य, आयाम, "आरोह" आनाह ये ३ वस्त्रादिकों की लम्बाई के नाम हैं इनमें "दैर्घ्य" नपुंसक है। परिणाह, विशालता ये २ चौड़ाई, चकलाई, विस्तार या पनहा के नाम हैं। इनमें 'परिणाह' पुंलिङ्ग है और विशालता स्त्रीलिङ्ग है ॥ ११४ ॥

न. न. पु. पु.
पुराना वस्त्र फटा पटच्चरं जीर्णवस्त्रं (समौ) नक्तककर्पटौ ।
या चिथड़ा न. न. न. न. न. न.
वस्त्रमात्र वस्त्रमाच्छादनं वासश्चेलं वसनमंशुकम् ॥ ११५ ॥

पटच्चर, जीर्णवस्त्र ये २ जीर्ण या पुराने वस्त्र के नाम हैं। नक्तक या 'लक्तक', कर्पट ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ फटे या चिथड़े कपड़ों के नाम हैं। वस्त्र, आच्छादन, वासः (स्) चेल या चैल, वसन, अंशुक ये ६ वस्त्रमात्र के नाम हैं ॥ ११५ ॥

पु. पु.न. पु.न. पु.न.न.
अच्छेकपड़े मोटे सुचेलको[1] पटोऽस्त्री[2] (ना) वराशिः स्थूलशाटकः ।
कपड़े ओढ़ार पु. पु. पु. पु.
कम्बल निचोलः प्रच्छदपटः (समौ) रल्लककम्बलौ ॥ ११६ ॥

सुचेलक, पट ये २ अच्छे वस्त्र के नाम हैं इनमें 'पट' पुंनपुंसक में रहता है। वराशि, 'वरासि' स्थूलशाटक ये २ मोटे कपड़े के नाम हैं इनमें 'वरासि' पुंलिङ्ग है व किसीके मत में पुंनपुंसक है और 'स्थूलशाटक' तीनों लिङ्गमें रहता है।

---

१ शोभनं चेलमेव स्वार्थे कन् स्वार्थिकाः प्रकृतितो लिङ्गवचनान्यतिवर्तन्तेऽपि ॥
२ "पटोऽस्त्री कर्पटः शाटः सिचयप्रोतलक्तकाः" (इति रभसः) ॥

निचोल, निचोली, 'निचुल' प्रच्छदपट ये २ वीणा आदिके वेठन या ओहार के नाम हैं इनमें 'निचोल' त्रिलिङ्ग है और 'प्रच्छदपट' पुंलिङ्ग है । रल्लक, कम्बल ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ कम्बलके नाम हैं ॥ ११६ ॥

न. न. न. न.

धोती आदि **अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधोंशुके ।**

पु. पु. स्त्री.

अँगौछा या दुपट्टा आदि **(द्वौ)प्रावारोत्तरासङ्गौ (समौ) बृहतिका(तथा)॥११७॥**

न. न. पु.स्त्री. पु.न.

अँगिया या चोली **संव्यानमुत्तरीयं (च) चोलकूर्पासकौ (स्त्रियाः)।**

रजाई या अँगरखा पु. **नीशारः (स्यात्प्रावरणे हिमानिलनिवारणे) ॥ ११८ ॥**

अन्तरीय, उपसंव्यान, परिधान, अधोंशुक ये ४ देह के अधोभाग में पहिरनेवाले धोती आदि वस्त्रों के नाम हैं । प्रावार, 'प्रावर' उत्तरासङ्ग, बृहतिका, संव्यान, उत्तरीय ये ५ अँगौछा या दुपट्टा के नाम हैं । इनमें प्रावार, उत्तरासङ्ग ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं तथा बृहतिका स्त्रीलिङ्ग है । चोल, "चोली" कूर्पासक ये २ स्त्रियों की अँगिया या चोली के नाम हैं अथवा कितेक आचार्यों के मत में " चोलः कूर्पासकोऽस्त्रियाम् " ऐसा पाठ है वहां चोल स्त्री, पुंलिङ्ग है और 'कूर्पासक' स्त्रीलिङ्ग में नहीं है वरन पुंनपुंसक में रहता है । जिसके ओढ़ने से हवा और ठंड का बराव होता है उसे 'नीशार' कहते हैं यह १ रजाई या अँगरखा का नाम है ॥ ११७ । ११८ ॥

पु.न.

(अर्धोरुकं वरस्त्रीणां स्या) च्चण्डातक (मंशुकम्)।

पु.स्त्री.न.

(स्यात्त्रिष्वा)प्रपदीनं(तत्प्राप्नोत्याप्रपदं हि तत्)॥११९॥

आधी जांघ तक पहुँचनेवाले लहँगा को " चण्डातक " कहते हैं यह नपुंसक है परन्तु वोपालितकोष के प्रमाण से पुंलिङ्ग भी पाया जाता है यह १ उठंग लहँगा का नाम है । जो वस्त्र आदि पैरों के अग्र पर्यन्त प्राप्त होता है उसे 'आप्रपदीन' या 'आप्रपदीना' कहते हैं यह तीनों लिङ्ग में रहता है यह १ लम्बे लहँगा का नाम है ॥ ११९ ॥

पु.न. पु. न.

चँदवा तम्बू **(अस्त्री) वितानमुल्लोचो दूष्या (द्यं वस्त्रवेश्मनि)।**

स्त्री. स्त्री. स्त्री.

डेरा कनात **प्रतिसीरा जवनिका (स्या) त्तिरस्करणी (च सा) ॥ १२० ॥**

वितान, उल्लोच ये २ चँदवा या सामिआना के नाम हैं। इनमें 'वितान' पुंनपुंसक है। कपड़ों से बने घर में 'दूष्य' या 'दूश्य' होता है आद्यशब्द से पटकुटी, पटवेश्म, पटवास और पटकुड्य आदिकों का ग्रहण होता है यह १ डेरा तम्बू या रावटी आदि का नाम है। प्रतिसीरा, जवनिका 'यमनिका' तिरस्करणी, "तिरस्कारिणी" ये ३ कनात या पड़दा के नाम हैं। पर्यङ्किका, परिकर, पर्यङ्क, अवसक्थिका ये ४ पटुका के नाम हैं। 'अञ्चल' यह १ आंचर का नाम है। 'नीवी' यह १ कोंछी या फुफुन्दी का नाम है॥ ११० ॥

न. पु. स. स. स.

अङ्गसंस्कार पोछना उबटना परिकर्माङ्गसंस्कारः (स्या) न्मार्ष्टिमार्जना मृजा।

नहाना न. न. पु. पु.

चन्दनादि से लेपे गये गन्ध को फिर करना उद्वर्तनोत्सादने (द्वे समे) आप्लाव आप्लवः॥ १२१॥

न. स. न. पु. न.

स्तन, गाल आदि में कस्तूरी आदि से चिह्न रचना स्नानं चर्चा (तु) चार्चिक्यं स्थासको (थ) प्रबोधनम्।

पु. स. स.

अनुबोधः पत्रलेखा पत्राङ्गुलि (रिमे समे)॥ १२२॥

परिकर्म (न्) "प्रतिकर्म" अङ्गसंस्कार ये २ रोली आदिकों से गात्र में संस्कारमात्र के नाम हैं। मार्ष्टि, मार्जना, मृजा ये ३ पोछने आदि से अङ्ग के निर्मल करने के नाम हैं। उद्वर्तन, उत्सादन "उच्छादन" ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ पीसी द्रव्य से देहमल दूर करने या उबटने के नाम हैं। आप्लाव, आप्लव, स्नान ये ३ नहाने के नाम हैं। चर्चा, चार्चिक्य, स्थासक ये ३ चन्दन आदि से देहविलेपन के नाम हैं। प्रबोधन, अनुबोध (अनुरोध) ये २ गये गन्ध के फिर प्रकट करने के नाम हैं "जैसे कस्तूरी आदि को मद्य आदि से" पत्रलेखा, पत्राङ्गुलि (पत्रावली) ये २ कस्तूरी या केसर आदि से स्तन, कपोलादिकों में बनाये तिलकविशेष के नाम हैं और स्त्रीलिङ्ग हैं पत्ते के आकार 'पत्रलेखा' कहाती है जोकि कलिङ्गादि देशों में विख्यात है॥ १२१। १२२॥

न. न. न. पु.न.

तिलक, तमालपत्रतिलकचित्रकाणि विशेषकम्।

न.

(द्वितीयं च तुरीयं च न स्त्रिया) मथ कुङ्कुमम्॥ १२३॥

न. न. न. न. न.

कुंकुम काश्मीरजन्माग्निशिखं वरं वाल्हीकपीतनम्।

न. न. न. न. न.

रक्तसंकोचपिशुनं धीरलोहितचन्दनम्॥ १२४॥

तमालपत्र, तिलक, चित्रक, विशेषक ये ४ ललाट में किये तिलक के नाम हैं। यहां दूसरा 'तिलक' और चौथा 'विशेषक' ये दोनों स्त्रीलिङ्ग नहीं हैं बरन पुंनपुंसक हैं। कुङ्कुम, कश्मीरजन्म, "काश्मीरजन्म" (न्) अग्निशिख, वर, (चारु) बाल्हीक, "बाल्हिक" पीतन, रक्त, संकोच, पिशुन, धीर, लोहितचन्दन और "लोहित" ये ११ कुङ्कुम या केसर के नाम हैं॥ १२३ । १२४ ॥

स. स. न. पु. पु. पु.
महावर राक्षा लाक्षा जतु (क्लीबे) यावोऽलक्तो द्रुमामयः ।
न. न. न. न.
लवङ्ग लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञ (मथ) जायकम् ॥ १२५ ॥
न. न.
पीतचन्दन कालीयकं (च) कालानुसार्यं (चाथ समार्थकम्) ।
न. न. न. न. न. न.
अगुरु वंशकागुरुराजार्हलोहकृमिजजोङ्गकम् ॥ १२६ ॥

राक्षा, 'रक्षा' लाक्षा, 'लक्षा' जतु, याव, अलक्त "अलक्तक" द्रुमामय ये ६ लाख (लाह) या महावर के नाम हैं। इनमें 'जतु' नपुंसकमें रहता है। लवङ्ग, देवकुसुम, श्रीसंज्ञ ये ३ लवङ्ग के नाम हैं ये तीनों नपुंसक हैं। जायक, (जापक) कालीयक, "कालियक—कालेयक" कालानुसार्य ये ३ पीलेचन्दन या तगर के नाम हैं। वंशक, "वंशिक, वंशिका" अगुरु, "अगरु" राजार्ह, लोह, कृमिज, जोङ्गक ये ६ अगरु के नाम हैं इनमें 'अगुरु' पुंनपुंसक है और ये छहों समान अर्थवाले कहाते हैं॥ १२५ । १२६ ॥

न. पु. न. स.
कालाअगुरु कालागुर्वगुरु (स्यात्त) न्मङ्गल्या (मल्लिगन्धियत्) ।
पु. पु. पु. पु.
अगुरुका भेद यक्षधूपः सर्जरसो रालसर्वरसावपि ॥ १२७ ॥
यक्षधूप या राल पु. पु. पु.
दशाङ्गधूप बहुरूपो (ऽप्यथ) वृकधूपकृत्रिमधूपकौ ।

कालागुरु, अगुरु ये २ काले अगुरु के नाम हैं। जो अगुरु मल्लिका पुष्प के समान गन्धवाला होता है उसे 'मङ्गल्या' कहते हैं यह १ मल्लिकागन्धयुक्त अगुरु का नाम है यह स्त्रीलिङ्ग है। यक्षधूप, सर्जरस, अराल "राल" सर्वरस, बहुरूप ये ५ यक्षधूप या राल के नाम हैं, और पांचो पुंलिङ्ग हैं। वृकधूप (बकधूप) कृत्रिमधूपक ये २ बहुतसे सुगन्धित पदार्थों को मिलाकर बनाये दशाङ्गादि धूपके नाम हैं और पुंलिङ्ग कहाते हैं॥ १२७ । $\frac{1}{2}$ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

लोबान तुरुष्कः पिण्डकः सिल्हो यावनो(ऽप्यथ)पायसः ॥१२८॥

पु. पु. पु. पु.

देवदारु धूप श्रीवासो वृकधूपो (ऽपि) श्रीवेष्टसरलद्रवौ।

तुरुष्क, पिण्डक, सिल्ह, 'सिल्हक' यावन ये ४ लोबानधूप के नाम हैं और चारो पुंलिङ्ग हैं। पायस, श्रीवास, वृकधूप, श्रीवेष्ट, "श्रीपिष्ट" सरलद्रव ये ५ सरलद्रव या देवदारुधूप के नाम हैं और ये सबही पुंलिङ्ग हैं ॥ १२८ । १ ॥

पु. पु. स. न.

कस्तूरी मृगनाभिर्मृगमदः कस्तूरी (चाथ) कोलकम्॥ १२९॥

न. न. पु न.

कबाबचीनी कक्कोलकं कोशफल (मथ) कर्पूर (मस्त्रियाम्)।

पु. पु. पु. स.

कपूर घनसारश्चन्द्रसंज्ञः सिताभ्रो हिमबालुका ॥ १३० ॥

मृगनाभि, "मृग—नाभि" मृगमद, "मद" कस्तूरी ये ३ कस्तूरी के नाम हैं। इनमें 'कस्तूरी' स्त्रीलिङ्ग है। कोलक, "कोरक" कक्कोलक, कोशफल ये ३ कबाबचीनी के नाम हैं। ये तीनों नपुंसक हैं। कर्पूर, घनसार, चन्द्रसंज्ञ, सिताभ्र (सिताभ) हिमबालुका ये ५ कपूर के नाम हैं इनमें 'कर्पूर' पुंनपुंसक है और हिमबालुका स्त्रीलिङ्ग है ॥ १२९ । १३० ॥

पु. पु. पु. पु.न.

मलयागिरि गन्धसारो मलयजो भद्रश्रीश्चन्दनो (ऽस्त्रियाम्)।

चन्दन चन्दनों न. न. पु.न.

के भेद तैलपर्णिकगोशीर्षे हरिचन्दन (मस्त्रियाम्) ॥१३१॥

गन्धसार, मलयज, भद्रश्री, चन्दन ये ४ मलयागिरिचन्दन के नाम हैं। इनमें 'चन्दन' पुंनपुंसक है। 'तैलपर्णिक' यह १ सफ़ेद शीतल चन्दनविशेषका नाम है। गोशीर्ष "गोशीर्षक" यह १ कमलसमान गन्धवाले चन्दन का नाम है और 'हरिचन्दन' यह १ पीले वर्णवाले चन्दन का नाम है यह पुंनपुंसक लिङ्ग है ॥ १३१ ॥

स. न. न. न.

रक्तचन्दन तिलपर्णी (तु) पत्राङ्गं रञ्जनं रक्तचन्दनम्।

न. न. न.

जायफल कुचन्दनं (चाथ) जातीकोशजातीफले (समे) ॥१३२॥

तिलपर्णी, पत्राङ्ग, "पत्रङ्ग, पत्तङ्ग" रञ्जन, रक्तचन्दन, कुचन्दन ये ५ लाल

१ "श्रीवेष्टरचनाशोभाभारतीसरलद्रवे" (इति विश्वः) ॥

चन्दन (देवीचन्दन) के नाम हैं। जातीकोश 'जातीकोष' जातीफल, जातिफल, (जाति, जाती, फल) ये २ जायफल के नाम हैं; और ये दोनों समानार्थक हैं यानी समान अर्थवाले कहाते हैं ॥ १३२ ॥

महासुगन्धित लेप पीसे सुगन्धित द्रव्य घिसे चन्दनादि लेप

पु.
(कर्पूरागरुकस्तूरीकक्कोलै) र्यक्षकर्दमः।
स. स. न. न.
गात्रानुलेपनी वर्तिर्वर्णकं स्याद्विलेपनम् ॥ १३३ ॥

कपूर, गूगल, कस्तूरी, कबाबचीनी बराबर मिलाने से जो लेप बनता है उसे 'यक्षकर्दम' कहते हैं। यह १ महासुगन्धित लेपविशेष का नाम है। गात्रानुलेपनी, वर्ति (वर्ती) ये २ पिसी हुई लेपनवस्तु के नाम हैं। वर्णक, विलेपन ये २ घिसे हुए चन्दनादि लेपमात्र के नाम हैं अथवा ये ४ देहके अनुलेपनयोग्य पिसे केशर आदि सुगन्धित द्रव्य के बने उबटने के नाम हैं ॥ १३३ ॥

सुगन्धकारक चूर्ण वासित वस्तु गन्धमालादि का धारण

न. पु. पु.स.न. पु.स.न.
चूर्णानि वासयोगाः (स्यु) र्भावितं वासितं (त्रिषु)।
न.
(संस्कारो गन्धमाल्याद्यैर्यः स्यात्तद) धिवासनम् १३४॥

चूर्ण, वासयोग ये २ पटवास आदि के सुगन्धित करनेवाले चूर्ण के नाम हैं। इनमें " चूर्णो धूलौ क्षारभेदे चूर्णानिवासयुक्तिषु " (इति मेदिनी) इस प्रमाण से 'चूर्ण' नपुंसक है और 'वासयोग' पुंलिङ्ग है। भावित, वासित ये २ गन्धद्रव्य से सुगन्धित किये वस्तु के नाम हैं और ये दोनों त्रिलिङ्ग हैं। गन्धमाल्य और धूप आदि से सुगन्ध बढ़ाने के लिये वस्त्र, ताम्बूल आदि का जो संस्कार किया जाता है उसे 'अधिवासन' कहते हैं यह १ गन्धमालादि धारने का नाम है ॥ १३४ ॥

शीशमाल्य केशमध्यमाल्य शिर से चोटी तक शिर से ललाट तक

न. स. स. पु.
माल्यं मालास्रजौ (मूर्ध्नि) केशमध्ये (तु) गर्भकः।
न. न.
प्रभ्रष्टकं (शिखालम्बि) (पुरोन्यस्तं) ललामकम् ॥ १३५॥

माल्य, माला, स्रक्, " स्रग्, द्वित्वे स्रजौ, बहुत्वे स्रजः " ये ३ शीश में धरे फूल माला के नाम हैं। इनमें 'माल्य' नपुंसक है और माला व स्रक् (ज्) ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं। केशों के मध्य धरी मालाको 'गर्भक' कहते हैं यह १ शीश के बीच धरी माला का नाम है यह पुंलिङ्ग है। जो माला शिखा में लटकती है या लम्बमान होती है उसे 'प्रभ्रष्टक' कहते हैं यह १ शीश से चोटीतक लम्बी माला

का नाम है। आगे रक्खी या ललाटपर्यन्त फेंकी मालाको 'ललामक' कहते हैं यह १ शीश से ललाटतक पहनी मालाका नाम है ॥ १३५ ॥

न. न.
गलस्थमाला प्रालम्ब (मृजुलम्बि स्यात्कण्ठा) द्वैकक्षिकं (तु तत्)।
वक्षस्थमाला पु. पु.
शिखास्थमाला (यत्तिर्यकृक्षिप्तमुरसि) (शिखास्वा) पीडशेखरौ॥१३६॥

जो माला कण्ठ से ऊपरले भाग में सीधी होकर लम्बमान देखी जावे तो उसे 'प्रालम्ब' कहते हैं। यह १ गलेतक लटकी या लम्बीमालाका नामहै। जो माला टेढ़ी होकर जनेऊ के समान छातीपर फैलाई गई हो उसे 'वैकक्षिक' कहते हैं यह १ जनेऊ के समान छातीपै लटकी माला का नाम है और जो माला शिखा में रक्खी गई हो तो उसे आपीड वा शेखर कहते हैं ये दोनों पुंलिङ्गहैं ये २ चोटी में रक्खे माल्यमात्र के नाम हैं ॥ १३६ ॥

स. पु. पु. स.
मालादिका रचना (स्या) त्परिस्पन्द आभोगः परिपूर्णता।
बनाना सब न. पु. स. न.
वस्तु से पूर्ण उपधानं तूपबर्हः शय्यायां शयनीय (वत्) ॥ १३७॥
तकिया शय्या न. पु. पु. पु. स.
पलँग शयनं मञ्चपर्यङ्कपल्यङ्काः खट्वया (समाः)।

रचना, परिस्पन्द "परिस्यन्द" ये २ माल्य आदि की रचना के नाम हैं। आभोग, परिपूर्णता ये २ सब सामग्रीसे परिपूर्ण के नाम हैं। उपधान, उपबर्ह ये २ तकिया के नाम हैं। शय्या, शयनीय, शयन ये ३ तोशक, गलीचा आदि बिछौने के नाम हैं। मञ्च, पर्यङ्क, पल्यङ्क, खट्वा ये ४ पलंग के नाम हैं और ये समानार्थक कहाते हैं ॥ १३७ । ½ ॥

पु. पु. पु. पु. न. न.
गेंद या छोटी गेन्दुकः कन्दुको दीपः प्रदीपः पीठमासनम् ॥ १३८ ॥
तकिया, दीप, पु. पु. पु. पु.
आसन, डब्बा, समुद्गकः संपुटकः प्रतिग्राहः पतद्ग्रहः।
पीकदान, कङ्घी, स. * स. पु. पु.
बुकनी प्रसाधनी कङ्कतिका पिष्टातः पटवासकः ॥ १३९ ॥

गेन्दुक "गेण्डुक" कन्दुक ये २ खेलने के गेंद या गाल की तकिया के नाम

---

१ "दीपस्तु स्नेहाशः कज्जलध्वजः। दशेन्धनो गृहमणिर्दोषातिलक इत्यपि। शिखातरुर्दीपवृक्षो ज्योत्स्नावृक्षोऽथ लोचकः (इति त्रिकाण्डशेषः)॥

हैं। दीप, प्रदीप ये २ दीपक (दिया) के नाम हैं। पीठ, आसन ये २ पीढ़ा, मचिया, मोढ़ा या कुरसी आदि के नाम हैं। समुद्गक " समुद्रा " संपुटक "संपुट" ये २ डब्बा या चौघड़ा के नाम हैं। प्रतिग्राह, ' प्रतिग्रह ' पतद्ग्रह ये २ पीकदान के नाम हैं। प्रसाधनी, ' प्रसाधन ' कङ्कतिका, कङ्कती, ' कङ्कत' ये २ हाथीदांत या अन्य की बनी कङ्घी या ककवा, ककई के नाम हैं। पिष्टात, पटवासक ये २ बुकवा या चोवा या अर्गजा की बुकनी के नाम हैं और ये दोनों पुंलिङ्ग हैं॥ १३८। १३९॥

सीसा या दर्पण पु.न.　पु.　पु.　.　न.　न.

बेना या पंखा **दर्पणे मकुरादर्शौ व्यजनं तालवृन्तकम्॥ १४०॥**

इति मनुष्यवर्गः॥

दर्पण, मकुर, " मङ्कुर " मुकुर, आदर्श, अदर्श ये ३ दर्पण (सीसा) या आरसी के नाम हैं; और ये तीनों पुंलिङ्ग हैं। व्यजन, तालवृन्तक, "तालवृन्त" ये २ ताडपत्र के बने व्यजना या पंखा के नाम हैं और ये दोनों नपुंसक हैं॥१४०॥

इति मनुष्यवर्गविवरणम्॥

अथ ब्रह्मवर्गो व्याख्यायते।

स.　न.　न.　न.　पु.　पु.

वंश　**सन्ततिर्गोत्रजननकुलान्यभिजनान्वयौ।**

पु.　पु.　पु.　पु.

वर्ण　**वंशोऽन्ववायः सन्तानो वर्णाः (स्युर्ब्राह्मणादयः)॥१॥**

सन्तति, गोत्र, जनन, कुल, अभिजन, अन्वय, वंश, अन्ववाय और सन्तान ये ९ वंश के नाम हैं; इनमें ' संतति ' स्त्रीलिङ्ग है; गोत्र, जनन, कुल ये तीनों नपुंसक हैं और शेष पुंलिङ्ग कहाते हैं। ब्राह्मण आदि ' वर्ण ' कहाते हैं यह १ वर्णमात्र का नाम है॥ १॥

न.

चारवर्ण राज- **(विप्रक्षत्रियविट्शूद्रा) श्चातुर्वर्ण्य (मिति स्मृतम्)।**

उ.　पु.　पु.　पु.

वंश कुलीन **राजबीजी राजवंश्यो बीज्यस्तु कुलसंभवः॥ २॥**

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये चारो वर्ण ' चातुर्वर्ण्य ' कहाते हैं यह १ चारों वर्णों का नाम है। राजबीजी, राजवंश्य ये २ राजवंश में उपजे हुए के नाम हैं। बीज्य, कुलसंभव ये २ कुलमात्र में उपजे (कुलीन) के नाम हैं॥ २॥

---

१ किं तद्दर्पणमस्ति यत्र सकलमिति धर्मसेनोऽतो नपुंसकमपि॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
महाकुलीन माहाकुलकुलीनार्यसभ्यसज्जनसाधवः ।
ब्रह्मचारी आदि पु. पु. पु. पु.
चारो आश्रम ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षु (श्चतुष्टये) ॥ ३ ॥
पु. पु. पु. पु. पु.
ब्राह्मण, आश्रमो (ऽस्त्री) द्विजात्यग्रजन्मभूदेववाडवाः ।
पु. पु.
ब्राह्मणकर्म विप्रश्च ब्राह्मणो(ऽसौ)षट्कर्मा(यागादिभिर्युतः) ॥४॥

माहाकुल, 'महाकुल' कुलीन, "कुल्य, कौलेय, कौलेयक" आर्य, सभ्य, सज्जन, साधु ये ६ आर्य (सज्जन) के नाम हैं । ब्रह्मचारी, गृही, वानप्रस्थ और भिक्षु (संन्यासी) इन चारोंके स्थान को " आश्रम " कहते हैं वह पुंनपुंसक है यह १ ब्रह्मचर्य आदि चारों आश्रम का नाम है । द्विजाति, " द्विज, द्विजन्मा " अग्रजन्मा (न्) भूदेव, (भूमिदेव) वाडव, विप्र, ब्राह्मण ये ६ ब्राह्मण के नाम हैं और जो यह ब्राह्मण याग आदि से युक्त होवे तो वह ' षट्कर्मा ' कहाता है जैसे कहा है कि " इज्याध्ययनदानानि याजनाध्यापने तथा । प्रतिग्रहश्च तैर्युक्तः षट्कर्मा विप्र उच्यते " यह १ षट्कर्म करनेवाले ब्राह्मण का नाम है ॥ ३ । ४ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु. पु.
पण्डित वैदिक विद्वान्विपश्चिद्दोषज्ञः सन्सुधीः कोविदो बुधः ।
पु. पु. पु. पु. पु. पु. पु.
धीरो मनीषी ज्ञः प्राज्ञः संख्यावान् पण्डितः कविः॥५॥
पु. पु. पु. पु. पु. पु.
धीमान्सूरिः कृती कृष्टिर्लब्धवर्णो विचक्षणः ।
पु. पु. पु. पु.
दूरदर्शी दीर्घदर्शी श्रोत्रियच्छान्दसौ (समौ)॥ ६ ॥

विद्वान्, विपश्चित्, दोषज्ञ, सन्, सुधी, कोविद, बुध, धीर, मनीषी, ज्ञ, ' प्रज्ञ ' प्राज्ञ, " प्राज्ञी " संख्यावान्, पण्डित, कवि, " कवी " धीमान्, सूरि 'सूरी'(न्) कृती (न्) कृष्टि, लब्धवर्ण, विचक्षण, दूरदर्शी (न्) दीर्घदर्शी (न्) ये २२ पण्डित के नाम हैं। श्रोत्रिय, छान्दस ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ समस्त शाखाध्यायी वैदिक (वेदुआ) के नाम हैं " मीमांसको जैमिनीये, वेदान्ती ब्रह्मवादिनि । वैशेषिकः स्यादौलूक्यः, सौगतः शून्यवादिनि १ नैयायिकस्त्वक्षपदः स्यात्स्याद्वादिक आर्हकौ । चार्वाकलौकायतिकौ सत्कार्ये सांख्यकापिलौ " इमौ प्रक्षिप्तौ पुस्तकान्तरादादाय मया लिखिताविति—मीमांसक, जैमिनीय

१ " मातुरग्रेऽधिजननं द्वितीयं मौञ्जिबन्धनात्" (इति मनुः) ॥

ये २ मीमांसाशास्त्रज्ञाता
हैं। वैशेषिक, औलूक्य
के नाम हैं। नैयायिक,
आर्हक ये २ मोक्षमार्ग
मतावलम्बी के नाम हैं और

वेदान्ती, ब्रह्मवादी ये २ वेदान्ती के नाम
के नाम हैं। सौगत, शून्यवादी ये २नास्तिक
गद" ये २ नैयायिकके नामहैं। स्याद्वादिक,
नाम हैं। चार्वाक, लौकायतिक ये २ बौद्ध-
ये २ सांख्यशास्त्रज्ञाता के नाम हैं ॥ ५।६ ॥

पढ़ानेवाला, उपाध्याय ... पु.
(थ) (सनिषेकादिकृ) गुरुः[1]। पु.
पिता आदि,
आचार्य, (मन्त्रव्या... पु.
...चार्य (आदेष्टा त्वध्वरे) व्रती॥७॥ पु.
यजमान, पु.
दीक्षित, बहुयाग यष्टा (च ... पु.
(श्च) (स सोमवति) दीक्षितः।
कर्ता सविधि पु.
यज्ञकर्ता इज्याशीलो यायजूको यज्वा (तु)(विधिनेष्टवान्)॥८॥

उपाध्याय, अध्यापक ये २ पढ़ानेवाले के नाम हैं। गर्भाधान और पुंसवन आदि कर्मों का करनेवाला पिता आदि 'गुरु' कहाता है यह १ गुरु का नाम है। मन्त्रव्याख्याकृत्, आचार्य ये २ आचार्य के नाम हैं अथवा वेदमन्त्रों की व्याख्या करनेवाला 'आचार्य' कहाता है यह १ आचार्य का नाम है। यज्ञ में जो ऋत्विजों को आज्ञा देता है वह व्रती, यष्टा और यजमान कहाता है ये ३ यजमान के नाम हैं। वही यजमान सोमवान् यज्ञ में आज्ञाकारी हो तो 'दीक्षित' कहाता है यह १ सोमवान् यज्ञ के यजमान का नाम है। इज्याशील, यायजूक ये २ बारंबार यज्ञकरनेवाले के नाम हैं। जिसने विधि से यज्ञ किया है उसे यज्वा, द्वित्वमें 'यज्वानौ' और बहुत्व में 'यज्वानः' कहते हैं यह १ सविधि यज्ञकर्ता का नाम है ॥ ७ । ८ ॥

बृहस्पति यज्ञ-कर्ता सोमरस-पायी, सर्वस्व दक्षिणासेयज्ञका करनेवाला
पु. पु. पु.
(सगीर्पतीष्ट्या) स्थपतिः सोमपीती (तु) सोमपः।
पु.
सर्ववेदाः (स येनेष्टो यागः सर्वस्वदक्षिणः) ॥ ९ ॥

जिसने बृहस्पति के कहे विधान से यज्ञ किया है वह 'स्थपति' कहाता है यह १ बृहस्पतिसवननामक यज्ञकर्ता का नाम है। सोमपीती, 'सोमपीथ' सोमप, "सोमपा" ये २ सोमयज्ञ करनेवाले या सोमरस पीनेवाले यजमान के नाम हैं। सर्वस्वदक्षिणावाले विश्वजित् आदि यज्ञ को जिसने किया है उसे 'सर्ववेदाः' (स्) कहते हैं यह १ यज्ञ में सर्वस्वदक्षिणादेनेवाले का नाम है ॥ ९ ॥

१ "गुशब्दस्त्वन्धकारः स्याद्रुशब्दस्तन्निषेधकृत्। अन्धकारनिरोधत्वाद्गुरुरित्यभिधीयते ॥ १ ॥ (इति गुरुगीतायाम्)॥ २ पदच्छेदः पदार्थोक्तिर्विग्रहो वाक्ययोजना। आक्षेपोऽथ समाधानं व्याख्यानं पञ्चलक्षणम् २ ॥

साङ्गवेदपाठी गृहस्थाश्रम आदि के लिये गुरुसे आज्ञापाने वाला अभिषव स्नानकरनेवाला

पु. पु.

अनूचानः (प्रवचने साङ्गे ऽस्तु यः ।
(लब्धानुज्ञः) समावृत्तः [redacted] भषवे कृते)॥१०॥

जिसने अङ्गसमेत वेदों को पढ़ा है उसे [redacted] ते हैं । यह १ साङ्ग वेद-पाठी का नाम है । जिस अनूचान ने गुरु से [redacted] आदि की प्राप्ति के लिये आज्ञा पाई है वह 'समावृत्त' कहाता है य[redacted] स से लौटेहुए का नाम है और जिसने अभिषव स्नान किया है उसे [redacted]) कहते हैं यह १ यज्ञान्त-स्नान करनेवाले का नाम है ॥ १० ॥

पु. पु. पु. पु.

शिष्य नया **छात्रान्तेवासिनौ शिष्ये [redacted] ाथमकल्पिकाः ।**

पु.

शिष्य सपाठी **(एकब्रह्मव्रताचारा मिथः) सब्रह्मचारिणः ॥ ११ ॥**

छात्र, अन्तेवासी, शिष्य ये ३ शिष्य (चेला) के नाम हैं । शैक्ष, प्राथम-कल्पिक ये २ पहिले वेदारम्भ करनेवाले विद्यार्थी के नाम हैं ये एकत्व में शैक्षः, प्राथमकल्पिकः द्वित्व में शैक्षौ, प्राथमकल्पिकौ और बहुत्व में शैक्षाः, प्राथमकल्पिकाः होते हैं । जिन्होंका समान वेदव्रत व आचार है और जो एक शाखा के पढ़नेवाले ब्रह्मचारीलोग हैं वे परस्पर ' सब्रह्मचारिणः ' कहाते हैं यह १ सहपाठियों का नाम है ॥ ११ ॥

पु. पु. पु.

सतीर्थ्यास्त्वेकगुरव (श्रितवानग्नि) मग्निचित् ।

न.

(पारम्पर्योपदेशे) स्यादैतिह्यमितिहा (ऽव्ययम्) ॥ १२॥

जिनके एक (समान) गुरु होते हैं वे 'सतीर्थ्य' व 'एकगुरु' कहाते हैं । ये २ एक गुरु के समीप पढ़नेवाले के नाम हैं ये एकत्व में सतीर्थ्यः, एकगुरुः द्वित्व में सतीर्थ्यौ, एकगुरू बहुत्व में ' सतीर्थ्याः ' व ' एकगुरवः ' होते हैं । जिसने अग्नि का संग्रह किया है उसे ' अग्निचित् ' कहते हैं यह १ अग्निसंग्रह करनेवाले का नाम है । लोकपरम्परा के उपदेश में ऐतिह्य, इतिह ये होते हैं ये २ परम्परा

---

१ " अस्ति हि परम्पराशब्दोऽव्युत्पन्नं प्रातिपदिकम्, परं पिपर्ति, पचाद्यच्, स्वपचाजारभरावत् पृषोदरादिर्वा" ॥

उपदेश के नाम हैं इनमें 'ऐतिह्य' नपुंसक है और 'इतिह' या 'इतिहा' अव्यय है ॥ १२ ॥

स. पु.
प्रथम ज्ञान, **उपज्ञा (ज्ञानमाद्यं स्या) (ज्ज्ञात्वारम्भ) उपक्रमः।**
जानकर आरम्भ पु. पु. पु. पु. पु. पु. पु.
करना, यज्ञ **यज्ञः सवोऽध्वरो यागः सप्ततन्तुर्मखः क्रतुः ॥ १३ ॥**

जो पहिला ज्ञान है उसे 'उपज्ञा' कहते हैं जैसे श्लोकरचना में वाल्मीकिजी का ज्ञान है यह १ प्रथम ज्ञान का नाम है। जानकर जो आरम्भ किया जाता है उसे 'उपक्रम' कहते हैं जैसे मान में नन्द का जो पहिला आरम्भ है वह उपक्रम है यह १ जानकर प्रथमारम्भ का नाम है। यज्ञ, सव, अध्वर, याग, सप्ततन्तु, मख और क्रतु ये ७ यज्ञ के नाम हैं ॥ १३ ॥

पु. पु. स. न. पु.
पञ्चमहायज्ञ **पाठो होम (श्चातिथीनां) सपर्या तर्पणं बलिः।**
पु.
(एते पञ्च) महायज्ञा (ब्रह्मयज्ञादिनामकाः) ॥ १४ ॥

पाठ, होम, अतिथिपूजन, तर्पण और बलि ये ब्रह्मयज्ञ आदि नामवाले पांच महायज्ञ कहाते हैं इनमें जो विधि से वेद आदि का पढ़ना है वह 'ब्रह्मयज्ञ' कहाता है, वैश्वदेवका जो होम है वह 'देवयज्ञ' है, घर में आये हुए अतिथियों का अन्न आदि से जो सत्कार करना है वह 'मनुष्ययज्ञ' है, पितरों को अन्न व जल आदि से जो तृप्त करना है वह 'पितृयज्ञ' है और जीवों को जो अन्न आदि देना है वह 'भूतयज्ञ' कहा जाता है यह पञ्चमहायज्ञों का एक २ नाम है ॥ १४ ॥

स. स. स. स. स. स.
सभा **समज्या परिषद्गोष्ठी सभासमितिसंसदः।**
स. न. स.न.
आस्थानी (क्लीब) मास्थानं (स्त्रीनपुंसकयोः) सदः ॥ १५ ॥

समज्या, परिषद्, "पर्षद्" गोष्ठी, सभा, समिति, संसद्, आस्थानी, आस्थान, सदः (स्) ये ९ सभा के नाम हैं इनमें 'आस्थान' नपुंसक है और सान्त सदश्शब्द भी नपुंसक में रहता है ॥ १५ ॥

यज्ञगृहविशेष, पु. पु.
यज्ञदर्शक, **प्राग्वंशः (प्राग्घविर्गेहा) त्सदस्या (विधिदर्शिनः)।**
सभामें बैठने पु. पु. पु. पु.
वाले **सभासदः सभास्ताराः सभ्याः सामाजिका (श्च ते) १६ ॥**

---

१ "पाठम पठने ख्यातो-विद्धपर्यान्तु योषिति" (इति मेदिनी) ॥

हवि के घर से पूर्वदेश में सदस्य आदि का जो घर है उसे "प्राग्वंशः" कहते हैं अथवा यज्ञशाला से पूर्व और पश्चिमके खम्भों के रक्खे बड़े काष्ठ को "प्राग्वंशः" कहते हैं यह १ यज्ञगृहविशेष का नाम है । यज्ञकर्म में विधि यानी वेदोक्त क्रिया कलाप के जो देखनेवाले हैं वे 'सदस्य' कहाते हैं यह १ न्यून या अधिक विचार करनेवाले ऋत्विग्विशेषों का नाम है और सभासद, सभास्तार, सभ्य, सामाजिक ये ४ सभा में बैठनेवालों के नाम हैं ॥ १६ ॥

पु. पु. पु.

वेदत्रयी ज्ञाता, अध्वर्यूद्गातृहोतारो (यजुःसामर्ग्विदः क्रमात्) ।

पु. पु.

ऋत्विक् (आग्नीध्राद्या धनैर्वार्या)ऋत्विजो याजका(श्च ते)॥१७॥

यजुर्वेद, सामवेद और ऋग्वेद इन्होंके जाननेवाले क्रमसे अध्वर्यु, उद्गाता और होता संज्ञक होते हैं यानी यजुर्वेद का ज्ञाता 'अध्वर्यु' सामवेद का ज्ञाता, 'उद्गाता' और ऋग्वेद का वेत्ता 'होता' कहाता है यह एक २ क्रम से ऋत्विग्विशेषोंका नाम है। यज्ञ में यजमान धन आदि देकर जिनका वरण करता है वे आग्नीध्र, ब्रह्मा, उद्गाता, होता, अध्वर्यु, ब्राह्मणाच्छंसी, अच्छावाक, नेष्टा आदि सोलह हैं, वेही ऋत्विक् (ज्) और 'याजक' कहाते हैं ये २ याजकों के नाम हैं ॥ १७ ॥

यज्ञवेदी यज्ञ का चौतरा यज्ञ स. न. न.

वेदिः(परिष्कृता भूमिः)(समे)स्थण्डिलचत्वरे ।

स्तम्भविशेष रक्षार्थटट्टी पु. पु. स.

चषालो यूपकटकः कुम्बा (सुगहना वृतिः) ॥ १८ ॥

यज्ञके लिये डमरू के आकार बनाई भूमि को वेदि या वेदी कहते हैं यह १ यज्ञवेदी का नाम है। स्थण्डिल, चत्वर ये २ यज्ञार्थ संस्कार किये भूमिभाग यज्ञार्थ (चौतरा) के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । यूप के शीश में कङ्कण के आकार काष्ठविकार को 'चषाल' और 'यूपकटक' कहते हैं ये २ खम्भा के ऊपरले भाग में कंकणाकार काष्ठ के नाम हैं। यज्ञभूमि में चाण्डाल आदि की दृष्टि बराने के लिये जो आवरण किया जाता है उसे 'कुम्बा' कहते हैं यह १ रक्षार्थ टट्टी आदि का नाम है ॥ १८ ॥

यज्ञस्तम्भशीर्ष अग्नि निकालने की दो लकड़ी तीनों यज्ञाग्नियां न. न. पु.स.

यूपाग्रं तर्म (निर्मन्थ्यदारुणि) त्वरणि (र्द्वयोः) ।

पु. पु. पु.

दक्षिणाग्निर्गार्हपत्याहवनीयौ (त्रयोऽग्नयः) ॥१९॥

यूपाग्र, तर्म (न) ये २ यज्ञस्तम्भ के अग्रभाग के नाम हैं । अग्नि की सिद्धि

के लिये मथने की दो लकड़ियों को 'अरणि' या 'अरणी' कहते हैं यह पुंस्त्रीलिङ्ग में रहता है यह १ अग्नि निकालने की दो लकड़ियों का नाम है। दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य, आहवनीय ये तीनों यज्ञों में विशेष अग्नियां कहाती हैं यह एक २ तीनों यज्ञाग्नियों का नाम है ॥ १९ ॥

तीनों अग्नि, यज्ञाग्निविशेष, यज्ञाग्निस्थल
स. पु.
(अग्नित्रयमिदं) त्रेता प्रणीतः (संस्कृतोऽनलः) ।
पु. पु. पु.
समूह्यः परिचाय्योपचाय्या (वग्नौ प्रयोगिणः) ॥ २० ॥

यह तीनों अग्नियों का समुदाय 'त्रेता' कहाता है यह १ तीनों अग्नियों का नाम है। मन्त्र आदिकों से संस्कार किया हुआ अग्नि 'प्रणीत' कहा जाता है यह १ संस्कार किये हुए यज्ञाग्निविशेष का नाम है। समूह्य, परिचाय्य, उपचाय्य ये ३ अग्नि में प्रयोगी होते हैं ये ३ अग्निधारणार्थ स्थलविशेष के नाम हैं ॥ २० ॥

अग्निविशेष, अग्निप्रिया
(यो गार्हपत्यादानीय दक्षिणाग्निः प्रणीयते) ।
पु. स. स. स.
(तस्मि)न्नानाय्योथाग्नायी स्वाहा (च) हुतभुक्प्रिया २१॥

गार्हपत्य से लेकर जो दक्षिणाग्नि संस्कारित किया जाता है उसमें 'आनाय्य' होता है "और जो भाड़ व वैश्यकुल से उपजा अग्नि है वह 'आनेय' कहाता है" यह १ गार्हपत्य से ल्याये हुए अग्निविशेष का नाम है। अग्नायी, स्वाहा और हुतभुक्प्रिया ये ३ अग्निप्रिया के नाम हैं इनमें टाबन्त स्वाहा अव्यय है परन्तु "स्वाहा तु दक्षिणे पार्श्वे" इस उदाहरण से द्रव्यवाची भी पाया जाता है ॥ २१ ॥

अग्न्युद्दीपन मन्त्र, गायत्र्यादि छन्द, यज्ञपायस
स. स.
(ऋक्) सामिधेनी धाय्या (च या स्यादग्निसमिन्धने) ।
पु.
(गायत्रीप्रमुखं) छन्दो (हव्यपाके) चरुः (पुमान्) ॥ २२ ॥

अग्नि के जलाने में जो ऋचा पढ़ी जाती है उसे 'सामिधेनी' और 'धाय्या' भी कहते हैं ये २ अग्निसमुद्दीपनमन्त्र के नाम हैं। गायत्री, "गायत्री" उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप्, जगती, अतिजगती आदि 'छन्दः' (स्) कहाते हैं यह १ गायत्री आदिकों का नाम है यह सान्त होकर नपुंसक है। हव्यपाक में 'चरु'[1] पुंलिङ्ग है यानी (चरन्ति भक्षयन्ति देवा इममिति चरुः) इसको देवता लोग भक्षण करते हैं इसलिये 'चरु' कहा जाता है यह १ यज्ञ की जाउरि या खीर का नाम है ॥ २२ ॥

१ मीमांसकैरपि- त्रिवृच्चर्वधिकरणे अन्नपरत्वं चरुशब्दस्याभ्युपगतम् । "उणादिभ्यो चरु" केयदस्तु स्थालीवाची चरुशब्दस्तात्स्थ्यादोदने भाक्तः इत्याह ॥

स.

दधिमिलादूध **आमिक्षा (साशृतोष्णेया क्षीरे स्यादधियोगतः) ।**

नं.

यज्ञ का पंखा **धुवित्रं (व्यजनं तद्यद्रचितं मृगचर्मणा) ॥ २३ ॥**

भलीभांति पके और गरम दूध में जो दही के योग से विकार उपजता है उसे "आमिक्षा" या "आमीक्षा" कहते हैं यह १ दहीमिले पके गरम दूध का नाम है। मृगचर्म से बनाया हुआ जो बेना (पंखा) है उसे 'धवित्र' या 'धुवित्र' कहते हैं यह १ अग्नि जलाने के लिये हिरन की खालसे बने पंखे का नाम है ॥ २३ ॥

न. न. पु.न.

दही समेत घी **पृषदाज्यं (सदध्याज्ये)परमान्न (न्तु)पायसम् ।**

खीर देवपित्रन्न न. न. पु.न.

यज्ञपात्र **हव्यकव्ये (दैवपैत्रे अन्ने) पात्रं (स्रुवादिकम्) ॥ २४ ॥**

दही से मिला घी 'पृषदाज्य' कहाता है यह १ दहीमिश्रित घी का नाम है। परमान्न, पायस ये २ खीर के नाम हैं। देवताओं के अन्न को 'हव्य' कहते हैं यह १ देवान्न का नाम है। पितरों के अन्न को 'कव्य' कहते हैं यह १ पितरों के लिये दिये अन्न का नाम है। स्रुव, चमस, उलूखल, मुसल आदि 'पात्र' कहाते हैं "पात्रं तु भाजने योग्ये स्रुवादौ राजमन्त्रिणि। तीरद्वयान्तरे च" (इति मेदिनी) इस कोष के प्रमाण से 'पात्र' नपुंसक है यह १ स्रुवादि यज्ञपात्र का नाम है ॥२४॥

स. स. स. पु.स. पु.स.

स्रुवभेद, **ध्रुवोपभृज्जुहू(र्ना तु)स्रुवो भेदाः स्रुचः (स्त्रियः) ।**

पु.

यज्ञपशु **उपाकृतः (पशुरसौयोऽभिमन्त्र्य क्रतौ हतः) ॥ २५ ॥**

ध्रुवा, उपभृत्, जुहू, "जुहु" स्रुव, "स्रु, स्रुच्" ये ४ स्रुवभेद के नाम हैं। इनमें ध्रुवा, उपभृत्, जुहू ये तीनों स्त्रीलिङ्ग हैं और 'स्रुव' पुंलिङ्ग है अथवा स्त्रीपुंलिङ्ग है और चकारान्त स्रुक् (च्) षष्ठयन्तपद है यह भी पुंस्त्रीलिङ्ग में ही पाया जाता है। जो पशु यज्ञ में अभिमन्त्रित कर मारा जाता है उसे 'उपाकृत' कहते हैं यह १ यज्ञ में अभिमन्त्रित पशु का नाम है ॥ २५ ॥

न. न. न.

यागपशुवध **परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं (च) (वधार्थकम्) ।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

मारेहुए पशु **(वाच्यलिङ्गाः) प्रमीतोपसम्पन्नप्रोक्षिता (हते)॥ २६ ॥**

---

१ ध्रुवा वटपत्राकृतिः, उपभृच्चक्राकृतिः, जुहूरर्धचन्द्राकृतिरिति मुकुटः ॥

२ "स्रुवो द्वयोर्होमपात्रे शल्लकीमूर्वयोः स्त्रियाम्" (इति मेदिनी) ॥

परम्पराक, शमन, "शसन, ससन" प्रोक्षण ये तीनों वधार्थक हैं ये ३ यज्ञार्थ पशु मारने के नाम हैं । प्रमीत, उपसंपन्न, प्रोक्षित ये ३ यज्ञार्थ मारे हुए पशुमात्र के नाम हैं और वाच्यलिङ्ग कहाते हैं ॥ २६ ॥

साकल्यवि- न. न. पु.स.न.
शेषहुनी वस्तु साम्नाय्यं हवि (रग्नौ तु हुतं त्रिषु) वषट्कृतम् ।
यज्ञान्तस्नान पु. न.
यज्ञीयवस्तु (दीक्षान्तो)ऽवभृथो यज्ञ (स्तत्कर्मार्हन्तु) यज्ञियम् ॥२७॥
यज्ञकर्म न. न.
कर्मविशेष (त्रिष्वथ क्रतुकर्मे) ष्टं पूर्तं (खातादिकर्मणि) ।
यज्ञशेष, न. पु.
श्राद्धशेष अमृतं विघसो (यज्ञशेषभोजनशेषयोः) ॥ २८ ॥

साम्नाय्य, हविः (स्) ये २ साकल्यविशेष के नाम हैं । अग्नि में होमा हुआ घी आदि 'वषट्कृत' कहाता है यह तीनों लिङ्ग में रहता है यह १ हवन किये हुए वस्तु के नाम हैं । यज्ञदीक्षा के अन्त में यज्ञदीक्षासमापक यज्ञपूर्वक स्नानविशेष को 'अवभृथ' कहते हैं यह १ यज्ञान्त स्नान का नाम है । यज्ञकर्म के योग्य वस्तु (द्विजद्रव्यादि) को 'यज्ञिय' कहते हैं यह तीनों लिङ्ग में रहता है यह १ यज्ञीयवस्तु का नाम है । जो क्रतुकर्म है या क्रतुयज्ञ है या कर्मदान है उसे 'इष्ट' कहते हैं यह १ यज्ञकर्म का नाम है । बावली, कुवां, तालाव और देवालय आदि जो कर्म है उसे 'पूर्त' कहते हैं यह १ खातादिकर्म का नाम है । यज्ञशेष पुरोडाशादि को 'अमृत' कहते हैं यह १ यज्ञशेष का नाम है । देव, पितर आदि के भोजनशेष को 'विघस' कहते हैं यह १ भोजनशेष का नाम है ॥ २७ । २८ ॥

पु. न. न. न. न.
दान त्यागो विहापितं दानमुत्सर्जनविसर्जने ।
न. न. न. न.
मृतक के लिये विश्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ २९ ॥
न. न. न. स.
दान प्रादेशनं निर्वपनमपवर्जनमंहतिः ।
मृतार्थं तदहे दानं त्रिषु स्यादौर्ध्वदेहिकम् ॥ ३० ॥

त्याग, विहापित, दान, उत्सर्जन, विसर्जन, विश्राणन, वितरण, स्पर्शन, प्रतिपादन, प्रादेशन, निर्वपन, अपवर्जन और अंहति ये १३ दान के नाम हैं । मृतक के

---

१ विघसाशी भवेन्नित्यं नित्यं चामृतभोजनः । विघसो भुक्तशेषः स्यादग्निशेषस्तथामृतम् (इति मनुः) ॥
२ तदहर्दानमिति पाठे तु समासान्तविधेरनित्यत्वान्न टच् ॥

लिये मरणादिन से लेकर दशदिन पर्यन्त जो पिण्डदान आदि दिया जाता है उसे 'और्ध्वदैहिक' या 'और्ध्वदेहिक' कहते हैं यह तीनों लिङ्ग है यानी वाच्यलिङ्ग कहाता है यह १ मरे के लियें दान देने का नाम है ॥ २९ । ३० ॥

न. पु. न.

पितृदान, श्राद्ध, मासिक श्राद्ध, श्राद्धकाल — **पितृदानं निवापः (स्या)च्छ्राद्धं (तत्कर्म शास्त्रतः)।**

न. न. पु.न.

अन्वाहार्यं मासिकें(ऽशोऽष्टमोऽह्नः)कुतपो(ऽस्त्रियाम्)३१

पितृदान, निवाप ये २ सपिण्डन से ऊपर पितरों के उद्देश से जो दान किया जाता है उसके नाम हैं। शास्त्रविधान से उन पितरों का जो कर्म है उसे 'श्राद्ध' कहते हैं यह १ श्राद्ध का नाम है। अन्वाहार्य, मासिक ये २ मासिक या अमावास्या के श्राद्धविशेष के नाम हैं और जो दिनका आठवां भाग है वह 'कुतप' कहाता है यह १ श्राद्धकाल विशेष का नाम है यह पुंनपुंसक है ॥ ३१ ॥

स. स. स. स.

धर्मादि का खोजना, विनय, मांगना — **पर्येषणा परीष्टिश्चान्वेषणा (च) गवेषणा।**

स. स. स. स. स. स.

सनिरध्येषणा याच्ञाभिषस्तिर्याचनार्थना ॥ ३२ ॥

पर्येषणा, परीष्टि, अन्वेषणा, गवेषणा ये ४ धर्मादि के खोजने के नाम हैं अथवा पर्येषणा, परीष्टि ये २ श्राद्ध आदि में द्विजभक्ति या सेवा के नाम हैं। अन्वेषणा, गवेषणा ये २ धर्मादिकों के ढूंढने के नाम हैं यह कितेक आचार्यों का मत है। सनि, "सनी," अध्येषणा ये २ गुरु आदिकों के आराधन के नाम हैं अथवा गुरु आदि से किसी अर्थ में प्रार्थनापूर्वक विनय के नाम हैं। याच्ञा, अभिषस्ति, "अभिशस्ति" याचना और अर्थना ये ४ प्रार्थना (मांगना) के नाम हैं ॥ ३२ ॥

पु.स.न. पु.स.न.

पूजार्थ जल, पांव धोना, अतिथिनिमित्त कर्म — **(षट् तु त्रिष्व)र्घ्यमर्घार्थे पाद्यं (पादाय वारिणि)।**

पु.स.न. पु.स.न.

क्रमादातिथ्यातिथेये (अतिथ्यर्थेऽत्र साधुनि) ॥ ३३ ॥

अर्घ्य से लेकर आगन्तु पर्यन्त छः शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं यानी वाच्यलिङ्ग कहाते हैं। अर्घ के लिये जो जल दिया जाता है उसे 'अर्घ्य' कहते हैं यह १ अर्घ्य का नाम है। पांव धोने के लिये जो जल होता है वह 'पाद्य' कहाता है यह १ पाद्य का नाम है। अतिथि के लिये जो कर्म किया जाता है उसे 'आतिथ्य' कहते हैं यह १ अतिथि निमित्त कर्म का नाम है और जो अतिथि के लिये साधु है वह 'आतिथेय' कहाता है यह १ अतिथि निमित्त सिद्ध वस्तु का नाम है ॥ ३३ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.

पाहुन, (स्युरा) वेशिक आगन्तुरतिथि (र्ना गृहागते) ।

स. स. स. स. स. स.

पूजा पूजा नमस्यापचितिः सपर्यार्चार्हणाः (समाः) ॥ ३४ ॥

आवेशिक, आगन्तु " आगान्तु " अतिथि " अतिथी " ये ३ घर में आये हुए के नाम हैं अथवा आवेशिक, आगन्तु, अतिथि, गृहागत ये ४ पाहुन के नाम हैं इनमें 'अतिथि' पुंलिङ्ग है " प्राघूर्णिकः प्राघुणकश्चाभ्युत्थानन्तु गौरवम् " " प्राघूर्णिक, प्राघुणक ये २ अभ्यागत के नाम हैं । अभ्युत्थान, गौरव ये २ उठकर सत्कार करने के नाम हैं " पूजा, नमस्या, अपचिति, सपर्या, अर्चा और अर्हणा ये समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये ६ पूजा के नाम हैं ॥ ३४ ॥

स. स. स. स.

सेवा वरिवस्या (तु) शुश्रूषा परिचर्याप्युपासना ।

घूमना स. स. न. स.

ध्यानादि स्थिति व्रज्याटाट्या पर्यटनं चर्या (त्वीर्यापथस्थितिः) ॥ ३५ ॥

वरिवस्या, शुश्रूषा, परिचर्या, " परिसर्या ", उपासना, " उपासन, उपास्ति " ये ४ सेवा के नाम हैं । व्रज्या, अटाट्या, " अटा, अट्या " पर्यटन ये ३ घूमने या फिरने के नाम हैं । ध्यान व मौन आदि योगमार्ग में जो टिकना है उसे 'चर्या' कहते हैं यह १ ध्यान व मौन आदि में टिकने का नाम है ॥ ३५ ॥

पु. न. न. न.

आचमन, उपस्पर्शस्त्वाचमन (मथ) मौनमभाषणम् ।

स. स. स. पु.

चुपचाप, आनुपूर्वी (स्त्रियां वा) वृत्परिपाटी अनुक्रमः ॥ ३६ ॥

अनुक्रम, पु. पु. पु. पु.

अतिक्रम पर्यायश्चातिपातस्तु स्यात्पर्यय उपात्ययः ।

उपस्पर्श, आचमन ये २ स्नान या आचमन के नाम हैं । मौन, अभाषण ये २ मौन (चुपचाप) के नाम हैं " प्राचेतसश्चादिकविः स्यान्मैत्रावरुणिश्च सः । वाल्मीकिश्चाथ गाधेयो विश्वामित्रश्च कौशिकः । व्यासो द्वैपायनः पाराशर्यः सत्यवतीसुतः" प्राचेतस, आदिकवि, मैत्रावरुणि, वाल्मीकि ये ४ वाल्मीकि मुनि के नाम हैं । गाधेय, विश्वामित्र, कौशिक ये ३ विश्वामित्र के नाम हैं । व्यास, द्वैपायन, पाराशर्य, सत्यवतीसुत ये ४ वेदव्यास के नाम हैं । आनुपूर्वी, " आनुपूर्व्य, आनुपूर्व, आनुपूर्वक " आवृत्, परिपाटि, " परिपाटी " अनुक्रम, पर्याय ये ५ अनुक्रम के नाम

१ " पर्यायः प्रकारेऽवसरे क्रमे " (इति विश्वमेदिन्यौ) ॥

हैं इनमें 'आनुपूर्वी' विकल्प से स्त्रीलिङ्ग है। अतिपात, पर्यय, उपात्यय ये ३ अतिक्रम (क्रमोल्लङ्घन) के नाम हैं ॥ ३६ । ½ ॥

व्रतमात्र / चान्द्रायणादि- / उपवास — पु. पु.न. न.
नियमो व्रत (मस्त्री) तच्चोपवासादि पुण्यकम् ॥ ३७ ॥

उपवास / विचार — न. पु. पु. स.
औपवस्तं (तू)पवासो विवेकः पृथगात्मता ।

नियम, व्रत ये २ व्रतमात्र के नाम हैं इनमें 'व्रत' पुंनपुंसक है और वह उपवासादि व्रत 'पुण्यक' कहाता है यह १ चान्द्रायण, कृच्छ्रचान्द्रायण, प्राजापत्य और नक्तव्रत आदि से विहित व्रत का नाम है। औपवस्त "उपवस्त, औपवस्त्र," उपवास, "उपोषण, उपोषित" ये २ उपवास के नाम हैं । विवेक, पृथगात्मता ये २ प्रकृति पुरुषादि भेदज्ञान के नाम हैं ॥ ३७ । ½ ॥

सदाचार वा / वेदाभ्यासफल — न. स.
(स्या) द्ब्रह्मवर्चसं वृत्ताध्ययनर्धि (रथाञ्जलिः) ॥३८॥

वेदपाठ में / अञ्जलि अञ्जलि / या मुख से — पु. पु.
(पाठे) ब्रह्माञ्जलिः (पाठे विप्रुषो) ब्रह्मबिन्दवः ।

जलकण आसन / विशेष विधान — न. पु. पु. पु.
(ध्यानयोगासने) ब्रह्मासनं कल्पे विधिक्रमौ ॥ ३९ ॥

ब्रह्मवर्चस, संवृत्ताध्ययनर्धि ये २ सदाचार पालन व वेदाभ्यास की सम्पत्ति के नाम हैं अथवा स्वामी के मत में तप और स्वाध्याय के तेज को 'ब्रह्मवर्चस' कहते हैं। वेदपाठ करने में जो अञ्जलि की जाती है उसे 'ब्रह्माञ्जलि' कहते हैं यह १ पढ़ने के आदि में हाथों की प्रणवपूर्वक अञ्जलि का नाम है । वेदपाठ करने के समय अञ्जलि या मुखसे निकले जलकणों को 'ब्रह्मबिन्दु' कहते हैं एकत्व में 'ब्रह्मबिन्दुः' द्वित्व में 'ब्रह्मबिन्दू' और बहुत्व में 'ब्रह्मबिन्दवः' होते हैं यह १ वेदाध्ययन के समय मुख से निकले जलबिन्दुओं का नाम है। ध्यान और योगासन में 'ब्रह्मासन' कहाता है यह १ स्वस्तिक, पद्मासन आदि आसनविशेषों का नाम है। कल्प, विधि, क्रम ये ३ वेदविहित विधि (विधान) के नाम हैं ॥ ३८ । ३९ ॥

मुख्यविधि / गौणविधि — पु. पु.
मुख्यः (स्यात्प्रथमः कल्पो) ऽनुकल्प (स्ततोऽधमः) ।

वेदाध्ययन — न.
(संस्कारपूर्वं ग्रहणं स्यादु) पाकरणं (श्रुतेः) ॥ ४० ॥

जो प्रथम कल्प यानी आदि विधि है वह 'मुख्य' कही जाती है जैसे "व्रीहियों से यजन करे" यह १ मुख्य विधि का नाम है । मुख्य से जो अधम (गौण)

विधि है उसे 'अनुकल्प' कहते हैं। जैसे "व्रीहियों के अभाव में नीवारों से यजन करे" यह १ गौणविधि का नाम है और संस्कारपूर्वक जो श्रुति का ग्रहण किया जाता है वह 'उपाकरण' कहाता है यह १ वेदपाठ आरम्भ करने के समय विशेषविधि का नाम है ॥ ४० ॥

न. न.
नमस्कार **(समे तु) पादग्रहणमभिवादन (मित्युभे)।**
पु. पु. पु. पु. पु.
संन्यासी **भिक्षुः परिव्राट् कर्मन्दी पाराशर्यपि मस्करी ॥ ४१ ॥**

पादग्रहण, अभिवादन ये २ नाम और गोत्र का उच्चारण कर संस्कृत प्रयोग से नमस्कार के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । भिक्षु, परिव्राट् "परिव्राजक" कर्मन्दी (न्) पाराशरी या पराशरी (न्) और मस्करी (न्) ये ५ संन्यासी के नाम हैं ॥ ४१ ॥

तपस्वी पु. पु. पु. पु. पु.
मौनी **तपस्वी तापसः पारिकाङ्क्षी वाचंयमो मुनिः ।**
दान्त पु. पु. पु. पु.
ब्रह्मचारी **तपःक्लेशसहो दान्तो वर्णिनो ब्रह्मचारिणः ॥ ४२ ॥**

तपस्वी, तापस, पारिकाङ्क्षी ये ३ तपस्वी के नाम हैं । वाचंयम, मुनि ये २ मौनव्रती के नाम हैं । तपःक्लेशसह, दान्त ये २ तपस्याक्लेश के सहनेवाले के नाम हैं और वर्णी, ब्रह्मचारी ये २ ब्रह्मचारी के नाम हैं ये दोनों इन्नन्त हैं एकत्व में वर्णी, ब्रह्मचारी, द्वित्व में वर्णिनौ, ब्रह्मचारिणौ और बहुत्व में वर्णिनः, ब्रह्मचारिणः ये होते हैं ॥ ४२ ॥

पु.स. पु. पु. पु.
ऋषि **ऋषयः सत्यवचसः स्नातकस्त्वाप्लवव्रती ।**
स्नातक पु. पु. पु.
जितेन्द्रिय **(ये) निर्जितेन्द्रियग्रामा यतिनो यतयश्च (ते) ॥ ४३ ॥**

ऋषि, 'रिषि' स्त्री "ऋषी" सत्यवचाः (स्) ये २ सामान्य ऋषियों के नाम हैं ऋषियों के भेद तो महर्षि, देवर्षि, ब्रह्मर्षि, परमर्षि, काण्डर्षि, श्रुतर्षि और क्रमवर ये ७ हैं और ऋषि पुंस्त्रीलिङ्ग है । स्नातक, आप्लवव्रती (न्) "आप्लुत-व्रती ये २ वेदव्रत को धारते हुए जिन्होंने गुरुकी आज्ञा से स्नान किया है उन

---

१ इदमेव "किं तर्हि मा कृतकर्माणि शान्तिर्वः श्रेयसी इत्याह । अतो मस्करी परिव्राजकः" इति भाष्यसंमतम् ॥

२ गुरवे तु वरं दत्त्वा स्नायाद्वा तदनुज्ञया । वेदव्रतानि वा पारं नीत्वा ह्युभयमेव वा ॥

के नाम हैं। जिन्होंने इन्द्रियसमूहों को जीत लिया यानी अपने वश में कर लिया है वे यती (न्) और यति कहाते हैं अथवा निर्जितेन्द्रियग्राम, यती, यति ये ३ जितेन्द्रिय के नाम हैं ॥ ४३ ॥

भूमिशायी पु.
(यः स्थण्डिले व्रतवशाच्छेते) स्थण्डिलशाय्य (सौ)।

व्यास आदि पु. पु. पु.
स्थाण्डिलश्चा(थ) विरजस्तमसः (स्यु)र्द्वयातिगाः॥४४॥

व्रतवश (नियम के वश) से यज्ञ चौतरा या भूमिविशेष में जो सोता है उसे स्थण्डिलशायी और स्थाण्डिल कहते हैं ये २ विना बिछौना भूमिशायी व्रती के नाम हैं और विरजस्तमः (स्) द्वयातिग ये २ रजतमरहित सत्त्वगुणवाले व्यासादिकों के नाम हैं ॥ ४४ ॥

पवित्र पु. पु. पु. पु. पु.
पाखण्डी **पवित्रः प्रयतः पूतः पाषण्डाः सर्वलिङ्गिनः।**

पालाशदण्ड पु. पु.
वैणवदण्ड **(पालाशो दण्ड)आषाढो(व्रते)राम्भ(स्तु वैणवः)॥४५॥**

पवित्र, प्रयत, पूत ये ३ पवित्रता के नाम हैं। पाषण्ड, 'पाखण्ड' सर्वलिङ्गी ये २ बौद्ध, क्षपणक आदि दुश्शास्त्रवर्तियों के नाम हैं। व्रत में ब्रह्मचारियों का जो पालाश (पलाशसम्बन्धी) दण्ड है वह 'आषाढ' कहाता है यह १ ब्रह्मचारी के दण्ड का नाम है और जो बांस का दण्ड है उसे 'राम्भ' कहते हैं यह १ ब्रह्मचर्य में वैणव दण्ड का नाम है ॥ ४५ ॥

कमण्डलु पु.न. स. स.
ऋष्यासन **(अस्त्री) कमण्डलुः कुण्डी (व्रतिनामासनं) वृषी।**

मृगचर्म न. न. स. न.
भिक्षासमूह **अजिनं चर्म कृत्तिः(स्त्री)भैक्षं(भिक्षाकदम्बकम्) ॥४६॥**

कमण्डलु, कुण्डी ये २ ऋषियों के पात्र के नाम हैं। इनमें 'कमण्डलु' पुंनपुंसक है और कुण्डी स्त्रीलिङ्ग है। व्रतियों के आसन को वृषी या 'वृसी' कहते हैं यह १ ब्रह्मचारी आदिके आसन का नाम है। अजिन, चर्म (न्) कृत्ति ये ३ मृगचर्म के नाम हैं और भिक्षा के समुदाय को 'भैक्ष' कहते हैं यह १ भिक्षासमूह का नाम है ॥ ४६ ॥

पु. पु. स. पु. न.
वेदाध्ययनसोमलताका कूटना **स्वाध्यायः (स्या)ज्जपः सुत्याभिषवः सवनं (च सा)।**

सर्वाघनाशन मन्त्र न.
(सर्वैनसामपध्वंसि जप्यं) त्रिष्वघमर्षणम् ॥ ४७ ॥

स्वाध्याय, जप, "जाप" ये २ वेदाध्ययन या वेदाभ्यास के नाम हैं। सुत्या, अभिषव, सवन ये ३ यज्ञ में सोमलता या यज्ञौषधियों के कूटने के नाम हैं। इनमें 'सूत्या' क्यबन्त होकर टाबन्त है। सर्वपाप नाशनेवाले जाप यानी ऋचा आदि को 'अघमर्षण' कहते हैं वह तीनों लिङ्ग में रहता है यह १ सर्वपापप्रणाशन मन्त्र का नाम है॥ ४७॥

पु. पु.

दर्शयाग, पौर्णमासयाग, नित्यकर्म — **दर्श(श्च) पौर्णमास (श्च यागौ पक्षान्तयोः पृथक्)।**

पु.

(शरीरसाधनापेक्षं नित्यं यत्कर्म) तद्यमः॥ ४८॥

अमावास्या और पौर्णमासी में विहित यागों को क्रम से दर्श और पौर्णमास कहते हैं यानी अमावास्या के दिन किया हुआ याग 'दर्श' कहाता है यह १ दर्शयाग का नाम है और पौर्णमासी में किया हुआ याग 'पौर्णमास' कहाता है यह १ पौर्णमास याग का नाम है। शरीरमात्र से साध्य नित्य जो कर्म है उसे 'यम' कहते हैं जैसे पातञ्जल सूत्र में कहा है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी नहीं करना) ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये यम कहेजाते हैं यह १ यम का नाम है॥४८॥

पु.

कर्मविशेष, वामस्कन्धार्पित जनेऊ — **नियम(स्तु स यत्कर्मानित्यमागन्तुसाधनम्)।**[1]

न. न.

उपवीतं यज्ञसूत्रं (प्रोद्धृते दक्षिणे करे)॥ ४९॥[2]

जो कर्म आगन्तु साधन है यानी बाह्यसाधन है या मिट्टी जल आदि साधन नित्य और अकृत्रिम कर्म है वह 'नियम' कहाजाता है जैसे पातञ्जलसूत्र में कहा है कि "शौच, संतोष, तपस्या, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान" ये नियम कहाते हैं यह १ कर्मविशेष नियम का नाम है "क्षौरन्तु भद्रकरणं मुण्डनं वपनं त्रिषु" क्षौर, भद्रकरण, मुण्डन, वपन ये ४ बार बनवाने के नाम हैं इनमें 'वपन' त्रिलिङ्ग है यानी तीनों लिङ्ग में रहता है। दाहिने हाथ में जो जनेऊ धारण किया जाता है उसे 'उपवीत' और 'यज्ञसूत्र' कहते हैं ये २ बायें कांधे में धारे हुए यज्ञोपवीत के नाम हैं॥ ४९॥

१ कर्मनित्यमिति वा पाठः॥

२ तथा च गोभिलसूत्रे—"दक्षिणं बाहुमुद्धृत्य शिरोऽवधाय सव्येंऽसे प्रतिष्ठापयति दक्षिणं कक्षमन्ववलम्बं भवतीत्येवं यज्ञोपवीती भवति" (१।२।२)॥

दाहिने कांधेका जनेऊ, कण्ठमें मालाकार, देव तीर्थ, प्रजापतितीर्थ

न. न.
प्राचीनावीत (मन्यस्मि)न्निवीतं(कण्ठलम्बितम्)।
न. न.
(अङ्गुल्यग्रे तीर्थं)दैवं(स्वल्पाङ्गुल्योर्मूले)कायम् ॥ ५० ॥

बायें हाथ में जो जनेऊ धारण किया जाता है उसे 'प्राचीनावीत' कहते हैं यह १ दाहिने कांधे में धारे हुए यज्ञोपवीत का नाम है। कण्ठ में सीधा लम्बा किया हुआ यज्ञोपवीत 'निवीत' कहाता है यह १ कण्ठ में मालाकार धारे हुए जनेऊ का नाम है। अँगुलियों के अग्रभाग में 'दैवतीर्थ' कहा जाता है यह १ देवतीर्थ का नाम है इसीसे कहा है कि (देवतीर्थेन तर्पयेत्) अँगुलियों के अग्रभाग से देवताओं का तर्पण करे। अनामिका और कनिष्ठिका के अधोभाग में 'कायतीर्थ' कहाता है " कायः कदैवते मूर्तौ संघेलक्ष्यस्वभावयोः। मनुष्यतीर्थे कायं स्यादिति " (मेदिनी) इस कोष के प्रमाण से प्रजापतितीर्थ में 'काय' नपुंसक है यह १ प्रजापतितीर्थ का नाम है ॥ ५० ॥

पैत्रतीर्थ, ब्रह्मतीर्थ ब्रह्म में लय होना

न. न.
(मध्येऽङ्गुष्ठाङ्गुल्योः) पित्र्यं (मूले त्वङ्गुष्ठस्य) ब्राह्मम्।
न. न. न.
(स्याद्)ब्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्य(मित्यपि) ॥५१॥

अँगूठा और तर्जनी के मध्यभाग में पित्र्य, पैत्र्य या पैत्रतीर्थ कहाता है यह १ पैत्र तीर्थ का नाम है। अँगूठे की मूल में ब्राह्म या ब्राह्म्य तीर्थ कहा जाता है यह १ ब्राह्मतीर्थ का नाम है और ब्रह्मभूय, ब्रह्मत्व, ब्रह्मसायुज्य ये ३ ब्रह्म में मिल जाने के नाम हैं ॥ ५१ ॥

देवताओं में मिलना, कृच्छ्र चान्द्रायणादि, संन्यासविशेष नष्टाग्निवाला मिथ्याधर्माश्रयी लोभी या दम्भी संस्कार हीन वेदाभ्यास विहीन

न. न.
देवभूयादिकं (तद्वत्) कृच्छ्रं (सान्तपनादिकम्)।
पु. पु.
(संन्यासवत्यनशने पुमान्) प्रायो (थ) वीरहा ॥ ५२॥
पु. स.
नष्टाग्निः कुहना (लोभान्मिथ्येर्यापथकल्पना)।
पु. पु.[*] पु. पु.
व्रात्यःसंस्कारहीनः(स्याद)स्वाध्यायो निराकृतिः॥५३॥

देवभूय, देवत्व, देवसायुज्य ये ३ देवताओं में मिल जाने या देवभाव के नाम हैं। सान्तपन आदि 'कृच्छ्र' कहाता है यह १ कृच्छ्रचान्द्रायण आदि व्रतों का

१ " सव्यं बाहुमुद्धृत्य शिरोऽवधाय दक्षिणेंऽसे प्रतिष्ठापयति सव्यं कक्षमन्ववलम्बं भवत्येवं प्राचीनावीती भवति (१।२।३) ॥

नाम है जैसे मनुजी ने कहा है कि, (गोमूत्र, गोबर, दूध, दही, घी और कुशोदक इन्होंका भक्षण कर एकरात्र व्रत करना कृच्छ्रसान्तपन कहा जाता है) आदि पद से चान्द्रायण, प्राजापत्य और पराक आदिकों का ग्रहण होता है। संन्यासपूर्वक जो भोजन का त्याग है उसे 'प्राय' कहते हैं यह पुंलिङ्ग है यह १ संन्यास विशेष का नाम है । वीरहा (हन्) नष्टाग्नि ये २ जिस अग्निहोत्री आदि का प्रमाद से अग्नि नष्ट होगया है उसके नाम हैं । लोभ से परधन आदि की अभिलाषा से जो मिथ्यापदों से अर्थ की कल्पना की जाती है या दम्भ से जो ध्यान आदि का संपादन किया जाता है उसे 'कुहना' कहते हैं यह १ दम्भ से किये ध्यान मौन आदि का नाम है । व्रात्य, संस्कारहीन ये २ गौण काल में भी यज्ञोपवीत आदि संस्कार से रहित के नाम हैं और अस्वाध्याय, निराकृति ये २ वेदाभ्यासरहित के नाम हैं ॥ ५२।५३ ॥

पु. पु. पु. पु.

बहुरूपिया, धर्मध्वजी लिङ्गवृत्तिरवकीर्णी क्षतव्रतः ।
ब्रह्मचर्यहीन (सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति सुप्ते यस्मिन्नुदेति च) ॥ ५४ ॥
सूर्यास्तसुप्त, पु. पु.
सूर्योदय सुप्त, (अंशुमान) भिनिर्मुक्ताभ्युदितौ (च यथाक्रमम्) ।
पु.
छोटा भाई परिवेत्ता (नुजोनूढे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात्) ॥ ५५ ॥

धर्मध्वजी (जिन्) लिङ्गवृत्ति ये २ भीख आदि के लिये जटादिधारी बहुरूपिया या ठग के नाम हैं । अवकीर्णी (र्णिन्) क्षतव्रत ये २ खण्डित ब्रह्मचर्यादि के नाम हैं । जिसके सोने में सूर्यनारायण अस्ताचल या उदयाचल को प्राप्त होते हैं उसे क्रम से 'अभिनिर्मुक्त' व 'अभ्युदित' कहते हैं यानी 'अभिनिर्मुक्त' यह १ सूर्यास्त समय में सोनेवाले का नाम है फिर जिसके सोने में सूर्यनारायण उदय को प्राप्त होते हैं उसे 'अभ्युदित' कहते हैं यह १ सूर्योदय में सोनेवाले का नाम है । विना विवाह संस्कार किये जेठे भाई को छोड़कर जो छोटा भाई अपना विवाह संस्कार करलेता है या जिसने किया है उसे 'परिवेत्ता' कहते हैं यह १ जेठे भाई के बिवाहरहित होने पर विवाह किये छोटे भाई का नाम है ॥ ५४ । ५५ ॥

पु. पु. पु.

बड़ा भाई, विवाह परिविचिस्तु (तज्ज्यायान्) विवाहोपयमौ (समौ) ।
पु. पु. पु. न.
(तथा) परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम् ॥ ५६ ॥

उस परिवेत्ता का जेठाभाई परिविन्ति, ' परिवृत्ति या परिवृत्ति ' कहाता है यह १ परिवेत्ता के जेठे भाई का नाम है। विवाह, उपयम, परिणय, उद्वाह, उपयाम, पाणिपीडन और ' पाणिग्रहण ' भी ये ६ विवाह के नाम हैं इनमें विवाह, उपयम ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ ५६ ॥

पु. पु. न. न. न.

मैथुन, त्रिवर्ग, व्यवायो ग्राम्यधर्मो मैथुनं निधुवनं रतम्।

पु. पु.

चतुर्वर्ग त्रिवर्गो (धर्मकामार्थै) श्चतुर्वर्गः (समोक्षकैः) ॥ ५७ ॥

व्यवाय, ग्राम्यधर्म, मैथुन, निधुवन, रत " रमण, सुरत, रति " ये ५ मैथुन के नाम हैं इनमें व्यवाय, ग्राम्यधर्म ये दोनों पुंलिङ्ग हैं और शेष नपुंसक हैं। धर्म, काम, अर्थ इन तीनों से उपलक्षित ' त्रिवर्ग ' कहाता है यह १ त्रिवर्ग का नाम है और मोक्षसमेत धर्म, काम, अर्थ इन चारों से उपलक्षित ' चतुर्वर्ग ' कहाजाता है यह १ चतुर्वर्ग का नाम है ॥ ५७ ॥

पु.

चतुर्भद्र वर के मित्र या सहबाला आदि सबलैस्तैश्चतुर्भद्रं जन्याः (स्निग्धा वरस्य ये) ॥ ५८ ॥

इति ब्रह्मवर्गः ॥

बल समेत उन धर्म आदिकों से उपलक्षित ' चतुर्भद्र ' कहा जाता है यह १ चतुर्भद्र का नाम है और जो वर (दामाद) को बड़े प्यारे ज्ञाति, बान्धव व सखा आदि हैं वे 'जन्य' कहाते हैं एकत्व में 'जन्यः' द्वित्व में 'जन्यौ' और बहुत्व में 'जन्याः' ये होते हैं यह १ वर के मित्र या सहबाला आदि का नाम है ॥ ५८ ॥

इति ब्रह्मवर्गविवरणम् ॥

अथ क्षत्रियवर्गो व्याख्यायते ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

क्षत्रिय राजा मूर्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट्।

पु. पु. पु. पु. पु. पु. पु.

राज्ञि राट्पार्थिवक्ष्माभृन्नृप भूपमहीक्षितः ॥ १ ॥

मूर्धाभिषिक्त, राजन्य, बाहुज, क्षत्रिय, " क्षत्री (त्रिन्) क्षत्र, क्षत्र " विराट् ये ५ क्षत्रिय के नाम हैं। राजा (न्) राट्, पार्थिव, क्ष्माभृत् "महीभृत्, क्ष्माभुक्, महीभुक् " नृप , " नृपति, नरपति, नरपाल, नृपाल " भूप, " भूपति, भूपाल, भूमिप, भूमिपति, भूमिपाल " महीक्षित्, " महिप, महीपति, महीपाल " ये ७ राजा के नाम हैं ॥ १ ॥

पु.
महाराजा (राजा तु प्रणताशेषसामन्तः स्याद) धीश्वरः ।
महाराजाधिराज पु. पु. पु.
छोटा राजा चक्रवर्ती सार्वभौमो (नृपोऽन्यो) मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥

सब देशों के समस्त प्रणत राजालोग जिसकी आज्ञा से राज्य करते हैं उसे "अधीश्वर" कहते हैं यह १ महाराजा का नाम है । चक्रवर्ती, सार्वभौम ये २ समुद्रपर्यन्त पृथ्वीश्वर (शाहंशाह बादशाह) के नाम हैं उससे भिन्न राजा 'मण्डलेश्वर' कहाता है यह १ मण्डलेश्वर (छोटे राजा) का नाम है ॥ २ ॥

राजसूयादि कर्ता (येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च) यः ।
मण्डलेश्वर, शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञः स) सम्राड (थ) राजकम् ॥३॥
नृपाध्यक्ष, नृप न.
समूह, क्षत्रिय राजन्यकं (च) (नृपतिक्षत्रियाणां गणे क्रमात्) ।
समूह, मन्त्री पु. पु. पु. पु.
या वज़ीर, छोटा मन्त्री मन्त्री धीसचिवोऽमात्यो(ऽन्ये)कर्मसचिवा(स्ततः) ४ ॥

जिसने राजसूययज्ञविशेष को किया है व जो बारह मण्डल का ईश्वर है और जो सब राजाओं को आज्ञा देता है वह 'सम्राट्' कहाजाता है अथवा कितेक आचार्य तीन नामों को कहते हैं कि जिसने राजसूययज्ञ से पूजन किया है वह सम्राट् है जो द्वादश मण्डलों का अधीश्वर है वह सम्राट् है और जो समस्त राजाओं को शासन करता है वह भी 'सम्राट्' कहाता है यह १ सम्राट् विशेष का नाम है । राजाओं और क्षत्रियों के समुदाय को क्रम से 'राजक' और 'राजन्यक' कहते हैं यानी राजाओं के समुदाय को 'राजक' कहते हैं यह १ राजसमूह का नाम है । क्षत्रियों के समुदाय को 'राजन्यक' कहते हैं यह १ क्षत्रियों के समूह का नाम है । मन्त्री, धीसचिव, अमात्य या "आमात्य" ये ३ बुद्धि सहायवाले मन्त्री या वज़ीर के नाम हैं और उस धीसचिव से अन्य "कर्मसचिव" कहाते हैं एकत्व में 'कर्मसचिवः' द्वित्व में 'कर्मसचिवौ' बहुत्व में 'कर्मसचिवाः' ये होते हैं ॥ ३ । ४ ॥

प्रधानमन्त्री, पु. पु.न. पु. पु.
पुरोहित, महामात्राः प्रधानानि पुरोधा (स्तु) पुरोहितः ।
पञ्च या पु. पु.
न्यायाधीश (द्रष्टरि व्यवहाराणां) प्राड्विवाकाक्षदर्शकौ ॥ ५ ॥

१. सम्राट् समाराधनतत्परोभूदिति रघुः ॥

महामात्र, प्रधान ये २ मुख्य राजसहायक (प्रधानमन्त्री) के नाम हैं। पुरोधाः (धस्) पुरोहित ये २ पुरोहित के नाम हैं। ऋण लेना आदि अट्ठारह विवाद के स्थान यानी व्यवहार हैं उनके देखनेवालों या निर्णय करनेवालों में "प्राड्विवाक, अक्षदर्शक" ये दोनों कहे जाते हैं ये २ धर्माध्यक्ष, पञ्च या न्यायाधीश के नाम हैं॥५॥

द्वारपाल, रखवार, अधिकारी

प्रतीहारो द्वारपालद्वाःस्थद्वाःस्थितदर्शकाः।
रक्षिवर्ग (स्त्व) नीकस्थो(ऽथा)ध्यक्षाधिकृतौ(समौ)६॥

(पु. पु. पु. पु. पु.; पु. पु. पु. पु.)

प्रतीहार, प्रतिहार, द्वारपाल, द्वाःस्थ, "द्वारी (न्) द्वारिक, दौवारिक" द्वाःस्थित, दर्शक "उपदर्शक, द्वाःस्थित, दर्शक" ये ५ द्वारपाल के नाम हैं। रक्षिवर्ग, अनीकस्थ ये २ राजरक्षकगणों के नाम हैं और अध्यक्ष, अधिकृत ये २ अधिकारी के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं॥ ६ ॥

एकग्रामाध्यक्ष, बहुग्रामाध्यक्ष, स्वर्णाधिकारी, रूप्याधिकारी

स्थायुको (ऽधिकृतो ग्रामे) गोपो (ग्रामेषु भूरिषु)।
भौरिकः कनकाध्यक्षो रूप्याध्यक्ष (स्तु) नैष्किकः॥७॥

(पु. पु.; पु. पु. पु. पु.)

एक गांव में जो अधिकार को प्राप्त हुआ है उसे 'स्थायुक' कहते हैं यह १ एकग्रामाध्यक्ष या ठेकेदार का नाम है। बहुतसे ग्रामों में जो अधिकारी हुआ है वह 'गोप' कहाता है यह १ बहुग्रामाध्यक्ष या बड़े ठेकेदार का नाम है। भौरिक, कनकाध्यक्ष ये २ स्वर्णाधिकारी के नाम हैं और 'रूप्याध्यक्ष' नैष्किक "टङ्कपति, टङ्ककपति" ये २ रुपयों के अधिकारी या खज़ांची के नाम हैं॥ ७ ॥

रनिवासाधिकारी, रनिवास का सेवक

(अन्तःपुरे त्वधिकृतः स्या) दन्तर्वंशिको (जनः)।
सौविदल्लाः कञ्चुकिनः स्थापत्याः सौविदाश्च (ते)॥८॥

(पु.; पु. पु. पु. पु.)

रनिवास में जो पुरुष अधिकार को प्राप्त हुआ है वह 'अन्तर्वंशिक' कहाता है यह १ रनिवास के अधिकारी का नाम है। सौविदल्ल, कञ्चुकी (न्) स्थापत्य, सौविद "सुविद" ये ४ रनिवास के निकट रहनेवाले या रानियों के द्वारपाल के नाम हैं इनमें बहुत्व से बहुवचन किया गया है परन्तु ये नित्य बहुवचनान्त नहीं हैं॥ ८ ॥

खोजा पु. पु. पु. पु. पु.
सेवक **शण्ढो वर्षवर (स्तुल्यौ) सेवकार्थ्यनुजीविनः।**
पड़ोसी राजा पु. न.
अन्यराजा **(विषयानन्तरो राजा) शत्रुर्मित्त्र (मतः परम्)॥ ९॥**

शण्ढ, "षण्ढ, शण्ड, षण्ड" वर्षवर ये २ रनवास में रहनेवाले नपुंसकमात्र (खोजा) के नाम हैं। सेवक, अर्थी, अनुजीवी ये ३ सेवक के नाम हैं। स्वदेशरूप विषय से अव्यवहित जो राजा वह 'शत्रु' कहाता है यह १ पड़ोसी राजा का नाम है और उस शत्रु से अन्य राजा को 'मित्र' या 'मित्त्र' कहते हैं यह १ अन्य राजा से व्यवहित राजा का नाम है॥ ९॥

पु. पु.
दोनोंसे भिन्न, **उदासीनः (परतरः) पार्ष्णिग्राह (स्तु पृष्ठतः)।**
अपने राज्य से पु. पु. पु. पु. पु. पु. पु.
पीछे का राजा, **रिपौ वैरिसपत्नारिद्विषद्द्वेषणदुर्हृदः॥ १०॥**
पु. पु. पु. पु. पु. पु. पु.
वैरी **द्विड्विपक्षाहितामित्त्रदस्युशात्रवशत्रवः।**
पु. पु. पु. पु. पु.
अभिघातिपरारातिप्रत्यर्थिपरिपन्थिनः॥ ११॥

शत्रु, मित्त्र से परतर=(जुदे) राजा को 'उदासीन' कहते हैं यानी अतिव्यवहित राजा "उदासीन" कहाता है यह १ शत्रु, मित्र से भिन्न राजा का नाम है। पीछे के देश में वर्तमान राजा 'पार्ष्णिग्राह' कहाता है यह १ अपने राज्य से पृष्ठवर्ती राजा का नाम है। रिपु, वैरी (न्) सपत्न या 'सापत्न्य' अरि, द्विषन्। द्वेषण, दुर्हृद्, द्विट्, विपक्ष, अहित, अमित्त्र, दस्यु, शात्रव, शत्रु, अभिघाति, "अभियाति" पर, अराति, "आराति" प्रत्यर्थी और परिपन्थी (न्) ये १६ शत्रु के नाम हैं॥ १०। ११॥

समान वयवाले, पु. पु. पु. न. पु. पु.
मित्र, **वयस्यः स्निग्धः सवया (अथ) मित्त्रं सखा सुहृत्।**
मित्रता या न. न. पु. न.
मिताई, भलाई **सख्यं साप्तपदीनं (स्याद) नुरोधोऽनुवर्तनम्॥ १२॥**

वयस्य, स्निग्ध, सवयाः (स्) ये ३ बराबर उमरवाले प्रिय के नाम हैं मित्त्र, सखा, सुहृत् ये ३ मित्त्र (दोस्त) के नाम हैं। सख्य, साप्तपदीन ये २ सखा

१ "मित्रं सुहृदि न द्वयोः। सूर्ये पुंसि स्त्रियां गन्धद्रव्ये दैत्यान्तरे पुमानिति" (मेदिनी)॥
२ बाहुलकादनादेशस्याभावः "अनुनासिकपरत्वाभावादनादेशो नेति" तु भाष्यसिद्धान्तः॥

के धर्म, कर्मों या मित्रता के नाम हैं और अनुरोध, अनुवर्तन ये २ अनुकूलता या भलाई के नाम हैं ॥ १२ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
दूत या यथार्हवर्णः प्रणिधिरपसर्पश्चरः स्पशः ।
हलकारा, पु. पु. पु. पु.
विश्वासी चार (श्च) गूढपुरुष (श्च) आप्तः प्रत्ययित(स्त्रिषु)॥१३॥

यथार्हवर्ण, प्रणिधि, अपसर्प " अवसर्प " चर, स्पश, चार और गूढ़पुरुष ये ७ दूत, धावन, हलकारा या जासूस के नाम हैं । आप्त, प्रत्ययित ये २ निश्चय ज्ञानवाले या विश्वासवाले के नाम हैं इनमें 'प्रत्ययित' तीनों लिङ्ग में रहता है ॥ १३ ॥

पु. पु. पु. पु.
ज्योतिर्विद सांवत्सरो ज्यौतिषिको दैवज्ञगणका (वपि) ।
पु. पु. पु. पु.
(स्यु)मौहूर्तिको मौहूर्तज्ञानिकार्तान्तिका(अपि) ॥ १४ ॥

सांवत्सर, ज्यौतिषिक, या "ज्योतिषिक" दैवज्ञ, गणक, "स्त्री गणकी" मौहूर्तिका, " मौहूर्त " ज्ञानी (इन्) और कार्तान्तिक ये ८ ज्योतिषी के नाम हैं ॥ १४ ॥

पु. पु. पु. पु.
शास्त्री, तान्त्रिको ज्ञातसिद्धान्तः सत्री गृहपतिः (समौ) ।
मोदी, पु. पु. पु. पु.
लेखक लिपिंकरोऽक्षरचणोऽक्षरचुञ्चु (श्च) लेखके ॥ १५ ॥

तान्त्रिक, ज्ञातसिद्धान्त ये २ शास्त्रज्ञाता के नाम हैं । सत्री (न्) सत्री (न्) गृहपति ये २ सदा अन्नआदिकों के देनेवाले गृहस्थ, मोदी या कोठारी के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं और लिपिंकर 'लिबिंकर' अक्षर-चण, अक्षरचुञ्चु और लेखक ये ४ लिखनेवाले के नाम हैं ॥ १५ ॥

स. स.
लिखायाअक्षर (लिखिताक्षरविन्यासे)लिपिर्लिबि(रुभे स्त्रियौ) ।
दूत, पु. पु.
दूतका काम स्यात्संदेशहरो दूतो दूत्यं (तद्भावकर्मणि) ॥ १६ ॥

लिखित, "लिखन, लेखन " अक्षरविन्यास ' अक्षरसंस्थान' लिपि, " लिपी " लिबि, "लिबी" ये ४ लिखे हुए अक्षर के नाम हैं । संदेशहर, दूत, स्त्री 'दूती' ये २

१ "प्रत्ययः शपथे रन्ध्रे विश्वासाचारहेतुषु " (इति विश्वः) ॥

दूत के नाम हैं और उस दूत के होने या कर्म में 'दूत्य' या 'दौत्य' कहा जाता है यह १ दूत के काम का नाम है ॥ १६ ॥

पथिक, **अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्थः पथिक इत्यपि ।**
स्वाम्यमात्यसुहृत्कोषराष्ट्रदुर्गबलानि च ॥ १७ ॥
राज्याङ्ग **राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयो(ऽपि च) ।**

अध्वनीन, अध्वग, अध्वन्य, पान्थ, पथिक ये ५ पथिक या डगरोही या राही के नाम हैं और स्त्रीलिङ्ग में अध्वनीना, अध्वगा, अध्वन्या, पान्था, पथिकी और पथिका ये भी होते हैं । स्वामी=राजा, अमात्य=मन्त्री, सुहृत्=मित्र, कोष=धनका समूह (ख़ज़ाना) राष्ट्र=जनपदवर्तीभूमि, दुर्ग दुर्गमस्थान (क़िला आदि) बल=फ़ौज ये सात राज्याङ्ग, प्रकृति और श्रेणि कहाते हैं जैसे कामन्दकीयशास्त्र में कहा है कि (स्वाम्यमात्यश्च राष्ट्रं च दुर्गं कोषो बलं सुहृत् । परस्परोपकारीदं सप्ताङ्गं राज्यमुच्यते) ये ही सब प्रकृतिवाच्य हैं और पुरवासियों का समूह भी प्रकृति शब्दवाच्य है पौरश्रेणी समेत आठ अङ्गवाली राज्य कहाती है ये २ या ३ राज्याङ्ग के नाम हैं ॥ १७ । १/२ ॥

पु. पु. न. न. न. पु.
मिलाप आदि **सन्धि (र्ना) विग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः ॥ १८ ॥**
पु. स.
६गुण३शक्तियां **(षट्) गुणाः शक्तय (स्तिस्रः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः) ।**
त्रिवर्ग **(क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च) त्रिवर्गो(नीतिवेदिनाम्) ॥१९॥**

सोना आदि देकर वैरी को मिला लेना 'सन्धि' कहाती है, यह पुंलिङ्ग है, परराज्य के फूंकने या लूटने आदि को 'विग्रह' कहते हैं, शत्रु के ऊपर चढ़जाने को 'यान' कहाजाता है, शत्रु को बलवान् देखकर क़िला आदि में बैठ रहना 'आसन' कहाता है, बलवान् शत्रु से मिलजाना व निर्बल को मारडालना 'द्वैध' कहाता है, शत्रु से पीड़ित होकर किसी बलवान् के पीछे लुकजाने को 'आश्रय' कहते हैं ये छः 'गुण' शब्दवाच्य कहाते हैं यानी 'षड्गुणाः' यह १ सन्धि आदिकों का नाम है । प्रभाव, उत्साह, मन्त्रज ये ३ शक्तियां कहाती हैं यह १ राजशक्तियों का नाम है इनमें कोष, दण्ड और तेज ये 'प्रभावशक्ति' हैं, विक्रम आदि से उन्नति 'उत्साहशक्ति' है, सन्धिविग्रह आदि को मन्त्र से जैसा चाहिये वैसाही स्थापन करना 'मन्त्रशक्ति' कहाती है अथवा कितेक आचार्यों के मत में पञ्चाङ्गमन्त्र 'मन्त्रशक्ति' कहलाती है और क्षय, स्थान, वृद्धि ये ३ नीतिशास्त्र-

वेत्ताओं के 'त्रिवर्ग' हैं यह १ नीतिशास्त्रोक्त त्रिवर्ग का नाम है (कृषिर्वणिक्पथं दुर्गं सेतुःकुञ्जरबन्धनम् । खन्याकारबलादानं शून्यानां च निवेशनम्) ये आठ वर्ग हैं उनके अपचय को 'क्षय' और उपचय–अपचय से रहित होकर रहने को स्थान तथा उपचय को 'वृद्धि' कहते हैं ॥ १८ । १६ ॥

पु. पु.

प्रभाव उपाय (स) प्रतापः प्रभावश्च (यत्तेजः कोषदण्डजम्) ।

पु.

(भेदो दण्डः सामदानमित्यु)पाय (चतुष्टयम्) ॥२०॥

धनसमूह, दम, सेना से उपजा हुआ जो तेज है वह 'प्रताप' और 'प्रभाव' कहाता है ये २ प्रभाव के नाम हैं। उपस्थित और मिले हुए शत्रुवों को भेद से स्वाधीन करना, दण्डदेना, प्रियवचन आदि कहना और धन आदि का समर्पण करना ये ४ उपायचतुष्टय कहाते हैं यह उपायचतुष्टयों का एक २ नाम है इनका बहुत सा विस्तार कामन्दकीयादि नीतिशास्त्रों में देखना चाहिये ॥ २० ॥

दण्ड मिलाप न. पु. पु. न. न.

भेद मन्त्री आदि साहसं (तु) दमो दण्डः सामसान्त्व (मथो समौ)।

के कामों को पु. पु. स.

देखना भेदोपजापा (वुपधा) धर्माद्यैर्यत्परीक्षणम् ॥ २१ ॥

साहस, दम, दण्ड ये ३ दण्ड के नाम हैं। साम (न) "शाम (न)" सान्त्व ये २ मिलाप के नाम हैं। भेद, उपजाप ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ये २ मिले हुए के भेद करने के नाम हैं और धर्म, अर्थ, काम और भय से परीक्षापूर्वक मन्त्री आदि के आशयके परखने को "उपधा" कहते हैं यह १ राजा करके धर्मादिकोंसे मन्त्री आदि की परीक्षा का नाम है॥२१॥

पु.स.न.

सलाह (पञ्च त्रिष्व) षडक्षीणो (यस्तृतीयाद्यगोचरः) ।

एकान्त पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. न.

एकान्त की बात विविक्तविजनच्छन्ननिःशलाका (स्तथा) रहः ॥ २२ ॥

अ. अ. पु.स.न.

विश्वास रहश्चोपांशु (चालिङ्गे) रहस्यं (तद्भवे त्रिषु) ।

पु. पु. पु.

अन्याय (समौ)विस्रम्भविश्वासौ भ्रेषो(भ्रंशो यथोचितात्)२३।

अब 'अषडक्षीण' आदि निःशलाकपर्यन्त पांच शब्द त्रिलिङ्ग हैं यानी वाच्यलिङ्ग कहाते हैं। जो तृतीय आदि से नहीं जाना जाता है बरन दोही से किया मन्त्र

(सलाह) आदि है वह " अषडक्षीण " कहाता है यह १ सलाह का नाम है । विविक्त, विजन, छन्न 'छन्दः' निःशलाक, रहः (स्) रहः और उपांशु ये ७ एकान्त के नाम हैं । इनमें पहिला 'रहः' सान्त होकर नपुंसक है और दूसरा 'रहः' और उपांशु ये दोनों अव्यय हैं जो एकान्त में हो उसे ' रहस्य ' कहते हैं । यह त्रिलिङ्ग है यह १ एकान्त की बात का नाम है । विस्रम्भ " विश्रम्भ " विश्वास ये २ विश्वास के नाम हैं और जो यथाप्राप्त से गिर गया है उसे 'भ्रेष' कहते हैं यह १ अन्याय का नाम है ॥ २२।२३ ॥

पु. पु. पु. न. न.

न्याय न्याययुत **अभ्रेषन्यायकल्पा (स्तु) देशरूपं समञ्जसम् ।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

द्रव्ययुक्तायुक्त **युक्तमौपयिकं लभ्यं भजमानाभिनीत (वत्) ॥ २४ ॥**

पु.स.न. स. न.

परीक्षा **न्याय्यं (च त्रिषु षट्) संप्रधारणा (तु) समर्थनम् ।**

अभ्रेष, न्याय, कल्प, देशरूप, समञ्जस ये ५ न्याय के नाम हैं । युक्त " युत[1] " औपयिक, लभ्य, भजमान, अभिनीत और न्याय ये ६ न्याय से युक्त द्रव्य के नाम हैं और ये छहो तीनों लिङ्ग हैं और संप्रधारणा, समर्थन ये २ युक्तायुक्त परीक्षा के नाम हैं इनमें 'संप्रधारणा' स्त्रीलिङ्ग है और 'समर्थन' नपुंसक है ॥२४।½॥

पु. पु. पु. न.

आज्ञा या हुक्म **अववाद (स्तु) निर्देशो निदेशः शासनं (च सः) ॥ २५ ॥**

मर्यादा स. स. स. स. स. स.

अपराध **शिष्टि (श्चा) ज्ञा (च) संस्था (तु) मर्यादा धारणा स्थितिः ।**

न. पु. पु. न. न.

कैद करना **आगोऽपराधो मन्तु (श्च) (समे तू) द्दानबन्धने ॥ २६ ॥**

अववाद " अपवाद " निर्देश, निदेश, शासन, शिष्टि (शास्ति) और आज्ञा ये ६ काम करने की आज्ञा (हुक्म) के नाम हैं । संस्था, मर्यादा, धारणा, स्थिति ये ४ न्यायमार्ग में टिकने के नाम हैं । आगः (स्) अपराध, मन्तु ये ३ अपराध के नाम हैं । इनमें " सोढाहेशतमागांसि " इस माघकाव्य के प्रमाण से 'आगः' यह सान्त नपुंसक है और उद्दान, बन्धन ये २ बन्धन के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ २५ । २६ ॥

१ विश्वहैमसंवादप्राप्तप्रामाण्यमेदिनीपुस्तके " युतः " इति पाठस्योपालम्भेन योग्यत्वेन चास्योपन्यासः प्रामादिकः ॥

दूना दण्ड पोत या राजभाग महसूल भेंट या नज़र

पु. पु. पु. पु.
द्विपाद्यो (द्विगुणो दण्डो) भागधेयः करो बलिः ।
पु.न. न. न.
(घट्टादिदेयं) शुल्को(ऽस्त्री) प्राभृत(न्तु)प्रदेशनम् ॥२७॥

दूना दण्ड 'द्विपाद्य' कहाता है यह १ अपराध होने पर शास्त्रसे जतलाये हुए दण्ड से दूने दण्ड का नाम है । भागधेय, कर, "कार" बलि ये ३ काश्तकार आदि लोगों से जो राजा को मिलता है उसके नाम हैं यानी पोत के नाम हैं । घाट आदि नदी तीर स्थान में वस्तुओं को पार लेजाने और लेआने में जो राजभाग दिया जाता है वह 'शुल्क' कहा जाता है यह १ महसूल का नाम है यह पुंनपुंसक है और प्राभृत, प्रदेशन ये २ देवता और मित्र आदिकों के लिये दी हुई भेंट या नज़र के नाम हैं ॥ २७ ॥

उपहार दायज या व्रत व भीख आदि में देयधन

न. न. पु. स.
उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा ।
पु. न.
(यौतकादि तु यद्देयं) सुदायो हरणं (च तत्) ॥ २८ ॥

उपायन, उपग्राह्य, उपहार, उपदा ये ४ राजा व गुरु आदि के दर्शन के पहले समर्पण किये जानेवाले वस्तु, भेंट या नज़र के नाम हैं अथवा कितेक आचार्यों के मत में प्राभृत, प्रदेशन, उपायन, उपग्राह्य, उपहार और उपदा ये ६ भेंट या नज़र के ही नाम हैं । युतक[१]=वर और वधूसम्बन्धी धन को 'यौतक' या 'यौतुक' कहते हैं बन्धु आदिकों के देय धन का जो देना है उसे 'सुदाय' या 'सदाय' और 'हरण' भी कहते हैं ये २ कन्यादान के समय और व्रत भिक्षा आदि में भी दिये जानेवाले द्रव्य के नाम हैं ॥ २८ ॥

वर्तमान, भविष्य शीघ्रफल, आगामीफल

पु. न. स.
तत्काल(स्तु)तदात्वं (स्यादुत्तरः काल) आयतिः ।
न. पु.
सान्दृष्टिकं (फलं सद्य) उदर्कः (फलमुत्तरम्) ॥ २९ ॥

तत्काल, तदात्व ये २ वर्तमानकाल (हाल) के नाम हैं । आनेवाले काल को आयति या 'आयत' कहते हैं यह १ भविष्यकाल का नाम है । जो शीघ्रही फल होता है उसे 'सान्दृष्टिक' कहते हैं यह १ तत्काल फल का नाम है

---

१ "युतकं युगले युक्ते संशयेऽपि चेति" (रभसः) "युतकं संशये युगे । नारी वस्त्राञ्चले युक्ते बलनाम्नि च यौतके" (इति मेदिनी) ॥

और जो आगामी फल है वह 'उदर्क' कहाता है यह १ आनेवाले फल का नाम है ॥ २९ ॥

न. न.
अदृष्टभय, दृष्ट **अदृष्टं (वह्नितोयादि) दृष्टं (स्वपरचक्रजम्) ।**
भय, अपने न.
पक्षीयों से भय **(महीभुजा) महिभयं (स्वपक्षप्रभवं भयम्) ॥ ३० ॥**

अग्निकृत उत्पात और अतिवृष्टि आदि कृत भय को 'अदृष्ट' कहते हैं यह १ अदृष्ट भय का नाम है आदि शब्द से अग्नि, जल, व्याधि, दुर्भिक्ष, मरण, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, मूपिका और शलभ (टींड़ी) आदि ग्रहण किये जाते हैं । अपने और अन्य राज्य से तथा चौरादिकों से उपजे भय को 'दृष्ट' कहते हैं यह १ दृष्ट भय का नाम है और राजाओं को अपने सहायकों से उपजे भय को 'अहिभय' कहते हैं यह १ अपने पक्षीयों से उपजे भय का नाम है और पक्ष सात प्रकार का होता है जैसेकि "निजोऽथ मैत्रश्च समाश्रितश्च सम्बन्धतः कार्यसमुद्भवश्च । भृत्यागृहीतो विविधोपचारैः पक्षं बुधाः सप्तविधं वदन्ति" कहा है ॥ ३० ॥

स. पु. न. न.
व्यवस्था **प्रक्रिया (त्व) धिकारः (स्याच्) चामरं (तु) प्रकीर्णकम् ।**
स्थापन, चँवर, न. न. न.
राजगद्दी, **नृपासनं (तु) यद्भद्रासनं सिंहासनं (तु तत्) ॥ ३१ ॥**
सिंहासन, छाता, न. न. न.
राजछाता, **(हैमं) छत्रं त्वातपत्रं (राज्ञस्तु) नृपलक्ष्म (तत्) ।**
पूर्णकलश, पु. पु. पु. स.
झारी **भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भो भृङ्गारः कनकालुका ॥ ३२ ॥**

प्रक्रिया, अधिकार ये २ व्यवस्थास्थापन (क़ानून चलाना) के नाम हैं चमर, "चामर" स्त्री "चामरा" प्रकीर्णक ये २ चमर के नाम हैं । नृपासन, भद्रासन, ये २ मणि आदिकों से रचेहुए राजासन (राजगद्दी) के नाम हैं यदि वही नृपासन सोनेसे बनाया गया हो तो वह 'सिंहासन' कहाजाता है यह १ सिंहासन का नाम है । छत्र, 'छत्र' आतपत्र ये २ छाता के नाम हैं और जो राजा का छाता है वह नृपलक्ष्म (न) कहाता है यह १ राजसम्बन्धी छाता का नाम है । भद्रकुम्भ, पूर्णकुम्भ ये २ पूर्णकलश के नाम हैं और भृङ्गार, कनकालुका ये २ सोने के बने पात्रविशेष या झारी के नाम हैं इनमें 'भृङ्गार' पुंलिङ्ग है और 'कनकालुका' स्त्रीलिङ्ग है ॥ ३१ । ३२ ॥

पु. न. न. न.
सेनानिवास, निवेशः शिबिरं (षण्ढे) सज्जनं (तू) परक्षणम्।
गश्त या पहरा, न.
सेनाङ्ग (हस्त्यश्वरथपादातं) सेनाङ्गं (स्याच्चतुष्टयम्)॥३३॥

निवेश, शिबिर ये २ सेनानिवासस्थान के नाम हैं इनमें 'निवेश' पुंलिङ्ग है और 'शिबिर' नपुंसक कहाता है। सज्जन, उपरक्षण ये २ सेना के रक्षार्थ नियुक्त गश्त या पहरा के नाम हैं और हाथी, घोड़ा, रथ, पैदल ये ४ सेनाङ्ग कहाते हैं यह १ सेनाङ्ग का नाम है ॥ ३३ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
हाथी, दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विपः।
पु. पु. पु. पु. पु. पु.
हाथियोंकाराजा, मतङ्गजो गजो नागः कुञ्जरो वारणः करी ॥ ३४ ॥
पु. पु. पु. पु. पु.
मदान्ध इभः स्तम्बेरमः पद्मी यूथनाथ (स्तु) यूथपः।
हाथी, हाथी का पु. पु. पु. पु.
बच्चा मदोत्कटो मदकलः कलभः करिशावकः ॥ ३५ ॥

दन्ती (न) दन्तावल, हस्ती (न) द्विरद, अनेकप, द्विप, मतङ्गज, गज, नाग, कुञ्जर, वारण, करी (न) इभ, स्तम्बेरम, पद्मी (न) और पद्म ये १५ हाथी के नाम हैं। यूथनाथ, यूथप ये २ यूथ में मुख्य हाथी (गजेन्द्र) के नाम हैं। मदोत्कट, मदकल ये २ मतवाले (मदान्ध) हाथी के नाम हैं और कलभ, स्त्री "कलभी" करिशावक ये २ हाथी के बच्चे के नाम हैं ॥ ३४ । ३५ ॥

मदस्रावीहाथी, पु. पु. पु. पु. पु.
बे मदवाला, प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः (समा) वुद्वान्तनिर्मदौ।
हाथियों का न. स. स. स. स.
झुण्ड, हथिनी हास्तिकं गजता (वृन्दे) करिणी धेनुका वशा ॥ ३६ ॥

प्रभिन्न, गर्जित, मत्त ये ३ चुचुवाते मदवाले हाथी के नाम हैं। उद्वान्त, निर्मद ये २ विना मदवाले हाथी के नाम हैं। ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं। हाथियों के समुदाय में हास्तिक, गजता ये २ हाथियों के समूह के नाम हैं और करिणी, धेनुका और वशा "हस्तिनी" पद्मिनी, करेणु, वासिता आदि" ये ३ हथिनी के नाम हैं ॥ ३६ ॥

हाथी का गाल, उसका मद, सूंड़ से निकले जलकण, शीश का मांसपिण्ड, कुम्भों का मध्य भाग

पु. पु. पु. न. पु. पु.
गण्डः कटो मदो दानं वमथुः करशीकरः।
पु. पु.
कुम्भौ (तु पिण्डौ शिरस) (स्तयोर्मध्ये) विदुः (पुमान्) ३७

हाथी का गाल गण्ड और कट या "करट" कहलाता है ये २ हाथी के गाल के नाम हैं उसीसे "कण्डूयमानेन कटं कदाचित्" यह रघुवंशकाव्य का वचन संगत होता है। मद, दान ये २ मद गिरने के नाम हैं। वमथु, करशीकर ये २ सूंड़ से निकले जलकण के नाम हैं। शीश के दोनों पिण्डों को 'कुम्भ' कहते हैं यह १ हाथी के शीश के मांसपिण्ड का नाम है एकत्व में 'कुम्भः' और द्वित्व में 'कुम्भौ' होते हैं और उन कुम्भों के मध्यभाग (आकाशस्थान) को 'विदु' या 'विदू' कहते हैं यह १ कुम्भों के विचले भाग का नाम है और यह पुंलिङ्ग है॥ ३७ ॥

हाथीका मत्था, नेत्रोंकी गोलाई, देखना, कानों की जड़

पु. स.
अवग्रहो (ललाटं स्या) दिषीका (त्वक्षिकूटकम्)।
न. स.
(अपाङ्गदेशो) निर्याणं (कर्णमूलं तु) चूलिका॥३८॥

हाथी के मत्थाको 'अवग्रह' या 'अवग्राह' कहते हैं यह १ हाथी के ललाट का नाम है। इसकी आंखोंकी गोलाई को इषीका, ईषीका या ईशीका कहते हैं यह १ हाथी की आंखों की गोलाई का नाम है। हाथी की आंखों के किनारे या देखने को 'निर्याण' कहते हैं यह १ हाथी के अपाङ्गदेश या देखने का नाम है और हाथी के कर्णमूल को 'चूलिका' कहते हैं यह १ हाथी के कानों की जड़ का नाम है॥३८॥

ललाट का अधोभाग, दांतों का मध्यभाग, कंधा, बिन्दुसमूह

(अधः कुम्भस्य) वाहित्थं प्रतिमान (मधोऽस्य यत्)।
आसनं स्कन्धदेशः (स्यात्) पद्मकं बिन्दुजालकम्॥३९॥

कुम्भ के अधोभाग को 'वाहित्थ' या 'वातकुम्भ' कहते हैं यह १ कुम्भ या ललाट देश के अधोभाग का नाम है। इस वाहित्थ के अधोभाग में दांतों के मध्य भाग को 'प्रतिमान' कहते हैं। यह १ दांतों के मध्यभाग का नाम है। आसन, स्कन्धदेश ये २ गजस्कन्ध के नाम हैं और पद्मक, बिन्दुजालक ये २ हाथी के मुखादि में स्थित बिन्दुसमूह के नाम हैं॥ ३९ ॥

पार्श्वभाग, अग्रभाग, पूर्वजङ्घाभाग, अपरजङ्घाभाग

पु. पु. पु.
पक्षभागः पार्श्वभागो दन्तभाग(स्तु योऽग्रतः)।
न. न.
(द्वौ पूर्वपश्चाज्जङ्घादिदेशौ) गात्रावरे (क्रमात्) ॥४०॥

१ "गात्रावरे पूर्वपश्चात्पादयोः परिभाषिते" (इति भागुरिः) कश्चित्तु अष्ठीवद्भागादूर्ध्वमवरम्। अधस्तु गात्रमित्याह। अपरा पवर्गादिमध्या च। अपरं तूत्तरार्थे स्यात्पश्चाद्भागे च दन्तिनामिति (विश्वः)॥

हाथी की बगल को 'पक्षभाग' और 'पार्श्वभाग' कहते हैं ये २ हाथी की बगल के नाम हैं। जो आगे का भाग है वह 'दन्तभाग' कहाता है यह १ हाथी के अग्रभाग का नाम है। हाथी के पूर्व पश्चात् जङ्घा आदि देशों को क्रम से 'गात्र' व 'अवर' कहते हैं यानी हाथी का पूर्वजङ्घा आदि देश 'गात्र' कहाता है यह १ अगिले जङ्घा आदि भाग का नाम है। और पीछे का जङ्घा आदि देश 'अवर' कहाजाता है यह १ पिछले जङ्घा आदि देश का नाम है ॥ ४० ॥

न. न. न. पु. पु.स.न.

चाबुक, खूंटा, **तोत्रं वैणुकमालानं बन्धस्तम्भे (ऽथ) शृङ्खला।**

पु. पु.न. पु.न. पु.स.

आंदू, अंकुश **अन्दुकोनिगडोऽस्त्रीस्यादङ्कुशोऽस्त्रीसृणिः स्त्रियाम्॥४१**

तोत्र, वैणुक "वेणुक" ये २ हांकने की लकड़ी (चाबुक, कोड़ा आदि) के नाम हैं। आलान, बन्धस्तम्भ ये २ बन्धन के आधार खंभ (खूंटा) के नाम हैं। शृङ्खला, अन्दुक, "अन्दूक" निगड ये ३ हाथी बाँधने की शांकल या ज़ंजीर के नाम हैं इन में "शृङ्खला पुंस्कटी वस्त्रबन्धेऽपि निगडे त्रिषु" (इति मेदिनी) इस कोष के प्रमाण से "शृङ्खला" त्रिलिङ्ग है और 'निगड' पुंनपुंसक है। अङ्कुश, सृणि या शृणि ये २ अङ्कुश के नाम हैं। इनमें 'अङ्कुश' पुंनपुंसक है और 'सृणि' पुंस्त्रीलिङ्ग है यानी (स्त्रियाम्) इस एकदेश से स्त्रीपुंस शब्दका समुदाय लक्षित होता है उसीसे 'सृणि' पुंलिङ्गभी है यह सुभूति आदि कहते हैं और मुकुट के मत से (स्त्रियाम्) यह प्रायिकत्व से कहागया है ये २ अङ्कुश के नाम हैं ॥ ४१ ॥

स. स. स. स. स.

कमर बांधने की रस्सी पलान **दूष्या कक्ष्या वरत्रा (च) कल्पना सज्जना (समे)।**

स. न. पु. पु. पु.स.

आदिसे सजना गद्दी या झूल **प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोमः कुथो (द्वयोः) ॥४२॥**

दूष्या, "चूषा, वूषा" कक्ष्या "कक्षा" वरत्रा ये ३ हाथी के कमर बांधने की उपयोगी चाम की रस्सीके नाम हैं। कल्पना, सज्जना ये २ नायक के चढ़नेके लिये हाथी को तैयार करने के नाम हैं और प्रवेणि, प्रवेणी, आस्तरण, वर्ण, परिस्तोम 'परिष्टोम' कुथ ये ६ हाथीकी पीठ पर के बिछौना या गद्दी के नाम हैं इनमें प्रवेणी स्त्रीलिङ्ग और 'कुथ' पुंस्त्री या त्रिलिङ्ग है ॥ ४२ ॥

न. स. स.

निर्बल हाथी, **वीतं (त्वसारं हस्त्यश्वं) वारी (तु) गजबन्धनी।**

---

१ अन्दुकः स्वार्थे कन् "स्वार्थिकाः प्रकृतितो लिङ्गवचनान्यातिवर्तन्तेऽपि" इति पुंस्त्वम् ॥

२ तेन आरक्षमग्नमवमत्यसृणिं सितामिति माघवाक्यं संगच्छते ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

घोड़ा, हाथी **घोटके पीतितुरगतुरङ्गाश्वतुरङ्गमाः ॥ ४३ ॥**

बांधनेकी शाला, पु. पु. पु. पु. पु. पु. पु.

घोड़ामात्र **वाजिवाहार्वगन्धर्वहयसैन्धवसप्तयः ।**

बलरहित यानी युद्ध के अयोग्य जो हाथी और घोड़े हों तो वे 'वीत' कहाते हैं। यह १ लड़ाई के अयोग्य हाथी व घोड़ों का नाम है। वारी, गजबन्धनी ये २ हाथी बांधने की शाला के नाम हैं और घोटक, घोट, पीति, 'पीती' "वीति, वीती" तुरग, तुरङ्ग, अश्व, तुरंगम, वाजी (न्), वाह, अर्वा (न्), गन्धर्व, हय, स्त्री 'हयी' सैन्धव और सप्ति ये १३ घोड़े के नाम हैं इनमें 'वाजी' इन्नन्त और 'अर्वा' नान्त है ॥ ४३ । ३ ॥

अच्छी जाति- पु. पु. पु. पु.

वाला घोड़ा, **आजानेयाःकुलीनाः(स्यु)र्विनीताःसाधुवाहिनः॥४४॥**

सिखलाया

घोड़ा, घोड़ों पु. पु. पु. पु.

का भेद, अ- **वनायुजाः पारसीकाः काम्बोजा वाल्हिका (हयाः) ।**

श्वमेधीय

घोड़ा, अधिक पु. पु. पु. पु.

वेगवाला **ययु(रश्वो)ऽश्वमेधीयो जवन(स्तु)जवाधिकः॥ ४५॥**

आजानेय, कुलीन ये २ अच्छी जाति में उपजे घोड़े के नाम हैं एकत्व में "आजानेयः, कुलीनः" द्वित्व में "आजानेयौ, कुलीनौ" और बहुत्व में "आजानेयाः, कुलीनाः" ये होते हैं। विनीत, साधुवाही (न्) ये २ सिखलाये हुए घोड़ों के नाम हैं एकत्व में "विनीतः, साधुवाही" द्वित्व में "विनीतौ, साधुवाहिनौ" और बहुत्व में "विनीताः, साधुवाहिनः" ये होते हैं। वनायु देश में उपजे घोड़े 'वनायुज' पारसीक देश में उपजे 'पारसीक' कम्बोज देश में उपजे 'काम्बोज' और वाल्हिक= (काबुल) देश में उपजे 'वाल्हिक या वाल्हीक' कहाते हैं इनमें बहुत्व से बहुवचन हुआ है यह एक २ क्रम से विशेषदेशीय घोड़ों का नाम है। अश्वमेधीय घोड़े को 'ययु' कहते हैं अथवा ययु, अश्वमेधीय ये २ जिसका एक कान काला हो व सारा अङ्ग उजला हो उस घोड़े के नाम हैं और जवन, जवाधिक ये २ अधिक वेगवाले घोड़े के नाम हैं ॥ ४४ । ४५ ॥

लदुवा उजला पु. पु. पु. पु.

रथवाही बछेड़ा **पृष्ठ्यः स्थौरी (सितः) कर्को रथ्यो (वोढा रथस्य यः)।**

घोड़ी, घो- पु. पु. स. स. स. न.

ड़ियों का गि-

रोह **बालःकिशोरो वाम्यश्वा वडवा वाडवं (गणे) ॥ ४६ ॥**

पृष्ठ्य, स्थौरी "स्थुरी व स्थोरी" ये २ जल आदि में बोझा ढोनेवाले (लदुआ)

घोड़े के नाम हैं। सफ़ेद घोड़े को 'कर्क' कहते हैं यह १ उजले घोड़े का नाम है। जो रथ का ले जानेवाला घोड़ा है वह 'रथ्य' कहाता है । इसके बच्चे को 'किशोर' कहते हैं यह १ बछेड़े का नाम है। वामी, अश्वा, वडवा ये ३ घोड़ी के नाम हैं और घोड़ियों के समूह को (वाडव) कहते हैं यह १ घोड़ियों के समुदाय का नाम है ॥ ४६ ॥

घोड़ोंकी १दिन की मंजिल, पु.स.न. (त्रिष्वा) श्वीनं (यदश्वेन दिनेनैकेन गम्यते)।

घोड़ोंकी बिचली देह,हिनहिनाना न. कश्यं(तु मध्यमश्वानां)हेषा ह्रेषा (च निस्वनः) स. स. ॥४७॥

जो एक घोड़े से एक दिन में जाया जाता है उस मार्ग को (आश्वीन) कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है यह १ घोड़े की एक दिन की मंजिल का नाम है । घोड़ों के मध्यभाग (कमर) को 'कश्य' कहते हैं यह १ घोड़ों के बिचले भाग का नाम है और घोड़ों के शब्द को हेषा, ह्रेषा और "ह्रेषा" कहते हैं ये २ घोड़ों के हिन-हिनाने के नाम हैं ॥ ४७ ॥

घोड़ोंका गला, पु. निगाल(स्तु)गलोद्देशे(पु.)(वृन्दे त्वा)श्वीयमाश्व (न. न.)(वत्)।

घोड़ोंका गिरोह, घोड़ोंकी चालें, न. न. न. न. न. आस्कन्दितं धोरितकं रेचितं वल्गितं प्लुतम् ॥ ४८ ॥

लगाम, टाप स. स. पु.न. (गतयोऽमूः पञ्च)धारा घोणा(तु)प्रोथमस्त्रियाम्।

स. पु.न. न. पु. कविका(तु)खलीनो(ऽस्त्री)शफं(क्लीबे)खुरः(पुमान्)४९॥

निगाल, गलोद्देश ये २ घोड़ों के गले की सन्धि के नाम हैं और घोड़ों के समूह में 'आश्वीय' व 'आश्व' कहते हैं ये २ घोड़ों के गिरोह के नाम हैं यहां (वत्) शब्द के निर्देश से ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं। जहां वेग से आर्त होकर घोड़ा न देखता न सुनता है उस गति को आस्कन्दित " सरपट चाल" कहते हैं। चतुराई समेत सीधीगति को 'धोरितक'=(दुलकी चाल) मध्यमवेग से चक्राकार घूमने को रेचित="पोइयाचाल" शरीर के अग्रभाग को समेटकर कुत्सित स्थल आदि में मुँह को टेढ़ा बनाय उछलकर चलने को 'वल्गित' और शरीर के पूर्व व परभाग को झुकाकर क्रम से रखने को प्लुत (चौकड़ी या कावा लगाना) कहते हैं ये घोड़ों की पांच चालें कहाती हैं उनको 'धारा' कहते हैं यह १ घोड़ों की पांचों चालों का नाम है। घोणा, प्रोथ ये २ घोड़े की नाक (थूथुन) के नाम हैं

इनमें ' घोणा ' स्त्रीलिङ्ग और प्रोथ पुंनपुंसक है । कविका, खलीन ये २ लगाम के नाम हैं इनमें 'खलीन' पुंनपुंसक है और शफ, खुर और " क्षुर " ये २ टाप के नाम हैं इनमें ' शफ ' नपुंसक और ' खुर ' पुंलिङ्ग है ॥ ४८ । ४९ ॥

पुं.न. न. न. पु. पु.

पूंछ, बालयुत **पुच्छो (ऽस्त्री) लूमलाङ्गूले बालहस्त (श्च) बालधिः।**

पूंछ, लोटना **(त्रिषू) पावृत्तलुठितौ (परावृत्ते मुहुर्भुवि) ॥ ५० ॥**

पुच्छ, लूम, लाङ्गूल या " लाङ्गुल " ये ३ घोड़े की पूंछ के नाम हैं । इनमें ' पुच्छ ' पुंनपुंसक है । बालहस्त, बालधि ये २ बालसमूहों से युत पूंछ के अग्रभाग के नाम हैं और उपावृत्त, लुठित ये २ थकावट के दूर करने के लिये वारंवार भूमि में दोनों पक्षों से लोटने के नाम हैं ये दोनों त्रिलिङ्ग हैं ॥ ५० ॥

पु. पु. पु.

लड़ाई का रथ, **(याने चक्रिणि युद्धार्थे) शताङ्गः स्यन्दनो रथः ।**

पु.

रथविशेष **(असौ) पुष्यरथ (श्चक्रयानं न समराय यत्) ॥ ५१ ॥**

युद्ध के लिये तैयार पहियों से युक्त यान को शताङ्ग, स्यन्दन और रथ कहते हैं ये ३ लड़ाई में चढ़नेवाले रथ के नाम हैं ये तीनों पुंलिङ्ग हैं । जो चक्रयुत (पहियों से संयुत) यान संग्राम के लिये नहीं तैयार होता है वह ' पुष्यरथ ' या ' पुष्परथ ' कहाता है यह १ युद्ध के विना यात्रा, सेवा आदि में सुख से घूमने के लिये रथ का नामहै जैसे कि, पुष्यनक्षत्र सुखकारी होता है वैसेही पुष्यरथ कहाता है ॥ ५१ ॥

पु. न. न.

जनाना रथ **कर्णीरथः प्रवहणं डयनं (च समं त्रयम्) ।**

न. पु.न. स. न.

गाड़ा, गाड़ी **(क्लीबे) ऽनः शकटोऽस्त्रीस्याद्गन्त्री (कम्बलिवाह्यकम्) ५२**

कर्णीरथ, प्रवहण " प्रहरण " डयन, " हयन " ये ३ लुगाइयों के आने जाने के लिये वस्त्र आदि से ढँके रथविशेष (डोला) के नाम हैं इनमें 'कर्णीरथ' पुंलिङ्ग और प्रवहण, डयन ये दोनों नपुंसक हैं उसीसे (कर्णीरथस्थां रघुनाथपत्नीम्) यह प्रयोग संगत होता है ये तीनों समानार्थक हैं । अनः (स्), शकट ये २ गाड़ा के नाम हैं । इनमें ' अनस् ' नपुंसक है और ' शकट ' पुंनपुंसक है और गन्त्री, कम्बलिवाह्यक ये २ गाड़ी के नाम हैं अथवा बड़े बलवान् बैलों से पहुँचाने लायक गाड़े को गन्त्री या गान्त्री कहते हैं यह १ गाड़ी का नाम है॥५२॥

---

१ अन्येषामपीति (६ । ३ । १३७) दीर्घः ॥

स. न. स. स.
पालकी हिंडोला शिबिका याप्ययानं (स्याद्) दोलाप्रेङ्खा (ऽऽदिकाः स्त्रियाम्)।
या डोली बाघ पु.स.न. पु.स.न.
चर्मसे घिरा रथ (उभौ तु) द्वैपवैयाघ्रौ (द्वीपिचर्मावृते रथे) ॥ ५३ ॥

शिबिका, याप्ययान ये २ अधम पुरुषों से लेजाने योग्य यानविशेष या पालकी के नाम हैं इनमें 'शिबिका' स्त्रीलिङ्ग है और याप्ययान नपुंसक है । दोला, प्रेङ्खा ये २ हिंडोला या डोली के नाम हैं ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं आदि शब्द से खट्वा आदि भी दोला कहाती हैं और जब बाघ की खाल से ढँका हुआ रथ हो तो उसे 'द्वैप' और 'वैयाघ्र' कहते हैं ये २ बाघचर्म से घिरे हुए रथ के नाम हैं ये दोनों त्रिलिङ्ग हैं ॥ ५३ ॥

सफ़ेद कम्बल से घिरा रथ, पु.
(पाण्डुकम्बलसंवीतः स्यन्दनः) पाण्डुकम्बली[1] ।
कम्बल, वस्त्र व दुकूलादि से युक्त रथ पु.स.न. पु.स.न.
(रथे) काम्बलवास्त्राद्याः (कम्बलादिभिरावृते) ॥ ५४ ॥

कुछ पीले और सफ़ेद कम्बल से घिरा हुआ रथ 'पाण्डुकम्बली' कहाता हैं यह १ सफ़ेद कम्बल के परदेवाले रथ का नाम है और कम्बल, वस्त्र व आदि शब्द से चर्म, क्षौम व दुकूलादि से ढँका हुआ रथ काम्बल, वास्त्र, चार्म, क्षौम और दौकूल आदि कहाते हैं यह एक २ कम्बल आदिकों से घिरे हुए रथ के नाम हैं ॥ ५४ ॥

स. स.
रथसमूह, (त्रिषु द्वैपादयो) रथ्या रथकट्या (रथव्रजे) ।
न. पु.
धुरी, तांगा धूः (स्त्री) 'क्लीबे' यानमुखं (स्याद्र) थाङ्गमपस्करः ॥ ५५ ॥

द्वैप आदि वास्त्र पर्यन्त कहे हुए शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं यानी वाच्यलिङ्ग कहाते हैं । रथों के समुदाय में रथ्या, रथकट्या ये दो होते हैं अथवा रथ्या, रथकट्या, रथव्रज ये ३ रथसमूह के नाम हैं । धूः, यानमुख ये २ धुरा या धुरी के नाम हैं इनमें 'धूः' स्त्रीलिङ्ग और 'यानमुख' नपुंसक है और रथाङ्ग, अपस्कर ये २ रथ के अवयवमात्र या तांगा के नाम हैं ॥ ५५ ॥

न. न. स. पु.
पहिया, पुट्ठी चक्रं रथाङ्गं (तस्यान्ते) नेमिः (स्त्री स्या) त्प्रधिः (पुमान्) ।
या हाल, स. स. पु. पु.स.
नाह, कुलावा पिण्डिका नाभिरक्षाग्रकीलके (तु द्वयोः) रणिः ॥ ५६ ॥

---

१ "स्यात्पाण्डुकम्बलः श्वेतप्रावारग्रावभेदयोः" (इति मेदिनी) ॥

चक्र, रथाङ्ग ये २ चाक या पहिया के नाम हैं। ये दोनों नपुंसक हैं। निमि, "नेमी" प्रधि ये २ उस पहिया का आखिरी भाग जोकि ज़मीन को छूता है उसके या पुट्ठी या हाल के नाम हैं इनमें 'नेमि' स्त्रीलिङ्ग है और 'प्रधि' पुंलिङ्ग है। पिण्डिका, पिण्डि "पिण्डी" नाभि, "नाभी" ये २ पहिया के बीच मण्डलाकार गढ़ारी या 'नाह' के नाम हैं ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं और अक्षाग्रकीलक, अणि "अणी" और "आणि, आणी" ये २ नाह चलानेवाले काष्ठ के आगे पहिया धारने के लिये जो कील गाड़ते हैं उसके या (कुलाबा) के नाम हैं इनमें 'अणि' स्त्रीपुंलिङ्ग है यानी दोनों लिङ्गों में रहता है ॥ ५६ ॥

स. पु. पु. पु.

लोह का परदा जुआ का काठ — **रथगुप्तिर्वरूथो (ना) कूवर (स्तु) युगन्धरः।**

पु. पु.

रथ के नीचे का काठ दूसरा जुआ — **अनुकर्षो (दार्वधःस्थं) प्रासङ्गो(ना)(युगान्तरम्)॥५७॥**

रथगुप्ति, वरूथ ये २ हथियार आदि से बचाने के लिये रथको जिस लोह आदि से घेरते हैं यानी परदा डालते हैं उसके नाम हैं इनमें 'वरूथ' पुंलिङ्ग है। कूवर, युगन्धर ये २ जिस काठ में रथ के घोड़े बांधे जाते हैं उसके या जुआ या वकौरा के नाम हैं। रथ के नीचे स्थित काष्ठ को अनुकर्ष या अनुकर्षा (न) कहते हैं यह १ सगुन का नाम है और जो जुआ से दूसरा जुआ बछड़े आदिकों के कांधे में लगाया जाता है उसको 'प्रासंग' कहते हैं यह १ जुआ का नाम है और यह पुंलिङ्ग कहाजाता है ॥ ५७ ॥

न. न. न. न. न.

सब सवारी, — **(सर्वं स्याद्)वाहनं यानं युग्यं पत्रं (च) धोरणम्।**

पु.न.

कहार आदि से लेजानेवाली — **(परम्परावाहनं यत्त) द्वैनीतक (मस्त्रियाम्) ॥ ५८ ॥**

सब हाथी, घोड़ा रथ आदि दोलापर्यन्त वाहन यानादि शब्दवाच्य कहाते हैं जैसे वाहन "वाह्न" यान, युग्य, पत्र "पत्र" और धोरण ये ५ सारी सवारी के नाम हैं। और जो परम्परा से वाहन है और जो नर आदि से पहुँचाने लायक पालकी आदि है वह "वैनीतक" कहाता है यह पुंलिङ्ग व नपुंसक लिङ्ग है यह १ कहार आदि से लेजानेवाले वाहन का नाम है ॥ ५८ ॥

पु. पु. पु. पु.

फीलवान — **आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः।**

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

रथवान् या — **नियन्ता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता (च) सारथिः॥ ५९॥**

पु. पु.

गाड़ीवान — **सव्येष्टृदक्षिणस्थौ (च संज्ञा रथकुटुम्बिनः)।**

आधोरण, हस्तिपक, हस्त्यारोह और निषादी (न्) ये ४ महावत या फ़ीलवान के नाम हैं इनमें बहुत्व से बहुवचन हुआ है ये नित्य बहुवचनान्त नहीं हैं। नियन्ता (न्तृ) प्राजिता (तृ) यन्ता (न्तृ) सूत, क्षत्ता (तृ) सारथि, सव्येष्ठा (ष्ठृ) वा सव्येष्ठ (ष्ठ) दक्षिणस्थ ये ८ रथकुटुम्बी यानी सारथि के नाम हैं॥५९॥½॥

पु. पु. पु. पु.

रथ में चढ़कर लड़नेवाले, सवार, — रथिनः स्यन्दनारोहा अश्वारोहा (स्तु) सादिनः॥६०॥

पु. पु. पु. पु. पु.

लड़नेवाले, गश्तवाले, — भटा योधा(श्च) योद्धारः सेनारक्षा (स्तु) सैनिकाः।

पु. पु.

फ़ौज या सेना — (सेनायां समवेता ये)सैन्या(स्ते)सैनिका(श्च ते)॥६१॥

रथी (न्) स्यन्दनारोह ये २ रथों में चढ़कर युद्ध करनेवालों के नाम हैं। अश्वारोह, सादी (न्) ये २ घोड़ों पर चढ़कर लड़नेवाले (सवार) के नाम हैं। भट, योध, योद्धा (द्धृ) ये ३ लड़नेवाले वीर या योधा के नाम हैं। सेनारक्ष, सैनिक ये २ सेनारक्षक या गश्तवालों के नाम हैं और जो सेना में मिले हैं या रहते हैं वे 'सैन्य' और 'सैनिक' कहाते हैं ये २ सेना (फ़ौज) के नाम हैं इनमें बहुत्व से बहुवचन हुआ है और ये नित्य बहुवचनान्त नहीं हैं॥६०।६१॥

पु. पु.

सूबेदार बहादुर, — (बलिनो ये सहस्रेण) साहस्रा (स्ते) सहस्रिणः।

पु. पु. पु. पु.

सेनारक्षक, सेनापति — परिधिस्थः परिचरः सेनानीर्वाहिनीपतिः॥६२॥

जो हज़ार बलवानों से फ़ौजवाले हैं या बलवान् हैं वे साहस्र व सहस्री (न्) कहाते हैं ये २ हज़ार सिपाहियों के मालिक के नाम हैं। परिधिस्थ, परिचर ये २ फ़ौज रखाने के लिये चारों ओर घूमनेवाले के नाम हैं या सेना में सज़ा करनेवाले राजा के नाम हैं और सेनानी, वाहिनीपति ये २ फ़ौज के मालिक या फ़ौज बख़्शी (सिपहसालार) के नाम हैं॥६२॥

पु. पु.न.

बख्तर — कञ्चुको वारवाणो (ऽस्त्री) (यत्तु मध्ये सकञ्चुकाः)।

न. न. न.

कमरपट्टी — (बध्नन्ति तत्)सारसनमधिकाङ्गो(ऽथ) शीर्षकम्॥६३॥

न. न. न. न. न.

टोप — शीर्षण्यं (च) शिरस्त्रे (ऽथ) तनुत्रं वर्म दंशनः।

पु. पु. पु. पु.

कवच — उरश्छदः कङ्कटकाजगरः कवचो (ऽस्त्रियाम्)॥६४॥

कञ्चुक, वारवाण "बाणवार" ये २ बखतर के नाम हैं इनमें 'वारवाण' पुंनपुंसक है। कञ्चुक धारनेवाले वीर कमर में दृढ़ता के लिये कञ्चुक के ऊपर जिसको बांधते हैं उसे सारसन, अधिकाङ्ग या अधिपाङ्ग कहते हैं ये २ कमरपट्टी के नाम हैं। शीर्षक, शीर्षण्य, शिरस्त्र ये ३ टोप के नाम हैं ये तीनों नपुंसक हैं और तनुत्र, वर्म (न), दंशन, उरश्छद, कङ्कटक, जगर "जागर" कवच ये ७ कवच (बखतर या झिलिम) के नाम हैं इनमें तनुत्र, वर्म, दंशन ये ३ नपुंसक हैं, उरश्छद, कङ्कटक, जगर ये ३ पुंलिङ्ग हैं और 'कवच' पुंनपुंसक है॥ ६३। ६४॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

झिलिम आदि **आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च पिनद्धश्चापिनद्ध (वत्)।**

धारे हुए मन्त्र पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

आदिसे रक्षित **सन्नद्धो वर्मितः सज्जो दंशितो व्यूढकङ्कटः॥ ६५॥**

आमुक्त, प्रतिमुक्त, पिनद्ध, अपिनद्ध ये ४ झिलिम आदि पहने हुए वीर के नाम हैं। ये चारो समानार्थक होकर वाच्यलिङ्ग कहाते हैं और सन्नद्ध, वर्मित, सज्ज, दंशित और व्यूढकङ्कट या ऊढकङ्कट ये ५ मन्त्र आदि से रक्षित कवच धारण किये हुए वीर के नाम हैं॥ ६५॥

न.

कवचधारिसमूह **(त्रिष्वामुक्तादयो) (वर्मभृतां) कावचिकं (गणे)।**

पु. पु. पु. पु. पु.

पैदल, पैदलों **पदातिपत्तिपदगपादातिकपदाजयः॥ ६६॥**

पु. पु. न. स.

का गिरोह **पद्ग (श्च) पदिक (श्चाथ) पादातं पत्तिसंहतिः।**

पु. पु. पु. पु.

हथियारबन्द **शस्त्राजीवे काण्डपृष्ठायुधीया युधिकाः (समाः)॥६७॥**

आमुक्त आदि व्यूढकङ्कट पर्यन्त शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं जैसेकि, "आमुक्ता शाटी, आमुक्तो वारवाणः, आमुक्तं शस्त्रम्" आदि जानना चाहिये। कवचधारियों के समुदाय को 'कावचिक' कहते हैं यह १ कवच धारण करनेवालों के समूह का नाम है। पदाति, "पादात" "पादाति" पत्ति, पदग, पादातिक, "पादाविक" "पदाजि, पादाज" पद्ग और पदिक ये ७ पैदल के नाम हैं। पादात, पत्तिसंहति ये २ पैदलसमूह के नाम हैं और शस्त्राजीव, काण्डपृष्ठ या "काण्डस्पृष्ट" आयुधीय और आयुधिक ये ४ हथियार बाधकर जीविका करनेवालों के नाम हैं ये चारो समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं॥ ६६। ६७॥

पु. पु. पु.
अच्छे तीरंदाज कृतहस्तः सुप्रयोगविशिखः कृतपुङ्ख (वत्)।
निशाना से चूके पु.
बाणवाला अपराद्धपृषत्को (ऽसौ लक्ष्याच्च्युतसायकः) ॥६८॥

कृतहस्त, सुप्रयोगविशिख, कृतपुङ्ख ये ३ बाण चलानेवालों में चतुर (अच्छे तीरंदाज़) के नाम हैं। ये तीनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं और जो निशाने से चूके हुए बाणवाला है वह 'अपराद्धपृषत्क' कहाता है यह १ जिसका तीर निशाना से अलग होगया है उसका नाम है ॥ ६८ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
धनुर्द्धारी धन्वी धनुष्मान् धानुष्को निषङ्ग्यस्त्री धनुर्धरः।
बाणधारी पु. पु. पु. पु.
बर्छीवाला (स्या)त्काण्डवां(स्तु)काण्डीरःशाक्तीकःशक्तिहेतिकः६९

धन्वी (न्), धनुष्मान्, धानुष्क, निषङ्गी (न्), अस्त्री (न्), धनुर्धर ये ६ धनुष धारनेवाले के नाम हैं। काण्डवान्, काण्डीर ये २ केवल बाणधारी के नाम हैं और शाक्तीक, शक्तिहेतिक ये २ शक्ति आदि शस्त्रधारी के नाम हैं ॥ ६९ ॥

पु. पु.
लट्ठधारी, फरसा याष्टीकपारश्वधिकौ (यष्टिपर्श्वधहेतिकौ)।
धारी, खड्गधारी, पु. पु.
सांगधारी, भालाधारी नैस्त्रिंशिकोऽसिहेतिःस्या(त्समौ)प्रासिककौन्तिकौ ७०

जो लाठी से लड़नेवाला है वह 'याष्टिक' कहाता है। यह १ लट्ठबाज़ का नाम है। जो फरसा से लड़नेवाला है वह 'पारश्वधिक' कहाजाता है। यह १ परशुधारी का नाम है। नैस्त्रिंशिक, असिहेति ये २ तलवार से लड़नेवाले के नाम हैं। सांगसे लड़नेवाला 'प्रासिक' कहलाता है यह १ सांगधारी का नाम है और जो भाला से लड़नेवाला है उसे 'कौन्तिक' कहते हैं यह १ भालाबरदार का नाम है ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ ७० ॥

पु. पु. पु. पु.
ढालवाला, चर्मी फलकपाणिः (स्यात्) पताकी वैजयन्तिकः।
झण्डावाला, पु. पु. पु. पु.
सहायक अनुप्लवः सहायश्चानुचरोऽभिसरः (समाः) ॥ ७१ ॥

चर्मी (न्), फलकपाणि ये २ ढाल धारनेवाले के नाम हैं। पताकी (न्), वैजयन्तिक ये २ पताका या निशान धारनेवाले के नाम हैं और अनुप्लव, सहाय,

अनुचर, अभिसर ये ४ सहायक या मददगारके नाम हैं। ये चारो समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ ७१ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
अगुआ, धीरे२ पुरोगाग्रेसरप्रष्ठाग्रतःसरपुरःसराः।
पु. पु. पु. पु.
चलनेवाला पुरोगमः पुरोगामी मन्दगामी (तु) मन्थरः ॥ ७२ ॥

पुरोग, अग्रेसर, "अग्रसर" प्रष्ठ, अग्रतःसर, पुरःसर, पुरोगम और पुरोगामी (न्) ये ७ आगे चलनेवाले या अगुआ के नाम हैं और मन्दगामी (न्) मन्थर ये २ धीरे २ चलनेवाले के नाम हैं ॥ ७२ ॥

पु. पु. पु. पु.
जल्द चलनेवाला, हलकारा, जल्दबाज जङ्घालोऽतिजव (स्तुल्यौ[1]) जङ्घाकरिकजाङ्घिकौ।
पु. पु. पु. पु. पु. पु.
तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी जवनो जवः ॥ ७३ ॥

जङ्घाल, "जङ्घिल" अतिजव, "अतिवल" ये २ अतिवेगवाले के नाम हैं। ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं। जङ्घाकरिक, जाङ्घिक ये २ जङ्घा के बल से जीनेवाले (हलकारा) के नाम हैं ये भी दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं और तरस्वी (न्), त्वरित, वेगी (न्), प्रजवी (न्), जवन और जव ये ६ वेगवाले या जल्दबाज़ के नाम हैं ॥ ७३ ॥

पु. पु.
जीतनेशक्य, जीतनेयोग्य, जेतव्यमात्रके जय्यो (यः शक्यते जेतुं) जेयो (जेतव्यमात्रके)।
पु. पु.
जीतनेवाला, सामर्थ्य से शत्रु के सामने जानेवाला पहलवान जैत्र (स्तु) जेता (यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति) ॥ ७४ ॥
पु. पु. पु.
(सो)ऽभ्यमित्र्योऽभ्यमित्रीयोऽप्यभ्यमित्रीण (इत्यपि)।
पु. पु.
ऊर्जस्वलः[2] स्यादूर्जस्वी (य ऊर्जातिशयान्वितः) ॥ ७५ ॥

जो जीतने के लिये शक्य है उसे "जय्य" कहते हैं यह १ जीतने के शक्य का नाम है। जीतने योग्यमात्र में 'जेय' होता है यह १ जीतने के योग्य का नाम है जैसेकि (जेयं मनः) जीतने योग्य मन है। जैत्र, जेता ये २ जीतनेवाले के नाम हैं और जो शत्रुवों की ओर सामर्थ्य से लड़ने को जाता है वह अभ्यमित्र्य, अभ्यमित्रीय और अभ्यमित्रीण कहाता है ये ३ सामर्थ्य से शत्रु के सामने लड़ने

---

१ तुल्याविन्युभयत्रान्वयः ॥ २ ऊर्जशब्दोऽदन्तः सान्तश्च ॥

को जानेवाले के नाम हैं और जो बल की अधिकता से संयुक्त है वह ऊर्जस्वल व ऊर्जस्वी (न्) कहलाता है ये २ पहलवान के नाम हैं और ऊर्जशब्द अदन्त और सान्त है ॥ ७४ । ७५ ॥

चौड़े छाती-वाला रथका स्वामी यथेष्ट-गामी वारं-वारगामी

पु. पु. पु. पु. पु.
(स्यादु) रस्वानुरसिलो रथिरो रथिको रथी ।
पु. पु. पु.
कामंगाम्यनुकामीनो ह्यत्यन्तीन (स्तथा भृशम्) ॥ ७६ ॥

उरस्वान्, उरसिल ये २ बड़ी छातीवाले के नाम हैं । रथिर, रथिक, रथी "रथिन" ये ३ रथस्वामी के नाम हैं । जो अपनी इच्छा से जाता है यानी स्वतन्त्रता से गमन करता है उसे कामंगामी या कामगामी (न्) व 'अनुकामीन' कहते हैं ये २ यथेष्टगमनशील के नाम हैं और जो अत्यन्त गमनशील है वह अत्यन्तीन कहाता है यह १ वारंवार चलनेवाले का नाम है ॥ ७६ ॥

बहादुर, जीतनेवाला रणकुशल

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
शूरो वीरश्च विक्रान्तो जेता जिष्णु (श्च) जित्वरः ।
पु.
सांयुगीनो (रणे साधुः) शस्त्राजीवादय (स्त्रिषु) ॥ ७७ ॥

शूर, वीर और विक्रान्त ये ३ बहादुर (शूरमा) के नाम हैं । जेता, जिष्णु और जित्वर ये ३ जयशील (जीतनेवाले) के नाम हैं । जो रण में साधु है वह 'सांयुगीन' कहाता है । यह १ युद्धकुशल का नाम है और शस्त्राजीव आदि सांयुगीन पर्यन्त शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं यानी वाच्यलिङ्ग कहाते हैं ॥ ७७ ॥

सेना या फ़ौज

स. स. स. स. स. स.
ध्वजिनी वाहिनी सेना पृतनानीकिनी चमूः ।
स. न. न. न. पु.न.
वरूथिनी बलं सैन्यं चक्रं चानीक (मस्त्रियाम्) ॥ ७८ ॥

ध्वजिनी, वाहिनी ' वाहना ' सेना, पृतना " पूतना " अनीकिनी, चमू, वरूथिनी, बल " बल " सैन्य, चक्र और अनीक ये ११ सेना या फ़ौज के नाम हैं इनमें 'अनीक' पुंनपुंसक है ॥ ७८ ॥

क़िला बांधना सेना के विशेषभेद, व्यूह का पीछा सेना का पीछा

पु. पु.
व्यूह (स्तु) बलविन्यासो (भेदा दण्डादयो युधि) ।
पु. पु. पु.
प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिः (सैन्यपृष्ठे) प्रतिग्रहः ॥ ७९ ॥

---

१ मेधारथाभ्यामिरन्निचाविति पठित्वा रथिर इति व्याख्याय रथिन इत्यपपाठ इत्याह स्वामी भाष्योक्तं स्वीकृतवानिति ॥

व्यूह, बलविन्यास ये २ युद्धार्थ रचनाविशेष से फ़ौज के स्थापित करने के या क़िला बांधने के नाम हैं । संग्राम में दण्ड आदि विशेष भेद व्यूह के हैं जैसेकि, सेना का दण्ड के समान टेढ़ा होकर ठहरना 'दण्ड' कहाता है आदि पद से भोग, मण्डल आदिकों का ग्रहण होता है जैसेकि एक के पीछे एक की आवृत्ति होना भोग है, सर्पशरीर के समान टिकना 'मण्डल' है, विजातीयों से विना मिले हाथियों का स्थान 'असंहत' कहाता है इनके भी शकट, मकर, पताका, सर्वतोभद्र, दुर्जय आदि भेद प्रत्येक के हैं यह एक २ फ़ौज के विशेष भेदों का नाम है । प्रत्यासार "प्रत्यासर" व्यूहपार्ष्णि ये २ व्यूह के पृष्ठभाग के नाम हैं और सैन्यपृष्ठ में प्रतिग्रह, परिग्रह या पतद्ग्रह कहाजाता है यह १ सेना के पृष्ठभाग का नाम है अथवा सैन्यपृष्ठ, प्रतिग्रह ये २ फ़ौज के पिछले भाग के नाम हैं ॥ ७६ ॥

स.

सेना विशेष **(एकेभैकरथात्र्यश्वा) पत्तिः (पञ्चपदातिका)।**
(पत्त्यङ्गैस्त्रिगुणैः सर्वैः क्रमादाख्या यथोत्तरम्)॥८०॥

जिस सेना में एक हाथी, एक रथ, तीन घोड़े और पांच प्यादे रहते हों वह 'पत्ति' कहाती है यह १ फ़ौज विशेष का नाम है । समस्त पत्ति के अवयव गज आदिकों के त्रिगुणित होनेसे यथोत्तर क्रमसे सेनामुख आदि संज्ञा होती हैं ॥८०॥

न. पु.न. पु. स. स. स.

सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः।

स. स.

अनीकिनी (दशानीकिन्यो)ऽक्षौहिण्य(थ संपदि) ८१॥

जैसेकि, तीन पत्तियों से १ सेनामुख, तीन सेनामुखों से १ गुल्म, तीन गुल्मों से १ गण, तीन गणों से १ वाहिनी, तीन वाहिनियों से १ पृतना, तीन पृतनासे १ चमू, तीन चमू से १ अनीकिनी होती है यह एक २ सेनाविशेष का नाम है । और दश अनीकिनियों से १ 'अक्षौहिणी' होती है यानी जिसमें २१८७० हाथी २१८७० रथ ६५६१० घोड़े और १०६३५० प्यादे हों उसे एक 'अक्षौहिणी' कहते हैं 'अथ संपदि' इसका अन्वय आगे कहा जावेगा ॥ ८१ ॥

तत्तत्सेनाविशेषे गजादीनां निर्णयाय चक्रमिदम्।

सेना	पत्तिः	सेनामुखम्	गुल्मः	गणः	वाहिनी	पृतना	चमूः	अनीकिनी	अक्षौहिणी
गजाः, रथाः	१	३	९	२७	८१	२४३	७२९	२१८७	२१८७०
अश्वाः	३	९	२७	८१	२४३	७२९	२१८७	६५६१	६५६१०
पदातयः	५	१५	४५	१३५	४०५	१२१५	३६४५	१०९३५	१०९३५०

स. स. स. स. स. स.

संपत्ति, विपत्ति **सम्पत्तिः श्री (श्च) लक्ष्मी (श्च) विपत्तौ विपदापदौ।**

न. न. न. न.

हथियार धनुष **आयुध (न्तु) प्रहरणं शस्त्रमस्त्र (मथास्त्रियौ)॥८२॥**

पु.न. पु.न. न. न. न. न.

राजा कर्ण का **धनुश्चापौ धन्वशरासनकोदण्डकार्मुकम्।**

पु. न.

इष्वासो (ऽप्यथ कर्णस्य) कालपृष्ठं (शरासनम्)॥८३॥

संपत्, " संपद् और संपदा " संपत्ति, श्री, लक्ष्मी ये ४ संपत्ति के नाम हैं। विपत्ति, विपद् " विपदा " आपन् "आपदा, आपत्ति" ये ३ आपत्ति के नाम हैं। आयुध, प्रहरण, शस्त्र, अस्त्र ये ४ शस्त्रमात्र के नाम हैं। धनुः (स्),धनु,धनू,चाप, धन्व, शरासन, कोदण्ड, कार्मुक और इष्वास ये ७ धनुष के नाम हैं। इनमें धनुः, चाप ये २ पुंनपुंसक हैं। और कर्ण के धनुष् को ' कालपृष्ठ' कहते हैं यह १ राजा कर्ण के धनुष का नाम है ॥ ८२ । ८३ ॥

पु.न. पु.न.

अर्जुन का धनुष **(कपिध्वजस्य) गाण्डीवगाण्डिवौ (पुंनपुंसकौ)।**

धनुषका किनारा स. स. स.न. स.न.

दास्ताना **कोटि (रस्या) टनी गोधे तले (ज्याघातवारणे)॥८४॥**

जिसकी ध्वजा में हनुमान् रहते हैं उस अर्जुन के धनुष में गाण्डीव, गाण्डिव ये दो होते हैं ये २ अर्जुनधनुष के नाम हैं ये दोनों पुंनपुंसक हैं। कोटि, " कोटी " अटनी, " अटनि " ये २ इस धनुष की कोटि=(किनारा) के नाम हैं। रोदा की चपेट बचाने में 'गोधा' द्वित्व में ' गोधे ' तला या तलम् द्वित्व में तले ये २ चर्मरचित बाहुबन्धन या दास्तानाविशेष के नाम हैं ये दोनों व्यक्ति के द्वित्व से द्विवचनान्त हैं ॥ ८४ ॥

पु. न. स. स. स. पु.

धनुष का मध्य **लस्तक (स्तु) धनुर्मध्यं मौर्वीज्याशिञ्जिनी गुणः।**

रोदा धन्वियों के न. न.

आसन **(स्यात्)प्रत्यालीढमालीढ(मित्यादिस्थानपञ्चकम्)८५**

लस्तक, धनुर्मध्य ये २ धनुष के मध्यभाग या मूठि के नाम हैं। मौर्वी, ज्या, शिञ्जिनी, गुण ये ४ धनुष की रोदा या चिल्ला या रस्सी के नाम हैं इनमें ' गुण ' पुंलिङ्ग है। प्रत्यालीढ, आलीढ आदि पांच धनुषधारियों की स्थिति के भेद हैं

आदि पद से समपाद, वैशाख और मण्डल इन्होंका ग्रहण कियाजाता है वहां वाम जंघा को फैलाकर दाहिनी जांघ को समेट कर धनुष चलाना 'प्रत्यालीढ' कहाता है, दाहिनी जांघ को फैलाकर बाईं जांघ को समेट कर धनुष चलाना 'आलीढ' पांवों को बराबर कर ठहरना समपद, बारह अङ्गुल के अन्तर पर पैरों को ठहराकर टिकना 'वैशाख' और मण्डल के समान दोनों पैरों को धारना 'मण्डल' कहा जाता है ये ५ धनुर्धारियों के स्थानभेदों के नाम हैं ॥ ८५ ॥

न. न. न. पु. न.

निशाना बाण **लक्षं लक्ष्यं शरव्यं (च) शराभ्यास उपासनम् ।**

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

सीखना बाण **पृषत्कबाणविशिखा अजिह्मगखगाशुगाः ॥ ८६ ॥**

पु. पु. पु. पु. पु. पु.स.

या तीर **कलम्बमार्गणशराः पत्रीरोपइषु (द्वयोः) ।**

लक्ष, लक्ष्य, शरव्य "सरव्य" ये ३ वेध या निशाना के नाम हैं । शराभ्यास, उपासन ये २ बाण चलाने के अभ्यास के नाम हैं और पृषत्क, बाण, विशिख, अजिह्मग, खग, आशुग, कलम्ब "कादम्ब" मार्गण, शर "सर" पत्री (न्), रोप और इषु ये १२ बाण के नाम हैं इनमें (इषु) पुंस्त्रीलिङ्ग में रहता है ॥ ८६ । १/२ ॥

पु. पु. पु. पु.

लोहियाबाण, **प्रक्ष्वेडना (स्तु) नाराचाः पक्षो वाज (स्त्रिषूत्तरे)॥८७॥**

फोंक, फेंकाबाण, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

विषैलेबाण **निरस्तः (प्रहिते बाणे) (विषाक्ते) दिग्धलिप्तकौ ।**

प्रक्ष्वेडन, स्त्री प्रक्ष्वेडना, नाराच ये २ लोहमय बाण के नाम हैं ये दोनों बहुत्व से बहुवचनान्त हैं नित्य बहुवचनान्त नहीं कहाते हैं । पक्ष, वाज ये २ बाण की फोंक के नाम हैं इसके अनन्तर निरस्त आदि लिप्तक पर्यन्त कहे जानेवाले शब्द तीनों लिङ्ग में रहते हैं । फेंके हुए बाण को 'निरस्त' कहते हैं । यह १ चलाये हुए बाण का नाम है और दिग्ध, लिप्तक ये २ विषैले बाण के नाम हैं ॥ ८७ । १/२ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.स.

तरकस **तूणोपासङ्गतूणीरनिषङ्गा इषुधि (द्वयोः) ॥ ८८ ॥**

स. पु. पु. पु. पु. पु.

तलवार **तूण्यां खड्गे (तु) निस्त्रिंशचन्द्रहासासिरिष्टयः ।**

पु. पु. पु. पु.

कौक्षेयको मण्डलाग्रः करपालः कृपाण (वत्) ॥ ८९ ॥

तूण "तूणा" उपासङ्ग "अपासङ्ग" तूणीर, निषङ्ग, इषुधि और तूणी ये ६ तरकस के नाम हैं। इनमें "इषुधि" स्त्रीलिङ्ग व पुंलिङ्ग है। खड्ग, निस्त्रिंश, चन्द्रहास, असि, रिष्टि "ऋष्टि" कौक्षेयक, मण्डलाग्र, करपाल "करवाल" और कृपाण ये ६ तलवार के नाम हैं ये समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं॥ ८८ । ८९ ॥

पु. स.
कब्जा, परतला, त्सरुः(खड्गादिमुष्टौ स्यात्) मेखला (तन्निबन्धनम्)।
पु.न. न. न. पु.
ढाल, हथकड़ा फलको (ऽस्त्री) फलं चर्म संग्राहो (मुष्टिरस्य यः) ॥ ९० ॥

खड्ग आदि की मूठि में 'त्सरु' और 'तरु' भी होता है यह १ तलवार की मूठि या कब्जा का नाम है। आदि पद से कटार व छूरी आदि का ग्रहण किया जाता है। उस खड्ग की मूठि के चर्मनिर्मित बन्धन को 'मेखला' कहते हैं यह १ परतला का नाम है। फलक, फल "फर" चर्म (न्) ये ३ ढाल के नाम हैं। इनमें 'फलक' पुंनपुंसक है और इस फलक की जो मूठि यानी पकड़ने का स्थान है उसे 'संग्राह' कहते हैं यह १ हथकड़ा का नाम है॥ ९० ॥

मुद्गर, एक धारवाली, खड्ग या खांड़ा, पु. पु. पु. स. स.
द्रुघणो मुद्गरघनौ (स्यादी) ली करपालिका।
गोफना, लोहांगी पु. पु. पु. पु.
भिन्दिपालः सृग (स्तुल्यौ) परिघः परिघातनः ॥ ९१ ॥

द्रुघण, "द्रुघन" मुद्गर, घन ये ३ मुद्गर के नाम हैं। ईली, "ईलि, इली, इलि" करपालिका, "करवालिका" ये २ एकधार की बनी छोटी तलवार, खांड़ा या गुप्ती के नाम हैं। भिन्दिपाल, सृग ये २ गोफना या ढेलवांस के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं और परिघ, परिघातन ये २ लोह से बँधी लाठी (लोहांगी) के नाम हैं॥ ९१ ॥

पु.स. पु.स. पु.स. पु.
फरसा या (द्वयोः) कुठारः स्वधितिः परशु (श्च) परश्वधः।
कुल्हारा छूरी स. स. स. स.
या चाकू (स्या) च्छस्त्री (चा) सिपुत्री (च) छुरिका (चा) सिधेनुका ९२

कुठार, स्त्री कुठारी, स्वधिति, परशु, "पर्शु" परश्वध, 'पर्शवध' परस्वध ये ४ फरसा या कुल्हाड़ी के नाम हैं। इनमें कुठार, स्वधिति, परशु ये ३ स्त्रीलिङ्ग व पुंलिङ्ग हैं और 'परश्वध' पुंलिङ्ग है। शस्त्री, असिपुत्री, छुरिका, असिधेनुका ये ४ छूरी या चाकू के नाम हैं॥ ९२ ॥

पु.न. पु. स. पु.न.
बर्छी, गुर्ज, सांग, (वा पुंसि) शल्यं शङ्कु (र्ना) शर्वला तोमरो (ऽस्त्रियाम्) ।
भाला, खड्ग- पु. पु. पु. स. स. स.
दिकों की नोक प्रास (स्तु) कुन्तः कोण (स्तु स्त्रियः) पाल्यश्रिकोटयः ९३

शल्य, शङ्कु ये २ बाण के अग्रभाग, बर्छी, शेल या फर के नाम हैं इनमें 'शल्य' विकल्पता से पुंलिङ्ग है यानी पुंलिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग है और 'शङ्कु' पुंलिङ्ग है । शर्वला, " सर्वला " तोमर ये २ गुर्ज या मथानी के आकार लोहमय अस्त्र विशेष के नाम हैं । प्रास, " प्राश " कुन्त ये २ भाला के नाम हैं अथवा 'प्रास' यह १ सांग का नाम है और 'कुन्त' यह १ भाला का नाम है और कोण, पालि " पाली " अश्रि, " अश्री " " अस्र, " कोटि, " कोटी " ये ४ तलवार आदि की नोक या किनारे के नाम हैं ॥ ९३ ॥

पु. पु. पु.
फ़ौजकी तैयारी सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसंनहनार्थकः ।
या जमाव पु.
शस्त्रपूजन लोहाभिहारो (ऽस्त्रभृतां राज्ञां नीराजनाविधिः) ॥ ९४ ॥

सर्वाभिसार, सर्वौघ, सर्वसंनहनार्थक ये ३ चतुरङ्गिणी सेनासमूह के जमाव के नाम हैं । और अस्त्रधारी राजाओं की महानवमी दशमी में आरती के समय शस्त्र आदि का समर्पण लक्षणरूप जो विधि उसे लोहाभिहार या लोहाभिसार कहते हैं यह १ महानवमी में प्रस्थान से पहले हथियार व वाहन आदि की पूजन विधि का नाम है ॥ ९४ ॥

न.
शत्रु पर च- (यत्सेनयाभिगमनमरौ तद)भिषेणनम् ।
ढाई प्रस्थान स. स. न. न. न. पु.
या पयान यात्रा व्रज्याभिनिर्याणं प्रस्थानं गमनं गमः ॥ ९५ ॥

शत्रु के समीप जो सेना समेत गमन है उसे " अभिषेणन " कहते हैं यह १ शत्रु पर चढ़ाई करने का नाम है और यात्रा, व्रज्या, अभिनिर्याण, प्रस्थान, गमन और गम ये ६ प्रस्थान के नाम हैं ॥ ९५ ॥

फ़ौज का फै- पु. न. न. न.
लाव चलती (स्यादा) सारः प्रसरणं प्रचक्रं चलिता (र्थकम्) ।
फ़ौज भयर- पु.
हित वीर का
जाना (अहितान्प्रत्यभीतस्य रणे यान) मभिक्रमः ॥ ९६ ॥

आसार, प्रसरण, " प्रसरणि, प्रसरणी, प्रसारणी " ये २ सब जगह फैली

हुई सेना के नाम हैं । प्रचक्र, चलित ये २ चलती सेना के नाम हैं और संग्राम में निडर वीर का जो शत्रुवों के सामने गमन है उसे अभिक्रम या अतिक्रम कहते हैं यह १ निश्शङ्क वीर के गमन का नाम है ॥ ९६ ॥

प्रभात जगाने-वाले घड़ि-याली यश-गायक भाट

पु. पु. पु. पु.
वैतालिका बोधकराश्चाक्रिका घाण्टिका (र्थकाः) ।
पु. पु. पु. पु.
(स्यु) र्मागधा (स्तु) मगधा वन्दिनः स्तुतिपाठकाः ॥ ९७ ॥

वैतालिक, बोधकर ये २ प्रातःकाल राजाओं को स्तुतिपाठ आदि से जगाने वालों के नाम हैं । चाक्रिक, ' चक्रिक ' घाण्टिक, " घाटिक " ये २ घण्टा बजाने से स्तुति करनेवालों के नाम हैं । मागध, मगध, " मधुक " ये २ राजाओं के आगे वंशपरम्परा बखाननेवालों के नाम हैं और वन्दी (न्), स्तुतिपाठक ये २ राजा आदि की स्तुति करनेवाले भाट के नाम हैं इनमें बहुत्व से बहुवचन हुआ है ये नित्य बहुवचनान्त नहीं हैं ॥ ९७ ॥

लड़ाई से नहीं भागनेवाला

धूरि या धूलि

पु.
संशप्तका (स्तु समयात्संग्रामादनिवर्तिनः) ।
पु.स. स. पु. न.
रेणु (र्द्वयोः स्त्रियां) धूलिः पांशु (र्ना न द्वयो) रजः ॥ ९८ ॥

जो शपथ (सौगन्द) के कारण संग्राम (लड़ाई) से नहीं भागते हैं उनको ' संशप्तक ' कहते हैं यह १ लड़ाई से नहीं भागनेवाले का नाम है । रेणु, धूलि, " धूली " पांशु या ' पांसु ' और रज (स्) या रज ये ४ धूरि के नाम हैं । इनमें 'रेणु' स्त्री पुंलिङ्ग है, धूलि स्त्रीलिङ्ग है, 'पांशु' पुंलिङ्ग है और सान्त व अदन्त 'रज' स्त्री पुंलिङ्ग नहीं है बरन नपुंसकलिङ्ग कहाता है ॥ ९८ ॥

बड़ी धूलि बड़ी व्याकुल फ़ौज झण्डा या निशाना

पु.न. पु. पु. पु.
(चूर्णे) क्षोदः समुत्पिञ्जपिञ्जलौ (भृशमाकुले) ।
स. स. न. पु.न.
पताका वैजयन्ती स्यात्केतनं ध्वज (मस्त्रियाम्) ॥ ९९ ॥

चूर्ण, क्षोद ये २ गुटैली व कंकड़ियों समेत या पिसी धूलि के नाम हैं अथवा कितेक आचार्यों के मत में ये ६ धूलि के ही नाम हैं । अति आकुलतामें समुत्पिञ्ज, पिञ्जल और "[1] उत्पिञ्जल " ये दोनों होते हैं ये २ अत्यन्त व्याकुल फ़ौज आदि के नाम हैं और पताका, वैजयन्ती, केतन, ध्वज ये ४ पताका, झण्डा या निशाना

१ उत्पिञ्जलश्च । " कुर्वाणमुत्पिञ्जलजातपत्रैः " (इति माघः) इति मुकुटः ॥

के नाम हैं अथवा कितेक आचार्यों के मत में केतन आदि दो पताका दण्ड के नाम हैं इनमें ' ध्वज ' पुंनपुंसक है ॥ ९९ ॥

भयावनी युद्ध-भूमि हम पहले लड़ैंगे (सा) वीराशंसनं (युद्धभूमिर्याऽतिभयप्रदा) ।
स.
(अहं पूर्वमहं पूर्वमित्य) हंपूर्विका (स्त्रियाम्) ॥ १०० ॥

जो युद्धभूमि खण्डित गज आदिकों से महाभयदायक होती है उसे ' वीराशंसन ' कहते हैं यह १ अत्यन्त भयदायक रणभूमि का नाम है और मैं पहले, मैं पहले, मैं आगे होऊं इस हठपूर्वक लड़ाई को 'अहंपूर्विका' कहते हैं यह स्त्रीलिङ्ग में रहता है यह १ मैं पहले, मैं पहले इस प्रकार योधाओं के दौड़ने की क्रिया का नाम है ॥ १०० ॥

हमीं पुरुष हैं या हमीं लड़ैंगे आहोपुरुषिकादर्पाद्या स्यात्संभावनात्मनि ।
आपस में घमंड करना अहमहमिका तु सा स्यात्परस्परं यो भवत्यहंकारः॥१०१॥

अभिमान (घमण्ड) से अपने विषय में जो संभावना या सामर्थ्य का प्रकट करना है वह " आहोपुरुषिका " कहाती है यह १ अपना में सामर्थ्य ज़ाहिर करने का नाम है और जो परस्पर मैं समर्थ हूं मैं समर्थ हूं यह अहंकार होता है उसे ' अहमहमिका ' कहते हैं यह १ आपस में अहंकार करने का नाम है अथवा परस्पर इस कहने को कि हम समर्थ हैं या हमीं लड़सक्ते हैं उसका नामहै॥१०१॥

न. न. न. न. न. न. न.
सामर्थ्य द्रविणं तरःसहोबलशौर्याणि स्थाम शुष्मं (च) ।
स. पु. पु. पु. स.
अतिसामर्थ्य शक्तिः पराक्रमप्राणौ विक्रमस्त्वतिशक्तिता ॥ १०२ ॥

द्रविण, तर (स्) सह (स्) बल, शौर्य, स्थाम (न्) शुष्म या शुष्म (न्) शक्ति, पराक्रम, प्राण ये १० पराक्रम या सामर्थ्य के नाम हैं और विक्रम, अतिशक्तिता ये २ अति पराक्रम या बड़ी सामर्थ्य के नाम हैं ॥ १०२ ॥

न.
नशा करना वीरपाणं (तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे) ।

युद्ध होजाने पर रण के परिश्रम की शान्ति के लिये अथवा होनेवाले रण के उत्साह बढ़ाने के लिये जो वीरों का मद्यपान है उसे 'वीरपाण' या 'वीरपान' कहते हैं यह १ वीरों के नशा करने का नाम है ॥ ३ ॥

न. न. न. न. न.

लड़ाई युद्धमायोधनं जन्यं प्रधनं प्रविदारणम् ॥ १०३ ॥

न. न. न. न. न.

मृधमास्कन्दनं संख्यं समीकं संपरायकम् ।

पु. पु. पु. पु. पु.

(अस्त्रियां) समरानीकरणाः कलहविग्रहौ ॥ १०४ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

संप्रहाराभिसंपातकलिसंस्फोटसंयुगाः ।

पु. पु. पु. पु. पु.

अभ्यामर्दसमाघातसंग्रामाभ्यागमाहवाः ॥ १०५ ॥

पु. स. स. स. स. स.

समुदायः (स्त्रियः) संयत्[2]समित्याजिसमिद्युधः ।

युद्ध, आयोधन, जन्य, प्रधन, प्रविदारण, मृध, आस्कन्दन, संख्य, समीक, सम्परायक " सांपरायिक " समर, अनीक, रण, कलह, विग्रह, संप्रहार, अभिसंपात, कलि, संस्फोट "संस्फेट" संयुग, अभ्यामर्द, समाघात, संग्राम, अभ्यागम, आहव, समुदाय, संयत्, समिति, आजि, " आजी " समित् और युत् (ध्) ये ३१ युद्ध के नाम हैं इनमें युद्ध से लेकर साम्परायिक पर्यन्त नपुंसकलिङ्ग, ' समर ' से लेकर ' समुदाय ' पर्यन्त पुंलिङ्ग और ' संयत् ' से लेकर 'युध्' पर्यन्त स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ १०३ । १०५ । १/२ ॥

न. न. न. न.

बाहुयुद्ध रण व्याकुलता नियुद्धं बाहुयुद्धे (स्यात्तुमुलं) रणसंकुले ॥ १०६ ॥

स. पु. स. स.

सिंहनाद हाथियों का गिरोह वीरों का निन्दापूर्वक पुकारना हाथियों की गर्जना [3]क्ष्वेडा (तु) सिंहनादः (स्यात्करिणां)घटना घटा ।

न. पु. न. न.

क्रन्दनं योधसंरावो बृंहितं करिगर्जितम् ॥ १०७ ॥

नियुद्ध, बाहुयुद्ध ये २ बाहुयुद्ध (बाहांजोटी) के नाम हैं । तुमुल, " तूमूल, तुमुर" रणसंकुल ये २ रण की व्याकुलता या परस्पर संबाधमें वर्तमान के नाम हैं । क्ष्वेडा, सिंहनाद ये २ वीरों के सिंहनाद के समान (गर्जना) के नाम हैं । हाथियों के गिरोह या क़तार में घटना, घटा ये दो होते हैं ये २ हाथियों की क़तार के नाम

---

१ रथयुग इति निर्देशात्–प्रतिजनादिषु गणे संयुगशब्दपाठाद्वा गुणाभावः ॥

२ संयत्पुंस्यपि " खेजिसंयत्यतुलाङ्गगौरवे " (इति दण्डी) ॥

३ क्ष्वेडो ध्वनौ कर्णामये विषे । क्ष्वेडा वंशशलाकायां सिंहनादे च योषिति । लोहितार्कपर्णफले घोषपुष्पे नपुंसकम् । दुरासदे च कुटिले वाच्यलिङ्गः प्रकीर्तितः (इति मेदिनी) ॥

हैं। क्रन्दन, योधसंराव ये २ वीरों के निद्रापूर्वक पुकारने के नाम हैं और बृंहित, करिगर्जित ये २ हाथियों की गर्जना के नाम हैं ॥ १०६ । १०७ ॥

पु. पु. पु.
धनुष्का शब्द, जुझाऊ नगाड़ा, हठ धोखा देना विस्फारो (धनुषः स्वानः) पटहाडम्बरौ (समौ) ।
न. पु. पु. न. न.
प्रसभं (तु) बलात्कारो हठो (ऽथ) स्खलितं छलम् ॥ १०८ ॥

धनुष् का शब्द विस्फार या विष्फार कहाता है यह १ धनुष् के शब्द का नाम है। पटह, आडम्बर ये २ जुझाऊ नगाड़ा (दमदमा) के नाम हैं। ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं। प्रसभ, बलात्कार, हठ ये ३ बलात्कार या हठ के नाम हैं तथा प्रसङ्गवश से "हेठो बाधाविहेठयोः" (इति मेदिनी) इस कोष के प्रमाण से "हेठ" बाधा व विहेठ में जानना चाहिये। और स्खलित, छल ये २ युद्ध मर्यादा से विचलने या धोखा देने के नाम हैं ॥ १०८ ॥

न. पु. पु.
उत्पात मूर्च्छा देशों को उपद्रव पहुँचाना अजन्यं (क्लीबे) उत्पात उपसर्गः (समं त्रयम्) ।
स. न. पु. पु. न.
मूर्च्छा (तु) कश्मलं मोहोऽप्यवमर्द (स्तु) पीडनम् ॥ १०९ ॥

अजन्य, उत्पात, उपसर्ग ये ३ शुभाशुभसूचक महाभूतविकार या उत्पात के नाम हैं इनमें 'अजन्य' नपुंसक है ये तीनों समानार्थक कहाते हैं। मूर्च्छा, कश्मल, मोह ये ३ मूर्च्छा के नाम हैं और अवमर्द, पीडन ये २ सस्य आदि से सम्पन्न देश का जो परचक्र से पीडित करना है उसके या फ़ौज की लतगुंजिया के नाम हैं ॥ १०९ ॥

न. न. पु. पु.
धोखे से दबाना अभ्यवस्कन्दनं (त्व) भ्यासादनं विजयो जयः ।
विजय या फ़तेपाना स. पु. न.
वैर मिट जाना वैरशुद्धिः प्रतीकारो वैरनिर्यातनं (च सा) ॥ ११० ॥

अभ्यवस्कन्दन, अभ्यासादन ये २ छल से जीतने या डाका डालने या प्रहारादिकों से सामर्थ्य विहीन करने के नाम हैं। विजय, जय ये २ शत्रुवों को जीतकर फ़तह पाने के नाम हैं और वैरशुद्धि, प्रतीकार, वैरनिर्यातन ये ३ वैर मिटा देने के नाम हैं इनमें पहला स्त्रीलिङ्ग दूसरा पुंलिङ्ग और तीसरा नपुंसकलिङ्ग है ॥ ११० ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
भागना प्रद्रावोद्द्रावसंद्रावसंदावा विद्रवो द्रवः ।
पु. न. पु.
हारना अपक्रमोपयानं च (रणे भङ्गः) पराजयः ॥ १११ ॥

प्रद्राव, उद्द्राव, सन्द्राव, संद्राव, विद्रव, द्रव, अपक्रम और अपयान ये ८ पलायन यानी भाग जाने के नाम हैं और जो लड़ाई में भङ्ग (भद या हार) होती है उसे 'पराजय' कहते हैं यह १ पराजय का नाम है अथवा "भङ्ग" और "पराजय" ये २ हार के नाम हैं ॥ १११ ॥

पु. पु. पु. पु.

हारा, छिपा **पराजितपराभूतौ (त्रिषु) नष्टतिरोहितौ ।**

पराजित, पराभूत ये २ तिरस्कार को पाये या हारे हुए यानी हरैला के नाम हैं और नष्ट, तिरोहित ये २ छिपे हुए के नाम हैं। यहां "त्रिषु" यह पद काकाक्षिगोलकन्याय से दोनों ओर सम्बन्ध रखता है इसलिये पराजित, पराभूत और नष्ट, तिरोहित ये चारो त्रिलिङ्ग हैं ॥ १/२ ॥

न. न. न. न.

वधना, मारना या क़तल करना **प्रमापणं निर्वर्हणं निकारणं विशारणम् ॥ ११२ ॥**

न. न. न. न.

प्रवासनं परासनं निषूदनं निर्हिंसनम् ।

न. न. न. न.

निर्वासनं संज्ञपनं निर्ग्रन्थनमपासनम् ॥ ११३ ॥

न. न. न. न.

निस्तर्हणं निहननं क्षणनं परिवर्जनम् ।

न. न. न. न.

निर्वापणं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ॥ ११४ ॥

न. न. न. न.

उद्वासनप्रमथनक्रथनोज्जासनानि (च) ।

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

आलम्भपिञ्जविशरघातोन्माथवधा (अपि) ॥ ११५ ॥

प्रमापण, निर्वर्हण, निकारण, विशारण, प्रवासन, परासन, निषूदन, निर्हिंसन, निर्वासन, संज्ञपन, निर्ग्रन्थन "निर्गंथन" अपासन, निस्तर्हण, निहनन, क्षणन, परिवर्जन, निर्वापण, विशसन, मारण, प्रतिघातन, उद्वासन, प्रमथन, क्रथन, उज्जासन, आलम्भ, पिञ्ज, विशर, घात, उन्माथ "उन्मन्थ" और वध ये ३० मारने या क़तल करने के नाम हैं ॥११२।११५॥

स. पु. पु. पु. पु.

मृत्यु या मौत **(स्यात्) पञ्चता कालधर्मो दिष्टान्तः प्रलयोऽत्ययः ।**

पु. पु. पु.स. न. पु.न.

अन्तो नाशो (द्वयो) मृत्युर्मरणं निधनो (ऽस्त्रियाम्) ॥ ११६ ॥

पञ्चता, "पञ्चत्व" कालधर्म, दिष्टान्त, प्रलय, अत्यय, अन्त, नाश, मृत्यु, मरण और निधन ये १० मरण या मौत के नाम हैं। इनमें 'मृत्यु' स्त्री पुंलिङ्ग और 'निधन' पुंनपुंसकलिङ्ग है ॥ ११६ ॥

पु.स.न.　पु.स.न.　पु.स.न. पु.स.न.　पु.स.न.

मुर्दा　**परासुप्राप्तपञ्चत्वपरेतप्रेतसंस्थिताः ।**

पु.स.न. पु.स.न.　　स.　स　स.

चिता　**मृतप्रमीतौ(त्रिष्वेते)चिता चित्या चितिः(स्त्रियाम्)११७**

परासु, प्राप्तपञ्चत्व, परेत, प्रेत, संस्थित, मृत और प्रमीत ये ७ मृतक या मुर्दे के नाम हैं। ये सातो त्रिलिङ्ग हैं यानी वाच्यलिङ्ग कहाते हैं और चिता, चित्या, चिति ये ३ चिता या प्रेतदाहाधार के नाम हैं ये तीनों स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ ११७ ॥

पु.न.

मूंड़कटा　**कबन्धो(ऽस्त्री क्रियायुक्तमपमूर्धकलेवरम्) ।**[1]

श्मशान

निर्जीव या　न.　　न.　पु.　पु.न.

लाश　**श्मशानं(स्या)त्पितृवनं कुणपः शव(मस्त्रियाम्)॥११८॥**

नाचता हुआ मस्तक विहीन जो शरीर "धड़" है वह 'कबन्ध' कहाता है यह १ बिना मूंड़वाले (मुंड़कटे) का नाम है। यह पुंनपुंसकलिङ्ग है। श्मशान, पितृवन "पितृकानन, पितृवसति" ये २ परेतभूमि यानी जिस भूमि में मुर्दे फूंके या गाड़ेजाते हैं उसके नाम हैं और कुणप, शव ये २ निर्जीव शरीर (लाश) के नाम हैं। इनमें 'कुणप' पुंलिङ्ग और 'शव' पुंनपुंसक है ॥ ११८ ॥

पु.　पु.　स.　स.　　पु.

क़ैदी, जेल-　**प्रग्रहोपग्रहौ वन्द्यां कारा(स्याद्बन्धनालये) ।**

ख़ाना,　　पु.　पु.　पु.　न.

प्राण, प्राणी　**(पुंसि भूम्न्य)सवः प्राणा(श्चैवं)जीवोऽसुधारणम्॥११९॥**

प्रग्रह, उपग्रह, वन्दी "बन्दि" ये ३ बँधुवा या क़ैदी के नाम हैं। कारा, बन्धनालय ये २ बन्दीख़ाना या जेलख़ाना के नाम हैं। असु, प्राण ये २ प्राणों के नाम हैं। ये दोनों पुंलिङ्ग होकर बहुवचनान्त हैं यानी जहां पञ्चवायुवों की विवक्षा है वहां ही "असवः, प्राणाः" ये नित्य बहुवचनान्त रहते हैं अन्यत्र "असुः, प्राणः" एकवचनान्त भी होते हैं और जीव, असुधारण ये २ प्राणधारण के नाम हैं इन में 'जीव' पुंलिङ्ग और 'असुधारण' नपुंसकलिङ्ग है ॥ ११९ ॥

---

१. "को ब्रह्मणि समीरात्मयमदक्षेषु भास्करे। मयूराग्नौ च पुंसि स्यात्सुखशीर्षजलेषु कम्" (इति मेदिनी)॥

न. पु. पु.न. न.

जीवनोपाय **आयुर्जीवितकालो (ना) जीवातुर्जीवनौषधम् ॥ १२० ॥**

इति क्षत्रियवर्गः ॥

आयु (स्) जीवितकाल ये २ आयुर्दाय या उमर के नाम हैं और जीवातु, जीवनौषध ये २ मृतसंजीवनौषध के नाम हैं । इनमें ' जीवातु ' पुंलिङ्ग है परन्तु "अन्न,जीवितकाल, जीवनौषध इन अर्थों में वर्तमान 'जीवातु' पुंनपुंसकलिङ्ग है " इस मेदिनीकोष के प्रमाण से नपुंसक भी पाया जाता है ॥ १२० ॥

इति क्षत्रियवर्गविवरणम् ॥

अथ वैश्यवर्गो व्याख्यायते ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

वैश्य **ऊरव्या ऊरुजा अर्या वैश्या भूमिस्पृशो विशः ।**

पु. पु. स. स. न. न.

जीविका **आजीवो जीविका वार्ता वृत्तिर्वर्तनजीवने ॥ १ ॥**

ऊरव्य, ऊरुज, अर्य, वैश्य, भूमिस्पृक् (श्) विट् (श्) ये ६ वैश्य (बनियां) के नाम हैं । ये बहुत्व से बहुवचनान्त हैं और आजीव, जीविका, वार्ता, वृत्ति, वर्तन, जीवन ये ६ जीवनोपाय यानी जीविकामात्र के नाम हैं ॥ १ ॥

वैश्यों की स. न. न.

जीविका **(स्त्रियां) कृषिः पाशुपाल्यं वाणिज्यं (चेति वृत्तयः) ।**

नौकरी खेती स. स. न. स. पु. न. न.

सीला बिनना **सेवा श्ववृत्तिरनृतं कृषिरुञ्छशिलं (त्वृ) तम् ॥ २ ॥**

कृषि, पाशुपाल्य, वाणिज्य 'वणिज्या' ये ३ वैश्योंकी वृत्तियां हैं यानी (कृषि) खेती करना (पाशुपाल्य) गौ आदि पशुवों की पालना करना (वाणिज्य) खरीदना, बेंचना आदि ये ३ बनियों की जीविका के भेद कहाते हैं यह प्रत्येक जीवनोपाय का एक२ नामहै । इनमें 'कृषि' स्त्रीलिङ्ग है "अथ मृतामृताभ्यां जीवेत मृतेन प्रमृतेन वा । सत्यानृताभ्यामपिवा न श्ववृत्त्या कथंचन" इत्यादि श्रुतियोंमें कहेहुए वृत्तिभेदों को कहते हैं-सेवा, श्ववृत्ति ये २ पराये चित्त के अनुवर्तन करने के नाम हैं अथवा (श्ववृत्तिर्नीचसेवनम्) इस भागवत के प्रमाण से पराधीनी=(नौकरी चाकरी) के नाम हैं । अनृत, कृषि ये २ खेती करने के नाम हैं और उञ्छ, शिल,

---

१ " भूमिस्पृक् पुंसि मानववैश्ययोः " (इति मेदिनी) ॥

२ " शुनो वृत्तिः स्मृता सेवा गर्हितं तद्द्विजन्मनाम् । हिंसादोषप्रधानत्वादनृतं कृषिरुच्यते " इति ॥

ऋत ये ३ सीला बीनने के नाम हैं यानी बाज़ार आदि में बिथरे हुए कणों को लेना उञ्छ और खेतों में खेतिहरों के गिरायेहुए कणों को बीनलेना शिल (सीला) कहाता है इन दोनों को 'ऋत' कहते हैं उसीसे ऋतमुञ्छशिलं स्मृतम् " यह मनु जीका वचन संगत होता है इनमें 'उञ्छ' पुंलिङ्ग और शिल, ऋत ये दोनों नपुंसक हैं ॥ २ ॥

मांगने व बिना मांगने पै मिले — न. न. (द्वे याचितायाचितयोर्यथासंख्यं) मृतामृते।

बनियई — न. पु. न. न. सत्यानृतं वणिग्भावः (स्याद्) ऋणं पर्युदञ्चनम् ॥ ३ ॥

उधार लेना, ब्याज — पु. पु. न. स्त्री. उद्धारोऽर्थप्रयोग (स्तु) कुसीदं वृद्धिजीविका।

मांगनेसे मिला, वादे से मिला — न. न. (याच्ञयाप्तं) याचितकं (निमयाद)आपमित्यकम् ॥ ४ ॥

प्रार्थना करने पर जो मिला है उसे 'मृत' कहते हैं यह १ मांगने से मिले हुए का नाम है और जो नहीं प्रार्थना करने पर मिला है वह 'अमृत' कहाता है यह १ बिना मांगने से मिले हुए का नाम है। सत्यानृत, वणिग्भाव ये २ बनियई के नाम हैं। ऋण, पर्युदञ्चन, उद्धार ये ३ उधार (क़र्ज़) लेने के नाम हैं। अर्थ-प्रयोग, कुसीद "कुशीद, कुषीद" वृद्धिजीविका ये ३ ब्याज के नाम हैं और जो मांगने से मिल गया है वह 'याचितक' कहाता है यह १ मांगने से मिलने का नाम है और जो निमय यानी विनिमय "वादे" से लब्ध हुआ है उसे "आपमित्यक" कहते हैं यह १ वादे पर मिले हुए का नाम है ॥ ३। ४ ॥

महाजन, क़र्ज़ी — पु. पु. उत्तमर्णाधमर्णौ (द्वौ प्रयोक्तृग्राहकौ क्रमात्)।

ब्याजखोर — पु. पु. पु. पु. कुसीदिको वार्धुषिको वृद्ध्याजीवश्च वार्धुषिः ॥ ५ ॥

क़र्ज़े का देनेवाला व लेनेवाला ये दोनों क्रम से 'उत्तमर्ण' व 'अधमर्ण' कहाते हैं यानी 'उत्तमर्ण' यह १ ऋणदाता महाजन का नाम है और 'अधमर्ण' यह १ ऋणग्रहीता (क़र्ज़ी) का नाम है और कुसीदिक, वार्धुषिक, वृद्ध्याजीव, वार्धुषि और (वार्धुषी) इन्नन्त भी है उसीसे "श्रोत्रियस्य कदर्यस्य वदान्यापि वार्धुषी" यह स्वामीजी का कहा हुआ वचन संगत होता है ये ४ क़र्ज़ा देकर क़र्ज़े की बढ़ती से जो जीते हैं उनके या ब्याजखोर के नाम हैं ॥ ५ ॥

पु. पु. पु. पु.
किसान क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषक(श्च) कृषीवलः ।
सामान्य धान्य धान का क्षेत पु.स.न. पु.स.न.
(क्षेत्रं) व्रैहेयशालेयं (व्रीहिशाल्युद्भवोचितम्) ॥ ६ ॥

क्षेत्राजीव, कर्षक, कृषक, " कार्षक या कृषिक " कृषीवल ये ४ खेतीवालों (खेतिहरों) के नाम हैं । धान्यमात्र की उत्पत्ति के योग्य खेत को वा धानों की उत्पत्ति योग्य खेत को " व्रैहेय " कहते हैं यह १ सामान्य धान्य के उपजने योग्य खेत का नाम है और शाली धानविशेष की उत्पत्ति योग्य खेतको " शालेय " कहते हैं यह १ कलमादि धानों की उत्पत्ति योग्य खेत का नाम है ॥ ६ ॥

जव,सीकुररहित पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
जव और साठीयव्यं यवक्यं षाष्टिक्यं (यवादिभवनं हि यत्) ।
का तिल, उड़द, पु.स.न. पु.स.न.
अलसी, अणुवा, भांगका तिल्यतैलीन(वन्माषोमाणुभङ्गाद् द्विरूपता) ॥ ७ ॥

यव (जौ) आदि की उत्पत्ति योग्य जो खेत है उसे 'यव्यादि' कहते हैं जैसे कि, ' यव्य ' यह १ यव होनेवाले खेत का नाम है । ' यवक्य ' यह १ (शूकहीन=सीकुररहित) छोटे यव होनेवाले का नाम है । ' षष्टिक्य ' यह १ साठी उपजनेवाले का नाम है । तिल्य और तैलीन के समान माष, उमा, अणु और भङ्ग इन शब्दों से खेत की विषयता में द्विरूपता होती है जैसेकि, तिल्य, तैलीन ये २ तिल होनेवाले के नाम हैं । माष्य, माषीण ये २ उड़द के उपजनेवाले के नाम हैं । उम्य, औमीन ये २ अलसी होनेवाले के नाम हैं । अणव्य, आणवीन ये अणुवा (धान्यविशेष) होनेवाले के नाम हैं और भङ्ग्य, भाङ्गीन ये २ भांगवाले खेत के नाम हैं ॥ ७ ॥

मूंग,कोदों,गेहूं, पु.स.न. पु.स.न.
क्यराव,कुल्थी, ककुनी,चना मौद्गीनकौद्रवीणा (दि शेषधान्योद्भवक्षमम्) ।
आदि शाक व पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
तरकारी बोकर छुतेखेत,जुतेखेत बीजाकृतं तूसकृष्टं सीत्यं कृष्टं (च) हल्य(वत्)॥ ८ ॥

व्रीहि आदि कहे हुए से शेष मूंग आदि धान्यों की उत्पत्ति योग्य खेतों को मौद्गीन आदि कहते हैं जैसेकि मूंग होनेवाले खेत को ' मौद्गीन ' कहते हैं यह १ मूंग उपजनेवाले खेत का नाम है । ' कौद्रवीण ' यह १ कोदव होनेवाले का नाम है । आदि शब्द से ' गौधूमीन ' यह १ गेहूं उपजनेवाले का नाम है । "काला-

१ अबीजं सबीजं संपन्नं बीजाकृतमिति स्वामी तत्र " अभूततद्भावे " इत्यस्यानुवृत्तेः ॥

यीन" यह १ मटर या मटरी होनेवाले का नाम है। 'कौलत्थीन' यह १ कुलथी होनेवाले का नाम है। 'प्रैयङ्गवीण' यह १ काकुनि होनेवाले का नाम है। और 'चाणकीन' यह १ चना होनेवाले का नाम है ऐसे ही और भी जानो- और "शाकक्षेत्रादिके शाकशाकटं शाकशाकिनम्" इस क्षेपक के प्रमाण से शाक, शाकट, शाकशाकिन, "शाकशाकीन" या शाकशाकट, शाकशाकिन ये २ शाक (साग) क्षेत्र आदि के नाम हैं। बीजाकृत, उप्तकृष्ट ये २ बोकर जुते हुए खेत के नाम हैं और सीत्य "शीत्य" कृष्ट, हल्य ये ३ हल से जुते हुए खेत के नाम हैं ॥ ८ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

तीनबार जुते खेत **त्रिगुणाकृतंतृतीयाकृतंत्रिहल्यंत्रिसीत्य(मपितस्मिन्)**

पु.स.न. पु.स.न.

दोबार जुते खेत **द्विगुणाकृते(तु तत्सर्वं द्विपूर्वं)शम्बाकृत(मपीह)** ॥ ९ ॥

त्रिगुणाकृत, तृतीयाकृत, त्रिहल्य, त्रिसीत्य ये ४ तीनबार जुते हुए खेत के नाम हैं और उस दो वार जुते हुए खेत में वह पूर्व कहा हुआ सम्पूर्ण 'द्विपूर्व' होता है जैसेकि, द्विगुणाकृत, द्वितीयाकृत, द्विहल्य, द्विसीत्य और यहां दो वार जुते हुए खेत में 'शम्बाकृत' या 'सम्बाकृत' भी नाम है शम्ब शब्द दो वार जोते खेत में वर्तमान रहता है ये ५ दो वार जुते हुए खेत के नाम हैं ॥ ९ ॥

द्रोण, आढक, पु.स.न. पु.स.न.

प्रस्थ, कुडव व **(द्रोणाढकादिवापादौ) द्रौणिकाढकिका (दयः)।**

खारीभर बोये पु.स.न.

जानेवाले खेत **(खारीवापस्तु) खारीक (उत्तमर्णादयस्त्रिषु)** ॥ १० ॥

द्रोण, आढक आदि परिमित धान्य के बोने आदि में द्रौणिक, आढकिक आदि होते हैं जैसेकि, "द्रौणिक" यह १ जिसमें द्रोणभर बोया जावे उस खेत का नाम है। 'आढकिक' यह १ आढकभरवाले का नाम है। आदि शब्द से "प्रास्थिक" यह १ प्रस्थभर बोये जानेवाले का नाम है। "कौडविक" यह १ कुडवभर बोये जानेवाले का नाम है। "वापादौ" यहां आदि पद से पचादिका ग्रहण होता है उसीसे द्रोणभर पकाते हैं जिसमें उसे द्रौणिक या द्रौणीन कहते हैं ये २ बटलोही व कड़ाह आदि के नाम हैं" इत्यादि जानना चाहिये और जिसमें खारी परिमित धान्य बोया जाता है उसे 'खारीक' कहते हैं यह १ खारीभर बोये जानेवाले का नाम है और 'उत्तमर्ण' आदि खारी पर्यन्त पढ़े हुए शब्द तीनों लिङ्गों में रहते हैं यानी वाच्यलिङ्ग होते हैं ॥ १० ॥

१ "शरावाभ्यां भवेत्प्रस्थश्चतुःप्रस्थैस्तथाढकः। चतुराढको भवेद्द्रोणः खारी द्रोणचतुष्टयम्। कुडवोऽर्द्धशरावकः"। (इति शार्ङ्गधरभावप्रकाशौ) ॥

पु. पु. न.

खेत (पुंनपुंसकयो) र्वप्रः केदारः क्षेत्र (मस्य तु)।

न. न. न. न.

खेतों के समूह कैदारकं (स्या) त्कैदार्यं क्षैत्रं कैदारिकं (गणे) ॥ ११ ॥

वप्र, केदार, क्षेत्र ये ३ खेत के नाम हैं इनमें 'वप्र' पुंनपुंसक, केदार पुंलिङ्ग और 'क्षेत्र' नपुंसक है। इस क्षेत्र के समूह अर्थ में केदारक, कैदार्य, क्षैत्र और कैदारिक ये होते हैं ये ४ खेतसमूह के नाम हैं ॥ ११ ॥

ढेला पु.न. पु. पु. पु.

सरावनि लोष्टानि लेष्टवः (पुंसि) कोटिशो लोष्टभेदनः।

चाबुक खन्ता न. न. न. न. न.

या कुदार प्राजनं तोदनं तोत्रं खनित्रमवदारणम् ॥ १२ ॥

लोष्ट, लेष्टु ये २ मिट्टी के ढेला के नाम हैं। इनमें 'लोष्ट' पुंनपुंसक है एकत्व में लोष्टः, लोष्टम् द्वित्व में लोष्टौ, लोष्टे और बहुत्व में लोष्टाः, लोष्टानि ये होते हैं और लेष्टु पुंलिङ्ग में रहता है एकत्व में लेष्टुः, द्वित्व में लेष्टू और बहुत्व में लेष्टवः होते हैं ये बहुत्व से बहुवचनान्त हैं। कोटिश, "कोटीश" लोष्टभेदन, "लोष्टघ्न, लेष्टुघ्न" ये २ ढेला के तोड़नेवाले मुग्दर या सरावनि हेंगा, पटेला तथा मई के नाम हैं। प्राजन, "प्रवयण" तोदन, तोत्र "तोत्र," ये ३ बैल आदि के मारने के उपयोगी पयना या चाबुक के नाम हैं और खनित्र, अवदारण ये २ खन्ता या कुदार आदि के नाम हैं ॥ १२ ॥

न. न. न. न. न. न.

हँसिया, दात्रं लवित्रमाबन्धो योत्रं योक्त्र (मथो) फलम्।

जोत, न. न. पु. पु. न. न.

फार, निरीशं कुटकं फालः कृषिको लाङ्गलं हलम् ॥ १३ ॥

हर, न. पु. स. पु.

सैला गोदारणं (च) सीरो (ऽथ) सम्या (स्त्री) युगकीलकः।

दात्र, लवित्र ये २ हँसिया या "दांती" के नाम हैं। आबन्ध, योत्र, योक्त्र ये ३ जुवा बांधने की रस्सी जरड़ायल या जोत के नाम हैं। फल, निरीश "निरीष" कुटक "कूटक" फाल, कृषिक "कृषक" स्त्री "कृषका" ये ५ हल के नीचे स्थित काष्ठ में जिसका अग्रभाग लोह से बांधा जाता है उसके या फार के नाम हैं अथवा फल, निरीष, कुटक ये ३ जिस काष्ठ में फार बांधाजाता है उसके नाम हैं और फाल, कृषिक ये २ फार के नाम हैं यह स्वामी का मत है और लाङ्गल,

१ गद्यक्ष्यम् "तोत्रवेत्रैकपाणये" इति ॥

हल "हाल" गोदारणा, सीर "शीर" ये ४ हल के नाम हैं और शम्या, युगकीलक ये २ सैला या संबल के नाम हैं॥ १३। १/२॥

हरस स. पु. स. स.

कूंड़ **ईशा लाङ्गलदण्डः(स्यात्)सीता लाङ्गलपद्धतिः॥१४॥**

मेढ़ी **(पुंसि) मेधिः (खले दारु न्यस्तं यत्पशुबन्धने)।**

साठी पु. पु. पु.

जव **आशुर्व्रीहिःपाटलः(स्यात्)सितशूकयवौ (समौ) ॥१५॥**

ईशा "ईषा" लाङ्गलदण्ड ये २ हलदण्ड या हरस के नाम हैं। सीता "शीता" लाङ्गलपद्धति ये २ हलरचित रेखा या कूंड़ के नाम हैं। खलिहान में बैल आदि बांधने के लिये जो काठ गाड़ा जाता है उसे 'मेधि' या 'मेथि' कहते हैं यह १ मेढ़ी का नाम है यानी खलिहान में अनाज माड़ने के लिये जो लकड़ी गाड़ते हैं उसका नाम है। आशु, व्रीहि, पाटल "पाटलि" ये ३ सामान्य धान्य या साठी के नाम हैं अथवा (आशुनामा) व्रीहिः पाटल उच्यते इति नामद्वयम्" इस सुभूति के मत में आशुव्रीहि, पाटल ये २ साठी के नाम हैं इनमें 'आशु' पुंनपुंसक है और व्रीहि व पाटल ये दोनों पुंलिङ्ग हैं और सितशूक "शितशूक" यव ये २ जव के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं॥ १४। १५॥

हरा जव पु. पु. पु.

मटर या मटरा **तोक्मस्तु (तत्र हरिते) कलायं (स्तु) सतीनकः।**

पु. पु. पु. पु.

कोदव **हरेणुखण्डिकौ (चास्मिन्)कोरदूष (स्तु) कोद्रवः॥१६॥**

इस हरे जवको 'तोक्म' कहते हैं यह १ हरे विना टूंड़वाले जव का नाम है। कलाय, सतीनक, "सातीनक" या "सतील–सतीलक" हरेणु, खण्डिक ये ४ मटर या क्यराव के नाम हैं और "त्रिपुट, खण्डिक" ये २ खेसारी या दुबिया के नाम हैं और "कुलत्थिका कुलत्थश्च" इस प्रमाण से "कुलत्थिका, कुलत्थ, कुल्माष" ये ३ कुल्थी के नाम हैं। कोरदूष, कोद्रव ये २ कोदव के नाम हैं॥ १६॥

पु. पु. पु. पु.

मसूर मोठ **मङ्गल्यको मसूरो (ऽथ) मकुष्ठकमयुष्टकौ।**

या वनमूंग पु. पु. पु. पु.

सरसों **वनमुद्गे सर्षपे (तु द्वौ) तन्तुभकदम्बकौ॥ १७॥**

१ "कलायो वर्तुलः प्रोक्तः सतिलश्च हरेणुकः। त्रिपुटः खण्डिकोऽपि स्यादिति" (भावप्रकाशः)॥

मङ्गल्यक, मसूर या मसुर स्त्री " मसूरा , मसुरा " ये २ मसूर के नाम हैं। कुष्ठक, " मकुष्ठ—मुकुष्ठ—मुकुष्ठक " मयुष्ठक, ' मयुष्टक ' "मपष्ठक, मपष्टक" वनमुद्ग ये ३ वनमूंग, मोथी या मोठ के नाम हैं और सर्षप, ' सरिषप' तन्तुभ "तुन्तुभ" कदम्बक " कटु,स्नेह " ये ३ सरसों के नाम हैं ॥ १७ ॥

सफ़ेद सरसों, गेहूं — पु. सिद्धार्थ (स्त्वेष धवलो) पु. गोधूमः पु. सुमनः (समौ)।

कुल्थी, चना — (स्या) पु. यावक (स्तु) पु. कुल्माष[1] पु. श्चणको[2] पु. हरिमन्थकः॥१८॥

यदि यह सरसों सफ़ेद हो तो 'सिद्धार्थ' कहाजाता है। यह १ सफ़ेद सरसों का नाम है। गोधूम, सुमन, " सुमनाः " (स्त्री) ये २ गेहूं के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं। यावक, कुल्मास " कुल्माष " ये २ अधपके तथा गदराये हुए जव आदि के नाम हैं और चणक, हरिमन्थक सकलप्रिय ये २ चना के नाम हैं ॥ १८ ॥

बांझतिल, — (द्वौ तिले) पु. तिलपेज (श्च) पु. तिलपिञ्जश्च (निष्फले)।

राई — पु. क्षवः पु. क्षुधाभिजननो स. राजिका स. कृष्णिका स. सुरी॥ १९ ॥

तैलरहित तिल में तिलपेज, तिलपिञ्ज ये दो होते हैं यानी तिलपेज, तिलपिञ्ज और ' अतिल ' भी ये २ तैलहीन बांझ तिल के नाम हैं। क्षव, क्षुधाभिजन या " क्षुताभिजन " राजिका, कृष्णिका, आसुरी या " असुरी " ये ५ राई के नाम हैं ॥ १९ ॥

ककुनी, अलसी, भांग या पटुवा सामा, चीना, मेड़वा — (स्त्रियौ) स. कङ्गु स. प्रियङ्गू (द्वे) स. अतसी (स्या) स. दुमा स. क्षुमा।

स. मातुलानी (तु) भङ्गायां (व्रीहिभेद) पु. स्त्वणुः (पुमान्) पु. ॥२०॥

कङ्गु, या " कङ्गू " प्रियङ्गु या " प्रियङ्गू " ये २ ककुनी के नाम हैं। ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं। अतसी, उमा, क्षुमा ये ३ अलसी के नाम हैं। मातुलानी, भङ्गा ये २ शण धान्य भांग या पटुवा के नाम हैं अथवा जिसके सन से भंगरा नाम टाट बनता है उसके नाम हैं और व्रीहिविशेष ' अणु ' यह पुंलिङ्ग है यह १ चिनवां या जेठऊ सामा का नाम है। परन्तु वैद्यक ग्रन्थों में " (चीनाकः कङ्गुभेदोऽस्ति स ज्ञेयः कङ्गुवद्गुणः। श्यामाकः शोषणो रूक्षो वातलः कफपित्तहृत्)" यह कहा है ॥ २० ॥

---

१ कुल्माषोऽर्धस्विन्नो यवादिरिति स्वामी—शकशल्यो यवादिरिति रक्षितादयः ॥

२ " चणको हरिमन्थः स्यात्सकलप्रिय इत्यपि " (इति भावप्रकाशः) ॥

पु.　पु.न.　पु.न.　स.
सीकुर या टूंड़ **किंशारुः शस्यशूकं (स्यात्) कणिशं शस्यमञ्जरी।**
बाली सामान्य　न.　पु.　पु.　पु.　पु.
धान्य गुच्छा. **धान्यंव्रीहिः स्तम्बकरिः स्तम्बोगुच्छ(स्तृणादिनः)॥२१॥**

किंशारु, शस्यशूक ये २ यवादिकों के अग्रभाग="दाढ़ी" या "सीकुर" के नाम हैं। इनमें पहिला पुंलिङ्ग व दूसरा पुंनपुंसक है। कणिश, शस्यमञ्जरी ये २ धान्यों के नये निकले शीश या बाली के नाम हैं। धान्य, व्रीहि, स्तम्बकरि ये ३ सामान्यधान्य यानी व्रीहि, यव आदि के नाम हैं और तृण, यव आदि के गुच्छे को यानी नाल आदि समूह को स्तम्ब, गुच्छ या 'गुत्स' कहते हैं ये २ यव आदिकी मूल या (गुच्छे) के नाम हैं॥ २१ ॥

स.　न.　पु.　पु.न.
नरई, पयार **नाडी नालं (च) काण्डो (ऽस्य) पलालो (ऽस्त्री सनिष्फलः)।**
पु.　न.　पु.
भूसा भूसी **कडङ्गरो बुसं (क्लीबे) (धान्यत्वचि) तुषः (पुमान्)॥२२॥**

इस गुच्छे का जो काण्ड है उसे नाडी "नाली" नाल "नाड" और काण्ड कहते हैं ये ३ नरई के नाम हैं। यदि वह काण्ड निष्फल हो तो 'पलाल' कहाता है यह १ पयार का नाम है यह पुंनपुंसक है। कडङ्गर, बुस या "बुष" ये २ भूसा के नाम हैं। इनमें 'बुस' नपुंसक है और धान्यत्वक् (चू) तुष ये २ भूसी के नाम हैं इनमें "तुष" पुंलिङ्ग है अथवा धान्यों की फुकली बकली या छिकली आदि में "तुष" पुंलिङ्ग होता है यह १ भूसी का नाम है॥ २२ ॥

पु.न.　स.　स.
सीकुर छीमी **शूको (ऽस्त्रीश्लक्ष्णतीक्ष्णाग्रे) शमी सिम्बा (त्रिषूत्तरे)।**
पु.स.न.　पु.स.न.　पु.स.न.
ढेर बसाया **ऋद्धमावसितं (धान्यं) पूतं (तु) बहुलीकृतम्॥ २३ ॥**

पतला, चिकना व तीखा जो यव आदिका अग्रभाग है उसे 'शूक' कहते हैं अथवा शूक, श्लक्ष्णतीक्ष्णाग्र ये २ सीकुर या अनाजकी दाढ़ी के नाम हैं इनमें 'शूक' पुंनपुंसक है। शमी, शिम्बा, "सिम्बा" "शिमि, शिम्बि" ये २ छीमी, छियां, कोंसी या फलिया के नाम हैं इसके अनन्तर ऋद्ध आदि बहुलीकृत पर्यन्त शब्द त्रिलिङ्ग हैं यानी वाच्यलिङ्ग कहाते हैं। ऋद्ध, "रिद्ध" आवसित, "अवसित"

१ धान्यपदेन सप्तदश धान्यान्युच्यन्ते। "व्रीहि, यव, मसूर, गोधूम, मुद्ग, माष, तिल, चणक, अणु, प्रियङ्गु, कोद्रव, मकुष्ठक, कलाय, कुलत्थ, षष्टिक, सर्षप, अतसीति सप्तदश" महाभाष्ये "विभाषा तिलमाषोमाभङ्गाणुभ्यः" इति सूत्रे तु "शणसप्तदशानि धान्यानीत्युक्तम्"॥

२ किंशारोरन्यः शूको निर्दिष्टः, शूकधान्यशमीधान्यभेदार्थं वा पुनरुक्तः॥

ये २ तृण दूर किये हुए पके दायें धान्य ढेर के नाम हैं और पूत, बहुलीकृत ये २ बसाई हुई साफ़ धान्यराशि के नाम हैं ॥ २३ ॥

न. न.
शमीधान्य (माषादयः) शमीधान्ये शूकधान्ये (यवादयः) ।
शूकधान्य पु.
शालिधान्य शालयः (कलमाद्याश्च षष्टिकाद्याश्च) पुंस्यमी ॥ २४॥

उड़द, मूंग, लोबिया, कुलथी, चना आदि 'शमीधान्य' कहाते हैं यह १ शमीधान्य का नाम है । यव, गेहूं आदि 'शूकधान्य' कहलाते हैं यह १ शूकधान्य का नाम है और जड़हन तथा साठी आदि 'शालिधान्य' कहे जाते हैं यह १ शालिधान्य का नाम है ये माष आदि धान्य पुंलिङ्ग में वर्तमान रहते हैं ॥ २४ ॥

तिन्नी, पसाही न. पु. स. स.
या मुनियों का अन्न, गोहुवां तृणधान्यानि नीवाराः (स्त्री) गवेधुर्गवेधुका ।

तृणधान्य, नीवार ये २ जंगली धान या तिन्नी–पसाही के नाम हैं । बहुवचन से सामा या चेनवां आदिकों का ग्रहण किया जाता है इनका विशेष विस्तार भावप्रकाश में भी किया है जैसेकि, "शालिधान्य, व्रीहिधान्य, शूकधान्य, शिम्बीधान्य और क्षुद्रधान्य (तृणधान्य) ये ५ धान्य कहाते हैं तहां लाल चावल आदि शालिधान्य है, साठी आदि व्रीहिधान्य, यवआदि शूकधान्य, मूंग आदि शिम्बीधान्य और कङ्गुआदि क्षुद्रधान्य कहाते हैं और गवेधु, गवेधुका, "गवेडु" ये २ गरहेडुवा, गोहुवां या सेहुवां के नाम हैं अब यहां प्रसङ्गवश भावप्रकाश के प्रमाण से ज्वार के नाम कहते हैं जैसेकि, यावनाल, यवनाल, शिखरी, वृत्ततन्दुल, दीर्घनाल, दीर्घशिर, क्षेत्रेक्षु और इक्षुपात्रक ये ८ सामान्य ज्वार के नाम हैं । धावल, यवनाल, पाण्डुर, तारतन्दुल, नक्षत्राकृति विस्तार, वृत्त, मौक्तिक, तन्दुल, जूर्णाह्व, देवधान्य, जूर्णाल, बीजपुष्पक, जूनल, पुष्पगन्धक, सुगन्ध और स्वगुरुन्दक ये १५ सफ़ेदज्वार के नाम हैं ॥ [1] ॥

मूसर पु.न. पु.न. न. न.
उखली अयोग्रो मुसलो (स्त्री) स्यादुदूखलमुलूखलम् ॥२५॥
सूप न. पु.न. स.न. पु.न.
चलनी प्रस्फोटनं शूर्पं (मस्त्री) चालनी तितउः (पुमान्) [2] ।

१ "यावनालो यवनालःशिखरीवृत्ततन्दुलः । दीर्घनालो दीर्घशिरः क्षेत्रेक्षुश्चेक्षुपत्रकः" इति सामान्ययवनालस्य । धावलो यावनालस्तु पाण्डुलस्तारतन्दुलः । नक्षत्राकृतिविस्तारो वृत्तो मौक्तिकतन्दुलः । जूर्णाह्वो देवधान्यं जूर्णलो बीजपुष्पकः । जूर्नलः पुष्पगन्धश्च सुगन्धः स्वगुरुन्दकः (इति भावप्रकाशः) ॥
२ "तितउः पुंसि क्लीबे च पृथगुच्चारणे द्वयोः सामर्थ्याद्गुणो न" इति गुणाभावः ॥

अयोग्र, मुसल या "मुषल" ये २ मूसल (मूसर) के नामहैं । ये दोनों पुंनपुंसकलिङ्ग हैं । उदूखल, उलूखल ये २ ओखली के नाम हैं । प्रस्फोटन, शूर्प या "सूर्प" ये २ सूप के नाम हैं । इनमें 'प्रस्फोटन' नपुंसक है और 'सूर्प' पुंनपुंसक है और चालनी "चालन" तितउ ये २ चलनी के नाम हैं । इनमें 'चालनी' यह स्त्रीलिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग है और "तितउ" पुंलिङ्ग है परन्तु रत्नकोषादिकों के प्रमाण से नपुंसक भी है ॥ २५ । १ ॥

पु.　पु.　पु.　पु.　पु.　पु.

थैली या बोरा **स्यूतप्रसेवौ कण्डोलपिटौ कटकिलिञ्जकौ ॥ २६ ॥**

डेलवा या दौरा　　न.　न.

चटाई, झांपी **(समानौ) रसवत्यां (तु)पाकस्थानमहानसे ।**

रसोई का घर　पु.　पु.　पु.

रसोई का स्वामी **पौरोगव (स्तदध्यक्षः) सूपकारास्तु बल्लवाः ॥ २७ ॥**

पु.　पु.　पु.　पु.　पु.[2]

रसोईदार **आरालिका आन्धसिकाः सूदा औदनिका गुणाः ।**

स्यूत, "स्यून, स्योत, स्योन" प्रसेव ये २ अनाज भरने के लिये थैला, थैली या बोरा के नाम हैं । कण्डोल "काण्डोल" पिट "पिटक" पेटक ये २ बांस आदि के बनेहुए डेलवा, छेटवा, ओड़ा, झाबड़ा या दौरा के नाम हैं । कट, किलिञ्जक ये २ चटाई या झांपी के नामहैं । ये स्यूत आदि दो २ समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । रसवती, पाकस्थान, महानस ये ३ पाकशाला "रसोईघर" के नाम हैं । उस पाकशाला का स्वामी 'पौरोगव' कहाजाता है अथवा पौरोगव, 'तदध्यक्ष' ये २ रसोई के अध्यक्ष या अधिकारी के नाम हैं । सूपकार, बल्लव, आरालिक, आन्धसिक, सूद, औदनिक और गुण ये ७ पकानेवाले रसोईबरदार (रोटिकरा) के नाम हैं अथवा "सूपकार, बल्लव" ये २ व्यञ्जन बनानेवाले के नाम हैं और 'आरालिक' आदि 'गुण' पर्यन्त ५ रसोईदार के नाम हैं ॥ २६ । २७ । १ ॥

पु.　पु.　पु.

पुवा आदि **आपूपिकः कान्दविको भक्ष्यकार (इमे त्रिषु) ॥ २८ ॥**

बनानेवाले　न.　न.　स.　स.　स.

अंगीठी या चूल्हा **अश्मन्तमुद्धानमधिश्रयणी चुल्लिरन्तिका ।**

आपूपिक, कान्दविक, भक्ष्यकार "भक्ष्यंकार, भक्ष्यकार" ये ३ पुवा आदि

---

१ यथाक्ष्यं कटे शेते कुमारासाविति सारस्वतीये ॥ २ "गुणो मौर्व्यामप्रधाने रूपादौ सूद इन्द्रिये । त्यागे शौर्यादिसंध्यादिसत्त्वाद्यावृत्तिरज्जुषु । शुक्लादावपि बुद्धषां च" (इति मेदिनी) ॥

बनानेवाले के नाम हैं और ये 'पुरोगत्र आदि' त्रिलिङ्ग हैं यानी वाच्यलिङ्ग कहाते हैं और अश्मन्त ' अस्त्रन्त ' उद्धान "उद्ध्मान" अधिश्रयणी, चुलि, "चुल्ली" अन्तिका ये ५ चूल्ही या चूल्हा के नाम हैं। इनमें पहले के दो नपुंसक हैं और आख़िरी के तीन स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ २८ । ½ ॥

स. स. स.

अंगेठी, अँगार, **अङ्गारधानिकाङ्गारशकट्य (पि) हसन्त्य (पि)॥२९॥**

स. पु.न. न. न.

लुकाठ, खपरी, **हस (न्यप्यथ न स्त्री स्या) दङ्गारोऽलातमुल्मुकम् ।**

न. पु. पु.स. स.

भार या भट्ठी **(क्लीबे)ऽम्बरीषं भ्राष्ट्रो(ना)कन्दुर्वा स्वेदनी(स्त्रियाम्)३०**

अङ्गारधानिका, अङ्गारशकटी, हसन्ती, हसनी ये ४ अँगेठी, बिरौसी या बगौसिया के नाम हैं। 'अङ्गार' यह १ अँगार का नाम है। यह स्त्रीलिङ्ग नहीं है वरन पुंनपुंसकलिङ्ग है। अलात, उल्मुक ये २ अधपर्ची लकड़ी या लुकाठ के नाम हैं। ये दोनों नपुंसकलिङ्ग हैं अथवा मुकुट के मत में अङ्गार, अलात, उल्मुक ये ३ अँगार के नाम हैं। अम्बरीष "अम्बरिष" भ्राष्ट्र ये २ चना आदि भूंजने की खपरी, खपरा या कड़ाह आदि के नाम हैं। इनमें 'अम्बरीष' नपुंसक है और 'भ्राष्ट्र' पुंलिङ्ग है और कन्दू, "कन्दु" स्वेदनी "स्वेदन" ये २ भट्ठी या भार के नाम हैं। इनमें "कन्दू" विकल्प से पुंलिङ्ग है पक्ष में स्त्रीलिङ्ग होता है और 'स्वेदनी' विकल्प से स्त्रीलिङ्ग है पक्ष में पुंलिङ्ग है ॥ २९ । ३० ॥

पु. पु. स. स. स.

मेटुका, करवा, **अलिञ्जरः (स्या) न्मणिकः कर्कर्यालुर्गलन्तिका ।**

पु. स. स. न. पु.

बटलोही, घड़ा **पिठरः स्थाल्युखा कुण्डं कलश (स्तु त्रिषु द्वयोः)॥३१॥**

पु.स. पु.न. पु.न. पु.न. पु.न.

सेरवा **घटः कुटनिपा (वस्त्री) शरावो वर्धमानकः ।**

अलिञ्जर "अलञ्जर" मणिक ये २ मेटुका या माट के नाम हैं। कर्करी, आलू, "आलु" "आरू" गलन्तिका ये ३ करवा या गेडुवा के नाम हैं। पिठर, स्थाली, उखा "उषा" कुण्ड ये ४ बटलोही, हांडी या हंडा आदि के नाम हैं।

---

१ स च साग्निर्निरग्निश्च तत्र साग्नौ यथा—"अङ्गारचुम्बितमिव व्यथमानमास्ते" इति। निरग्नौ यथा-"कलङ्कस्तत्रत्यो भवति मलिनाङ्गारतुलनाम्" इत्यादि प्रयोगः संगच्छते ॥

२ "हसन्तीं च हसन्तीं च हसन्तीं वामलोचनाम्। हेमन्ते ये न सेवन्ते ते नरा मन्दभागिनः ॥१॥"

कलश " कलस " घट, कुट, निप ये ४ कलशा, कलशी, गगरा या गगरी के नाम हैं । इनमें " कलश " त्रिलिङ्ग है, "घट" स्त्री-पुंलिङ्ग है और कुट, निप ये २ पुंनपुंसक हैं और शराव " सराव " वर्धमानक ये २ सरवा, कसवा, ढकना या मलैया आदि के नाम हैं ये भी दोनों पुंनपुंसक हैं ॥ ३१ । १/२ ॥

न. न. पु. न.

तवा ऋजीषं पिष्टपचनं कंसो (ऽस्त्री) पानभाजनम् ॥ ३२ ॥

आबखोरा स.

कुप्पा कुतूः (कृत्तेःस्नेहपात्रं) (सैवाल्पा) कुतुपः (पुमान्) ।

कुप्पी न. न. न. न. न.

सबबर्तन (सर्व)मावपनं भाण्डं पात्रामत्रं (च) भाजनम् ॥ ३३ ॥

ऋजीष या "ऋचीष" पिष्टपचन ये २ तवा के नाम हैं । कंस या "कंश-कांस्य" पानभाजन ये २ पानपात्र-आबखोरा-कटोरा या कटोरी आदि के नाम हैं । इनमें ' कंस ' पुंनपुंसक है । चमड़े का बना तेल व घी आदि के रखने का बर्तन 'कुतू' कहाता है । यह १ कुप्पा का नाम है और यदि वही कुप्पा छोटासा प्रतीत हो तो "कुतुप" कहा जाता है यह एक कुप्पी या कुपिया का नाम है । यह पुंलिङ्ग है और स्यूत आदि व पिठर आदि सबही बासन आवपनादि संज्ञक होते हैं जैसेकि, आवपन, भाण्ड, पात्र, अमत्र और भाजन ये ५ जितने बर्तन कहचुके हैं उन सबोंके नाम हैं ॥ ३२ । ३३ ॥

स. स. स. पु.स. पु.

करछुली दर्विः कम्बिः खजाका (च) (स्या)त्तर्दूर्दारुहस्तकः ।

चमचा या डोंवा पु.न. न. पु. स.

साग (अस्त्री) शाकहरितकं शिग्रु (रस्य तु) नालिका ॥ ३४ ॥

साग का डंठल पु. पु. पु. पु.

साग का मसाला कडम्ब(श्च) कलम्ब (श्च) वेसवार उपस्करः ।

दर्वि, " दर्वी " काम्बि, " कम्बी " खजाका, " खज " ये ३ करछी, कर

१ पत्रं पुष्पं फलं नालं कन्दं संस्वेदजं तथा । शाकं षड्विधमुद्दिष्टं गुरुविद्याद्यथोत्तरम् १ प्रायः शाकानि सर्वाणि विष्टम्भीनि गुरूणि च । रूक्षाणि बहुवर्चांसि सृष्टविण्मारुतानि च २ शाकं भिनत्ति वपुरस्थि निहन्ति नेत्रं वर्णं विनाशयति रक्तमथापि शुक्रम् । प्रज्ञाक्षयं च कुरुते पलितं च नूनं हन्ति स्मृतिं गतिमिति प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ३ शाकेषु सर्वेषु वसन्ति रोगास्ते हेतवो देहविनाशनाय । तस्माद् बुधः शाक-विवर्जनन्तु कुर्यात्तथाम्लेषु स एव दोषः" ॥ ४ ॥

२ "विंशतिः पलानि हरिद्रायाः, दश पलानि धान्याकस्य, पञ्च पलानि शुद्धजीरकस्य, पलं सार्द्धद्वयं मेथिकायाः, एतच्चतुष्टयं भर्जितमेव ग्राह्यम्, त्रीणि पलानि मरिचस्य, अर्धपलं रामठस्य " एतत्सर्वमेकत्र संयोज्य संमर्दितं वेसवार इत्युच्यते ॥

छुली या चिमचे आदि के नाम हैं । तर्दू , दारुहस्तक ये २ काठ के बने हाथ या ' डौवा ' आदि के नाम हैं अथवा हैमकोष के अनुरोध से दर्वी आदि ५ करछुली आदि के ही नाम हैं । शाक, हरितक, शिग्रु या " सिग्रु " ये ३ बथुवा आदि साग के नाम हैं । इनमें " शाक " पुंनपुंसकलिङ्ग है इसकी नाडिका 'डंठल' को नालिका " नाडिका " कडम्ब, कलम्ब " कलम्बी " कहते हैं ये ३ शाक के डण्ठके या डंठल के नाम हैं । इनमें "कलम्बी शाकभेदे स्यात्कदम्बशरयोः पुमान्" इस मेदिनीकोष के प्रमाण से " कलम्ब " पुंस्त्रीलिङ्ग है और वेसवार, " वेशवार-वेषवार " उपस्कर ये २ छौंकने या बघारने के लिये दिये हुए हींग, ज़ीरा, हल्दी, धनियां, सोंठि आदि मसाला के नाम हैं । इसका विशेष विस्तार आत्रेयसंहिता तथा अन्याचार्यकृत वैद्यकग्रन्थों में भी किया है जैसेकि, " बीस पल हल्दी, दश पल धनियां, पांच पल शुद्धज़ीरा, ढाई पल मेथी इन चारों को भूंजा हुआ लेना चाहिये तीन पल मिरच, आधा पल हींग इनको इकट्ठा मिलाकर कूटा हुआ वेसवार कहाजाता है ॥ ३४ । $\frac{1}{2}$ ॥

न. न. न. न.

चूक **तिन्तिडीकं(च)चुक्रं(च)वृक्षाम्ल(मथ)वेल्लजम् ॥ ३५॥**

न. न. न. न. न.

मिरच **मरिचं कोलकं कृष्णमूषणं धर्मपत्तनम् ।**

तिन्तिडीक " तिन्तिडिक " चुक्र, वृक्षाम्ल ये ३ अमरा, अमिली, चूक या साग विशेष चूका के नाम हैं और वेल्लज, मरिच " मरीच " कोलक, कृष्ण, ऊषण या " उषण " धर्मपत्तन ये ६ स्याह मिरच या कालीमिरच के नाम हैं ये सबही नपुंसकलिङ्ग हैं ॥ ३५ । $\frac{1}{2}$ ॥

पु. पु. स. स.

सफ़ेद ज़ीरा **जीरको जरणोऽजाजी कणा (कृष्णे तु जीरके)॥ ३६ ॥**

स. स. स. पु. स. स.

स्याह जीरा **सुषवी कारवी पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चिका ।**

जीरक, जरण, अजाजी, कणा ये ४ सफ़ेद ज़ीरा के नाम हैं । इनमें पहिला दूसरा ये दो पुंलिङ्ग हैं और तीसरा तथा चौथा स्त्रीलिङ्ग है और कालेज़ीरा' में सुषवी, " सुशवी, सुसवी " कारवी, पृथ्वी, पृथु, काला और उपकुञ्चिका ये होते हैं ये ६ स्याह ज़ीरा के नाम हैं ॥ ३६ । $\frac{1}{2}$ ॥

न. न. स. न.

अदरख, **आर्द्रकं शृङ्गवेरं (स्यादथ) छत्रा वितुन्नकम् ॥ ३७ ॥**

न. न. स. न.

धनियां, कुस्तुम्बुरु (च) धान्याक (मथ) शुण्ठी महौषधम् ।

स.न. न. न.

सोंठि (स्त्रीनपुंसकयो)र्विश्वं नागरं विश्वभेषजम् ॥ ३८ ॥

आर्द्रक, शृङ्गवेर ये २ अदरख या सोंठिकी पहिली हालत के नाम हैं । छत्रा, वितुन्नक, कुस्तुम्बुरु, " कुस्तुम्बुरी, तुम्बुरु, तुम्बुरी " धान्याक, " धन्याक " और " धान्यक, धनिक, धनीयक, धनेयक, धान्य " और धन्या ये ४ धनियां के नाम हैं । शुण्ठी, " शुण्ठि " महौषध, "महौषधी" विश्व, "विश्वा" नागर और विश्वभेषज ये ५ सोंठि के नाम हैं ॥ ३७ । ३८ ॥

न. न. न.

कांजी आरनालकसौवीरकुल्माषाभिषुतानि (च) ।

न. न. न. न.

अवन्तिसोमधान्याम्लकुञ्जलानि (च) काञ्जिके ॥३९॥

आरनालक, सौवीर, कुल्माष, अभिषुत, " कुल्माषाभिषुत " अवन्तिसोम, धान्याम्ल, कुञ्जल और काञ्जिक या काञ्चिक स्त्री काञ्जिका ये ८ कांजी के नाम हैं "सन्धितं धान्यमण्डादि काञ्जिकं कथ्यते जनैः । काञ्जिकं भेदि तीक्ष्णोष्णं रोचनं पाचनं लघु " (इति भावप्रकाशः) धान्य आदि के माड़ को दो, तीन दिन रक्खा रहने दें जब खट्टा होजावे उसको पण्डितों ने काञ्जिक (कांजी) कहा है ॥ ३९ ॥

न. न. न. न. न.

हींग, सहस्रवेधिजतुकं वाल्हीकं हिङ्गु रामठम् ।

स. स. स. स. स. स.

हींग की पत्ती तत्पत्री कारवी पृथ्वी बाष्पिका कबरी पृथुः ॥ ४० ॥

सहस्रवेधि, जतुक, वाल्हीक, " वाल्हिक " हिङ्गु, रामठ ये ५ हींग के नाम हैं और तत्पत्री, " त्वक्पत्री " कारवी, पृथ्वी, बाष्पिका, " बाष्पीका " कबरी " कर्वरी " और पृथु ये ६ हींग की पत्ती के नाम हैं । अथवा उस हींग की पत्ती

१ सधन्या शुण्ठिसैन्धवमिति वैद्यकम् ॥

२ यदा पचाद्यचि तदा गौरादित्वकल्पनं समीचीनं भाति, यदा तु सर्वधातुभ्य इनिति इन्प्रत्ययः स्यात्तदा "कृदिकारादिति" वैकल्पिकत्वाद्गौरादित्वकल्पनं व्यर्थमेवेति ॥

३ "आरनालं तु गोधूमैरामैः स्यान्निस्तुषीकृतैः । पक्वैर्वासंधितं तत्तु सौवीरसदृशं गुणैः" ४ "सौवीरन्तु यवैरामैः पक्वैर्वा निस्तुषीकृतम् । गोधूमैरपि सौवीरमाचार्याः केचिदूचिरे" ५ धान्याम्लं शालिचूर्णं च कोद्रवादिकृतं भवेत्" (इति भावप्रकाशः) ॥

कारवी, पृथ्वी, बाष्पिका, कवरी और पृथु कहाती है इस अर्थ से ५ ही हींग के नाम होते हैं ॥ ४० ॥

स. स. स. स. स.

हल्दी **निशाह्वा काञ्चनी पीता हरिद्रा वरवर्णिनी ।**

न. न.

समुद्रलोन **(सामुद्रं यत्तु लवण) मक्षीवं वसिरं (च तत्) ॥४१॥**

निशाह्वा, " निशा " काञ्चनी, पीता, हरिद्रा और वरवर्णिनी ये ५ हल्दी के नाम हैं। यहां निशा पद से रात्रिवाची जितने नाम हैं उन सबों का ग्रहण किया जाता है यानी जितने रात्रि के नाम हैं उतनेही हल्दी के भी जानना चाहिये और जो समुद्र में उपजा लवण (नमक) है उसे अक्षीव 'अक्षिव' वसिर या "वशिर" भी कहते हैं ये २ सामुद्रकीय लवण के नाम हैं ॥ ४१ ॥

पु. न. न. न.

सेंधव **सैन्धवो (ऽस्त्री) शीतशिवं माणिमन्थं (च) सिन्धुजे ।**

सांभर न. न. न. न. न.

खारी **रौमकं वसुकं पाक्यं विडं (च) कृतके (द्वयम्)॥ ४२॥**

सैन्धव, शीतशिव, " शितशिव ", सितशिव, "शीतसिव" माणिमन्थ "मणि-मन्थ, माणिबन्ध " सिन्धुज ये ४ सेंधव या पहाड़ी नमक के नाम हैं। इनमें "सैन्धव " पुंनपुंसकलिङ्ग है। रौमक, " रौम " वसु, "वसूक" ये २ सांभर लोन के नाम हैं और खारमिट्टी को पकाकर बनाये हुए लवण में पाक्य, विड ये २ होते हैं अथवा पाक्य, विड, कृतक ये ३ खारीनमक के नाम हैं ॥ ४२ ॥

न. न. न. न.

सोंचर, कालानमक, **सौवर्चलेऽक्षरुचके तिलकं (तत्र मेचके)।**

राब या गुड़ स. न. स. स.

सफ़ेद चीनी या मिश्री **मत्स्यण्डी फाणितं (खण्डविकारे) शर्करा सिता॥४३॥**

सौवर्चल, अक्ष, रुचक ये ३ सोंचर लोन के नाम हैं और यदि वह सोंचर कालेवर्णवाला हो तो ' तिलक ' कहा जाता है। यह १ काले नमक का नाम है। मत्स्यण्डी, फाणित ये २ राब, गुड़ या कच्ची खांड़के नाम हैं अथवा "इक्षोरसो यः संपक्वो घनः किञ्चिद्द्रढान्वितः । मन्दं यत्स्यन्दते यस्मान्मत्स्यण्डीति निगद्यते। इक्षो रसो

१ " श्लेष्माणमाशु विनिहन्ति सदार्द्रकेण पित्तं निहन्ति च तदेव हरीतकीभिः । शुण्ठ्या समं हरति वातमशेषमित्थं दोषत्रयक्षयकराय नमो गुडाय " (इति भावप्रकाशः) ॥ २ " खण्डं तु सिकतारूपं सुश्वेतं शर्करा सिता । सिता सुमधुरा रुच्या वातपित्तामदाहहृत् " (इति भावप्रकाशः) ॥

यः संपक्को जायते लोष्टवद्दृढः। सगुडो गौडदेशे तु मत्स्यण्ड्येव गुडो मतः" कुछेक पतला, पक्का व गाढ़ा ईख का रस जोकि मन्द २ झरता है इसलिये वह "मत्स्यण्डी" कहाता है अथवा जो ईख का रस पकाकर ढेले के समान गाढ़ा किया जावे तो वह 'गुड़' कहाजाता है और गौड़देश में "मत्स्यण्डी" को ही 'गुड़' माना है और "इक्षो रसस्तु यः पक्वः किंचिद्गाढो बहुद्रवः। स एवेक्षुविकारेषु ख्यातः फाणितसंज्ञया" (इति भावप्रकाशः) कुछ २ गाढ़ा व अधिक भाग पतला ऐसे पके हुए रसको 'फाणित' यानी 'राब' कहते हैं और खांड़के विकार में शर्करा, सिता ये २ सफ़ेद चीनी या मिश्री के नाम हैं। अथवा खण्डविकार, शर्करा और सिता ये ३ अथवा मत्स्यण्डी आदि सिता पर्यन्त ५ शक्कर के ही नाम हैं ऐसा कितेक आचार्यों ने माना है॥ ४३॥

स स. स. स.

खोवा, **कूर्चिका क्षीरविकृतिः (स्याद्र) साला (तु)मार्जिता।**

न. न.

शिखरन, कढ़ी **(स्या)त्तेमनं तु निष्ठानं (त्रिलिङ्गा वासितावधेः) ॥४४॥**

दही या मही से मिला हुआ जो दूध का विकार है उसे 'कूर्चिका' व 'क्षीरविकृति' कहते हैं अथवा "उभे क्षीरस्य विकृती किलाटी कूर्चिका तथा" (इति हैमनाममाला) इस कोष के प्रमाण से ये २ मावा या खोवा या मूरनि या फटे दूध के नाम हैं। अथवा दही के साथ पका हुआ दूध "दधिकूर्चिका" और माठा के साथ पका हुआ दूध "तक्रकूर्चिका" कहाता है यह किसी आचार्य का मत है। रसाला, मार्जिता ये २ दही में शहद, शक्कर, मिरच व अदरख तथा किशमिश आदि डालकर बनाये हुए चाटने योग्य पदार्थ या शिखरन के नाम हैं और तेमन, निष्ठान ये २ दही आदि के बने व्यञ्जन या कढ़ी के नाम हैं परन्तु वैद्यक ग्रन्थों में कढ़ी को "क्वथिता" कहते हैं। इसके अनन्तर कहे जानेवाले 'वासित' पर्यन्त शब्द त्रिलिङ्ग होते हैं यानी वाच्यलिङ्ग कहलाते हैं॥ ४४॥

---

१ "आदौ माहिषमम्लमम्बुरहितं दध्याढकं शर्करां शुभ्रां प्रस्थयुगोन्मितां शुचिपटे किंचिच्च किंचित्क्षिपेत्। दुग्धेनार्धघटेन मृन्मयनवस्थाल्यां दृढं स्रावयेदेलाबीजलवङ्गचन्द्रमरिचैर्योग्यैश्च तद्योजयेत्। भीमेन प्रियभोजनेन रचिता नाम्ना रसाला स्वयं श्रीकृष्णेन पुरा पुनः पुनरियं प्रीत्या समास्वादिता। एषा येन वसन्तवर्जितदिने संसेव्यते नित्यशस्तस्य स्यादतिवीर्यवृद्धिरनिशं सर्वेन्द्रियाणां बलम्" (इति भावप्रकाशः) पहले खटाई व जलरहित गाढ़े भैंस के दही को ४ सेर लेवे इसमें २ सेर सफ़ेद शक्कर मिलावे फिर साफ़ गाढ़े कपड़े में डाल हाथों से मले सब दही नीचे के पात्र में इकट्ठा हो जावे इसमें ५ सेर दूध डाले छाने नीचे मिट्टी का पात्र रक्खे जब सारा दही छन जावे तब इसमें इलायचीके बीज, लौंग, भीमसेनी कपूर, कालीमिरच इनका चूर्ण व शहद डाले इस रसाला को भीमसेन कि जिनको भोजन प्यारा है उन्होंने बनाया व श्रीकृष्णजी ने वारंवार स्वाद लियां है इसको वसन्त ऋतु छोड़कर जो प्राणी सेवन करताहै उसके वीर्य बढ़ताहै व सब इन्द्रियोंमें बल आजाता है इसे 'श्रीखण्ड' भी कहते हैं॥

शूल पर भुना मांस, बटलोही में पका, रसियाउरि घी से पका अन्न

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
शूलाकृतं भटित्रं (च) शूल्यमुख्यं तु पैठरम् ।
पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
प्रणीतमुपसंपन्नं प्रयस्तं (स्यात्) सुसंस्कृतम् ॥ ४५ ॥

शूलाकृत, भटित्र, शूल्य ये ३ लोह की शलाका में छेदकर पकाये हुए मांस आदि के नाम हैं । उख्य, पैठर ये २ बटलोही में पके हुए अन्न आदि के नाम हैं । प्रणीत, उपसंपन्न ये २ रस आदि से संपन्न व्यञ्जन या रसियाउरि के नाम हैं और प्रयस्त, सुसंस्कृत ये २ घी से बनी हुई वस्तु या प्रयत्न से सिद्ध किये हुए घृतपक्व आदि के नाम हैं ॥ ४५ ॥

पनिहां व्यञ्जन, बीना अन्न, चिकना, छौंका या बघारा

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
(स्या)त्पिच्छिलं (तु) विजिलं संमृष्टं शोधितं (समे) ।
पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
चिक्कणं मसृणं स्निग्धं (तुल्ये) भावितवासिते ॥ ४६ ॥

पिच्छिल, विजिल " विजयिन, विज्जन, विजिन " ये २ माड़युक्त व भात समेत जलयुक्त व्यञ्जन या साढ़ी समेत दही या मही के नाम हैं । संमृष्ट, शोधित ये २ बीने बनाये व शोधन किये हुए अन्न आदि के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । चिक्कण, मसृण, स्निग्ध ये ३ चिकने के नाम हैं और भावित, वासित ये २ हींग व ज़ीरा आदि से बघारे, छौंके या धुँगार दिये हुए व्यञ्जन आदि के नाम हैं और ये दोनों समानार्थक कहे जाते हैं ॥ ४६ ॥

मुरमुरा, धान का लावा, चिउरा, बहुरी

न. पु. पु. पु.बहु. पु.न. बहु.
आपक्वं पौलिरभ्यूषो लाजाः (पुंभूम्नि) चाक्षताः ।
पु. पु. स.बहु.
पृथुकः (स्या)च्चिपिटको[2]धाना (भृष्टयवे स्त्रियः) ॥ ४७ ॥

आपक्व, पौलि, अभ्यूष " अभ्युष-अभ्योष " ये ३ भूंजे हुए अधपके यव, गेहूं आदि, ऊंबी या मुरमुरा के नाम हैं । लाज यह १ भूंजे धान (लावा, लाई या खीलों) का नाम है । यह पुंलिङ्ग होकर नित्य बहुवचनान्त है ऐसेही ' अक्षत ' यह १ अक्षतों या चावलों का नाम है यह भी नित्य बहुवचनान्त होकर पुंलिङ्ग है अथवा " केचित्त्वखण्डतण्डुला अक्षता इति वदन्ति " तेन " अक्षताः परिपान्तु "

---

१ मुकुटस्तु—अक्षतमिति पठित्वा 'क्षणु हिंसायाम्' इत्यतः कर्मणि क्तः । क्षतं खण्डितम्, न क्षतमक्षतमिति विशुध्यते ' लाजाः ' नित्यपुंलिङ्गाः नित्यबहुवचनान्ताश्चेति व्याख्यातवान् ॥

२ स्वार्थिकाः प्रकृतितोऽपि लिङ्गवचनान्यतिवर्तन्तेऽपीति पुंस्त्वम् ॥

इति वचनं संगच्छते " कितेक आचार्य अखण्डित चावलों को 'अक्षत' कहते हैं। उसीसे " अक्षताः परिपान्तु " यह वचन संगत होता है और मुकुट के मत में 'अक्षत' यह १ गीले चावलों का नाम है। पृथुक, चिपिटक ये २ गीले भूंजे हुए चावलों या चिउरा के नाम हैं और भूंजे हुए यवों में 'धाना' यह स्त्रीलिङ्ग है यह १ भूंने हुए यवों की बहुरी का नाम है। यह नित्य स्त्रीलिङ्ग होकर बहुवचनान्त कहाजाता है अथवा धाना, भृष्टयव ये २ यवों की बहुरी के नाम हैं॥ ४७॥

पु. पु. पु. पु. पु. बहु.

पुवा या बरा **पूपोऽपूपः पिष्टकः (स्यात्) करम्भो दधिसक्तवः।**

दहीसाना स. न. न. न. पु.न. पु.न.

सत्तू, भात **भिस्सा (स्त्री) भक्तमन्धोन्नमोदनो(ऽस्त्री)सदीदिविः४८**

पूप, अपूप, पिष्टक ये ३ पीसे चावलों या पिट्ठी आदिकों से बने हुए खाद्यपदार्थ, पुवा या वटक (बरा) के नाम हैं। दही से साने हुए सत्तू 'करम्भ' या 'करम्ब' कहाते हैं अथवा करम्भ, 'करम्ब' दधिसक्तु ये २ दहीमिले सत्तुवों के नाम हैं और भिस्सा " भिष्मा " भक्त, अन्ध, अन्ध (स्) अन्न, ओदन और दीदिवि ये ६ भात या अन्न के नाम हैं। इनमें 'भिस्सा' स्त्रीलिङ्ग है, ओदन और " दीदिवि " ये दोनों पुंनपुंसक हैं॥ ४८॥

स. स. पु.न.

जलाभात **भिस्साटा दग्धिका (सर्वरसाग्रे) मण्ड(मस्त्रियाम्)।**

पसावन या मैल पु. पु. पु.

भात का माड़ **मासराचामनिस्रावा (मण्डे भक्तसमुद्भवे)॥ ४६॥**

भिस्सटा, "भिस्सिटा, भिष्मिटा, भिष्मिष्ठा, भिष्मिका" दग्धिका ये २ जले हुए भात या अन्न के नाम हैं। समस्त रसों के अग्रिमद्रव में 'मण्ड' पुंनपुंसक होता है। यानी सारे रसों या द्रवद्रव्यों का जो पहल द्रव है उसे 'मण्ड' कहते हैं। यह १ पसावन या माड़ का नाम है और भात से उपजे हुए माड़ में मासर, आचाम, निस्राव, " निश्राव, विस्राव, विश्राव " ये होते हैं ये ३ केवल भात के ही माड़ के नाम हैं॥ ४६॥

स. स. स. स. स.

लप्सी गौ **यवागूरुष्णिका श्राणा विलेपी तरला (च सा)।**

का दूध, पु.स.न. स.न. पु.न.

आदि, गोबर **गव्यं (त्रिषु गवां सर्वं) गोविड् गोमय(मस्त्रियाम्)॥५०॥**

---

१ बभस्तीति विग्रहे तु बाहुलकात्सः " बहुलं छन्दसि " इतीत्वम् " ब्राह्मणभिस्सा " इति सूत्रे भाष्यप्रयोगाल्लोकेऽपि॥

यवागू, उष्णिका, श्राणा, विलेपी और तरला ये ५ गुलाथीभात या लप्सी ‡ के नाम हैं। "म्रक्षणाभ्यञ्जने तैलं कृसरस्तु तिलौदनः" इस क्षेपक के प्रमाण से म्रक्षण, अभ्यञ्जन, तैल ये ३ तेल के नाम हैं और कृसर, तिलौदन ये २ तिल ऊमीसे बने भात या खिचड़ी के नाम हैं यानी "तण्डुला दालिसंमिश्रा लवणार्द्रकहिङ्गुभिः। संयुक्ता सलिले सिद्धा कृसरा कथिता बुधैः" (इति भावप्रकाशः) दाल, चावलों को मिलाय व नमक, अदरख, हींग आदि डालकर जलमें सिद्ध किये हुए खाद्यपदार्थ को 'कृसरा' खिचड़ी कहते हैं और गौओं में होनेवाले दूध, दही, मही, घी आदि सारे पदार्थों को 'गव्य' कहते हैं। यह १ गोबर छोड़कर गौओं से उपजी सारी वस्तुवों का नाम है और गोविट्, गोमय ये २ गाय के गोबर के नाम हैं। इनमें पहला स्त्री, नपुंसकलिङ्ग है और दूसरा पुंनपुंसक है ॥५०॥

पु.न. न. न. न.

करसी दूध **(तत्तु शुष्कं) करीषो (ऽस्त्री) दुग्धं क्षीरं पयः (समम्)।**

घी, दही आदि न. न.

पतला दही **पयस्य (माज्यदध्यादि) द्रप्सं (दधि घनेतरत्) ॥५१॥**

यदि वह गोबर सूखा हो तो 'करीष' कहाता है। यह १ सूखे गोबर, करसी, बिनुवां कंडा, उपला या उपली का नाम है। यह पुंनपुंसकलिङ्ग है। दुग्ध, क्षीर, पयः (स्) ये ३ दूध के नाम हैं। ये तीनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं। दूध का विकार जो घी, दही आदि है। वह 'पयस्य' कहा जाता है। आदि पद से मठा या मक्खन का ग्रहण किया जाता है। यह १ घी, दही, मही आदि का नाम है और जो पतला दही है उसे 'द्रप्स,' "त्रप्स, द्रप्स्य, त्रप्स्य" या "सर" कहते हैं यह १ पतले दही या दगडे दही का नाम है ॥ ५१ ॥

न. न. न. न. न.

घी **घृतमाज्यं हविः सर्पिर्नवनीतं (नवोद्धृतम्)।**

नैनू न.

ताजा नैनू **(तत्तु) हैयंगवीनं (यद्ध्योगोदोहोद्भवं घृतम्) ॥ ५२॥**

घृत, आज्य, हविः (स्) सर्पिः (स्) ये ४ घी के नाम हैं। नया निकाला हुआ घी 'नवनीत' कहाता है अथवा नवनीत, नवोद्धृत ये २ नैनू या मक्खन आदि के नाम हैं और जो पूर्वदिन के जमाये हुए गोदुग्ध के दही से उपजा घी है उसको 'हैयङ्गवीन' कहते हैं यह १ ताज़े नैनू का नाम है अथवा एकरात्रिके जमाये हुए दही से उपजे घी का नाम है ॥ ५२ ॥

‡ "समितां सर्पिषा भृष्टां शर्करां पयसि क्षिपेत्। तस्मिन् घनीकृते न्यस्येल्लवङ्गं मरिचादिकम्। सिद्धैषा लप्सिका ख्याता" (इति भावप्रकाशः) ॥

न. न. न. पु.

मठा दण्डाहतं कालशेयमरिष्ट (मपि) गोरसः।

न. न. न.

मठा के भेद तक्रं ह्युदश्विन्मथितं (पादाम्ब्वर्धाम्बुनिर्जलम्)॥५३॥

दण्डाहत, कालशेय "कालसेय" अरिष्ट, गोरस ये ४ मथानी से मथे हुए गोरस या मठा के नाम हैं। अब इसके भेदों को कहते हैं कि जिस गोरस में चौथियाई जल डाला जाता है उसे 'तक्र' कहते हैं। यह १ चतुर्थांश जलयुक्त मठा का नाम है। जिसमें आधा पानी गेरा जाता है उसे 'उदश्वित्' कहते हैं यह १ आधे जलवाले मठा का नाम है और जो जलरहित मठा है वह 'मथित' कहलाता है यह १ निर्जल मठा का नाम है॥ ५३॥

दही का पानी न. पु.

पेयुस (मण्डं दधिभवं) मस्तु पीयूषो (ऽभिनवं पयः)।

भूख स. स. स. पु. पु.

कौर अशनाया बुभुक्षा क्षुद् ग्रास(स्तु)कवलः(पुमान्)॥५४॥

दही से उपजा हुआ पहला माड़ 'मस्तु' कहलाता है। यह १ वस्त्र से निकले हुए दही के जल का या दही के ऊपरले भाग या मैहर या तोर का नाम है। नया दूध 'पीयूष' या 'पेयूप' कहा जाता है यह १ सातदिन की नई व्याई गौ के दूध का नाम है। अशनाया, बुभुक्षा, क्षुत् (धू) "क्षुधा" ये ३ भूख के नाम हैं और ग्रास, कवल ये २ कौर के नाम हैं ये दोनों पुंलिङ्ग हैं॥ ५४॥

स. न. स. न.

साथ पीना सपीतिः(स्त्री) तुल्यपानं सग्धिः(स्त्री) सहभोजनम्।

साथ खाना स. स. स. पु. स. न.

प्यास उदन्या(तु)पिपासातृट् तर्षो जग्धि(स्तु)भोजनम्॥५५॥

न. पु. पु. पु. पु.

भोजन अघाना जेमनं लेह आहारो निघसो न्याद (इत्यपि)।

खानेसेबचा न. न. स. स. न.

जूंठा सौहित्यं तर्पणं तृप्तिः फेला भुक्तसमुज्झितम्॥ ५६॥

सपीति, तुल्यपान ये २ साथ पीने के नाम हैं। इनमें 'सपीति' स्त्रीलिङ्ग है। सग्धि, सहभोजन ये २ साथ भोजन के नाम हैं। इनमें 'सग्धि' स्त्रीलिङ्ग है। उदन्या, पिपासा, तृट् "तृषा" तर्ष, "तृष्णा" ये ४ प्यास के नाम हैं। जग्धि, भोजन, जेमन 'जमन' लेह "लेप" आहार, निघस, "विघस" न्याद

१ "गुरुयोत्पन्नं च पीयूषं नवक्षीरेऽमृतेऽपि च" (इति हारावली)॥

ये ७ भोजन (खाने) के नाम हैं। सौहित्य, तर्पण, तृप्ति ये ३ अघाने या अफरे या आसूदा के नाम हैं और जो पहले खाया व पीछे से शेष को त्याग दिया है उसे 'फेला' कहते हैं अथवा 'फेला' "फेलि, फेलक" भुक्तसमुज्झित ये २ खाने से बचे हुए के नाम हैं ॥ ५५ । ५६ ॥

न. न. न. न. न. न.

चाह **कामं प्रकामं पर्याप्तं निकामेष्टं यथेप्सितम् ।**

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

अहीर **गोपे गोपालगोसंख्यगोधुगाभीरवल्लवाः ॥ ५७ ॥**

काम, प्रकाम, पर्याप्त, निकाम, इष्ट और यथेप्सित ये ६ चाह या क्रियाविशेषण के नाम हैं। जैसेकि, "यथाकामं रामो भुङ्क्ते स्म" रामजी ने यथेष्ट भोजन किया है। गोप, गोपाल, गोसंख्य, गोधुक् (ह्) "गोदुह" आभीर, "अभीर" और वल्लव ये ६ गोपाल या अहीर के नाम हैं ॥ ५७ ॥

न. पु.

पशु या चौपाये गोपाल, गैयोंका गरोह **(गोमहिष्यादिकं) पादबन्धनं (द्वौ) गवीश्वरे ।**

पु. पु. न. न. पु.

गोमान् गोमी गोकुलं(तु)गोधनं(स्या)द्गवां व्रजे ॥५८॥

गौ, भैंस आदिकों को पादबन्धन या "यादबन्धन" कहते हैं यह १ गैया, भैंस, गदही, बकरी या भेड़ आदि चौपायों का नाम है। गौओं के स्वामी में गोमान् और गोमी ये दो होते हैं यानी गवीश्वर, गोमान् और गोमी (न्) ये ३ गोस्वामी के नाम हैं और गौओं के समुदाय में गोकुल, गोधन ये दोनों होते हैं यानी गोकुल, गोधन और गवांव्रज ये ३ गौओं के गरोह के नाम हैं ॥ ५८ ॥

पु.स.न.

जहां पहले गौओं ने चरा या खाया **(त्रिष्वा)शितंगवीनं (तद्गावो यत्राशिताःपुरा) ।**

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

बैल **उक्षा भद्रो बलीवर्द ऋषभो वृषभो वृषः ॥ ५९ ॥**

बैलोंका गरोह, पु. पु. पु. न.

गैया, बछड़ों **अनड्वान्सौरभेयो गौ(रुक्ष्णांसंहति) रौक्षकम् ।**

और धेनुओंका स. स. न. न.

झुण्ड **गव्या गोत्रा (गवां वत्सधेन्वो) र्वात्सकधैनुके ॥ ६० ॥**

जहां पहले गौओं को खिलाया या चराया है उस स्थल को 'आशितंगवीन' कहते हैं। यह १ पुराने खरिक या गोठ का नाम है। यह त्रिलिङ्ग है। उक्षा (न्) भद्र, बलीवर्द, ऋषभ, वृषभ, वृष, अनड्वान्, सौरभेय, स्त्री, 'सौरभेयी' और गो ये ६

बैल के नाम हैं । बैलों के समुदाय को 'औक्षक' कहते हैं । यह १ बैलों के समूह का नाम है । गौओं के समूह को गव्या, और गोत्रा कहते हैं ये २ गैयोंके गरोह के नाम हैं । बछड़ों का समूह 'वात्सक' कहलाता है यह १ बछड़ों के झुण्ड का नाम है और धेनुओं का समूह 'धैनुक' कहाजाता है यह १ धेनु-समुदाय का नाम है ॥ ५९ । ६० ॥

पु. पु. पु.
बड़ा बैल, बूढ़ा बैल — (उक्षामहान्) महोक्षः (स्याद्) वृद्धोक्ष (स्तु) जरद्गवः ।
पु. पु.
कलोर, नया बछड़ा — (उत्पन्न उक्षा) जातोक्षः सद्योजात (स्तु) तर्णकः ॥६१॥

यदि बड़ा भारी बैल हो तो 'महोक्ष' कहलाता है । यह १ भारी बैल का नाम है । वृद्धोक्ष, जरद्गव, स्त्री 'जरद्गवी' ये २ बूढ़े बैल के नाम हैं । उपजा वृषभभाव को प्राप्त हुआ बैल 'जातोक्ष' कहाजाता है । यह १ कलोर का नाम है और जो तत्काल उपजा बछड़ा है उसे 'तर्णक' कहते हैं यह १ नये बछड़े का नाम है ॥ ६१ ॥

पु. पु. पु. पु.
बछड़ामात्र, नाटा — शकृत्करि (स्तु) वत्सः (स्याद्) दम्यवत्सतरौ (समौ) ।
पु. पु. पु. पु.
बधिया, सांड़ — आर्षभ्यः (षण्डतायोग्यः) षण्डोगोपतिरिट्चरः ॥६२॥

शकृत्करि, वत्स ये २ बछड़ामात्र के नाम हैं । दम्य, वत्सतर ये २ जवान बछड़े या नाटा के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । जो बधिया करने के योग्य होता है वह 'आर्षभ्य' कहाजाता है । यह १ बधिया करने लायक का नाम है और षण्ड, "शण्ढ" गोपति, इट्चर या "इत्वर" ये ३ सांड़ के नाम हैं ॥ ६२ ॥

पु. स. पु.
कान्धा, गलकंवरी — (स्कन्धप्रदेशस्तु) वहः सास्ना (तु) गलकम्बलः ।
पु. पु. पु. पु.
नाथे बैल, काढ़े बैल — (स्यान्न) स्तित (स्तु) नस्योतः प्रष्ठवाड्युगपार्श्वगः ॥६३॥

इस बैल के कांधों का जो प्रदेश है उसे "वह" कहते हैं यह १ बैलों के कांध का नाम हैं । सास्ना, गलकम्बल ये २ गलकंवरी या गौओं के गले में लटकते हुए चाम के नाम हैं । नस्तित, 'नस्योत' या "नस्तोत" ये २ नाथ से नथे हुए बैल के नाम हैं और प्रष्ठवाट् या "पष्ठवाट्" युगपार्श्वग या "युगपार्श्वक" ये २ घसीटा में नहे हुए या सिखलाने के समय कण्ठ में लगाये हुये काठ के बहने वाले बैल के नाम हैं ॥ ६३ ॥

जोतनियां लदनियां गाड़ी का बैल हलवाही

पु. पु. पु.
(युगादीनां तु वोढारो) युग्यप्रासङ्ग्यशाकटाः ।
पु. पु.
(खनति तेन तद्वोढास्येदं) हालिकसैरिकौ ॥ ६४ ॥

जुवां आदि के लेजानेवाले युग्य, प्रासङ्ग्य और शाकट कहलाते हैं यानी जुवां का लेजानेवाला " युग्य " कहाता है यह १ जोतनियां बैल का नाम है । बछड़ों को दमन के समय जो काठ डालते हैं वह ' प्रासंग ' है उसका लेजानेवाला ' प्रासंग्य ' कहाजाता है यह १ लदनियां का नाम है और जो शकट (गाड़ा) का लेजानेवाला है उसे ' शाकट ' कहते हैं यह १ गाड़ी के बैल का नाम है । " उससे खोदता, उसका लेजानेवाला, उसका यह " इन अर्थों में 'हालिक' और 'सैरिक' कहे जाते हैं । जैसेकि, हल से खनता, हलका लेजानेवाला, हलका यह ' हालिक ' कहाता है और सीरसे खनता, सीरका लेजानेवाला, सीरका यह ' सैरिक ' कहलाता है ये २ हलवाह या जोतू बैल के नाम हैं ॥ ६४ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
धुरिहा बैल, धूर्वहे धुर्यधौरेयधुरीणाः सधुरंधराः ।
पु. पु. पु.
एकधुरावाही (उभावे) कधुरीणैकधुरावेकधुरावहे ॥ ६५ ॥

धूर्वह, या " धूर्धर " धुर्य, धौरेय, धुरीण और धुरंधर ये ५ धुरन्धर, धुरिहा या बलवान् बैल के नाम हैं और एकधुरीण, एकधुर, एकधुरावह ये ३ एकही धुरा के धारनेहारे या लेजानेवाले के नाम हैं ॥ ६५ ॥

पु. पु.
सर्वभारवाही (सतु) सर्वधुरीणो (यो भवेत्) सर्वधुरावहः ।
स. स. स. स. स. स.
गैया माहेयी सौरभेयी गौरुस्रा माता (च) शृङ्गिणी ॥ ६६ ॥
स. स. स. स.
उत्तम गैया अर्जुन्यघ्न्यारोहिणी(स्यात्)(स्यादुत्तमा गोषु) नैचिकी ।

जो बैल सारे भार का ढोनेवाला होता है वह ' सर्वधुरीण ' कहाजाता है । यह १ सब भार के लेचलनेवाले का नाम है । माहेयी, सौरभेयी, गो, उस्रा, माता (तृ) शृङ्गिणी, अर्जुनी, अघ्न्या और रोहिणी ये ६ गौओं के नाम हैं । इनमें ओदन्त गोशब्द है एकत्व में ' गौः ' द्वित्व में ' गावौ ' और बहुत्व में ' गावः ' ये होते हैं और जो गौओं में अच्छे गुणोंवाली या उत्तम जातिवाली है उसको

नैचिकी, नीचिकी, नीचिका या निचिकी कहते हैं। यह १ सीधी, सादी भली गौ का नाम है ॥ ६६ । ३ ॥

चितकबरी आदि — (वर्णादिभेदात्संज्ञाः स्युः)शवलीधवला (दयः)॥६७॥
दो वर्ष की, एक वर्ष की — द्विहायनी द्विवर्षा (गौ)रेकाब्दा(त्वे)कहायनी।
चारवर्ष की, तीनवर्ष की — चतुरब्दा चतुर्हायण्ये (वं) त्र्यब्दा त्रिहायणी॥ ६८ ॥

वर्ण, प्रमाण और अवयवों के भेद से शवली, धवला आदि संज्ञायें होती हैं शवली या "शवला" यह १ चितकबरी गौका नाम है। धवला, या "धवली" यह १ उजली (सफ़ेद) गौका नाम है। आदि पद से "कृष्णा" यह १ काली या श्यामा गौका नाम है। 'कपिला' यह १ भूरी गौका नाम है। "पाटला' यह १ लालवर्णवाली गौका नाम है इत्यादिकों का ग्रहण किया जाता है। प्रमाण भेद से 'ह्रस्वा' छोटी, 'दीर्घा' बड़ी और 'वामनी' बौनी आदि लीजाती हैं। अवयवभेद से पिङ्गाक्षी, लम्बकर्णी और वक्रशृङ्गी आदिकों का ग्रहण होताहै यह एक २ शवला आदिकों का नाम है। अब वयोभेद से संज्ञाभेद कहते हैं कि, जो गौ दो वर्ष की उमरवाली हो तो वह 'द्विहायनी' और 'द्विवर्षा' कहलाती है। ये २ दो वर्ष की गौके नामहैं। जो एक साल की गौ हो तो उसे 'एकाब्दा' और 'एकहायनी' कहते हैं ये २ एकवर्ष की गौके नाम हैं। जो चार साल की गौ हो तो वह 'चतुरब्दा' और 'चतुर्हायणी' कहाती है। ये २ चार वर्षवाली के नाम हैं और जो तीन साल की गौ हो तो उसे 'त्र्यब्दा' और 'त्रिहायणी' कहते हैं ये २ तीन वर्षवाली के नाम हैं ॥ ६७ । ६८ ॥

बहिला, गिरेगर्भवाली, गर्भिणी — वशा बन्ध्यावतोका (तु) स्रवद्गर्भा (थ) संधिनी।
विना समय बैल के पास जानेवाली — (आक्रान्ता वृषभेण) (थ) वेहद्गर्भोपघातिनी॥६९॥

वशा, बन्ध्या ये २ बहिला या बांझ गौके नाम हैं। अवतोका "वतोका" स्रवद्गर्भा ये २ गिरे हुए गर्भवाली के नाम हैं। जो बैल से चढ़ी गई हो यानी बर्दी गई हो उसे 'सन्धिनी' कहते हैं यह १ थिरानी या बर्दती हुई का नाम है और वेहत्, गर्भोपघातिनी ये २ बैलके संयोग से गर्भ गिरानेवालीके नामहैं॥६९॥

गर्भधारनेयोग्य, स. स. स. स.
गाभिनकलोर काल्योपसर्या (प्रजने) प्रष्ठौही बालगर्भिणी।
या ओसर सीधी स. स. स. स.
बहुतबार ब्यानी (स्याद) चण्डी (तु) सुकरा बहुसूतिः परेष्टुका॥७०॥

गर्भ ग्रहण करने में जिसका समय प्राप्त हुआ है वह 'उपसर्या' कहलाती है। यह १ गर्भ धारने योग्य गौका नाम है। प्रष्ठौही या "पष्ठौही" बालगर्भिणी ये २ गाभिन कलोर या ओसर या पहलेपहिल गाभिन के नाम हैं। अचण्डी, सुकरा ये २ सुशीला या सीधी गौके नाम हैं और बहुसूति, परेष्टुका ये २ बहुत बार ब्यानी या बहुत से बच्चे देनेवाली के नाम हैं॥ ७०॥

स. स. स. स.
बकेनि,नईब्याई, चिरसूता वष्कयिणी धेनुः (स्या) न्नवसूतिका।
दुहनेमें सीधी, स. स. स. स.
मोटे थनवाली सुव्रता सुखसन्दोह्या पीनोध्नी पीवरस्तनी॥७१॥

चिरसूता, वष्कयिणी, "वष्कयणी" "बस्कयनी" ये २ जिसका बछड़ा जवान या एक सालका है उसके या बकेना के नाम हैं। धेनु, नवसूतिका ये २ नई ब्यानी हुई के नाम हैं। सुव्रता, सुखसन्दोह्या "सुखसन्दुह्या" ये २ दुहने में नहीं दिक़ करनेवाली या चुपचाप टिकनेवाली के नाम हैं और पीनोध्नी, पीवरस्तनी ये २ मोटे थनवाली या बड़े अयनवाली के नाम हैं॥ ७१॥

स. स. स.
द्रोण भर दूध द्रोणक्षीरा द्रोणदुघा धेनुष्या (बन्धके स्थिता)।
देनेवाली,गिरवी स.
धरीहुई,बरसायइ समांसमीना (सा यैव प्रतिवर्षं प्रसूयते)॥७२॥

द्रोणक्षीरा, द्रोणदुघा ये २ द्रोणभर दूध देनेवाली के नाम हैं। जो बन्धक में टिकी हो यानी गिरवी धरी गई हो तो वह 'धेनुष्या' कहलाती है यह १ ऋणदाता के दुहने के लिये ऋण देने पर्यन्त जो गिरों रक्खी गई है उसका नाम है और ज़ो साल २ भँर में बच्चा देती है उसे 'समांसमीना' कहते हैं यह १ बरसायन या बरसोड़ी का नाम है॥ ७२॥

अयन न. न. पु.
खूंटा ऊधः (स्तु क्लीब) मापीनं (समौ) शिवककीलकौ।
नोइन स.न. न. स. स.
गेरांव (न पुंसि) दाम संदानं पशुरज्जु (स्तु) दामनी॥७३॥

ऊधः (स्) उधः (स्) या "ओघः" आपीन ये २ गायके अयन या थनके नाम हैं । ये दोनों नपुंसक हैं । शिवक, कीलक ये २ गैयों के बांधने के लिये गड़े हुए खूंटा के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । दाम (न्) दामा (न्) दामा (मा) सन्दान ये २ दुहने के समय पायँ सांदने की रस्सी या 'नोइन' के नाम हैं । इनमें दाम (न्) पुंलिङ्ग नहीं है बरन स्त्री व नपुंसकलिङ्ग है और पशुरज्जु, दामनी या ' साम्नी ' और " बन्धनी " भी ये २ गेरांव, ज्वड़ायल या न्वेढ़ा के नाम हैं अथवा बहुतसी गांठोंवाली जिस रस्सी में बहुतसे चौपाये बांधे जाते हैं उसके नाम हैं ॥ ७३ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

मथानी या रई **वैशाखमन्थमन्थानमन्थानोमन्थदण्डके ।**

खंभा पु. पु. स. स.

महेड़ा **कुठरो दण्डविष्कम्भे मन्थनी गर्गरी (समे) ॥ ७४ ॥**

वैशाख, मन्थ, मन्थान, मन्थाः (थिन्) मन्थदण्डक ये ५ मथानी, रई, खैलरि या छोढ़ी के नाम हैं । इनमें चौथा इन्नन्त होकर पुंलिङ्ग है । कुठर या "कुटर" दण्डविष्कम्भ ये २ जिस खंभे में मथने का दण्ड बांधते हैं उसके नाम हैं और मन्थनी, गर्गरी या "कलशी" भी ये २ मन्थनपात्र, महेड़ा या महेड़िया के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ ७४ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.

ऊंट, बच्चे **उष्ट्रे क्रमेलकमयमहाङ्गाः करभः (शिशुः) ।**

काठ में बँधे पु.

छोटे बच्चे **(करभाःस्युः) शृङ्खलका (दारवैः पादबन्धनैः) ॥७५॥**

उष्ट्र, क्रमेलक, मय और महाङ्ग ये ४ ऊंट के नाम हैं और जो ऊंट का बच्चा है वह ' करभ ' कहलाता है यह १ ऊंट के बच्चे का नाम है और जो काष्ठमय पादबन्धनों से बँधे हुए बच्चे हैं उनको 'शृङ्खलक' कहते हैं यह १ काठ की बेड़ी में बँधे हुए छोटे बच्चों का नाम है ॥ ७५ ॥

स. स. पु. पु. पु. पु. पु.

बकरी बकरा **अजा छागी स्तभच्छागवस्तछगलका अजे ।**

पु. पु. पु. पु. पु. पु. पु.

भेड़ा **मेढ्रोरभ्रोरणोर्णायुमेषवृष्णय एडके ॥ ७६ ॥**

अजा, छागी ये २ बकरी, छेरी या छगड़ी के नाम हैं । स्तभ या " तुभ "

---

१ " ऊर्णाया युस् ५।२।१२३ " सित्त्वात्पदत्वम् अत्र छन्दसीति केचिदनुवर्तयन्ति । युक्तं चैतत् अन्यथा हि "अहंशुभमोर्युस्" इत्यत्रैवोर्णाग्रहणं कुर्यादिति ॥

या " शुभ " छाग, " छग " वस्त, " बस्त या वस्तक " छगलक " छागल— छगल " और अज ये ५ बकरा या छगड़ा के नाम हैं और मेढ़, उरभ्र, उरण, ऊर्णायुः (स्) मेष, वृष्णि और एड़क स्त्री " एड़का " ये ७ मेढ़ा या भेड़ा के नाम हैं ये सबही पुंलिङ्ग हैं ॥ ७६ ॥

न. न. न.
ऊंट, भेड़, (उष्ट्रोरभ्राजवृन्दे स्या) दौष्ट्रकौरभ्रकाजकम् ।
बकरों का पु. पु. पु. पु. पु.
समूह गदहा चक्रीवन्त(स्तु)बालेया रासभा गर्दभाः खराः ॥ ७७ ॥

ऊंट, भेड़ और बकरों के समूह (गरोह) में औष्ट्रक, औरभ्रक और आजक ये क्रम से होते हैं । यानी ऊंटों के समुदाय को "औष्ट्रक" कहते हैं यह १ ऊंट समूह का नाम है । उरभ्रों (मेढ़ों) के समूह को " औरभ्रक " कहते हैं यह १ भेड़ों के समुदाय का नाम है और अजों (बकरों) का समूह " आजक " कहाता है यह १ बकरों के वृन्द (झुण्ड) का नाम है और चक्रीवान् , बालेय, रासभ, गर्दभ और खर स्त्री " खरी " ये ५ गदहों के नाम हैं । ये नित्य बहुवचनान्त नहीं हैं बरन बहुत्व से बहुवचनान्त कहाते हैं ॥ ७७ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
बनियां या वैदेहकः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ।
पु. पु पु.
साहूकार पण्याजीवो(ह्या)पणिकः क्रयविक्रयिक(श्च सः) ॥७८॥

वैदेहक या "विदेह" सार्थवाह, नैगम या "निगम" वाणिज, या "वाणिजिक" वणिक् (ज्) पण्याजीव , आपणिक और क्रयविक्रयिक ये ८ खरीदने व बेंचने से आजीविका करते हुए साहूकार या व्यापार करनेवाले बनियां के नाम हैं ॥७८॥

बेचनेवाले पु. पु. पु. पु.
खरीदनेवाले विक्रेता (स्या) द्विक्रयिकः क्रायकः क्रयिकः (समौ) ।
बनियांपन न. स. न. पु. पु.
मोल वाणिज्यं (तु)वणिज्या(स्यान्)मूल्यं वस्नोऽप्यवक्रयः७९

विक्रेता, विक्रयिक ये २ बेंचनेवाले या वस्त्र, पात्र आदि देकर मूल्य लेनेवाले के नाम हैं । क्रायक, क्रयिक ये २ मोल लेनेवाले या मूल्य देकर वस्त्र आदि के खरीदनेवाले के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । वाणिज्य, " वणिज्य " वणिज्या ये २ बनियों के कर्म के नाम हैं इनमें " वणिज्या " यह

१ यथाऽयं "निगमकल्पतरोर्गलितं फलमिति भागवते" ॥

स्वभाव से स्त्रीलिङ्ग है यह माधव का मत है और मूल्य, वस्न और अवक्रय ये ३ बिकने की वस्तुवों के मोल के नाम हैं ॥ ७९ ॥

स.　पु.　न.　पु.　न.　न.

पूंजी या मूर — नीवी परिपणो मूलधनं लाभोऽधिकं फलम् ।

लाभ या नफा　न.　पु.　पु.　पु.

अदला बदला — परिदानं परीवर्तो नैमेयनिमया (अपि) ॥ ८० ॥

नीवी या "नीवि" परिपण, मूलधन ये ३ खरीदने या बेचने में मूलधन (मूर) या पूंजी के नाम हैं । लाभ, अधिक, फल ये ३ मूलधन से पैदा हुए लाभ या नफ़ा के नाम हैं और परिदान या "प्रतिदान" परीवर्त, नैमेय या "वैमेय" निमय या "विनिमय" ये ४ एराफेरी या अदला बदला के नाम हैं । इनमें "परिदत्तं परिदानम्" यह नपुंसक है ॥ ८० ॥

धरोहरि धरना　पु.　पु.　न.　न.

धरोहरि देना — (पुमानु) पनिधिर्न्यासः प्रतिदानं (तदर्पणम्) ।

बेचनेकी वस्तु

खरीदने की　पु.स.न. पु.म.न.

वस्तु — (क्रये प्रसारितं) क्रय्यं क्रेयं (क्रेतव्यमात्रके) ॥ ८१ ॥

उपनिधि, न्यास ये २ धरोहरि या थाती के नाम हैं । इनमें 'उपनिधि' पुंलिङ्ग है और घञन्त होने से 'न्यास' भी पुंलिङ्ग है । उस धरोहरि का जो फेर देना है उसे 'प्रतिदान' कहते हैं यह १ जिसकी थाती रक्खी गई हो उसे लौटा देने का नाम है अथवा प्रतिदान, तदर्पण ये २ मालिक को धरोहरि सौंप देने के नाम हैं । खरीदने व बेचने के स्थल में यानी बाज़ार में ग्राहकगण खरीदेंगे इस बुद्धि से जो फैलाई गई वस्तु (चीज़) है उसे 'क्रय्य' कहते हैं यह १ खरीदनेवाले लेवेंगे इस बुद्धिसे बाज़ार में फैलाई हुई वस्तु का नाम है और क्रेतव्यमात्र अर्थ में जो खरीदने के योग्य वस्तु है वह "क्रेय" कहाती है यह १ हाट में फैलाने योग्य वस्तु का नाम है ॥ ८१ ॥

पु.स.न.　पु.स.न.　पु.स.न.

बिकाऊ वस्तु — विक्रेयं पणितव्यं (च) पण्यं (क्रय्यादयस्त्रिषु) ।

न.　पु.　स.

बयाना — (क्लीबे)सत्यापनंसत्यंकारःसत्याकृतिः(स्त्रियाम्)॥८२॥

विक्रेय, पणितव्य, पण्य ये ३ बिकने की वस्तु के नाम हैं । ये 'क्रय्य' आदि 'पण्य' पर्यन्त शब्द त्रिलिङ्ग हैं यानी वाच्यलिङ्ग कहाते हैं और सत्यापन, या "सत्यापना" सत्यंकार, सत्याकृति ये ३ बयाना या 'साई' के नाम हैं इनमें

---

१ 'इवि प्रीणने' (भ्वा. प. से.) "अनित्यमागमशासनम्" इति न नुम्, "इगुपधात्कित्" इतीन् कृदिकारादिति वा ङीष् ॥

'सत्यापन' यह नपुंसकहै, 'सत्यंकार' पुंलिङ्ग और 'सत्याकृति' स्त्री लिङ्ग है ॥८२॥

बेचना गिनती पु. पु.
१ से १८ तक **विपणो विक्रयः (संख्याः संख्येये ह्यादश त्रिषु)।**
२० से परार्द्ध पर्यन्त **विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययोः ॥ ८३ ॥**

विपण, विक्रय ये २ बेंचने के नाम हैं। दश (न्) शब्द पर्यन्त एक आदि अष्टादश पर्यन्त संख्याशब्द संख्येय में वर्तमान होते हुए तीनों लिङ्ग में होते हैं जैसेकि, "एकः पटः, एका शाटी, एकं कुण्डम्। दश पटाः, दश स्त्रियः, दश कुण्डानि" ये होते हैं यहां "हि" अवधारण अर्थ में है उसीसे इन्होंकी समानाधिकरण सेही वृत्ति होती है जैसेकि, "एको विप्रः, दश विप्राः" आदि होते हैं वैयधिकरण्य से वृत्ति नहीं कीजाती है यानी 'एको विप्रस्य' ब्राह्मण का एक है, "दश विप्राणाम्" ब्राह्मणों के दश हैं इत्यादि नहीं होते हैं ऐसेही अष्टादश पर्यन्त उदाहरण बनाना चाहिये इनमें चतुर्शब्द पर्यन्त वाच्यलिङ्ग हैं शेष त्रिलिङ्ग कहलाते हैं और बीस से लेकर परार्द्ध पर्यन्त सारी संख्यायें संख्येय और संख्या में वर्तमान होती हुई नित्य एकवचनान्त रहती हैं उसीसे भाष्यकार ने भी कहा है कि "आदशभ्यः संख्या संख्येये वर्तते, ऊर्ध्वं संख्याने संख्येये च" एक से लेकर अठारह तक संख्या संख्येय में वर्तती हैं उपरान्त विंशति से लेकर परार्द्ध पर्यन्त संख्या संख्यान और संख्येय में रहती हैं तहां संख्येय में जैसेकि, "विंशतिः पटाः, विंशतिर्घटाः, विंशत्या पुरुषैः कृतम्, सन्ति शतं गावः" आदि होते हैं। संख्या में जैसेकि, "पटानां घटानां वा विंशतिः, गवां शतम्" आदि होते हैं यह क्षीरस्वामी और मुकुट आदि आचार्यों का सिद्धान्त है ॥ ८३ ॥

संख्यार्थे द्विबहुत्वे स्तस्तासु चानवतेः स्त्रियः।
पङ्क्तेः शतसहस्रादि क्रमाद्दशगुणोत्तरम् ॥ ८४ ॥

विंशति आदिकों का जब संख्या अर्थ होता है तब उनसे द्विवचन और बहुवचन भी होते हैं यानी संख्यामात्र अर्थ में वर्तमान होते हुए विंशति आदि संख्यावाची शब्दों से द्विवचन व बहुवचन भी एकशेष से होते हैं जैसेकि, "द्वे विंशती, तिस्रो विंशतयः, गवां विंशती, गवां विंशतयः" आदि होते हैं और जब भेदविवक्षा होती है यानी संख्यान्तर अर्थ में विंशति आदि वर्तमान होते हैं तब समानाधिकरण से उपचार के द्वारा उनसे द्विवचन और बहुवचन भी होते हैं जैसेकि, "द्वे विंशती, तिस्रो विंशतयः" आदि होते हैं और समानाधिकरण के

---

१ इकाई, दहाई, सैकड़ा, हजार, दशहजार, लाख, दशलाख, करोड़, दशकरोड़, अर्ब, दशअर्ब, खर्ब, दशखर्ब, नील, दशनील, पद्म, दशपद्म, शंख और दशशंख आदि गिनतियां होती हैं ॥

अभाव में भी "गवां विंशती, गवां विंशतयः" आदि होते हैं यह क्षीरस्वामी तथा मुकुट का भी मत है उन विंशति आदिकों में 'नवति' पर्यन्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं जैसेकि, "विंशत्या पुरुषैः कृतम्, विंशतिः कुण्डानि" ये होते हैं और पंक्ति, विंशति, त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत्, षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति और शत ये रूढ़ि शब्द निपात से सिद्ध होते हैं पंक्ति "दशसंख्या" से लेकर जिसमें दशगुण उत्तर है वह संख्या क्रमसे शत, सहस्र आदि जानना चाहिये, दश पंक्तियों का सौ होता है, दश सौ का 'सहस्र' और दश सहस्र का 'अयुत' होता है जैसे कहा है कि, "एकदशशतसहस्रायुतलक्षप्रयुतकोटयः क्रमशः । अर्बुदमब्जं खर्वनिखर्वमहापद्मशङ्कवस्तस्मात् । जलधिश्चान्त्यं मध्यं परार्द्धमिति दशगुणोत्तराः संज्ञाः । संख्यायाः स्थानानां व्यवहारार्थं कृताः पूर्वैरिति" इन संख्याओं को व्यवहार के लिये पूर्वाचार्यों ने किया है ॥ ८४ ॥

तौल या नाप न. न. न. न.
तौल के भेद **यौतवं द्रुवयं पाय्य (मिति) माना (र्थकं त्रयम्)।**
घुंघुची से स. स. पु. पु.
माशातक **(मानं) तुलाङ्गुलिप्रस्थैः (गुञ्जाः पञ्च) द्यमाषकः ॥८५॥**

यौतव, द्रुवय और पाय्य ये तीनों मानार्थक या प्रमाणार्थक कहाते हैं ये ३ तौल या माप के नाम हैं "अब मानभेदों को कहते हैं" कि, वह प्रमाण तुला, अंगुली और प्रस्थ आदि से जुदे जुदे होते हैं तुलामान अङ्गुलिमान और प्रस्थमान ये ही ३ उन्मान, प्रमाण, परिमाण शब्दोंद्वारा क्रम से व्यवहार किये जाते हैं जैसे कहा है कि, "ऊर्ध्वमानं किलोन्मानं परिमाणं तु सर्वतः । आयामस्तु प्रमाणं स्यात् संख्याभिन्ना तु सर्वतः" ये ३ तौल के भेदों के नाम हैं और पांच गुञ्जाओं "घुंघुचियों" का आद्यमाषक, माष और मास भी होता है यह १ माष "माशा" का नाम है ॥ ८५ ॥

तोला, चार पु. पु.न. न.
तोला, अस्सी **(ते षोडश) क्षः कर्षो (ऽस्त्री) पलं (कर्षचतुष्टयम्)।**
घुंघुची भर, या पु.न. पु.न. पु.
मोहर भर, पल **सुवर्णबिस्तौ (हेम्नोऽक्षे) कुरुबिस्त (स्तु तत्पले) ॥८६॥**

उन सोलह माशों का 'अक्ष' और 'कर्ष' होता है ये २ तोले या सोलह माशे के नाम हैं । इनमें 'अक्ष' पुंलिङ्ग और 'कर्ष' पुंनपुंसक है । चार कर्ष का 'पल' होता है यह १ चार कर्ष या चार तोले का नाम है अथवा पल और कर्षचतुष्टय ये २ चार तोले के नाम हैं । सोने के अक्ष में सुवर्ण और बिस्त ये दोनों होते हैं

१ यवो द्वादशभिर्गौरसर्षपैः प्रोच्यते बुधैः । यवद्वयेन गुञ्जा स्यात्त्रिगुञ्जो वल्ल उच्यते । माषो गुञ्जाभिरष्टाभिः सप्तभिर्वा भवेत्क्वचित् । चतुर्भिर्माषकैः शाणः स निष्कटङ्क एव च । गद्याणो माषकैः षड्भिः कर्षः स्याद्दशमाषकः । चतुःकर्षैः पलं प्रोक्तं दशशाणमितं बुधैः । चतुःपलैश्च कुडवः प्रस्थाद्याः पूर्ववन्मताः ॥ शास्त्रीयप्रमाणसे पांच रत्ती का 'माशा' होता है और चरक या सुश्रुत आदि के मान से छः रत्ती, सात रत्ती या आठ रत्ती का माशा कहा है ॥

ये २ अस्सी घुंघुची भर या मोहर भर के नाम हैं और उस सुवर्ण के पल में 'कुरुविस्त' होता है यह १ स्वर्ण पलका नाम है यह पुंलिङ्ग है ॥ ८६ ॥

स. पु.
सौपल,बीसतुला **तुला (स्त्रियां पलशतं) भारः (स्याद्विंशतिस्तुला)।**
दश भार पु.न. पु.
गाड़ाभर भार **आचितो (दश भाराः स्युः) (शाकटो भार) आचितः ८७**

सौपलों की एक ' तुला ' होती है यह १ सौपलका नाम है । यह स्त्रीलिङ्ग है । बीस तुलाओं का एक 'भार' या 'भर' होता है यह १ बीस तुला का नाम है । दश भारों का 'आचित' होता है यह १ दश भार का नाम है । यह पुंनपुंसक लिङ्ग है और जो गाड़ा से लेजाने योग्य भार है वह भी " आचित " कहलाता है यह १ गाड़ीभर भार का नाम है ॥ ८७ ॥

पु. पु. पु.
रुपया-पैसा **कार्षापणः कार्षिकः (स्यात्) (कार्षिके ताम्रिके) पणः ।**

कार्पापण या " कार्षापणक " कार्पिक ये २ राजतकर्षपरिमित रूप या रुपया का नाम है और तांबे के कर्षपरिमित को ' पण ' कहते हैं यह १ पैसे का नाम है इस प्रकार तुला (तराजू) मान कहा गया और जो अंगुलिमान हस्त आदि है वह तो मनुष्यवर्ग में कह चुके हैं ॥ १ ॥

प्रस्थमानं त्वाह—

आढक आदि **अस्त्रियामाढकद्रोणौ खारी वाहो निकुञ्चकः ॥ ८८ ॥**
मान विशेष **कुडवः प्रस्थ इत्याद्याः परिमाणार्थकाः पृथक् ।**

---

१ " न मानेन विना युक्तिर्द्रव्याणां जायते क्वचित् । अतः प्रयोगकार्यार्थं मानमत्रोच्यते मया । चरकस्य मतं वैद्यैराद्यैर्यस्मान्मतं ततः । विहाय सर्वमानानि मागधं मानमुच्यते । त्रसरेणुर्बुधैः प्रोक्तस्त्रिंशता परमाणुभिः । त्रसरेणुस्तु पर्यायनाम्ना वंशी निगद्यते । जालान्तरगतैः सूर्यकरैर्वंशी विलोक्यते । षड्वंशीभिर्मरीचिः स्यात्ताभिःषड्भिश्च राजिका । तिसृभी राजिकाभिश्च सर्षपः प्रोच्यते बुधैः । यवोऽष्टसर्षपैः प्रोक्तो गुञ्जा स्यात्तच्चतुष्टयम् । षड्भिस्तु रत्तिकाभिः स्यान्माषको हेमधानकौ । माषैश्चतुर्भिः शाणः स्याद्धरणः स निगद्यते । टङ्कः स एव कथितस्तद्द्वयं कोल उच्यते । क्षुद्रको वटकश्चैव द्रंक्षणः स निगद्यते । कोलद्वयं तु कर्षः स्यात्स प्रोक्तः पाणिमानिका । अक्षः पिचुः पाणितलं किंचित्पाणिश्च तिन्दुकम् । विडालपदकं चैव तथा षोडशिका मता । करमध्यो हंसपदं सुवर्णं कवलग्रहः । उदुम्बरं च पर्यायैः कर्षमेव निगद्यते । स्यात्कर्षाभ्यामर्धपलं शुक्तिरष्टमिका तथा । शुक्तिभ्यां च पलं ज्ञेयं मुष्टिराम्रं चतुर्थिका । प्रकुञ्चः षोडशी बिल्वं पलमेवात्र कीर्त्यते । पलाभ्यां प्रसृतिर्ज्ञेया प्रसृतं च निगद्यते । प्रसृतिभ्यामञ्जलिः स्यात्कुडवोऽर्धशरावकः । अष्टमानं च स ज्ञेयः कुडवाभ्यां च मानिका । शरावोऽष्टपलं तद्वज्ज्ञेयमत्र विचक्षणैः । शरावाभ्यां भवेत्प्रस्थश्चतुःप्रस्थैस्तथाढकः । भाजनं कांस्यपात्रं च चतुःषष्टिपलश्च सः । चतुर्भिराढकैर्द्रोणः कलशो नल्वणोऽर्मणः । उन्मानं च घटो राशिर्द्रोणपर्यायसंज्ञितः । द्रोणाभ्यां सूर्पकुंभौ च चतुःषष्टिः शरावकः । सूर्पाभ्यां च भवेद्द्रोणी वाहो गोणी च सा स्मृता । द्रोणीचतुष्टयं खारी कथिता सूक्ष्मबुद्धिभिः । चतुस्सहस्रपालिकः षण्णवत्यधिका च सा । पलानां द्विसहस्रं च भार एकः प्रकीर्तितः । तुला पलशतं ज्ञेयं सर्वत्रैवैष निश्चयः । माषकंकाक्षबिल्वानि कुडवः प्रस्थमाढकम् । राशिर्गोणी खारिकेति यथोत्तरचतुर्गुणम्" (इति भावप्रकाशः) ॥

चार प्रस्थ का 'आढक' होता है यह १ चार सेर का नाम है। यह पुंनपुंसक लिङ्ग है। चार आढक को 'द्रोण' कहते हैं यह १ चार आढक का नाम है। यह भी पुंनपुंसक है। चार द्रोणों की 'खारी' कहलाती है यह १ चार द्रोण का नाम है। दो सूर्पों का "वाह" होता है यह १ द्रोणी या गोणी का नाम है। मूठी भर मान को 'निकुञ्चक' या 'प्रकुञ्चक' कहते हैं यह १ मूठीभरका नाम है। पावसेर का मान 'कुडव' कहलाता है यह १ बीस तोले का नाम है। और जो एक सेर का मान है वह 'प्रस्थ' कहा जाता है यह १ सेर या सोलह छटांक का नाम है इत्यादि परिमाण अर्थवाले शब्द अलग २ हैं आदि शब्द से मानी, भविका और प्रवर्तिका आदिकों का संग्रह किया जाता है॥ ८८। १॥

पु. पु. पु. पु.

चौथाई-बांट **पाद(स्तुरीयो भागः)स्या(दंशभागौ तु) वण्टके॥८९॥**

रुपये आदि का जो चौथा भाग है वह 'पाद' कहलाता है। यह १ चौथाई या पावली का नाम है और अंश, भाग और वण्टक ये ३ भागमात्र या छटांक आदि बांटों के नाम हैं ये सबही घञन्त होकर पुंलिङ्ग हैं॥ ८९॥

न. न. न. न. न. न. न.

धन **द्रव्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थमृक्थं धनं वसु।**

न. न. न. पु. पु. पु.

हिरण्यं द्रविणं द्युम्नमर्थ[१]रैविभवा (अपि)॥ ९०॥

द्रव्य, वित्त, स्वापतेय, रिक्थ, ऋक्थ, धन, वसु, हिरण्य, द्रविण, द्युम्न, अर्थ, रै और विभव ये १३ धनके नाम हैं। इनमें द्रव्य से लेकर द्युम्नपर्यन्त नपुंसक हैं और अर्थ पुंलिङ्ग है और ऐकारान्त रैशब्द पुंस्त्रीलिङ्ग है एकत्व में 'राः' द्वित्व में 'रायौ' बहुत्व में 'रायः' ये होते हैं और 'विभव' भी पुंलिङ्ग है॥ ९०॥

सोना चांदी पु. न.

तांबा आदि **(स्या) त्कोष (श्च) हिरण्यं (च) (हेमरूप्ये कृताकृते)।**

तांबा रूपा का न. न.

मेल **(ताभ्यां यदन्यत्त)त्कुप्यं रूप्यं(तद्द्वयमाहतम्)॥९१॥**

जब सोना और चांदी ये दोनों बने या अनबनेसे प्रतीत होवें तो कोष, या "कोश" और हिरण्य भी कहलाते हैं ये २ बने या नहीं बने हुए सोने, चांदी के नाम हैं इनमें 'कोष' पुंनपुंसक है और 'हिरण्य' नपुंसक है। सोना व रूपा से जो तांबा आदि भिन्न है वह 'कुप्य' कहलाती है यह १ तांबा आदि द्रव्यों का

१ "अर्धर्चादित्वात्पुंनपुंसकम्"॥

नाम है और 'कुप्य' व अकुप्य ये दोनों बनाये गये हों यानी मुद्रा ढाली गई हों तो 'रूप्य' कहे जाते हैं यह १ तांबे व रूपे के मेल का नाम है ॥ ९१ ॥

न. न. पु. पु.

मरकत मणि **गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भो हरिन्मणिः ।**

न. पु. पु. न.

पद्मराग **शोणरत्नं लोहितकः पद्मरागो (ऽथ) मौक्तिकम् ॥ ९२ ॥**

स. पु. पु.न.

मोती मूंगा **मुक्ता (थ) विद्रुमः (पुंसि) प्रवालं (पुंनपुंसकम्) ।**

गारुत्मत, मरकत, अश्मगर्भ और हरिन्मणि ये ४ मरकतमणि या पन्ना के नाम हैं । शोणरत्न, लोहितक, पद्मराग ये ३ पद्मराग या माणिक्यके नाम हैं। मौक्तिक, मुक्ता ये २ मोती के नाम हैं और विद्रुम, प्रवाल ये २ मूंगा के नाम हैं इनमें 'विद्रुम' पुंलिङ्ग है और 'प्रवाल' पुंनपुंसक है ॥ ९२ । १/२ ॥

न. पु.स.

रत्नमात्र **रत्नं मणि (र्द्वयो) (रश्मजातौ मुक्तादिकेऽपि च)॥९३॥**

रत्न, मणि या 'मणी' ये दोनों पत्थर की जाति, मरकत मणि की जाति, मोती आदि की जाति और आदि शब्द से मूंगा आदि में भी वर्तमान रहते हैं इनमें 'रत्न' शब्द नपुंसक है और 'मणि' स्त्रीपुंलिङ्ग है (अब रत्नों को ग्रन्थान्तर से कहते हैं) कि, "कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम् । एतानि पञ्च रत्नानि रत्नशास्त्रविदो विदुः" सोना, हीरा, नीलम, पद्मराग (मणि) और मोती इनको रत्नशास्त्र के वेत्ताओं ने पञ्चरत्न कहा है । और "मुक्ताफलं हीरकं च वैदूर्यं पद्मरागकम् । पुष्परागं च गोमेदं नीलं गारुत्मतं तथा । प्रवालयुक्तान्येतानि महारत्नानि वै नव" मोती, हीरा, वैदूर्य, पद्मराग, पुखराज, गोमेद, नीलम, पन्ना और मूंगा ये ९ महारत्न कहाते हैं ये २ रत्नमात्र के नाम हैं ॥ ९३ ॥

न. न. न. न. न. न.

सुवर्ण **स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् ।**

न. न. न. न. न.

या सोना **तपनीयं शातकुम्भं गाङ्गेयं भर्म कर्बुरम् ॥ ९४ ॥**

न. न. न. न.

चामीकरं जातरूपं महारजतकाञ्चने ।

न. न. न. पु.न.

रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बूनदमष्टापदो(ऽस्त्रियाम्)॥९५॥

---

१ प्रवालशब्द ओष्ठमध्योऽपि स्यादिति केचिदिच्छन्ति ॥

२ कर्बुरशब्दो दन्त्योष्ठ्यमध्यो वा ओष्ठमध्यः स्यादिति केचिदिच्छन्ति ॥

स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हिरण्य, हेम (न्) हाटक, तपनीय, शातकुम्भ या "शातकौम्भ" गाङ्गेय, भर्म (न्) या अदन्तभर्म, कर्बुर या "कर्बूर" चामीकर, जातरूप, महारजत, काञ्चन, रुक्म या "रुग्म" कार्तस्वर, जाम्बूनद और अष्टापद ये १९ सुवर्ण या सोना के नाम हैं। इनमें हेम और भर्म ये दो नान्त होकर नपुंसक हैं और अष्टापद पुन्नपुंसक है ॥ ९४ । ९५ ॥

न.

सोने का गहना (अलंकारसुवर्णं य) च्छृङ्गीकनक (मित्यदः) ।

न.　न.　न.　न.　न.

चांदी　दुर्वर्णं रजतं रूप्यं खर्जूरं श्वेत (मित्यपि) ॥ ९६ ॥

जो भूषणसम्बन्धी सोना यानी सोने का बना हुआ कुण्डल आदि गहना है वह शृङ्गीकनक या शृङ्गी, शृङ्गि और कनक कहलाता है यह १ सोने के बनेहुए गहना (जेवर) का नाम है यह नपुंसक है और दुर्वर्ण, रजत, रूप्य, खर्जूर या "खर्जुर" और श्वेत ये ५ चांदी के नाम हैं ये सबही नपुंसक हैं ॥ ९६ ॥

स.　पु.न.　न.

पीतल　रीतिः (स्त्रिया) मारकूटो (न स्त्रिया) (मथ) ताम्रकम् ।

तांबा　न.　न.　न.　न.　न.

शुल्बं म्लेच्छमुखं द्व्यष्टवरिष्ठोन्दुम्बराणि (च) ॥९७॥

रीति, या "रीती" या "रैत्य", आरकूट या "आर" ये २ पीतल के नाम हैं। इनमें "रीति" स्त्रीलिङ्ग है और "आरकूट" पुन्नपुंसक है और ताम्रक या ताम्र, शुल्ब या शुल्व, म्लेच्छमुख, द्व्यष्ट या "द्विष्ट" वरिष्ठ, उदुम्बर, या "उदुंबर", औदुम्बर या "औदुंबर" "उडुम्बर, उडुंबर, औडुम्बर या औडुंबर" ये ६ तांबे के नाम हैं ये सबही नपुंसक हैं ॥ ९७ ॥

पु.न.　न.　न.　न.　न.　न.

लोहा　लोहो (ऽस्त्री) शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी ।

पु.न.　पु.न.　पु.न.

लोहाका मैल　अश्मसारो (ऽथ) मण्डूरं शिङ्घाण(मपि तन्मले) ॥९८॥

लोह या "लौह" शस्त्रक, तीक्ष्ण, पिण्ड, कालायस या "कृष्णायस" अयः (स्) "आयस" और अश्मसार ये ७ लोहे के नाम हैं। इनमें लोह और "अश्मसार" ये दोनों पुन्नपुंसक हैं और मण्डूर, शिङ्घाण, "सिंहाण, सिंघाण" और "सिंहान" ये २ लोहमैल या कीट के नाम हैं ये दोनों पुन्नपुंसक हैं ॥ ९८ ॥

१ अल्पं शृङ्गं प्राधान्यं वा यस्या गौरादित्वाच्च शृङ्गी स्यात् ॥

न. स.
सर्वधातु, फार (सर्वं स्यात्तैजसं) लोहं (विकारस्त्वयसः) कुशी ।
पु. पु. पु. पु. पु. पु न.
कांच, पारा क्षारः काचो (ऽथ)चपलो रसः सूत(श्च)पारदे ॥ ९९ ॥

सर्वतैजस को यानी सोना, चांदी, तांबा, जस्ता, पीतल, रांगा और सीसा आदि सारे धातुवों को 'लोह' या "लौह" कहते हैं यह १ सर्वधातुवों का नाम है। जो लोह का विकार है या लोह की बनी हुई वस्तु है उसे "कुशी" या "फाल" कहते हैं यह १ फार का नाम है। क्षार, काच, ये २ कांच के नाम हैं और चपल, रस, सूत और पारद या "पारत"[1] ये ४ पारा के नाम हैं इनमें 'पारद' पुंनपुंसक है ॥ ९९ ॥

न. न. न. न.
भैंस का सींग गवलं (माहिषं[2] शृङ्ग) मभ्रकं गिरिजामले ।
न. न. न. न.
अभ्रक, सुरमा स्रोतोऽञ्जनं (तु) सौवीरं कापोताञ्जनयामुने ॥ १०० ॥

भैंस के सींग को 'गवल' कहते हैं यह १ भैंस के सींग का नाम है। अभ्रक, गिरिज, अमल ये ३ अभ्रक (अबरख) के नाम हैं अथवा मुकुट और स्वामी के मत में अभ्रक, गिरिजामल ये २ अभ्रकके नाम हैं और स्रोतोञ्जन, सौवीर, कापोताञ्जन और यामुन ये ४ स्रोतोञ्जन या सुरमा के नाम हैं ये सबही नपुंसक हैं ॥ १०० ॥

न. न. न. न.
तूतिया तुत्थाञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरके ।
रसौंत स. स. न. न.
या रसाञ्जन कर्परी दार्विका (काथोद्भवं) तुत्थं रसाञ्जनम् ॥ १०१ ॥
न. न. पु. पु.
गन्धक रसगर्भं तार्क्ष्यशैलं गन्धाश्मनि (तु) गन्धकः ।
पु. स. स. स.
काला सुरमा सौगन्धिक(श्च)चक्षुष्याकुलाल्यौ(तु)कुलत्थिका॥१०२॥

तुत्थाञ्जन, शिखिग्रीव, वितुन्नक, मयूरक ये ४ तूतिया या उसके अञ्जन के नाम हैं। कर्परी या "खर्परी" दार्विका, तुत्थ ये ३ घिसकर बने हुए रसाञ्जनभेद के नाम हैं। रसाञ्जन, रसगर्भ, तार्क्ष्यशैल ये ३ रसौंतके नाम हैं अथवा स्वामी के मतमें

---

१ "रसेन्द्रः पारदः प्रोक्तः पारतोऽपि निगद्यते" (इति तारपालः) ॥
२ रसः प्रायेण महिषशृङ्गे स्थाप्यतेऽतो रसानन्तरमस्य कथनं समुचितमेवेति मुकुटः ॥

तुत्थाञ्जन, शिखिग्रीव, वितुन्नक, मयूरक और 'कर्परी' ये ५ तूतिया या मोचरस के नाम हैं और दारुहल्दी के काढ़े से उपजा समभाग बकरी के दूध से संस्कार किया हुआ तुत्थ, रसाञ्जन, रसगर्भ और तार्क्ष्यशैल कहलाता है ये ३ रसोंत के नाम हैं। गन्धाश्मा (न्) गन्धक, "गन्धिक" सौगन्धिक, या "सुगन्धक" ये २ गन्धक के नाम हैं और चक्षुष्या, कुलाली, कुलत्थिका या "कुलत्था" ये ३ काले सुरमा के नाम हैं ॥ १०१ । १०२ ॥

न. न. न. न.
अञ्जनविशेष **रीतिपुष्पं पुष्पकेतु पौष्पकं कुसुमाञ्जनम्।**
न. न. न. न.
हरिताल **पिञ्जरं पीतनं तालमालं (च) हरितालके ॥ १०३ ॥**

रीतिपुष्प, पुष्पकेतु, पौष्पक, या "पुष्पक" कुसुमाञ्जन या "पुष्पाञ्जन" ये ४ तचाये हुए पीतल को घिसकर बने अञ्जन या जस्ता के फूल के नाम हैं और पिञ्जर, पीतन, या "पीतक" ताल, आल, या "अल, नाल" और हरितालक या "हरिताल" ये ५ हरिताल के नाम हैं ॥ १०३ ॥

न. न. न. न. न.
शिलाजित **गैरेयमर्थ्यं गिरिजमश्मजं (च) शिलाजतु।**
पु. पु. पु. पु. पु.
गन्धरस **बोलगन्धरसप्राणपिण्डगोपरसाः (समाः) ॥ १०४ ॥**

गैरेय, अर्थ्य, गिरिज, अश्मज, शिलाजतु ये ५ गेरू या शिलाजीत के नाम हैं और बोल, गन्धरस या "रसगन्ध" प्राण, पिण्ड, गोस या "गोप" रस या "गोपरस" ये ६ गन्धरस के नाम हैं ये समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ १०४ ॥

पु. पु. पु. न. न.
समुद्रफेन **हिण्डीरोऽब्धिकफः फेनः सिन्दूरं नागसंभवम्।**
न. न. न. न. न. न.
सेंदुर सीसा **नागसीसकयोगेष्टवप्राणि त्रपु पिच्चटम् ॥ १०५ ॥**
न. न. पु. पु. न.
रांगा रुई **रङ्गवङ्गे (प्यथ) पिचुस्तूलो (ऽथ) कमलोत्तरम्।**
न. न. न.
कुसुम **(स्यात्) कुसुम्भं वह्निशिखं महारजन(मित्यपि)॥१०६॥**

हिण्डीर, या "हिण्डिर" अब्धिकफ, फेन या "समुद्रफेन" ये ३ समुद्रफेन के नाम हैं। सिन्दूर, नागसंभव ये २ सेंदुर के नाम हैं। नाग, सीसक, योगेष्ट,

बप्र, " वर्ध्र " और " त्रप्र " ये ४ सीसा के नाम हैं । त्रपु, पिच्चट, रङ्ग और वङ्ग ये ४ रांगा के नाम हैं । पिचु, तूल, पिचतूल या " तूलपिचु " ये २ कपास या रुई के नाम हैं और कमलोत्तर, कुसुम्भ, वह्निशिख, महारजन ये ४ कुसुम के नाम हैं ॥ १०५ ।१०६ ॥

भेड़ा के ऊन से बना कम्बल — पु. पु. न. न.
मेषकम्बल ऊर्णायुः शशोर्णं शशलोमनि ।
खरगोश के ऊन से बना कम्बल, शहद-मोम — न. न. न. न. न.
मधुक्षौद्रंमाक्षिका(दि)मधूच्छिष्टं(तु)सिक्थकम्॥१०७॥

मेषकम्बल, ऊर्णायु, य २ भेड़ा के रोवों से बने हुए कम्बलके नाम हैं । ये दोनों पुंलिङ्ग हैं । शशोर्ण, शशलोम (न्) ये २ खरगोश के रोवों से बने हुए कम्बल या उसके रोवों के नाम हैं। इनमें चन्द्रगोमिकृत लिङ्गानुशासनके प्रमाण से 'शशोर्ण' यह नपुंसक है । मधु, क्षौद्र, माक्षिक ये ३ शहद के नाम हैं और आदि शब्दसे भ्रामर, वटक और पौतिक आदिकों का ग्रहण किया जाता है और मधूच्छिष्ट, सिक्थक ये २ मोम के नाम हैं ॥ १०७ ॥

मैनशिल — स. स. स. स.
मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्वा नागजिह्विका ।
नैपालीमैनशिल, जवाखार — स. स. स. पु. पु.
नैपाली कुनटी गोला यवक्षारो यवाग्रजः ॥ १०८ ॥
सज्जी, सोंचर — पु. पु. पु. पु.
पाक्यो (ऽथ) स्वर्जिकाक्षारः कापोतः सुखवर्चकः ।
वंशलोचन — न. न. स. स.
सौवर्चलं (स्या) द्रुचकं त्वक्क्षीरी वंशरोचना ॥१०९॥

मनःशिला, मनोगुप्ता, मनोह्वा या " मनोज्ञा " नागजिह्विका, नैपाली, कुनटी, या " कुलटी " या " कनटी " और गोला ये ७ मैनशिल के नाम हैं अथवा मनःशिला, मनोगुप्ता, मनोह्वा और नागजिह्विका ये ४ मनशिल के नाम हैं और नैपाली, कुनटी, गोला ये[1] ३ नैपालदेश में उपजी मैनशिल के नाम हैं । यवक्षार, यवाग्रज और पाक्य ये ३ जवाखार के नाम हैं। स्वर्जिकाक्षार या " सर्जिकाक्षार " या " सृजिकाक्षार " या " सर्जिका " और " क्षार " कापोत, सुखवर्चक ये ३ क्षारभेद या सज्जीखार के नाम हैं । सौवर्चल, रुचक ये २ क्षारभेद या सोंचरखार के नाम हैं अथवा स्वर्जिकाक्षार, कापोत, सुखवर्चक, सौवर्चल और रुचक ये ५

1 " नैपालीनवमालीमनःशिलासुवहासुन " (इति विश्वः)॥

क्षारभेद या सज्जीखार के ही नाम हैं। यह सुभूति आदि आचार्यों का मत है और त्वक्क्षीरी, या "तुकाक्षीरी" वंशरोचना या "वंशलोचना" ये २ वंशलोचन के नाम हैं ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ १०८ । ०९ ॥

न. न. न.
शोभाञ्जन **शिग्रुजं श्वेतमरिचं मोरटं (मूलमैक्षवम्)।**
ईख की जड़ न. न. न.
पिपरामूल **ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं चटकाशिर (इत्यपि) ॥ ११०॥**

शिग्रुज, श्वेतमरिच ये २ शोभाञ्जन के बीज या सफ़ेद मिरच के नाम हैं। ईख की मूल को "मोरट" कहते हैं यह १ ईख या गन्ना की जड़ का नाम है और ग्रन्थिक, पिप्पलीमूल, चटकाशिर या "चटिकाशिर" या चटका और शिरः (स्) या "शिर" ये ३ पिपरामूल के नाम हैं ॥ ११० ॥

जटामांसी, पतङ्ग स. पु. न. न.
मिले सोंठि, **गोलोमी भूतकेशो (ना) पत्राङ्गं रक्तचन्दनम्।**
मिरच, पीपरि, न. न. न. स. न.
मिले आँवरा, हड़, बहेरा **त्रिकटु त्र्यूषणं व्योषं त्रिफला (तु) फलत्रिकम्॥ १११॥**

इति वैश्यवर्गः ॥ ९ ॥

गोलोमी, भूतकेश ये २ सफ़ेद दूब, बच या जटामांसी के नाम हैं। पत्राङ्ग, रक्तचन्दन ये २ लालचन्दन के समान रक्तसार या पतङ्ग के नाम हैं। त्रिकटु, त्र्यूषण या "त्र्युषण" व्योष ये ३ मिलेहुए सोंठि, मिरच, पीपरि के नाम हैं और त्रिफला, या "तृफला" या "त्रिफली, तृफली" फलत्रिक ये २ मिले जुले आंवला, हड़, बहेड़ा के नाम हैं ॥ १११ ॥

इति वैश्यवर्गविवरणम् ॥ ९ ॥

अथ शूद्रवर्गो व्याख्यायते ॥

पु. पु. पु. पु.
शूद्र **शूद्रा(श्चा) वरवर्णा (श्च) वृषला (श्च) जघन्यजाः।**
पु.
वर्णसंकर **(आचाण्डालात्तु) संकीर्णा (अम्बष्ठकरणादयः)॥ १ ॥**

शूद्र, अवरवर्ण, वृषल और जघन्यज ये ४ शूद्र के नाम हैं। ये बहुत्व से बहुवचनान्त हैं और चाण्डाल पर्यन्त कहेजानेवाले जो अम्बष्ठ, करण आदि हैं वे 'संकीर्ण' कहलाते हैं आदिशब्द से 'उग्र' आदिकों का ग्रहण कियाजाता है और

प्रतिलोम व अनुलोम से उपजने के कारण 'मिश्र' भी कहाते हैं यह १ चाण्डाल पर्यन्त अम्बष्ठ आदिकों का नाम है ॥ १ ॥

शूद्रा में बनियां से पैदा, बनियानी में ब्राह्मण से उपजा, शूद्रा में क्षत्रिय से जना, क्षत्रिया में बनियां से हुआ

पु. पु.
(शूद्राविशोस्तु) करणोऽम्बष्ठो (वैश्याद्विजन्मनोः) ।
पु. पु.
(शूद्राक्षत्रिययो) रुग्रो मागधः (क्षत्रियाविशोः) ॥ २ ॥

शूद्रजाति की स्त्री और बनियां से उपजा लड़का लेखनवृत्तिवाला होताहुआ 'करण' कहाता है यह १ शूद्रा में बनियां से पैदाहुए का नाम है । बनियानी और ब्राह्मण से जनाहुआ बालक वैद्यकवृत्तिवाला होकर 'अम्बष्ठ' कहलाता है यह १ बनियानी में ब्राह्मण से उपजेहुए का नाम है । शूद्राणी और क्षत्रिय से जनाहुआ शस्त्रवृत्ति का रखनेवाला होकर 'उग्र' कहाजाता है यह १ शूद्रा में क्षत्रिय से जने हुए का नाम है और क्षत्रिया में बनियां से पैदाहुआ वंश की बड़ाई करनेवाला होकर 'मागध' कहलाता है यह १ क्षत्रिया "ठकुराइनि" में बनियें से उपजेहुए का नाम है ॥ २ ॥

बनियानी में क्षत्रिय से उपजा, क्षत्रिया में शूद्र से जना, ब्राह्मणी में क्षत्रिय से हुआ, ब्राह्मणी में बनियां से उपजा

पु. पु.
माहिष्यो (ऽर्याक्षत्रिययोः) क्षत्ता (र्याशूद्रयोःसुतः) ।
पु. पु.
(ब्राह्मण्यां क्षत्रिया)त्सूत(स्तस्यां) वैदेहको(विशः)३॥

वैश्यानी में क्षत्रिय से पैदाहुआ ज्योतिष, शकुनशास्त्र और स्वरशास्त्र आदि से जीविका करनेवाला होकर 'माहिष्य' कहाजाता है यह १ वैश्यानी में क्षत्रिय से उपजेहुए का नाम है । क्षत्रिया में शूद्र से उपजाहुआ पाप और धन का संचय करनेवाला होकर 'क्षत्ता' कहलाता है यह १ शूद्र से क्षत्रिया में जनेहुए का नाम है । ब्राह्मणी में क्षत्रिय से पैदाहुआ हाथियों को बांधना, घोड़ों को चलाना और गाड़ी, रथ आदि हांकने के कर्म करने से जीविकावाला होकर 'सूत' कहाता है यह १ क्षत्रियसे ब्राह्मणी में उपजेहुए का नाम है और उसी ब्राह्मणी में बनियां से उपजा

---

१ "अर्या स्वामिनी सा च क्षत्रिया योग्यत्वात् तेन "क्षत्रियायां च शूद्रजे" इत्यनेनाविरोधः ॥

२ "वैश्यान्मागधवैदेहौ राजविप्राङ्गनासु च" (१० । ११) इति मनुवाक्यानुकूलमूलविरुद्धोऽनेकार्थकोषो नादरणीयः ॥

हुआ चौंसठि कला कर्मों की शिक्षा आदि से वृत्तिवाला होकर 'वैदेहक' कहलाता है यह १ बनियां से ब्राह्मणी में पैदाहुए का नाम है ॥ ३ ॥

पु.
माहिष्य से करणीमें जना **रथकार(स्तु माहिष्यात् करण्यां यस्य संभवः)।**
पु.
ब्राह्मणी में शूद्रसे उपजा **(स्या)चण्डाल(स्तु जनितो ब्राह्मण्यां वृषलेन यः) ॥४॥**

वैश्यानी में क्षत्रिय से उपजे लड़के से शूद्राणी में बनियें से उपजी लड़की में जिसका जन्म होता है वह लकड़ी के काम से आजीवन करता हुआ 'रथकार' कहलाता है यह १ माहिष्य से करणी में पैदाहुए का नाम है और जो ब्राह्मणी में शूद्र से जनागया है वह क़फ़न का लेनेवाला होकर मांस को बेचता हुआ 'चण्डाल' या 'चाण्डाल' कहाजाता है यह १ ब्राह्मणी में शूद्र से उपजेहुए का नाम है ॥४॥

पु. पु. पु.स.
चितेरा, सबों के सजातीय **कारुः शिल्पी(संहतैस्तैर्द्वयोः)श्रेणिः(सजातिभिः)।**
पु. पु. पु. पु.
समूहकारीगर प्रधान,माली **कुलकः(स्यात्)कुलश्रेष्ठी मालाकार(स्तु)मालिकः॥५॥**

कारु, स्त्री "कारू" शिल्पी (न्) ये २ चितेरा आदिकों के नाम हैं "तक्षा च तन्तुवायश्च नापितो रजकस्तथा। पञ्चमश्चर्मकारश्च कारवः शिल्पिनो मताः" बढ़ई, कोली, नाई, धोबी और पांचवां चमार ये भी शिल्पी "कारीगर" कहाते हैं उन कारीगरों के समान जातीयसमूह को श्रेणि स्त्री "श्रेणी" कहते हैं यह १ समानजातिवाले कारीगरों के गरोह का नाम है। कुलक या "कुलिक" कुलश्रेष्ठी (न्) ये २ शिल्पियों के कुल में प्रधान (मुखिया) के नाम हैं अब कारीगरों और शिल्पियों के भेद कहतेहैं मालाकार, मालिकये २ माली के नाम हैं॥ ५ ॥

पु. पु. पु. पु.
कुम्हार थवई **कुम्भकारः कुलाल[१]ः(स्यात्)पलगण्ड(स्तु) लेपकः।**
पु. पु. पु. पु.
कोली दर्ज़ी **तन्तुवायःकुविन्दः(स्यात्)तुन्नवाय(स्तु)सौचिकः॥६॥**

कुम्भकार, कुलाल, ये २ कुम्हार के नाम हैं। पलगण्ड, लेपक ये २ राज या ईंटोंके कारीगर के नाम हैं तन्तुवाय या "तन्त्रवाय" या "तन्त्रवाप" कुविन्द या "कुविन्द" ये २ कोली या जोलाहे के नाम हैं और तुन्नवाय, सौचिक ये २ दर्ज़ी के नाम हैं॥ ६ ॥

१ "घूके कुलालः कुकुभे कुम्भकारेऽजनान्तरे" (इति विश्वः)॥

पु. पु. पु. पु.
रंगसाज सिकलीगर **रङ्गाजीवश्चित्रकरः शस्त्रमार्जोऽसिधावकः ।**
चमार लोहार पु. पु. पु. पु.
पादूकृच्चर्मकारः (स्याद्) व्योकारो लोहकारकः ॥ ७ ॥

रङ्गाजीव, चित्रकर ये २ रंगसाज़ या चितेरा के नाम हैं । शस्त्रमार्ज, असिधावक ये २ सिकलीगर के नाम हैं । पादूकृत्, चर्मकार या " पादुकृत्, चर्मर " ये २ चमार के नाम हैं और व्योकार, लोहकारक ये २ लोहार के नाम हैं इनमें ' व्योकार ' इस पद में " व्यो " यह लोहबीजवाची अव्यय है यह श्रीभोज का मत है ॥ ७ ॥

पु. पु. पु. पु.
सोनार **नाडिंधमः स्वर्णकारः कलादो रुक्मकारके ।**
चुरिहार पु. पु. पु. पु.
ठठेर **(स्या)च्छाङ्खिकः काम्बविकः शौल्विकस्ताम्रकुट्टकः ॥ ८ ॥**

नाडिंधम, स्वर्णकार, कलाद, या " कणाद " रुक्मकारक ये ४ सोनार के नाम हैं । शाङ्खिक, काम्बविक ये २ शंख, सीपी आदि के भूषण बनानेवाले या चुरिहार के नाम हैं और शौल्विक या " शौल्विक " ताम्रकुट्टक ये २ तांबे आदि के भूषण बनानेवाले या ठठेर के नाम हैं ॥ ८ ॥

पु. पु. पु पु. पु.
बढ़ई **तक्षा (तु) वर्धकिस्त्वष्टा रथकार (श्च) काष्ठतट् ।**
गांवका बढ़ई पु. पु. पु. पु.
प्रधान बढ़ई **ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः कौटतक्षोऽनधीनकः ॥ ९ ॥**

तक्षा (न्) वर्धकि, त्वष्टा (ष्टृ) रथकार और काष्ठतट् ये ५ बढ़ई के नाम हैं। इनमें 'तक्षा' नान्त है द्वित्व में 'तक्षाणौ' बहुत्व में 'तक्षाणः' और त्वष्टा, द्वित्व म 'त्वष्टारौ' बहुत्व में 'त्वष्टारः' और काष्ठतट्, द्वित्वमें काष्ठतक्षौ बहुत्व में काष्ठतक्षः ये होते हैं । जो गांव के अधीन तक्षा है वह 'ग्रामतक्ष' कहलाता है अथवा ग्रामाधीन, ग्रामतक्ष ये २ गांव के बढ़ई के नाम हैं और जो स्वाधीन बढ़ई है उसे ' कौटतक्ष ' कहते हैं यह १ प्रधान (मुखिया) बढ़ई का नाम है ॥ ९ ॥

पु. पु. पु. पु. पु.
नाऊ या नाई **क्षुरिमुण्डिदिवाकीर्तिनापितान्तावसायिनः ।**
धोबी या बरेठा, कलवार पु. पु. पु. पु.
निर्णेजकः (स्या) द्रजकः शौण्डिको मण्डहारकः ॥ १० ॥

क्षुरी (न्) मुण्डी (न्) दिवाकीर्ति, नापित, अन्तावसायी (न्) ये ५ नाऊ

या नाई के नाम हैं। निर्णेजक, रजक और रजकी ये २ धोबी या बरेठा के नाम हैं और शौण्डिक, मण्डहारक ये २ कलवार या कलाल के नाम हैं ॥ १० ॥

गड़रिया, पुजारी या पण्डा इन्द्रजाल आदि इन्द्रजाली

पु. पु. पु. पु.
जावालः (स्या) दजाजीवो देवाजीवी (तु) देवलः।
स. स. पु. पु.
(स्या)न्मायाशाम्बरी मायाकार(स्तु)प्रातिहारिकः॥११॥

जावाल, अजाजीव ये २ गड़रिया के नाम हैं। देवाजीवी (न्) या "देवाजीव" देवल ये २ पण्डा या पुजारी के नाम हैं। माया, शाम्बरी या "साम्बरी" ये २ इन्द्रजाल आदि मायाओं के नाम हैं और मायाकार, या 'मायावी' (न्) 'मायी' (न्) प्रातिहारिक या "प्रातिहार" या "प्रातिहारक" ये २ इन्द्रजालिक के नाम हैं ॥ ११ ॥

नट, कथिक या भांड

पु. पु. पु. पु.
शैलालिन (स्तु) शैलूषा जायाजीवाः कृशाश्विनः।
पु. पु. पु. पु.
भरता (इत्यपि) नटाश्चारणा (स्तु) कुशीलवाः॥ १२॥

शैलाली (न्) शैलूष, जायाजीव, कृशाश्वी (न्) भरत या "भारत" और नट ये ६ नट के नाम हैं। ये बहुत्व से बहुवचनान्त हैं और चारण, कुशीलव ये २ कथिक या भांड़ के नाम हैं ॥ १२ ॥

मृदङ्गबजाने वाला, ताली बजानेवाला, बांसुरी बजाने वाला, वीणा बजानेवाला

पु. पु. पु. पु.
मार्दङ्गिका मौरजिकाः पाणिवादा (स्तु) पाणिघाः।
पु. पु. पु. पु.
वेणुध्माः(स्यु)र्वैणविका वीणावादा(स्तु)वैणिकाः॥१३॥

मार्दङ्गिक, मौरजिक या "मौरविक" ये २ मृदङ्ग बजाने में प्रवीण या मृदङ्गी के नाम हैं। पाणिवाद, पाणिघ ये २ जो हाथों से मृदङ्ग आदि की ध्वनि का अनुकरण (नक़ल) करते हैं। उनके या हाथ से तालधारियों के नाम हैं। वेणुध्मा, वैणविक ये २ वंशी या बांसुरी बजाने वालों के नाम हैं और वीणावाद, वैणिक ये २ बीन या वीणा बजानेवालों के नाम हैं ॥ १३ ॥

चिड़ीमार, जालिक, कसाई

पु. पु. पु. पु.
जीवान्तकः शाकुनिको (द्वौ) वागुरिकजालिकौ।
पु. पु. पु.
वैतंसिकः कौटिक (श्च) मांसिक (श्च समं त्रयम्)॥१४॥

जीवान्तक, या "जीवान्तिक" शाकुनिक ये २ पखेरुओं के मारनेहारे या

चिड़ीमार के नाम हैं। वागुरिक, जालिक ये २ जाल से मृगों के बांधनेवाले बहेलिया के नाम हैं और वैतंसिक, कौटिक और मांसिक ये ३ मांस के बेचनेवाले चिकवा या क़साई के नाम हैं ये तीनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं॥ १४॥

पु. पु. पु. पु.

मजदूर **भृतको भृतिभुक्कर्म करो वैतनिको (ऽपि सः)।**

खबरिहा पु. पु. पु. पु.

बोझिया **वार्तावहो वैवधिको भारवाह (स्तु) भारिकः॥ १५॥**

भृतक, भृतिभुक्, (ज्) कर्मकर, वैतनिक ये ४ नौकर, चाकर या मजदूर के नाम हैं। वार्तावह, वैवधिक, या " विवधिक, वीवधिक " ये २ संदेस के ले जाने वाले खबरिहा के नाम हैं और भारवाह, भारिक या भारी (न्) ये २ बोझा ले जानेवाले (कुली) के नाम हैं॥ १५॥

पु. पु. पु. पु. पु.

नीच **विवर्णः[1] पामरो नीचः प्राकृत (श्च) पृथग्जनः।**

पु. पु. पु. पु. पु.

निहीनोऽपसदो जाल्मः क्षुल्लकश्चेतर (श्च सः)॥१६॥

विवर्ण, पामर, नीच, प्राकृत, पृथग्जन, निहीन, अपसद या "अपशद" जाल्म, क्षुल्लक या " खुल्लक " और इतर ये १० नीच या पामर के नाम हैं। ये सबही पुंलिङ्ग हैं॥ १६॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

सेवक, दास **भृत्ये दासेयदासेरदासगोप्यकचेटकाः।**

पु. पु. पु. पु. पु.

खिदमतगार **नियोज्यकिंकरप्रैष्यभुजिष्यपरिचारकाः॥ १७॥**

भृत्य, दासेय, दासेर, दास या " दाश " स्त्री दासी या " दाशी " गोप्यक, या गोप्य, चेटक, या चेट, या चेड, " चेडक " स्त्री " चेटिका, चेटी, चेडी " नियोज्य, किंकर, स्त्री "किंकरा या किंकरी" प्रेष्य, या " प्रैष " या प्रैष्य, भुजिष्य स्त्री " भुजिष्या " और परिचारक स्त्री " परिचारिका " ये ११ दास, टहलुआ, सेवक या ख़िदमतगार के नाम हैं॥ १७॥

पु. पु. पु. पु.

दूसरे से पालागया **पराचितपरिस्कन्दपरजातपरैधिताः।**

पु. पु. पु. पु. पु. पु.

मन्द या सुस्त **मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसोऽनुष्णः॥१८॥**

---

[1] " वर्णो द्विजादौ शुक्लादौ स्तुतौ रूपयशोऽक्षरे " (इति विश्वः)॥

पराचित या "पराजित," परिस्कन्द, या "परिष्कन्द," "परिस्कन्न" या "परिष्कन्न," परजात, या "परजित" और परैधित ये ४ दूसरे से पाले या पोषे हुए के नाम हैं और मन्द, तुन्द परिमृज या "तुन्दपरिमार्ज" आलस्य, शीतक, अलस और अनुष्ण ये ६ आलसी या सुस्त के नाम हैं ॥ १८ ॥

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
चतुर, दक्षे (तु) चतुरपेशलपटवः सूत्थान उष्ण (श्च)।
पु. पु. पु. पु. पु.
चाण्डाल चण्डालप्लवमातङ्गदिवाकीर्तिजनंगमाः ॥ १९ ॥
पु. पु. पु. पु. पु.
निषादश्वपचावन्तेवासिचाण्डालपुक्कसाः ।

दक्ष, चतुर, पेशल, या "पेसल, पेषल" पटु, सूत्थान और अनुष्ण ये ६ चतुर या चालाक के नाम हैं और चण्डाल, प्लव, मातङ्ग, दिवाकीर्ति, जनंगम, या "जलंगम" निषाद या "निशाद" श्वपच, या "श्वपच्-श्वपाक" अन्तेवासी (न्) चाण्डाल, पुक्कस, या "पुक्कश, पुक्कष" और पुष्कस या "बुक्कस" ये १० चण्डाल या निषाद के नाम हैं ॥ १९ । ½ ॥

पु. पु. पु. पु.
म्लेच्छभेद (भेदाः) किरातशबरपुलिन्दा म्लेच्छ (जातयः) ॥ २० ॥

किरात आदि तीनों म्लेच्छ जातिवाले होकर चाण्डालों के भेद होते हैं, जैसे कि, किरात, शबर, पुलिन्द और "पुंलिन्द" ये ३ म्लेच्छजातिवाले चाण्डाल-भेदों के नाम हैं ये सब वनों में ही रहते हैं "इन्हों में से जो कि गोमांसको खाता हुआ लोकबाह्य को भाषता है वह समस्त आचारों से विहीन होकर 'म्लेच्छ' कहलाताहै" ऐसेही सूतसंहिता में भी कहा है कि, बनियां से ब्राह्मणी में पैदा हुआ नाम से 'क्षत्ता' कहाता है और इसीमें इस चौर्यकर्म के द्वारा ब्राह्मण से उपजा हुआ 'म्लेच्छ' कहा जाता है ॥ २० ॥

पु. पु. पु. पु.
बहेलिया व्याधो मृगवधाजीवो मृगयुर्लुब्धको (ऽपि सः)।
कुत्ता पु. पु. पु. पु.
पागल कुत्ता कौलेयकः सारमेयः कुक्कुरो मृगदंशकः ॥ २१ ॥
पु. पु. पु. पु.
शिकारी कुत्ता शुनको भषकः श्वा (स्या) दलर्क (स्तु स योगितः)।
पु. स. स.
कुतिया (श्वा) विश्वकद्रु (मृगयाकुशलः) सरमा शुनी ॥ २२ ॥

१ अस्य तु बहुत्वे 'चण्डालाः' इत्येवं रूपम् । "चाण्डालाः" इति रूपे तु "तस्येदम्" इत्याद्यण् बोध्यः छान्दसा अपि क्वचिल्लोके 'सघिः' इत्यादय इव प्रयुज्यन्ते इति वा बोध्यम् ॥

व्याध, मृगवधाजीव, मृगयु और लुब्धक ये ४ व्याध या बहेलिया के नाम हैं। कौलेयक, सारमेय, कुक्कुर, या " कुर्कुर " या " कुकुर " मृगदंशक,शुनक, या " शुन " या " शुनि " भषक, श्वा, (न्) और 'श्वान' ये ७ कुत्ते के नाम हैं। जो कुत्ता प्रयोग से मतवाला या पागल हुआ है वह 'अलर्क' या 'अलक' कहलाता है यह १ पागल कुत्ते का नाम है और जो शिकार करने में चतुर है वह कुत्ता 'विश्वकद्रु' कहा जाता है यह १ शिकारी कुत्ते का नाम है और सरमा, शुनी ये २ कुतिया के नाम हैं ॥ २१ । २२ ॥

पु. पु.

गांव का सुअर **विट्चरः (शूकरो ग्राम्यो) वर्कर (स्तरुणः पशुः) ।**

जवान पशु न. न. पु. स.

शिकार **आच्छोदनं मृगव्यं (स्या)दाखेटो मृगया(स्त्रियाम्)२३॥**

जो शूकर गांव में उपजा है वह 'विट्चर' कहलाता है यह १ गांव के सुअर का नाम है। जो पशु जवान है उसे 'वर्कर' स्त्री 'वर्करी' कहते हैं यह १ बकरा या युवक पशुमात्र के नाम हैं और आच्छोदन, मृगव्य, आखेट और मृगया ये ४ अहेर या शिकार के नाम हैं। इनमें 'आखेट' पुंलिङ्ग और 'मृगया' स्त्रीलिङ्ग है ॥ २३ ॥

पु.

दाहिने अङ्ग में **(दक्षिणारुर्लुब्धयोगा) द्दक्षिणेर्मा (कुरङ्गकः) ।**

घाववाला पु. पु. पु. पु. पु. पु.

चोर **चौरैकागारिकस्तेनदस्युतस्करमोषकाः ॥ २४ ॥**

पु. पु. पु. पु.

चौर कर्म **प्रतिरोधिपरास्कन्दिपाटच्चरमलिम्लुचाः ।**

स. न. न. न. न.

चोरी का माल **चौर्यिका स्तैन्यचौर्ये(च)स्तेयं लोप्त्रं(तु तद्धने)॥२५॥**

जो मृग बहेलिया के संयोग से दाहिनी पार्श्व में घाववाला है वह 'दक्षिणेर्मा' (न्) कहलाता है द्वित्वमें 'दक्षिणेर्माणौ' बहुत्वमें 'दक्षिणेर्माणः' ये होते हैं। यह १ दाहिने अङ्ग में घाववाले मृग का नाम है। चौर या 'चोर' स्त्री 'चौरी' ऐकागारिक, स्त्री ऐकागारिकी, स्तेन 'या स्तैन्य' दस्यु, तस्कर, मोषक, प्रतिरोधी (न्) या " प्रतिरोधक " परास्कन्दी (न्) पाटच्चर या " पटच्चर " और मलिम्लुच ये १० चोर के नाम हैं। चौरिका या " चोरिका " स्तैन्य, चौर्य और स्तेय ये ४ चौरकर्म (चोरी) के नाम हैं और चोर के धन को 'लोप्त्र या लोत्र' कहते हैं यह १ चोरी के माल का नाम है ॥ २४ । २५ ॥

पु.
बहेलियों वीतंस (स्तूपकरणं बन्धने मृगपक्षिणाम्) ।
का सामान पु. न. स. स.
फन्दा जाल उन्माथःकूटयन्त्रं (स्या) द्वागुरा मृगबन्धनी ॥ २६ ॥

मृग और पक्षियों को बांधन के लिये जो जाल व पाश आदि सामान है वह 'वीतंस' या "वितंस" कहलाता है यह १ व्याधों की सामग्री का नाम है। उन्माथ, कूटयन्त्र ये २ मृग व पक्षियों को बांधने के लिये जिस यन्त्र को छलसे स्थापन करते हैं उसके या फन्दा के नाम हैं और वागुरा, मृगबन्धनी ये २ मृगों के फँसानेवाले जाल के नाम हैं ॥ २६ ॥

न.स. पु. स. पु.स.न. पु.
रस्सी शुल्वं वराटकः (स्त्री तु) रज्जु (स्त्रिषु) वटी गुणः ।
न. न.
रहट उद्घाटनं घटीयन्त्रं (सलिलोद्वाहनं प्रहेः) ॥ २७ ॥

शुल्व या "शुल्ब" शुल्वा "सुम्य, वटाकर" वराटक या "वराट" रज्जु, वटी और गुण ये ५ रस्सी, जेवरी या उबहन के नाम हैं। इनमें 'शुल्व' स्त्रीनपुंसक है, 'रज्जु' स्त्रीलिङ्ग और 'वटी' त्रिलिङ्ग है और कुवां से जिस यन्त्र के द्वारा जल को ऊपर निकालते हैं उसे 'उद्घाटन' और 'घटीयन्त्र' कहते हैं ये २ अरट या रहट के नाम हैं ये दोनों नपुंसक हैं ॥ २७ ॥

पु.न. पु. न. पु.
राछ, सूत (पुंसि) वेमा वापदण्डः सूत्राणि (नरि) तन्तवः ।
बीनना ली- स. स. न.
पना आदि वाणिर्व्यूतिः(स्त्रियौ तुल्ये)पुस्तं(लेप्यादिकर्मणि)॥२८॥

वेमा (न्) या "वेम" वापदण्ड या "वायदण्ड" ये २ कपड़ा बीनने के दण्ड, राछ या कोली की कूंची के नाम हैं इनमें 'वेमा' पुंनपुंसक और 'वापदण्ड' पुंलिङ्ग है। सूत्र, तन्तु ये २ सूत के नाम हैं। एकत्व में 'सूत्रम्' द्वित्व में 'सूत्रे' बहुत्व में 'सूत्राणि' एकत्व में 'तन्तुः' द्वित्व में 'तन्तू' और बहुत्व में 'तन्तवः' ये होते हैं इनमें 'सूत्र' नपुंसक और 'तन्तु' पुंलिङ्ग है। वाणि, या "वेणि" व्यूति या "व्युति" ये २ बीनने के नाम हैं ये दोनों स्त्रीलिङ्ग होकर समानार्थक कहाते हैं और लेप्य आदि कर्म में "पुस्त" होता है आदिपद से 'कठपुतली' आदिकों का ग्रहण किया जाता है कहा है कि, जैसे, मिट्टी, काठ, वस्त्र, चर्म, लोह और रत्नों से बनाया हुआ भी 'पुस्त' कहा जाता है यह १ लीपना आदि कर्म का नाम है यह नपुंसक है ॥ २८ ॥

१ "अल्पाक्षरमसंदिग्धं सारवद्विश्वतोमुखम् । अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः" ॥ १ ॥

स.
गुड़िया पञ्चालिका पुत्रिका(स्याद् वस्त्रदन्तादिभिःकृता)।
पेटारी पु. पु. स. स. स.
बहँगी या काँवरि पिटकः पेटकः पेटा मञ्जूषा(थ) विहंगिका ॥ २९ ॥
स न. पु. स.
सिकहर भारयष्टि(स्तदालम्बि) शिक्यं काचो(ऽथ) पादुका ।
स. स. स.
जूता माजा पादूरुपान (त्स्त्री सैवा, नुपदीना (पदायता) ॥ ३० ॥

वस्त्र, दांत आदि से बनाई जो पुत्तलिका है वह 'पञ्चालिका' या 'पाञ्चालिका' और 'पुत्रिका' कहलाती है आदि शब्द से मिट्टी व शिला आदि से भी बनाई हुई जो 'पुत्तलिका' है वह भी 'पञ्चालिका' और 'पुत्रिका' कहाती है ये २ गुड़िया या गुड़वा के नाम हैं । पिटक, पेटक, पेटा "पेड़ा" या "पीडा" और "मञ्जूषा" ये ४ पेटारी या संदूक़ के नाम हैं । विहंगिका या "विहंगमा" भारयष्टि ये २ बहँगी या कांवरि के नाम हैं । जो बहँगी आदिकों का आलम्बनकारी होता है यानी कांवरि, धन्नी या खूंटी आदिकों में लटकता है उसे 'शिक्य' और 'काच' कहते हैं ये २ छींका, सींका या सिकहर के नाम हैं । पादुका, पादू, उपानत् (हू) ये ३ जूता के नाम हैं और जो पांव में बँधी है वह "अनुपदीना" कहलाती है यह १ मोजा या बूट का नाम है ॥ २९ । ३० ॥

स. स. स. स.
चाम की रस्सी जेरबन्द नद्ध्री वर्ध्री वरत्रा (स्यादश्वादेस्ताडनी) कशा ।
स. स. स.
किंगरी चाण्डालिका (तु) कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी ॥ ३१ ॥

नद्ध्री, वर्ध्री या "वार्ध्री" वरत्रा ये ३ चामकी बनी रस्सी, बाधी या चर्म-बन्धनी के नाम हैं । घोड़े आदि की ताड़न करनेवाली जो रस्सी है वह कशा, "कषा" या "कसा" कहाती है यह १ जेरबन्द, चाबुक या औगी का नाम है आदिपद से ऊंट, गदहा या चोर आदि का ग्रहण किया जाता है और चाण्डालिका या "चण्डालिका" कण्डोलवीणा या "कटोलवीणा" और चण्डालवल्लिकी ये ३ चण्डालों की वीणा या किंगरी के नाम हैं ॥ ३१ ॥

स. स. पु. पु. पु.
सोनार का कांटा कसौटी नाराची(स्या)देषणिका शाण(स्तु)निकषः कषः ।
रेती पु. पु. स. स.
सलाई व्रश्चनः पत्रपरशुरेषिका तूलिका (समे) ॥ ३२ ॥

नाराची, एषणिका ये २ सुवर्ण की तुला यानी कांटा या कटिया के नाम हैं ।

शाण, निकष, कष या " शान, निकस, कस " ये ३ कसौटी या सान के नाम हैं । व्रश्चन, पत्रपरशु ये २ सोने आदि की काटनवाली छेनी या टांकी आदि के नाम हैं । और एषिका, ईषिका, या " इषीका, ईषीका " तूलिका या " तुली, तुलि " ये २ शलाई, चित्रकारकी कूंची या लखनी के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ ३२ ॥

स. स. स. स.
घरिया **तैजसावर्तनी मूषा भस्त्रा चर्मप्रसेविका ।**
धौंकनी बर्मी स. स. स. स.
कतरनी **आस्फोटनी वेधनिका कृपाणी कर्तरी (समे) ॥ ३३ ॥**

तैजसावर्तनी, मूषा या " मुषा, मूषी, मूषिका " ये २ सोना आदि धातु गलाने की घरिया के नाम हैं । भस्त्रा, चर्मप्रसेविका या " चर्मप्रसेवक " ये २ खलायट, भाथी या धौंकनी के नाम हैं । आस्फोटनी या " त्वास्फोटनी " वेधनिका ये २ मुक्ता आदि की बेधनेवाली बरमी के नाम हैं और कृपाणी, कर्तरी ये २ स्वर्ण-पत्र आदि के काटनेवाले शस्त्रविशेष या ' कतरनी ' के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ ३३ ॥

पु. पु. पु. पु.
बांकी टांकी **वृक्षादनो वृक्षभेदी टङ्कः पाषाणदारणः ।**
पु.न. न. स. स.
आरा रांपी **क्रकचो (ऽस्त्री) करपत्रमारा चर्मप्रभेदिका ॥ ३४ ॥**

वृक्षादन, वृक्षभेदी (न्) ये दो रुखानी, बसूला या बांकी के नाम हैं । टङ्क या " तङ्क " पाषाणदारण ये २ पत्थर की तोड़नेवाली टांकी या छेनी के नाम हैं । क्रकच, या " क्रकर " करपत्र ये २ आरा या आरी के नाम हैं । इनमें ' क्रकच ' यह पुन्नपुंसक है और आरा, चर्मप्रभेदिका ये २ चमड़े की काटनेवाली चमार की रांपी के नाम हैं ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ ३४ ॥

स १ स. स. न.
लोहे की प्रतिमा **सूर्मी स्थूणायः प्रतिमा शिल्पं (कर्मकलादिकम्) ।**
कारीगरी, न. न. स. स. स.
मूर्ति, **प्रतिमानं प्रतिबिम्बं प्रतिमा प्रतियातना प्रतिच्छाया ३५**
स. स. पु. स. न.
मिसाल **प्रतिकृतिरर्चा (पुंसि) प्रतिनिधिरुपमोपमानं (स्यात्) ।**

सूर्मी या " सूर्मि, स्युर्मी, स्युर्मि " स्थूणा, अयःप्रतिमा ये ३ लोह की प्रतिमा

---

१ "ग्रीष्मजालमशर्म" इति मप्रत्यये शरादेश च इति मुकुटस्त्वपाणिनीयः "शूर्मी" तालव्यादिरित्यप्ययुक्तम् । "सूर्म्यं सुषिरामिव" इति श्रुतिविरोधात् ॥

(तसवीर) के नाम हैं। नाचना, गाना आदि जो कर्म है वह 'शिल्प' कहा जाता है। आदिपद से स्वर्णकार तथा रथकार आदिकों के कर्मका ग्रहण किया जाता है। यह १ गीत, नृत्य व थवई आदि के कर्म का नाम है। प्रतिमान, प्रतिबिम्ब, प्रतिमा, प्रतियातना, प्रतिच्छाया, प्रतिकृति, अर्चा और प्रतिनिधि ये ८ प्रतिमा, मूर्ति या तसवीर के नाम हैं इनमें "प्रतिनिधि" यह पुंलिङ्ग है और उपमा, उपमान ये २ उपमा (मिसाल) देने के नाम हैं अथवा "येनोपमीयते या चोपमितिस्तयोरेते नाम्नी केचित्तु पूर्वान्विते इत्याहुः" जिस करके उपमा दीजाती है और जो उपमिति है उन दोनों के ये २ नाम हैं और कितेक आचार्यों ने पूर्वोक्त प्रतिमादिकों में ही अन्वय किया है ॥ ३५ ॥ ½ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

समानता या (वाच्यलिङ्गाः) समस्तुल्यः सदृक्षःसदृशःसदृक् ॥ ३६॥

बराबरी पु.स.न. पु.स.न.

साधारणः समान(श्च) (स्युरुत्तरपदे त्वमी)।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

निभसंकाशनीकाशप्रतीकाशोपमा(दयः) ॥ ३७ ॥

सम, तुल्य, सदृक्ष, सदृश, सदृक्, साधारण, स्त्री साधारणी या साधारणा और समान ये सम आदि सातो समानान्तर के वाची होकर वाच्यलिङ्ग कहाते हैं और ये निभ, संकाश, नीकाश या "निकास" प्रतीकाश या "प्रतिकाश" या "प्रतीकास, प्रतिकास" उपमा आदि उत्तर पदमें स्थित होकर सदृशवाची होते हुए वाच्यलिङ्ग कहाते हैं जैसे कि, "पितृनिभः पुत्रः" यहां नित्य समास है पिता के समान लड़का है "मातृनिभा कन्या" माता के समान लड़की है "देवनिभमपत्यम्" देवता के समान सन्तान है आदि पद से भूत, रूप, कल्प आदिकों का ग्रहण किया जाता है जैसे कि, पितृभूतः, पितृरूपः, और 'पितृकल्पः' आदि होते हैं ये १२ समान (बराबरी) के नाम हैं अथवा सम आदि ७ और निभ आदि उत्तर पदवाले भी ५ समान के नाम हैं ॥ ३६ । ३७ ॥

स. स. स. स. न. न.

मज़दूरी कर्मण्या(तु)विधा भृत्या भृतयो भर्म वेतनम्।

न. न. न. पु. पु.

कमाई भरण्यं भरणं मूल्यं निर्वेशः पण(इत्यपि) ॥ ३८ ॥

कर्मण्या, विधा, भृत्या, भृति, भर्म (न्), वेतन, भरण्य, भरण, मूल्य, निर्वेश और पण ये ११ वेतन, दर्महा, कमाई या मज़दूरी के नाम हैं। इनमें कर्मण्या से लेकर 'भृति, पर्यन्त स्त्रीलिङ्ग, और 'भर्म' से लेकर 'मूल्य' तक नपुंसक हैं और "निवेश-पण" ये दोनों पुंलिङ्ग हैं ॥ ३८ ॥

स. स. स. स. स.

मदिरा या शराब सुरा हलिप्रिया हाला परिस्रुद्वरुणात्मजा।

मद्यपीनेमें रुचि- स. स. स. स. स.

कारी भोजन गन्धोत्तमा प्रसन्नेराकादम्बर्यः परिस्रुता ॥ ३९ ॥

स. न. न. पु.

मदिरा कश्यमद्ये(चाप्य) वदंश (स्तु भक्षणम्)।

मद्यपानस्थान न. न. पु. पु.

मद्य पीने का समय शुण्डापानं मदस्थानं मधुवारा मधुक्रमाः ॥ ४० ॥

सुरा, हलिप्रिया, हाला, परिस्रुत्, वरुणात्मजा, गन्धोत्तमा, प्रसन्ना, इरा, या "प्रसन्नेरा" कादम्बरी, परिस्रुता, मदिरा, कश्य और मद्य ये १३ मद्य या शराब के नाम हैं "तत्र गौडी, पैष्टी च माध्वी च विज्ञेया त्रिविधा सुरेति वचनात्" वहां गौडी, पैष्टी और माध्वी ये तीन भांति की 'सुरा' जानना चाहिये। मद्य पीने में रुचि बढ़ाने के लिये जो व्यञ्जन या चना आदि पदार्थ खाया जाता है वह "अवदंश" कहलाता है यह १ मद्य पीने के समय रुचिकारी भोजन का नाम है। शुण्डा, पान, मदस्थान ये ३ मद्यपानस्थान, मद्यशाला या कलवारी के नाम हैं और मधुवार, मधुक्रम ये २ मदिरा पीने के समय के नाम हैं ॥ ३९। ४० ॥

पु. पु. न. न.

महुआ का मध्वासवो माधवको मधु मार्द्वीक(मद्वयोः)।

गुड़ आदि का न. पु. पु.न. पु. पु.

मद्यका काढ़ा मैरेयमासवःशीधुर्मेदको जगलः(समौ) ॥ ४१ ॥

मध्वासव, माधवक या "माध्वक" मधु, मार्द्वीक या "माध्वीक" या मधु "माध्वीक" ये ४ महुआ के फूल से उपजी मदिरा के नाम हैं इन में 'मार्द्वीक' या 'माध्वीक' नपुंसक है स्वामी के मत में मध्वासव, माधवक ये २ महुआ की मदिरा के नाम हैं। मधु, मार्द्वीक ये २ दाख के मद्य के नाम हैं। मैरेय, आसव, शीधु ये ३ गुड़, सीरा व शाकादि से उपजे मद्यविशेष के नाम हैं और मेदक, जगल ये २ मदिरा के कल्क (काढ़ा) के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ ४१ ॥

न. पु. न. पु.

मद्य बनाना सन्धानं(स्याद)भिषवःकिण्वं(पुंसि तु) नग्नहूः।

सुराबीज पु. पु. न. स.

सुरा का फूल

पीने की सभा कारोत्तरः सुरामण्ड आपानं पानगोष्ठिका ॥ ४२ ॥

१ शुण्डापि जलहस्तिन्यां मदिराकरिहस्तयोः। नलिन्यां वारयोषायां शुण्डस्तु मदनिर्भरे" (इति विश्वः) ॥

सन्धान, अभिषव ये २ मद्य बनाने या उत्तम मद्य निकालने के लिये जो फल, बांस और अङ्कुरों को बहुत समय तक रखते हैं उसके नाम हैं। किण्व, या "कण्व" नग्नहू, या नग्नहु ये २ चावल आदि द्रव्य के औटाने से उठे खमीर से बने हुए सुराबीज या नंगा होकर मतवाले के पुकारने या चिल्लाने आदि के नाम हैं। इनमें 'नग्नहू' पुन्नपुंसक है। कारोत्तर, या "कारोत्तम" सुरामण्ड ये २ मदिराफूल के नाम हैं और आपान, पानगोष्ठिका ये २ शराब पीने की सभा के नाम हैं॥ ४२॥

मद्यपान का पात्र मद्य पीना जुआरी

पु.न. न. पु.न. न.
चषको (ऽस्त्री) पानपात्रं सरको (ऽप्य) नुतर्षणम्।
पु. पु. पु. पु. पु.
धूर्त्तोऽक्षदेवी कितवोऽक्षधूर्तो द्यूतकृ (त्समाः)॥ ४३॥

चषक, पानपात्र ये २ मद्यपानपात्र के माम हैं। इनमें 'चषक' पुन्नपुंसक है। सरक, अनुतर्षण या "अनुतर्ष" ये २ मद्यपान के नाम हैं अथवा मुकुट के मतमें चषक, पानपात्र, सरक और अनुतर्षण ये चारो पानपात्र के नाम हैं अपिशब्द से 'सरक' भी पुन्नपुंसक है। धूर्त, अक्षदेवी (न) कितव, अक्षधूर्त और द्यूतकृत् ये ५ जूआरी या जूआ खेलनेवाले के नाम हैं ये पांचो समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं॥ ४३॥

जामिन फड़बाज़ जूआ

पु. पु. पु. पु.
(स्यु)र्लग्नकाः प्रतिभुवः सभिका द्यूतकारकाः।
पु.न. स. न. पु.
द्यूतो(ऽस्त्रिया)मक्षवती कैतवं पण(इत्यपि)॥ ४४॥

लग्नक, प्रतिभू ये २ प्रतिनिधि होनेवाले या ज़ामिन के नाम हैं। एकत्व में "लग्नकः, प्रतिभूः द्वित्व में लग्नकौ, प्रतिभुवौ बहुत्व में लग्नकाः, प्रतिभुवः" ये होते हैं। सभिक, द्यूतकारक ये २ जूआ करानेवाले या फड़बाज़ के नाम हैं "एकत्व में सभिकः, द्यूतकारकः द्वित्वमें सभिकौ, द्यूतकारकौ बहुत्वमें सभिकाः, द्यूतकारकाः" ये होते हैं और द्यूत, अक्षवती, कैतव और पण ये ४ जूआके नाम हैं॥४४॥

बाज़ी पाशा गोटियों का चारों ओर जाना, चौपड़ जीवों की बाज़ी

पु. पु. पु. पु. पु.
पणो (ऽक्षेषु) ग्लहोऽक्षा (स्तु) देवनाःपाशका (श्च ते)।
पु.
परिणाय (स्तु शारीणां समन्तान्नयने) ऽस्त्रियाम्॥ ४५॥
पु.न. पु.न. न. पु.
अष्टापदं शारिफलं प्राणिद्यूतं समाह्वयः। है

पण, ग्लह ये २ जूआ जीतनेपर भाषाबन्धसे जो लेने योग्य है उसके या बाज़ी

के नाम हैं । अक्ष, देवन और पाशक ये ३ पाशा के नाम हैं । चौपड़की नर्द गोटियों का जो इधर उधर लेजाना है वह 'परिणाय' या 'परीणाय' कहलाता है यह १ गोटों के इधर उधर धरने का नाम है । अष्टापद, शारिफल ये २ चौपड़ की गोटियों को विधिसे रखने के लिये वस्त्र के बने कोठों समेत वस्त्र आदि या चौपड़घरके नाम हैं अथवा बिसाति या जिस कपड़ेपर गोटे खेलते हैं उसके या काठ, हाथीदांत आदि के बने जूआखेलने के सामान के नाम हैं ये २ नपुंसक हैं और प्राणिद्यूत, समाह्वय ये २ मेढ़ा, मुर्गा, बुलबुलआदि जीवों के लड़ानेकी बाज़ीके नाम है॥४५।३॥

सर्वलिङ्गासंग्र.ादसंपूर्णतां परिहरति ।

(उक्ता भूरिप्रयोगत्वादेकस्मिन्येऽत्र यौगिकाः ॥ ४६ ॥
ताद्धर्म्यादन्यतो वृत्तावूह्या लिङ्गान्तरेऽपि ते) ॥ ४७ ॥

इति शूद्रवर्गः ॥

अथ सब लिङ्गों का संग्रह न होनेसे असंपूर्णता दोष का परिहार करते हैं कि, इस शूद्रवर्ग में बहुत से प्रयोगों के दर्शन से केवल पुंलिङ्ग में जो मालाकार, लोहकार, मार्दङ्गिक और वैणविक आदि यौगिक शब्द कहे गये हैं वे अपने योगवश से जाति अर्थ के वाच्य रहते हुए लिङ्गान्तर में भी जानने योग्य हैं और अपि शब्द से जो अयौगिक करण, मालिक, और कुम्भकार आदि शब्द हैं उनको जातिवाची होनेसे स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग में भी जानना चाहिये, जिसका अवयवार्थ जाना जा सक्ता है वह यौगिक है और जिसका अवयवशक्ति के बिना समुदायशक्तिमात्र से अर्थबोध होता है वह रूढ़ कहाता है तिनमें यौगिकलिङ्गान्तर में जैसे कुम्भकारी स्त्री, कुम्भकारं कुलम् ऐसेही मालाकारी स्त्री, मालाकारम् अयौगिक जैसे करणी, कुलाली आदि हैं इन्हों में "जातेरस्त्रीविषयादयोपधात् ४ । १ । ६३ इस सूत्र से 'ङीष्' जानना चाहिये ॥ ४६ । ४७ ॥

इति शूद्रवर्गविवरणम् ॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।
भूम्यादिकाण्डो द्वितयः साङ्ग एव समर्थितः ॥ ४८ ॥

इस प्रकार अमरसिंह के बनाये हुए नाम और लिङ्गों के व्युत्पादन करनेवाले शास्त्र में अङ्ग, उपाङ्गों समेत दूसरा भूम्यादिकाण्ड कहा गया ॥ ४८ ॥

दो० । अमरसिंहकृत　कोषमहँ, काण्ड त्रय सुबखान ।
द्वितयकाण्ड पूरण कियो, द्विजवर शक्ति सुजान ॥ १ ॥

इति श्रीमदमरसिंहविरचितेऽमरकोषे श्रीमद्रायबहादुरप्रयागनारायणाज्ञया द्विजवरशक्तिधरसंकलितायां रसालाख्यायां व्याख्यायां द्वितीयः काण्डः संपूर्णतामगादिति शिवम् ॥

ॐ परमात्मने नमः ॥

श्रीमदमरसिंहविरचितः

अमरकोषः।

सभाषया रसालाख्यया व्याख्यया समेतः।

तृतीयं काण्डम्।

विशेष्यनिघ्नैः संकीर्णैर्नानार्थैरव्ययैरपि।
लिङ्गादिसंग्रहैर्वर्गाः सामान्ये वर्गसंश्रयाः॥ १॥

अब तृतीयकाण्ड की व्याख्या करते हैं कि इस सामान्य काण्ड में विशेष्यनिघ्न जिसमें उनका वर्णन है जोकि विशेषण हैं जैसे कि सुकृती आदि, संकीर्ण जिसमें विशेषण तो हैं परन्तु उनके विशेष्य कई अर्थों में रहते हैं जैसे कि कर्मपरायण कारीगरी, जूआ या अन्य किसी काम में चतुरको भी कहते हैं, नानार्थ जिसमें एकही के कई अर्थ पाये जाते हैं जैसे कि लोक भुवन और मनुष्यकोभी कह सक्ते हैं, अव्यय जिसमें अव्ययों के अर्थ हैं, जैसे कि आङ् थोड़ा, मर्यादा और वाक्य का बोधक है और लिङ्गादिसंग्रह यानी लिङ्गसंग्रह और आदि शब्द से नामसंग्रह जैसे कि लङ्का, शेफालिका आदि शब्दों से उपलक्षित स्वर्गादिवर्ग सम्बन्धी वर्ग कहे जाते हैं॥ १॥

लिङ्गज्ञानोपायमाह—

स्त्रीदाराद्यैर्यद्विशेष्यं यादृशैः प्रस्तुतं पदैः।
गुणद्रव्यक्रियाशब्दास्तथा स्युस्तस्य भेदकाः॥ २॥

इस शास्त्रमें रूप आदि के भेदही से बहुधा लिङ्गों का निर्णय होता है परन्तु तीसरे काण्ड में जो शब्द आये हैं वे गुण, द्रव्य और क्रियावाचक होकर विशेष्य-निघ्न हैं इनके लिङ्ग और वचन विशेष्य के आधीन रहते हैं यानी स्त्री दारादिक जैसे पदों से जो विशेष्य आनकर प्रस्तुत होता है उस के गुण, द्रव्य और क्रिया-वाचक शब्द विशेषण होजाते हैं वहां गुण शुक्ल आदि तद्विशिष्ट जैसे कि, पुं सुकृती, स्त्री, सुकृतिनी, कुलं सुकृति कहे जाते हैं, दारा शब्द के साहचर्य से सुकृतिनो दाराः कहाते हैं, द्रव्य दण्ड आदि है तद्विशिष्ट जैसे कि, "दण्डिनी स्त्री, दण्डिनो दाराः,

द्रविड कुलम और क्रिया, पचनादिव्यापार तद्विशिष्ट जैसे कि पाचिका स्त्री, पाचका दाराः, पाचकं कुलम् " आदि जानना चाहिये ॥ २ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

भाग्यवान् बड़ी चाहनावाला **सुकृती पुण्यवान्धन्यो महेच्छ (स्तु) महाशयः ।**

सीधा बड़ा उद्योगी पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

हृदयालुः सुहृदयो महोत्साहो महोद्यमः ॥ ३ ॥

सुकृती (इन्) पुण्यवान् (वत्) धन्य—स्त्री, सुकृतिनी, पुण्यवती, धन्या ये ३ भाग्यवान् के नाम हैं । महेच्छ, महाशय ये २ उदार चित्तवाले दयालु के नाम हैं । हृदयालु, सुहृदय या सहृदय " हृदयवान्, हृदयिक, हृदयी " ये २ अच्छे चित्तवाले के नाम हैं और महोत्साह, महोद्यम ये २ दुस्साध्य कृत्य में अध्यवसित या स्थिरक्रिया वाले के नाम हैं ॥ ३ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

ज्ञाता या चतुर **प्रवीणे निपुणाभिज्ञविज्ञनिष्णातशिक्षिताः ।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

वैज्ञानिकः कृतमुखः कृती कुशल (इत्यपि) ॥ ४ ॥

प्रवीण, निपुण, अभिज्ञ, विज्ञ, निष्णात, शिक्षित, वैज्ञानिक, या ' विज्ञानिक ' कृतमुख, कृती और कुशल या 'कुषल' ये १० प्रवीण, चतुर या विद्वान् के नाम हैं ॥४॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

मान्य या पूज्य **पूज्यः प्रतीक्ष्यः सांशयिकः संशयापन्नमानसः ।**

संशयकारी पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

दक्षिणा योग्य **दाक्षिणीयो दक्षिणार्ह (स्तत्र) दक्षिण्य (इत्यपि)॥५॥**

पूज्य, प्रतीक्ष्य ये २ पूज्य के नाम हैं । इसका लक्ष्य रघुवंश में कहा है जैसे कि " भक्तिः प्रतीक्ष्येषु कुलोचिता ते " यह संगत होता है । सांशयिक, संशयापन्नमानस ये २ संदेहविषय, संदेहाश्रित या संशययुतमनवाले के नाम हैं । दक्षिणीय, दक्षिणार्ह, दक्षिण्य या "दाक्षिण्य" ये ३ दक्षिणापाने योग्यके नाम हैं ॥ ५ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

अतिदानी **(स्यु)र्वदान्यस्थूललक्ष्यदानशौण्डा बहुप्रदे ।**

दीर्घायुवाला पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

शास्त्रज्ञाता **जैवातृकः(स्या)दायुष्मानन्तर्वाणि(स्तु)शास्त्रवित् ॥६॥**

वदान्य या "वदन्य" स्थूललक्ष्य या "स्थूललक्ष" दानशौण्ड, बहुप्रद ये ४ दानशूर

१ वीणया प्रगायति, प्रगीयते वा " सत्यापेति " णिजन्तात् पचाद्यच् (३ । १ । १३४) कर्मणि घञ् (३ । ३ । १९) वा 'एरजण्यन्तानामिति' नाच् । एरजण्यन्तानामिति तु वचनमनार्षमिति कैयटः॥

या महादानी के नाम हैं। जैवातृक, आयुष्मान् स्त्री जैवातृका, आयुष्मती ये २ बड़ीउमर वाले के नाम हैं और अन्तर्वाणि, शास्त्रवित् ये २ शास्त्रज्ञाता पण्डित के नाम हैं ॥६॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

पारखी **परीक्षकः कारणिको वरदस्तु समर्धकः ।**

वरदाता पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स..

हर्षित मनवाला **हर्षमाणोविकुर्वाणः प्रमना हृष्टमानसः ॥ ७ ॥**

परीक्षक, कारणिक ये २ प्रमाणों से अर्थ निश्चयकरनेवाले या परीक्षक के नाम हैं। वरद, समर्धक ये २ वरदेने वाले या मनोरथ पूर्ण करनेवाले के नाम हैं और हर्षमाण, विकुर्वाण, प्रमनाः (स्) या प्रमणाः (स्) और हृष्टमानस ये ४ प्रसन्न मनवाले या हर्षितचित्तवाले के नाम हैं ॥ ७ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

उदास प्रीतियुत **दुर्मना विमना अन्तर्मनाः(स्या)दुत्क उन्मनाः ।**

सरलचित्त पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

दाता भोक्ता **दक्षिणे सरलोदारौ सुकलो (दातृभोक्तरि) ॥ ८ ॥**

दुर्मनाः (स्) विमनाः (स्) अन्तर्मनाः (स्) ये ३ दुःखितमनवाले या व्याकुल चित्तवाले के नाम हैं। उत्क, उन्मनाः (स्) ये २ बड़ी चाहनावाले या उत्कण्ठित मनवालेके नामहै। इनमें 'उत्क' यह उत शब्दसे स्वार्थ में कन् होनेसे सिद्ध होता है। दक्षिण, सरल, उदार ये ३ सीधेचित्तवाले या सरल स्वभाववाले के नाम हैं और जो दाता होकर भोक्ता है वह 'सुकल' कहलाताहै यह१ दाता व भोक्ता का नाम है॥८॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

आसक्तचित्त **(तत्परे)प्रसितासक्ताविष्टार्थोद्युक्त उत्सुकः ।**

सोद्योगी पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

विख्यात **प्रतीते प्रथितख्यातवित्तविज्ञातविश्रुताः ॥ ९ ॥**

तत्पर, प्रसित, आसक्त या "आविष्ट" ये ३ आसक्त चित्तवाले या किसी विषय में लगेहुए के नाम हैं। इष्टार्थोद्युक्त या 'उद्युक्त' उत्सुक ये २ अभिमत अर्थ में परायण या उद्योगी के नाम हैं और प्रतीत, प्रथित, ख्यात, वित्त, विज्ञात और विश्रुत ये ६ प्रसिद्ध या विख्यात के नाम हैं ॥ ९ ॥

पु.स.न. पु.स.न

गुणों से विख्यात **(गुणैःप्रतीते तु)कृतलक्षणाहतलक्षणौ ।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

धनी **इभ्य आढ्यो धनीस्वामी त्वीश्वरः पतिरीशिता॥१०॥**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

स्वामी **अधिभूर्नायकोनेता प्रभुः परिवृढोऽधिपः ।**

जो शौर्यादि गुणों से विख्यात है उसे कृतलक्षण, आहतलक्षण या 'आहितलक्षण' कहते हैं ये २ गुणों से प्रसिद्ध या विख्यात के नाम हैं। इभ्य, आढ्य, धनी—स्त्री इभ्या, आढ्या, धनिनी ये ३ महाधनी के नाम हैं और स्वामी (न्) ईश्वर, पति, ईशिता (तृ) अधिभू, नायक, नेता, प्रभु, परिवृढ और अधिपये १० स्वामी, प्रभु, अध्यक्ष या मालिक के नाम हैं॥ १० ½ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.

समृद्धिवाला **अधिकर्द्धिःसमृद्धः(स्यात्) कुटुम्बव्यापृतस्तु यः॥११॥**

पु.न. पु.

कुटुम्बपालक **(स्याद)भ्यागारिक(स्तस्मि)न्नुपाधि(श्च पुमानयम्)।**

पु.

बड़ा सुन्दर **(वराङ्गरूपोपेतो यः) सिंहसंहननो (हि सः) ॥ १२ ॥**

अधिकर्द्धि, समृद्ध ये २ भरे पुरे या अच्छे संपन्न के नाम हैं। कुटुम्बव्यापृत, अभ्यागारिक और उपाधि ये ३ कुटुम्बपोषण आदि व्यापारवाले के नाम हैं। इन में पहला पुंलिङ्ग, दूसरा पुन्नपुंसक और तीसरा नित्य पुंलिङ्ग है और जो सुन्दर अङ्ग व रूप (लावण्य) से संयुक्त है वह 'सिंहसंहनन' कहलाता है यह १ बड़े सुन्दर का नाम है॥ ११। १२॥

दुःख में भी पु.स.न.

खुशी से काम करनेवाला **निर्वार्यः (कार्यकर्ता यः सपतन् सत्त्वसंपदा)।**

गूंगा पिता समान पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

अवाचिमूको(ऽथ)मनोजवः(स)पितृसन्निभः॥ १३॥

जो व्याकुल अवस्था में भी प्रसन्नता से मन लगा कर काम करता है उसे 'निर्वार्य' या 'निर्धार्य' कहते हैं यह १ दुःख में भी खुशी से काम करनेवाले का नाम है। अवाक्, मूक ये २ विना वाणीवाले या गूंगा के नाम हैं और मनोजव—मनोजवस या "मनोजवाः" (स्) पितृसन्निभ ये २ पितृतुल्य या पितृ समान के नाम हैं॥ १३॥

पु.स.न.

अलंकृत कन्या-दाता **(सत्कृत्यालंकृतां कन्यां यो ददाति स)कूकुदः।**

लक्ष्मीवान् स्नेही पु.स.न. पु.स.न पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

लक्ष्मीवाँल्लक्ष्मणःश्रीलःश्रीमान्स्निग्ध(स्तु)वत्सलः१४

सत्कार कर समस्त अलंकारों से अलंकृत कन्या को जो वर के लिये प्रदान

---

१ मूयते बध्यते वागस्येति 'मूङ् बन्धने' (भ्वा. आ. से.) बाहुलकात् "अवतिमवतीभ्याम् कक्" इति मुकुटेनोक्तम्। तन्नाधातुप्रत्ययानां कारकेषु विहितत्वात्संबन्धे विधानाभावात् अवतेः प्रयोजनाभावात् "धातोः" इत्येकत्व विवक्षयेन धातुसमुदायात् प्रत्ययाभावाच्च उक्तसूत्राभावाच्च "मूकोदंत्यावाग्दीनेषु" (इति हैमः)॥

करता है यानी व्याह करनेवाले को जो आदरपूर्वक अलंकृत कन्या को देता है उसे कूकुद या " कुकुद " कहते हैं यह १ अलंकृत कन्यादायी का नाम है। लक्ष्मीवान् (वत्) लक्ष्मण, श्रील, या " श्लील " और श्रीमान् ये ४ लक्ष्मीवान् के नाम हैं और स्निग्ध, वत्सल ये २ स्नेहयुक्त या स्नेही के नाम हैं ॥ १४॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

दयावान् **(स्या) दयालुः कारुणिकः कृपालुः सूरतः (समाः)।**

स्वेच्छाचारी पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

या स्वतन्त्र **स्वतन्त्रोऽपावृतःस्वैरीस्वच्छन्दोनिरवग्रहः ॥ १५ ॥**

दयालु, कारुणिक, कृपालु और सूरत या " सुरत " ये ४ दयाशील या कारुणिकके नाम हैं। ये चारों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं और स्वतन्त्र, अपावृत, स्वैरी या " स्वैर " स्वच्छन्द, निरवग्रह "निर्यन्त्रण और निरंकुश" ये ५ स्वच्छन्द या स्वतन्त्र (मनमाने) के नाम हैं ॥ १५ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

पराधीन या पराये हुक्म में रहनेवाला **परतन्त्रः पराधीनः परवान्नाथवा (नपि)।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

आधीनमात्र **अधीनो निघ्न आयत्तोऽस्वच्छन्दो गृह्यकोऽ(प्यसौ)॥१६॥**

परतन्त्र, पराधीन, परवान् (वत्) और नाथवन् (वन्) ये ४ पराधीन या परवशवर्ती के नाम हैं। इनमें परवान् व नाथवान् ये दोनों मतुबन्त हैं द्वित्व में परवन्तौ, नाथवन्तौ बहुत्व में " परवन्तः और नाथवन्तः " ये होते हैं और अधीन, निघ्न, आयत्त, अस्वच्छन्द और गृह्यक ये ५ आधीनमात्र के नाम हैं अथवा कितेक आचार्यों के मत में ' परतन्त्र ' से लेकर ' गृह्यक ' पर्यन्त ६ आधीनमात्र के ही नाम हैं ॥ १६ ॥

बुहारनेवाला पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

सुस्त **खलपूः (स्या) द्बहुकरो दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः।**

अविचारी पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

आलसी **जाल्मोऽसमीक्ष्यकारीस्यात्कुण्ठो मन्दःक्रियासु यः१७**

खलपू, बहुकर " स्त्री-बहुकरा या बहुकरी " ये २ बुहारी आदि से बुहारने वाले या पवित्र करनेवाले के नाम हैं। इनमें ' खलपू ' सुलूके समान है। दीर्घसूत्र, चिरक्रिय ये २ जो स्वल्पकाल से साध्यकार्य को चिरकाल में करता है उसके या आलसीविशेष के नाम हैं। जाल्म, असमीक्ष्यकारी (न्) ये २ जो गुण व दोष को विना विचार किये कार्य करता है उसके या अविचारी के नाम हैं और जो क्रियाओं में आलसी या मूढ़ है उसे ' कुण्ठ ' कहते हैं यह १ मन्दक्रियावाले या आलसी का नाम है ॥ १७ ॥

काम करनेवाला. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
काम करने में लगा. हमेशा काम में लगा. कामों का पूरा करनेवाला.

कर्मक्षमोऽलंकर्मीणः क्रियावान् (कर्मसूद्यतः) ।
पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
(स) कार्मः कर्मशीलो (यः)कर्मशूर(स्तु)कर्मठः॥१८॥

कर्मक्षम, अलंकर्मीण ये २ कार्य करने में समर्थ होनेवाले के नाम हैं। जो कर्मों में परायण यानी लगा रहता है उसे 'क्रियावान्' कहते हैं यह १ कामों में उद्यत हुए का नाम है। जो कर्मशील है वह 'कार्म' और स्त्री 'कार्मी' कहलाती है अथवा कार्म, स्त्री-कार्मी और कर्मशील ये २ फल की नहीं अपेक्षा कर जो कर्मों में हमेशा लगा रहता है उसके नाम हैं और कर्मशूर, कर्मठ ये २ जो बड़ी यत्न से आरम्भ किये कर्मों को पूरा करता है उसके नाम हैं ॥ १८ ॥

मजदूर. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
विना मजदूरी कामकरनेवाला.
भरण्यभुक्कर्मकरः कर्मकार(स्तु तत्क्रियः) ।
मृतकस्नायी. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
मांसभक्षक. **अपस्नातो मृतस्नात आमिषाशी (तु) शौष्कलः॥१९॥**

भरण्यभुक् (ज्) या "कर्मण्यभुक्" कर्मकर ये २ वेतन लेकर काम करनेवाले के नाम हैं। वेतनके विना जो क्रियावान् है वह 'कर्मकार' कहलाता है। यह १ मजदूरी के विना काम करनेवाले का नाम है। अपस्नात, मृतस्नात ये २ मृतक-निमित्त स्नान करनेवाले के नाम हैं और आमिषाशी (न्) शौष्कल या "शाष्कल और शुष्कल" ये २ मांस मछली खानेवाले के नाम हैं ॥ १९ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
भूखा. **बुभुक्षितः (स्या) त्क्षुधितः जिघत्सुरशनायितः ।**
परान्नजीवी. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
खवैया. **परान्नः परपिण्डादो भक्षको घस्मरोऽद्मरः ॥ २० ॥**

बुभुक्षित, क्षुधित, जिघत्सु, अशनायित ये ४ भोजन की इच्छा करनेवाले या भूखे के नाम हैं। परान्न, परपिण्डाद ये २ परान्न से उपजीवन करनेवाले के नाम हैं और भक्षक, घस्मर, अद्मर ये ३ भक्षणशील या खानेवाले के नाम हैं ॥ २० ॥

पु.स.न. पु.स.न.
मरभुखा **आद्यूनः(स्या) दौदरिको (विजिगीषाविवर्जिते) ।**
पु.स.न. पु.स.न.
पेटू **(उभौ) त्वात्मंभरिः कुक्षिंभरिः (स्वोदरपूरके) ॥ २१ ॥**

---

१ "भरण्यभुक्" अयं शूद्रवर्गेऽपि कथितस्तथापि पर्यायान्तरकथनार्थमनूदितः ॥

२ चान्द्रास्तु आत्मोदरकुक्षिष्विति पेट्ठः "ज्योत्स्नाकरम्भमुदरंभरयश्चकोराः" (इति मुरारिः) ॥

आद्यून, औदरिक ये २ बड़ी इच्छारहित या भूखसे अत्यन्तपीड़ित (मरभुखा) के नाम हैं और आत्मंभरि, कुक्षिंभरि ये २ अपने पेटभरनेवाले पेटभरू या पट्टू के नाम हैं ॥ २१ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न पु.स.न.
सर्वभक्षी. **सर्वान्नीन(स्तु) सर्वान्नभोजी गृध्नु(स्तु) गर्धनः ।**
लोभी. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
महालोभी. **लुब्धोऽभिलाषुकस्तृष्णक्(समौ)लोलुपलोलुभौ ॥२२॥**

सर्वान्नीन, सर्वान्नभोजी (इन्) ये २ सर्ववर्णों के अन्न खानवाले या सर्वभक्षी "परमहंस" आदि के नाम हैं । गृध्नु, गर्धन, लुब्ध, अभिलाषुक, तृष्णक् या 'तृष्णाक' तृषित या "तर्षित" ये ५ लोभी के नाम हैं अथवा गृध्नु, गर्धन ये २ आकाङ्क्षाशील के नाम हैं और लुब्ध, अभिलाषुक, तृष्णक् (ज्) या 'तृष्णाक' ये ३ अभिलाषाशील के नाम हैं और लोलुप, लोलुभ ये २ महालोभी के नाम हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥ २२ ॥

सिड़ी या पागल. पु.स न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
अन्यायी. **उन्मद(स्तू)न्मादिष्णुः (स्याद) विनीतः समुद्धतः ।**
पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
मतवाला. **मत्ते शौण्डोत्कटक्षीवाः कामुके कमितानुकः ॥ २३ ॥**
पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
कामुक या कामी. **कम्रः कामयिता भीकः कमनः कामनोऽभिकः ।**

उन्मद या "उन्माद" "सोन्माद" या "सून्माद, सून्मद" उन्मदिष्णु ये २ उन्मादशील, पागल या सिड़ी के नाम हैं । अविनीत, समुद्धत ये २ दुर्विनीत अन्यायशाली गँवार या गँवेला के नाम हैं । मत्त, शौण्ड, उत्कट, क्षीव या क्षीवी (न्) ये ४ मतवाले के नाम हैं और कामुक, कमिता, अनुक, कम्र, कामयिता (तृ) अभीक, कमन, कामन और अभिक ये ६ कामुक या पुंश्चल के नाम हैं ॥ २३।½ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
आज्ञाकारी. **विधेयो विनयग्राही वचनेस्थित आश्रवः ॥ २४ ॥**
वश्य. पु.स.न. पुं.स.न. पु.स न. पु.स.न. पु.स.न.
नम्र या सीधा. **वश्यः प्रणेयो निभृतविनीतप्रश्रिताः (समाः) ।**
धृष्ट या ढीट. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
बुद्धिमान्. **धृष्टे धृष्णग्वियात (श्च) प्रगल्भः प्रतिभान्विते ॥२५॥**

विधेय, विनयग्राही या "वचनग्राही" (न्) वचनेस्थित और आश्रव ये ४ वचन ग्रहण करनेवाले या आज्ञाकारी के नाम हैं । वश्य, प्रणेय ये २ वश में

आयेहुए या वशवर्ती के नाम हैं । अथवा 'विधेय' से लेकर 'प्रणेय' पर्यन्त सभो भी वशंगत ही के नाम हैं । निभृत, विनीत, प्रश्रित या "प्रसृत" ये ३ विनीत या सीखेहुए के नाम हैं । ये तीनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते ह । धृष्ट, धृष्णक् (ज्) "धृष्णु" और वियात ये ३ ढीठ, निर्लज्ज, अविनीत या अशिक्षित के नाम हैं और प्रगल्भ, प्रतिभान्वित ये २ बुद्धिमान्, बड़ेढीठ या निर्भय के नाम हैं ॥ २४ । २५ ॥

सलज्ज. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
आश्चर्यी. (स्याद) धृष्टे (तु) शालीनो विलक्षो विस्मयान्विते ।
व्याकुल. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
डरपोक. अधीरे कातरस्त्रस्नौ भीरुर्भीरुकभीलुकाः ॥ २६ ॥

अधृष्ट, शालीन ये २ लाजसमेत या शर्मिन्दा के नाम हैं । विलक्ष, विस्मयान्वित ये २ पराये धर्म, शीलआदिकों में आश्चर्यित या चकड़ायेहुए के नाम हैं । अधीर, कातर ये २ रोगादि लक्षणों से व्याकुल मनवाले या घबड़ायेहुए के नाम हैं और त्रस्नु, या "त्रस्त" भीरु या "भीत" भीरुक और भीलुक ये ४ डरेहुए या डरपोक के नाम हैं ॥ २६ ॥

कहनेवाला. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
पकड़नेवाला. आशंसुराशंसितरि गृहयालुर्ग्रहीतरि ।
श्रद्धावान्. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
गिरनेवाला. श्रद्धालुः(श्रद्धयायुक्ते) पतयालु (श्च) पातुके ॥ २७ ॥

आशंसु, आशंसिता ये २ वाञ्छाशील के नाम हैं । गृहयालु, गृहीता या ग्रहीता (तृ) ये २ ग्रहणशील या लेनेवाले के नाम हैं । श्रद्धा आस्तिक्य बुद्धि उससे जो संयुक्त रहता है उसे 'श्रद्धालु' कहते हैं । यह १ श्रद्धावान् का नाम है और पतयालु, पातुक ये २ पतनशील या गिरनेवाले के नाम हैं ॥ २७ ॥

लज्जावान्. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
वन्दना करनेवाला. लज्जाशीलोऽपत्रपिष्णुर्वन्दारुरभिवादके ।
पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
हत्यारा. बढ़नेवाला. शरारुर्घातुकोहिंस्रः(स्या)द्वर्धिष्णु(श्च)वर्धनः ॥ २८ ॥

लज्जाशील, अपत्रपिष्णु ये २ लोकलज्जायुक्त या लाजवाले के नाम हैं । वन्दारु, अभिवादक ये २ वन्दनशील के नाम हैं । शरारु, घातुक और हिंस्र ये ३ हिंसाशील, घातक या मारडालनेवाले (हत्यारे) के नाम हैं और वर्धिष्णु, वर्धन ये २ वर्धनशील या बढ़नेवालेके नाम हैं ॥ २८ ॥

उछलनेवाला. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
भूषणों की चाह वाला. होने की चाहवाला. पु.स.न पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
उत्पतिष्णु(स्तू)त्पतिताऽलंकरिष्णु (स्तु)मण्डनः ।
बर्तनेवाला. **भूष्णुर्भविष्णुर्भविता वर्तिष्णुर्वर्तनः(समौ) ॥ २९ ॥**

उत्पतिष्णु, उत्पतिता ये २ उत्पतनशील या उछलनेवाले के नाम हैं। अलंकरिष्णु, मण्डन ये २ अलंकरणशील या भूषणों की चाहनावाले के नाम हैं। भूष्णु, भविष्णु और भविता ये ३ भवनशील या होनेकी अभिलाषावाले के नाम हैं और वर्तिष्णु, वर्तन ये २ वर्तनशील या बर्तनेवाले के नाम हैं ॥ २९ ॥

निकालनेवाला. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
सघनसचिक्कण. **निराकरिष्णुः क्षिप्नुः(स्यात्) "सान्द्रस्निग्धस्तु"मेदुरः ।**
जाननेवाला. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
खिलनेवाला. **ज्ञाता(तु) विदुरो बिन्दुर्विकासी (तु) विकस्वरः ॥३०॥**

निराकरिष्णु, क्षिप्नु या "क्षिप्णु" ये २ निराकरणशील या निकालनेवाले के नाम हैं। घना होकर जो चिकना पदार्थ है उसे 'मेदुर' कहते हैं इसका लक्ष्य गीतगोविन्द काव्य के पहले श्लोक में कहा है कि "मेघैर्मेदुरमम्बरम्" आकाश मेघों से व्याप्त है यानी महाअन्धकार से घिरा है यह १ सघन सचिक्कण का नाम है। ज्ञाता, (तृ) विदुर, बिन्दु ये ३ ज्ञाता या जाननेवाले के नाम हैं और विकासी (न्) विकस्वर या "विकाशी, विकाषी, विकश्वर, विकष्वर" ये २ खिलने या फूलनेवाले के नाम हैं ॥ ३० ॥

गमन करने पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
वाला. **विसृत्वरो विसृमरः प्रसारी (च) विसारिणि ।**
पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
सहनशील. **सहिष्णुः सहनः क्षन्ता तितिक्षुः क्षमिता क्षमी ॥३१॥**

विसृत्वर, विसृमर, प्रसारी (न्) और विसारी (न्) ये ४ विसरणशील, पसरनेवाले या जानेवाले के नाम हैं और सहिष्णु, सहन, क्षन्ता (तृ) तितिक्षु, क्षमिता (तृ) और क्षमी (न्) ये ६ क्षमाशील, गमखोर या सहनेवाले के नाम हैं ॥ ३१ ॥

क्रोधी. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
महाक्रोधी. **क्रोधनोऽमर्षणः कोपी चण्ड(स्त्व)त्यन्तकोपनः ।**
जागनेवाला. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
निद्रा से घूर्णित. **जागरूको जागरिता घूर्णितः प्रचलायितः ॥ ३२ ॥**

क्रोधन, अमर्षण, कोपी (न्) या "कोपन" ये ३ क्रोधी के नाम हैं। चण्ड, अत्यन्तकोपन ये २ अत्यन्त क्रोधनशील या महाकोपी के नाम हैं। जागरूक, जागरिता (तृ) ये २ जागरणशील या जागनेवाले के नाम हैं और घूर्णित, प्रचलायित ये २ निद्रा से घूर्णित नयनोंवाले के नाम हैं ॥ ३२ ॥

सोनेवाला. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न पु.स.न.
सोया हुआ. **स्वप्नक् शयालुर्निद्रालुर्निद्राणशयितौ (समौ)।**
विमुख. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न
अधोमुख. **पराङ्मुखः पराचीनः (स्या) दवाङप्यधोमुखः ॥ ३३ ॥**

स्वप्नक् (ज्) शयालु, निद्रालु ये ३ निद्राशील या सोनेवाले के नाम हैं। इनमें स्वप्नक् जान्त है द्वित्व में "स्वप्नजौ" बहुत्व में 'स्वप्नजः' होते हैं। निद्राण या "निद्रित" शयित ये २ सुप्त या सोये हुए के नाम हैं। ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं। पराङ्मुख, पराचीन ये २ विमुख या त्रिफड़ेहुए के नाम हैं और अवाङ्, स्त्री "अवाची" अधोमुख, स्त्री "अधोमुखी" ये २ अधोमुख या नीचे मुँह कियेहुए के नाम हैं ॥ ३३ ॥

देवपूजक. सब पु.स.न. पु.स.न.
ओरजानेवाला. **(देवानञ्चति) देवद्र्यङ् विष्वद्र्यङ् (विष्वगञ्चति)।**
साथ का जाने- पु.स.न. पु.स.न.
वाला. तिरीछा
जानेवाला. **(यःसहाञ्चति)सध्र्यङ्(सः)सतिर्यङ्(यस्तिरोऽञ्चति)३४**

जो देवताओं को प्राप्त होता है या पूजता है वह 'देवद्र्यङ्' कहलाता है स्त्रीलिङ्ग में 'देवद्रीची' और नपुंसक में 'देवद्र्यक्' होता है यह १ देवपूजक का नाम है। जो चारों ओर चलता है वह 'विष्वद्र्यङ्' या 'विश्वद्र्यङ्' कहा जाता है स्त्रीलिङ्ग में 'विष्वद्रीची' या 'विश्वद्रीची' नपुंसक में विष्वद्र्यक् या 'विश्वद्र्यक्' होता है यह १ चारों तरफ चलनेवाले या सब ओर जानेवाले का नाम है। जो साथ में चलता है वह 'सध्र्यङ्' कहाता है स्त्रीलिङ्ग में 'सध्रीची' और नपुंसक में 'सध्र्यक्' होता है यह १ साथ चलनेवाले का नाम है और जो तिरीछा या टेढ़ा चलता है वह 'तिर्यङ्' कहलाता है और स्त्री 'तिरश्ची' कहाती है यह १ टेढ़ा चलनेवाले का नाम है॥३४॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
वक्ता. **वदो वदावदो वक्ता वागीशो वाक्पतिः (समौ)।**
महावक्ता. पु.स.न पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
नैयायिक.
बहुभाषी. **वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी वावदूको (ऽतिवक्तरि) ॥ ३५ ॥**

वद, वदावद और वक्ता (क्तृ) ये ३ वक्ता के नाम हैं। वागीश, वाक्पति ये २ महावक्ता या उत्तम व उग्र बोलनेवाले के नाम हैं। वाचोयुक्ति पटु, या "वाचो-

युक्ति, पटु " वाग्मी (न्) या वागुमी (न्) ये २ नैयायिक या प्रशस्त बोलने वाले के नाम हैं और वावदूक, अतिवक्ता (क्तृ) ये २ बहुभाषी या बहुत बोलने वाले के नाम हैं ॥ ३५ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

अवाच्यभाषी. **(स्या) जल्पाक (स्तु) वाचालो वाचाटो बहुगर्ह्यवाक् ।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

अप्रियवादी. प्रियवादी. **(दुर्मुखे) मुखराबद्धमुखौ शक्लः (प्रियंवदे) ॥ ३६ ॥**

जल्पाक, स्त्री " जल्पाकी " वाचाल, वाचाट, बहुगर्ह्यवाक् ये ४ बहुत अवाच्य कहनेवाले के नाम हैं । दुर्मुख, मुखर, अबद्धमुख ये ३ अप्रियवादी या अनर्गलमुख वाले के नाम हैं और शक्ल, " शक्त, या शक्र " प्रियंवद ये २ प्रियवक्ता या प्रियवादी के नाम हैं ॥ ३६ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

अप्रकटवादी. **लोहलः (स्याद) स्फुटवाग् गर्ह्यवादी (तु) कद्वदः ।**

कुवादी. दोषवादी. क्रूरवादी. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

(समौ) कुवादकुचरौ (स्याद) सौम्यस्वरोऽस्वरः ॥३७॥

लोहल, अस्फुटवाक् ये २ साफ़ न बोलनेवाले या अस्फुट बोलनेवाले के नाम हैं । गर्ह्यवादी (न्) कद्वद ये २ कुत्सितभाषी या कुवादीके नाम हैं । कुवाद, कुचर ये २ दोषवादी या कुकथनशील के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं और असौम्यस्वर, अस्वर ये २ काकादिकों के समान रूखे स्वरवाले के नाम हैं ॥ ३७ ॥

शब्द करनेवाला पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न

आशिषसे बड़ाई करनेवाला. **रवणः शब्दनो नान्दीवादी नान्दीकरः (समौ) ।**

महामूढ़ गूंगा व बहिरा. पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न.

जडोऽज्ञ एडमूक (स्तु वक्तुं श्रोतुमशिक्षिते) ॥ ३८ ॥

रवण, शब्दन ये २ शब्द करनेवाले या शब्दशील के नाम हैं । नान्दीवादी, (न्) नान्दीकर ये २ नाटक आदिकों में मङ्गलार्थ भेरी आदि बजानेवाले, आशीर्वाद से स्तुति करनेवाले या स्तुति विशेषवादीके नाम हैं कहा है कि, "जिस से देवता, ब्राह्मण और नृपाल आदिकों की स्तुति आशीर्वाद से संयुक्त होकर वर्तमान होती है इसीसे ' नान्दी ' कहलाती है " उसको जो कहता या करता है उसे ' नान्दीवादी ' और ' नान्दीकरः ' कहते हैं ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । जड़, स्त्री ' जड़ा ' अज्ञ ये २ इष्ट व अनिष्ट के न जानने वाले महामूढ़ के नाम हैं कहा है कि, " जो पुरुष परवशगामी होकर मोह से इष्ट,

अनिष्ट, सुख और दु:ख को नहीं जानता है वह यहां ' जड़संज्ञक ' कहलाता है " और जो कहने व सुनने के लिये अशिक्षित है यानी समर्थ नहीं है वह ' एडमूक ' या " अनेडमूक " कहलाता है यह १ बहिरा गूंगा का नाम है ॥ ३८ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

चुपरहनेवाला. **तूष्णींशील (स्तु) तूष्णीको नग्नोऽवासा दिगम्बरः ।**

नंगा धड़ंगा. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

निकाला धिक्कारी **निष्कासितोऽवकृष्टः (स्याद्) पध्वस्त (स्तु) धिक्कृतः ॥३९॥**

तूष्णींशील, तूष्णीक ये २ मौनशील या चुप रहनेवाले के नाम हैं । नग्न, अवासा: (स्) दिगम्बर ये ३ विना वस्त्रवाले या "नंगाधड़ंगा" के नाम हैं । इन में ' अवासा: ' सान्त है द्वित्व में ' अवाससौ ' बहुत्व में ' अवाससः ' ये होते हैं । निष्कासित या "निःक्रामित " अवकृष्ट ये २ निकालेहुए के नाम हैं और अपध्वस्त, धिक्कृत ये २ घुड़के या धिक्कारेहुए के नाम हैं ॥ ३९ ॥

गयेघमण्डवाला पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

धनादि का दिलानेवाला **आत्तगर्वोऽभिभूतः (स्याद्) दापितः साधितः (समौ) ।**

अनादर किया हुआ पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

प्रत्यादिष्टो निरस्तः (स्या) त्प्रत्याख्यातो निराकृतः ॥४०॥

आत्तगर्व, या " आत्तगन्ध " अभिभूत, या " अभिहत " ये २ टूटे अभिमानवाले के नाम हैं। अथवा अपध्वस्त, धिक्कृत, आत्तगर्व और अभिभूत ये ४ धिक्कारे या फटकारेहुए के ही नाम हैं। यह कितेक आचार्यों का मत है। दापित या "दायित" साधित ये २ धन आदिकों के दिलानेवाले के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं और प्रत्यादिष्ट, निरस्त, प्रत्याख्यात और निराकृत ये ४ अनादर कियेहुए के नाम हैं ॥ ४० ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

निकाला हुआ **निकृतः (स्या) द्विप्रकृतो विप्रलब्ध (स्तु) वञ्चितः ।**

ठगा गया पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

टूटे दिलवाला **मनोहतः प्रतिहतः प्रतिबद्धो हत (श्च सः) ॥ ४१ ॥**

निकृत, विप्रकृत ये २ विवर्ण किये या निकालेहुए के नाम हैं । विप्रलब्ध वञ्चित ये २ छले या ठगेगये के नाम हैं और जिसका मन तोड़ा गया है उसे मनोहत, प्रतिहत, प्रतिबद्ध और हत कहते हैं ये ४ टूटेहुए मनवाले के नाम हैं ॥ ४१ ॥

निन्दित. पु.स.न. पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
बँधुआ. **अधिक्षिप्तः प्रतिक्षिप्तो बद्धे कीलितसंयतौ ।**
विपत्ति में पड़ा. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
भय से भगा. **आपन्नआपत्प्राप्तः(स्यात्)कान्दिशीको[2]भयद्रुतः ॥४२॥**

अधिक्षिप्त, प्रतिक्षिप्त ये २ आक्षेप किये या निन्दा पायेहुए के नाम हैं । बद्ध, कीलित, संयत ये ३ रस्सी आदि से बँधे या क़ैद कियेहुए के नाम हैं । आपन्न आपत्प्राप्त ये २ विपत्ति में पड़ेहुए के नाम हैं और कान्दिशीक, भयद्रुत ये २ भय से भगेहुए या कहां जाऊं क्या करूं ऐसा कहनेवाले भयभीत के नाम हैं ॥ ४२ ॥

अपवादी. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
चञ्चल. **आक्षारितः क्षारितोऽभिशस्ते संकसुकोऽस्थिरे ।**
कष्टित. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
शोकाकुल. **व्यसनार्त्तोपरक्तौ(द्वौ)विहस्तव्याकुलौ (समौ) ॥४३॥**

आकारित, क्षारित और अभिशस्त ये ३ चोरी छिनारा आदि लोकापवाद से दूषित या कलंकित के नाम हैं । संकसुक या संकसूक, अस्थिर ये २ चलस्वभाववाले के नाम हैं । व्यसनार्त, उपरक्त ये २ व्यसनपीडित या दैवी व मानुषी पीडावाले के नाम हैं और विहस्त, व्याकुल ये २ शोक आदिसे न कुछकर सकनेवाले के नाम हैं ॥४३॥

शोकादि से भङ्ग पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
गात्रवाला. मरणासन्नबुद्धिवाला **विक्लवो विह्वलः (स्यात्तु) विवशोऽरिष्टदुष्टधीः ।**
बेंत मारने योग्य पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
आततायी. **कश्यः कशार्हे (संनद्धे) त्वाततायी(वधोद्यते[3])॥४४॥**

विक्लव, विह्वल ये २ शोक आदि से भङ्गगात्रवाले या अपने अङ्गों को ही धारने के लिये असमर्थ के नाम हैं । विवश, अरिष्टदुष्टधी ये २ आसन्न मरणवाले लक्षणों से दूषित मतिवाले के नाम हैं । कश्य, कशार्ह ये २ बेंतमारने योग्य या ताड़न करने योग्य के नाम हैं और समीपमें आकर बांधके मारनेवाले को " आततायी " (इन्) कहते हैं । यहां वध उपलक्षणमात्र है स्मृतियोंमें कहा है कि " अग्निदायी, विषदायी, शस्त्रपाती, धनहारी, क्षेत्रहारी और दारापहारी " ये ६ आततायी कहाते हैं यह १ वध करने में परायण घरफूंकने या विषदेनेवाले आदि का नाम है ॥ ४४ ॥

१ " कस्यचिच्चौर्यादिकं प्रतिस्पर्धमानस्य दुर्वचनमधिक्षेपः " (इति राजमुकुटः) ॥
२ कांदिशं गच्छामीति चिन्तयन् पलायितः कान्दिशीकः स्यादिति ॥
३ वध उपलक्षणम् । यत्स्मृतिः—"अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रपाती धनापहः । क्षेत्रदारहरश्चैव षडेते आततायिनः " (इति क्षीरस्वामी) ॥

शत्रुता करने योग्य. शीश काटने योग्य. विष देनेयोग्य. मूसल से मारने योग्य.

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
द्वेष्ये त्वक्षिगतो वध्यः शीर्षच्छेद्य (इमौ समौ) ।
पु.स.न. पु.स.न.
विष्यो (विषेण यो वध्यो) मुसल्यो(मुसलेन यः)॥४५॥

द्वेष्य, अक्षिगत ये २ शत्रुता करने या वैर करने योग्य के नाम हैं । वध्य, शीर्षच्छेद्य ये २ शीश काटने योग्यके नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । जो विषसे वध्य होता है वह 'विष्य' कहलाता है यह १ विष (ज़हर) देने योग्य का नाम है और जो मूसल से मारने योग्यहै उसे 'मुसल्य, मुशल्य या मुषल्य' कहते हैं यह १ मूसलसे वध करने योग्य का नाम है ॥ ४५ ॥

पुण्यात्मा. पापात्मा. विना विचारे वधादिक करनेवाला. केवल दोषदर्शी. कपटी.

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
शिशिवदानोऽकृष्णकर्मा चपलश्चिकुरः (समौ) ।
पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
दोषैकदृक् पुरोभागी निकृतस्त्वनृजुः शठः ॥ ४६ ॥

शिशिवदान, अकृष्णकर्मा (न्) ये २ पुण्यात्मा या पुण्यकर्मा के नाम हैं । शिशिवदान, कृष्णकर्मा (न्) ये २ पापात्मा या पापकर्मा के नाम हैं । चपल, चिकुर ये २ विना विचारे वधादि कार्यों के करनेवाले के नाम हैं । ये दोनों समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं । दोषैकदृक् (श्) पुरोभागी (न्) ये २ दोषमात्र देखने वाले के नाम हैं और निकृत, अनृजु, शठ ये ३ टेढ़े या कपटी के नाम हैं ॥ ४६ ॥

चुगलखोर. दुष्ट. घातुक. छली.

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
कर्णेजपः सूचकः (स्यात्) पिशुनो दुर्जनः खलः ।
पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
नृशंसो घातुकः क्रूरः पापो धूर्त (स्तु) वञ्चकः ॥४७॥

कर्णेजप, सूचक ये २ भूले पदार्थ के जतलानेवाले या कानमें दूसरे की निन्दा करनेवाले के नाम हैं । पिशुन, दुर्जन, खल ये ३ परस्पर भेद करानेवाले दुर्जन के नाम हैं अथवा ' पिशुन ' आदि तीनों चुगलखोरही के पर्याय (नामान्तर) हैं यह स्वामी का मत है । नृशंस, घातुक, क्रूर और पाप ये ४ परद्रोहकारी पापी या हिंसाशील के नाम हैं और धूर्त, वञ्चक ये २ परप्रतारणशील, छली या ठगी करनेवाले के नाम हैं ॥ ४७ ॥

१ खलः सर्षपमात्राणि पररन्ध्राणि पश्यति । आत्मनो बिल्वमात्रेण पश्यन्नपि न पश्यति ॥ १ ॥
सर्पः क्रूरः खलः क्रूरः सर्पात्क्रूरतरः खलः । सर्प एकाकिनं हन्ति खलः सर्वविनाशकृत् ॥ २ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
मूर्ख अज्ञे मूढयथाजातमूर्खवैधेयबालिशाः ।
पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
कृपण कदर्ये कृपणक्षुद्रकिंपचानमितंपचाः ॥ ४८ ॥

अज्ञ, मूढ, या "मुग्ध" यथाजात, वैधेय स्त्री "वैधेयी" और बालिश ये ६ अज्ञाता या मूर्ख के नाम हैं और कदर्य, कृपण, क्षुद्र, किंपचान, मितंपच या "किंपच" और "अनमितंपच" ये ५ अधर्म से पुत्र दारा आदि को पीडा देते हुए लोभ से धनसंचय करनेहारे कृपण के नाम हैं ॥ ४८ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
दरिद्री या निर्धनी निःस्व(स्तु) दुर्विधो दीनो दरिद्रो दुर्गतो(ऽपि सः) ।
मँगता या याचक पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
वनीयको याचनको मार्गणो याचकार्थिनौ ॥ ४९ ॥

निःस्व, दुर्विध, दीन, दरिद्र और दुर्गत ये ५ धनहीन दीन दुःखी या दरिद्री के नाम हैं और वनीयक या "वनीपक" याचनक, मार्गण, याचक और अर्थी (र्थिन्) ये ५ याचक, मँगता या मांगनेवाले के नाम हैं ॥ ४९ ॥

अहंकारी पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
शुभयुक्त अहंकारवानहंयुः शुभंयु(स्तु) शुभान्वितः ।
देवता पु.स.न.
नर पशु आदि दिव्योपपादुका (देवा) "नृगवाद्या" जरायुजाः ॥५०॥

अहंकारवान् (वत्) अहंयुः ये २ अहंकारी के नाम हैं । शुभंयु, शुभान्वित ये २ शुभयुक्त के नाम हैं । जो देवता हैं वे स्वर्ग में रहते हुए अकस्मात् उपजते हैं इस लिये उनको 'दिव्योपपादुक' कहते हैं "यहां नरक के बराने के लिये दिव्यपद दिया गया है" माता, पिता आदिकों के देखे हुए कारणों से निरपेक्षावाले अदृष्ट सहकृत गुणों से उपजे हुए जो देवता हैं वे "दिव्योपपादुक" कहलाते हैं यह १ देवताओंका नाम है । नर, गौ आदि प्राणियों को 'जरायुज' कहते हैं । आद्यशब्द से गधा, घोड़ा, हाथी आदि जानवरों का ग्रहण किया जाता है ॥ ५० ॥

स्वेदज अण्डज (स्वेदजाः) कृमिदंशाद्याः पक्षिसर्पादयो(ऽण्डजाः) ।

इति प्राणिवर्गः ॥

कीड़े व डांस आदि जीवों को 'स्वेदज' कहते हैं । आद्यशब्द से मसा, खटमल, जुआं, चीलुआ आदिकों का ग्रहण किया जाता है । पसीना से उपजने के कारण ऊष्मा स्वेद है उससे पैदा हुए को 'स्वेदज' कहते हैं यह १ कीड़े आदिकों का नाम है । पक्षी, सांप आदि जीव 'अण्डज' कहलाते हैं यानी जो अण्डों से पैदा होते हैं

उन को 'अण्डज' कहते हैं । आदि शब्द से मगर, मछली और चींटी आदिकों का ग्रहण किया जाता है यह १ पक्षी और सांप आदि जीवों का नाम है ॥

इति प्राणिवर्गः ॥

पु. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

वृक्ष,लता आदि **उद्भिद (स्तरुगुल्माद्या) उद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥५१॥**

वृक्ष, गुल्म आदिकों को 'उद्भिद्' कहते हैं । आद्यशब्दसे घास, ओषधी, लता (बेल) आदिकों का ग्रहण किया जाता है । यह १ ज़मीन को फोड़कर निकलने वाले के नाम हैं । अब उद्भिदपर्यायों को कहते हैं कि, उद्भिद्, उद्भिज्ज और उद्भिद ये ३ भूमिको फोड़कर उपजनेवाले के नाम हैं ॥ ५१ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

सुन्दर या **सुन्दरं रुचिरं चारु सुषमं साधु शोभनम् ।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

मनोरम **कान्तं मनोरमं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ॥ ५२ ॥**

सुन्दर, " स्त्री सुन्दरी या सुन्दरा " रुचिर, चारु, सुषम या " सुसम " साधु, शोभन, कान्त, मनोरम, "मनोहर या मनोहारि (न्)" रुच्य, मनोज्ञ, मञ्जु, मञ्जुल "सौम्य, भद्रक, रम्य, रमणीय और रामणीयक" ये १२ सुन्दर के नाम हैं ॥५२॥

पु.स.न.

परमसुन्दर **(तद) सेचनकं (तृप्तेर्नास्त्यन्तो यस्य दर्शनात्) ।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

प्यारा **अभीष्टेऽभीप्सितं हृद्यं दयितं वल्लभं प्रियम् ॥ ५३ ॥**

जिसके देखने से दृष्टि और मनकी तृप्ति का अन्त नहीं होता है और जो बहु बार देखा गया भी अधिक प्रीति को उपजाता है वह 'असेचनक' या " आसेचनक " कहलाता है यह १ अतिसुन्दर या महासुन्दर का नाम है । अभीष्ट, अभीप्सित, हृद्य, दयित, वल्लभ और प्रिय ये ६ प्यारे, चाहे हुए या अभीष्ट के नाम हैं ॥ ५३ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न.

अधम **निकृष्टप्रतिकृष्टार्वरेफयाप्यावमाधमाः ।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.पु.स.न.

कुपूयकुत्सितावद्यखेटगर्ह्याणकाः (समाः) ॥ ५४ ॥

निकृष्ट, प्रतिकृष्ट, अर्वा (न्), रेफ, " रेप या रेफस्" याप्य, अवम, या " अरम" अधम, कुपूय या " कपूय " कुत्सित, अवद्य, खेट, गर्ह्य, अणक, " आणक या अनक" ये १३ अधम के नाम हैं । ये समानार्थक होकर समानलिङ्ग कहाते हैं ॥५४॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
मैली या गन्दी वस्तु मलीमसं (तु) मलिनं कच्चरं मलदूषितम् ।
पवित्र या साफ पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
स्वभावसे पवित्र पूतं पवित्रं मेध्यं (च) वीध्र (न्तु) विमलात्मकम्॥५५॥

मलीमस, मलिन, कच्चर और मलदूषित ये ४ गन्दी या मैली वस्तुके नाम हैं । पूत, पवित्र, मेध्य ये ३ पवित्र या साफ़ के नाम हैं । ये अप्राणी के विषय में कहे गये हैं और जहां प्राणीका विषय है वहां ' पवित्रः प्रयतः पूतः ' यह कहाजाता है और वीध्र, विमल " विमलात्मक, या विमलार्थक " ये २ स्वभावसे निर्मल के नाम हैं॥५५॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
मलरहित. निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निःशोध्यमनवस्करम् ।
निरर्थक. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न पु.स.न.
खाली या रीता. असारं फल्गु शून्यं (तु) वशिकं तुच्छरिक्तके ॥५६॥

निर्णिक्त, शोधित, मृष्ट, निःशोध्य और अनवस्कर ये ५ दूर किये हुए मलवाले या मलरहित के नाम हैं । असार, फल्गु ये २ निरर्थक, निर्बल या साररहित के नाम हैं और शून्य या " शुन्य " वशिक, तुच्छ और रिक्तक या ' रिक्त ' ये ४ छूंछे, रीते या खाली के नाम हैं ॥ ५६ ॥

न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
प्रधान या मुख्य (क्लीबे) प्रधानं प्रमुखं प्रवेकानुत्तमोत्तमाः ।
पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
मुख्यवर्यवरेण्या (श्च) प्रवर्हानवरार्ध्य (वत्) ॥५७॥
पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
परार्ध्याग्रप्राग्रहरप्राग्र्याग्र्याग्रीयमाग्रियम् ।

प्रधान, प्रमुख, प्रवेक, अनुत्तम, उत्तम, मुख्य, वर्य, वरेण्य, प्रवर्ह, अनवरार्ध्य, परार्ध्य, अग्र, प्राग्रहर, प्राग्र्य, अग्र्य, अग्रीय और अग्रिय या " अग्रण, अग्रणी, अग्राणि " ये १७ प्रधान या मुख्य के नाम हैं । इनमें, प्रधान, नपुंसक है और ये सबही समानार्थक हैं यह ' वत् ' से जाना जाता है ॥ ५७ । ½ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स न. पु.स.न. पु.स.न.
श्रेष्ठ. श्रेयाञ्श्रेष्ठः पुष्कलः 'स्या'त्सत्तम(श्चा) तिशोभने॥५८॥
पु. पु. पु. पु.
श्रेष्ठार्थवाचक. (स्युरुत्तरपदे) व्याघ्रपुङ्गवर्षभकुञ्जराः ।
पु. पु. पु.
सिंहशार्दूलनागा (द्याः पुंसि श्रेष्ठार्थगोचराः) ॥ ५९ ॥

श्रेयान्, श्रेष्ठ, पुष्कल, सत्तम और अतिशोभन ये ५ सत्तम, श्रेष्ठ या अत्यन्त

शोभन के नाम हैं। इनमें 'श्रेयान्' सान्त है द्वित्व में श्रेयांसौ और बहुत्व में 'श्रेयांसः' ये होते हैं और यदि व्याघ्र, पुङ्गव, ऋषभ, कुञ्जर, सिंह, शार्दूल और नाग आदि ये उत्तर पदमें वर्तमान होवें तो श्रेष्ठार्थ के वाचक होते हुए पुंलिङ्ग में रहते हैं जैसे कि 'पुरुषो व्याघ्र इव' इस विग्रह में "उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे" इस सूत्रसे समास करनेपर 'पुरुषव्याघ्र' होता है। एवं मुनिपुङ्गव, पुरुषर्षभ, मनुष्यकुञ्जर, नृपसिंह, नृपशार्दूल और नृपनाग आदि शब्द पुंलिङ्ग हैं। आद्यशब्दसे सोम, चन्द्र और मुख आदिकों का ग्रहण किया जाता है उसीसे 'नृसोम' आदि सिद्ध होते हैं ये श्रेष्ठार्थवाचकों के नाम हैं॥ ५८। ५९॥

पु.स.न. न. न.

अप्रधान. **अप्राग्र्यं (द्वयहीने द्वे) अप्रधानोपसर्जने।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

विस्तीर्ण. **विशङ्कटं पृथु बृहद्विशालं पृथुलं महत्॥ ६०॥**

पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

मोटा. **वड्रोरु विपुलं पीनपीव्नी (तु) स्थूलपीवरे।**

अप्राग्र्य, अप्रधान, उपसर्जन ये ३ अप्रधान के नाम हैं। इनमें 'अप्रधान, उपसर्जन' ये २ स्त्रीपुंलिङ्गों से हीन हैं। यानी नपुंसक लिङ्ग हैं विशङ्कट, स्त्री विशङ्कटी या विशङ्कटा, पृथु, बृहत्, विशाल, पृथुल, महत्, वड्र, या वभ्र, उरु और विपुल ये ९ फैलाव या विस्तीर्ण के नाम हैं और पीन, पीव (न्) स्त्री 'पीवरी' स्थूल और पीवर ये ४ स्थूल या मोटे के नाम हैं॥ ६०। ½॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न.

थोड़ा **स्तोकाल्पक्षुल्लकाः श्लक्ष्णं सूक्ष्मं दभ्रं कृशं तनु॥ ६१॥**

स. स. पु. पु. पु. पु.

सूक्ष्म या महीन **(स्त्रियां) मात्रा त्रुटी (पुंसि) लवलेशकणाणवः।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

बहुत थोड़ा **अत्यल्पेऽल्पिष्ठमल्पीयः कनीयोऽणीय (इत्यपि)॥६२॥**

स्तोक, अल्प, क्षुल्लक, सूक्ष्म, श्लक्ष्ण, दभ्र, कृश, तनु, मात्रा, त्रुटी या "त्रुटि" लव, लेश, कण स्त्री कणी या 'कणिका' और अणु ये १४ सूक्ष्म या महीन के नाम हैं। अथवा किसी आचार्य के मत में स्तोक, अल्प, क्षुल्लक ये ३ थोड़े या अल्प के नाम हैं। सूक्ष्म, श्लक्ष्ण, दभ्र, कृश, तनु, मात्रा, त्रुटी या "त्रुटि" लव, लेश, कण और अणु ये ११ सूक्ष्मके नाम हैं इनमें 'मात्रा, त्रुटी' ये २ स्त्रीलिङ्ग हैं और लव, लेश, कण, अणु ये ४ पुंलिङ्ग हैं और अत्यल्प, अल्पिष्ठ अल्पीयः (स्) कनीयः (स्) या "कणीयः" और अणीयः (स्) ये ५ अत्यल्प या बहुत थोड़े के नाम हैं॥ ६१। ६२॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न पु.स.न पु.स.न. पु.स.न.

बहुत या **प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यमदभ्रं बहुलं बहु ।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न, पु.स.न. पु.स.न.

अधिक **पुरुहं पुरु भूयिष्ठं स्फिरं भूय (श्च) भूरि (च)॥ ६३ ॥**

प्रभूत, प्रचुर, प्राज्य, अदभ्र, बहुल, बहु, पुरुह, या " पुरुहू " पुरु, भूयिष्ठ, स्फिर या "स्फार" भूयः (स्) या " भूमन् " और भूरि ये १२ बहुत या अधिक के नाम हैं। इनमें ' भूयः ' सान्त है ॥ ६३ ॥

पु.स.न.

सौ से परे या **परश्शता (व्यास्ते येषां परा संख्या शतादिकात्) ।**

अधिक. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स न.

गिनने योग्य. **गणनीये(तु)गणेयं संख्यातं गणित(मथ)समं सर्वम् ६४**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

गिने हुए. **विश्वमशेषं कृत्स्नं समस्तनिखिलाखिलानि निःशेषम् ।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

समग्र या संपूर्ण. **समग्रं सकलं पूर्णमखण्डं (स्याद) नूनके ॥ ६५ ॥**

जिन संख्येयों की संख्या सौ और सहस्र से अधिक हो वे क्रमसे ' परश्शत ' आदि कहलाते हैं। आद्यशब्द से परस्सहस्र, परोलक्ष आदि होते हैं। यह १ सौ से अधिक का नाम है। इसका लक्ष्य कहा है कि, ' परःशतानां विदुषां समाज इति ' यह किसी कवि का वचन संगत होता है। गणनीय, गणेय या "गाणेय" ये २ गिनने योग्य या शक्य के नामहैं। संख्यात, गणित ये २ संख्या किये या गिने हुए के नामहैं और सम, सर्व, विश्व, अशेष, कृत्स्न, समस्त, निखिल, अखिल, निःशेष, समग्र, सकल, पूर्ण, या " पूर्व " अखण्ड और अनूनक या ' अनून ' ये १४ समग्र या संपूर्ण के नाम हैं ॥ ६४ । ६५ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

सघन या गभिन **घनं निरन्तरं सान्द्रं पेलवं विरलं तनु ।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

विरल या छिटका **समीपे निकटासन्नसंनिकृष्टसनीड (वत्) ॥ ६६ ॥**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

समीप या पास **सदेशाभ्याशसविधसमर्यादसवेश (वत्) ।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

उपकण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्रा(अप्य)भितो(ऽव्ययम्)॥

---

१ तं तस्थिवांसं नगरोपकण्ठे इति । २ अभ्यर्णमागस्कृतमस्पृशद्भिरिति रघुः ॥

घन, निरन्तर, सान्द्र ये ३ निविड़, सघन या गझिन के नाम हैं। पेलव, विरल और तनु ये ३ विरल या अलग के नाम हैं और समीप, निकट, आसन्न, सन्निकृष्ट, सनीड, सदेश, अभ्यास या 'अभ्यास' सविध, समर्याद, सवेश या 'सवेष' उपकण्ठ, अन्तिक, अभ्यर्ण, अभ्यग्र और अभितः (स्) ये १५ समीप, निकट या पास के नाम हैं। यहां दो स्थानों में समानअर्थवाला "वत्" अव्यय आया है उसीसे ये सबही समानार्थक कहलाते हैं और इनमें "अभितः" यह अव्यय है ॥ ६६ । ६७ ॥

संयुक्त या मिला पु.स.न.　पु.स.न.　पु.स.न.
अत्यन्त समीप **संसक्ते(त्व)व्यवहितमपटान्तर(मित्यपि)।**
पु.स.न.　पु.स.न.　पु.स.न.　पु.स.न
दूर या फासिला **नेदिष्ठमन्तिकतमं(स्या)दूरं विप्रकृष्टकम् ॥ ६८ ॥**

संसक्त, अव्यवहित, अपटान्तर या "अपदान्तर" ये ३ संयुक्त या मिले हुए के नाम हैं। नेदिष्ठ, अन्तिकतम या "अन्तिक" ये २ अतिनिकट के नाम हैं और दूर, विप्रकृष्टक या विप्रकृष्ट" ये २ दूर के नाम हैं ॥ ६८ ॥

अतिदूर　पु.स.न.　पु.स.न.　पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
लम्बा चौड़ा **दवीय 'श्च' दविष्ठं 'च' सुदूरं दीर्घमायतम्।**
गोल ऊंचा पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.　पु.स.न.
झुका हुआ **वर्तुलं निस्तलं वृत्तं बन्धुरं 'तू' न्नतानतम् ॥ ६९ ॥**

दवीयः (स्) दविष्ठ, सुदूर ये ३ अत्यन्त दूर के नाम हैं। इनमें 'दवीयः' सान्त है। दीर्घ, आयत ये २ लम्बाई व चौड़ाई के नाम हैं। वर्तुल, निस्तल, वृत्त ये ३ वर्तुल या गोल के नाम हैं और जो स्वभाव से ऊंचा व किसी उपाधि के कारण कुछ झुकासा प्रतीत होवे तो उसे बन्धुर या "बन्धूर" और 'उन्नतानत' कहते हैं ये २ ऊँचे होकर झुके हुए के नाम हैं ॥ ६९ ॥

पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.　पु.स.न.
ऊंचा **उच्चप्रांशून्नतोदग्रोच्छ्रितास्तुङ्गे(ऽथ) वामने।**
बौना　पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न.　पु.स.न. पु.स.न.पु.स.न.
औंधे मुख **न्यग्नीचखर्वह्रस्वाः (स्यु) रवाग्रेऽवनतानते ॥ ७० ॥**

उच्च, प्रांशु, उन्नत, उदग्र, उच्छ्रित, तुङ्ग या "उत्तुङ्ग" ये ६ उन्नत या ऊँचे के नाम हैं। वामन, न्यक् या "न्यक् स्त्री नीची या 'नीचा' नपुंसक, न्यक्" खर्व या खर्ब और ह्रस्व ये ५ छोटेडौलवाले या बौना के नाम हैं। और अवाग्र, अवनत, आनत या "नत" ये ३ अधोमुख या नीचे मुखवालेके नाम हैं ॥ ७० ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

वक्र **अरालं वृजिनं जिह्ममूर्मिमत्कुञ्चितं नतम् ।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

या टेढ़ा **आविद्धं कुटिलं भुग्नं वेल्लितं वक्र(मित्यपि) ॥ ७१ ॥**

अराल, वृजिन, जिह्म, ऊर्मिमत् या "उर्मिमत्" कुञ्चित, नत, आविद्ध, कुटिल, भुग्न, वेल्लित और वक्र ये ११ टेढ़े, लचे या वक्र के नाम हैं ॥ ७१ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

सीधा **ऋजावजिह्मप्रगुणौ व्यस्तेत्वप्रगुणाकुलौ ।**

आकुल पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

नित्य **शाश्वत(स्तु)ध्रुवो नित्यसदातनसनातनाः ॥ ७२ ॥**

ऋजु, अजिह्म, प्रगुण ये ३ कुटिलतारहित सीधे के नाम हैं । व्यस्त, अप्रगुण, आकुल ये ३ आकुल या अकुलाने हुए के नाम हैं और शाश्वत, ध्रुव, नित्य, सदातन और सनातन ये ५ ध्रुव या नित्य के नाम हैं ॥ ७२ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

अतिस्थिर. **स्थास्नुः स्थिरतरस्थेया (नेकरूपतया तु यः) ।**

स्थिर. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

वृक्षादि. **(कालव्यापी स) कूटस्थः स्थावरो जङ्गमेतरः ॥ ७३ ॥**

स्थास्नु, स्थिरतर, स्थेयान् ये ३ अतिस्थिर के नाम हैं । इनमें 'स्थेयान्' सान्त है द्वित्व में 'स्थेयांसौ' बहुत्व में 'स्थेयांसः' ये होते हैं । जो एकरूपता से यानी एकही स्वभाव से काल का व्यापक आकाश आदि है वह 'कूटस्थ' कहलाता है अथवा "कूटोऽस्त्री निश्चले राशौ" इस मेदिनीकोष के प्रमाण से "कूटः निश्चलः सन् तिष्ठतीति कूटस्थः" जो निहाई के समान निश्चल होता हुआ टिका रहता है उसे 'कूटस्थ' कहते हैं यह १ निश्चल का नाम है और स्थावर जङ्गमेतर ये २ वृक्ष आदि अचल पदार्थ के नाम हैं ॥ ७३ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

चलनेवाले. **चरिष्णुजङ्गमचरं त्रसमिङ्गं चराचरम् ।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

कांपनेवाले. **चलनं कम्पनं कम्प्रं चलं लोलं चलाचलम् ॥ ७४ ॥**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

चञ्चल. **चञ्चलं तरलं (चैव) पारिप्लवपरिप्लवे ।**

चरिष्णु, जङ्गम, चर, त्रस, इङ्ग और चराचर ये ६ चर या चलनेवाले के

नाम हैं। चलन, कम्पन, कम्प्र या " चपल, और चटल " ये ३ कम्पनशील, हिलने या कांपनेवाले के नाम हैं और चल, लोल, चलाचल, चञ्चल, तरल, पारिप्लव और परिप्लव ये ७ चञ्चल के नाम हैं अथवा कितेक आचार्यों के मत में 'चलन' से लेकर 'परिप्लव' पर्यन्त १० चञ्चल ही के नाम हैं॥ ७४। ½॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

अधिक, **अतिरिक्तः समधिको दृढसंधि'स्तु' संहतः॥ ७५॥**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

बड़ा मिलापी, **कक्खटं कठिनं क्रूरं कठोरं निष्ठुरं दृढम्।**

कठिन, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

बहुत बढ़ेहुए **जरठं मूर्तिमन्मूर्तं प्रवृद्धं प्रौढमेधितम्॥ ७६॥**

अतिरिक्त, समधिक ये २ अधिक या बढ़े हुए के नाम हैं। दृढ़संधि, संहत ये २ बड़े मिलापी या पक्के मेल वाले के नाम हैं और कक्खट या " खक्खट " कठिन, क्रूर, कठोर या " कठोल " निष्ठुर, दृढ़, जरठ, स्त्री जरठा, मूर्तिमत्, मूर्त ये ६ कठिन या कठोर के नाम हैं और प्रवृद्ध, प्रौढ, एधित ये ३ बहुत बढ़े हुए के नाम हैं॥ ७५। ७६॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

पुराना, **पुराणे[1] प्रतनप्रत्नपुरातनचिरन्तनम्।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

नया, **प्रत्यग्रोऽभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः॥ ७७॥**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

कोमल, **नूत्न (श्च) सुकुमारं (तु) कोमलं मृदुलं मृदु।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

पीछे **अन्वगन्वक्षमनुगेऽनुपदं[2] (क्लीबमव्ययम्)॥ ७८॥**

पुराण स्त्री " पुराणी या पुराणा " प्रतन, प्रत्न, पुरातन और चिरंतन ये ५ प्राचीन या पुरातन के नाम हैं। प्रत्यग्र, अभिनव, नव्य, नवीन, नूतन, नव और नूत्न ये ७ नवीन, नूतन या नये के नाम हैं। सुकुमार, कोमल, मृदुल और मृदु ये ४ कोमल या नरम के नाम हैं और अन्वक्, अन्वक्ष, अनुग और अनुपद ये ४ पीछे के नाम हैं और ये 'पश्चात्' इस अर्थ में अव्ययीभाव समास होने से नपुंसक और अव्यय हैं यानी अन्वक्, अन्वक्ष, अनुपद ये तीनों अव्यय और अन्वक्ष,

---

१ पुराणशब्देन पुरातनशब्दस्य बाधः प्राप्तोऽपि पृषोदरादित्वान्नेति बोध्यम् " अबाधकान्यपि निपातनानि " इति भाष्यविरुद्धमिति परिभाषेन्दुशेखरे नागेशः।

२ युज्यते चान्वक्शब्दस्याव्ययत्वम् " अन्वगययौ मध्यमलोकपालः " इत्यत्र 'अन्वक्' इति रूपापत्तेः। तामित्यत्र " कर्तृकर्मणोरिति " षष्ठ्यापत्तेश्च। अव्ययत्वे तु न लोकाव्ययेति षष्ठीनिषेधेन अव्ययादिति सुपो लुकालुसत्वेन न काप्यनुपपत्तिः॥

अनुपद ये दोनों नपुंसक हैं उसीसे " अन्वग्ययौ मध्यमलोकपालः " इसमें 'अन्वक्' का अव्ययत्व है ॥ ७७ । ७८ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष, **प्रत्यक्षं (स्या) दैन्द्रियकमप्रत्यक्षमतीन्द्रियम् ।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

एकाग्रमनवाला **एकतानोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायना (वपि) ॥ ७९ ॥**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

(अप्ये) कसर्ग एकाग्र्यो (ऽप्ये) कायनगतो (ऽपि च) ।

प्रत्यक्ष या " समक्ष " ऐन्द्रियक ये २ इन्द्रियों से जाने हुए के नाम हैं । अप्रत्यक्ष, या " अनध्यक्ष और परोक्ष " अतीन्द्रिय ये २ इन्द्रियों से नहीं जाने हुए या अग्राह्य धर्मादिकों के नाम हैं और एकतान, अनन्यवृत्ति, एकाग्र, एकायन, एकसर्ग, एकाग्र्य, या " ऐकाग्र्य " और एकायनगत ये ७ एकाग्र मनवाले या समाहित चित्तवाले के नाम हैं ॥ ७९ । ३ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.पु.स.न.

आदि, **पुंस्यादिः पूर्वपौरस्त्यप्रथमाद्या (अथास्त्रियाम्)॥ ८० ॥**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

अन्त, **अन्तो जघन्यं चरममन्त्यपाश्चात्यपश्चिमम् ।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

व्यर्थ, साफ **मोघं निरर्थकं स्पष्टं स्फुटं प्रव्यक्तमुल्बणम् ॥ ८१ ॥**

आदि, पूर्व, पौरस्त्य, प्रथम, आद्य या " आदिम " और " अग्रिम " ये ५ आदि या पहले के नाम हैं । इनमें ' आदि ' पुंलिङ्गही है । अन्त, जघन्य, चरम, अन्त्य, पाश्चात्य और पश्चिम या "अन्तिम" ये ६ अन्त्य के नाम हैं । इनमें 'अन्त, पुंनपुंसकही है जैसे कि " स्वच्छन्दा स्त्री कुलस्यान्तः " स्वेच्छाचारिणी स्त्री कुल का अन्त करदेती है । मोघ, निरर्थक ये २ निष्प्रयोजन, निष्फल या व्यर्थ के नाम हैं और स्पष्ट, स्फुट, प्रव्यक्त और उल्बण ये ४ स्पष्ट या साफ़के नाम हैं ॥ ८०।८१ ॥

पु.स.न. न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

साधारण, **साधारणं (तु) सामान्यमेकाकी (त्वे)क एककः ।**

असहाय, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न.

भिन्न, **भिन्ना "र्थका" अन्यतर एकस्त्वोऽन्येतरा (वपि)॥८२॥**

साधारण, स्त्री साधारणी या ' साधारणा ' सामान्य ये २ अनेकसम्बन्धी या साधारण के नाम हैं । एकाकी ' न् ' एक और एकक या " एकल " ये ३ असमानजातीय असहाय के नाम हैं और भिन्न, अन्यतर या " एकतर " एक,

१ " एकाकी हयमारुह्य " (इति सप्तशतीस्तवः) ॥

त्व या 'त्वत्' अन्य और इतर ये ६ भिन्नार्थवाचक के नाम हैं इनमें 'त्व' सर्वशब्द के समान है "त्व-त्व" इति द्वावप्यदन्तावन्यपर्यायौ । एक उदात्तोऽपरोऽनुदात्त इत्येके । "एकस्तान्तः" इत्यपरे त्व-त्व ये दोनों अदन्त होकर भिन्नार्थ के वाचक हैं इनमें पहला उदात्त और दूसरा अनुदात्त है और अन्य आचार्यों के मत में तान्त भी 'त्वत्' शब्द कहाजाता है ॥ ८२ ॥

अनेकप्रकारका, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
जल्दबाज़ी, **उच्चावचं नैकभेदमुच्चण्डमविलम्बितम् ।**
मर्मभेदक, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
अबाधित **अरुंतुदं (तु) मर्मस्पृगबाधं (तु) निरर्गलम् ॥ ८३ ॥**

उच्चावच, नैकभेद ये २ नानाविध या बहुविध के नाम हैं । उच्चण्ड, अविलम्बित या "अवलम्बन" ये २ उतावली या जल्दबाज़ी के नाम हैं । अरुंतुद, मर्मस्पृक् (श्) ये २ मर्मभेदी के नाम हैं और अबाध, निरर्गल ये २ अबाधित, बाधारहित या निर्बाधित के नाम हैं ॥ ८३ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
उलटा, **प्रसव्यं प्रतिकूलं (स्याद) पसव्यमपष्ठु (च) ।**
बायाँ, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
दाहिना **वामं (शरीरे) सव्यं (स्या) दपसव्यं (तु) (दक्षिणे[1]) ॥ ८४ ॥**

प्रसव्य, प्रतिकूल, अपसव्य और अपष्ठु ये ४ विपरीत या उलटे के नाम हैं । शरीर में जो बायां अङ्ग है उसे 'सव्य' कहते हैं । यह १ वाम या बायें का नाम है और जो शरीर में दाहिना अङ्ग है उसे अपसव्य, या 'अवसव्य' कहते हैं । यह १ दाहिने का नाम है अथवा जो वाम शरीर है वह वाम और सव्य कहलाता है ये २ वामाङ्ग के नाम हैं और जो दक्षिण शरीर है वह 'अपसव्य' या 'दक्षिण' कहा जाताहै ये २ दक्षिणाङ्ग के नाम हैं ॥ ८४ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
संकट, **संकटं[2] (ना तु) सम्बाधः कलिलं गहनं (समे) ।**
दुष्प्रवेश, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
संकुल, मूड़ा **संकीर्णं संकुलाकीर्णे मुण्डितं परिवापितम् ॥ ८५ ॥**

संकट, संबाध ये २ स्वल्प अवकाशवाले मार्ग आदि के नाम हैं । इनमें 'संबाध' पुंलिङ्ग है । कलिल, गहन ये २ दुस्साध्य प्रवेश या दुःख से साध्य मार्ग आदि के नाम हैं । जैसे कि "जगाम गहनं वनम्" गहन वनको चला गया "गहनं शास्त्रं दुर्ज्ञान-

१ दक्षिणे यथा-"वामो बाहुर्मृडान्याः करकलितरणत्कङ्कणाली करालो यस्मिन्सव्यो भुजगवलयवान्" (इत्यनेकार्थकैरवाकारकौमुदी)

२ भगे योनौ यथा करिहस्तेन संबाधे प्रविश्यान्तर्विलोडिते । उपसर्पन् ध्वजः पुंसः साधनान्तर्विराजिते (इत्यनेकार्थकैरवाकारकौमुदी) ॥

मिति " शास्त्र गहन है यानी बड़े दुःखसे जाना जाता है ये दोनों समानार्थक हैं। संकीर्ण, संकुल, आकीर्ण ये ३ जन आदिकों से अत्यन्त मिश्रित के नाम हैं। जैसे कि (संकीर्णवर्गः) कितेक आचार्यों के मत में ' संकीर्णमृषिपत्नीनाम् ' इस प्रयोग से ये ७ एकार्थवाले हैं और मुण्डित, परिवापित ये २ मूंड़न किये हुए के नाम हैं ॥ ८५ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

गुँथा हुआ, फैलाया, **ग्रथितं संदितं दृब्धं विसृतं विस्तृतं ततम् ।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

भूला हुआ, स्थापित **अन्तर्गतं विस्मृतं (स्या) त्प्राप्तप्रणिहिते (समे) ॥ ८६ ॥**

ग्रथित, " ग्रन्थित " गुम्फित, गुफित या " गुथित " मवित, मर्दित, संदित और दृब्ध ये ३ गुम्फित, गुथे या गठियाये हुए के नाम हैं। विसृत, विस्तृत, तत ये ३ विस्तृत या फैले हुए के नाम हैं। अन्तर्गत, विस्मृत ये २ भूले हुए या भूले विषय के नाम हैं और प्राप्त, या ' प्रोत ' प्रणिहित ये २ मिले या थापे हुए के नाम हैं ये दोनों समान अर्थ वाले कहलाते हैं ॥ ८६ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

कँपा, **वेल्लितप्रेङ्खिताधूतचलिताकम्पिता धुते ।**

पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न.

भेजा **नुत्तनुन्नास्तनिष्ठ्यूताविद्धाक्षिप्तेरिताः (समाः) ॥ ८७ ॥**

वेल्लित, प्रेङ्खित, आधूत, चलित, आकम्पित और धुत ये ६ कम्पित या कँपाये हुए के नाम हैं और नुत्त, नुन्न, अस्त, निष्ठ्यूत, आविद्ध, क्षिप्त और ईरित ये ७ प्रेरित, पठाये या भेजे हुए के नाम हैं ये सबही समानार्थक कहलाते हैं ॥ ८७ ॥

घिरा हुआ, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

चुराया गया, फैलाया गया, **परिक्षिप्तं (तु) निवृतं मूषितं मुषिता (र्थकम्) ।**

फेंकाहुआ, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

गुणा किया **प्रवृद्धप्रसृते न्यस्तनिसृष्टे गुणिताहते ॥ ८८ ॥**

परिक्षिप्त, निवृत ये २ प्राकार आदि से चारों ओर वेष्टित या घेरे हुए के नाम हैं। मूषित, मुषित ये २ चोरित या चुराये हुए के नाम हैं। प्रवृद्ध, प्रसृत ये २ पसरे या फैले हुए के नाम हैं। न्यस्त, निसृष्ट ये २ फेंके या धरे हुए के नाम हैं और गुणित, आहत ये २ गुणाकिये हुए के नाम हैं ॥ ८८ ॥

बढ़ा हुआ, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

छिपा, धूलिलिप्त, **निदिग्धोपचिते गूढगुप्ते गुण्डितरूषिते ।**

रसीला, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

उबाया, छींका में रक्खा **द्रुतावदीर्णे उद्गीर्णोद्यते काचितशिक्यिते ॥ ८९ ॥**

निदिग्ध, उपचित ये २ समृद्ध या बढ़े हुए के नाम हैं। गूढ़, गुप्त ये २ गुप्त वस्तु या छिपे हुए के नाम हैं। जैसे कि " मन्त्रो गुप्तो विधातव्यः " मन्त्र को गुप्त ही विधान करना चाहिये। गुण्डित या " गुण्ठित " रूषित ये २ धूलि से लिये या भरे हुए के नाम हैं। द्रुत, अवदीर्ण ये २ द्रवीभूत या पिघले हुए पदार्थ के नाम हैं। उद्गूर्ण, उद्यत ये २ उठाये हुए शस्त्र (हथियार) आदि के नाम हैं और काचित, शिक्यित ये २ छींके में रक्खे हुए पदार्थ के नाम हैं॥ ८६ ॥

सूंघाहुआ, चन्दनादि लेप, कूपादि से निकालना, नदी आदि से घिरा

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. १

घ्राणघ्राते दिग्धलिप्ते समुदक्तोद्धृते (समे)।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

वेष्टितं(स्या)द्वलयितं संवीतं रुद्धमावृतम्॥ ६० ॥

घ्राण, घ्रात ये २ नाक से सूंघे हुए फूल आदि सुगन्ध के नाम हैं। दिग्ध, लिप्त ये २ चन्दनादि लेप या तेल आदि मलने के नाम हैं। समुदक्त, उद्धृत ये २ कूआं आदि से निकाले हुए जल आदि के नाम हैं। ये दोनों समानार्थक हैं और वेष्टित, वलयित, संवीत, रुद्ध और आवृत ये ५ नदी आदिसे घिरेहुए के नाम हैं॥६०॥

टेढ़े या टूटे, तीखे, पके, लज्जित

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

रुग्णं भुग्ने(ऽथ) निशितक्ष्णुतशातानि तेजिते।

पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न.

(स्याद्वि) नाशोन्मुखं पक्वं ह्रीणह्रीतौ (तु) लज्जिते॥६१॥

रुग्ण, भुग्न ये २ टेढ़े, व्यथित, टूटे या भग्न के नाम हैं। निशित या 'निशात' क्ष्णुत, शात और तेजित ये ४ सान आदिकों से तीखे किये या पैनाये हुए के नाम हैं। विनाशोन्मुख, पक्व ये २ पके हुए या निकट विनाश होने वाले के नाम हैं और ह्रीण, ह्रीत और लज्जित ये ३ लजीले या लज्जावाले के नाम हैं॥ ६१ ॥

वरण किये, मिलाये, मिलने योग्य, बहते हुए

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

वृते (तु) वृत्तवावृत्तौ संयोजित उपाहितः।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

प्राप्यं गम्यं समासाद्यं स्यन्नं रीणं स्नुतं स्नुते॥ ६२ ॥

वृत, वृत्त, वावृत्त या " व्यावृत्त " और " आवृत्त " ये ३ स्वयंवर आदिकों में वरण किये हुए के नाम हैं। जैसे कि " पौरोहित्याय भगवान् वृतः काव्यः किलासुरैः " असुरों ने पौरोहित्य के लिये भगवान् शुक्रजी का वरण किया। संयोजित या " संयोगित " उपाहित ये २ संयोग किये या मिलाये हुए के नाम हैं। प्राप्य,

---

१ समे इति 'प्रवृद्धप्रसृते' इत्यारभ्य 'समुदक्तोद्धृते' इत्यन्तमन्वेतीति भानुः॥

२ केचित्तु वाग्रहणं वृतुधातोरावययवमिच्छन्ति। ततोवावृत्यमानासौ रामशालां न्यविक्षत (इतिभट्टिः)॥

गम्य, समासाद्य ये ३ प्राप्त होने शक्य या योग्य के नाम हैं और स्यन्न, रीण, स्नुत और स्नुत या प्रस्नुत ये ४ बहते या टपकते हुए के नाम हैं ॥ ९२ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
जोड़े हुए, **संगूढः(स्या)त्संकलितोऽवगीतः ख्यातगर्हणः ।**
निन्दित, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
नानाभांति **विविधः (स्या)द्बहुविधो नानारूपः पृथग्विधः ॥९३ ॥**

संगूढ़, संकलित ये २ जोड़े हुए अङ्कादि के नाम हैं। जैसे कि दो—तीन—और पाँच को संकलित किया तो दश हुए। अवगीत, ख्यातगर्हण ये २ निन्दित के नाम हैं और विविध, बहुविध, नानारूप, पृथग्विध ये ४ नानारूप या नानाभाँति के नाम हैं ॥ ९३ ॥

धिक्कारे, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
पिसे हुए, **अवरीणो धिक्कृत (श्चाप्य) वध्वस्तोऽवचूर्णितः ।**
सहज किये, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
बाजते **अनायासकृतं फाण्टं स्वनितं ध्वनितं(समे) ॥ ९४ ॥**

अवरीण, धिक्कृत ये २ निन्दितमात्र के नाम हैं। अवध्वस्त या "अपध्वस्त" अवचूर्णित ये २ चूर्ण किये या पिसे हुए के नाम हैं। अनायासकृत, फाण्ट ये २ अनायास किये हुए काढ़ाविशेष के नाम हैं और स्वनित, ध्वनित ये २ शब्द किये या बाजते हुए के नाम हैं ये दोनों समानार्थक कहलाते हैं ॥ ९४ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
बँधे हुए, **बद्धे संदानितं मूतमुद्दितं संदितं सितम् ।**
अच्छे पके, पु.स.न. पु.स.न. १ पु.स.न.
पके घी आदि **निष्पकं क्वथितं(पाके क्षीराज्यपयसां) श्रृतम् ॥ ९५ ॥**

बद्ध, सन्दानित, मूत या "मूर्ण" उद्दित संदित और सित ये ६ बँधे हुए के नाम हैं। इनमें उद्दित, संदित इन दोनों में उत्पूर्वक व संपूर्वक 'दो अवखण्डने' धातु बन्धनार्थक है। निष्पक, क्वथित ये २ भली भाँति पके हुए काढ़ा विशेष के नाम हैं और दूध, घी, जलों के पाक में 'श्रृत' होता है जैसे कि "दुग्धं श्रृतम्—श्रृतं घृतम्—श्रृतं जलम्" पका दूध, पका घी, और पका पानी है यह १ पके हुए दूध, घी आदि का नाम है ॥ ९५ ॥

पु.स.न. पु.स.न.
बुझे, **निर्वाणो(मुनिवह्न्यादौ) निर्वात(स्तु गतानिले) ।**
पवनरहित, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
पके, हगे, मूते **पक्कं (परिणते) गूनं (हन्ने) मीढं(तु) मूत्रिते ॥ ९६ ॥**

१ "क्षीरं पानीयदुग्धयोः" (इति हैमः) "पयःक्षीरं पयोजलम्" (इत्यनेकार्थमञ्जरी) ॥

मुनि और अग्नि आदिकों में 'निर्वाण' होता है। जैसेकि 'निर्वाणो मुनिः'— मुनि निर्वाण हुआ यानी निर्मुक्त होगया। "निर्वाणो वह्निः" अग्नि निर्वाण हुआ यानी बुझ गया। आदि शब्दसे "निर्वाणो हस्ती" हाथी निर्वाण हुआ यानी डूबगया। यह १ निर्मुक्त आदिकों का नाम है। पवन क निकलजाने पर 'निर्वात' होता है जैसेकि "निर्वातो वातः" पवन निकल गया। यह १ पवनरहित का नाम है। पक्क, परिणत ये २ पके या पाक में प्राप्तहुए के नाम हैं। गून, हन्न ये २ गुदा से निकाली विष्ठा या दिशा फिरे व हगके नाम हैं और मीढ, मूत्रित ये २ उपस्थ से निकालेहुए मूत्र या लघुशंका कियेके नाम हैं ॥ ६६ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

पाले किये क्षमा-वान् वान्त किये इन्द्रियजित् शान्त किये मांगे

पुष्टं (तु) पुषितं सोढं क्षान्तमुद्वान्तमुद्गते ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

दान्त(स्तु) दमिते शान्तः शमिते प्रार्थितेऽर्दितः ॥ ६७ ॥

पुष्ट, पुषित ये २ पोषण कियेहुए या मोटे के नाम हैं। सोढ, क्षान्त ये २ क्षमा-युक्त या क्षमा में प्राप्तहुए के नाम हैं। उद्वान्त "उद्धान या उद्वान" और उद्गत ये २ वमनसे त्यागेहुए अन्न आदिके नाम हैं। दान्त, दमित ये २ दमन किये बैल आदि या इन्द्रियों को रोकेहुए के नाम हैं। जैसेकि "दमितमिन्द्रियम्" इन्द्रिय को दमन किया। शान्त, शमित ये २ शमन में प्राप्त किये के नाम हैं जैसेकि "औषधैः शान्तो रोगो निर्वर्तित इत्यर्थः" औषधियों से रोग को शान्त किया यानी मिटादिया और यत्न के अभाव में "शान्तो रोगो निवृत्त इत्यर्थः" रोग निवृत्त हुआ और प्रार्थित, अर्दित ये २ याचित या माँगेहुए के नाम हैं ॥ ६७ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

जानेहुए ढँके पूजित पूर्ण क्लेशित समाप्त

ज्ञप्त(स्तु) ज्ञपिते छन्नश्छादिते पूजितेऽञ्चितः ।

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

पूर्ण(स्तु) पूरिते क्लिष्टः क्लिशितेऽवसिते सितः[1] ॥ ६८ ॥

ज्ञप्त, ज्ञपित ये २ बोधमें प्राप्त या जाने हुए के नाम हैं। छन्न, छादित ये २ ढँके या छाये हुए के नाम हैं। पूजित, अञ्चित या "अर्चित" ये २ पूजित या पूजा किये हुए क नाम हैं। जैसेकि, "जगाम भिक्षुभिः साकं नरदेवेन पूजितः" (इति भागवते) पूर्ण, पूरित ये २ पूर्ण या पूरा किये हुए के नाम हैं। क्लिष्ट, क्लिशित ये २ क्लेश में प्राप्त हुए के नाम हैं और अवसित, सित ये २ समाप्त के नाम हैं ॥ ६८ ॥

१ "सितस्त्ववसिते बद्धे वर्णे सिता तु शर्करा" (इति हैमः)

पु.स.न. पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

जले हुए, **प्रुष्टप्लुष्टोषिता (दग्धे) तष्टत्वष्टौ (तनूकृते)।**

सूक्ष्मकिये, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न.

छेदे, विचारे **वेधितच्छिद्रितौ (विद्धे) विन्नवित्तौ (विचारिते) ॥९९॥**

प्रुष्ट, प्लुष्ट, उषित और दग्ध ये ४ भस्म किये या जले हुए के नाम हैं । तष्ट, त्वष्ट, तनूकृत ये ३ स्थूलको सूक्ष्म करने या पतला करने के नाम हैं । जैसेकि "तष्टं काष्टं शस्त्रेण" हथियार से काठको छीला यानी पतला किया । वेधित, छिद्रित, विद्ध ये ३ बेधे हुए के नाम हैं जैसेकि (कर्णौ विद्धौ) कानोंको वेधन किया और विन्न, वित्त, विचारित ये ३ प्राप्त या विचारे हुए के नाम हैं ॥ ९९ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

निस्तेज पि- **(निष्प्रभे) विगतारोकौ (विलीने) विद्रुतद्रुतौ ।**

घला सिद्ध पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

हुआ फाड़ागया **(सिद्धे) निर्वृत्तनिष्पन्नौ (दारिते) भिन्नभेदितौ ॥१००॥**

निष्प्रभ, विगत, अरोक ये ३ निस्तेज या दीप्तिरहित के नाम हैं । विलीन, विद्रुत, द्रुत ये ३ पिघले या टघिले हुए घी आदि के नाम हैं । सिद्ध, निर्वृत्त, निष्पन्न ये ३ सिद्ध या तैयार हुए के नाम हैं और दारित, भिन्न, भेदित ये ३ भेदन किये या फाड़े हुए के नाम हैं ॥ १०० ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

बुने वस्त्रआदि **ऊतं स्यूतमुतं (चेति त्रितयं तन्तुसन्तते)।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

नमस्कार किये **स्यादर्हितेनमस्यितनमसितमपचायितार्चितापचितम्**

ऊत, स्यूत, उत और तन्तुसन्तत ये ४ सूत के फैलाने या बुने वस्त्र आदि के नाम हैं । अथवा डोरों के विस्तार करने में ऊत, स्यूत और उत ये तीनों होते हैं ये ३ सूत के विस्तार करने के नाम हैं यह कितेक आचार्यों का मत है जैसे कि "प्रोतः पटः तन्तुभिरनुस्यूत इत्यर्थः" डोरों से कपड़ा बुनागया । अर्हित, नमस्यित, नमसित, अपचायित, अर्चित और अपचित ये ६ पूजित या पूजा किये हुए के नाम हैं ॥ १०१ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

पूजा किये **वरिवसिते वरिवस्यितमुपासितं चोपचरितं (च)।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

तपे या तपाये **सन्तापितसन्तप्तौ धूपितधूपायितौ (च)दून(श्च) १०२॥**

---

१ "औरयत्रविप्लुष्टमिदं मदङ्गमिति भागवतम्" ॥

२ "द्रुतं शीघ्रविलीनयोः" (इति हैमः) ॥

वरिवसित, वरिवस्यित, उपासित और उपचरित ये ४ सेवित या शुश्रूषित के नाम हैं और संतापित, संतप्त, धूपित, धूपायित और दून ये ५ संतापित या दुःखी के नाम हैं ॥ १०२ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
हर्षित, **(हृष्टे) मत्तस्तृप्तः प्रह्लन्नः प्रमुदितः प्रीतः ।**
पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
कटे हुए **छिन्नं[1] छातं लूनं कृत्तं दातं दितं छितं वृक्णम् ॥१०३॥**

हृष्ट, मत्त, तृप्त, प्रह्लन्न, प्रमुदित और प्रीत ये ६ प्रसन्न, हर्षित या आनन्दित के नाम हैं और छिन्न, छात, लून, कृत्त, दात, दित, छित और वृक्ण ये ८ खण्डित या कटे हुए के नाम हैं ॥ १०३ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
चुये, **स्रस्तं ध्वस्तं भ्रष्टं स्कन्नं पन्नं च्युतं गलितम् ।**
पु.स.न.पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
मिले **लब्धं प्राप्तं विन्नं भावितमासादितं (च) भूतं (च)॥१०४॥**

स्रस्त, ध्वस्त, भ्रष्ट, स्कन्न, पन्न, च्युत, गलित ये ७ चुये, टपके या गिरे हुए के नाम हैं और लब्ध, प्राप्त, विन्न, भावित, आसादित और भूत ये ६ मिले या पाये हुए के नाम हैं ॥ १०४ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
ढूंढे, **अन्वेषितं गवेषितमन्विष्टं मार्गितं मृगितम् ।**
पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
गीले **आर्द्रं सार्द्रं क्लिन्नं तिमितं स्तिमितं समुन्नमुत्तं(च)१०५॥**

अन्वेषित, गवेषित, अन्विष्ट, मार्गित और मृगित ये ५ खोजने या ढूंढ़ने के नाम हैं जैसेकि, " इतस्ततो गवेषितोऽपि तस्करो मया नो दृष्टः " इधर उधर ढूंढ़े हुए भी चोर को मैंने नहीं देखा । आर्द्र, सार्द्र, क्लिन्न, तिमित, स्तिमित, समुन्न और उत्त ये ७ ओदे या गीले के नाम हैं । जैसेकि, " अश्रुभिस्तिमितलोचनो जनोऽयमिति " यह प्राणी आंसुओं से गीले नयनोंवाला है ॥ १०५ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
रखाये, **त्राणं त्रातं[2] रक्षितमवितं[3] गोपायितं गुप्तम् ।**
पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
अपमानित **अवगणितमवमतावज्ञाते अवमानितं(च)परिभूते १०६**

---

१ छिन्नं कृत्तं त्रिलिङ्ग्यां स्यादगुडूच्यामपि योषिति" (इति मेदिनी) ॥
२ तल्लक्ष्यम्—त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेपि हत्वा (इति मार्कण्डेयः) ॥
३ रक्षितं रामनामभिरिति ॥

त्राण, त्रात, रक्षित, अवित, गोपायित और गुप्त ये ६ रखाये या पाले हुए के नाम हैं और अवगणित, अवमत, अवज्ञात, अवमानित और परिभूत ये ५ अनादृत, तिरस्कृत या अपमान किये हुए के नाम हैं ॥ १०६ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

त्यागेहुए, **त्यक्तं हीनं विधुतं समुज्झितं धूतमुत्सृष्टम् ।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

कहेहुए **उक्तंभाषितमुदितंजल्पितमाख्यातमभिहितंलपितम् ॥**

त्यक्त, हीन, विधुत, समुज्झित, धूत और उत्सृष्ट ये ६ छोड़े या त्यागे हुए के नाम हैं और उक्त, भाषित, उदित, जल्पित, आख्यात, अभिहित और लपित ये ७ कहे या बखाने हुए के नाम हैं ॥ १०७ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

ज्ञात या विदित, **बुद्धं बुधितं मनितं विदितं प्रतिपन्नमवसितावगते ।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

अङ्गीकृत या **ऊरीकृतमुररीकृतमङ्गीकृतमाश्रुतं प्रतिज्ञातम् ॥ १०८॥**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

स्वीकार किया **संगीर्णविदितसंश्रुतसमाहितोपश्रुतोपगतम् ।**

बुद्ध, बुधित, मनित, विदित, प्रतिपन्न, अवसित और अवगत ये ७ ज्ञात, विदित या जाने हुए के नाम हैं और ऊरीकृत या " उर्रीकृत " उररीकृत, अङ्गीकृत, आश्रुत, प्रतिज्ञात, विदित या " संविदित " संश्रुत, या " प्रतिश्रुत " समाहित, उपश्रुत और उपगत ये ११ स्वीकार या अङ्गीकार किये के नाम हैं ॥ १०८ । ½ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

प्रशस्त या **ईलितशस्तपणायितपनायितप्रणुतपणितपनितानि ॥**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

सराहना किये **अपिगीर्णवर्णिताभिष्टुतेडितानिस्तुतार्थानि ।**

ईलित, शस्त, पणायित, पनायित, प्रणुत, पणित, पनित, अपिगीर्ण या 'गीर्ण' वर्णित, अभिष्टुत, ईडित और स्तुत ये स्तुति अर्थ वाले कहाते हैं ये १२ प्रशस्त या स्तुति किये के नाम हैं ॥ १०९ । ½ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

खाये, **भक्षितचर्वितलिप्तप्रत्यवसितगिलितखादितप्सातम् ।**

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

चबाये **अभ्यवहृतान्नजग्धग्रस्तग्लस्ताशितं भुक्तं ।**

१ स्तुतासुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयादिति सप्तशतीस्तवः ॥

भक्षित, चर्वित, लिप्त या "लीढ" प्रत्यवसित, गिलित या "गिगित" खादित, प्सात, अभ्यवहृत, अन्न, जग्ध, या "जग्द्ध" ग्रस्त, ग्लस्त, अशित और भुक्त ये १४ भोजन किये या खाये हुए के नाम हैं ॥ ११० । ३ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

अतिशयार्थ-वाची ये ६ शब्द हैं **क्षेपिष्ठक्षोदिष्ठप्रेष्ठवरिष्ठस्थविष्ठबंहिष्ठाः ॥ १११ ॥**

पु.

(क्षिप्रक्षुद्राभीप्सितपृथुपीवरबहुप्रकर्षार्थाः)।

क्षेपिष्ठ आदि क्षिप्र आदिकों के प्रकर्षार्थक हैं यानी जिन्होंके प्रकर्ष अर्थ हैं वे प्रकर्षार्थ कहलाते हैं वैसेही अतिशयविशिष्ट क्षिप्रादिकों में क्रम से वर्तते हैं जैसे कि, क्षेपिष्ठ, यह १ अतिशय फेंकने योग्य का नाम है। क्षोदिष्ठ, यह १ अतिशय क्षुद्रका नाम है। प्रेष्ठ, यह १ अतिशय अभीप्सितका नाम है। वरिष्ठ, यह १ अतिशय पृथुका नाम है। स्थविष्ठ, यह १ अतिशय स्थूल (मोटे) का नाम है और वंहिष्ठ, यह १ अतिशय बहुलका नाम है यहां अभीप्सित प्रियका पृथु उरुका पीवर स्थूल का और बहु बहुलका पर्याय है ॥ १११ । ३ ॥

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

अतिशयवाची **साधिष्ठद्राघिष्ठस्फेष्ठगरिष्ठह्रसिष्ठवृन्दिष्ठाः ॥ ११२ ॥**

साधिष्ठ आदि **(बाढव्यायतबहुगुरुवामनवृन्दारकातिशये)।**

इति विशेष्यनिघ्नवर्गः ॥

बाढ आदिकों के अतिशय अर्थ में साधिष्ठ आदि क्रम से वर्तते हैं और यहा व्यायत-बहु-वामन ये दीर्घ-स्फिर-ह्रस्व इन्होंके पर्याय हैं। जैसेकि, साधिष्ठ, यह १ अतिशय बाढका नाम है। द्राघिष्ठ, यह १ अतिशय दीर्घ का नाम है। स्फेष्ठ, यह १ अतिशय स्फिर यानी अधिकता का नाम है। गरिष्ठ, यह १ अतिशय गुरु का नाम है। ह्रसिष्ठ, यह १ अतिशय बौने या छोटे का नाम है और वृन्दिष्ठ, यह १ अतिशय मुख्य का नाम है ॥ ११२ । ३ ॥

इति विशेष्यनिघ्नवर्गविवरणम् ॥

अथ संकीर्णवर्गो व्याख्यायते ॥

क्रिया,वारंवार चलना **प्रकृतिप्रत्ययार्थैः संकीर्णे लिङ्गमुन्नयेत्।**

कर्म क्रिया तत्सातत्ये गम्ये स्युरपरस्पराः ॥ १ ॥

---

१ नैरन्तर्याभावे तु अपरपराः सकृद्गच्छन्तीति ॥

अब पूर्वोक्त शब्दों को परस्पर मिल जाने की भयसे जो पहले नहीं कहे थे उनके संग्रह के लिये संकीर्णवर्ग का आरम्भ करते हैं कि, संकीर्णार्थों से और संकीर्णलिङ्गों से आरम्भ होने के कारण संकीर्णवर्ग में प्रकृति व प्रत्यय आदि अर्थों से पुंस्त्रीनपुंसकलिङ्गों का विचार कर जैसेकि, 'अपरस्पर:' यह लिङ्गविशेष-अभिधायि प्रत्यय के अविधान से प्रकृति है और इसके 'परवल्लिङ्गम्' इस अति-देश से परशब्द का ही लिङ्ग होता है और सर्वनामसंज्ञा होने से परशब्द तीनों लिङ्गों में रहता है और 'द्वन्द्वे च' यह निषेध भी नहीं लगता है क्योंकि उसके समुदायविषयत्व से अवयवविषयत्व का अभाव है अर्थात् 'अपरस्पर:' यहां विभक्ति को प्रकृति होने से प्रकृति है उसका निरन्तर क्रियासंबन्ध से क्रियायोग है अपरत्वादि गुणयोग भी है ऐसेही गुणद्रव्य और क्रियायोग की उपाधियों से परगामियों का अभिधेयलिङ्गत्व है, प्रत्ययार्थ से जैसेकि, 'शान्ति:' यहां 'क्तिन्' के विधान से स्त्रीलिङ्ग है, 'विधूननम्' यहां 'ल्युट्' के विधान से नपुंसक है आद्यशब्द से रूपभेदादिकों का ग्रहण किया जाता है, रूपभेद से कर्म आदिकों का क्लीबत्वादि है और साहचर्य से भी (डिम्बे डमरविप्लवौ) यहां डिम्बादिकों का पुंस्त्वादि है अथवा भिन्नजातीय लिङ्ग से संसर्ग होने पर इस वर्ग में और वर्गान्तर में भी प्रकृत्यर्थादिकों से पुंस्त्वादि जानना चाहिये और लिङ्गसंग्रह में वक्ष्यमाण लिङ्ग को भी जानना चाहिये यह उन्नेयत्व से कहा गया। कर्म (न) क्रिया ये २ क्रिया के नाम हैं और क्रिया व क्रियावानों के नैरन्तर्य होने पर 'अपरस्परा:' ये होते हैं। पण्डितों ने क्रिया के नैरन्तर्य में 'अपरस्परम्' कहा है यह भागुरिका मत है और क्रियावानों के नैरन्तर्य में तीनों लिङ्ग होते हैं जैसेकि, "अपरस्परा: सार्था गच्छन्ति" अपर व परसमूह निरन्तर जाते हैं। और "अपरस्परा: स्त्रियो गच्छन्ति" अपर और पर स्त्रियां हमेशा जाती हैं और "अपरस्पराणि कुलानि" अपर और पर कुल हैं यह १ क्रिया व क्रियावानों के नैरन्तर्य का नाम है ॥ १ ॥

साकल्यवचन, आसंगवचन, स्वतन्त्रता, बे-कारण स्थिति

न. न.
(साकल्यासङ्गवचने) पारायणतुरायणे ।
स. स. न.
यदृच्छा स्वैरिता (हेतुशून्या त्वास्था) विलक्षणम् ॥ २ ॥

साकल्यवचन को 'पारायण' और आसङ्गवचन को परायण, तुरायण या त्वरायण कहते हैं यानी 'पारायण' यह १ साकल्यवचन का नाम है और 'परायण' यह १ आसंगवचन का नाम है और पीयूषव्याख्या में परायण के स्थान में तुरायण या त्वरायण को पढ़ते हैं। यदृच्छा, स्वैरिता या "स्वैरता" ये २

स्वतन्त्रता या स्वच्छन्दता के नाम हैं और जो कारणरहित स्थिति है उसे 'विलक्षण' कहते हैं यह १ विना कारण स्थिति का नाम है ॥ २ ॥

शान्ति, इन्द्रियनिग्रह, सुकर्म, महादान

पु. पु. स. स. पु. पु.
शमथ(स्तु) शमःशान्तिर्दान्ति(स्तु) दमथो दमः ।
न. न. न. न.
अवदानं कर्मवृत्तं काम्यदानं प्रवारणम् ॥ ३ ॥

शमथ, शम, शान्ति ये ३ चित्तशान्ति के नाम हैं । दान्ति, दमथ, दम ये ३ बाह्येन्द्रियनिग्रह के नाम हैं । अवदान या 'अपदान' कर्मवृत्त ये २ प्रशस्त या सुकर्म के नाम हैं और काम्यदान, प्रवारण, "प्रहारण" या 'प्रचारण' ये २ महादान के नाम हैं ॥ ३ ॥

वशीकरण, उच्चाटन, कांपना, अघाया

स. न. न.
वशक्रिया संवननं मूलकर्म 'तु' कार्मणम् ।
न. न. न. न. न.
विधूननं विधुवनं तर्पणं प्रीणनावनम् ॥ ४ ॥

वशक्रिया, संवनन, "संवपन, संवदन या संवदना" ये २ मणिमन्त्र आदि से वशीकरणका नाम है । इनमें "स्यात्संवदनमालोचे वशीकारे नपुंसकम्" (इति मेदिनी) इस प्रमाण से 'संवदन' नपुंसक है । मूलकर्म, कार्मण ये २ औषधियों की मूल से किये हुए उच्चाटन आदि कर्म के नाम हैं । विधूनन, या "विधुनन" विधुवन ये २ काँपने या हिलने के नाम हैं और तर्पण, प्रीणन और अवन ये ३ तृप्ति या अघाने के नाम हैं ॥ ४ ॥

रक्षा, सीना, फूटना

स. न. न.
पर्याप्तिः 'स्या'त्परित्राणं हस्तवारण (मित्यपि) ।
न. न. स. पु. न. स.
सेवनं सीवनं स्यूतिर्विदरः स्फुटनं भिदा ॥ ५ ॥

पर्याप्ति, परित्राण, हस्तवारण या "हस्तधारण" ये ३ वधोद्यत के वारण यानी रोकने के नाम हैं । सेवन, सीवन, स्यूति अथवा सेव, सेवन, स्यूति ये ३ सूचीक्रिया या सीने के नाम हैं और विदर, स्फुटन या 'स्फोटन' भिदा ये ३ बिदारने या फूटने के नाम हैं ॥ ५ ॥

१ "अपश्रियः संवदनं यतस्तत्" इति मघौ रघुवंशः (इति मुकुटपीयूषौ) ॥

न. पु. पु. स.

शापना, अनुभव आक्रोशनमभीषङ्गः संवेदो वेदना (न ना) ।

ज्ञान, न. स. स. स. स. स.

सर्वत्र व्याप्त, संमूर्च्छनमभिव्याप्तिर्याच्ञाभिक्षार्थनार्दना ॥ ६ ॥

भिक्षा

आक्रोशन, अभीषङ्ग, या अभिषङ्ग ये २ गाली देने, कोसने या धिक्कारने के नाम हैं । संवेद, वेदना ये २ अनुभवज्ञान के नाम हैं इनमें 'वेदना' पुंलिङ्ग नहीं है इस लिये भाव में ' ल्युट् ' करने पर ' वेदनम् ' नपुंसक भी है । संमूर्च्छन, अभिव्याप्ति ये २ सर्वत्र व्याप्ति या चारों ओर फैले हुए के नाम हैं और याच्ञा, भिक्षा, अर्थना और अर्दना ये ४ याचना करने या मांगने के नाम हैं ॥ ६ ॥

न. न. न. न.

काटना, कुश- वर्धनं छेदने (ऽथ द्वे) आनन्दनसभाजने ।

लानन्द, न. पु. पु. पु. स.

उत्तमोपदेश, आप्रच्छन (मथा) म्नायः संप्रदायः(क्षये)क्षिया ॥ ७ ॥

हानि

वर्धन, छेदन ये २ काटने या छाटने के नाम हैं । आनन्दन या " आमन्त्रण" सभाजन या " स्वभाजन " आप्रच्छन ये ३ आलिङ्गन, कुशलप्रश्न आदिकों से विहित आनन्द के नाम हैं । आम्नाय, संप्रदाय ये २ गुरुपरंपरा से प्राप्त उत्तम उपदेश के नाम हैं और क्षय, क्षिया ये २ अपचय या हानि के नाम हैं ॥ ७ ॥

पु. पु. पु. स. पु. न. पु. पु.

लेना, चाहना, (ग्रहे) ग्राहो वशः (कान्तौ) रक्षण (स्त्राणे) रणः(कणे)।

रक्षा, शब्द,

छेदना, पकाना, पु. पु. स. पु. पु. स. पु. स.

बुलाना, वरदान व्यधो (वेधे) पचा (पाके) हवो (हूतौ) वरो (वृतौ) ॥ ८ ॥

ग्रह, ग्राह ये २ ग्रहण के नाम हैं । वश, कान्ति ये २ इच्छा, चाहना या अभिलाषा के नाम हैं । रक्षण या " रक्षा " त्राण ये २ रक्षण के नाम हैं । रण या " वण " कण ये २ शब्द करने या बोलने के नाम हैं । व्यध, वेध ये २ वेधन के नाम हैं । पचा, पाक ये २ पकाने या पाक करने के नाम हैं । हव, हूति ये २ पुकारने या बुलाने के नाम हैं और वर, वृति ये २ वेष्टन, घेर, वरदान या भक्ति के नाम हैं ॥ ८ ॥

पु. पु. पु. पु. स. स. पु. स.

जलाना, नीति, ओषः (प्लोषे) नयो(नाये)ज्यानि(जीर्णौ)भ्रमो(भ्रमौ)।

जीर्ण, भ्रम,

बढ़ती, प्रसिद्धता, स. स. स. स. स. स. पु. पु.

छूना, टपकना स्फाति(वृद्धौ)प्रथा(ख्यातौ)स्पृष्टिः(पृक्तौ)स्नवः(स्रवे) ९

---

१ मुकुटेन तु " प्रीतिसेवनयोः " इति पाठो धृतः । स्वामिना तु—' प्रीतिदर्शने ' इति पाठोऽङ्गीकृतः ॥

ओष, प्लोष, या ' प्रोष ' ये २ दाह या जलाने के नाम हैं । नय, नाय ये २ नीति के नाम हैं । ज्यानि, जीर्णि ये २ जीर्णता के नाम हैं । भ्रम, भ्रमि ये २ भ्रान्ति या फिरने के नाम हैं । स्फाति, वृद्धि ये २ वृद्धि या बढ़ती के नाम हैं । प्रथा, ख्याति ये २ प्रख्याति या प्रसिद्धता के नाम हैं । स्पृष्टि, पृक्ति ये २ स्पर्श करने या छूने के नाम हैं और स्नव, स्रव या " स्नाव और स्राव " ये २ बहने, चूने या टपकने के नाम हैं ॥ ९ ॥

बढ़ना, फुरना, सत्यज्ञान, जनना, घी आदिका झरना या टपकना, ग्लानि

स. स. न. स. स. स.
विधा (समृद्धौ) (स्फुरणे) स्फुरणा (प्रमितौ) प्रमा ।
स. पु. पु. पु. पु. पु.
प्रसूतिः(प्रसवे)(श्च्योते)प्राघारः क्लमथः(क्लमे) ॥१०॥

विधा, या "एधा" समृद्धि ये २ धन दौलत या संपदा के नाम हैं । स्फुरण, "स्फुलन या स्फोरण" स्फरण, या "स्फारण" स्फुरणा ये २ स्फुरण या स्मरण के नाम हैं । प्रमिति, प्रमा ये २ यथार्थज्ञान के नाम हैं । प्रसूति, प्रसव ये २ गर्भ-विमोचन उत्पत्ति या प्रेरणा के नाम हैं । श्च्योत या 'श्चोत' प्राघार ये २ घी आदि के चूने या टपकने के नाम हैं और क्लमथ, क्लम ये २ घिन, नफ़रत, थकावट या मांदगी के नाम हैं ॥ १० ॥

बड़ाई, मिलाप, प्रयोजन, फेंकना या आज्ञा करना, लीलना, उद्यम करना

पु. पु. पु. पु. पु. पु.
उत्कर्षो(ऽतिशये) संधिः (श्लेषे) विषय (आशये) ।
स. न. स. स. न. पु.
(क्षिपायां) क्षेपणं गीर्णि (र्गिरौ) गुरणमुद्यमे ॥ ११ ॥

उत्कर्ष, अतिशय ये २ प्रकर्ष या बड़ाई के नाम हैं । संधि, श्लेष ये २ मेल या संधान के नाम हैं । विषय, आशय या "आश्रय" ये २ प्रयोजन या आश्रय के नाम हैं । क्षिपा, क्षेपण ये २ फेरने, फेंकने या आज्ञा करने के नाम हैं । गीर्णि, गिरि या गिलि और "गिरण या गिलन" ये २ निगलने या लीलने के नाम हैं और गुरण, "गूरण या गोरण" और उद्यम ये २ उद्योग करने के नाम हैं ॥ ११ ॥

उठाना, आश्रय, जीति, कहना, खुशी, ऊबना

पु. पु. पु. न. न. पु.
उन्नाय उन्नये आयः अयणे जयने जयः ।
पु. पु. पु. पु. पु. पु.
निगादो निगदे मादो मदे उद्वेग उद्भ्रमे ॥ १२ ॥

उन्नाय, उन्नय ये २ उठाने या ऊपर लेजाने के नाम हैं । आय, अयण ये २ आश्रय या सेवा के नाम हैं । जयन, जय या " जपन और जप " ये २ जय, जीति या जप के नाम हैं । निगाद, निगद ये २ कथन या वचन के नाम हैं । माद, मद

---

१ सुधाकरजी के मत में ये दोनों निपातन से सिद्ध होते हैं ॥

ये २ हर्ष प्रसन्नता या खुशी के नाम हैं और उद्वेग, उद्भ्रम ये २ उद्वेजन, उद्भ्रम या ऊबने के नाम हैं ॥ १२ ॥

मींजना, अङ्गीकार, न मानना, रणमें पुकारना

न. पु. स. पु.
विमर्दनं परिमले[1]ऽभ्युपपत्तिरनुग्रहः ।
पु. पु. पु. पु.
निग्रहे[2]'स्तु' निरोधः (स्याद) भियोगस्त्वभिग्रहः ॥१३॥

विमर्दन, परिमल ये २ कुंकुमआदि से मींजने या मीड़ने के नाम हैं । अभ्युपपत्ति, अनुग्रह ये २ कृपा, मिहरबानी, प्रसन्नता या अङ्गीकार के नाम हैं और जो अनुग्रह से भिन्न है उसे निग्रह, निरोध या " विग्रह और विरोध " कहते हैं ये २ नहीं मानने के नाम हैं । और अभियोग, अभिग्रह ये २ लड़ाई में पुकारने के नाम हैं ॥ १३ ॥

मूठी बाँधना, लूटना, बाँधना, संताप

पु. पु. पु. पु. पु.
मुष्टिबन्ध'स्तु' संग्राहो डिम्बे डमरविप्लवौ ।
न. स. पु. पु. पु. पु.
बन्धनं प्रसितिश्चा[3]रः स्पर्शः स्प्रष्टो[4]पतप्तरि ॥ १४ ॥

मुष्टिबन्ध, संग्राह ये २ मूठी बाँधने या मूठी से मज़बूत पकड़ने के नाम हैं । डिम्ब, डमर या " डामर " विप्लव ये ३ धावाकर लूटने या बेहथियार लड़ाई के नाम हैं । बन्धन, प्रसिति, चार या " स्वार " ये ३ बन्धन के नाम हैं और स्पर्श या " स्पश " स्प्रष्टा (छू) या स्पर्ष्टा और उपतप्ता (मृ) ये ३ उपतापनामक रोगविशेष या संताप के नाम हैं अथवा स्वामी के मतमें स्वार, स्पर्श, स्प्रष्टा और उपतप्ता ये ४ संतप्तके नाम हैं ॥ १४ ॥

अपकार, अभिप्रायानुरूपचेष्टा, प्रकृति का बदलना

पु. पु. पु. पु. न.
निकारो विप्रकारः (स्यादा) कारस्त्विङ्ग इङ्गितम् ।
पु. पु. स. स.
परिणामो विकारो (द्वे समे) विकृतिविक्रिये ॥ १५ ॥

निकार, विप्रकार ये २ अपकार के नाम हैं । आकार, इङ्ग और इङ्गित ये ३ अभिप्राय के अनुरूप चेष्टा के नाम हैं और परिणाम, विकार, विकृति और विक्रिया ये ४ प्रकृति के बदल जाने के नाम हैं जैसेकि 'कटक-कुण्डल' ये कनक के ही विकार हैं अथवा परिणाम, विकार ये २ प्रकृति के उलटे होने या विकार के नाम हैं जैसे कि मिट्टीका विकारघट है । और विकृति, विक्रिया ये २ विरुद्धक्रियाके नाम हैं ॥१५॥

---

१ " परिमलो विमर्देऽपीति " (विश्वः) ॥
२ निग्रहस्तद्विरुद्धः स्यादिति पाठान्तरम् ॥
३ स्वामी तु चारस्थाने स्वारं पठित्वा स्वरादीनां चतुर्णां पर्यायतामाह ॥
४ स्वारस्पर्शयोर्भावे घञ्, स्प्रष्टोपतप्त्रोर्भावे "कृत्यल्युटो बहुलमिति" तृच् भावप्रकरणानुरोधादिति वा ॥

छीनलेना, बटोरना, लेना, खेल के लिये घूमना.

पु. पु. पु. पु.
अपहारस्त्वपचयः समाहारः समुच्चयः।
पु. न. पु. पु.[1]
प्रत्याहार उपादानं विहार (स्तु) परिक्रमः॥ १६॥

अपहार, अपचय ये २ हरने या छीनने के नाम हैं। समाहार, समुच्चय ये २ राशीकरने या बटोरने के नाम हैं। प्रत्याहार, उपादान ये २ अपने अपने विषयों से इन्द्रियों के खींचने के नाम हैं और विहार, परिक्रम ये २ खेल के लिये पैरोंसे चलने के नाम हैं॥ १६॥

चोरी करना, युक्ति से बाणादि का निकालना, नक़ल करना, खर्च.

पु. न. पु. न.
अभिहारोऽभिग्रहणं निर्हारोऽभ्यवकर्षणम्।
पु. पु. पु.
अनुहारोऽनुकारः (स्यादर्थस्यापगमे) व्ययः॥ १७॥

अभिहार या "अभ्याहार" अभिग्रहण ये २ सामने होकर ले जाने या चोरी करने के नाम हैं। निर्हार, अभ्यवकर्षण ये २ युक्ति से बाण आदिके निकालने के नाम हैं। अनुहार, अनुकार ये २ नक़ल करने के नाम हैं और जो धन आदिकों का अल्प होना या कमती पड़जाना है उसे 'व्यय' कहते हैं। यह १ खर्च का नाम है॥ १७॥

बहना, बाहर जाना, संयम.

पु. स. पु.
प्रवाह(स्तु)प्रवृत्तिः (स्या) त्प्रवहो (गमनं बहिः)।
पु. पु. पु. पु. पु. पु.
वियामो वियमो यामो यमः संयामसंयमौ॥ १८॥

प्रवाह, प्रवृत्ति ये २ जल आदि की एकतार गति के नाम हैं। और जो बाहर जाना है वह 'प्रवह' कहलाता है। यह १ बाहिरी यात्रा का नाम है और वियाम, वियम, याम, यम, संयाम और संयम ये ६ योगाङ्ग या संयम के नाम हैं अथवा स्वामी के मत में वियाम, वियम ये २ नानाविध यमन के नाम हैं। याम, यम ये २ उपरतिमात्र के नाम हैं और संयाम, संयम ये २ संयम के नाम हैं॥ १८॥

मारण कर्म, जागना, विघ्न, पासका आश्रय.

न. पु. स. पु.स.
हिंसाकर्माभिचारः (स्या)ज्जागर्या जागरा (द्वयोः)।
पु. पु. पु. पु. पु.
विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहः (स्यादु) पघ्नोऽन्तिकाश्रये॥१९॥

हिंसाकर्म, अभिचार ये २ हिंसाकर्म के नाम हैं। जागर्य्या, या "जाग्रिया" और "जागर्ति" जागरा या जागर ये २ जागने के नाम हैं इनमें 'जागरा'

[1] इत. नानागमनं परिक्रम इति॥

स्त्री पुंलिङ्ग है । विघ्न, अन्तराय, प्रत्यूह ये ३ विघ्न के नाम हैं और उपघ्न, अन्तिकाश्रय ये २ निकट के आश्रय या पासही आसरा लेने के नाम हैं ॥ १९ ॥

उपभोग, पु. पु. पु. स.
परिवार, **निर्वेश उपभोगः (स्या) त्परिसर्पः परिक्रिया ।**
महावियोग, न. पु. पु. पु. पु.
अभिप्राय. **विधुरं (तु) प्रविश्लेषोऽभिप्रायश्छन्द आशयः ॥ २० ॥**

निर्वेश, उपभोग ये २ उपभोग के नाम हैं । परिसर्प, परिक्रिया ये २ परिजन आदि से घिरे हुए के नाम हैं । विधुर, प्रविश्लेष ये २ अत्यन्त वियोग के नाम हैं और अभिप्राय, छन्द या छन्दः (स्) आशय ये ३ अभिप्राय, मतलब, प्रयोजन या मनोरथ के नाम हैं ॥ २० ॥

संक्षेप, न. न. स. न.
बिगाड़, **संक्षेपणं समसनं पर्यवस्था विरोधनम् ।**
चारों ओर स. पु. स. स. स.
जाना, आसन. **परिसर्या परीसारः (स्यादा)स्या(त्वा)सना स्थितिः ॥ २१ ॥**

संक्षेपण, समसन ये २ अविस्तार या संक्षेप के नाम हैं । पर्यवस्था या "प्रत्यवस्था" विरोधन ये २ विरोध या बिगाड़ के नाम हैं । परिसर्या, या परिसर्या, परीसार या परिसार ये २ चारों ओर चलने या जाने के नाम हैं और आस्या, आसना, स्थिति ये ३ आसन के नाम हैं ॥ २१ ॥

विस्तार, पु. पु. पु. पु.
शब्दविस्तार, **विस्तारो विग्रहो व्यासः (स च शब्दस्य) विस्तरः ।**
अङ्गमींजना, न. न. पु. न.
लोप या छिपना. **(स्या) न्मर्दनं संवाहनं विनाशः (स्याद)दर्शनम् ॥ २२ ॥**

विस्तार, विग्रह, व्यास ये ३ विस्तार के नाम हैं । और जो शब्दसम्बन्धी विस्तार हो तो वह 'विस्तर' कहलाता है । यह १ शब्दविस्तार का नाम है । जैसे कि 'ग्रन्थविस्तरः' ग्रन्थों का विस्तार है । अङ्गमर्दन, संवाहन या संवहन ये २ अङ्गमीड़ने या पैर चापने आदि के नाम हैं । जैसे कि "सभोगान्ते मम समुचितो हस्तसंवाहनानाम्" यह मेघदूत काव्य का वचन संगत होता है और ऐसे ही 'पादसंवाहनादिभिः' यह पुराणान्तरों में भी मिलता है और विनाश, अदर्शन ये २ लोप, अन्तर्धान या तिरोधान के नाम हैं ॥ २२ ॥

परिचय, पु. पु. पु. न.
घावका फैलना, **संस्तवः(स्या)त्परिचयः प्रसर(स्तु)विसर्पणम् ।**
धान्यादि का संग्रह, पु. पु. पु. न.
समीप या पड़ोस. **नीवाक(स्तु)प्रयामः(स्या)त्संनिधिः संनिकर्षणम् ॥ २३ ॥**

संस्तव, परिचय ये २ परिचित या पहिंचान के नाम हैं। प्रसर, विसर्पण ये २ फोड़ा आदि के बहने के नाम हैं। नीवाक, प्रयाम ये २ धान्यसंचय या धन व धान्य आदिकों में जनों के आदरातिशय के नाम हैं और संनिधि या "संनिध" संनिकर्षण ये २ अत्यन्तनिकट, पास या पड़ोस के नाम हैं॥ २३॥

अन्न काटना, अन्नादिकों को साफ़ करना, प्रसंग, नरी.

पु. पु. न. पु. न. पु.
लवोऽभिलावो (लवने) निष्पावः (पवने) पवः।
पु. पु. पु. न.
प्रस्तावः(स्याद)वसरस्त्रसरः सूत्रवेष्टनम्॥ २४॥

लव, अभिलाव, लवन ये ३ धान्य आदिकों के काटने के नाम हैं। निष्पाव, पवन, पव ये ३ धान्य आदिकों के साफ़ करने, उसाने या पसाने के नाम हैं। प्रस्ताव, अवसर ये २ प्रसंग या अवसर के नाम हैं जैसे कि "अवसरपठिता वाणी सुशोभते" अवसर में पढ़ीहुई वाणी सुशोभित होती है और त्रसर या 'तसर' सूत्रवेष्टन ये २ जुलाहे के बनाये हुए सूत लपेटने या नरी के नाम हैं॥ २४॥

प्रथम गर्भ, प्रीति प्रार्थित, बुद्धिशक्ति, कोटका मार्ग.

पु. पु. पु. पु.
प्रजनः(स्यादु)पसरः प्रश्रयप्रणयौ (समौ)।
स. पु. पु. पु.
धीशक्तिर्निष्क्रमो(ऽस्त्री तु) संक्रमो दुर्गसंचरः॥ २५॥

प्रजन, उपसर ये २ पहले पहल गर्भग्रहण के नाम हैं। प्रश्रय, प्रणय या "प्रसर" ये २ प्रीति से प्रार्थना करने या प्रेम के नाम हैं। धीशक्ति, निष्क्रम ये २ बुद्धिसामर्थ्य के नाम हैं इनमें "निष्क्रमो बुद्धिसंपत्तौ" (इति विश्वः) इस प्रमाण से 'निष्क्रम' यह बुद्धिसंपदा में वर्तता है वह आठ प्रकार की है जैसे कि, शुश्रूषा, श्रवण, ग्रहण, धारण, ऊह, अपोह, विज्ञान और तत्त्वज्ञान ये ८ बुद्धि के गुण कहलाते हैं। संक्रम या "संक्राम" दुर्गसंचर या "संचार" ये २ कोट की मार्ग या कोट में प्रवेश करने के नाम हैं॥ २५॥

युद्धकी बढ़ती या कर्मारम्भ में पहला प्रयोग, प्रथमारम्भ या आरम्भमात्र, वेग.

पु. पु. पु. पु.
प्रत्युत्क्रमः प्रयोगार्थः प्रक्रमः (स्या)दुपक्रमः।
न. पु. पु. पु. स.
(स्याद)भ्यादानमुद्घात आरम्भः संभ्रमस्त्वरा॥२६॥

प्रत्युत्क्रम या "प्रत्युत्क्रान्ति" प्रयोगार्थ या "प्रयुद्धार्थ" ये २ युद्ध के लिये अत्यन्त उद्योग या कर्मारम्भ में पहले प्रयोग के नाम हैं। प्रक्रम, उपक्रम, अभ्यादान, उद्घात या "उपोद्घात" और आरम्भ ये ५ आरम्भ के नाम हैं अथवा प्रक्रम, उपक्रम ये २ प्रथमारम्भ के नाम हैं। अभ्यादान, उद्घात, आरम्भ ये ३

आरम्भमात्र के नाम हैं और संक्रम, त्वरा या "त्वरि" ये २ अच्छे वेग या उतावली के नाम हैं ॥ २६ ॥

कार्य का रुकना, गिरना, साक्षात्कार, तिलक लगाना.

पु. पु. १ पु. न.
प्रतिबन्धः प्रतिष्टम्भोऽवनाय (स्तु) निपातनम् ।
पु. पु. पु. न.
उपलम्भस्त्वनुभवः समालम्भो विलपनम् ॥ २७ ॥

प्रतिबन्ध, प्रतिष्टम्भ या "विष्टम्भ" ये २ कार्यों के प्रतिघात के नाम हैं । जैसे कि मणि व मन्त्रआदि के प्रतिबन्ध से अग्नि की अनुष्णता होती है । अवनाय या "अवनय" निपातन या "नियातन" ये २ नीचे लेजाने या गिरने के नाम हैं । उपलम्भ, अनुभव ये २ साक्षात्कार के नाम हैं और समालम्भ, विलेपन ये २ कुंकुम आदिकों से लेप करने या तिलक लगाने के नाम हैं ॥ २७ ॥

प्रीति तोड़ना, अतिदान, अतिप्रसिद्धि, पदार्थों का देखना.

पु. पु. पु. न.
विप्रलम्भो विप्रयोगो विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ।
पु. स. स. पु.
विश्राव(स्तु)प्रविख्यातिरवेक्षा प्रतिजागरः ॥ २८ ॥

विप्रलम्भ, विप्रयोग ये २ प्रेमियों को प्रीति तोड़ने या दो रागियों के वियोग के नाम हैं । विलम्भ, अतिसर्जन ये २ अतिदान के नाम हैं । विश्राव, प्रविख्याति या 'प्रतिख्याति' ये २ बड़ी प्रसिद्धता के नाम हैं और अवेक्षा, प्रतिजागर ये २ पदार्थों के अवलोकन करने के नाम हैं ॥ २८ ॥

पढ़ना, गीला करना, क्लेश, समागम.

पु. पु. पु. पु. पु. न.
निपाठनिपठौ (पाठे) तेमस्तेमौ (समुन्दने) ।
पु. पु. पु. पु. पु. पु.
आदीनवास्रवौ (क्लेशे) मेलके सङ्गसङ्गमौ ॥ २९ ॥

निपाठ, निपठ, पाठ ये ३ पढ़ने के नाम हैं । तेम, स्तेम, समुन्दन ये ३ ओदा या गीला करने के नाम हैं । आदीनव, आस्रव, क्लेश ये ३[2] क्लेश के नाम हैं और मेलक या "मेल" सङ्ग, संगम या "सांगम" ये ३ समागम के नाम हैं ॥ २९ ॥

खोजना, लिपटना.

न. न. न. स. पु.
संवीक्षणं विचयनं मार्गणं मृगणा मृगः ।
पु. पु. पु. न.
परिरम्भः परिष्वङ्गः संश्लेष उपगूहनम् ॥ ३० ॥

संवीक्षण, या "अन्वीक्षण, अन्वेषण और गवेषण" विचयन, मार्गण मृगणा या

---

१ 'बाहुप्रतिष्टम्भविवृद्धमन्यु' रिति रघुः ॥

२ आस्रवन्तीन्द्रियाण्यनेनेति आस्रवः केषांचिन्मते तु आश्रवणमाश्रवस्तालव्यमध्योऽपि ॥

"मृगया" और मृग ये ५ वस्तुओं के खोजने के नाम हैं। और परिरम्भ या "परीरम्भ" परिष्वङ्ग, संश्लेष और उपगूहन ये ४ आलिङ्गन करने या लिपटालेने के नाम हैं ॥३०॥

न. न. न. न. न.
देखना, **निर्वर्णनं(तु) निध्यानं दर्शनालोकनेक्षणम्।**
न. न. पु. स.
निकालना. **प्रत्याख्यानं निरसनं प्रत्यादेशो निराकृतिः॥ ३१ ॥**

निर्वर्णन[1], निध्यान, दर्शन, आलोकन या "आलोक" ईक्षण या "लक्षण" ये ५ निरखने या देखने के नाम हैं और प्रत्याख्यान, निरसन, प्रत्यादेश या "प्रत्यादेशन" निराकृति या "निराकरण" ये ४ निरादर करने या निकाल देने के नाम हैं॥ ३१ ॥

पु. पु.
प्रहर के सोने वाले, **उपशायो विशायश्च (पर्यायशयनार्थकौ)।**
न. स. स. स.
घिनाना, निन्दा या करुणा. **अर्तनं(च)ऋतीया(च)हृणीया(च) घृणा(र्थके)॥३२॥**

उपशाय, विशाय ये २ क्रम से प्रहर आदि के शयनार्थी या पारी २ सोनेवाले के नाम हैं और अर्तन, ऋतीया, हृणीया या 'हृणिया' और घृणा ये ४ निन्दा या करुणा के नाम हैं॥ ३२ ॥

पु. पु. पु. पु.
उलटा पलटा, **स्याद्व्यत्यासो विपर्यासो व्यत्ययश्च विपर्यये।**
अतिक्रम. पु. पु. पु. पु.
पर्ययोऽतिक्रमस्तस्मिन्नतिपात उपात्ययः॥ ३३ ॥

व्यत्यास, विपर्यास, व्यत्यय, विपर्यय या "विपर्याय" ये ४ व्यतिक्रम यानी उलटा पलटा करने के नाम हैं और पर्यय या "पर्याय" अतिक्रम, अतिपात और उपात्यय ये ४ अतिक्रम के नाम हैं॥ ३३ ॥

न.
भृत्योंको भेजना, यज्ञमें ब्राह्मणों की स्तुति का स्थान. **(प्रेषणं यत्समाहूय तत्र स्या)त्प्रतिशासनम्।**
पु.
(स)संस्तावः(क्रतुषु या स्तुतिभूमिर्द्विजन्मनाम्)॥३४॥

बुलाकर जो सेवकों को कुछ आज्ञा करना है यानी हुक्म देना है वहां 'प्रतिशासन' होता है। यह १ भृत्यादिकों के भेजने का नाम है और यज्ञों में वेदगायक ब्राह्मणों के स्तुति करने के स्थान को 'संस्ताव' कहते हैं। यह १ यज्ञ में स्तुति करने वाले ब्राह्मणों की अवस्थानभूमि का नाम है॥ ३४ ॥

१ निर्पूर्वको वर्णवर्णक्रियाविस्तारगुणवचनेषु चुरादिः

वहटन या ठीहा, खन्ता या गदेला. (निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठं स) उद्घनः।
पु. पु.
स्तम्बघ्न (स्तु)स्तम्बघनः (स्तम्बो येन निहन्यते)॥३५॥

जिस काष्ठपर काष्ठ को रख व गढ़ कर पतला करते हैं उस काष्ठरूप आधार को 'उद्घन' कहते हैं यह १ अवटन या ठीहा का नाम है और तिनकों के गुच्छे को जिस हथियार से काटते हैं वह स्तम्बघ्न, स्तम्बघन और "स्तम्बहनन" कहलाता है ये २ गदेला या खन्ता आदि के नाम हैं अथवा तृण धान्यों को रखने के लिये बनाये हुए वंशपात्र के नाम हैं ॥ ३५ ॥

पु. पु.
बर्मा, बराबर जमे वृक्ष, अनाज को ऊपर निकालना. आविधो (विध्यते येन तत्र) "विष्वक्समे" निघः।
पु. पु.
उत्कार 'श्च' निकार 'श्च' (द्वौ धान्योत्क्षेपणार्थकौ)॥३६॥

जिस शस्त्रविशेष से पदार्थों को बेधते हैं उसे 'आविध' कहते हैं यह १ भौंरों के डंक आदि या बर्मा का नाम है। चारों ओर बराबर जमे हुए ऊँचे वृक्षादिकों में 'निघ' कहा जाता है यह १ चारों तरफ़ से समान वृक्षादिकों का नाम है और उत्कार, निकार ये २ धान्यों के साफ़ करने के लिये ऊपर निकालने के नाम हैं ॥ ३६ ॥

पु. पु. पु. पु.
खाना, वांकना, छींकना, डकारना, उपरति या निवृत्ति, थूंकना या खखारना. निगारोद्गारविक्षावोद्ग्राहा (निगरणादिषु)।
स. स. स. पु. पु.
आरत्यवरतिविरतय उपरामे(ऽथास्त्रियां तु)निष्ठेवः३७।
स. न. न.
निष्ठ्यूतिर्निष्ठेवनं निष्ठीवन (मित्यभिन्नानि)।

निगार आदि चारों शब्द क्रम से निगरण आदि अर्थों में रहते हैं जैसे कि भोजन अर्थ में 'निगार' होता है यह १ लीलने या निगलने का नाम है। वमन में 'उद्गार' होता है यह १ वान्त या छर्दि का नाम है। शब्द में 'विक्षाव' कहाता है यह १ छींक का नाम है और डकार लेने में 'उद्ग्राह' कहलाता है यह १ डकारने का नाम है। आरति, अवरति, विरति, उपराम या "उपरम" ये ४ उपरति या उपराम के नाम हैं और निष्ठेव, निष्ठ्यूति, निष्ठेवन और निष्ठीवन ये ४ मुख से कफ गिराने या थूकने के नाम हैं इनमें 'निष्ठेव' यह पुन्नपुंसक है और ये सबही एक अर्थवाले कहलाते हैं ॥ ३७ । ३ ॥

वेग, अन्त, बुखार, पशुओं को खेदना, शाप, औपगवसमूह.

न. स. स. न. पु. स.
जवने जूतिः सातिस्त्ववसाने (स्यादथ) ज्वरे जूर्तिः ॥३८॥
पु. न. स.
उदज (स्तु) पशुप्रेरणमकरणि (रित्यादयः शापे)।
न.
(गोत्रान्तेभ्यस्तस्यवृन्दमित्यौ)पगवका(दिकम्)॥३९॥

जवन, जूति ये २ वेग के नाम हैं। साति, अवसान ये २ अन्त या विराम के नाम हैं। ज्वर, जूर्ति ये २ ज्वर या बुखार के नाम हैं। उदज, पशुप्रेरण ये २ गैया, भैंसी आदि पशुओं के खेदने या ललकारने के नाम हैं। शाप यानी कोसने अर्थ में 'अकरणि' आदि होते हैं आदि शब्द से 'अजननि' अजीवनि, अवग्राह और निग्राह आदि सिद्ध होते हैं यह १ शाप का नाम है। जैसे कि "अजीवनिस्ते शठ भूयात्" रे शठ! तेरा जीना न हो और अपत्यार्थप्रत्ययान्तों से 'तस्य समूहः' इस अर्थ में 'औपगवक' आदि होते हैं जैसे कि उपगु के अपत्यों को औपगव और उनके वृन्द यानी समूह को 'औपगवक' कहते हैं और आदि शब्द से गर्गगोत्रापत्यसमूह गार्गक और दक्षगोत्रापत्यसमूह दाक्षक आदि कहलाते हैं यहां से लेकर वर्गसमाप्ति पर्यन्त "तस्य वृन्दम्" इसका अधिकार किया जाता है॥ ३८। ३९ ॥

पुवा व पूरीका समूह, बालसमूह या मनुष्यसमूह, मित्रसमूह.

न न
आपूपिकं शाष्कुलिक (मेवमाद्यमचेतसाम्)।
"माणवानान्तु" माणव्यं "सहायानां" सहायता॥४०॥

अचेतन जड़ अपूप आदि के समूहों में आपूपिक, शाष्कुलिक और साक्तुक आदि प्रयोग होते हैं जैसे कि पुओं के समूह को 'आपूपिक' कहते हैं यह १ पुआसमूहों का नाम है। पूरियों के समूह को 'शाष्कुलिक' कहते हैं यह १ मैदा की पूरियों के ढेर का नाम है आदिशब्द से सक्तुओं के समूह को 'साक्तुक' कहते हैं इत्यादिकों का ग्रहण किया जाता है। माणवों के समुदाय को 'माणव्य' कहते हैं यह १ बालसमूहोंका नाम है मानवों के समुदाय को 'मानव्य' कहते हैं यह १ मनुष्यों के समूह का नाम है। और सहायों के समूह को 'सहायता' कहते हैं यह १ सखासमूहों का नाम है॥ ४० ॥

हलों का समूह, ब्राह्मणों का समूह, पसुरियों का समूह, पीठों का समूह.

स. न. न.
हल्या हलानां ब्रा[illegible]ण्यवाडव्ये (तु द्विजन्मनाम्)।
न. न.
(द्वे पर्शुकानां पृष्ठानां) पार्श्वं पृष्ठ्य (मिति क्रमात्)॥४१॥

हलों के समुदाय को 'हल्या' कहते हैं। यह १ हलसमूह का नाम है। ब्राह्मणों के वृन्द को 'ब्राह्मण्य' और 'वाडव्य' कहते हैं ये २ ब्राह्मणों के समूह के नाम हैं। पसुलियों के समुदाय को 'पार्श्व' कहते हैं। यह १ पसुलीसमूह का नाम है और पृष्ठसमुदाय को 'पृष्ठ्य' कहते हैं यह १ पीठसमूह का नाम है "यज्ञ के विषय में इनको स्मरण करते हैं" यह विशेषता से जानना चाहिये ॥ ४१ ॥

खलिहानों का समूह, मनुष्यों का समूह, ग्राम, जन, धुआं, पाश और काशों का समूह.

स. स. न.
(खलानां)खलिनी खल्या (प्यथ)मानुष्यकं(नृणाम्) ।
स. स. स. स. स.
ग्रामता जनता धूम्या पाश्या गल्या(पृथक् पृथक्)४२॥

खलिहानों के समुदाय में 'खलिनी' और 'खल्या' कहते हैं ये २ खलिहान-समूह के नाम हैं। मनुष्यों के वृन्द में 'मानुष्यक' कहलाता है। यह १ मानुषसमूह का नाम है। ग्रामों के समूह को ग्रामता, जनों के समूह को जनता, धूमों के समूह को धूमता, पाशों के समूह को पाश्या और गलों या बड़े काशों के समूह को गल्या कहते हैं ये अलग २ एक एक के नाम हैं ॥ ४२ ॥

सहस्र, करीष, चर्म और अथर्वादिकों का समूह.

न. न. न. न.
'अपि' साहस्रकारीषचार्मणाथर्वणा(दिकम्)॥ ४३ ॥

इति संकीर्णवर्गः ॥

सहस्र आदिकों के समूह में साहस्र, कारीष, चार्मण और आथर्वण आदि होते हैं। जैसे कि, सहस्रों के समूह को 'साहस्र' कहते हैं यह १ हजारहों समुदाय का नाम है। करीषों यानी सूखे गोबरों के समूह को 'कारीष' कहते हैं यह १ बिनुवाँ कण्डों के ढेर का नाम है। चर्मों या चर्मियों के समूह को 'चार्मण' या 'चार्मिण' कहते हैं। यह १ ढाल या ढालधारियों के समूह का नाम है ऐसे ही अथर्वणों के समुदाय को 'आथर्वण' कहते हैं। यह १ अथर्वसमूहों का नाम है आदि शब्द से वार्मण, आङ्गार और क्षैत्र आदिकों का ग्रहण किया जाता है। संकीर्णार्थता यह है कि 'घञ्' आदि प्रत्ययों का कर्तृभिन्न कारक और भाव में एवं उणादिकों को भाव और कारक में विधान किया गया है इसलिये विग्रह प्रायः भाव में ही दिखलाया है कारक में तो यथासंभव विद्वानों को विचारना चाहिये ॥ ४३ ॥

इति रसालायां व्याख्यायां संकीर्णवर्गविवरणम् ॥ २ ॥

अथ नानार्थवर्गो व्याख्यायते ॥

नानार्थाः केऽपि कान्तादिवर्गेष्वेवात्र कीर्तिताः ।
भूरिप्रयोगा ये येषु पर्यायेष्वपि तेषु ते ॥ १ ॥

अब नानार्थवर्ग का आरम्भ करते हैं–कि, यदि कहाजावे कि, अनेकार्थ का आरम्भ किसलिये करते हैं ? क्योंकि उनका पूर्वोक्त वर्गों में ही अभिधान होचुका है, यदि यहां कहेंगे तो प्रागुक्त कैसे होसक्ते हैं ? इस आशङ्का पर कहते हैं कि यहां वक्ष्यमाण कान्त, खान्त, गान्तादि वर्गों में ही कितेक नानार्थ कहे हैं. और पूर्वोक्त पर्यायों में नहीं कहे गये हैं, जैसे कि–" मारुते वेधसि ब्रध्ने पुंसि कः कं शिरोऽम्बुनोः" ऐसा कहा है. और जहां कहीं काव्यादिकों में बाहुल्य से भूरिप्रयोग कवियों के कियेहुए जो नाक–लोक आदि शब्द हैं वे पहले कहेहुए जिनके पर्यायों में देख पड़ते हैं उनके पर्यायों में और अपिशब्द से यहां भी कान्त, खान्तादि वर्गोंमें भी कहे हैं–जैसे कि 'नाक' शब्द प्रचुरप्रयोगता से पहले स्वर्ग और आकाश अर्थ में कहा हुआ भी फिर यहां कहा गया है–इस लिये पुनरुक्ति का विचार नहीं करना चाहिये ॥ १ ॥

आकाश, स्वर्ग, स्वर्गादि, जन, (आकाशे त्रिदिवे) नाको (पु.) लोक (पु.) (स्तु भुवने जने) ।
छन्द, कीर्ति, तीर, तलवार. (पद्ये यशसि च) श्लोकः (पु.) (शरे खड्गे च) सायकः (पु.) ॥२॥

आकाश और स्वर्ग को 'नाक' कहते हैं–यह १ स्वर्ग और आकाश का नाम है । स्वर्ग आदि भुवन और जनको 'लोक' कहते हैं–यह १ जन और स्वर्गादि लोकों का नाम है । अनुष्टुप् आदि छन्द और यश * को 'श्लोक' कहते हैं–यह १ पद्य और कीर्ति का नाम है–तथा तलवार और तीर को सायक–शायक और शारक भी कहते हैं । यह १ बाण और खड्ग का नाम है ॥ २ ॥

सियार, वरुण, चिउड़ा, बालक, दर्शन, प्रकाश, तुरही, पटह. जम्बुकौ (पु.) (क्रोष्टुवरुणौ) 'पृथुकौ' (पु.) (चिपिटार्भकौ) ।
आलोकौ (पु.) (दर्शनोद्द्योतौ) (भेरीपटह) मानकौ (पु.) ॥३॥

सियार और वरुण ये दोनों 'जम्बुक' पदवाच्य कहलाते हैं–यह १ सियार, नीच और जलेश का नाम है । चिउड़ा–और बालक को 'पृथुक' कहते हैं । यह १ बालक और भूंजेहुए धान के बने चिउड़े का नाम है । दर्शन और प्रकाश को 'आलोक' कहते हैं । यह १ वन्दिभाषण, दर्शन और प्रकाश का नाम है । 'भेरी' और 'पटह' ये दोनों 'आनक' पदवाच्य कहलाते हैं । यह १ तुरही, नफीरी, सहनाई, नगाड़ा, मृदङ्ग और गर्जते हुए मेघ का नाम है ॥ ३ ॥

---

* यश में जैसे कि " क उत्तमश्लोकगुणानुवादात् " ।

गोदी, चिह्न, चिह्न, अपवाद, सर्प, बढ़ई, स्फटिक, सूर्य.

पु. पु.
(उत्सङ्गचिह्नयो) रङ्कः कलङ्को (ऽङ्कापवादयोः) ।
पु. पु.
तक्षको (नागवर्धक्यो) रर्कः (स्फटिकसूर्ययोः) ॥ ४ ॥

गोदी और चिह्न को 'अङ्क' कहते हैं—यह १ निशान और गोद का नाम है। चिह्न और दोषारोप को 'कलङ्क' कहते हैं—जैसे कि, "कलङ्कोऽङ्केऽपवादे च कालायसमलेऽपि च" (इति मेदिनी) यह १ अपवाद और चिह्न का नाम है। साँप और बढ़ई को 'तक्षक' कहते हैं—यह १ नाग और वढ़ई का नाम है—और स्फटिकमणि तथा सूर्य को 'अर्क' कहते हैं—यह १ मदार, स्फटिकमणि, सूर्य और ताँबे का नाम है ॥ ४ ॥

वायु, ब्रह्मा, सूर्य, शीश, जल, तिन्नी, संक्षेप, भात का सीथ.

पु. न.
(मारुते वेधसि ब्रध्ने पुंसि) कः कं (शिरोऽम्बुनोः) ।
पु.
(स्या) त्पुलाक (स्तुच्छधान्ये संक्षेपे भक्तसिक्थके) ॥५॥

वायु, ब्रह्मा, और सूर्य का वाचक 'क' शब्द पुंलिङ्ग है, और शीश तथा जल का वाचक 'क' नपुंसक है—जैसे कि "को ब्रह्मणि समीरात्मयमदक्षेषु भास्करे। मयूरेऽग्नौ च पुंसि स्यात्सुखशीर्षजलेषु कम्" यह (मेदिनीकोष) में कहा है—यह १ वायु और ब्रह्मादिकों का नाम है। तुच्छ धान्य=नीवार आदि, अविस्तार और भातका सीथ इनको 'पुलाक' कहते हैं। यह १ तिन्नी—पसही धान्य और संक्षेप आदिकों का नाम है ॥ ५ ॥

उल्लू, हाथी की पूंछ के पास का मांस, करवा, ओला, अनार, बुद्ध, गणेश, गरुड़.

पु.
(उलूके करिणः पुच्छमूलोपान्ते च) पेचकः ।
पु.न. पु.
(कमण्डलौ च) करकः (सुगते च) विनायकः ॥ ६ ॥

उल्लू और हाथी की पूंछ के समीपवर्ती गुदाच्छादक मांसपिण्ड को 'पेचक' कहते हैं। यह १ उल्लू और गजपुच्छ मूलोपान्त का नाम है। कमण्डलु और च शब्द से पक्षिविशेष, अनार, वर्षा का पत्थर और करक्क को 'करक' कहते हैं—जैसे कि "करकस्तु पुमान्पक्षिविशेषे दाडिमेऽपि च। द्वयोर्मेघोपले न स्त्री करङ्के च कमण्डलौ" (इति मेदिनी) यह १ कमण्डलु आदिकों का नाम है—तथा बुद्ध, विघ्नराज और गरुड को 'विनायक' कहते हैं—जैसे कि "विनायकस्तु हेरम्बे तार्क्ष्ये विघ्ने जिने गुरौ" (इति मेदिनी) यह १ गणेश, गरुड, विघ्न, बुद्ध और गुरु का नाम है ॥ ६ ॥

हाथ, बीता, बिच्छू या आठवीं राशि, उलटा, अङ्गा-वयव.

पु. 　　　　　　　　　　　　　　　　　पु.
किष्कु (हस्ते वितस्तौ च) (शूककीटे च) वृश्चिकः ।
पु.स.न.
(प्रतिकूले) प्रतीक (स्त्रिष्वेकदेशे तु पुंस्ययम्) ॥ ७ ॥

हाथ और बीता (बारह अंगुल) को 'किष्कु' कहते हैं—जैसे कि "किष्कुर्द्वयोर्वितस्तौ च सप्रकोष्ठकरेऽपि च" (इति मेदिनी) यह १ बीता और पहुँचा समेत हाथ का नाम है। शूकसमान रोम से व्याप्त कीटविशेष, भौंरा, वृक्षविशेष और आठवीं राशिको भी 'वृश्चिक' कहते हैं—जैसे कि "वृश्चिकस्तु द्रुणौ राशौ शूककीटौषधीभिदो:" (इति मेदिनी) यह १ विच्छू, आठवीं राशि और शूककीट आदिकों का नाम है। प्रतिकूल=उलटा—विरुद्ध और विमुख को 'प्रतीक' कहते हैं—जैसे कि "प्रतीकोऽवयवेऽपि स्यात्प्रतिकूलविलोमयो:" (इति मेदिनी) यह १ अवयव, प्रतिकूल और विलोम का नाम है। यह प्रतिकूल अर्थ में त्रिलिङ्ग और अवयव में पुंलिङ्ग है ॥ ७ ॥

चिरायता, गन्धतृण,कुकुरमुत्ता, तोरई,चँचेड़ा या चिरचिरा,कायफल, दूधिया खैर,लोबान, तिलोंकी खली या पीना, हींग,काबुलदेश या काबुली घोड़ा.

न.
(स्या) द्भूतिक (न्तु भूनिम्बे कत्तृणे भूस्तृणेऽपि च) ।
स.
(ज्योत्स्निकायां च घोषे च) कोशातक्य (थ कट्फले) ॥ ८ ॥
पु.
(सिते च खदिरे) सोमवल्कः (स्यादथ सिल्हके) ।
पु.　　　　न.
(तिलकल्के च) पिण्याको बाह्लीकं (रामठेऽपि च) ॥ ९ ॥

चिरायता, सुगन्धतृण, गन्धविशेष या वृक्षविशेष को 'भूतिक' कहते हैं—जैसे कि "स्याद्भूतिकन्तु भूनिम्बे दीप्यभूस्तृणकत्तृणे" (इति मेदिनी) यह १ चिरायता आदिकों का नाम है। तोरई, चँचेड़ा या चिरचिरा को 'कोशातकी' 'कोषातकी' और 'कोपातक' कहते हैं जैसे कि "कोषातक: कचे पुंसि पटोल्यां घोषके स्त्रियाम्" (इति मेदिनी) यह बालों में पुंलिङ्ग और तोरई, तथा चिरचिरा में स्त्रीलिङ्ग है यह १ पटोलिका या अपामार्ग का नाम है। कायफल और दूधिया कत्था को 'सोमवल्क' कहते हैं। यह १ कायफल और सफेद कत्था का नाम है। लोबान और तिलों की खली को 'पिण्याक' कहते हैं—जैसे कि "पिण्याकोऽस्त्री तिलकल्के हिंगुवाह्लीकसिल्हके" (इति मेदिनी) यह १ लोबान और पीना

१ "ज्योत्स्नाचन्द्रमसोभासि स्फुरज्ज्योतिर्निशि स्मृता" (इत्यजयः) "ज्योत्स्नी पटोली ज्योत्स्नावन्निशो:" (इति हैमः) ।

आदिकों का नाम है । हींग, काबुली घोड़ा और काबुल देश को ' वाह्लीक ' और ' वाह्लिक ' कहते हैं—जैसे कि " वाह्लीकं वाह्लिकं धीरहिंगुनोर्नाश्वदेशयोः " (इति रभसः) यह १ धीर—हींग—और काबुली घोड़ा आदिकों का नाम है ॥ ८ । ६ ॥

इन्द्र, गूगुल, उल्लू, मदारी, विश्वामित्र, नेवला, रोग, ताप, शङ्का, थोड़ा, नीच, छोटा.

पु. (महेन्द्रगुग्गुलूलूकव्यालग्राहिषु) कौशिकः ।
पु. (रुक्तापशङ्कास्वा)तङ्कः पु. (स्वल्पेऽपि)क्षुल्लक(स्त्रिषु)॥ १० ॥

इन्द्र, गूगल, उल्लू और मदारी को ' कौशिक ' कहते हैं—जैसे कि " कौशिको नकुले व्यालग्राहिगुग्गुलशक्रयोः । विश्वामित्रे च कोशज्ञोलूकयोरपि कौशिकः । कौशिकी चण्डिकायां च नदीभेदे च कौशिकी " (इति विश्वः) यह १ नेवला, मदारी, गूगल, इन्द्र, विश्वामित्र, कोषज्ञाता और उल्लू का नाम है । यह नकुलादि अर्थों में पुंलिङ्ग और चण्डिका देवी तथा नदीभेद में स्त्रीलिङ्ग है । रोग, सन्ताप और शङ्का यानी भीति या डरको ' आतङ्क ' कहते हैं—जैसे कि "आतङ्को रोगसन्तापशङ्कासु मुरजध्वनौ " (इति मेदिनी) यह १ रोग, सन्ताप, संदेह आदिकों का नाम है । स्वल्प और अपिशब्द से नीच को भी ' क्षुल्लक ' कहते हैं । यह त्रिलिङ्ग है—जैसे कि " क्षुल्लकस्त्रिषु नीचेऽल्पे " (इति मेदिनी) यह १ नीच और अल्प का नाम है ॥ १० ॥

चन्द्रमा, दीर्घायु, कृश, घोड़ेकी टाप, बत्तख, बाघ, आगी, दिग्गज, सफ़ेद कमल, अजवायन, मोरकी चोटी आदि.

पु. जैवातृकः (शशाङ्केऽपि) (खुरेऽप्यश्वस्य) पु. वर्तकः ।
पु. (व्याघ्रेऽपि)पुण्डरीको(ना)(यवान्यामपि) पु. दीपकः॥ ११॥

चन्द्रमा और अपिशब्द से दीर्घायु, कुश या [१]कृशको भी ' जैवातृक ' कहते हैं—जैसे कि " जैवातृकः पुमान्सोमे दीर्घायुः कुशयोस्त्रिषु " (इति मेदिनी) यह चन्द्रमा में पुंलिङ्ग, और दीर्घायु तथा कुश में त्रिलिङ्ग है । यह १ चन्द्र आदिकों का नाम है । घोड़े की टाप और अपिशब्द से बत्तख को भी ' वर्तक ' कहते हैं—जैसे कि " वर्तकस्तु खुरेऽश्वस्य विहगे वर्तिका द्वयोः " (इति मेदिनी) यह घोड़े की टाप में पुंलिङ्ग और बत्तख में पुं० स्त्रीलिङ्ग है । यह १ घोड़े की टाप आदिका नाम है । बाघ और अपिशब्द से दिग्गज आदिकों को ' पुण्डरीक ' कहते हैं । यह पुंलिङ्ग

१ कृशयोरपीति पाठान्तरम् ।

है, जैसे कि " पुण्डरीकः सिताम्भोजे सितच्छत्रे च भेषजे । पुंसि व्याघ्रेऽग्निदिङ्नागे कोशकारान्तरेऽपि च " (इति मेदिनी) यह १ सफ़ेद कमल, सफ़ेद छाता, औषध, बाघ और आग्नेय कोण के हाथी आदिका नाम है. और अजवायन तथा अपिशब्द से अजमोदा आदिकों को ' दीपक ' कहते हैं । जैसे कि " दीपकं वागलङ्कारे वाच्यवद्दीप्तिकारके । दीपकश्चाजमोदायां यवानीबर्हिचूडयोः " (इति मेदिनी) यह वाचालंकार में नपुंसक, दीप्तिकारक पदार्थ में वाच्यलिङ्ग और अजवायन, अजमोदा तथा मयूरशिखामें पुंलिङ्ग है। यह १ अजवायन आदिकों का नाम है॥११॥

वानर, सियार, कुत्ता आदि, सोना, गेरू, पीड़ा, अप्रिय-अकार्य, अप्रिय, झूठ.

पु. न.
शालावृकाः "कपिक्रोष्टुश्वानः" (स्वर्णेऽपि) गैरिकम् ।
न. न.
(पीडार्थेऽपि)व्यलीकं(स्याद्)लीकं(त्वप्रियेऽनृते)॥१२॥

वानर, सियार और कुत्ता को ' शालावृक ' कहते हैं—यह १ वानर आदिकों का नाम है । सोना और अपिशब्द से धातुको भी " गैरिक " कहते हैं—जैसे कि " गैरिकं धातुरुक्मयोः " (इति मेदिनी) यह १ धातु और स्वर्ण का नाम है। पीड़ा अर्थ और अपिशब्द से अप्रिय—तथा कार्याभाव का वाचक ' व्यलीक ' कहाजाता है; यह १ अप्रिय, अकार्य, व्यथा और वैलक्ष्य आदि का नाम है । तथा अप्रिय और असत्य को " अलीक " कहते हैं—जैसे कि " अलीकमप्रियेऽपि स्याद्दिव्यसत्ये नपुंसकम् " (इति मेदिनी) यह अप्रिय, आकाश और असत्य में नपुंसकलिङ्ग है—यह १ अप्रिय आदिका नाम है ॥ १२ ॥

स्वभाव, वंश-खण्ड, बकला, १०८ कर्ष सोना, सोना-मात्र, छाती का भूषण, सोने का पल, अशर्फ़ी. विष्ठा, पाप, त्रिशूल, शिव-धनुष.

न.
(शीलान्वया)वनूके(द्वे)शल्के (शकलवल्कले) ।
(साष्टे शते सुवर्णानां हेम्न्युरोभूषणे पले ॥ १३ ॥
पु.न. पु.न.
दीनारेऽपिच)निष्को(ऽस्त्री)कल्को(ऽस्त्रीशमलैनसोः)।
पु.न.
(दम्भेऽप्यथ) पिनाको(ऽस्त्री शूलशंकरधन्वनोः) १४॥

स्वभाव और वंश ये दोनों ' अनूक ' पदवाच्य कहलाते हैं—जैसे कि " अनूकं तु कुले शीले पुंसि स्याद्गतजन्मनि " (इति मेदिनी) यह कुल, शील, और पूर्वजन्म का वाचक पुंलिङ्ग है । यह १ स्वभाव आदिकों का नाम है । खण्ड, (टुकड़ा) बकला या खालको ' शल्क ' कहते हैं—यह १ खण्ड और त्वचाका नाम है । सोने के एकसौ आठ कर्षोंका ' निष्क ' कहलाता है. तथा

सोने का बना छाती का आभूषण और जोकि स्वर्ण के * पलों का बना हो और अच्छे व्यावहारिक द्रव्य (अशर्फी) को भी 'निष्क' कहते हैं । यह पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग है—जैसे कि "निष्कमस्त्री साष्टहेमशते दीनारकर्षयोः । वक्षोऽलंकरणे हेममात्रे हेमपलेऽपि च" (इति मेदिनी) यह १ एकसौ आठ कर्ष सोना, सोनामात्र, छातीका भूषण, सोने का पल और अशर्फी का नाम है । विष्ठा, पाप और दम्भ को 'कल्क' कहते हैं—जैसे कि "कल्कः पापाशये पापे दम्भे-विट्किट्टयोरपि" (इति विश्वः) यह पापाशय, पाप, दम्भ, विष्ठा और घी-तेल की कीट में पुं० नपुंसकलिङ्ग है । यह १ शमल आदिकों का नाम है । त्रिशूल, शिवधनुष और धूलिवर्षा को भी 'पिनाक' कहते हैं—जैसे कि, "पिनाकोऽस्त्री रुद्रचापे पांशुवर्षत्रिशूलयोः" (इति मेदिनी) यह रुद्रचाप, धूलि-वर्षा और त्रिशूल में पुं० नपुंसकलिङ्ग है । यह १ त्रिशूल आदिकों का नाम है ॥ १३ । १४ ॥

हथिनी, नई ब्याई गइया, मेघसमूह, देवी, नरक-यातना, वृत्ति, तर्की, हाथी की सूंड़ का अगिला भाग, कमलबीज, देवता, मनोज्ञ, श्रेष्ठ, मुख्य, अन्य, केवल.

स. स.
धेनुका (तु करेण्वां च) (मेघजाले च) कालिका ।
स. स.
कारिका (यातनावृत्त्योः) कर्णिका (कर्णभूषणे) ॥ १५ ॥
(करिहस्ताङ्गुलौ पद्मबीजकोश्यां) (त्रिपूत्तरे) ।
पु.स.न. पु.स.न.
वृन्दारकौ (रूपिमुख्या) वेके (मुख्यान्यकेवलाः) ॥ १६ ॥

हथिनी और 'च' शब्दसे नवीन ब्याई गायको भी 'धेनुका' कहते हैं—जैसे कि, "स्याद्धेनुका करिण्यां च धेनावपि ना तु दानवविशेषे" (इति मेदिनी) यह हथिनी, नवप्रसूता गौ में स्त्रीलिङ्ग और धेनुकासुर में पुंलिङ्ग है । यह १ हथिनी आदिका का नाम है । मेघसमूह और 'च' शब्द से योगिनी भेदादिकों को भी 'कालिका' कहते हैं—जैसे कि "कालिका चण्डिकाभेदे काष्ण्यें वृश्चिकपत्रयोः । क्रेयवस्तुमूल्य धूसरीनवमघयोः । पटोलशाखारोमालीमांसी काकीशिवासु च । मेघावलौ च" (इति मेदिनी) यह १ मेघसमूह और काली-माई आदिकों का नाम है । यातना=पीड़ा या नरक, विवरण श्लोक, कविता, नटभार्या और शिल्प आदिकों को भी 'कारिका' कहते हैं । जैसे कि, "कारिका नटयोषिति । कृतौ विवरणश्लोके शिल्पयातनयोरपि । नपुंसकं तु कर्मादौ कारकं कर्तरि त्रिषु" (इति मेदिनी) यह १ यातना आदिकों का नाम है । कर्णभूषण,

* पलं कर्षचतुष्टयम्—गुञ्जानामशीतिः कर्षः ।

गजशुण्ड का अग्रभाग और कमल के मध्यकोश (बीज) कोभी 'कर्णिका' कहते हैं—जैसे कि "कर्णिका करिहस्ताग्रे करमध्याङ्गुलावपि । क्रमुकादिच्छटांशेऽब्जवराटे कर्णभूषणे" (इति मेदिनी) यह १ कर्णभूषण आदिका नाम है । इसके अनन्तर खान्त के पहले जितने शब्द कहेगये हैं वे तीनों लिङ्गों में रहते हैं। रूपवान्, सुन्दर, प्रधान, और देवता को 'वृन्दारक' कहते हैं । जैसे कि "वृन्दारकः सुरे पुंसि मनोज्ञश्रेष्ठयोरपि" (इति मेदिनी) यह देवतावाची पुंलिङ्ग है, सुन्दर और मुख्यवाची त्रिलिङ्ग है; यह १ देवता आदिकों का नाम है । मुख्य, अन्य और केवल ये एक शब्दवाच्य कहलाते हैं—जैसे कि "एकं संख्यान्तरे श्रेष्ठे केवलेतरयोस्त्रिषु" (इति मेदिनी) यह संख्यान्तर और श्रेष्ठ में नपुंसक तथा केवल और इतर में त्रिलिङ्ग है । यह १ मुख्य आदिकों का नाम है ॥ १५ । १६ ॥

मायावी, दूरसे देखनेवाला, — पु. (स्या)द्दाम्भिकः पु. कौक्कुटिको(यश्चादूरेरितेक्षणः) ।

मुँहदेखा, स्वामी का काम न करनेवाला. — पु. लालाटिकः (प्रभोर्भालदर्शी कार्याक्षमश्च यः) ॥ १७ ॥

मायावी और छलकारी को 'दाम्भिक' कहते हैं । यह १ मायाकारी या कपटकारी या छलछन्दी का नाम है । जो दूरदर्शी होता है उसे "कौक्कुटिक" कहते हैं । यह १ दूरदर्शनशाली का नाम है । जो नौकर चाकर स्वामी के मुख का देखनेवाला होताहै और जो काम करने में असमर्थ होताहै उनको 'लालाटिक' कहते हैं—जैसे कि "लालाटिकः सदालस्यप्रभुभालनिदर्शिनि" (इत्यजयः) जो सेवक क्रोध या प्रसन्नता के लिये स्वामी के भालका अवलोकन करनेवाला होता है और जो प्रभु के कार्य करने में असमर्थ होता है इन दोनोंको भी 'लालाटिक' कहते हैं यह १ मुखदेखा या मालिक के काम न करनेवाले का नाम है ॥ १७ ॥

पर्वत, चूतर, कङ्कण, चक्र, — पु. न. (भूभृन्नितम्बवलयचक्रेषु) कटको (ऽस्त्रियाम्) ।

सुई की नोक, छोटा वैरी, रोमाञ्च. — पु. (सूच्यग्रे क्षुद्रशत्रौ च लोमहर्षे च) कण्टकः ॥ १८ ॥

पर्वत, राजा, कमर का निचलाभाग, कङ्कण और रथाङ्गआदि इनको 'कटक' कहते हैं—जैसे कि "कटकोऽस्त्रीनितम्बोद्रेर्दन्तिनां दन्तमण्डले । सामुद्रलवणे राजधानीवलययोरपि" (इति मेदिनी) यह पर्वत का मध्यभाग, हाथी का दाँत, सामुद्रीयलवण, राजधानी (ज़िमींदारी) और कङ्कण इन अर्थोंका वाचक

पुन्नपुंसक है। यह १ पर्वत आदिकों का नाम है । सुई की नोक, छोटासा वैरी, और लोमहर्ष तथा च शब्द से कृपण, नीच, बांस और कांटे को "कण्टक" कहते हैं-जैसे कि "कण्टकः क्षुद्रशत्रौ च कर्मस्थानकदोषयोः। रोमाञ्चे च द्रुमाङ्गे च कण्टको मस्करेऽपि च" (इति विश्वः) यह १ सूची-मुख आदिकों का नाम है ॥ १८ ॥

पकाना, बालक, पु. हार के बीचकी मणि, अधिपति पु.
पाकौ (पक्तिशिशू) (मध्यरत्ने नेतरि) नायकः ।
पलंग या परि-वार, पु. बधिक, लोभी. पु. १
पर्य्यङ्कः(स्यात्परिकरे)(स्याद्व्याधेऽपि च)लुब्धकः १९॥

पकाना-और बालक ये दोनों 'पाक' शब्दवाच्य कहलाते हैं-जैसे कि "पाकः परिणतौ शिशौ । केशस्य जरसा शौक्ल्ये स्थाल्यादौ पचनेऽपि च" (इति मेदिनी) यह परिणाम, बालक, बुढ़ापे से बालोंका पकना-और बटलोही आदिकों में पकाने का वाचक होकर पुंलिङ्ग है । यह पकाने आदि का नाम है । हार के बीचकी मणि, अधिपति और प्रधान को 'नायक' कहते हैं-जैसे कि, "नायको नेतरि श्रेष्ठे हारमध्यमणावपि" (इति विश्वः) यह नेता=लेजाने वाला, मुख्य और हारमध्यगत मणि में भी पुंलिङ्ग है, यह १ मध्यरत्न आदिकों का नाम है । नौकर, चाकर, सेवक, परिवार, समूह, साज और पलँग को 'पर्यङ्क' कहते हैं-"पल्यङ्को मञ्चपर्यङ्कवृषीपर्यस्तिकासु च" (इति मेदिनी) यह १ परिजन आदि का नाम है । शिकारी, अहेरी, बहेलिया, जानवरों का मारनेवाला और लोभी को भी 'लुब्धक' कहते हैं-यह १ व्याध आदिकों का नाम है ॥ १९ ॥

समूह, पेटारी, गुरु, देश में उपजा, पु.
पेटक(स्त्रिषु वृन्देऽपि) (गुरौ देश्ये च) दैशिकः ।
गांव, ढाल, पु. मल्लाह या कहार. पु.
खेटकौ(ग्रामफलकौ) (धीवरेऽपि च)जालिकः ॥ २० ॥

समूह, गिरोह और अपि शब्द से पेटारा-पेटारी कोभी 'पेटक' कहते हैं-जैसे कि, "पेटकः पुस्तकादीनां मञ्जूषायां कदम्बके" (इति विश्वः) यह पुस्तक आदिकों के समुदाय और पेटारा पिटारी संदूक आदिकों में पुंलिङ्ग है; यह १ समूह आदि का नाम है । उपदेशकर्ता गुरु और देश में उपजे हुए पुरुष को 'दैशिक' या 'देशिक' कहते हैं; यह १ गुरु आदिकों का नाम है । गाँव और ढालको 'खेटक' कहते हैं, यह १ ग्राम आदिकों का नाम है ।

"१-आर्द्रायामपि लुब्धकः" इत्यपि पाठः ।

कहार—महरा और मछली पकड़नेवाले को 'जालिक' कहते हैं; यह १ धीवर आदि का नाम है ॥ २० ॥

पराग, पद्म-केसर, स्त्रीधन, महसूल, हिलकोरा, भाव, समूह.

पु.　पु.स.
(पुष्परेणौ च) किञ्जल्कः शुल्कोऽस्त्री (स्त्रीधनेऽपि च)।
स.　न.
(स्यात्कल्लोलेऽप्यु)त्कलिका वार्धकं(भाववृन्दयोः)॥२१॥

पुष्पोंकी सुगन्धित धूलि या पराग और केसर को 'किञ्जल्क' कहते हैं । यह १ पुष्परज आदिका नाम है । स्त्रीधन, घाट आदिकी उतराई, चुंगी या महसूल आदि को 'शुल्क' कहते हैं । यह १ घट्टादिदेय धन आदिका नाम है । कल्लोल (हिलकोरा) और अपिशब्द से उत्कण्ठा आदि को 'उत्कलिका' कहते हैं—" उत्कलिका तु हेलायां तरङ्गोत्कण्ठयोरपि " (इति कोषान्तरम्) यह १ कल्लोल आदिका नाम है । भाव और समूह का वाचक 'वार्धक' कहा जाता है । यह वृद्धसमुदाय, वृद्धत्व और वृद्धकर्म का वाची होकर नपुंसकलिङ्ग है । यह १ भाव, समूह आदि का नाम है ॥ २१ ॥

हथिनी, वेश्या, बालक, विदारक, अन्ध, घमण्ड, पत्थर काटने का औज़ार.

स.　पु.
(करिण्यां) चापि गणिका दारकौ (बालभेदकौ)।
पु.　पु.
(अन्धेऽप्य) नेडमूकः स्याट्टङ्कौ (दर्पाश्मदारणौ) ॥ २२ ॥

इति कान्तवर्गः ॥

हथिनी, अपिशब्द से जूही और वेश्यादिकों को 'गणिका' कहते हैं— "गणिकायूथीवेश्येभीतर्कारीषु ना तु दैवज्ञे" (इति मेदिनी) यह १ हथिनी आदिका नाम है । बालक, और भेदक इन दोनों को 'दारक' कहत हैं; यह १ बालक और विदारक का नाम है । अन्धा, अपिशब्द से शठ और गूगा—बहिराको 'अनेडमूक' कहत हैं—यह त्रिलिङ्ग है, जस कि " त्रिलिङ्गोऽनेडमूकः स्याच्छठे वाक्श्रुतिवर्जिते " (इति रभसः) यह १ अन्ध आदिकों का नाम है । घमण्ड या अभिमान और पत्थर काटने का औज़ार इनको 'टङ्क' कहते हैं— " टङ्को नीलकपित्थे च खनित्रे टङ्कने स्त्रियाम् । जङ्घायां स्त्री पुमान्कोपे कोषासिग्रावदारणे " (इति मेदिनी) यह काला कैथा, खुरपा, खन्ता, और टाकन में पुन्नपुंसक है, जाघों में स्त्रीलिङ्ग और कोप, तलवारका कोष तथा पत्थर काटने के औज़ार में पुंलिङ्ग है; यह १ चार माशे की तौल, टांकी, छनी, सुहागा, क्रोध, घमण्ड, खुरपा, खन्ता या बेलचा आदिका नाम है ॥ २२ ॥

इति कान्तवर्गविवरणम् ॥

अथ खान्ताः ।

शोभा, किरण, ज्वाला, भौंरा, बाण, निधिभेद, भाल की हड्डी, शङ्ख, इन्द्रियादि.

पु. मयूख (स्त्विट्करज्वाला व) (लिबाणौ) पु. शिलीमुखौ ।
पु. शङ्खो (निधौ ललाटास्थ्निकम्बौ न स्त्री) (न्द्रियेऽपि) न. खम् २३

अब खान्तवर्ग कहते हैं ।

शोभा, किरण और ज्वाला को ' मयूख ' कहते हैं यह १ शोभा आदिका नाम है। भौंरा और बाण का वाचक ' शिलीमुख ' है यह १ भौंग आदिका नाम है। निधिभेद, ललाट की हड्डी, कङ्कण, और शङ्खको " शङ्ख " कहते हैं यह स्त्रीलिङ्ग नहीं है यह १ निधि आदिका नाम है और इन्द्रिय व अपिशब्दसे पुर, क्षेत्र, शून्य, बिन्दु, आकाश, संवेदन, देवलोक और कल्याण का भी वाचक ' ख ' है यह १ इन्द्रिय आदिकोंका नाम है यह नपुंसक है ॥ २३ ॥

किरण, ज्वाला, चोटी आदि, पर्वत, वृक्ष, वायु, बाण, शर, सूर्य, पक्षी.

(घृणिज्वाले अपि) स. शिखे (शैलवृक्षौ) पु. नगावगौ पु. ।
पु. आशुगौ (वायुविशिखौ) (शरार्कविहगाः) पु. खगाः ॥ २४ ॥

किरण, ज्वाला और अपिशब्द से, शाखा, मोरशिखा, कलिहारी, जूड़ा, जटा, व ऍंडी आदिको ' शिखा ' कहते हैं यह १ किरण आदिका नाम है (इति खान्त-वर्गः) अब गान्त कहते हैं कि, पर्वत और वृक्ष ये दोनों ' नग ' और ' अग ' कहलाते हैं ये २ शैल आदिके नाम हैं । वायु और बाणको ' आशुग ' कहते हैं यह १ पवन आदिका नाम है और बाण, सूर्य, पक्षी ये ' खग ' कहलाते हैं यह १ तीर, सूर्य व चिड़ियों का नाम है ॥ २४ ॥

पक्षी, सूर्य, पांखी, सुपारी, समूह, हरिण, मृगशिर, ढूंढ़ना, प्रवाह, जोरसे चलना.

पु. पतङ्गौ (पक्षिसूर्यौ च) पु. पूगः (क्रमुकवृन्दयोः) ।
(पशवोऽपि) पु. मृगा पु. वेगः (प्रवाहजवयोरपि) ॥ २५ ॥

पक्षी, सूर्य और चशब्द से शलभ व धानभेद को ' पतङ्ग ' कहते हैं यह १ पतंगा आदिका नाम है । सुपारी और समूह को ' पूग ' कहते हैं यह १ पूगीफल या डली आदिका नाम है । गाई, भैंसी, घोड़ा आदि पशुओं को व अपिशब्दसे हरिण, मृगशीर्ष और ढूंढ़ने को भी ' मृग ' कहते हैं यह १ पशु आदिकोंका नाम है और प्रवाह, शीघ्रता अपिशब्द से वीज और कृपण को भी ' वेग ' कहते हैं यह १ बहने व ज़ोरसे चलने आदिका नाम है ॥ २५ ॥

फूलकी धूलि, गन्धचूर्ण धूलि, हाथी आदि, तिलक, नेत्र-प्रान्त आदि.

पु.
परागः (कौसुमे रेणौ स्नानीयादौ रजस्यपि) ।
पु.　पु.　पु.
(गजेऽपि) नागमातङ्गावपाङ्ग (स्तिलकेऽपि च) ॥२६॥

फूलकी धूलि, स्नानके लिये गन्धद्रव्य का चूर्णविशेष, आदिशब्द से सुरत आदि के परिश्रम की शान्ति के लिये कामशास्त्रादि में कहे कर्पूरादि का चूर्ण, मिट्टी की धूलि, अपिशब्द से पर्वतभेद, प्रसिद्धता, उपराग और चन्दन को भी 'पराग' कहते हैं यह १ पुष्पधूलि आदि का नाम है । हाथी अपिशब्द से नाग, नागकेसर, नागवल्ली, हास्तिनपुर, मेघ, और मोथा आदि को 'नाग' और 'मातङ्ग' कहते हैं यह पुंलिङ्ग है । सीसा और लवंग का वाची 'नाग' नपुंसक है अपिशब्द से चाण्डाल को 'मातङ्ग' कहते हैं । तिलक अपिशब्द से नेत्रप्रान्त, चितेरा, प्रधान और अङ्गहीन को भी 'अपाङ्ग'[1] कहते हैं यह १ तिलक आदि का नाम है ॥ २६ ॥

स्वभाव, त्याग, निश्चय, अ-ध्याय, सृष्टि, कवच, उपाय, ध्यान, संगति, युक्ति.

पु.
सर्गः (स्वभावनिर्मोक्षनिश्चयाध्यायसृष्टिषु) ।
पु.
योगः (संनहनोपायध्यानसंगतियुक्तिषु) ॥ २७ ॥

स्वभाव, त्याग या मोक्षका अभाव, निश्चय, अध्याय यानी काव्य आदि में विश्रामस्थान और सृष्टि को 'सर्ग' कहते हैं यह १ प्रकृति आदि का नाम है निश्चय में जैसे कि "गृहाण शस्त्रं यदि सर्ग एष ते" "यदि तुम्हारा यही निश्चय है तो हथियार को लीजिये" यह रघुवंश में कहा है और कवच या हथियारों का बाँधना, सामादि उपाय, ध्यान यानी चित्तवृत्ति का निरोध, समागम और युक्ति को 'योग' कहते हैं यह १ कवच आदि का नाम है ॥ २७ ॥

सुख, स्त्री आदि का पालन, साँप का फन, देह, पपीहा, हरिण, विचित्र रंग.

पु.
भोगः (सुखे स्त्र्यादिभृतावहेश्च फणकाययोः) ।
पु.
(चातके हरिणे पुंसि) सारङ्गः (शवले त्रिषु) ॥ २८ ॥

सुख, स्त्री, आदिशब्द से वेश्या, हाथी, घोड़ा आदि के काम करनेवालों का पालन, सर्पका फण और शरीर इनको 'भोग' कहते हैं यह १ सुखआदि का नाम है । पपीहा, हरिण और चित्रविचित्र या चितकबरा को 'सारङ्ग' या 'शारङ्ग' कहते हैं यह १ पपीहा आदिकों का नाम है यह पपीहा और हरिण में पुंलिङ्ग है और चितकबरे में त्रिलिङ्ग है ॥ २८ ॥

१–" अपाङ्गस्त्वङ्गहीने स्यान्नेत्रान्ते तिलकेऽपि च " (इति मेदिनी)

पु. पु.

वानर, मेढ़क, सारथी, शाप, अनादर, जुवा आदि, जोड़ा, सत्ययुगादि.

(कपौ च) प्लवगः (शापे) त्वभिषङ्गः (पराभवे)।
पु. न.
(यानाद्यङ्गे) युगः (पुंसि) युगं (युग्मे कृतादिषु)॥ २९॥

वानर और चशब्द से मेढ़क, सारथी आदि को 'प्लवग' कहते हैं यह १ बन्दर आदिका नाम है। दुराशिष, बुरी दुआ, कोसना और अनादर या धिक्कारने को 'अभिषङ्ग' कहते हैं यह १ शापआदि का नाम है। सवारी और आदि शब्द से रथ, गाड़ा आदि के जुवा को 'युग' कहते हैं यह पुंलिङ्ग है और जोड़ा, चारोयुग, चारहाथ और वृद्धिनामक औषधविशेष को भी 'युग' कहते हैं यह नपुंसक है यह १ जुवा, जोड़ा और सत्ययुग आदि का नाम है॥ २९॥

स्वर्ग, बाण, गौ, बैल आदि, चिह्न, मूत्रेन्द्रिय आदि.

(स्वर्गेषु पशुवाग्वज्रदिङ्नेत्रघृणिभूजले।
पु. स. न.
लक्ष्यदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि) गौर्लिङ्गं (चिह्नशेफसोः)॥ ३०॥

स्वर्ग, बाण, गाय, बैल आदि पशु, वाणी, वज्र (हीराआदि) दिशा, नेत्र, किरण, पृथ्वी, और पानी इन अर्थों में वर्तता हुआ गोशब्द प्रयोगानुसार स्त्रीलिङ्ग व पुंलिङ्ग में रहता है जैसे कि "गौः स्वर्गे च बलीवर्दे रश्मौ च कुलिशे पुमान्। स्त्रीसौरभेयीदृग्वाणादिग्वाग्भूष्वप्सु भूम्नि च" (इति मेदिनी) स्वर्ग, बैल, किरण और वज्र इन अर्थों में 'गौ' यह पुंलिङ्ग है और गाय, दृष्टि, बाण, दिशा, वाणी, पृथ्वी और जलों में स्त्रीलिङ्ग है यह १ स्वर्ग आदि का नाम है और चिह्न व मूत्रेन्द्रिय को 'लिङ्ग' कहते हैं यह १ चिह्न, अनुमान, सांख्योक्तप्रकृति शिवमूर्तिविशेष और शिश्न का नाम है यह नपुंसक है॥ ३०॥

स्वामी, शिखर आदि, मस्तक, योनि आदि, संपदा, अभिलाषा आदि.

न. न.
शृङ्गं (प्राधान्यसान्वोश्च) वराङ्गं (मूर्धगुह्ययोः)।
न.
भगं (श्रीकाममाहात्म्यवीर्ययत्नार्ककीर्तिषु)॥ ३१॥

इति गान्तवर्गः॥

प्राधान्य, शिखर और चशब्द से चिह्न, खेलने का जलयन्त्र, सींग, उत्कर्ष, भौहों का बीच और मस्तक को 'शृङ्ग' कहते हैं यह १ प्राधान्य आदिका नाम है। मस्तक, योनि, मातङ्ग और दालचीनी को भी 'वराङ्ग' कहते हैं यह १ शीश आदिका नाम है और संपदा या शोभा, इच्छा, माहात्म्य, वीर्य, यत्न, सूर्य, कीर्ति और योनि को भी 'भग' कहते हैं यह १ सम्पत्ति आदिका नाम है॥ ३१॥

इति गान्तवर्गः॥

अथ घान्ताः ।

मारना, अस्त्र-समूह, जल का वेग, मोल, पूजा का जल, पाप, दुःख, शिकार आदि.

पु. पु.
परिघः (परिघातेऽस्त्रेऽ)प्योघो (वृन्देऽम्भसां रये)।
पु. न.
(मूल्ये पूजाविधा)वर्घोऽ(होदुःखव्यसनेष्व)घम्॥ ३२॥

चारों ओर से मारना, लोहमय हथियार या लाठी, अपिशब्द से योगभेद और बेलहन को भी 'परिघ' कहते हैं यह १ परिघात आदि का नाम है और "परेश्चघाङ्कयो:" इस सूत्र से लत्व करनेपर "पलिघ" भी होता है यह १ काच, कलश, घट, घेर और नगर के फाटक का नाम है। समूह, जलका प्रवाह, परम्परा, शीघ्रता और नाचके उपदेश को भी 'ओघ' कहते हैं यह १ समुदाय आदि का नाम है। मोल, पूजा के उपहार या जलको 'अर्घ' कहते हैं यह १ मूल्य आदिका नाम है और पाप, दुःख, शिकार, जूआ खेलना, विपदा और राग, द्वेष आदि को भी 'अघ' कहते हैं यह १ पापआदिकों का नाम है॥ ३२॥

इष्ट, अल्प, सिकहर या छींका, काच, नेत्ररोग, विपरीत, बड़ाई, ठगना, अग्नि, आषाढ़, मन्त्री आदि.

पु. पु.
(त्रिष्विष्टेऽल्पे)लघुः काचाः (शिक्यमृद्भेददृग्रुजः)।
पु. पु.
(विपर्यासे विस्तरे च) प्रपञ्चः (पावके) शुचिः॥ ३३॥
(मास्यमात्ये चात्युपधे पुंसि मेध्ये सिते त्रिषु)।

सुन्दर, सुडौल या रमणीय, अल्प और निस्सार को भी 'लघु' कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है यह १ मनोज्ञ आदिका नाम है (इति घान्ताः) अब चान्त कहते हैं कि, सिकहर, काच और नेत्ररोग ये तीनों 'काच' कहलाते हैं यह १ सिकहर आदि का नाम है। विपरीतता, बड़ाई या शब्दविस्तार और च शब्दसे प्रतारण (ठगने को) भी 'प्रपञ्च' कहते हैं यह १ विपर्यय आदिका नाम है और अग्नि, आषाढ़ मास, धर्मादिके परीक्षण से शुद्धचित्तवाला मन्त्री, पवित्रता और उज्ज्वलता को 'शुचि' कहते हैं यह अग्नि, आषाढ़मास और शुद्धमन्त्री में पुंलिङ्ग है और पवित्र व सफ़ेद में त्रिलिङ्ग है यह १ पावक आदिका नाम है॥ ३३। ३॥

क्रोधेच्छा, अभिलाषा, किरण आदि.

स.
(अभिष्वङ्गे स्पृहायां च गभस्तौ च)रुचिः(स्त्रियाम्)॥३४॥

इति चान्ताः॥

क्रोधकी इच्छा, अत्यासक्ति, किरण और चशब्द से प्रकाश और शोभा को 'रुचि' कहते हैं यह स्त्रीलिङ्ग है यह १ क्रोधकी इच्छा आदिका नाम है॥ ३४॥

इति चान्ताः॥

अथ छान्ताः ।

हर्षित, रीछ, स्फटिक, पल्लव, हार, पहिरनेके कपड़े का छोर, नाव, जल का किनारा.

पु. पु.स.न.
(प्रसन्ने भल्लुके) प्यच्छो गुच्छः (स्तवकहारयोः) ।
पु.
(परिधानाञ्चले) कच्छो (जलप्रान्ते त्रिलिङ्गकः) ॥३५॥

इति छान्ताः ।

हर्षित या आनन्दित, रीछ, स्फटिकमणि और निर्मल को भी 'अच्छ' कहते हैं यह १ प्रसन्न आदिका नाम है । फूलों या पत्तोंका समुदाय, मोती की माला के भेद, शाखाशून्य ठूंठ और समूह को 'गुच्छ' कहते हैं यह १ पल्लव और हार आदिका नाम है । पुन्नागवृक्ष या तुनिवृक्ष, पहिरने के वस्त्रका किनारा, नाव का अङ्गविशेष इनको कच्छ कहते हैं यह पुंलिङ्ग है और जो जलप्रायदेश के तटका वाची है वह त्रिलिङ्ग कहलाता है यह १ परिधानाञ्चल आदिका नाम है ॥ ३५ ॥

इति छान्ताः ॥

अथ जान्ताः ।

मयूर, गरुड, नेवला, दाँत, ब्राह्मण, पक्षी, विष्णु, शिव, बकरा आदि, गौका स्थान, मार्ग, समूह.

पु. पु.
(केकिताक्ष्यौ) वहिभुजौ (दन्तविप्राण्डजा) द्विजाः ।
पु. पु.
अजा (विष्णुहरच्छागा) (गोष्ठाध्वनिवहा) व्रजाः ॥३६॥

अत्र जान्त कहते हैं कि, मोर, गरुड़, और नेवला को अहिभुक् (ज्) कहते हैं यह १ मोर आदिका नाम है । दाँत, ब्राह्मण और पक्षी ये 'द्विज' कहलाते हैं जैसे कि "विप्रक्षत्रियविट्शूद्रा वर्णास्त्वाद्या द्विजाः स्मृताः" ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण कहलाते हैं इनमें आदिके तीन "ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य" ये 'द्विज' कहेजाते हैं क्योंकि "मातुरग्रेऽधिजननं द्वितीयं मौञ्जिबन्धनम्" पहले माके उदरसे जन्म लेने व दूसरे जनेऊ के होने से महर्षियोंने 'द्विज' कहा है यह १ दन्त आदिका नाम है । विष्णु, शिव, बकरा, भेंड़ा आदि और काम, ब्रह्मा व रघुराजा के पुत्र को 'अज' कहते हैं यह १ हरि, हर आदिका नाम है और गौओं का घर, रास्ता और समूह (गरोह) ये 'व्रज' कहलाते हैं यह १ गोष्ठ गायों के बाड़ा आदिका नाम है ॥ ३६ ॥

१-"जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद्द्विज उच्यते । वेदाभ्यासाद्भवेद्विप्रो ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः" (इति स्मृत्यन्तरम्) ॥

बुद्ध, यमराज, युधिष्ठिर, हाथी-दाँत, सघनवन, खेत, नगर का द्वार, उत्तम स्त्री.

पु. धर्मराजौ (जिनयमौ) कुञ्जो (दन्तेऽपि न स्त्रियाम्)।
न. बलजे (क्षेत्रपूर्द्वारे) स. बलजा (वल्गुदर्शना)॥ ३७॥

बुद्ध, यमराज और युधिष्ठिर ये 'धर्मराज' कहलाते हैं यह १ जिन आदि का नाम है। हाथीका दाँत अपिशब्द से निकुञ्ज और सघनवन को 'कुञ्ज' कहते हैं यह स्त्रीलिङ्ग नहीं है यह १ हाथीदाँत आदिका नाम है। खेत, नगरका दरवाजा, धान्य और संग्राम को 'बलज' कहते हैं यह १ खेत आदिका नाम है और जो प्यारी, सुकुमारी, दर्शनीया नारी है वह 'बलजा' कहलाती है यह १ उत्तम रमणी आदिका नाम है॥ ३७॥

समभूभाग, संग्राम, पुत्र, कन्या, रैयत, शङ्ख, चन्द्रमा, धन्वन्तरि, कमलआदि अपने, नित्य.

स. (समक्ष्मांशे रणे)प्याजिः स. प्रजा (स्यात्संततौ जने)।
पु. अब्जौ (शङ्खशशाङ्कौ च) (स्वके नित्ये) न. निजं (त्रिषु) ३८

इति जान्ताः॥

समभूभाग, और संग्राम को 'आजि'[1] कहते हैं यह १ समानभूभाग आदि का नाम है। वंश और रैयतको 'प्रजा' कहते हैं यह १ सन्तान आदि का नाम है। शङ्ख, चन्द्रमा, वेतसवृक्ष, समुद्रफल, धन्वन्तरि वैद्य और कमल आदि ये 'अब्ज' कहलाते हैं यह १ शङ्खआदि का नाम है और आत्मीय व नित्य को 'निज' कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है यह १ आत्मीय आदि का नाम है॥ ३८॥

इति जान्ताः॥

अथ ञान्ताः।

आत्मा, प्रवीण, बुद्धि, नाम, हाथ आदि से अर्थ बतलाना, गायत्री, सूर्यपत्नी.

पु. (पुंस्यात्मनि प्रवीणे च) क्षेत्रज्ञो (वाच्यलिङ्गकः)।
स. संज्ञा (स्याच्चेतनानामहस्ताद्यैश्चार्थसूचना)॥ ३९॥

आत्मा और प्रवीण को 'क्षेत्रज्ञ' कहते हैं यह आत्मा में पुंलिङ्ग है और प्रवीण अर्थ में वाच्यलिङ्ग यानी त्रिलिङ्ग कहलाता है यह १ आत्मा आदिकों का नाम है और चेतना, नाम तथा हाथ, भौंह व लोचन आदिसे अर्थ की सूचना यानी चेष्टा करना ये संज्ञापदवाच्य कहलाते हैं यानी बुद्धि, अभिधान, हस्त आदिकों से अर्थ की सूचना, गायत्री और सूर्य की धर्मपत्नी को भी 'संज्ञा' कहते हैं यह १ चेतना आदिका नाम है॥ ३९॥

१—संग्रामे यथा "तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव" (इति मार्कण्डेयः)॥

वैद्य, पण्डित या प्राज्ञ, विद्वान्, बुध.

पु. पु.

दोषज्ञौ (वैद्यविद्वांसौ) ज्ञो (विद्वान्सोमजोऽपि च)॥४०॥

इति ज्ञान्ताः ॥

वैद्य, और विद्वान् को 'दोषज्ञ' कहते हैं यह १ हकीम, डाक्टर, वैद्य और विद्वान् का नाम है और अध्यात्मवेत्ता, पण्डित तथा चन्द्रपुत्र ये 'ज्ञ' कहलाते हैं यानी विद्वान्—बुध—और ब्रह्माको भी 'ज्ञ' कहते हैं यह १ विद्वान् आदिका नाम है ॥ ४० ॥ इति ज्ञान्ताः ॥

अथ टान्ताः ।

कौआ, हाथी का गाल आदि, हाथी का कपोल, कमर आदि, चँदुला, दुष्टचर्म, महेश आदि.

पु. पु.

(काकेभगण्डौ) करटौ (गजगण्डकटी) कटौ ।

पु.

शिपिविष्ट (स्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे) ॥ ४१ ॥

कौआ, हाथी का गाल ये दोनों 'करट' कहलाते हैं यह १ कौआ आदि का नाम है । हाथीका कपोल, कमर और चटाई आदि को 'कट' कहते हैं जैसे कि "कटः श्रोणौ द्वयोः पुंसि किलिञ्जेऽतिशये शवे"[1] (इति मेदिनी) कमर, झांपी या चटाई अतिशय और मुर्दे को 'कट'[2] कहते हैं यह कमर में पुंस्त्रीलिङ्ग है और अन्य अर्थों में पुंलिङ्ग है यह १ गजगण्ड आदि का नाम है और चँदुला, दुष्टचामवाला, महेश और श्रीकृष्ण को शिपिविष्ट या 'शिपिपिष्ट' कहते हैं यह १ खल्वाट आदि का नाम है ॥ ४१ ॥

विश्वकर्मा, बढ़ई, सूर्य, भाग्य, काल, रस, अकार्य, डाह, तीखा.

पु. न.

(देवशिल्पिन्यपि) त्वष्टा दिष्टं (दैवेऽपि न द्वयोः) ।

पु. न.

(रसे)कटुः कट्व (कार्ये) त्रिषु (मत्सरतीक्ष्णयोः)॥ ४२ ॥

देवताओं के कारीगर विश्वकर्मा अपिशब्द से बढ़ई और सूर्य को त्वष्टा (ष्टृ) कहते हैं यह १ देवशिल्पी आदिका नाम है । भाग्य और अपिशब्द से काल को भी 'दिष्ट' कहते हैं यह भाग्य में स्त्रीपुंलिङ्ग नहीं है बरन नपुंसक है और अन्य अर्थों में पुंलिङ्ग है और रसमात्र, अकार्य, अभिमान और तेज़ को 'कटु' कहते हैं यह रसमात्र में पुंलिङ्ग, अकार्य में नपुंसक और अभिमान तथा तीक्ष्णता में त्रिलिङ्ग है यह कड़ुवे रस आदि का नाम है ॥ ४२ ॥

१—किल्यतेऽनेन 'किलश्वैत्यक्रीडनयोः' अस्माद् 'इगुपधात्कित्' इतीनि किलिर्वंत्रवीरणादिस्ततो जातः जनेः "पञ्चम्यामजातौ" इति ड पृषोदरादित्वान्नुमागमे च किलिञ्जस्तस्मिन्निति ॥

२—"कटधूमस्य सौरभ्यमवघ्रायव्रजौकसः" (इति भागवतम्) ॥

क्षेम, अशुभ, शुभ, शुभ, अ-शुभ, सौरि का घर, मदिरा, मरणका चिह्न, माया, निश्चल, यन्त्रादि, छोटी इलायची, काल अल्प, संशय.

न. रिष्टं (क्षेमाशुभाभावे) ष्वरिष्टे (तु शुभाशुभे)। न.

(मायानिश्चलयन्त्रेषु कैतवानृतराशिषु) ॥ ४३ ॥

अयोघने शैलशृङ्गे (सीराङ्गे) कूट (मस्त्रियाम्)। पु.न.

(सूक्ष्मैलायां) त्रुटिः (स्त्रीस्यात्कालेऽल्पेसंशयेऽपि सा) ४४ स.

कुशल, अमङ्गल, अशुभ का अभाव यानी शुभ और तलवार, बेर, मैनफल व रीठा ये 'रिष्ट' कहलाते हैं यह १ क्षेम आदि का नाम है । शुभ और अशुभ को 'अरिष्ट' कहते हैं। यानी लहसुन, नींबवृक्ष, रीठा, कौआ, उजलीचील्ह, अशुभ, मठा, सोवरिका घर, मदिरा, शुभ, मरने का चिह्न, विघ्न और वृषभासुर ये 'अरिष्ट' कहलाते हैं। यह १ शुभाशुभ आदि का नाम है। माया, निश्चल, मृगबन्धन-यन्त्र, कपट, असत्य, समूह, लोह गढ़ने का आयुधविशेष निहाई घन या हथौड़ा, पर्वतका शिखर और हलका अग्रभाग यानी फारका आधार इनको 'कूट' कहते हैं। यह स्त्रीलिङ्ग नहीं है बरन पुन्नपुंसक है। यह १ माया आदिका नाम है और छोटी इलायची को 'त्रुटि या त्रुटी' कहते हैं। वही "त्रुटिशब्द" कालमान, अतिअल्प और सन्देह में भी कहाजाता है । यह स्त्रीलिङ्गहै । यह १ गुजराती इलायची आदि का नाम है ॥ ४३ । ४४ ॥

धन्वा की नोक, बड़ाई, कोन, करोड़, जड़, लिपटे बाल, फल, संपदा, ज्ञान, नेत्र, देखना.

(अत्युत्कर्षाश्रयः) कोटयो (मूले लग्नकचे) जटा। स. स.

व्युष्टिः (फले समृद्धौ च) दृष्टि (र्ज्ञानेऽक्ष्णि दर्शने) ॥ ४५ ॥ स. स.

धनुष का अग्रभाग, प्रशंसा या बड़ाई, तलवार आदिका कोना या धार और करोड़ को 'कोटि' कहते हैं। यह १ धन्वा के अग्रभाग आदिका नाम है । जड़ और मिले जुले बालों को 'जटा' या "जटी" भी कहते हैं। यह १ जड़ आदि का नाम है । फल और फलसाध्य समृद्धि को 'व्युष्टि' कहते हैं। यह १ फल आदिका नाम है और ज्ञान, नेत्र व दर्शन को 'दृष्टि' कहते हैं यह १ ज्ञान आदि का नाम है ॥ ४५ ॥

यज्ञ, इच्छा, निश्चित, बहुत, दुःख, महावन, दक्ष, तीक्ष्ण, नी-रोग, हर, काला

इष्टि (र्यागेच्छयोः) सृष्टि (र्निश्चिते बहुनि त्रिषु)। स. स.

कष्टे (तु कृच्छ्रगहने) (दक्षामन्दागदेषु तु) ॥ ४६ ॥ पु.स.न.

कौआ, पेट का कोठा, कोठिला, घरका मध्य, खत्ता कोठरी आदि.

पु.स.न. पु.
पटु (द्वौ वाच्यलिङ्गौ च) नीलकण्ठः (शिवेऽपि च)।
पु.
(पुंसि)कोष्ठे(ऽन्तर्जठरं कुसूलोऽन्तर्गृहं तथा) ॥ ४७ ॥

यज्ञ, अभिलाषा या चेष्टा और श्लोकसंग्रह को 'इष्टि' कहते हैं। यह १ याग आदिकों का नाम है। निश्चय कियाहुआ, अधिक, मुक्त, और निर्मित को सृष्टि या 'सृष्ट' कहते हैं। यह त्रिलिङ्ग है यह १ निश्चित आदिका नाम है। दुःख, महावन या नहीं जाने योग्य देश को 'कष्ट' कहते हैं। यह १ दुःख आदि का नाम है। चतुर, तेज़ या चालाक और नीरोग ये 'पटु' कहलाते हैं यह १ दक्ष आदि का नाम है। कष्ट और पटु ये दोनों वाच्यलिङ्ग यानी त्रिलिङ्ग कहेजाते हैं (इति टान्ताः) अब ठान्त कहते हैं। कि, महादेव, अपिशब्दसे काला कौआ, गौरैया, खँडरैचा आदि को 'नीलकण्ठ' कहते हैं। यह १ शिव आदिका नाम है, और पेट का कोठा, कोठिला, घरका कोठा या कोठरी आदि को 'कोष्ठ' कहते हैं। यह पुंलिङ्ग है। यह १ कोठा आदिका नाम है ॥ ४६।४७॥

सिद्धि, नाश, अन्त, बड़ाई, मर्यादा, दिशा, अत्युत्तम, अति वृद्ध, बड़ा भाई, महीना, बालक, छोटा भाई.

स. स.
निष्ठा (निष्पत्तिनाशान्ताः) काष्ठो (त्कर्षे स्थितौ दिशि)।
पु.स.न. पु.
(त्रिषु) ज्येष्ठो(ऽतिशस्तेऽपि)कनिष्ठो(ऽतियुवाल्पयोः) ४८

इति ठान्ताः ॥

सिद्धि, नाश, अन्त, धर्म में तत्परता, श्रद्धा, विश्वास, व्रत, क्लेश, उत्कर्ष, मांगना, और नाट्यकी सन्धि को 'निष्ठा' कहते हैं। यह १ निष्पत्ति आदिका नाम है। बड़ाई, मर्यादा, दिशा, दारुहल्दी, और कालविशेष को 'काष्ठा' कहते हैं। यह १ प्रशंसा आदिका नाम है। अतिप्रशस्त सुयोग्य अपिशब्दसे बूढ़ा, बड़ा भाई और वैशाखके बाद महीना को 'ज्येष्ठ' कहते हैं। यह १ बड़ा प्रधान, श्रेष्ठ, उत्तम, जेठा या पहलौठा आदिका नाम है। यह त्रिलिङ्ग है। और अतियुवा, बहुत थोड़ा, या छोटा लहुरा, और छोटा भाई इनको 'कनिष्ठ' कहते हैं। और छोटी अँगुली कनिष्ठा कहलाती है। यह १ अतियुवा आदिका नाम है ॥ ४८ ॥

इति ठान्ताः ॥

अथ डान्ताः।

लाठी, दण्डकरना आदि, मिट्टी आदिका गोला या गेंद, मीठा, सांप, बाघ, गौ, धरती, वाणी, बुधभार्या.

पु. न. पु.
दण्डो (ऽस्त्री लगुडेऽपि स्याद्) गुडो (गोलेक्षुपाकयोः)।
पु. स. स.
(सर्पमांसात्पशू) व्याडौ (गोभूवाचः) स्त्विडा इला ॥४९॥

लाठी—अपिशब्द स दण्डदेना, प्रमाणविशेष, यम, सेना, क्रियाविशेष, वृक्ष की शाखा, कोना, मथानी, अभिमान, ग्रहण और सूर्य के पास रहनेवाले ग्रहविशेष को भी 'दण्ड' कहते हैं यह १ लाठी आदिका नाम है । मिट्टी आदिका गोला या गेंद और ईखके विकार को 'गुड' कहते हैं । यह १ गोला आदि का नाम है । सांप और बाघ तथा खल को भी 'व्याड' या 'व्याल' कहते हैं । यह १ सर्प आदिका नाम है और गौ, पृथ्वी, वाणी और बुधकी भार्या को भी इडा और इला कहते हैं । यहां ड–ल, की एकता होनेसे दो पद होगये हैं, ये २ गौ आदिके नाम हैं ॥ ४९ ॥

बांसकी शलाका, सिंहनाद,विषादि, घड़ी, नाड़ी, दण्ड, बाण, निन्दित आदि.

स. स.
क्ष्वेडा (वंशशलाकाऽपि) नाडी (कालेऽपि षट्क्षणे) ।
पु.न.
काण्डो(ऽस्त्री दण्डबाणार्ववर्गावसरवारिषु) ॥ ५० ॥

बांसकी शलाका अपिशब्दसे सिंहनाद को 'क्ष्वेडा' कहते हैं । यह स्त्रीलिङ्ग है वैसेही विष, ध्वनि और कर्णरोगको 'क्ष्वेड' कहते हैं यह पुंलिङ्ग है । और लालपत्ते व फूल वाले मदार, पीले फूलकी तोरई को भी 'क्ष्वेड' कहते हैं । यह नपुंसक है यह १ वंश-शलाका आदिका नाम है । छः क्षणपरिमित समय, अपिशब्दसे शिरा (धमनी) गांढर दूब और वंशपत्री को नाड़ी कहते हैं । यह १ षट्क्षणवाले काल आदिका नाम है और दण्डा, बाण, निन्दित, वर्ग, अवसर, तृणादिकों का गुच्छा, वृक्षों का कन्धा और जलको 'काण्ड' कहते हैं यह १ दण्ड आदि का नाम है ॥ ५० ॥

घोड़ेका गहना आदि, अत्यर्थ, प्रतिज्ञा, दृढ, अतिशय, दुःख, कष्ट.

न.
(स्या)द्भाण्ड (मश्वाभरणेऽमत्रेमूलवणिग्धने) ।
न. न.
(भृशप्रतिज्ञयो) बाढं प्रगाढं (भृशकृच्छ्रयोः) ॥ ५१ ॥

घोड़ों का गहना, बर्तन, बनियों का मूलधन इनको 'भाण्ड' कहते हैं अथवा सोने, चांदी के बने घोड़ों की सजावट के लिये गहने, भूषणमात्र पात्र और बनिये का मूलधन (पूंजी) ये 'भाण्ड' कहलाते हैं । यह १ घोड़ों के गहना आदि का नाम है । अतिशय, अत्यन्त, अधिक, अङ्गीकार और दृढ़ता को 'बाढ' कहते हैं । यह १ अतिशय आदिका नाम है और अतिशय, कष्ट, पाप, दुःख या कष्टदायक प्राजापत्य आदि व्रत और मूत्रकृच्छ्ररोग तथा दृढ़ ये 'प्रगाढ' कहलाते हैं । यह १ अतिशय कष्ट आदि का नाम है ॥ ५१ ॥

समर्थ, मोटा, छोड़े, मिले, सेना विशेष, बच्चा,स्त्रीकागर्भ, बाणासुर,तीर.

पु.स.न. पु.स.न.
(शक्तस्थूलौ त्रिषु) दृढौ व्यूढौ (विन्यस्तसंहतौ) ।
पु. पु.
भ्रूणो(ऽर्भके स्त्रैणगर्भे) बाणो(बलिसुते शरे) ॥ ५२ ॥

समर्थ, मज़बूत या मोटा इनको ' दृढ़ ' कहते हैं। यह १ बलवान् आदि का नाम है। यह त्रिलिङ्ग है। छोड़ा या रक्खा परस्पर मेल और सेना का विशष संस्थापन ये ' व्यूढ ' कहलाते हैं यह १ त्यागेहुए आदि का नाम है। यह भी त्रिलिङ्ग है। एक छोटासा बालक (बच्चा) और स्त्रीका गर्भ ये ' भ्रूण ' कहलाते हैं यह १ बच्चे आदिका नाम है और महाराज बलि का पुत्र और तीर को ' बाण ' कहते हैं यह १ बाणासुर आदि का नाम है ॥ ५२ ॥

अतिसूक्ष्म, चावलों की कनकी, समूह, रुद्रानुचर, जूआ की बाज़ी आदि·

पु· कणो (ऽतिसूक्ष्मे धान्यांशे संघाते प्रमथे) पु· गणः।

पु·१ पणो (द्यूतादिषूत्सृष्टे भृतौ मूल्ये धनेऽपि च) ॥ ५३ ॥

अत्यन्त छोटासा कना, कनिका, परमाणु, या लवविशेष और अनाज का दाना या चावलों की कनकी इनको ' कण ' कहते हैं। यह १ अतिसूक्ष्म आदि का नाम है। समूह और रुद्रका अनुचर ये ' गण ' कहलाते हैं। यह १ समूह आदि का नाम है। पाशाआदिकों से जूआ खेलना आदिशब्द से मुर्ग़ा, तीतर, बटेर आदिकों की लड़ाई कराकर बाज़ी लगाना, छोड़ना, नौकरी, वस्तुओं का मोल, और द्रव्य यानी बीसगण्डे कौड़ी अथवा ८० कौड़ियों का परिमाण (चार काकिणी) अपि शब्द से लेनदेनका व्यवहार, बड़ाई, पैसा, प्रतिज्ञा, वचन, होड़, शर्त, क़रार और सागको ' पण ' कहते हैं। यह १ द्यूत आदि का नाम है ॥ ५३ ॥

धनुषकी रस्सी, रसगन्धादि, मौन रहना आदि·

(मौर्यां द्रव्याश्रिते सत्त्वशुक्लसंध्यादिके) पु· गुणः।

(निर्व्यापारस्थितौ कालविशेषोत्सवयोः) पु· क्षणः ॥ ५४ ॥

धनुषकी रस्सी, रोदा, पनच, या चिल्ला, रसगन्ध आदि, सत्त्व, रज, तम, स्वभाव, हुनर, चतुराई, प्रवीणता, विद्या, विशेषण आदि, सफ़ेद, लाल, पीला, काला आदि, सन्धि, विग्रह आदि या संध्याआदि, रूप, इन्द्रिय, बुद्धि, रस्सी, रोटिकरा और ऋ के स्थान में अर्, इ के ए, उ के ओ होने को भी गुण कहते हैं। यह १ रोदा आदिका नाम है। विना व्यापार चुपचाप रहना, तीस कलाका समय, पुत्रजन्म और पर्वआदि का उत्सव इनको ' क्षण ' कहते हैं यह १ निर्व्यापारस्थिति यानी निरुद्यम होकर टिकने आदिका नाम है ॥ ५४ ॥

ब्राह्मण, क्षत्रि-यादि, सफ़ेद, लाल आदि, बड़ाई, हरूफ़, सूर्य, सूर्यका सारथी, वर्णभेद आदि·

पु· वर्णो (द्विजादौ शुक्लादौ स्तुतौ) न· वर्णं (तु वाक्षरे)।

पु· अरुणो (भास्करेऽपि स्याद्वर्णभेदेऽपि च त्रिषु) ॥ ५५ ॥

---

१ " वराटकानां दशकद्वयं यत्सा काकिणी ताश्च पणाश्चतस्रः। ते षोडशद्रम्म इहावगम्यो द्रम्मैस्तथा षोडशभिश्च निष्कः " (इति लीलावत्याम्) ॥

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—सफ़ेद, लाल, पीला, काला आदि रङ्ग—यश, गुण, कथा और स्तुति को भी 'वर्ण' कहते हैं । यह पुंलिङ्ग है और अक्षरों 'हरूफ़ों' के लिखने को भी 'वर्ण' कहते हैं । यह वर्णभेद में विकल्प से नपुंसकलिङ्ग है । यह १ द्विजादिकों का नाम है और सूर्य, वर्णभेद, अपिशब्दसे सन्ध्याराग, सूर्य का सारथि, कपिल और कुष्ठ का भेद इनको 'अरुण' कहते हैं यह पुंलिङ्ग है और गुणवान् में त्रिलिङ्ग है । यह १ सूर्य आदिकों का नाम है ॥ ५५ ॥

शिव, खंभा या ठूंठ, वृक्षादि, काला कौआ, द्रोणाचार्य, परिमाण विशेष, शब्द, संग्राम, नाई, मुख्य आदि.

पु. स्थाणुः (शर्वेऽपि च) पु. द्रोणः (काकेऽपि च) (रवे) पु. रणः ।
पु. * ग्रामणी (र्नापिते पुंसि श्रेष्ठे ग्रामाधिपे त्रिषु) ॥ ५६ ॥

शिव, अपिशब्दसे स्तम्भ 'शाखापत्रशून्य ठूंठ' और ठहरी वस्तु, वृक्ष, पर्वत आदि इनको 'स्थाणु' कहते हैं । यह १ महादेव आदिका नाम है । काला कौआ, अपि शब्दसे द्रोणाचार्य, चार आढ़क परिमाणविशेष और देशान्तर इनको 'द्रोण' कहते हैं । यह पुंलिङ्ग है । यानी द्रोणाचार्य और डोम कौआ में पुंलिङ्ग है । परिमाणविशेष और देशभेद में पुन्नपुंसक है । और डोंगी तथा इन्द्रवारुणी में स्त्रीलिङ्ग है । यह १ काले कौआ आदिकों का नाम है । शब्द, कोण और संग्राम इनको 'रण' कहते हैं । यह शब्द और कोण में पुंलिङ्ग है । और संग्राम में पुन्नपुंसक है । यह १ शब्द आदिकों का नाम है । और नाई, मुख्य और ग्रामाधिप ये 'ग्रामणी' कहलाते हैं । यह नाई में पुंलिङ्ग है । और श्रेष्ठ व ग्रामाधिप में त्रिलिङ्ग है । यह १ नाई आदिका नाम है ॥ ५६ ॥

भेंड़ा, खरहा, ऊंट आदि लोमों का बना ऊन आदि, मृगी, स्वर्णप्रतिमा आदि.

स. ऊर्णा (मेषादिलोम्नि स्यादावर्ते† चान्तराभ्रुवोः) ।
स. हरिणी (स्यान्मृगी हेमप्रतिमा हरिता च या) ॥ ५७ ॥

भेंड़ा, खरगोश, ऊंट और हरिण आदि इनके लोम और भौंहोंका घेर इनको 'ऊर्णा' कहते हैं । "वह 'ऊर्णा' चक्रवर्ती आदि महाराजाओं तथा महारोगियों के अंग में महापुरुषलक्षणवाली, मृणालतन्तु के समान सूक्ष्मरूप, सफ़ेद व चौड़ी होकर

* "ग्रामीणा नीलिकायां स्त्री ग्रामोद्भूतेऽभिधेयवत्" (इति मेदिनी) । ग्रामोऽस्त्यस्या इति विग्रहे तु ग्रामिणीत्यपि ।

†—स्वामिमते तु "आवर्ते चान्तराभ्रुवौ" इति पाठस्तत्र भ्रुवावित्यत्र 'अन्तरान्तरेण युक्ते' इति द्वितीया ज्ञातव्या ॥

प्रायः सुन्दर घेरवाली होती है" यह १ भेंड़ा, खरहा, ऊंट आदिकों के लोम आदि का नाम है। हरिणी, सोने की प्रतिमा, हरी वस्तु और वृत्तभेद इनको 'हरिणी' कहते हैं। यह १ मृगी आदिका नाम है ॥ ५७ ॥

पाण्डुरवर्ण, मृग, खम्भा, लोहेकी प्रतिमा, वाञ्छा, पिपासा, निन्दा, दया.

पु. स. (त्रिषु पाण्डौ च) हरिणः स्थूणा (स्तम्भेऽपि वेश्मनः)।
स. स. तृष्णे (स्पृहापिपासे द्वे) (जुगुप्साकरुणे) घृणे ॥ ५८ ॥

पाण्डुरवर्ण चशब्द से मृगभेद इनको 'हरिण' कहते हैं यह १ पाण्डुवर्ण आदि का नाम है यह त्रिलिङ्ग है। यानी हरिण में पुंलिङ्ग और पाण्डुर में त्रिलिङ्ग कहलाता है। घर का खम्भा, अपिशब्द से लोहेकी बनीहुई प्रतिमा (तसवीर) इनको स्थूणा कहते हैं। यह १ गेहस्तम्भआदि का नाम है। वाञ्छा, पिपासा (पीने की इच्छा) ये दोनों 'तृष्णा' पद वाच्य कहलाते हैं यह १ स्पृहा आदि का नाम है और निन्दा व करुणा को घृणा कहते हैं यह १ जुगुप्सा आदि का नाम है ॥ ५८ ॥

बाजार की गली, दूकान आदि, मदिरा, पश्चिम दिशा, हथिनी, हाथी, बल, धन.

स. स. (वणिक्पथे च) विपणिः (सुरा प्रत्यक् च) वारुणी।
स. न. करेणु (रिभ्यां स्त्री नेभे) द्रविणं (तु बलं धनम्) ॥ ५९ ॥

बाज़ारकी रास्ता, बाज़ार, व्यवहार के योग्य वस्तु इनको 'विपणि' कहते हैं। यह स्त्रीलिङ्ग है यह १ हाटकी बाट आदिका नाम है। मदिरा, पश्चिम की दिशा इनको 'वारुणी' कहते हैं। यह १ सुराभेद, दूब या गांडर दूब आदिका नाम है। हथिनी और हाथी को 'करेणु' कहते हैं यह हथिनी में स्त्रीलिङ्ग और हाथी में पुंलिङ्ग है यह १ हस्तिनी आदिका नाम है और बल व धन ये दोनों 'द्रविण' कहलाते हैं यानी पराक्रम और धनको 'द्रविण' कहते हैं यह १ सामर्थ्य आदि का नाम है ॥ ५९ ॥

घर, रक्षा करनेवाला, कमल, अग्निमन्थ, विष, युद्ध, लोहा, तेज.

न. न. शरणं (गृहरक्षित्रोः) श्रीपर्णं (कमलेऽपि च)।
न. (विषाभमरलोहेषु) तीक्ष्णं (क्लीबे खरे त्रिषु) ॥ ६० ॥

घर, रक्षा करनेवाला, वध और रक्षण को भी 'शरण' कहते हैं जैसे कि 'सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः' यह १ घर आदिका नाम है। कमल, अग्निमन्थ (अँगेथुवावृक्ष) को 'श्रीपर्ण' तथा वारिपर्णी और कम्भारी को 'श्रीपर्णी'

१—"वारुणीं मदिरां पीत्वा मदाघूर्णितलोचनाविति" भागवतम् ॥

कहते हैं यह १ पद्म आदिका नाम है और विष, मरने की निरपेक्षा से युद्ध का उत्साह, लोह और तेज़ को 'तीक्ष्ण' कहते हैं यह विष, युद्ध, लोह में नपुंसक है और तेज़ स्पर्श में त्रिलिङ्ग है यह १ गरल (माहुर=ज़हर) आदिका नाम है ॥ ६० ॥

हेतु मर्यादा आदि जिससे क्रिया कीजाय, खेत आदि.

न.
प्रमाणं (हेतुमर्यादाशास्त्रेयत्ताप्रमातृषु) ।

न.
करणं (साधकतमं क्षेत्रगात्रेन्द्रियेष्वपि) ॥ ६१ ॥

कारण, मर्यादा, शास्त्र ६ दर्शन, * इयत्ता, (इतनी) ज्ञाता और सत्यवक्ता इनको 'प्रमाण' कहते हैं । यह १ कारण आदिका नाम है और क्रियासिद्धि में अत्यन्त उपकारक, खेत, देह, कान, आँख, नाक आदि इन्द्रियां अपिशब्दसे कर्म, कायस्थ, व्रतबन्ध, नाचना, गाना, बनियां से शूद्रा में उपजा बालक और वानर आदि इनको 'करण' कहते हैं । यह १ साधन व क्षेत्र आदिकों का नाम है ॥ ६१ ॥

जीवोंके जन्मादि, उगिला अन्नादि.

(प्राण्युत्पादे) संसरण (मसंबाधचमूगतौ) ।
(घण्टापथे) (ऽथ वान्तान्ने) समुद्धरण (मुन्नये) ॥ ६२ ॥

जीवोंकी उत्पत्ति, विना रोकटोक सेना का चलना, राजपथ, या घण्टाबोधित हाथियों का मार्ग और नगरमार्ग इनको 'संसरण' कहते हैं । यह १ जीवोंके जन्म आदिका नाम है और उगिला या क़ै कियाहुआ अन्न, जलपात्र आदिका ऊपरले जाना, उखाड़ डालना इनको समुद्धरण और उद्धरण भी कहते हैं यह १ उगिले अन्न आदिका नाम है ॥ ६२ ॥

पशुओंका सींग, हाथीदाँत, क्रम से उतार पृथिव्यादि.

पु.स.न.
(अतस्त्रिषु) विषाणं (स्यात्पशुशृङ्गेभदन्तयोः) ।

पु.स.न.
प्रवणः (क्रमनिम्नोर्व्यां प्रह्वे ना तु चतुष्पथे) ॥ ६३ ॥

इसके अनन्तर दान्तपर्यन्त कहे जानेवाले शब्द त्रिलिङ्ग हैं । गाय, बैल, भैंस आदि पशुओं का सींग और हाथी का दाँत इनको 'विषाण' कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है जैसे कि मेदिनीकोष में कहा है कि, क्षीरविदारी, मेढ़ासिंगी इन औषधियों को 'विषाणी' कहते हैं यह स्त्रीलिङ्ग है कूट नाम औषधि में नपुंसक है और सींग व हाथीदाँत में त्रिलिङ्ग है यह १ पशुशृङ्ग आदि का नाम है और क्रम से उतार भूभाग यानी गहरी पृथ्वी, लचा या झुँकाहुआ पदार्थ, चौराहा, स्वाधीनमात्र,

* मीमांसा, पातञ्जल, सांख्य, न्याय, वैशेषिक और वेदान्त ये ६ दर्शन हैं ।

क्षीण और सीधा इनको प्रवण कहते हैं यह चौराहे में पुंलिङ्ग और अन्य अर्थों में त्रिलिङ्ग है यह १ निम्न भूभाग आदि का नाम है ॥ ६३ ॥

पु.स.न. पु.स.न.
व्याप्त, अशुद्धादि, शून्य, ऊसर, देव, सूर्यादि नद, समुद्र. संकीर्णौ (निचिताशुद्धा) वीरिणं (शून्यमूषरम्) । (देवसूर्यौ) विवस्वन्तौ सरस्वन्तौ (नदार्णवौ) ॥६४॥

व्याप्त, अशुद्ध, अमित्र, वर्णसंकर और नीच को 'संकीर्ण' कहते हैं यह १ व्याप्त आदि का नाम है । शून्य निराश्रयदेश या "बंजरधरती" और ऊसर 'खारी धरती' को 'ईरिण' या इरिण कहते हैं जैसे कि मनुजी ने कहा है कि "यथेरिणे बीजमुप्त्वा न वप्ता लभते फलम । तथानृचे हविर्दत्त्वा न दाता लभते फलम्" यह १ वीरानदेश आदि का नाम है अमर, परमेश्वर, मेघ, राजा, दिवाकर, मन्दारवृक्ष और दानव को 'विवस्वान्' कहते हैं यह १ देवआदि का नाम है । और शोणभद्र आदि नद व समुद्र को 'सरस्वान्' कहते हैं यह १ नद आदि का नाम है ॥ ६४ ॥

पु. पु.
पक्षी, गरुड़, गीध, पक्षीमात्र, (पक्षिताक्ष्यौं) गरुत्मन्तौ शकुन्तौ (भासपक्षिणौ) ।
पु. पु.
अग्नि, धूममयी तारा, मेघ, पहाड़. (अग्न्युत्पातौ) धूमकेतू जीमूतौ (मेघपर्वतौ)॥ ६५ ॥

सहायक या पक्षी और गरुड़ को 'गरुत्मान्' कहते हैं यह १ पखेरू आदि का नाम है । पक्षिभेद, प्रकाश, गोष्ठ, कुक्कुट, गीध और पक्षीमात्र को 'शकुन्त' कहते हैं यह १ मुर्गा या गीधआदि का नाम है । अग्नि, उत्पात, धूममयी तारा या ग्रहभेद इन को 'धूमकेतु' कहते हैं यह १ आगी आदि का नाम है और मेघ व पर्वत को 'जीमूत' कहते हैं यह १ मेघ आदि का नाम है ॥ ६५ ॥

हाथ, नक्षत्र- पु. पु.
विशेष, पवन, देवता, हाथीवान्, गाड़ीवान्, हस्तौ (तु पाणिनक्षत्रे) मरुतौ (पवनामरौ) ।
पु. पु.
धारण या पालन करनेवाला आदि. यन्ता (हस्तिपके सूते) भर्ता (धातरि पोष्टरि) ॥ ६६ ॥

हाथ, तेरहवां नक्षत्र हाथी की सूंड़ और कोहनी से लेकर बिचली अंगुली के शिरापर्यन्त को 'हस्त' कहते हैं यह १ कर आदि का नाम है । वायु और देवता को 'मरुत्' या 'मरुत' कहते हैं यह देवता और पवन में पुंलिङ्ग है और गठिवन व धनहर नामक सुगन्धद्रव्य में नपुंसक है यह १ वायु (बतास) आदिका

१–"देवः सुरे घने राज्ञि देवमाख्यातमिन्द्रिये । देवी कृताभिषेकायां तेजनीस्पृक्कयोरपि" (इति कोषान्तरम्) ॥

नाम है । हाथीवान् और सारथी को 'यन्ता' (न्तृ) कहते हैं यह १ फीलवान आदि का नाम है । धारणकर्ता, पालनकर्ता और स्वामी को 'भर्ता' कहते हैं यह स्वामी (मालिक) में पुंलिङ्ग और धाता व पोषणकर्ता में त्रिलिङ्ग है यह १ धारने व पालनेवाले आदिका नाम है ॥ ६६ ॥

पीने का पात्र, बच्चा आदि, भूतान्तर, मृतक, ग्रह भेद, पताका, राजा, पुत्र आदि.

पु. पु.
(पानपात्रे शिशौ) पोतः प्रेतः (प्राण्यन्तरे मृते) ।
पु. पु.
(ग्रहभेदे ध्वजे) केतुः (पार्थिवे तनये) सुतः ॥ ६७ ॥

मद्यआदि पीने का पात्र, जहाज, बालक, नाव, रहने का स्थान और वस्त्रको भी 'पोत' कहते हैं यह १ पानपात्र आदिका नाम है । जीवभेद और मृतक को 'प्रेत' कहते हैं यह प्राण्यन्तर में पुंलिङ्ग और मरे में त्रिलिङ्ग कहाता है यह १ भूतान्तर आदि का नाम है । ग्रहभेद, ध्वजा या पताका और निशान को भी 'केतु' कहते हैं यह १ उपग्रह आदि का नाम है और राजा व पुत्र को 'सुत' कहते हैं और जो पुत्री हो तो वह 'सुता' कहलाती है यह १ भूपति आदि का नाम है ॥ ६७ ॥

कारीगर, कंचुकी आदि, पर्वत, राजा भूपाल, क्षत्रिय मात्र.

पु. पु.
स्थपतिः (कारुभेदेऽपि) भूभृद् (भूमिधरे नृपे) ।
पु. पु.
मूर्धाभिषिक्तो (भूपेऽ) प्यृतुः (स्त्रीकुसुमेऽपि च) ॥ ६८ ॥

शिल्पी या कारीगर का भेद अपिशब्दसे रानियों का द्वारपाल और बृहस्पति की यज्ञ का करनेवाला ये 'स्थपति' कहलाते हैं यह पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग और सज्जन या विद्वान् में त्रिलिङ्ग है यह १ शिल्पकार आदिका नाम है । पर्वत और राजा को भूभृत् (द्) कहते हैं यह १ पहाड़ आदिका नाम है । राजा अपिशब्दसे राजप्रधान और क्षत्रियमात्र को 'मूर्धाभिषिक्त' कहते हैं यह १ नरपाल आदिका नाम है और स्त्रियों का रज (मासिकधर्म्म) अपिशब्दसे वसन्त आदि छहों ऋतु और धीर को भी 'ऋतु' कहते हैं यह १ स्त्रियों के रजोधर्म आदिका नाम है ॥ ६८ ॥

विष्णु, शिवादि, सूर्य, बढ़ई, सारथी, पण्डित, प्रकाशितादि तर्कादिशास्त्र, उदाहरण.

पु. पु. पु.
(विष्णा) वप्यजिताव्यक्तौ सूत (स्त्वष्टरि सारथौ) ।
पु. १
व्यक्तः (प्राज्ञेऽपि) दृष्टान्ता (वुभे शास्त्रनिदर्शने) ॥ ६९ ॥

विष्णु अपिशब्दसे शिव, महदादिक, आत्मा और अप्रकाशित ये 'अजित' और

१—"निपाताश्चोपसर्गाश्च धातवश्चेति ते त्रयः । अनेकार्थाः स्मृताः सर्वे पाठस्तेषां निदर्शनम्" ॥ १ ॥

'अव्यक्त' कहलाते हैं यह १ हरि व हर में पुंलिङ्ग, महत्तत्त्वादिक व आत्मा में नपुंसक और अप्रकाशित में त्रिलिङ्ग है ये २ विष्णुभगवान् आदिके नाम हैं। सूर्य, बढ़ई, क्षत्रियसे ब्राह्मणी में उपजा बालक, वन्दीजन, पारा और पैदा या भेजाहुआ इनको 'सूत' कहते हैं यह १ सूर्यादिकों का नाम है। पण्डित या शास्त्रवेत्ता अपिशब्दसे प्रकाशित दृश्य और स्थूल आदिको 'व्यक्त' कहते हैं यह १ विद्वान् आदिका नाम है। और न्यायशास्त्र आदि, उदाहरण और मरण को 'दृष्टान्त' कहते हैं यह १ षट्शास्त्र, नज़ीर मिसाल, उपमा और बराबरी आदिका नाम है॥ ६९॥

सारथी, ड्योढ़ीदार आदि, प्रकरण आदि.

पु. क्षत्ता (स्यात्सारथौ द्वाःस्थे क्षत्रियायां च शूद्रजे)[1]।

पु. वृत्तान्तः (स्यात्प्रकरणे प्रकारे कात्स्न्र्यवार्तयोः)॥७०॥

सारथी, द्वारपाल (ड्योढ़ीदार) क्षत्रिया में शूद्रसे उपजा बालक चशब्दसे दासीपुत्र वैश्यापुत्र, नियुक्त और प्रजाओं के रचनेवाले ब्रह्मा को भी 'क्षत्ता' कहते हैं यह १ रथवान् आदिका नाम है और प्रस्ताव, भाव या अभिप्राय, अवसर, संपूर्णता और वार्ताविशेष (गौण) ये 'वृत्तान्त' कहलाते हैं यह १ प्रकरण आदिका नाम है॥ ७०॥

समर आदि यमराजादि.

पु. आनर्तः (समरे नृत्यस्थाननीवृद्विशेषयोः)।

पु. कृतान्तो (यमसिद्धान्तदैवाकुशलकर्मसु)॥ ७१॥

संग्राम (लड़ाई) नाचने का मण्डप, जनपद या देशविशेष इनको 'आनर्त' कहते हैं और जो पश्चिमसागर के तटस्थ 'द्वारावती' या द्वारकापुरी है वहभी 'आनर्त' कहलाती है यह १ समरआदिका नाम है और यमराज, वादीप्रतिवादियों से निर्णय कियाहुआ अर्थरूप सिद्धान्त, पूर्वजन्म का शुभाशुभ कर्म और पापकर्म इनको 'कृतान्त' कहते हैं यह १ यमराजआदि का नाम है॥ ७१॥

श्लेष्मा, पित्तादि रसादि, पृथिव्यादि, गन्धादि, नेत्रादि, मनशिलादि, श्वादि.

श्लेष्मादि रसरक्तादि महाभूतानि तद्गुणाः।
इन्द्रियाण्यश्मविकृतिः शब्दयोनिश्च धातवः॥ ७२॥

कफ, पित्तआदि, आहार का पहिला [illegible] रस, रक्त और आदिपद से वसा, मज्जा, शुक्र आदि, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश और इनके गन्ध आदि गुण,

१—" क्षत्ता स्यात्सारथौ द्वाःस्थे वैश्यायामपि शूद्रजे " इति सिद्धान्तकौमुद्यामुणादिः॥

आँखें, कान आदि इन्द्रियाँ, पत्थरों का विकार मनःशिला आदि और शब्दों का उत्पत्तिस्थान " भू सत्तायाम्, गम्लृ गतौ " आदि ये धातुपदवाच्य कहलाते हैं यानी मनुष्य के शरीर का सारअंश जैसे कि (वात, पित्त, कफ) रस, रक्त, खाल, मांस, स्नायु, मज्जा, बीज, हड्डी, भूमि, जल, आगी, वायु, आकाश, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, आँख, नाक, कान, जीभ, शरीर का चमड़ा ये ५ ज्ञानेन्द्रियाँ कहलाती हैं हाथ, पाँव, वाणी, लिङ्ग, गुदा ये ५ कर्मेन्द्रियां कहाती हैं, सोना, रूपा, तांबा आदि खानि से निकली चीज़ और गेरू, मनश्शिला आदि तथा व्याकरण में शब्दों का मूल यानी ऐसा शब्द कि जिससे क्रिया आदि शब्द बनते हैं इनको ' धातु ' कहते हैं यह १ श्लेष्मा आदिकों का नाम है ॥ ७२ ॥

राजधानी, रनिवास आदि, बर्छी, सांग, बल या ताक़त, कठिनता, शरीर.

(कक्षान्तरेऽपि) शुद्धान्तो (नृपस्यासर्वगोचरे) ।
स. स.
(कासूसामर्थ्ययोः) शक्तिर्मूर्तिः (काठिन्यकाययोः) ७३॥

सर्वसाधारण जनों के न जानेयोग्य, राजा का कक्षाभेद या राजधानी का विशेष स्थान अपिशब्दसे रनिवासा और अशौच का अन्त इनको शुद्धान्त कहते हैं यह १ राजकक्षाविशेष, कटिबन्ध, ज्योतिषचक्र या दफ़्अ आदिका नाम है । लोहे का भाला, वर्छी, साँग, सेल, पार्वती, उत्साह और बलको ' शक्ति ' या शक्ती कहते हैं यह १ सांग आदिका नाम है और कठोरता या दृढ़ता, शरीर और तसवीर को ' मूर्ति ' कहते हैं यह १ कठिनतापुतली या प्रतिमा आदिका नाम है ॥ ७३ ॥

विस्तार, बेलि, रात्रि, घर, क्षय, पूजा, दान, अन्त आदि.

स. स.
(विस्तारवल्लयो) र्व्रततिर्वसती (रात्रिवेश्मनोः) ।
स. स.
(क्षयार्चयो) रपचितिः साति (दानावसानयोः) ॥७४ ॥

विस्तार और बेलि को ' व्रतति ' ' प्रतति ' या " व्रतती " कहते हैं यह १ विस्तार या फैलाव आदि का नाम है । रात्रि, घर और वासको वसति या ' वसती ' कहते हैं यह १ रात्रि आदि का नाम है । हानि, पूजा, प्रयोजन, मांगना, ख़र्च और पलटादेना, इनको ' अपचिति ' कहते हैं यह १ क्षय आदि का नाम है और दान देना, हाथी के मदका पानी, पालन, अन्त या विराम को ' साति ' कहते हैं यह १ दान आदि का नाम है ॥ ७४ ॥

दुःख, धन्वाका किनारा, सामान्य, जाति, जन्म, लोकाचार, टपकना, गदर, विदेश.

स. स.
अर्तिः (पीडाधनुष्कोटयो) र्जातिः (सामान्यजन्मनोः) ।
स. स.
(प्रचारस्यन्दयो) रीतिरीति (डिम्बप्रवासयोः) ॥ ७५ ॥

दुःख और धनुष का अग्रभाग इनको 'अर्ति' या 'आर्ति' कहते हैं यह १ पीड़ा आदिका नाम है। सामान्यगोत्व आदि, मालती पुष्पविशेष या चमेली और जन्म को 'जाति' कहते हैं यह १ सामान्य जाति आदिका नाम है। लोकाचार और टपकने या झिरने को 'रीति' कहते हैं यह १ लोकाचार आदिका नाम है और बच्चे, अण्डे, प्लीहारोग, देशोपद्रव और विदेश को 'ईति' कहते हैं वे सात भांतिकी हैं जैसे कि, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टींडी, मूसा, शुक, स्वचक्र और परचक्र ये सात ईतियाँ कहलाती हैं यह १ उपद्रव आदिका नाम है ॥ ७५ ॥

उदय, लाभ, तीनों अग्नियां, दूसरा युग, — (उदयेऽधिगमे) प्राप्ति (स.) त्रेता (स.) (त्वग्नित्रये युगे)।

नारदकी वीणा, महत्त्व गुणयुक्त भार्या, भस्म, संपदा. — (वीणाभेदेऽपि) महती (स. १) भूति (स.) (र्भस्मनि संपदि) ॥७६॥

उत्पत्ति या "बढ़ती" और लाभको 'प्राप्ति' कहते हैं यह १ उत्पत्ति आदिका नाम है। तीनों अग्नियाँ यानी दक्षिणाग्नि, गार्हपत्याग्नि, आहवनीयाग्नि और दूसरे युगको 'त्रेता' कहते हैं यह १ अग्नित्रय आदिका नाम है और नारदकी वीणा अपि शब्दसे महत्त्वगुणसंपन्न भार्या को भी 'महती' कहते हैं यह १ वीणाभेद आदिका नाम है और राख, संपदा या अणिमादिक ऐश्वर्यों को 'भूति' कहते हैं यह १ भस्म (खाक) आदिका नाम है ॥ ७६ ॥

नागों की नदी, और नगरी, — (नदीनगर्योर्नागानां) भोगव (स.) (त्यथ संगरे)।

संग्राम, सङ्ग, सभा, क्षय, निवास, पृथ्वी. — (सङ्गे सभायां) समितिः (स.) (क्षयवासावपि) क्षिती (स.) ॥ ७७ ॥

नागों की नदी और नगरी तथा पातालगंगा, सर्पशरीर, ग्रामाध्यक्ष और नाई को भी 'भोगवती' कहते हैं यह १ नागनदी आदिका नाम है। संग्राम (लड़ाई) संगम और जनसमूह को 'समिति' कहते हैं यह १ समर आदिका नाम है और नाश या ह्रास और निवास तथा कालभेद व पृथ्वी को भी क्षिति कहते हैं यह १ क्षय आदिका नाम है ॥ ७७ ॥

सूर्यका प्रकाश, हथियार, अग्नि-शिखा, दुनिया, — (रवेरर्चिश्च शस्त्रं च वह्निज्वाला च) हेतयः (स.)।

बारह अक्षर पादवाली छन्द, पृथ्वी, जन. — जगती (स. *) (जगतिच्छन्दोविशेषेऽपि क्षितावपि) ॥ ७८ ॥

१ "विश्वावसोस्तु बृहती तुम्बरोस्तु कलावती। महती नारदस्य स्यात्सरस्वत्यास्तु कच्छपी" (इति वैजयन्ती) ॥

* "द्युतिगमिजुहोतीनां द्वे च" (वा. ३-२। १७८) इति क्विपि, "गमः क्वौ" इति मलोपे, तुकि, गौरादित्वान्ङीषि च वा जगती स्यात् ॥

सूर्य का प्रकाश या प्रभा, हथियार, आगिका जलना इनको 'हेति' और बहुत्व में 'हेतयः' कहते हैं यह १ सूर्यतेज आदिका नाम है और लोक (दुनिया) द्वादशाक्षरपादवृत्त छन्दविशेष, पृथ्वी और अपिशब्दसे जनको भी 'जगती' कहते हैं यह १ जगत् आदिका नाम है ॥ ७८ ॥

दशवां छन्द, पांति प्रभाव, उत्तरकाल जाना, सेनाभेद, पक्ष या परवेरूके पंखकी मूल.

स.
पङ्क्ति (श्छन्दोऽपि दशमं) (स्यात्प्रभावेऽपि) चायतिः ।
स.
पत्ति(र्गतौ च) (मूले तु) पक्षतिः (पक्षभेदयोः) ॥ ७९ ॥

दश अक्षर के चरण का छन्द और अपिशब्द से दश संख्यावाली पाँति को भी 'पंक्ति' कहते हैं । यह १ दशमछन्द आदि का नाम है । प्रताप और अपिशब्द से संयम, दीर्घता और आनेवाले उत्तरकाल को भी 'आयति' कहते हैं यह १ प्रभाव आदि का नाम है । गमन करना, वीरका भेद और सैन्यका भेद इनको 'पत्ति' कहते हैं अर्थात् चाल, प्यादा और सैन्य कि जिस में एकरथ, एकहाथी, तीन घोड़ा और पाँच प्यादे हों उसको 'पत्ति' कहते हैं यह १ गति आदि का नाम है और मासार्ध की मूल (परिवा) और पक्षी के पंख की मूल यानी पखने की जड़ ये दोनों 'पक्षति' या 'पक्षती' कहलाते हैं क्योंकि यहां 'पक्षभेदयोः' यह षष्ठी है पक्षभेद दो भाँति का है पहला मासार्धवाची और दूसरा खगावयववाची है इसलिये द्विवचनान्त प्रयोग दिखलाया गया है यह १ पक्षमूल आदि का नाम है ॥ ७९ ॥

भग, लिङ्ग, मन्त्री आदि, कौशिकी, जीविका आदि, बालू, बालूयुक्त देशादि, वेद, कान, सुनना आदि.

स. स.
प्रकृति (र्योनिलिङ्गे च) (कौशिक्याद्याश्च) वृत्तयः ।
स.
सिकताः(स्युर्बालुकाऽपि)(वेदे श्रवसि च) श्रुतिः ॥ ८० ॥

योनि, लिङ्ग और चशब्दसे प्रधानतत्त्व, राजमन्त्री, स्वभाव और पौरवर्ग को भी 'प्रकृति' कहते हैं यह १ योनिआदिका नाम है । नदीविशेष कौशिकी कि जिसको विश्वामित्र की बहिनने बनाया है या कैशिकी अपिशब्दसे आरभटी-सात्वती-भारती-चशब्दसे जीविका और सूत्रार्थविवरण को भी 'वृत्ति' कहते हैं यह १ कौशिकी या कैशिकी आदिका नाम है । बालू और बालूयुक्त देश तथा ठिकरायुक्त को भी 'सिकता' कहते हैं यह बालू में स्त्रीलिङ्ग होकर बहुवचनान्त है और बालू-युक्त देशमें स्त्रीलिङ्ग है यह १ बालुका आदिका नाम है और चारो वेद कान, सुनना और चशब्दसे प्रसिद्धता को भी 'श्रुति' कहते हैं यह १ वेद आदिका नाम है ॥८०॥

बड़ी प्यारी स्त्री, स्त्रीमात्र, भूविवर, गुफा, धारण, धैर्य.

स. वनिता (जनितात्यर्थानुरागायां च योषिति)।
स. गुप्तिः (क्षितिव्युदासेऽपि) स. धृति (र्धारणधैर्ययोः) ॥८१॥

जिसमें अत्यन्त अनुराग उपजा हो उसे और स्त्रीमात्र को 'वनिता' कहते हैं यह १ उपजेहुए प्रेमवाली या बड़ी प्यारी स्त्री आदिका नाम है। पृथ्वीके भीतर का बिल या गुफ़ा-बन्दीखाना, रक्षण, अधम और कूड़ाघरको भी 'गुप्ति' कहते हैं यह १ भूगर्त आदिका नाम है जैसे कि "गुप्तिः कारा च रक्षा च दीर्णं च विवरं भुवः" (इति शाश्वतः) कारागार, रक्षा, फाड़ा हुआ, और भूमिका गड़हा इनको 'गुप्ति' कहते हैं और बिल बनाने के लिये धरती खोदने को भी 'गुप्ति' कहते हैं यह सुभूति का मत है और धारणा, धीरता, संतोष, योगभेद और यज्ञको 'धृति' कहते हैं यह १ धारणा आदिका नाम है॥ ८१॥

भटकटैया, वनभटा आदि, स्त्री हथिनी, जीविका वार्ताआदि, लघु, असार, रोगरहित पानी, घी, सुधा, यज्ञशेष, चाँदी, सोना, कारण, चिह्न या निशान.

स. बृहती (क्षुद्रवार्ताकी छन्दोभेदे महत्यपि)।
स. वासिता (स्त्रीकरिण्योश्च) स. वार्ता (वृत्तौ जनश्रुतौ) ॥८२॥
न. वार्तं (फल्गुन्यरोगे च) (त्रिष्वप्सु च) न. न. घृतामृते।
न. कलधौतं (रूप्यहेम्नो) न. निमित्तं (हेतुलक्ष्मणोः) ॥ ८३ ॥

ओषधिविशेष, भटकटैया या वनभटा, छन्दोभेद यानी नव अक्षर के चरण का छन्द, महती (बड़ी) वारिधानी, वाणी और वस्त्रभेद को 'बृहती' कहते हैं। यह १ क्षुद्रवार्ताकी आदि का नाम है। रमणी, और हथिनी को वासिता या वाशिता कहते हैं और सुरभी का रभाना, धान्यमात्र तथा पक्षियों का चहचहाना इनको 'वासित' कहते हैं यह नपुंसक है यह १ रमणी आदि का नाम है। जीविका, वृत्तान्त या गौंगा और खेती इनको 'वार्ता' कहते हैं यह १ जीविका आदि का नाम है। लँघु असार या तत्त्वहीन को 'वार्त' कहते हैं यह नपुंसक है और जो रोगरहित का वाचक 'वार्त' है वह त्रिलिङ्ग कहलाता है यह १ फल्गु आदि का नाम है। जलको घृत और अमृत कहते हैं चशब्द से घृत और जल का वाची क्लीब है और यज्ञशेष, पीयूष, जल, घृत, अयाचित, और मोक्षको 'अमृत' कहते हैं यह नपुंसक है और धन्वन्तरि व देवका वाचक पुंलिङ्ग है यह १ जल आदि का नाम है। चाँदी और सोने को "कलधौत" कहते हैं यह १ रजत आदि का

नाम है और हेतु यानी कारण और चिह्न को 'निमित्त' कहते हैं यह १ हेतु आदि का नाम है ॥ ८२ । ८३ ॥

शास्त्र, सुनाहुआ, सत्ययुग, अलमर्थ, महाभय, बड़ा साहस.

श्रुतं (शास्त्रावधृतयो) युगपर्याप्तयोः कृतम् ।
अत्याहितं महाभीतिः कर्म जीवानपेक्षि च ॥ ८४ ॥

छः शास्त्र, और सुना या निश्चय कियाहुआ इनको 'श्रुत' कहते हैं यह १ शास्त्रादि का नाम है । युग यानी सत्ययुग और अलमर्थ को 'कृत' कहते हैं यह नपुंसक है और विहित तथा हिंसित में त्रिलिङ्ग है यह १ सत्ययुग आदि का नाम है और बड़ीभय तथा बड़े साहस का कर्म इनको 'अत्याहित' कहते हैं यह १ महाभीति आदि का नाम है ॥ ८४ ॥

न्याय, पृथिव्यादि पञ्चभूत, सत्यादि, श्लोक, यश, भूतकालादि.

(युक्ते क्ष्मादावृते) भूतं (प्राण्यतीते समे त्रिषु) ।
वृत्तं (पद्ये चरित्रे त्रिष्वतीते दृढनिस्तले) ॥ ८५ ॥

न्याय्य, पृथिव्यादि पञ्चभूत, सत्य, प्राणी, व्यतीतकाल और समान को 'भूत' कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है यानी पञ्चभूत, पिशाच आदि और जन्तुका वाचक 'भूत' नपुंसक है, उचित, प्राप्त, वृत्त, सम और सत्यका वाचक त्रिलिङ्ग है और देवयोनि तथा कुमारका वाचक भी पुंलिङ्ग है यह १ न्याय आदि का नाम है और श्लोक, यश, गयाकाल, मजबूत और गोल को 'वृत्त' कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है यानी अधीत, अतीत, गोल, मृत वृत और वृत्त इन्हों का वाचक 'वृत्त' विकल्प से वाच्यलिङ्ग है और छन्द, चरित्र तथा वृत्ति (वर्तने) का वाचक क्लीब है यह १ पद्यआदि का नाम है ॥ ८५ ॥

राज्य, बड़ाआदि, अपवाद, निन्दित, रूपा, उजला, द्वीपभेद, रत्नों की माला, सोना, चांदी आदि.

महद् (राज्यं चा) वगीतं (जन्ये स्याद्गर्हिते त्रिषु) ।
श्वेतं (रूप्येऽपि) रजतं (हेम्नि रूप्ये सिते त्रिषु) ॥ ८६ ॥

राज्य और चकार से वीणाभेद, तत्त्वभेद, श्रेष्ठ और विशाल को महत् कहते हैं यह राज्य में नपुंसक, वीणाभेद में स्त्रीलिङ्ग, तत्त्वभेद में पुंलिङ्ग और श्रेष्ठ में वाच्य कहलाता है यह १ राज्य आदि का नाम है । जनों के अपवाद और निन्दित

१ "शक्तौ निवारणे तृप्तौ पर्य्याप्तं स्याद्यथेप्सिते" (इति रुद्रः) ॥
२ "हारे रूप्ये सिते त्रिषु" इति पाठान्तरम् ॥

को 'अवगीत' कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है यह १ अपवाद आदि का नाम है । रूपा या चाँदी अपिशब्द से श्वेतद्वीप और सफ़ेद को 'श्वेत' कहते हैं, यह १ रूपा आदिकों का नाम है । हार या रत्नों की माला विशेष, रूपा, सफ़ेद और सोने को 'रजत' कहते हैं । यह त्रिलिङ्ग है अथवा सोना, रूपा और सफ़ेद को रजत कहते हैं । यह सोने व रूपे में नपुंसक और श्वेत में त्रिलिङ्ग कहलाता है । यह १ सोना व चाँदी आदिकों का नाम है ॥ ८६ ॥

जंगम, भुवन, वायु, नील्यादि रंग, रुधिर, सफ़ेद, पीला, निर्मल बंधा या कैदी, सफ़ेद.

पु.स.न. पु.स.न.

(त्रिष्वितो) जग (दिङ्गेऽपि) रक्तं (नील्यादिरागि च) ।

पु.स.न. पु.स.न.

अवदातः(सिते पीते शुद्धे) (बद्धार्जुनौ) सितौ ॥ ८७ ॥

इसके उपरान्त तान्तपर्यन्त जितने शब्द हैं वे त्रिलिङ्ग कहलाते हैं । जंगम भुवन और वायुको 'जगत्' कहते हैं यह पिष्टप (भुवन) में नपुंसक, वायु में पुंलिङ्ग और जंगम में त्रिलिङ्ग कहलाता है यह १ जंगम आदिकों का नाम है । नीली आदि रंगसे युक्त और चशब्दसे अनुरक्त, लोहित, कुङ्कुम, ताम्र, पुराना आंवला और रुधिर को भी 'रक्त' कहते हैं यह अनुरक्त आदिकों में त्रिलिङ्ग व कुङ्कुम आदिकों में नपुंसक कहलाता है यह १ नील्यादि रंगवाले आदिका नाम है । सफ़ेद, पीला और निर्मल को 'अवदात' कहते हैं यह १ सफ़ेद या उजले आदिका नाम है । बंधुआ या क़ैदी और सफ़ेद को 'सित' कहते हैं यह निश्चित में नपुंसक, क़ैदी व उजले में त्रिलिङ्ग, और खांड़ में स्त्रीलिङ्ग कहलाता है यह १ बंधुआ आदिका नाम है ॥ ८७ ॥

उचित या न्याय्य, संस्कारी, क्षमी, रचेहुए पदार्थ, शास्त्र लक्षण संपन्न, विना सीमा, शेष, विष्णु.

पु.स.न. पु.स.न.

(युक्तेऽतिसंस्कृतेमर्षिण्य)भिनीतो (ऽथ) संस्कृतम् ।

पु.स.न.

(कृत्रिमेलक्षणोपेतेऽप्य)नन्तो(ऽनवधावपि) ॥ ८८ ॥

न्याय्य, उचित, संस्कारप्राप्त या भूषित, सहनशील और अतिशृङ्गारयुक्त को भी 'अभिनीत' कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है यह १ न्याय्य आदिकों का नाम है । बनायेहुए घाट आदि पदार्थ, शास्त्रके लक्षण से संपन्न, अपिशब्द से प्रशस्त और अलंकृत को भी 'संस्कृत' कहते हैं यह १ कृत्रिम आदिका नाम है और अवधिरहित या विना मर्यादा अपिशब्द से शेष और विष्णु आदिकों को भी 'अनन्त' कहते हैं यह शेष व केशव में पुंलिङ्ग, अवधिरहित में त्रिलिङ्ग, बिशल्या आदिकों में स्त्रीलिङ्ग और आकाश में नपुंसकलिङ्ग कहलाता है यह १ विना अवधि आदिका नाम है ॥ ८८ ॥

विख्यात, हर्षित आदि, कुलीन, पण्डित आदि, — पु.स.न. पु.स.न.
(ख्याते हृष्टे) प्रतीतोऽभिजात (स्तु कुलजे बुधे) ।

पवित्र, एकान्त आदि, मोहित, बढ़ाहुआ आदि. — पु.स.न. पु.स.न.
विविक्तौ (पूतविजनौ) मूर्च्छितौ (मूढसोच्छ्रयौ) ॥ ८९ ॥

प्रसिद्ध या प्रख्यात, और हर्षित, को 'प्रतीत' कहते हैं यह प्रख्यात, प्रज्ञात, अज्ञात, हर्षित और सादर में त्रिलिङ्ग है यह १ प्रसिद्ध आदिका नाम है । कुलीन, पण्डित "और श्रेष्ठको" 'अभिजात' कहते हैं यह कुलीन न्याय्य और पण्डित में त्रिलिङ्ग है यह १ कुलीन आदिका नाम है । शुद्ध या पवित्र, एकान्त और छोड़ेगये को "विविक्त" कहते हैं यह असंपृक्त (अलग कियागया) एकान्त, पवित्र और विवेकी में त्रिलिङ्ग है यह १ पवित्र आदिका नाम है और मोहको प्राप्त (मूर्ख) वृद्धिसंपन्न और अचेतन या अज्ञान को "मूर्च्छित" कहते हैं यह १ मूढ़ आदिका नाम है ॥ ८९ ॥

खट्टा, निठुर, सफ़ेद, स्याह, — पु.स.न. पु.स.न.
(द्वौ चाम्लपरुषौ) शुक्तौ शिती (धवलमेचकौ) ।

सच्चा, साधु, विद्यमान आदि. — पु.स.न.
(सत्ये साधौ विद्यमाने प्रशस्तेऽभ्यर्हिते च) सन् ॥ ९० ॥

खट्टा या चूक जो तीनरात का रक्खाहो या खट्टा मठा आदि और कठोर ये दोनों "शुक्त" कहलाते हैं जैसे कि "मृन्मयादिशुचौ भाण्डे सगुडं क्षौद्रकाञ्जिकम् । धान्यराशौ त्रिरात्रस्थं शुक्तं चुक्रं तदुच्यते" (इति वैद्यकम्) यह १ खट्टे व कठोर का नाम है । उजला और काला इनको 'शिति' या 'सिति' कहते हैं यह भोजपत्र में पुंलिङ्ग और सफ़ेद व स्याह में त्रिलिङ्ग है यह १ सफ़ेद और स्याहका नाम है और सत्य, साधु, वर्तमानकाल, प्रशंसायुक्त और पूजित को 'सन्' कहते हैं यह साधु, धीर, शस्तमान्य, सत्य और विद्यमान में त्रिलिङ्ग और पतिव्रता व उमामें स्त्रीलिङ्ग है यह १ सत्य आदिका नाम है ॥ ९० ॥

पूजित, वैरिविजित, आगे आया, निवास, अवात, अभेद्य कवच.
पुरस्कृतः (पूजितेऽरात्यभियुक्तेऽग्रतः कृते) ।
निवातावा (श्रयावातौ) (शस्त्राभेद्यं च वर्म यत्) ॥ ९१ ॥

पूजित या संमानित, वैरियों से जीता और अगाड़ी कियाहुआ इनको "पुरस्कृत" कहते हैं यह १ पूजित आदि का नाम है । निवास (बासस्थान) और वातरहित को 'निवात' कहते हैं और जो हथियारों से अभेद्य कवच या बख्तर आदि है वह भी निवात कहलाता है जैसे कि, "निवातकवचो वीरः" अभेद्य या मज़बूत बख्तरवाला वीर है यह १ निवास आदि का नाम है ॥ ९१ ॥

उपजा, गर्वीला, बहुत ही बढ़ा, वृद्धिमान्, लगा और उपजा हुआ, सत्कार संपन्न और पूजित.

जातोन्नद्धप्रवृद्धाः स्युरुच्छ्रिता उत्थितास्त्वमी ।
वृद्धिमत्प्रोद्यतोत्पन्ना आदृतौ सादरार्चितौ ॥ ९२ ॥

इति तान्ताः ॥

उपजा, गर्वीला, और बहुतही बढ़ाहुआ इनको 'उच्छ्रित' कहते हैं यह उत्पन्न समुन्नद्ध और प्रवृद्ध में त्रिलिङ्ग है यह १ उपजे हुए आदि का नाम है। कहे जाने वाले वृद्धिमान्, प्रवृत्त या परायण और उत्पन्न इनको 'उत्थित' कहते हैं यह उत्पन्न, प्रोद्यत और वृद्धिमान् में त्रिलिङ्ग है यह १ बढ़ती वाले आदि का नाम है और सत्कारयुत व पूजित को 'आदृत' कहते हैं यह १ सादर व अर्चित का नाम है ॥ ९२ ॥

इति तान्ताः ।

अथ थान्ता व्याख्यायन्ते ॥

वाच्य, धन, पु. वस्तु, हेतु, उपरति, प्याऊ, आगम आदि.

अर्थो (ऽभिधेयरैवस्तु प्रयोजननिवृत्तिषु) ।
न.
(निपानागमयो) स्तीर्थ (मृषिजुष्टजले गुरौ) ॥ ९३ ॥

वाच्य या कहने के योग्य, धन, वस्तु, प्रयोजन हेतु या उद्देश्य, निवर्तन, उपराग या विराग इनको 'अर्थ' कहते हैं यह १ वाच्य आदि का नाम है और जलावतार या कुआं के निकटका जलाशय, बौद्धशास्त्र से भिन्न शास्त्र या महादेव का कहाहुआ तन्त्रशास्त्र, ऋषियों से सेवित जल, उपाध्याय और काशी, अयोध्या आदि को 'तीर्थ' कहते हैं यह पुंलिङ्ग व नपुंसकहै यह १ प्याऊ आदि का नाम है॥ ९३ ॥

शक्तिमान्, सम्बद्धार्थ, प्रतिकूल, क्षीणराग, बड़ा बूढ़ा, मार्ग, पांति.

समर्थ (स्त्रिषु शक्तिस्थे संबद्धार्थे हितेऽपि च) ।
दशमीस्थौ (क्षीणरागवृद्धौ) वीथी (पदव्यपि) ॥ ९४ ॥

शक्तिमान्, सम्बद्धार्थ, और अनुकूल को 'समर्थ' कहते हैं सम्बद्धार्थ में जैसे कि, "समर्थः पदविधिः" यह १ शक्तिमान् आदिका नाम है। क्षीणराग और अति वृद्धको 'दशमीस्थ' कहते हैं जैसे कि "दशमीस्थो नष्टबीजे स्थविरे च" (इति विश्वः) यह नष्टबीजवाले में पुंलिङ्ग और बड़े बूढ़े में वाच्यलिङ्ग कहलाता है यह १ क्षीण आदिका नाम है और मार्ग या राह अपिशब्दसे पांति को भी वीथी या 'वीथि' कहते हैं यह १ मार्ग आदिका नाम है ॥ ९४ ॥

सभा, उपाय, पर्वत का अग्रभाग, परिमाण, भेद, पुस्तक, धन, आधार, स्थिति, मरण.

स. पु.न.
(आस्थानीयत्नयो) रास्था प्रस्थो (ऽस्त्री सानुमानयोः) ।
पु. स.
"(शास्त्रद्रविणयो)र्ग्रन्थः संस्था(धारो स्थितौ मृतौ)९५"

इति थान्ताः ॥

सभा या समाज, मण्डली, राजदरबार, पञ्चायत, मजलिस और जलसह तथा उपाय को 'आस्था' कहते हैं यह १ सभा आदिका नाम है । पर्वत का अग्रभाग या किनारा या (कंगूरा) और परिमाणभेद यानी ("शरावाभ्यां भवेत्प्रस्थः" इस वैद्यक के प्रमाण से दो सेर) को 'प्रस्थ' कहते हैं यह परिमाणविशेष, सानु और उन्मितवस्तु में पुन्नपुंसक है यह १ शृङ्ग आदिका नाम है । शास्त्र और धनको 'ग्रन्थ' कहते हैं यह १ पुस्तक या शास्त्र आदिका नाम है और आधार, स्थिति और मरण को 'संस्था' कहते हैं यह १ चर और अवस्थित में पुंलिङ्ग और स्थिति, सादृश्य व नाश होने में स्त्रीलिङ्ग है. यह १ आधार आदिका नाम है ॥ ९५ ॥

इति थान्ताः ।

अथ दान्ता व्याख्यायन्ते ।

आशय, वश, मेघ, संवत्सर, निन्दा, हुक्म, पुत्र, बान्धव, किरण, चरण, चौथाई, चन्द्र, अग्नि, सूर्य.

पु. पु.
(अभिप्रायवशौ) छन्दावब्दौ (जीमूतवत्सरौ) ।
पु. पु.
अपवादौ (तु निन्दाज्ञे) दायादौ (सुतबान्धवौ) ॥
पु. पु.
पादा(रश्म्यङ्घ्रितुर्यांशा)(श्चन्द्राग्न्यर्का)स्तमोनुदः॥९६॥

आशय, अधीन या वशीभूतको 'छन्द' कहते हैं यह वश, अभिप्राय, पत्थल या पाषाणमात्र और पीसने की शिलामें भी पुंलिङ्ग है यह १ आशय आदि का नाम है । मेघ और संवत्सर को 'अब्द' कहते हैं यह संवत्सर, मेघ, पर्वतभेद और मोथा में पुंलिङ्ग है यह १ मेघ आदि का नाम है । निन्दा (बुराई करना) आज्ञा (हुक्मदेना) इनको 'अपवाद' या 'अववाद' कहते हैं यह निन्दा, आज्ञा और विश्वास में पुंलिङ्ग है यह १ निन्दा आदि का नाम है । पुत्र, ज्ञाति या भाई आदि को 'दायाद' कहते हैं यह १ सुत आदि का नाम है । किरण, चरण या वृक्षमूल और चौथाई को 'पाद' कहते हैं यह तरुमूल, चतुर्थांश, शैल, पर्वत-समीपी छोटा पर्वत, चरण और किरण में पुंलिङ्ग है यह १ किरण आदि का नाम है और चन्द्रमा, आगी और सूर्य को 'तमोनुद' कहते हैं यह १ चन्द्र आदि का नाम है ॥ ९६ ॥

जनवाद, सि- पु. पु.
द्धान्त, कीचड़, **निर्वादो(जनवादेऽपि) शादो (जम्बालशष्पयोः) ।**
बालतृण, कष्ट
युत रोदन, रक्षक, पु.
भयानक युद्ध. **(सारावे रुदिते त्रात)र्याक्रन्दे(दारुणे रणे) ॥ ६७॥**

लोकवाद, अपिशब्दसे निर्णीतवाद या सिद्धान्त को 'निर्वाद' कहते हैं यह १ जनवाद आदि का नाम है । कीचड़ (चहला) बालतृण (हरीघास) इनको 'शाद' कहते हैं यह १ कर्दम आदि का नाम है । आर्त शब्दसमेत रोदन, रक्षक और भयानक युद्ध यानी बड़ी लड़ाई को 'आक्रन्द' कहते हैं यह चिल्लाने यानी हाय २ करने, बुलाने, पालनेवाले व भारी लड़ाई में पुंलिङ्ग है यह १ आर्त नाद समेत रोने आदि का नाम है ॥ ६७ ॥

अनुग्रह, प्रसन्नता, पु. पु.
काव्यगुण, व्य- **(स्या)त्प्रसादो(ऽनुरोधेऽपि)सूदः(स्याद्व्यञ्जनेऽपि च) ।**
ञ्जन, रसोई क-
रनेवाला, गवा- पु. पु. पु.
ध्यक्ष, प्रमोद, **(गोष्ठाध्यक्षेऽपि)गोविन्दो(हर्षेऽ) प्यामोदवन्मदः ॥६८॥**
अभिमानआदि.

अनुराग या अनुवर्तन और अपिशब्द से अनुग्रह, प्राणों की स्वस्थता और प्रसन्नताको 'प्रसाद' कहते हैं यह १ अनुराग(प्रीति) आदिका नाम है। दाल, भात, तर्कारी आदि छत्तीस व्यञ्जन और अपिशब्द से शक्तिभेद व रसोईबरदार को 'सूद' कहते हैं यह १ व्यञ्जन आदि का नाम है । गायों के स्थानका मालिक अपिशब्द से कृष्ण और बृहस्पति को भी 'गोविन्द' कहते हैं यह १ गोष्ठाधीश या गवाधीश आदि का नाम है और हर्ष (आनन्द) अपिशब्द से अभिमान्, हाथी का मद कस्तूरी और वीर्य को भी कहते हैं व अपिशब्द से मुखवासित सुगन्ध को भी 'आमोद' कहते हैं यह १ हर्ष आदि के नाम हैं ॥ ६८ ॥

श्रेष्ठ, राजचिह्न, पु.न.
बैल की लाट, **(प्राधान्ये राजलिङ्गे च वृषाङ्गे) ककुदो(ऽस्त्रियाम्) ।**
ज्ञान, संभाषण, स.
क्रियाकार, सं-
ग्राम और नाम. **(स्त्री)संवि(ज्ज्ञानसंभाषाक्रियाकाराजिनामसु) ॥ ६९ ॥**

राजप्रधान या मुख्य राजचिह्न "छत्र चवर आदि" और बैल का अङ्गविशेष (लाट) को 'ककुद' या 'ककुत्' ककुद्, कहते हैं यह पुन्नपुंसक है यह १ प्राधान्य आदि का नाम है । विद्या, संभाषण, कर्मका नियम, संग्राम और नाम को 'संवित्' कहते हैं यह प्रतिज्ञा, आचार, ज्ञान, संग्राम, संभाषण, क्रियाका नियम या पणबन्ध, संकेत, नाम, और संतोषण में स्त्रीलिङ्ग है यह १ ज्ञान आदि का नाम है ॥ ६९ ॥

धर्म, एकान्त, वसन्त आदि छः ऋतु, साल, व्यवसाय, रक्षण, स्थान, चिह्न, चरण, वस्तु.

स. स. न.

(धर्मे रहस्यु) पनिषत् (स्याद्दतौ वत्सरे) शरत् ।
पदं (व्यवसितित्राणस्थानलक्ष्माङ्घ्रिवस्तुषु) ॥ १०० ॥

श्रुति स्मृतियों से विहितकर्म या शास्त्रोक्त कर्म करने से उपजा होनहार फलका साधनभूत शुभपुण्य या दान आदि, एकान्त या गोप्य और वेदान्त को भी ' उपनिषद् ' कहते हैं यह धर्म, वेदान्त और एकान्त में स्त्रीलिङ्ग है यह १ धर्म आदिका नाम है । वसन्त आदि छः ऋतु और वर्ष को ' शरत् ' कहते हैं यह १ ऋतु व सालका नाम है । व्यवसाय या उद्यम, रक्षण, स्थान, चिह्न या निशान, चरण, पदार्थ, सुबन्त और तिङन्त को ' पद ' कहते हैं यह शब्द, वाक्य, रोज़गार, छल, पांव या पांवका निशान, स्थिति, पालन, गोद और वस्तु में नपुंसक है परन्तु मेदिनी कोषमें विशेषता है कि श्लोकपाद में नपुंसक और किरण में पुंलिङ्ग है यह १ व्यवसाय आदिका नाम है ॥ १०० ॥

गोसेवित देश, मान, स्थान, कार्य, इष्ट, मिष्ट, अकठिन, कोमल.

न. न. पु.स.न. पु.स.न.

गोष्पदं (सेविते माने) (प्रतिष्ठाकृत्य) मास्पदम् ।
(त्रिष्विष्टमधुरौ) स्वादू मृदू (चातीक्ष्णकोमलौ) ॥ १०१ ॥

गौओं से सेवित देश और गोखुर के प्रमाण लम्बे व चौड़े गढ़हे को ' गोष्पद ' कहते हैं यह १ गोसेवितदेश व प्रमाण का नाम है । स्थान या मर्यादा और कार्य ये दोनों ' आस्पद ' कहलाते हैं यह १ स्थान व कार्य का नाम है इसके अनन्तर वर्गसमाप्तिपर्यन्त दान्तशब्द त्रिलिङ्ग हैं । मनोहर व मधुर यानी मीठा रस गुड़ आदि को ' स्वादु ' कहते हैं यह १ इष्ट व मिष्ट का नाम है और अतीक्ष्ण व कोमल ये दोनों ' मृदु ' कहलाते हैं यह १ तीक्ष्णतारहित व नरम का नाम है ॥ १०१ ॥

मूर्ख, अल्पादि, नया, अधीर, पण्डित व ढीठ.

पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.

(मूढाल्पापटुनिर्भाग्या) मन्दाः स्यु (र्द्वौ तु) शारदौ ।
(प्रत्यग्राप्रतिभौ) (विद्वत्सुप्रगल्भौ) विशारदौ ॥ १०२ ॥

इति दान्ताः ॥

मूर्ख, अल्प, असमर्थ और भाग्यहीन ये ' मन्द ' कहलाते हैं यह अतीक्ष्ण, मूर्ख, स्वतन्त्र, अभागी, रोगी, अल्प इनमें त्रिलिङ्ग है हस्तिजाति भेद व शनैश्चर में पुंलिङ्ग है यह १ मूर्ख आदिका नाम है । अतिनवीन, अप्रगल्भ या अधीर को ' शारद ' कहते हैं यह संवत्सर व मोथा में पुंलिङ्ग, जलपीपल व सप्तपर्ण वृक्ष में स्त्रीलिङ्ग,

धान्य में नपुंसक और नवीन व अधीर में त्रिलिङ्ग है यह १ अत्यन्त नवीन व अधीर का नाम है और पण्डित व महाधीर या बड़े ढीठ को 'विशारद' कहते हैं यह १ विद्वान् व महाधृष्ट का नाम है ॥ १०२ ॥

इति दान्ताः ॥

अथ धान्ता व्याख्यायन्ते ॥

नापविशेष, बरगद, देह, उँचाई, ध्यानादि, रास्ता. पु. पु. (व्यामो वटश्च) न्यग्रोधावुत्सेधः (कायउन्नतिः) ।
(पर्याहारश्च मार्गश्च) विवधौ वीवधौ (च तौ) ॥ १०३ ॥

फैलाये हुए हाथों समेत दोनों भुजाओं के गोलका परिमाण व्याम या व्यास और बरगद के वृक्षको न्यग्रोध कहते हैं यह १ नापविशेष व बरगद का नाम है । देह और उँचाई ये दोनों 'उत्सेध' कहलाते हैं यह १ काया व उँचाई का नाम है और चारोंओर से इकट्ठा कियाहुआ ध्यान आदि या दोनों तरफ बँधे शिकहरवाले काँधों से लेजाने योग्य काष्ठ बहिंगा या काँवरी और मार्ग (रास्ता) ये दोनों विवध व वीवध कहलाते हैं ये २ पर्याहार आदि के नाम हैं ॥ १०३ ॥

यज्ञीय वृक्षादि, गिरवी या थाती आदि. पु. परिधि (र्यज्ञियतरोः शाखायामुपसूर्यके) ।
पु. (बन्धकं व्यसनं चेतः पीडाधिष्ठान) माधयः ॥ १०४ ॥

यज्ञसम्बन्धी वृक्ष यानी पलाश व शमी आदिकों की शाखा और सूर्य के समीपस्थ मेष-वृष आदिकों के सन्निकर्ष से उपजे हुए वेष्टन के आकारवाले मण्डल को 'परिधि' कहते हैं यह १ यज्ञिय वृक्षादि का नाम है और धनी या महाजन के घरमें ऋण (क़र्ज़) देनेपर्यन्त विश्वास के लिये गिरवी रक्खी वस्तु या थाती(धरोहर) दुःख या विपत्ति, मानसी पीड़ा अध्यासन या आश्रय ये 'आधि' कहलाते हैं । एकत्व में आधिः, द्वित्व में आधी और बहुत्व में आधयः ये होते हैं यह १ गिरों धरी वस्तु आदि का नाम है ॥ १०४ ॥

समाधान आदि थाती या धरोहर आदि. पु. (स्युः समर्थननीवाकनियमाश्च) समाधयः ।
पु. (दोषोत्पादे)ऽनुबन्धः(स्यात्प्रकृत्यादि विनश्वरे) ॥ १०५ ॥
(मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्तने) ।

शङ्काका परिहार या समाधान, वचन का अभाव या मूलधन के बढ़ाने के लिये

अनाज का संग्रह करना और अङ्गीकार ये 'समाधि*' कहलाते हैं यह १ समाधान आदि का नाम है । और दोषों का उपजाना, एवं प्रकृति, प्रत्यय, आगम और आदेशों में जो नश्वर यानी इत्संज्ञा लोपों से अदर्शनशील वर्ण, माता पिता तथा गुरुदेवों का आज्ञाकारी बालक और प्रारम्भ हुए का अनुवर्तन या प्राप्त विषय का अनुवर्तन यानी बड़े लोगों से इष्ट की प्राप्ति करना इनको 'अनुबन्ध' कहते हैं यह १ दोषोत्पादन आदि का नाम है ॥ १०५ । ३/२ ॥

विष्णु, चन्द्रमा, परिच्छेद, गड़हा, विधान, भाग्य, याचना, जासूस, पण्डित, समूहादि.

पु. पु.
विधु(र्विष्णौ चन्द्रमसि)(परिच्छेदे बिले)ऽवधिः॥१०६॥
पु. पु.
विधि (र्विधाने दैवेऽपि) प्रणिधिः (प्रार्थने चरे)।
पु. पु. पु.
बुधवृद्धौ (पण्डितेऽपि)स्कन्धः(समुदयेऽपि च)॥१०७॥

भगवान् विष्णु और चन्द्रमा को 'विधु' कहते हैं । यह चन्द्रमा, कपूर, हृषीकेश और राक्षस में पुंलिङ्ग है यह १ विष्णु आदि का नाम है । भाग, विभाग, अध्याय, पर्व, सर्ग, या सीमा (हद) और गड़हा को 'अवधि' कहते हैं यह अवधान, मर्यादा, काल और बिल में पुंलिङ्ग है यह १ परिच्छेद आदि का नाम है । कर्तव्य कार्य और पूर्वजन्मका किया हुआ शुभ या अशुभ कर्म अपिशब्द से ब्रह्मा और कालको भी 'विधि' कहते हैं यह भाग्य, काल, विधान और ब्रह्मा में पुंलिङ्ग है यह १ विधान आदि का नाम है । मांगना या बिनती करना, अपने और पराये राजा की बात जाननेवाला, हरकारा, दूत या जासूस को 'प्रणिधि' कहते हैं यह १ प्रार्थन आदि का नाम है । सत्, असत् का जाननेवाला विद्वान्, अपिशब्द से सौम्य, सुन्दर, और बूढ़े को 'बुध' व 'वृद्ध' कहते हैं ये २ पण्डित आदिकों के नाँम हैं इनमें 'बुध' यह विद्वान् कवि और चन्द्रपुत्र में पुंलिङ्ग है और 'वृद्ध' यह पुराने, बड़े बूढ़े और बुध में त्रिलिङ्ग है और शैलेयनामक गन्धद्रव्य (छरीला) में नपुंसक है और समुदाय या समूह अपिशब्द से राजा, कांधा, लड़ाई, उत्तरकाल या प्राप्त काल आदि को 'स्कन्ध' कहते हैं यह राजा, कांधा, लड़ाई, समूह, शरीर, वृक्ष की पीड़, भद्राआदि और छन्दोभेद में पुंलिङ्ग है यह १ समुदाय आदि का नाम है ॥ १०६ । १०७ ॥

नदविशेष, समुद्र, नदी, विधान, प्रकार, सुन्दर आदि.

पु.स.
देशे (नदविशेषेऽब्धौ)सिन्धु(र्ना सरिति स्त्रियाम्)।
स. पु.स.न.
विधा(विधौ प्रकारे च) साधु (रम्येऽपि च त्रिषु)॥१०८॥

* "समाधिर्ना समर्थने, ध्याने वैरस्य नियमे काव्यस्य च गुणान्तरे" (इति मेदिनी) ॥

देशभेद, नदविशेष यानी " भैरव–शोणभद्र–ब्रह्मपुत्र आदि और सागर, तथा नदी ये ' सिन्धु ' कहलाते हैं यह समुद्र, नद, देश और हाथी के मदस्राव में पुंलिङ्ग और गङ्गा, यमुना आदि नदियों में स्त्रीलिङ्ग है यह १ देशभेद आदि का नाम है। विधान, आज्ञा या हुक्म और " इस प्रकार, किसप्रकार, जिसप्रकार " आदि को ' विधा ' कहते हैं यह गजान्न, ऋद्धि, प्रकार, वेतन और विधान में स्त्रीलिङ्ग है। यह १ विधान आदि का नाम है। और रमणीय या सुन्दर अपिशब्द से ब्याज लेनेवाला और सज्जन ये ' साधु ' कहलाते हैं यह त्रिलिङ्ग है। यह १ रम्य आदि का नाम है ॥ १०८ ॥

भार्या, पुत्रस्त्री, स्त्रीमात्र, चूना, अमृत, सेहुँड़, संकल्प, मर्यादा, आदर, आकांक्षा.

वधू(स.) "जाया स्नुहा स्त्री च" सुधा(स.) "लेपोऽमृतं स्नुही" ।
सन्धा(स.) "प्रतिज्ञामर्यादा" श्रद्धा(स.) "संप्रत्ययःस्पृहा"(स.) ॥ १०९ ॥

विवाहिता पत्नी, पुत्रपत्नी और स्त्रीमात्र को ' वधू ' कहते हैं यह पुत्रपत्नी नवीन स्त्री, स्वकीयापत्नी, असपरग (शाकविशेष) अच्छे अङ्गवाली स्त्री, कचूर और शारिवा में भी स्त्रीलिङ्ग है। यह १ भार्या आदि का नाम है। आहार, चूना, खड़ियामिट्टी आदि " कि जिससे देवमन्दिर व राजमन्दिर आदि पोते जाते हैं " मोक्ष, जल, घी और सेहुंड़ा नामकवृक्ष को ' सुधा ' कहते हैं। यह चूना, बिजली, मोक्ष, पानीय, घी, भोजन, आँवला और सेहुँड़ा में स्त्रीलिङ्ग है यह १ लेप (सफ़ेदी चूना) आदि का नाम है। संकल्प या स्वीकार, हद या बड़ाई को ' सन्धा ' कहते हैं जैसे कि " सत्यसन्धो दृढव्रतो रामः " सत्यसंकल्पवाले दृढ़व्रतधारी रामजी हैं यह १ प्रतिज्ञा आदि का नाम है और आदर, सत्कार या विश्वास और वाञ्छा को ' श्रद्धा ' कहते हैं यह १ आदर आदि का नाम है ॥ १०९ ॥

मदिरा, फूलका रस, शहद, अन्धा, अँधेरा, मूर्ख, अहंकारी.

मधु(न.)[२] (" मद्ये पुष्परसे " क्षौद्रे)ऽप्यन्धं(तमस्यपि) ।
(अतस्त्रिषु) समुन्नद्धौ(पु.स.न.)(पण्डितंमन्यगर्वितौ) ॥ ११० ॥

मदिरा या मादकद्रव्य, फूलका रस, शहद अपिशब्द से जल, दूध, विष्णुजी के कान से उपजा दैत्य या कुम्भीनसी का स्वामी, चैत्रमास, वसन्तऋतु, जीवन्तीवृक्ष, अशोकवृक्ष और महुआ को ' मधु ' कहते हैं यह १ मद्य (शराब) आदि का नाम है। अँधेरा, अन्धा और जल को ' अन्ध ' कहते हैं यह अन्धकारमें नपुंसक

---

१ " गुरुवेदान्तवाक्यादिषु विश्वासः श्रद्धा " (इति तत्त्वबोधः) ॥

२ " मधुपराग मधु चैत है, मधु मदिरा मकरन्द। मधु नभ मधु खग मधु सुधा, मधुसूदन गोबिन्द " ॥ (इति भाषाकोषः) ॥

और लोचनविहीन में वाच्यलिङ्ग यानी त्रिलिङ्ग है यह १ अँधेरा आदि का नाम है इसके बाद वर्गपर्यन्त कहे जानेवाले शब्द त्रिलिङ्ग हैं और जो अपनेतईं पण्डित मानता है (मूर्ख) या अहंकारी पण्डित, गर्वीला या घमण्डी ये दोनों "समुन्नद्ध" कहलाते हैं यह १ मानी पण्डित आदि का नाम है ॥ ११० ॥

पु.स.न.

निन्दित, आज्ञा आदि, आश्रित, संनिहित, ख्यात, भूषित. ब्रह्मबन्धु(रधिक्षेपे निर्देशे) (ऽथावलम्बितः) ।

पु.स.न. पु.स.न.

(अविदूरो) ऽप्यवष्टब्धः प्रसिद्धौ (ख्यातभूषितौ) ॥ १११ ॥

इति धान्ताः ॥

निन्दा का प्रयोग करना ब्राह्मण के आचार से हीन या निन्दित कर्म करनेवाला और आज्ञा, उपदेश, वेतन या किसी की भूल दिखलाना इनको 'ब्रह्मबन्धु' कहते हैं निन्दा के प्रयोग में जैसे कि "हे ब्रह्मबन्धो दुष्टोऽसीति" अय ब्राह्मण-जाति बन्धुवाले ! तू दुष्ट है यह १ अधिक्षेप आदि का नाम है । अवलम्बित या आश्रित, निकट, संनिहित जीता या रुकाहुआ और अपिशब्द से बँधाहुआ या क़ैदी ये 'अवष्टब्ध' कहलाते हैं यह १ आश्रित आदि का नाम है और विख्यात तथा वस्त्र व अलंकारों से अलंकृत को 'प्रसिद्ध' कहते हैं यह १ ख्यात व भूषित का नाम है ॥ १११ ॥

इति धान्ताः ॥

अथ नान्ता व्याख्यायन्ते ॥

* पु. पु.

सूर्य, आगी, किरण या लगाम, सूर्य, ब्रह्मा, वपु, मूढ, नीच जाति. (सूर्यवह्नी) चित्रभानू भानू (रश्मिदिवाकरौ) ।

पु. पु.

भूतात्मानौ (धातृदेहौ)(मूर्खनीचौ) पृथग्जनौ ॥ ११२ ॥

सूर्य और आगी को 'चित्रभानु' कहते हैं यह १ चित्रविचित्र किरणोंवाले सूर्य आदि का नाम है । किरण या घोड़े की रस्सी या लगाम और सूर्य को 'भानु' कहते हैं यह १ किरण आदि का नाम है । ब्रह्मा या विष्णु और देह ये 'भूतात्मा' कहलाते हैं यह १ विधाता आदि का नाम है और मूर्ख व नीच जाति को 'पृथग्जन' कहते हैं यह १ मूढ़ आदि का नाम है ॥ ११२ ॥

पु. पु.

पर्वत, पत्थर, बाण, पक्षी, वृक्ष, पहाड़, आगी, मोर. ग्रावाणौ(शैलपाषाणौ) पत्रिणौ (शरपक्षिणौ) ।

पु. पु.

(तरुशैलौ) शिखरिणौ शिखिनौ(वह्निबर्हिणौ) ॥ ११३ ॥

---

* "चित्रभानुः पुमान् वैश्वानरे चाहस्करेऽपि च" (इति कोषान्तरम्) ॥

पर्वत और पत्थर को 'ग्रावा' द्वित्व में 'ग्रावाणौ' कहते हैं यह पत्थर, मेघ और पहाड़ में पुंलिङ्ग है यह १ शैल आदि का नाम है। बाण, वारि और पखेरू को 'पत्री' द्वित्व में 'पत्रिणौ' कहते हैं। यह बाज, रथ, काण्ड, पक्षी, वृक्ष, सारथी और पर्वत में पुंलिङ्ग है यह १ बाण आदि का नाम है। वृक्ष और पर्वत को 'शिखरी' द्वित्वमें 'शिखरिणौ' कहते हैं यह अपामार्ग (चिरचिरा) पर्वत और वृक्ष में पुंलिङ्ग है यह १ वृक्ष आदि का नाम है और आगी व मोरको शिखी और द्वित्व में 'शिखिनौ' कहते हैं यह आगी, बैल, बाण, केतुग्रह, वृक्ष, मोर और मुर्गा में पुंलिङ्ग है। और शिखावान् में वाच्यलिङ्ग है यह १ अग्नि आदि का नाम है ॥ ११३ ॥

पु.

वाञ्छा, अनुकूल सारथी, सवार, घोड़ा, बाण, पखेरू. **प्रतियत्ना (वुभौ लिप्सोपग्रहावथ) सादिनौ ।**

(द्वौ सारथिहयारोहौ) वाजिनो (ऽश्वेषु पक्षिणः) ॥ ११४ ॥

वाञ्छा, अनुकूल या वन्दी ग्रहणआदि ये दोनों 'प्रतियत्न' कहलाते हैं यह संस्कार, मनोरथ और अनुकूल में पुंलिङ्ग है यह १ चाहना आदिका नाम है। रथका हांकनेवाला, गाड़ीवान या कोचवान और घोड़चढ़ा या सवार को 'सादी' द्वित्व में 'सादिनौ' कहते हैं यह तुरङ्गारोही मतङ्गारोही और रथारोही में पुंलिङ्ग है यह १ सारथी आदि का नाम है और घोड़ा, बाण, पक्षी (पखेरू) इनको वाजी, द्वित्व में वाजिनौ और बहुत्व में 'वाजिनः' कहते हैं यह बाण, घोड़ा और पखेरू में पुंलिङ्ग है यह १ घोड़ा आदि का नाम है ॥ ११४ ॥

पु. पु.

कुल, जन्मभूमि, बरस, किरण, तिन्नी पसाई या साठी, चन्द्रमा, आगी, सूर्य. **(कुलेऽप्य) भिजनो (जन्मभूम्यामप्यथ) हायनाः ।**

पु.

(वर्षार्चिर्व्रीहिभेदाश्च) (चन्द्राग्न्यर्का) विरोचनाः ११५ ॥

कुल (सजातीयवंश) जन्मभूमि (जन्मस्थान) अपिशब्द से प्रसिद्ध और कुलध्वज को 'अभिजन' कहते हैं यह १ कुल आदि का नाम है। बरस, ज्वाला या किरण, तृणधान्य (तिन्नी पसाई) या साठी ये 'हायन' कहलाते हैं यह १ वर्ष आदि का नाम है और चन्द्रमा, आगी, सूर्य और प्रह्लाद के पुत्रको भी 'विरोचन' कहते हैं यह १ चन्द्र आदि का नाम है ॥ ११५ ॥

पु. पु.

बाल, वरुण, वासुदेव, सूर्य, देवताओं का कारीगर, उपाय, **(केशेऽपि) वृजिना विश्वकर्मा (ऽसुरशिल्पिनोः) ।**

धृति, बुद्धि, स्वभाव, ब्रह्म, शरीर. **आत्मा (यत्नो धृतिर्बुद्धिः स्वभावो ब्रह्म वर्ष्म च) ॥ ११६ ॥**

बाल, वरुण या वासुदेव अपिशब्द से पाप और कुटिल को 'वृजिन' कहते हैं यह पाप में नपुंसक बालों में पुंलिङ्ग और कुटिल में त्रिलिङ्ग है यह १ केश आदि का नाम है । सूर्य और देवताओं के कारीगरको 'विश्वकर्मा' कहते हैं यह सूर्य, मुनिभेद और देवशिल्पी में पुंलिङ्ग है यह १ सूर्य आदि का नाम है । परिश्रम या उद्योग, तुष्टि, धारणा या सुख, ज्ञान या सांख्यशास्त्र में कहे हुए सुख व दुःखादि आठप्रकार के धर्मवाले प्रकृति के परिणामका भेद, अपना धर्म या अपना गुण, परमात्मा और देहको "आत्मा" कहते हैं यह शरीर, यत्न, स्वभाव, परमात्मा, चित्त, धृति, बुद्धि और परों या वैरियों के बरादेने में भी पुंलिङ्ग है यह १ यत्न आदि का नाम है ॥ ११६ ॥

इन्द्र, हिंसक मतवाला हाथी, वर्षा करनेवाला मेघ, धनादिका गर्व, स्नेह, मारडालना.

पु.
(शक्रो घातुकमत्तेभो वर्षुकाब्दो) घनाघनः ।
पु.
अभिमानो (ऽर्थादिदर्पे ज्ञाने प्रणयहिंसयोः) ॥ ११७ ॥

इन्द्र, घातुक मतवाला हाथी, बरसानेवाला मेघ अथवा देवताओं का स्वामी, हिंसा करनेवाला या क्रूर, मतवाला हाथी, वर्षा करनेवाला मेघ या बरसानेवाला साल इनको 'घनाघन' कहते हैं यह १ इन्द्र आदिका नाम है और धन या वस्तु आदिशब्द से कुल, पशु, गुण का घमण्ड, विवेकरहित या अविद्या या विवेक विद्या, स्नेह और हिंसा (मार डालना) ये 'अभिमान' कहलाते हैं यह १ धनादिकों के घमण्ड आदिका नाम है ॥ ११७ ॥

बादल, कठिनता, कठोर, सघन, सूर्य, स्वामी, चन्द्रमा, रजपूत, राजा.

पु.स.न.
घनो (मेघे मूर्त्तिगुणे त्रिषु मूर्त्ते निरन्तरे) ।
पु. पु.
इनः (सूर्ये प्रभौ) राजा (मृगाङ्के क्षत्रिये नृपे) ॥ ११८ ॥

बादल, कठिनता, कठिन या कठोर, सान्द्र या सघन को 'घन' कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है परन्तु धरणीकोष में विशेषता है कि सघन और घण्टा-झालरि आदिके बाजा में नपुंसक मोथा, मेघ, कठिनता का समूह, विस्तार, हथौड़ा या निहाई में पुंलिङ्ग और सघनता व दृढ़ता में त्रिलिङ्ग है और "समत्रिघातश्च घनः प्रदिष्टः" इस लीलावती के प्रमाण से समान तीन अङ्कों के गुणनफल को भी 'घन' कहते हैं जैसे कि ३ का २७ घन होता है यह १ मेघ आदिका नाम है । सूर्य, स्वामी और नरपाल को 'इन' कहते हैं यह सूर्य, राजा और स्वामी में पुंलिङ्ग है और चन्द्रमा, क्षत्रियजाति या राजपूत, नरपति या राजमात्र को 'राजा' कहते हैं यह स्वामी,

नरपाल, क्षत्रिय, चन्द्रमा, यक्ष और इन्द्र में पुंलिङ्ग है यह १ चन्द्रमा आदिका नाम है ॥ ११८ ॥

नाचनेवाली, दूती, नदी, सेनाभेद, वज्र, बिजली, बांदा आदि.

स.* स.
वाणिन्यौ (नर्तकीदूत्यौ) (स्रवन्त्यामपि) वाहिनी ।

स. स.
ह्रादिन्यौ (वज्रतडितौ) (वन्दायामपि) कामिनी॥११९॥

नाचनेवाली वेश्या और दूती या मतवाली को 'बाणिनी' या 'वाणिनी' कहते हैं यह नर्तकी, मत्ता, विदग्धा और वनिता में स्त्रीलिङ्ग है यह १ नाच करने वाली वेश्या या नटिनी आदिका नाम है । नदी या औषधी भेद अपिशब्दसे सेना और सैन्यभेद को 'वाहिनी' कहते हैं यह १ नदी आदिका नाम है । वज्र और बिजली को 'ह्रादिनी' कहते हैं यह १ वज्र आदिका नाम है और बांदा अपिशब्द से डरनेवाली विलासिनी या स्त्रीमात्र को भी कामिनी कहते हैं यह १ बांदा आदिका नाम है ॥ ११९ ॥

खाल, देह, गलशुण्डी, याग, विस्तार, कमीना, मूढ़, कार्य, ध्वजा, निमन्त्रण.

स. स.
(त्वग्देहयोरपि) तनुः सूना (धोजिह्विकापि च) ।

न.
(क्रतुविस्तारयोरस्त्री) वितानं (त्रिषु तुच्छके)॥ १२० ॥

न.
(मन्देऽथ) केतनं (कृत्ये केतावुपनिमन्त्रणे) ।

बकला या छिल्का, चाम या खाल, काया या देह, अपिशब्द से थोड़ा, बिरला और दुबले को 'तनु' कहते हैं यह देह और खाल में स्त्रीलिङ्ग और थोड़े, बिरले व दुबले में त्रिलिङ्ग है यह १ त्वचा आदि का नाम है । गलकण्ठिका, गलघण्टिका या गलशुण्डिका (रोगविशेष) अपिशब्द से पुत्री और वधस्थान ये 'सूना' कहलाते हैं यह १ गलशुण्डी आदि का नाम है । यज्ञ, विस्तार, बड़ाई, शून्य या खाली, मूर्ख, आलसी या अभागा और असमर्थ को 'वितान' कहते हैं यह यज्ञ और विस्तार में पुन्नपुंसक और तुच्छ व मूर्ख में त्रिलिङ्ग है एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि याग, चंदोवा, विस्तार में पुन्नपुंसक, वृत्तभेद में नपुंसक और आलसी तथा तुच्छ (कमीना) में त्रिलिङ्ग है यह १ यज्ञकर्म आदि का नाम है और कार्य, ध्वजा या पताका या झण्डी, मित्रोंका न्यौता या ज़ाफ़त और निवास को 'केतन' कहते हैं यह ध्वजा, कार्य, निमन्त्रण और निवास में नपुंसक है यह १ कार्य आदि का नाम है ॥ १२० ॥

---

* "बाणिनीशब्दो मेदिन्यां पवर्गीयादौ पठितः । हैमे तु अन्तस्थादौ पठितः । एवं वाहिनीशब्दोऽपि बोद्धव्यः" ॥

न. पु.

वेद, तत्त्व, तपस्या, ब्राह्मण, प्रजापति. (वेदस्तत्त्वं तपो) ब्रह्म ब्रह्मा (विप्रः प्रजापतिः) ॥ १२१ ॥

वेद * या वेदत्रयी (' ऋक्–यजुः–साम ') ज्ञान, ज्ञानशास्त्र या ज्ञानका साधन, विलम्बित नाचका भेद या उस परमेश्वरका सार, मूल, यथार्थ, सत्यादि कारण, चैतन्य, परमात्मा, या सांख्यशास्त्र में कहेहुए प्रकृति आदि पचीस पदार्थ–यानी प्रकृति, पुरुष, महत्, अहंकार, पञ्चतन्मात्रा, पञ्चभूत, पञ्चज्ञानेन्द्रिय, पञ्चकर्मेन्द्रिय और मन ये २५ तत्त्व और ग्रीष्मऋतु या कृच्छ्रादि कर्म इनको ब्रह्म (न्) कहते हैं यह १ वेदादि का नाम है और ब्राह्मण या याग करानेवाला ऋत्विक् या योगयुक्त और विधाता, दक्षआदि, दामाद, आगी, सूर्य और त्वष्टा प्रजापति को ब्रह्मा कहते हैं यह वेद, तत्त्व व तपस्या में नपुंसक और विधाता, ऋत्विक्, योगभेद, ब्राह्मण और अध्यात्मज्ञान में पुंलिङ्ग है यह १ विप्र आदि का नाम है ॥ १२१ ॥

न.

उत्साह, हिंसा, सूचन, प्रकाशन, जीवन, वेग, तर्पण. (उत्साहने च हिंसायां सूचने चापि) गन्धनम् ।
न.
आतञ्चनं (प्रतीवापजवनाप्यायनार्थकम्) ॥ १२२ ॥

उत्साह या ऊपर को उठाना, हिंसा मारडालना या क्रूरकर्म करना, पराये दोषों को प्रकट करना और अपिशब्द से सत्य या असत्यका प्रकाश करना इनको 'गन्धन' कहते हैं यह १ उत्साह आदि का नाम है और दूध में जावन देना, वेग और तर्पण अर्थवाला ' आतञ्चन ' कहलाता है यानी दूध आदि में दही आदि होने के लिये मठा आदि का छोड़ना, वेग करना और तृप्त करना इन अर्थोंका वाचक ' आतञ्चन ' है यह १ जावन आदि का नाम है ॥ १२२ ॥

चिह्न, दाढ़ी, मूछ, गीलाकरना, अङ्ग-भेद, लोकापवाद, पश्वादिकों का युद्ध.
न.
व्यञ्जनं (लाञ्छने श्मश्रुनिष्ठानावयवेष्वपि) ।
न.
(स्या)त्कौलीनं(लोकवादे युद्धे पश्वहिपक्षिणाम्) ॥ १२३ ॥

चिह्न या निशान तिल, भँवरी आदि, दाढ़ी मूछ, गीलाकरना या भातआदि अनाज का सेवन और स्त्री पुरुषों के अङ्गोंका भेद इनको ' व्यञ्जन' कहते हैं यह १ लाञ्छन आदि का नाम है और लोकापवाद, हरिण मेढाआदि, साँप या वृत्रासुर और पखेरू इनकी लड़ाई और कुलीनत्व को भी ' कौलीन ' कहते हैं यह १ लाञ्छन आदि का नाम है ॥ १२३ ॥

* " तत्रापौरुषेयं वाक्यं वेदः " (इति मीमांसायाम्) ॥

निकलना, वन-भेद, प्रयोजन, न. (स्या) दुद्यानं (निःसरणे वनभेदे प्रयोजने) ।
सावकाश, टिकना, खेलना आदि. न. (अवकाशे स्थितौ)स्थानं न. (क्रीडादावपि)देवनम् ॥ १२४ ॥

घर आदि से निकलना, राजाका साधारण वन या उपवन, प्रयोजन यानी कार्य या कारण इनको 'उद्यान' कहते हैं यह १ निकलने आदि का नाम है । अवसर या सावकाश या सुभीता, ठहरना, ठिकाना या घर ये 'स्थान' कहलाते हैं यह सादृश्य, अवकाश, स्थिति, नित्य और सन्निवेश (अच्छे स्थान) में नपुंसक है यह १ अवकाश आदि का नाम है और खेलना आदि पद से व्यवहार, दीप्ति, जीतने की चाहना, बड़ाई करना और अपिशब्द से पाशा को भी 'देवन' कहते हैं यह व्यवहार, जीतने की अभिलाषा और खेलने में नपुंसक व पाशों में पुंलिङ्ग है यह १ खेलने आदि का नाम है ॥ १२४ ॥

पौरुष, तन्त्र, बैठे हुए का उठना, तिरस्कार, विरोधाचरण. न. उत्थानं (पौरुषे तन्त्रे सन्निविष्टोद्गमेऽपि च) ।
न. व्युत्थानं(प्रतिरोधे च विरोधाचरणेऽपि च) ॥ १२५ ॥

उद्योग करना, बड़ाई देना या पराक्रम आदि दिखलाना, कुटुम्ब का कार्य, सिद्धान्त, उत्तम औषध, प्रधान, डोरोंका फैलाना, शास्त्रभेद, बिछौना आदि सामान, वेदशाखा का भेद, कारण, दो अर्थोंका प्रयोजक और बैठे हुए का उठना अपिशब्द से पुस्तक, संग्राम, हर्ष और चशब्द से मलका वेग इनको 'उत्थान' कहते हैं यह उद्यम, तन्त्र, पौरुष, पुस्तक, युद्ध, आंगन, उद्गम, आनन्द और मलके वेगमें नपुंसक है यह १ पौरुष आदि का नाम है और तिरस्कार, बाधक, प्रतिबन्ध या निरोध, चोरी व्यभिचार आदि विरुद्धाचरण करना अपिशब्द से स्वतन्त्राचरण इनको 'व्युत्थान' कहते हैं यह १ प्रतिरोध आदि का नाम है ॥ १२५ ॥

प्रेतक्रिया, गमन, धनका उपजाना, निर्वर्तन, उपकरण, अनुगमन. (मारणे मृतसंस्कारे गतौ द्रव्योपपादने ।
न. निवर्तनोपकरणानुव्रज्यासु च) साधनम् ॥ १२६ ॥

मारना या वधकरना, मृतकपुरुष का दाहादि संस्कार करना, चलना या जाना, धनका उपजाना या पैदाकरना, धातुमात्र पीतलआदि या पृथ्वीआदि पञ्चभूत, धनआदि का दिलाना, अर्थका सिद्धहोना, साधन सामग्री या परिकर, उपाय, व्यञ्जन, पलंग आदि, पीछे जाना और चशब्द से सेना या फौज, सिद्धौषध और लिङ्गको भी 'साधन' कहते हैं यह मृतसंस्कार, सैन्य, सिद्धौषध, गमन,

निर्वर्तन, उपाय, लिङ्ग, अर्थदापन, अनुगमन और धन में नपुंसक है यह १ मारण आदि का नाम है ॥ १२६ ॥

वैरका मिटाना, दान देना, धरोहरका फेरना, न. निर्यातनं (वैरशुद्धौ दाने न्यासार्पणेऽपि च)।
विपदा, नीचे गिरना, कामज और कोपज दोष. न. व्यसनं (विपदिभ्रंशे दोषे कामजकोपजे) ॥ १२७ ॥

वैरका बदलालेना, मिटाना या दूरकरना, गौ, धन आदि का दानदेना और धरोहर का फेरना या लौटादेना इनको 'निर्यातन' कहते हैं यह १ वैरके प्रतीकार आदि का नाम है और विपदाका भोगना, नाशहोना या नीचे गिरना, काम से उपजे दोष यानी शिकार करना, जूआ खेलना, मद्यपीना और रमणियों से रमण करना आदि और कोपसे पैदाहुए दोष यानी कठोर बोलना, कठोरही दण्ड देना आदि इनको 'व्यसन' कहते हैं । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि अशुभता, मद्यपान–वेश्यागमन–और शिकार आदि में आसक्त होना, दैवकृत अनिष्ट फल, पाप, विपत्ति और उद्यम का निष्फल होजाना ये 'व्यसन*' कहलाते हैं यह १ आपदा आदि का नाम है ॥ १२७ ॥

बरौनी, केसर, सूत आदि का बड़ा सूक्ष्मभाग, न. पक्ष्म (क्षिलोम्नि किञ्जल्के तन्त्वाद्यंशेऽप्यणीयसि)।
तिथिभेद, उत्सव, पलकमार्ग. ‡ न. न. (तिथिभेदे क्षणे) पर्व वर्त्म (नेत्रच्छदेऽध्वनि) ॥ १२८ ॥

नेत्रों के लोम यानी बरौनी, बरूनी या बिन्नी, केसर या कमल या फूलमात्र की गन्ध और बड़ा महीन या पतला सूत आदि का भाग इनको पक्ष्म (न्) कहते हैं यह डोरा आदि का पतला अंश, केसर और नेत्रों के लोमों में नपुंसक है यह १ बरौनी आदि का नाम है । तिथियों का भेद यानी शुक्लपक्ष की अष्टमी, कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, अमावास्या और पौर्णमासी तथा सूर्य की संक्रान्ति, उत्सव या अवसर, मध्य और दशलव प्रमाणवाला काल ये 'पर्व' (न्) कहलाते हैं, एवं हैमकोष में भी कहा है जैसे कि, "पर्वप्रस्तावोत्सवयोर्ग्रन्थ्यादौ विषुवदादिषु । दर्शप्रतिपत्सन्धौ च तिथिग्रन्थविशेषयोः" प्रस्ताव, उत्सव, गांठि या पोर आदि, समरात्रि दिनवाला काल, अमावास्या व परेवा की सन्धि, तिथियां और ग्रन्थविशेष इनको 'पर्व' (न्) कहते हैं यह १ तिथिभेद आदि का नाम है और

---

*"गीतशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् । व्यसनेन तु मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा" ॥ १ ॥
‡"चतुर्दश्यष्टमी कृष्णा अमावास्या च पूर्णिमा । पर्वाण्येतानि राजेन्द्र ! रविसंक्रमणं तथा" ॥ १ ॥

नेत्र ढकनेहारे पोटा या पलक और मार्ग को 'वर्त्म' (न्) कहते हैं यह १ पलक आदि का नाम है ॥ १२८ ॥

अकार्य, लिङ्गाच्छादक वस्त्र, संगति, सुरत, परमात्मा, प्रज्ञा, बुद्धि, निशान.

न. न.
(अकार्यगुह्ये) कौपीनं मैथुनं (संगतौ रते)।
न. न.
प्रधानं (परमात्मा धीः) प्रज्ञानं (बुद्धिचिह्नयोः) ॥१२९॥

कार्यका अभाव या अयोग्यकर्म और गुह्येन्द्रियका ढकनेवाला वस्त्रविशेष (लंगोटी) ये दोनों 'कौपीन' कहलाते हैं यह अकार्य, चीर और गुह्यप्रदेश में नपुंसक है यह १ अकार्य आदिका नाम है । भार्या आदि का संगम या सम्बन्ध और सुरत को 'मैथुन' कहते हैं यह सम्बन्ध, स्त्री पुरुषका मिलाप, रति, संगम, स्त्रीसंग या हमागोशी में नपुंसक है यह १ संगति आदि का नाम है । परमात्मा और प्रज्ञा को 'प्रधान' कहते हैं यह महामात्र, प्रकृति, परब्रह्म और प्रज्ञामें नपुंसक है और एकत्व व उत्तम में सदैवही नपुंसक रहता है यह १ परमात्मा आदि का नाम है । तथा बुद्धि और चिह्न तिल आदि का निशान ये दोनों 'प्रज्ञान' कहलाते हैं यह १ बुद्धि आदि का नाम है ॥ १२९ ॥

फूल, फल, कुलविनाश, रोना, बुलाना, देह, प्रमाण.

न. न.
प्रसूनं (पुष्पफलयो) र्निधनं (कुलनाशयोः)।
न. न.
क्रन्दने (रोदनाह्वाने) वर्ष्म (देहप्रमाणयोः) ॥ १३० ॥

फूल और फल जोकि तुरन्त उपजे हों उनको 'प्रसून' कहते हैं जैसे कि, "प्रसूनो वाच्यवज्जाते क्लीबन्तु फलपुष्पयोरिति मेदिनी" यह जात यानी उपजे हुए में त्रिलिङ्ग और फल व फूलों में नपुंसक है यह १ पुष्प आदि का नाम है । वंश या गोत्र और विनाश ये दोनों 'निधन' कहलाते हैं यह कुल, नाश या मरण और ज्योतिःशास्त्र में कहेहुए लग्न से अष्टम घर में भी नपुंसक है यह १ कुल आदि का नाम है । रोना, बुलाना या चिल्लाना इनको 'क्रन्दन' कहते हैं यह आँसू छोड़ने, चिल्लाने और बुलाने में नपुंसक है यह १ रोदन आदि का नाम है और देह या काया या स्थूल, सूक्ष्म, कारणशरीर, इयत्ता (इतना) या यथार्थ ज्ञान ये 'वर्ष्म' (न्) कहलाते हैं यह १ देह, प्रमाण और अतिसुन्दर स्वरूप में भी नपुंसक है यह १ देह आदिकों का नाम है ॥ १३० ॥

घर, देह, दीप्ति, प्रभाव, चौराहा, अच्छावासस्थान, निशान, प्रधान.

न.
(गृहदेहत्विट्प्रभावा) धामा (न्यथ चतुष्पथे।
न. न.
संनिवेशे च) संस्थानं लक्ष्म (चिह्नप्रधानयोः) ॥१३१॥

घर, देह या स्थूल-सूक्ष्म-कारणशरीर, दीप्ति या छवि और प्रताप या धनसमूह और दण्ड से उपजा हुआ तेज ये 'धाम' (न्) कहलाते हैं यह शक्ति प्रभाव, तेज, मन्दिर और जन्म में नपुंसक है यह १ घर आदि का नाम है । चौराहा, अच्छा बास स्थान या अवयवों का विभाग और चशब्द से मरना इनको 'संस्थान' कहते हैं यह आकृति, मौत, साफ़ या सुथरा स्थान व चौराहे में नपुंसक है यह १ चौराहा आदि का नाम है और चिह्न या निशान, परमात्मा या प्रकृति, प्रज्ञा आदि को 'लक्ष्म' कहते हैं यह प्रधान और चिह्न में नपुंसक हैं यह १ चिह्न आदि का नाम है ॥१३१॥

छिपाना, ढांपना, साधन, लाभ, सन्तोष.

न. **आच्छादने (संपिधानमपवारणमित्युभे) ।**
न. **आराधनं (साधने स्यादवाप्तौ तोषणेपि च) ॥ १३२ ॥**

तिरोधान या छिपाना, वस्त्र आदिकों से ढाँपना या वस्त्रमात्र को भी 'आच्छादन' कहते हैं यह संपिधान, वस्त्र और घेरनेमात्र में भी नपुंसक है यह १ अपवारण आदि का नाम है और साधन यानी निर्वर्तन, उपकरण या अनुगमन, लाभ या मिलना और संतोष करना ये "आराधन" कहलाते हैं यह १ साधन आदि का नाम है ॥ १३२ ॥

पहिया, नगर, प्रताप, चढ़ाई या परमासन, प्रधान, मणि, जल, जंगल.

न. **अधिष्ठानं (चक्रपुरप्रभावाध्यासनेष्वपि) ।**
न. **रत्नं (स्वजातिश्रेष्ठेऽपि) वने (सलिलकानने)** न. **॥ १३३ ॥**

पहिया, नगर या गांव, प्रताप, आक्रमण यानी चढ़ाई करना अपिशब्द से वरासन या उत्तमासन को भी 'अधिष्ठान' कहते हैं यह रथाङ्ग, प्रभाव, अध्यासन और पुर में पुनंसक है यह १ पहिया आदि का नाम है । अपनी जाति में प्रधान या मुखिया अपिशब्द से मणिको भी 'रत्न‡' कहते हैं जैसे कि, "नीचादप्युत्तमां विद्यां "स्त्रीरत्नं" दुष्कुलादपि" नीच व्यक्ति से भी उत्तम विद्या और बुरे कुलसे भी 'स्त्रीरत्न' लेना चाहिये यह १ अपनी जाति में प्रधान आदि का नाम है । जल और जंगल ये दोनों 'वन' कहलाते हैं यह कानन, नीर, निवास और निलय में नपुंसक है यह १ पानी आदि का नाम है ॥ १३३ ॥

बिरला, थोड़ा, पण्डित, बराबर, मुखिया, क्रूर, सूचक या चुगल.

न. **तलिनं (विरले स्तोके) (वाच्यलिङ्गास्तथोत्तरे) ।**
पु.स.न. **समानाः (सत्समैकेस्युः)** पु.स.न. **पिशुनौ (खलसूचकौ) ॥ १३४॥**

‡ "धनार्थिनो जनाः सर्वे रमन्तेऽस्मिन्नतीव यत् । ततो रत्नमिति प्रोक्तं शब्दशास्त्रविशारदैः" (इति भावप्रकाशः) ॥

बिरला या अन्तरसमेत, अल्प या थोड़ा, शय्या, विरस, तुच्छ और स्वच्छ को 'तलिन' कहते हैं यह बिरल और अल्प में नपुंसक तथा स्वच्छ में वाच्यलिङ्ग है वैसेही आनेवाले नान्तवर्ग समाप्तिपर्य्यन्त वाच्यलिङ्ग हैं यह १ विरल आदि का नाम है। पण्डित, बराबरीवाला, और प्रधान या मुखिया ये 'समान' कहलाते हैं यह सुधी, सदृश और मुख्य में त्रिलिङ्ग और नाभी के पवन में पुलिङ्ग है यह १ बुद्धिमान् आदि का नाम है। दुर्जन, अधम या क्रूर और निन्दक, शिक्षक, बोधक या चवाई को 'पिशुन' कहते हैं यह कुंकुम में नपुंसक, बानर के मुख और कौआ में पुंलिङ्ग तथा चुगलखोर और खलों में त्रिलिङ्ग है यह १ क्रूर आदि का नाम है ॥ १३४ ॥

कमती या न्यून, निन्द्य, वेगवान्, बलवान्, अपराधी, वैरिग्रस्त, विपदा में प्राप्त हुआ. (पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.)

हीनन्यूना (वूनगर्ह्यौ) (वेगिशूरौ) तरस्विनौ ।
अभिपन्नो (ऽपराद्धोऽभिग्रस्तव्यापद्गता अपि) ॥ १३५॥

ऊन और गर्ह्य को 'हीन' और 'न्यून' कहते हैं ये २ अल्प या निन्द्य के नाम हैं इनमें निन्दा और अल्पता में 'हीन' त्रिलिङ्ग है और निन्दा व ऊनता में 'न्यून' भी त्रिलिङ्ग है। वेगवान् और वीर (शूरमा) को तरस्वी (न्) कहते हैं यह बलवान् और वेगवान् में त्रिलिङ्ग है यह १ वेगवान् व जल्दबाज़ आदि का नाम है। अपराधवान्, वैरियों से पराजित या चारों तरफ दुश्मनों से घिरा, विपदा में फँसा और सामने से भगाहुआ ये 'अभिपन्न' कहलाते हैं एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, अपराध किये हुए, सामने से भगे हुए, शत्रुओं से घिरे हुए और आपदा में पहुँचे हुए को भी 'अभिपन्न' कहते हैं यह १ पाप, दोष, अधर्म, अन्याय, जुर्म या गुनाह कियेहुए आदि का नाम है ॥ १३५ ॥

इति नान्ताः ॥

अथ पान्ता व्याख्यायन्ते ।

भूषण, मोरपंख, तरकस, समूह, परिच्छद, चारोंतरफ बीज-बोना, जलाधार. (पु.† पु.)

कलापो (भूषणे बर्हे तूणीरे संहतेऽपि च) ।
(परिच्छदे) परीवापः (पर्युप्तौ सलिलस्थितौ) ॥ १३६ ॥

भूषण—गहना—या अलंकारमात्र, मोरपंख, तरकस, समुदाय अपिशब्द से करधनी और चशब्द से चन्द्रमा, चतुर और व्याकरण का भेद इनको कलाप कहते हैं

† "सर्पः क्रूरः खलःक्रूरः सर्पात्क्रूरतरः खलः । सर्प एकाकिनं हन्ति खलः सर्वविनाशकृत् ॥ १ ॥"
"द्वाभ्यां युग्ममिति प्रोक्तं त्रिभिः श्लोकैर्विशेषकम् । कलापकं चतुर्भिः स्यात्तदूर्ध्वं कुलकं स्मृतम्" ॥ १ ॥

एवं अजय व मेदिनीकोष में भी कहा है कि, समुदाय, मोरपंख, करधनी, भूषण या अलंकार, निषंग या भाथा, चन्द्रमा, विदग्ध (चतुर) और व्याकरण का भेद इनमें 'कलाप' पुंलिङ्ग है यह १ भूषण आदि का नाम है और परिच्छद (बिछौना आदि सामान) चारों तरफ़ बीजोंका बोना और जलाधार या बांध आदि को 'परीदाप' कहते हैं यह १ पुरस्कर उपयोगी वस्तु, साज़ बिछौना आदि का नाम है ॥ १३६ ॥

पु. पु.
ग्वाला, गोशाला-धिप, शिव, (गोधुग्गोष्ठपती) गोपौ (हरविष्णू) वृषाकपी ।
विष्णु, ऊष्मा, न. पु.न.
आंसू, अनाज, कपड़ा. बाष्प (मूष्मास्तु) कशिपु (त्वन्नमाच्छादनं द्वयम्) ॥ १३७ ॥

गौका दुहनेवाला या गोपाल और गोशाला का स्वामी ये दोनों 'गोप' कहलाते हैं यह ग्रामसमूह, गोष्ठाधिकारी और अहीर में पुंलिङ्ग है यह १ गोदोग्धा (ग्वाला) आदि का नाम है । महादेव और नारायण को 'वृषाकपि' कहते हैं यह कृष्ण, शंकर और अग्निदेवता में पुंलिङ्ग है यह १ महेश आदि का नाम है । गरम और आँसूको 'बाष्प' या 'वाष्प' कहते हैं यह आंसू और बाफ में पुंलिङ्ग व नपुंसक है और हैम या मेदिनीकोष के प्रमाण से स्पर्शादि व अन्तस्थादि भी है यह १ ऊष्मा आदि का नाम है और अनाज या भात और वस्त्र को 'कशिपु' कहते हैं यह अनाज व कपड़ा में नपुंसक है, और "कशिपुर्भक्ताच्छादनयोरेकोक्त्या पृथक्तयोः पुंसि" इस मेदिनीकोष के प्रमाण से पुंलिङ्ग भी है । यहां कहेजानेवाला (अस्त्रियाम्) यह पद भी संबन्ध रखता है इसलिये पुन्नपुंसक दोनोंही जानना चाहिये यह १ भात आदि का नाम है ॥ १३७ ॥

न. पु.न.
शयन या पलंग, अटारी, स्त्री, तल्पं (शय्याट्टदारेषु) (स्तम्बेऽपि) विटपो (ऽस्त्रियाम्) ।
गुल्म या गुच्छा, पु.स.न. पु.स.न. पु.स.न.
पण्डित, मनो-हर, कछुई, वीणा प्रातरूपस्वरूपाभिरूपा (बुधमनोज्ञयोः) ॥ १३८ ॥
विशेष, मृग- स.
रोम से उपजा (भेद्यलिङ्गा अमी) (कूर्मी वीणाभेदश्च) कच्छपी ।
कम्बल, दिनका पु.
आठवां भाग. "कुतपो (मृगरोमोत्थपटे चाह्नोऽष्टमेंऽशके)" ॥ १३९ ॥

इति पान्ताः ॥

खाट या पलंग, अटारी या कोठेपर की कोठरी और स्त्री (रमणी) को 'तल्प' कहते हैं यहां भी 'अस्त्रियाम्' इसका संबन्ध कियाजाता है इसलिये यह पुंनपुंसक है यह १ शय्या आदि का नाम है । शाखाशून्य या ठूंठ या तृण आदि का गुच्छा अपिशब्द से नया पत्ता, चंचल या भ्रमर, विस्तार या फैलाव और शाखा (डाल)

इनको 'विटप' कहते हैं यह पुन्नपुंसक है यह १ गुच्छा आदि का नाम है। बुध या पण्डित और मनोज्ञ या सुन्दर को प्राप्तरूप, स्वरूप व 'अभिरूप' कहते हैं ये वाच्यलिङ्ग कहलाते हैं ये ३ बुध आदि के नाम हैं। कछुई और वीणा का भेद यानी "सरस्वत्यास्तु कच्छपी" इस वैजयन्तीकोष के प्रमाण से सरस्वती की वीणा इनको 'कच्छपी' कहते हैं यह कछुई, वल्लकी विशेष और कछुई नामक रोग में भी स्त्रीलिङ्ग है यह १ कमठी आदि का नाम है और मृगों के लोमों से उपजा कम्बल आदि और दिनका आठवां भाग ये दोनों 'कुतप'[१] कहलाते हैं यह दौहित्र (नाती) बाजा, छागलोम से बनाहुआ वस्त्र और दिनका आठवां भाग इनमें पुन्नपुंसक और सूर्य में पुंलिङ्ग है यह १ मृग रोमज कम्बल आदि का नाम है ॥ १३८। १३९ ॥

इति पान्ताः ॥

अथ फान्ता व्याख्यायन्ते।

रकार, निन्दित, शिखा या जटा, नदी, जटामांसी, माता.

(रवर्णे पुंसि) रेफः (स्यात्कुत्सिते वाच्यलिङ्गकः)। (पु.)
शिफा (शिखायां सरिति मांसिकायां च मातरि) ॥ १४० ॥ (स.)

रकार और निन्दित को 'रेफ' कहते हैं यह 'र' इस अक्षर में पुंलिङ्ग है जैसे कि "रेफेपरे लोपः" और निन्दित अर्थ में वाच्यलिङ्ग यानी त्रिलिङ्ग है "एवं विश्वकोष में भी कहा है कि 'रेफ' यह रवर्ण में पुंलिङ्ग और कुत्सित में वाच्यलिङ्ग है" यह १ रकार या निन्दित का नाम है और शिखा या जटा, नदी, जटामांसी, माता या धाई, गौ, और मूसाकर्णी (लताविशेष) इनको 'शिफा' कहते हैं यह १ शिखा या जटा आदि का नाम है ॥ १४० ॥

वृक्षों की जड़, गौ आदि पशुओं का खुर, गूंथना, बाहुओं का गहना.

शफं (मूले तरूणां स्याद्गवादीनां खुरेऽपि च)। (न.)
गुम्फः (स्याद्गुम्फने बाहोरलंकारे च कीर्तितः) ॥ १४१ ॥ (पु.)

इति फान्ताः ॥

वृक्षों की जड़ और धेनु आदि पशुओं के खुरों को भी 'शफ' कहते हैं यह नपुंसक है यह १ तरुमूल आदि का नाम है और गूंथा या गठाहुआ और भुजाओं का अलंकार यानी बजुल्ला आदि गहना इनको गुम्फ कहते हैं यह पुंलिङ्ग है यह १ गुथे या रचनाविशेष आदि का नाम है ॥ १४१ ॥

इति फान्ताः ॥

---

१ "दिवसस्याष्टमे भागे मन्दीभवति भास्करः। स कालः कुतपो ज्ञेयः पितृणां दत्तमक्षयम् ॥"

अथ बान्ता व्याख्यायन्ते ।

जन्म मरण में टिकाहुआ प्राणी, घोड़ा, देवगायक या गवैया, कंकण, शंख, सर्प, निन्दक.

पु. पु.
(अन्तराभवसत्त्वेऽश्वे) गन्धर्वौ (दिव्यगायने) ।
पु.‡ पु.
कम्बु (र्ना वलये शङ्खे) द्विजिह्वौ (सर्पसूचकौ) ॥१४२॥

जन्म और मरण के बीच में टिकनेहारा प्राणी, घोड़ा और देवगायक यानी विश्वावसु–तुम्बुरु–और चित्ररथ आदि देवताओं के गानेवाले और गायकमात्र को भी 'गन्धर्व' कहते हैं एवं मेदिनीकोप में भी कहा है कि मृगभेद, पुरुषरूप कोकिला, घोड़ा, अन्तराभव देहवाला प्राणी और गानेवाला ये 'गन्धर्व' कहलाते हैं यह १ जन्म मरण मध्यस्थ प्राणी आदि का नाम है । कङ्कण और शङ्ख को 'कम्बु' कहते हैं यह पुंलिङ्ग है एवं हेमकोप में भी कहा है कि हाथ पांव के कड़े, समुद्र से उपजा शंख या निधिभेद, हाथीदांतका मध्यभाग, घोंघा, सियार या सीपी, कचूर, गला, ललाट की हड्डी, और नखनामक गन्धद्रव्यको भी 'कम्बु' कहते हैं और मेदिनीकोष के प्रमाण से भी यह शंख में पुन्नपुंसक और अन्य अर्थों में पुंलिङ्ग है यह १ कङ्कण आदि का नाम है और सांप व निन्दक या चुगलखोर को भी 'द्विजिह्व' कहते हैं यह १ सर्प आदि का नाम है ॥ १४२ ॥

पूर्व या पूर्वज लोग.

पु.स.न.
पूर्वो(ऽन्यलिङ्गः प्रागाह) (पुम्बहुत्वेपि पूर्वजान्) ।

इति बान्ताः ॥

पूर्वदिशा का वाची जो पूर्वशब्द वह वाच्यलिङ्ग यानी त्रिलिङ्ग कहलाता है जैसे कि, 'पूर्वो ग्रामः' पूर्वा काशी, पूर्वं वनम्, आदि होते हैं और जो पूर्वजों का वाची पूर्व है वह पुंलिङ्ग होकर बहुवचनान्त है जैसे कि पूर्वे स्युः पूर्वजाः, 'पूर्वे ज्ञातयः' आदि कहलाते हैं यह "पूर्वशब्द" विश्वकोष व मेदिनीकोष में बान्त पायाजाता है और हैमकोष में वान्त भी है यह १ पूर्वआदिका नाम है ॥

इति बान्ताः ॥

अथ भान्ता व्याख्यायन्ते ।

घड़ा, हाथी का शिरोभाग, बालक, मूर्ख.

पु. पु.
कुम्भौ (घटेभमूर्धांशौ) डिम्भौ (तु शिशुबालिशौ) १४३॥

कलश या घड़ा और हाथी का शिरोभाग ये दोनों 'कुम्भ' कहलाते हैं एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, रावण के भाई कुम्भकर्ण का बेटा, वेश्यापति, कलश, ज्योतिष में मेषादि से ग्यारहवीं राशि, हाथी के शीश का मांसपिण्ड, निशोथ और

---

‡ "कम्बुः शंखेऽस्त्रियां पुंसि शम्बूके वलये गजे" (इति मेदिनी) ॥

गूगल को 'कुम्भ' कहते हैं यह निशोथ और गूगल में नपुंसक है और पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग है यह १ घड़ा आदिका नाम है और बालक व मूर्ख या अज्ञानी को 'डिम्भ' कहते हैं एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, बालक और बालिश यानी मूढ़ ये दोनों 'डिम्भ' कहलाते हैं इन पूर्वोक्त अर्थों में यह पुंलिङ्ग है यह १ बच्चा आदि का नाम है ॥ १४३ ॥

सूर्मी, थूनी या खंभा, जडता, ब्रह्मा, शिव, उदर, स्त्रीका गर्भ, बालक, प्रणय आदि.

पु. पु.
स्तम्भौ (स्थूणाजडीभावौ) शम्भू (ब्रह्मत्रिलोचनौ) ।
पु. पु.
(कुक्षिभ्रूणार्भका) गर्भा विस्रम्भः (प्रणयेऽपि च)१४४॥

लोहप्रतिमा, थूनी या घरका खंभा और जड़ता को 'स्तम्भ' कहते हैं यह पुंलिङ्ग होकर द्वित्व की विवक्षा में द्विवचनान्त है यह १ स्थूणा आदिका नाम है । ब्रह्मा और महादेव को 'शम्भु' कहते हैं यह शिव, ब्रह्मा, विष्णु और नास्तिकों का देवता इनमें पुंलिङ्ग है यह १ ब्रह्मा आदिका नाम है । उदर या पेट, स्त्रीका गर्भ या गर्भस्थप्राणी और बालक ये 'गर्भ' कहलाते हैं यह गर्भ, बालक, कोखि, सन्धि और कटहल का कांटा इनमें पुंलिङ्ग है यह १ उदर आदिका नाम है और पहिंचान या शृङ्गार रसकी प्रार्थना अपिशब्दसे केलि कलह, विश्वास और वध को 'विस्रम्भ' कहते हैं एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, खेलने में लड़ाई करना, विश्वास, प्रणय और वध ये 'विस्रम्भ' कहलाते हैं यह १ प्रणय आदिका नाम है ॥ १४४ ॥

भेरी, पाशा, कुसुम का फूल, कमण्डलु या करवा आदि.

पु. स.
(स्याद्भेर्यां)दुन्दुभिः(पुंसि स्यादक्षे)दुन्दुभिः(स्त्रियाम्)।
न.
(स्यान्महारजनेक्लीबं) कुसुम्भं (करके पुमान्) ॥ १४५॥

नगाड़ा, तुरही, नफीरी, सहनाई, कण्डाल या बड़ा ढोल ये 'दुन्दुभि' कहलाते हैं यह पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग है और पाशा जूआ या बालकों के खेल के पदार्थ का वाचक जो 'दुन्दुभि' हैं वह स्त्रीलिङ्ग है एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, वरुणादैत्य-विशेष कि जिसको बालिने मारा है और तुरही इनका वाचक 'दुन्दुभि' पुंलिङ्ग है और पाशों का वाचक स्त्रीलिङ्ग है यह १ धौंसा, नगाड़ा, डंका या नफीरी आदिका नाम है और महारजन=फूल का भेद यानी कुसुम का फूल और सोना ये दोनों 'कुसुम्भ' कहलाते हैं यह नपुंसक है और जो कमण्डलु या करवा का वाचक है वह पुंलिङ्ग है ऐसेही मेदिनीकोष में भी कहा है कि "कुसुम्भं हेमनि महारजने ना कमण्डलौ" सोना और कुसुम के फूल में 'कुसुम्भ' नपुंसक है और कमण्डलु में पुंलिङ्ग है यह १ कुसुम के फूल आदिका नाम है ॥ १४५ ॥

क्षत्रिय, गौ, गोष्ठी, सामाजिकयासज्जन, अध्यक्ष.

(क्षत्रियेऽपि च) नाभि (र्ना) सुरभि (र्गवि च स्त्रियाम्)।
पु.
सभा (संसदि सभ्ये च) (त्रिष्वध्यक्षेऽपि) वल्लभः १४६॥

इति भान्ताः॥

क्षत्रिय जाति, अपिशब्द से प्रधान राजा और पहिया की नाह ये 'नाभि' कहलाते हैं यह पुंलिङ्ग है और चशब्द से तोंदी या तुण्डी में पुंस्त्रीलिङ्ग और कस्तूरी में स्त्रीलिङ्ग है यह १ क्षत्रिय जाति आदिका नाम है। कामधेनु, चशब्द से शालवृक्ष और धरती को 'सुरभि' कहते हैं यह पूर्वोक्त अर्थों में स्त्रीलिङ्ग, चम्पक, वसन्तऋतु और जायफल में पुंलिङ्ग, सोना, गन्धक, कमल में नपुंसक, सुगन्धित व सुन्दर में त्रिलिङ्ग, विख्यात, मन्त्री, धीर और चैतमास में भी पुंलिङ्ग है यह १ कामधेनु आदिका नाम है। समाज, मण्डली या राजदरबार, सामाजिक या सज्जन, और चशब्द से जूआ खेलने का घर और जिस मन्दिर में अभीष्ट सिद्धिके लिये सब लोग इकट्ठा होते हैं उसको भी 'सभा' कहते हैं यह गोष्ठी, सामाजिक, दूत और मन्दिर में स्त्रीलिङ्ग है यह १ समाज आदिका नाम है और मुख्य अधिकारी अपिशब्द से प्यारा और अच्छे लक्षणोंवाला घोड़ा ये 'वल्लभ' कहलाते हैं यह त्रिलिङ्ग है एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि दयित, अध्यक्ष और कुलीन घोड़े को वल्लभ कहते हैं यह १ अध्यक्ष आदिका नाम है॥ १४६॥

इति भान्ताः॥

अथ मान्ता व्याख्यायन्ते।

किरण, पगहा, वानर, मेंडक, चाहना, कामदेव, शूरता, उद्योग.

पु. पु.
(किरणप्रग्रहौ) रश्मी (कपिभेकौ) प्लवंगमौ।
पु. पु.
(इच्छामनोभवौ) कामौ (शौर्योद्योगौ) पराक्रमौ॥१४७॥

किरण और घोड़े आदिकों के बांधने की रस्सी (पगही या पगहा) इन दोनों को 'रश्मि' कहते हैं यह किरण, बरुनी व पगहा में पुंलिङ्ग है। यह १ प्रकाश आदिका नाम है। वानर, लालचन्दन, सूअर या कपिलवर्ण और मेह या मेंडक ये दोनों 'प्लवंगम' कहलाते हैं यह मेंडक व शाखामृग में पुंलिङ्ग है यह १ वानर आदि का नाम है। आकाङ्क्षा या चाहना और कामदेव को 'काम' कहते हैं यह मदन व वाञ्छा में पुंलिङ्ग और वीर्य, इष्ट व काम्य में नपुंसक है यह अभिलाषा आदिका नाम है और शूरता या सामर्थ्य या सांग व बर्छी और उपाय या रोज़गार को 'पराक्रम' कहते हैं यह सामर्थ्य, विक्रम और उद्यम में पुंलिङ्ग है यह १ शौर्य आदिका नाम है॥ १४७॥

पुण्य, संयम, न्याय, स्वभाव, आचार, सोमपायी, उपाय पूर्वक आरम्भ, घूस या धर्मादिकों से मन्त्रियों की परीक्षा.

पु.न.
धर्माः (पुण्ययमन्यायस्वभावाचारसोमपाः) ।
पु.
(उपायपूर्व आरम्भ उपधा चाप्युु) पक्रमः ॥ १४८ ॥

पुण्य यानी सुकृत, संयम या यमराज, विचार या इन्साफ़, स्वभाव, आचरण या व्यवहार और यज्ञवल्ली 'लताविशेष' का पीनेवाला याज्ञिक या यजमान ये ६ 'धर्म' कहलाते हैं एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, पुण्य, आचार (वैदिकमार्गसे चलना) स्वभाव, उपमा, यज्ञ, अहिंसा, उपनिषत् (वेदों का शिरोभाग) न्याय (यथोचित इन्साफ़ करना) इनमें 'धर्म' पुन्नपुंसक है और धनुष्, यमराज या संयम और सोमपायी में पुंलिङ्ग है यह १ सुकृत आदिका नाम है । उपायपूर्वक आरम्भ करना, घूस लेना या धर्मादिकों से राजमन्त्री आदिकों के शील की परीक्षा करना अपिशब्द से दवाई करना और पराक्रम को देखलाना या चढ़ाई करना इनको 'उपक्रम' कहते हैं एवं विश्वकोप में भी कहा है कि, उपधा, चिकित्सा, आरम्भ और विक्रम ये 'उपक्रम' कहलाते हैं यह १ आरम्भ आदिका नाम है ॥ १४८ ॥

वाणिज्य, नगर, वेद, नागर, बनियां, बलदेव, काला, सुन्दर, सफ़ेद.

पु.
(वणिक्पथः पुरं वेदो) निगमा (नागरो वणिक्) ।
पु. पु.
नैगमौ (द्वौ) (बले) रामो (नीलचारुसिते त्रिषु) ॥ १४९ ॥

वाणिज्य, नगर और वेद ये तीनों 'निगम' कहलाते हैं एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, साहूकार, पुरी, चटाई, वेद और बनियां का व्यापार इनको 'निगम' कहते हैं यह बहुत्वकी विवक्षा में बहुवचनान्त होकर पुंलिङ्ग है यह १ वाणिज्य आदिका नाम है । नगरका वासी, चतुर, प्रवीण या गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति और बनियां ये दोनों 'नैगम' कहलाते हैं यह उपनिषद्, बनिया और नगरवासी में पुंलिङ्ग है यह १ नागर आदि का नाम है । बलदाऊ में 'राम' पुंलिङ्ग है और काले, सुन्दर व सफ़ेद में त्रिलिङ्ग है ऐसेही विश्वकोष में भी कहा है कि, मृगविशेष, परशुराम, बलराम, और रामचन्द्र में 'राम पुंलिङ्ग' है और स्याह, सफ़ेद व सुन्दर में वाच्यलिङ्ग है यह १ बलदेव आदिका नाम है ॥ १४९ ॥

समूह, चढ़ाई, स्तोत्र, यज्ञ, समुदाय, टेढ़ा, आलसी.

पु. पु.
(शब्दादिपूर्वो वृन्देऽपि) ग्रामः (क्रान्तौ च) विक्रमः ।
पु. पु.
स्तोमः (स्तोत्रेऽध्वरे वृन्दे) जिह्मस्तु(कुटिलेऽलसे) १५० ॥

शब्दादिपूर्वक 'ग्राम' शब्द समुदाय का वाचक है जैसे कि 'शब्दग्रामः' आदि होते हैं अपिशब्द से स्वर और वसति यानी बस्ती को भी कहते हैं यह स्वर, बस्ती और समूह में पुंलिङ्ग है यह १ समुदाय आदि का नाम है । क्रान्तिमात्र यानी चढ़ाई करना अपिशब्द से पराक्रम को भी 'विक्रम' कहते हैं यह १ आक्रमण आदि का नाम है । स्तोत्र, यज्ञ और समूह ये 'स्तोम' कहलाते हैं यह स्तव, याग, समुदाय, मत्था और लोहदण्ड में पुंलिङ्ग है यह १ स्तोत्र आदि का नाम है और टेढ़ा, आलसी व अभागी को 'जिह्म' कहते हैं यह कुटिल व मन्द में पुंलिङ्ग और तगर के वृक्ष में नपुंसक है यह १ वक्र आदिका नाम है ॥ १५० ॥

ग्रीष्म, घाम आदि, हाव, भ्रान्ति, सीहा, गुच्छा, फ़ौज, बहिन, भौजाई, देवरानी, जेठानी आदि, पृथ्वी, सहनशीलता, योग्य, समर्थ, हितैषी.

"(उष्णेऽपि) घर्म (श्चेष्टालंकारे भ्रान्तौ च) विभ्रमः ।" (पु. पु.)

गुल्मा (रुक्स्तम्बसेनाश्च) जामिः (स्वसृकुलस्त्रियोः) । (पु. स.)

(क्षितिक्षान्त्योः) क्षमा (युक्ते) क्षमं (शक्ते हिते त्रिषु) १५१ (स. न.)

ग्रीष्मऋतु, अपिशब्द से पसीना, घाम और गरमको भी 'घर्म' कहते हैं । यह घाम, ग्रीष्म, गरम और पसीना के जलमें पुंलिङ्ग है यह १ गरम आदि का नाम है । शरीर के व्यापार से अलंकार देखलाना यानी युवतीगणों का नखरा, चोंचला, रावचाव, हावभाव आदि, और भ्रान्ति को 'विभ्रम ‡' कहते हैं यह शोभा, संशय और हाव में पुंलिङ्ग है यह १ तावभाव आदि का नाम है । उदररोग या पिलही, वृक्षों की पींड़ या कुशआदिकों का गुच्छा, फौज विशेष चशब्द से घटवारी और सैन्यरक्षण ये 'गुल्म' कहलाते हैं यह पींड़, पिलही, घाटकी उतराई, सेना और सैन्यरक्षण में पुंलिङ्ग है यह १ सीहा आदि का नाम है । बहिन और कुल की बहुओं को जामि या यामि कहते हैं जैसे मनुजीने कहा है कि "यामयो यत्र शोचन्ति विनश्यत्याशु तत्कुलम्" जिस कुल में कुलाङ्गनायें शोच करती हैं वह कुल शीघ्रही नष्ट होजाता है यह १ भगिनी आदिका नाम है । पृथ्वी और सहनशीलता को 'क्षमा' कहते हैं, योग्य में 'क्षमम्' यह नपुंसक या अव्यय है और पराक्रम व हितैषी में 'क्षम' कहाजाता है यह त्रिलिङ्ग है परन्तु धरणीकोष में भी कुछेक भेद पायाजाता है जैसे कि तितिक्षा और पृथ्वी में क्षमा स्त्रीलिङ्ग और योग्य, समर्थ

‡ मदरागहर्षजनितो विपर्यासोविभ्रमः यथा अनिमित्तमासनादुत्थायान्यत्र गमनम्, प्रियारब्धकथामाक्षिप्य सख्यासहालापनम्, मुधैव रुषितक्रोधौ, पुष्पादीनां याच्ञा सहसैव तत्परित्यागः, वस्त्राभरणमाल्यानामकारणतः खण्डनम्, मननं चेति । योषितां यौवनजोविकारो विभ्रम इत्येके ॥

तथा हित या हितैषी में 'क्षम' नपुंसक है यह १ पृथ्वी आदिका नाम है ॥१५१॥

हरा, काला, पु.स.न. स.
श्यामलता, हल्दी या रात, **(त्रिषु)श्यामौ(हरित्कृष्णौ)श्यामा(स्याच्छारिवा निशा)।**
पूंछ, भाल का न.
चित्र, घोड़े का गहना, प्रधान और निशान. **ललामं (पुच्छपुण्ड्राश्वभूषाप्राधान्यकेतुषु) ॥ १५२ ॥**

हरारंग और कालारंग इन दोनोंको 'श्याम' कहते हैं यह प्रयागका वटवृक्ष, मेघ, वृद्धदारु, पपीहा, काला और हरा इनमें पुंलिङ्ग तद्वान् में त्रिलिङ्ग और मिरच व सेंधानोन में नपुंसक है यह १ हरारंग आदि का नाम है । श्यामलता, हल्दी या रात्रि को 'श्यामा' कहते हैं यह कालीसर या गौरीसर, सोलह वर्ष की स्त्री, काकुनि, यमुना, रात्रि, कालानिशोथ और नीलिका में स्त्रीलिङ्ग है यह १ शारिवा आदि का नाम है और पूंछ, घोड़े आदिकों के भाल का चित्र, घोड़े का गहना प्रधान और पताका इनको 'ललाम' कहते हैं यह नान्त भी है जैसे रुद्रकोष में कहाहै कि, प्रधान, ध्वजा, सींग, घोड़े के माथेका चित्र, पूंछ, निशान, गहना और प्रधान घोड़ा ये 'ललाम' या 'ललामन्' कहलाते हैं इसीसे "कन्याललामकमनीयमजस्य लिप्सोः" यह रघुवंश काव्य का वचन भी संगत होता है यह १ पूंछ आदि का नाम है ॥ १५२ ॥

न.
लिङ्गशरीर, आदि, प्रधान, **सूक्ष्म(मध्यात्मम)(म्यादौ प्रधाने)प्रथम(स्त्रिषु) ।**
सुन्दर,प्रतिकूल, पु.स.न. पु.स.न.
न्यून, निन्दित. **वामौ (वल्गुप्रतीपौ द्वा) वधमौ (न्यूनकुत्सितौ)॥१५३॥**

अध्यात्म यानी लिङ्गशरीर अपिशब्द से कपट आदि को 'सूक्ष्म' कहते हैं एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, छल व अध्यात्म में 'सूक्ष्म' नपुंसक, अग्नि में पुंलिङ्ग और अल्प में त्रिलिङ्ग है यह १ अध्यात्म आदि का नाम है । आद्य और प्रधान को 'प्रथम' कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है ऐसेही मेदिनीकोष में भी कहा है कि आदि और मुख्य में 'प्रथम' वाच्यलिङ्ग है यह १ आदि व प्रधान का नाम है इसक बाद वगसमाप्तिपर्यन्त "त्रिषु" इसका अधिकार कियाजाता है । मनोरम और प्रतिकूल ये दोनों 'वाम ‡' कहलाते हैं ऐसेही विश्वकोष में भी कहा है कि बायां अङ्ग, प्रतीप, धन, बड़ासुन्दर, स्तन, शिव और कामदेव में 'वाम' नपुंसक और कामिनी में 'वामा' स्त्रीलिङ्ग है तथा सियारिन, घोड़ी, गदही व हथिनी में 'वामी' होता है यह १ मनोहर आदि का नाम है और न्यून व निन्दित ये दोनों 'अधम' कहलाते हैं यह १ ऊन आदि का नाम है ॥ १५३ ॥

‡ "वामः कामे सव्ये पयोधरे । उमानाथे प्रतीकूले चारौ वाम्म तु योषिति" (इति हैमः) ॥

पु.स.न.
जीर्ण, खाकर त्याग किया. (जीर्णं च परिभुक्तं च) यातयाम (मिदंद्वयम्) ।

इति मान्ताः ॥

पुराना या परिणाम को प्राप्त और खाकर त्याग कियाहुआ ये दोनों ' यातयाम ' कहलाते हैं यह त्रिलिङ्ग है ऐसेही मेदिनीकोष में कहाहै कि जो पचगयाहो और जो भोजन करके छोड़ागयाहो इन दोनों में ' यातयाम ' वाच्यलिङ्ग है यह १ जीर्ण आदि का नाम है ॥

इति मान्ताः ॥

अथ यान्ता व्याख्यायन्ते ।

घोड़ा, गरुड़, पु. पु.
घर, कमतीहोना या अपहार. (तुरंगगरुडौ) तार्क्ष्यौ (निलयापचयौ) क्षयौ ॥ १५४ ॥

घोड़ा और गरुड़ ये दोनों ' तार्क्ष्य ' कहलाते हैं एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, घोड़ा, सांप, सूर्यका सारथी, और गरुड़ में ' तार्क्ष्य ' पुंलिङ्ग और रसौंत में नपुंसक है यह १ घोड़े आदि का नाम है और घर व अपहार (कमतीहोना) को ' क्षय ' कहते हैं यह क्षयीरोग, घर, कल्पान्त और अपचय में पुंलिङ्ग है यह १ घर आदि का नाम है ॥ १५४ ॥

देवर, साला, पु. पु.
भतीजा, वैरी, श्वशुर्यौ (देवरश्यालौ) भ्रातृव्यौ(भ्रातृजद्विषौ) ।
गर्जताहुआमेघ, पु. पु.
इन्द्र, प्रभु, बनियां. पर्जन्यौ(रसदब्देन्द्रौ)स्यादर्यः(स्वामिवैश्ययोः)॥१५५॥

पतिका छोटाभाई, (देवर) और पत्नीका भाई (साला) ये दोनों ' श्वशुर्य ' कहलाते हैं यह १ देवर आदि का नाम है । भाई का बेटा (भतीजा) और वैरी इनको ' भ्रातृव्य ' कहते हैं । यह १ भतीजा आदि का नाम है । गर्जता हुआ मेघ या मेघोंकी गर्जना और इन्द्र को ' पर्जन्य ' कहते हैं यह १ गर्जते हुए मेघ आदि का नाम है । स्वामी (मालिक) और बनियां ये दोनों ' अर्य ' कहलाते हैं यह १ स्वामी आदि का नाम है ॥ १५५ ॥

पुष्यनक्षत्र, क- पु. पु.
लियुग, अवसर, क्रम, आधीन, तिष्यः (पुष्ये कलियुगे) पर्यायो (ऽवसरे क्रमे) ।
सौगन्द, ज्ञान, पु.
विश्वास, हेतु, छेद, शब्द, प्रत्ययो (ऽधीनशपथज्ञानविश्वासहेतुषु ॥ १५६ ॥
बहुत काल की पु.
शत्रुता, पीछे से पछिताना. रन्ध्रे शब्दे) ऽथानुशयो (दीर्घद्वेषानुतापयोः) ।

पुष्यनक्षत्र और कलियुग को 'तिष्य' कहते हैं यह कलियुग व पुष्यनामक नक्षत्र में पुंलिङ्ग और धात्री में स्त्रीलिङ्ग है यह १ पुष्य आदि का नाम है । अवसर या अवकाश और क्रम यानी कल्पविधान या पद्धति, ये दोनों 'पर्याय' कहलाते हैं यह प्रकार, निर्माण, अवसर, और क्रम यानी रीति, परिपाटी या सिलसिला और नामान्तर (उर्फ़) इनमें पुंलिङ्ग है यह १ अवसर आदि का नाम है । अधीन, सौगन्द ज्ञान, विश्वास, कारण, छेद और शब्द इनको 'प्रत्यय' कहते हैं अधीन में जैसे कि "राजप्रत्यया: प्रजा:" राजा के अधीन प्रजा हैं । विश्वास में जैसे कि, "न शत्रोः प्रत्ययं गच्छेत्" वैरी का विश्वास न करै । हेतु में जैसे कि "गार्हस्थ्यं भार्याप्रत्ययम्" भार्या के लिये गार्हस्थ्य है और शब्द में जैसे कि "चिकीर्षति" यहां 'सन्' प्रत्यय होता है एवं विश्वकोष में भी कहा है कि सौगन्द, छेद, विश्वास, आचार, हेतु, प्रसिद्धता, सन्–यङ्–णिच् आदि और अधीन व ज्ञान ये 'प्रत्यय' कहलाते हैं यह १ अधीन आदि का नाम है और महाद्वेष या बहुत कालकी शत्रुता व पश्चात्ताप को 'अनुशय' कहते हैं यह द्वेष, पीछे से पछिताना और अनुबन्ध यानी मेल, मिलाप, धातुका गणसूचक पूर्व पर नश्वर अक्षर इनमें पुंलिङ्ग है यह १ दीर्घद्वेष आदि का नाम है ॥ १५६ ॥

असंपूर्णता, हाथियों की मध्यमगति, पु. **स्थूलोच्चय(स्त्वसाकल्ये गजानां मध्यमे गते) ॥१५७॥**

सौगन्द, आचार, काल, सिद्धान्त, पु. **समयाः(शपथाचारकालसिद्धान्तसंविदः) ।**

सुभाषा, व्यसन, अशुभ, दैव, विपत्ति. पु. **(व्यसनान्यशुभं दैवं विपदि) त्यनया (स्त्रयः) ॥ १५८॥**

असंपूर्णता और हाथियों की मध्यमचाल यानी "जो न शीघ्रहो न मन्दहो" इनको 'स्थूलोच्चय' कहते हैं यह असाकल्य, गाल, हाथी का गाल, पत्थर, पिटारा, पिटारी और डब्बा में भी पुंलिङ्ग है यह १ असमग्र आदि का नाम है । सौगन्द, धर्मशास्त्रोक्त व्यवहार, यमराज, काल, सिद्धान्त और संभाषा यानी अच्छी रीति से बातचीत करना ये 'समय' कहलाते हैं यह सौगन्द, आचार, सिद्धान्त, बुद्धि, काम करनेवाला, निर्देश (आज्ञा या हुक्म) संकेत, काल और भाषा में पुंलिङ्ग है यह १ शपथ आदि का नाम है । वेश्या आदिकों में रमण करना, जूआ खेलना, मद्य पीना, दिनको बहुत सोना, झूठ बोलना आदि व्यसन हैं, अशुभ ‡ दैव और विपदा ये तीनों 'अनय' कहलाते हैं यह १ व्यसन आदिका नाम है ॥ १५७ । १५८ ॥

‡ "निःस्वोऽभूदनयेन सः ।" बुरे भाग्य से वह धनहीन (कंगाल) होगया ॥

उल्लंघन, कष्ट, पु.
दोष, दण्डदेना, आपदा, लड़ाई, आनेवालाकाल, श्वशुर आदि.

अत्यय। (ऽतिक्रमे कृच्छ्रे दोषे दण्डेप्यथापदि)।
पु. पु.
(युद्धायत्याः) संपरायः पूज्य (स्तु श्वशुरेऽपि च)॥ १५६॥

उल्लङ्घन या वीरकारणमें जाना, कष्ट, या आचारविशेष, अवगुण, अपराध या वातपित्तकफात्मक दोष, दण्ड देना या लाठी अपिशब्द से महोत्पात और नाश या विध्वंस इनको ' अत्यय ' कहते हैं यह अतिक्रम, कष्ट, अत्युत्पात, विनाश और दण्ड में पुंलिङ्ग है यह १ अतिक्रम आदि का नाम है । आपदा, युद्ध और उत्तर काल (आनेवाला काल) ये ' संपराय ' कहलाते हैं यह लड़ाई, विपत्ति और आगामी काल में पुंलिङ्ग है यह १ आपदा आदि का नाम है और श्वशुर यानी पतिका पिता व पत्नी का पिता अपिशब्द से पूजायोग्य इनको ' पूज्य ' कहते हैं यह १ पूजनीय आदि का नाम है ॥ १५६ ॥

सेना पृष्ठभागस्थ सेना, समूह, समुदाय, अच्छा बासस्थान, विश्वास, मांगना, प्रेम, बैर, उँचाई, जिसका जो जानागया, शब्द, स्पर्श आदि.

पु.
(पश्चादवस्थायिबलं समवायश्च) संनयौ ।
पु. पु.
(संघाते सन्निवेशे च)संस्त्यायः प्रणया(स्त्वमी)॥१६०॥
पु.
(विस्रम्भयाच्ञाप्रेमाणो) (विरोधेऽपि) समुच्छ्रयः ।
पु.
विषयो (यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि)॥ १६१ ॥

सेना के पीछे रहनेवाली सेना और समूह को ' सन्नय ' कहते हैं यह १ सेना पृष्ठवर्तिनी सेना आदि का नाम है। समुदाय, नरकभेद, या अच्छी रीति से मारना, और पुरआदि के बाहर का देश या अच्छा बासस्थान चशब्द से विस्तार या बड़ाई ये ' संस्त्याय ' कहलाते हैं यह संनिवेश, संघात और विस्तार में पुंलिङ्ग है यह १ समुदाय आदि का नाम है । विश्वास, प्रत्यय या केलि कलह, मांगना, प्रेम, प्रीति या स्नेह ये तीनों ' प्रणाय ' कहलाते हैं यह पसार, प्रेम, याचना, विश्वास और निर्वाण में पुंलिङ्ग है यह १ विस्रम्भ आदि का नाम है । वैर और अपिशब्द से उंचाई को भी ' समुच्छ्रय ' कहते हैं यह १ विरोध आदि का नाम है और प्रबन्ध से जिस प्राणी का जो पदार्थ जानागया हो या नित्य सेवित हुआ हो एवं शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध तथा अपिशब्द से देश, ग्राम, लोक, जाति, क़ौम और जनस्थान ये ' विषय ' कहलाते हैं यानी " जिसका मन जिसमें लगगया हो, चीज़, वस्तु, पदार्थ. जो चीज़ इन्द्रियों से जानीजावे (जैसे कि रङ्ग, रूप, रस, सुगन्ध, शब्द, स्पर्श) काम, बात, भोगविलास, बाबत, वास्ते और लिये आदि ये सबही

' विषय ' कहलाते हैं " एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, गोचर, देश, जनपद, प्रबन्ध से जिसका जो पदार्थ जानागया हो वहां और रूपआदिकों में भी पुंलिङ्ग है यह १ गोचर आदि का नाम है ॥ १६० । १६१ ॥

कसैला, काढ़ा या गोंद, समाज, (निर्यासेऽपि)कषायो(ऽस्त्री) (सभायां च)प्रतिश्रयः । (पु. पु.)
बाहुल्य, अन्त-गति, दीनता, यज्ञ, कोप. प्रायो(भूम्न्यन्तगमने) मन्यु (र्दैन्ये क्रतौ क्रुधि) १६२॥ (पु. पु.)

काढ़ा या गोंद और अपिशब्द से कसैलारस, अङ्गराग, विलेपन, सुगन्ध और लालवर्ण ये ' कषाय ' कहलाते हैं एवं विश्वकोष में भी कहा है कि रसभेद, अङ्ग-राग, विलेपन और गोंदमें ' कषाय ' पुंलिङ्ग है और सुरभि व लोहित में वाच्य-लिङ्ग है यह १ गोंद आदि का नाम है । समाज, चशब्द से अङ्गीकार और ' आश्रय ' इनको ' प्रतिश्रय ' कहते हैं । यह सभा, आश्रय और स्वीकार में पुंलिङ्ग है यह १ समाज आदि का नाम है । बाहुलता, अन्तगति (मौत) अनशन (विना भोजन रहना) और समानता ये ' प्राय ' कहलाते हैं यह अनशन, मृत्यु, बाहुल्य और तुल्य में पुंलिङ्ग है यह १ बहुतायत आदि का नाम है और दीनता, यज्ञ, कोप और शोक को ' मन्यु ' कहते हैं यह क्रोध, दीनता, शोक और याग में पुंलिङ्ग है यह १ दैन्य आदि का नाम है ॥ १६२ ॥

गोप्य, लिङ्ग, भग, सौगन्द, सही या ठीक, (रहस्योपस्थयो)र्गुह्यं सत्यं(शपथतथ्ययोः) । (न. न.)
बल, प्रभाव, शुभ, पृथ्वी आदि. वीर्य(बले प्रभावे च)द्रव्यं(भव्ये गुणाश्रये) ॥ १६३ ॥ (न. न.)

गोपनीय या एकान्त की सलाह, भग और लिङ्ग को ' गुह्य ' कहते हैं यह रहस्य व उपस्थ में नपुंसक और कछुआ व कपट में पुंलिङ्ग है यह १ गोप्य आदि का नाम है । सौगन्द, सही—सचाई, ठीक, यथार्थ, निश्चय और पहले युगको भी ' सत्य ' कहते हैं यह पहला युग, सौगन्द सत्यलोक और सचाई में नपुंसक होकर सत्यवान् में त्रिलिङ्ग है यह १ शपथ आदि का नाम है । शूरता या सामर्थ्य और प्रताप या तेजोविशेष चशब्द से शुक्र (बीज) को भी ' वीर्य ' कहते हैं यह प्रभाव, शुक्र, तेज और सामर्थ्य में भी नपुंसक है यह १ बल आदि का नाम है और शुभ, सत्य या जीव और पृथिवी आदि तथा धनको भी ' द्रव्य ' कहते हैं यह धन, सत्य, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा, मन, पीतल, औषध, विलेप, लाख और द्रुमविशेष (कमरख) में नपुंसक है यह १ भव्य आदि का नाम है ॥ १६३ ॥

१ बाहुल्ये यथा " प्रायेण ब्राह्मणा भोज्याः " अन्तगतौ यथा " प्रायोपवेशः कृतः " (इत्यग्निवेशः) ॥

ठिकाना, घर, नक्षत्र, आगी, शुभाशुभ कर्म, न. न. **धिष्ण्यं(स्थाने गृहे भेऽग्नौ) भाग्यं(कर्म शुभाशुभम्) ।**
कसेरू वा सोना, यज्ञदन्ती या दन्तीवृक्ष आदि. न. स. **(कशेरुहेम्नो)गाङ्गेयं विशल्या (दन्तिकाऽपि च) ॥१६४॥**

ठांव-ठौर-ठिकाना या टिकाश्रय, घर, नक्षत्र और आगी को 'धिष्ण्य' कहते हैं—यह स्थान, आगी, घर, शक्ति और नक्षत्र में नपुंसक है यह १ स्थान आदि का नाम है । पूर्वजन्मका कियाहुआ शुभाशुभ कर्म और ऐश्वर्य को भी 'भाग्य' कहते हैं यह भलेदैव और शुभाशुभ कर्म में नपुंसक है यह १ भले बुरे कर्म आदि का नाम है । 'कशेरु' अपने नाम से विख्यात तृणकन्दविशेष और सोना ये दोनों 'गाङ्गेय' कहलाते हैं यह भीष्मपितामह में पुंलिङ्ग और सोना तथा कशेरुवा में नपुंसक है यह १ कशेरु आदि का नाम है और दन्तीवृक्ष अपिशब्द से अग्निशिखा "कलिहारी या चौराई का शाक" चशब्द से गिलोय और त्रिपुटा यानी बेलाका पेड़, छोटी इलायची, निसोथ, कनफोड़ा बेल, बड़ी इलायची और लाल निसोथ को 'विशल्या' कहते हैं एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, अग्निशिखा, दन्तिकावृक्ष, गुडूची और त्रिपुटा ये 'विशल्या' कहलाते हैं यह १ दँतियावृक्ष आदि का नाम है ॥ १६४ ॥

लक्ष्मी, पार्वती, नाम, शोभा, आरम्भ आदि. स. स. **वृषाकपायी(श्रीगौर्यो) रभिख्या (नामशोभयोः) ।**
(आरम्भोनिष्कृतिः शिक्षा पूजनं संप्रधारणम् ॥१६५॥
उपायः कर्म चेष्टा च चिकित्सा‡ च नव) क्रियाः ।

लक्ष्मी और पार्वती को 'वृषाकपायी' कहते हैं । यह रमा, उमा, शतावरी, बांदा या गिलोय में स्त्रीलिङ्ग है यह १ लक्ष्मी आदि का नाम है । नाम और शोभा को 'अभिख्या' कहते हैं यह अभिधान, शोभा और कीर्त्ति में भी स्त्रीलिङ्ग है यह १ अभिधान आदि का नाम है और प्रारम्भ, प्रायश्चित्त, अभ्यास या वर्णोच्चारणकी विधि, पूजन, विचार, सामआदि उपाय, काम=धन्धा, धर्मसम्बन्धी काम, पहले जन्म में कियाहुआ या कर्मकारक, उद्यम, उद्योग या शरीरका व्यापार और औषध करना या इलाज से रोगों को दूरकर चंगा करदेना ये ६ क्रियापदवाच्य कहलाते हैं । आरम्भ में जैसे कि "राजा लोगों की सारी क्रियायें 'मन्त्रमूल' होती हैं" प्रायश्चित्त में जैसे कि, "महापापी पुरुषों की क्रिया 'प्राणा-

---

‡ "या क्रिया व्याधिहरणी सा चिकित्सा निगद्यते । दोषधातुमलानां या साम्यकृत्सैव रोगहृत् ॥" (इति भावप्रकाशः) ॥

न्तिका ' कहलाती है शिक्षा में जैसे कि, " सत्पात्र में रक्खीहुई क्रिया फलतीही है" पूजा में जैसे कि, यह तपस्वी देव क्रिया में परायण रहता है " विचार में जैसे कि, " विना क्रियाके कृत्य को कौन जानसक्ता है " उपाय में जैसे कि, " साम आदि सात क्रियायें हैं " कर्म में जैसे कि " विना क्रिया के सुख कहां है " चेष्टा में जैसे कि, " विना कामका था इसलिये मरगया " चिकित्सा (मालजा) में जैसे कि " पहले ज्वरके उत्पन्न होनेपर ज्वरके अनुकूल ही क्रिया करनी चाहिये " यह कर्म, चेष्टा, करण, विचार, आरम्भ, उपाय, शिक्षा, चिकित्सा और प्रायश्चित्त में भी स्त्रीलिङ्ग है" यह १ आरम्भ आदि का नाम है ॥ १६५ ॥

सूर्यपत्नी, शोभा, स. प्रतिबिम्ब, घाम का अभाव, — छाया(सूर्यप्रिया कान्तिः प्रतिबिम्बमनातपः) ॥ १६६ ॥

धनियों के व स. राजाओं के मन्दिरोंकीडयोढ़ी, करधनी, हाथी का कमरबन्ध, — कक्ष्या(प्रकोष्ठे हर्म्यादेः काञ्च्यां मध्येभबन्धने) ।

स. क्रिया, तामसी देवता आदि. — कृत्या(क्रियादेवतयोस्त्रिषु भेद्येधनादिभिः) ॥ १६७ ॥

सूर्यपत्नी, शोभा, प्रतिबिम्ब और प्रकाश या घामका अभाव ये चारो छाया पदवाच्य कहलाते हैं सूर्यपत्नी में जैसे कि " छायापुत्रः शनैश्चरः " शनैश्चर छाया का पुत्र है । कान्ति में जैसे " विच्छायः " प्रतिबिम्ब में जैसे " संछायः आदर्शः " शीशा संछायावाला है यानी जिसमें प्राणियों का अपना रूपान्तर भासता है अनातप में जैसे " नष्टच्छायो मध्याह्नः " नष्ट छायावाली दुपहर है एवं मेदिनीकोष में कहा है कि घामका अभाव, प्रतिच्छाय और सूर्य की पत्नी में छाया स्त्रीलिङ्ग है यह १ सूर्यप्रिया आदि का नाम है । धनी लोगों के घर या राजमन्दिर के प्रकोष्ठ (डयोढ़ी) स्त्रियों की करधनी और हाथी के कमर का बन्धन इनको ' कक्ष्या ' कहते हैं यह कांछा, करधनी, करिकटबन्धन और हर्म्यादिकों के प्रकोष्ठ में स्त्रीलिङ्ग है यह १ हर्म्यादिकों के प्रकोष्ठ आदि का नाम है । कर्म और देवताविशेष को ' कृत्या ' कहते हैं जैसे कि भागवत में कहा है कि, " तया स निर्ममे तस्मै कृत्यां कालानलोपमाम् " और क्रिया में जैसे " कां कां कृत्यामकार्षीः " तुमने किस २ क्रिया को किया । धन, स्त्री, भूमि आदिकों से जो भेदन करने योग्य हैं या पराये राज्य में पुरुष आदि भेदन किये जाते हैं वहां ' कृत्या ' त्रिलिङ्ग है यानी वाच्यलिङ्ग कहाजाता है एवं रभसकोष में भी कहा है कि विद्वेषी व कार्य में कृत्या पुंलिङ्ग है और क्रिया व तामसी देवता आदिकों में स्त्रीलिङ्ग है यह १ क्रिया आदि का नाम है ॥ १६६ । १६७ ॥

पु.स.न. पु.स.न.
झगड़ा,युद्धादि, चरम, अधम, निन्दित,अधीन, संनद्ध, नीरोग. **जन्यः (स्याज्जनवादेऽपि) जघन्यो(ऽन्तेऽधमेऽपि च)।**
पु.स.न. पु.स.न.
(गर्ह्याधीनौ च)वक्तव्यौ कल्यौ(सज्जनिरामयौ)॥१६८॥

जनोंका वाद या निन्दितवाद और अपिशब्द से युद्ध आदिको 'जन्य' कहते हैं यह माताकी सखी, बहूवरकी प्यारी (सहबाली आदि) व मातामें स्त्रीलिङ्ग, पिता में पुंलिङ्ग निर्वाद व युद्ध में नपुंसक है एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, "जन्यं हट्टे परीवादे संग्रामे च नपुंसकम्" हटिया, हाट या बाज़ार, परीवाद और लड़ाईमें नपुंसक है यह १ जनवाद आदि का नाम है। अन्त (चरम) या अन्त्य (चाण्डाल) और अधम अपिशब्दसे शूद्र, पुरुषका लिङ्ग व गर्वित को भी जघन्य कहते हैं यह चरम व लिङ्ग में नपुंसक व निन्दित में वाच्यलिङ्ग है यह १ अन्त आदि का नाम है। अधम या पामर और अधीन चशब्द से वचनके योग्य को भी 'वक्तव्य' कहते हैं यह निन्दित व हीन में नपुंसक और वचनार्ह में वाच्यलिङ्ग है यह १ निन्द्य आदि का नाम है। बख़्तर आदि को बांधे हुए और नीरोगी ये दोनों 'कल्य' कहलाते हैं यह प्रभातकाल में नपुंसक, गूंगा, बहिरा, सन्नद्ध, नीरोग, दक्ष, कल्याणवचन व उपाय वचन में त्रिलिङ्ग और मद्य (शराब या बरांडी) में स्त्रीलिङ्ग है यह १ सज्ज आदि का नाम है॥ १६८॥

पु.स.न. पु.स.न.
ज्ञानी, धनी, सुन्दर, अच्छा रूप, प्रियवादी. **(आत्मवाननपेतोऽर्था)दर्थ्यौ पुण्य(न्तु चार्वपि)।**
पु.स.न. पु.स.न.
रूप्यं(प्रशस्ते रूपेऽपि) वदान्यो(वल्गुवागपि)॥ १६९ ॥

आत्मज्ञानी और धनी को 'अर्थ्य' कहते हैं यह विज्ञ, अर्थशाली, बुध और न्याय में वाच्यलिङ्ग तथा शिलाजीत में नपुंसक है यह १ धीमान् आदि का नाम है। सुन्दर अपिशब्द से सुकृत और धर्म ये 'पुण्य' कहलाते हैं यह मनोज्ञ में वाच्यलिङ्ग व सुकृत और धर्म में नपुंसक है यह १ मनोहर आदि का नाम है। अच्छारूप, अपिशब्द से गढ़ाहुआ सोना व चांदी और चांदीमात्र को भी 'रूप्य' कहते हैं यह सुन्दर में त्रिलिङ्ग और गढ़ेहुए सोने व चांदी में नपुंसक है यह १ भले रूप आदि का नाम है। मनोहरवादी या वाग्मी (उत्तम बोलनेवाला) और अपिशब्द से दाता ये दोनों 'वदान्य' कहलाते हैं यह पूर्वोक्त अर्थों में वाच्यलिङ्ग है यह १ वल्गुभाषी या प्रियवादी आदि का नाम है॥ १६९॥

पु.स.न. पु.स.न.
योग्य, सुन्दर, सोम देवता वाला. **(न्याय्येऽपि) मध्यं सौम्यं (तु सुन्दरे सोमदैवते)।**

इति यान्ताः॥

उचित या युक्त अपिशब्द से अवलग्न, अन्तर और अधम ये 'मध्य' कहलाते हैं यह पूर्वोक्त अर्थों में वाच्यलिङ्ग है। ऐसेही रभसकोष में भी कहा है कि उचित व अवलग्न में नपुंसक, अन्तर और अधम में त्रिलिङ्ग है यह १ न्याय्य आदि का नाम है। सुन्दर मनोहर या प्रियदर्शन और जिसका चन्द्रमा देवता है उस हविष्य को भी 'सौम्य' कहते हैं यह बुध, मनोज्ञ, अनुगामी और चन्द्रदैवत में वाच्यलिङ्ग है यह १ सुन्दर आदि का नाम है ॥

इति यान्ताः ॥

अथ रान्ता व्याख्यायन्ते ।

समूह, प्रसंग, पत्थर, यज्ञ, — पु. (निवहावसरौ) वारौ पु. संस्तरौ (प्रस्तराध्वरौ) ॥ १७० ॥

बृहस्पति, पिता आदि, युग, संशय, भेद, सादृश्य, आकार, चेष्टित. — पु. गुरू (गीष्पतिपित्राद्यौ) पु. द्वापरौ (युगसंशयौ) ।
पु. प्रकारौ (भेदसादृश्ये) पु. आकारा (विङ्गिताकृती) ॥ १७१ ॥

समुदाय और अवसर यानी प्रसंग ये दोनों 'वार' कहलाते हैं यह इतवार आदि दिवस, अवसर, समूह, पुष्पवृक्ष विशेष, और हरद्वार में पुंलिङ्ग होकर मदिरा के पात्र में नपुंसक है यह १ समूह आदि का नाम है। पत्थर या शय्या और याग को 'संस्तर' कहते हैं यह कुशशय्या, यज्ञ, सावधान और आठ वसुओं में से दूसरा वसु इनमें पुंलिङ्ग है यह १ प्रस्तर आदि का नाम है। बृहस्पति, बाप और आदि शब्द से मन्त्रोपदेशक, शिक्षक, अध्यापक, माननीय, पूज्य और बड़े बूढ़े लोग तथा दुर्जर व दीर्घ आदि को भी 'गुरु' कहते हैं यह महान्–दुर्जर और अलघु में त्रिलिङ्ग तथा निषेक (गर्भाधान) आदि के करनेवाले पिता आदि व देवाचार्य में पुंलिङ्ग है यह १ देवमन्त्री आदि का नाम है। युग और संशय को 'द्वापर' कहतेहैं यह पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग है ऐसेही कोषान्तर में भी कहा है कि संदेह और युग में 'द्वापर' नपुंसक है यह १ युग आदि का नाम है। भेद और सादृश्य को 'प्रकार' कहते हैं जैसे कि प्याज का भेद गाजर है, सादृश्य में जैसे देवदत्त नामक पुरुष यज्ञदत्त के समान है यह तुल्य व भेद में पुंलिङ्ग है। इङ्गित (चेष्टित) संकेत, इशारा और आकृति को 'आकार' कहते हैं यह १ अभिप्राय के अनुरूप चेष्टित आदि का नाम है ॥ १७० । १७१ ॥

अनाज का अग्रभाग, बाण, धन्वा, पर्वत, वृक्ष, शैल, सूर्य, कुच, मेघ. — पु. किंशारू (धान्यशूकेषू) पु. मरू (धन्वधराधरौ) ।
पु. अद्रयो (द्रुमशैलार्काः) (स्त्रीस्तनाब्दौ) पु. पयोधरौ ॥ १७२ ॥

अनाज की दाढ़ी या यव आदि का तीखा अग्रभाग और बाण ये दोनों ' किंशारु ' कहलाते हैं यह । धान्यशूक, बाण और कङ्कपत्री में पुंलिङ्ग है यह १ धान्यशूक आदि का नाम है । निर्जलदेश या धनुष और पर्वत को भी ' मरु ' कहते हैं यह पर्वत और धन्वा में पुंलिङ्ग है यह १ चाप आदि का नाम है । वृक्ष, पर्वत और सूर्य ये ' अद्रि ' कहलाते हैं यह पहाड़, सूर्य और रूखों में पुंलिङ्ग है यह १ वृक्ष आदि का नाम है । नारियों के स्तन (कुच–या दूध) और मेघ ये दोनों ' पयोधर ' कहलाते हैं यह ईख, नारियल, स्तन, कसेरू और मेघमें पुंलिङ्ग है यह १ कुच आदि का नाम है ॥ १७२ ॥

अंधेरा, बैरी, पु. † पु.
दानव, भेट, हाथ, किरण, **(ध्वान्तारिदानवा) वृत्रा (बलिहस्तांशवः) कराः ।**
पराजय या पु.
तरङ्ग, बाण, बार, कोना आदि. **प्रदरा(भङ्गनारीरुग्बाणा) अस्राः (कचा अपि)॥१७३॥**

अंधेरा, वैरी और दानव को ' वृत्र ' या ' वृत्र ' कहते हैं यह वैरी, मेघ, अंधेरा, पर्वतभेद, और दानव में पुंलिङ्ग है । एवं हैमकोष में भी कहा है कि, " वृत्रो मेघे रिपौ ध्वान्ते दानवे वासवे गिरौ " मेघ, बैरी, अंधेरा, दानव विशेष, देवराज और पर्वत में ' वृत्र ' पुंलिङ्ग है यह १ अन्धकार आदि का नाम है । राजाका कर या पूजा भेट, हाथ, हाथी की सूंड और किरण को ' कर ' कहते हैं यह ओला, किरण, हाथ, महसूल आदि की आमदनी और हाथी की सूंड़ में पुंलिङ्ग है यह १ बलि=नैवेद्य भोग, भेट या कुर्बानी आदि का नाम है । पराजय, या लहर, स्त्रियों का रोग और बाण को ' प्रदर ' कहते हैं यह रोगभेद, विदारण करना या गड़हा बनाना बाण और तरङ्ग या भङ्ग में पुंलिङ्ग है यह १ पराजय आदि का नाम है । बाल या बार और अपि शब्द से कोना ये दोनों ' अस्र ' कहलाते हैं यह कोनों व कचों में पुंलिङ्ग होकर आँसू व लोहू में नपुंसक है यह १ बाल आदि का नाम है ॥ १७३ ॥

पु.
विना सींग का बैल, विनादाढ़ी मूछ का पुरुष, **(अजातशृङ्गो गौः कालेऽप्यश्मश्रुर्ना च) तूवरौ ।**
पु. पु.
सोना, धन, पलंग, परिवार. **(स्वर्णोऽपि) राः परिकरः (पर्यङ्कपरिवारयोः) ॥ १७४ ॥**

यौवन समय के आजाने पर जिस बैलके सींग न जमेहों और जिस पुरुष के दाढ़ी मूछ न आई हो यानी मकुना हो ये दोनों ' तूवर ' या ' तूपर ' कहलाते हैं

† " अर्थागमो भवेदायो भागधेयो बलिः करः " (इति हलायुधः) ॥

यह विना दाढ़ी मूछका पुरुष, विना सींग का बैल, व्यञ्जन को छोड़ेहुए पुरुष और कसैलारस इनमें पुंलिङ्ग है यह १ शृङ्गरहित बैल आदि का नाम है । सोना या काञ्चन अपिशब्द से धनमात्र को भी ' राः ' कहते हैं यह सुवर्ण और धनमें पुंलिङ्ग है यह १ स्वर्ण आदि का नाम है । पलंग और परिवार को ' परिकर ' कहते हैं यह समूह, पलंग, परिवार, कमरबन्द, विवेक=विचार, और आरम्भ में पुंलिङ्ग है यह १ शय्या आदि का नाम है ॥ १७४ ॥

शुद्धमोती, वायु, चितकबरा, प्रतिज्ञा, युद्ध, सुभाषा, आपदा.

पु. पु.
(मुक्ताशुद्धौ च)तारः स्याच्छारो (वायौ सतु त्रिषु ।
पु.
कर्बुरे)(ऽथ प्रतिज्ञाजिसंविदापत्सु) संगरः ॥ १७५ ॥

" मोती की संशुद्धता, चशब्द से नाविक, स्वच्छ मोती और चांदी आदि को ' तार ' कहते हैं यह मोती आदि की संशुद्धि, नाविक और शुद्ध मोती में पुंलिङ्ग, चांदी में नपुंसक अति ऊंचे स्वर या ॐकार ‡ में वाच्यलिङ्ग, तारा, सितारा, आँखों की पुतली, सुग्रीव और वृहस्पति की भार्या तथा बुद्धदेवी में स्त्रीलिङ्ग है यह १ शुद्ध मोती आदि का नाम है । वायु और चित्रविचित्र वर्ण को ' शार ' कहते हैं यह वायु में पुंलिङ्ग और चितकबरे में त्रिलिङ्ग है यह १ वायु आदि का नाम है । कर्त्तव्यका उपदेश—आज्ञा या अङ्गीकार, संग्राम, क्रियाकार या अच्छी रीति से कहना और आपदा ये ' संगर ' कहलाते हैं यह लड़ाई, आपदा, क्रियाकार और विष में पुंलिङ्ग होकर छिउँकरा के फल में नपुंसक है यह १ प्रतिज्ञा आदि का नाम है ॥ १७५ ॥

मन्त्रभाग, गुप्तवाद, सूर्य, यज्ञ, बाण, यज्ञस्तम्भ का टुकड़ा, गुह्येन्द्रिय, विष्ठादि.

पु. पु.
(वेदभेदे गुह्यवादे) मन्त्रो मित्रो (रवावपि) ।
पु. पु.
(मखेषु यूपखण्डेऽपि) स्वरु (गुंह्ये) ऽप्यवस्करः ॥ १७६ ॥

वेदों का भेद (संहिता) और गुप्तवाद या एकान्त में कर्त्तव्य का निश्चय करना (सलाह) इनको ' मन्त्र ' कहते हैं यह वेदविशेष, देवआदिकों का साधन और गुह्यवाद में पुंलिङ्ग है यह १ वेदांश आदि का नाम है । सूर्य अपिशब्द से स्नेही को ' मित्र ' कहते हैं यह सूर्य में पुंलिङ्ग और सुहृद् (दोस्त) में नपुंसकलिङ्ग है यह १ सूर्य आदि का नाम है । यज्ञ, बाण और यूपके गढ़ने में पहले गिराहुआ यूपका खण्ड (टुकड़ा) अपिशब्द से वज्र ये ' स्वरु ' कहलाते हैं यह

‡ " ध्रुवस्तारस्त्रिवृद्ब्रह्मा वेदादिस्तारकोऽव्ययः । प्रणवश्च त्रिमात्रोऽथ ॐकारो ज्योतिरादिमः ॥ १ ॥" (इति मातृकानिघण्टुः) तेन " ताराङ्कुरः सज्जनिरिति " श्रीधरप्रयोगोऽपि संगच्छते ॥

यूपखण्ड, वज्र, यज्ञ और बाण में पुंलिङ्ग है यह १ मख आदि का नाम है । उपस्थ (लिङ्ग–भग) अपिशब्द से विष्ठा को भी 'अवस्कर' कहते हैं यह १ गुह्येन्द्रिय आदि का नाम है ॥ १७६ ॥

मृदङ्गादिकों की ध्वनि, गजेन्द्रों की गर्जना, अभियोग, चौर्य, कवचादिधारण.

पु. आडम्बर(स्तूर्यरवे गजेन्द्राणां च गर्जिते) ।
पु. अभिहारो (ऽभियोगे च चौर्ये संनहनेऽपि च) ॥१७७॥

मृदङ्ग–मुरचंग आदि बाजाओं का शब्द, मतवाले हाथियों की गर्जना और चशब्द से समारम्भ को भी 'आडम्बर' कहते हैं यह समारम्भ, गजगर्जित और वाद्यध्वनि में पुंलिङ्ग है यह १ तूर्यरव आदि का नाम है । सामने आकर ग्रहण करना या चढ़ाई करना, चोरी करना और कवच आदिको पहिनना इनको 'अभिहार' कहते हैं यह पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्गहै यह१अभिग्रहण आदिका नामहै॥ १७७॥

परिजन, तलवारका म्यान, उपकरण, वृक्ष, मूठी परिमाण कुश, पीठाआदि आसन.

पु. (स्याज्जङ्गमे) परीवारः (खड्गकोशे परिच्छदे) ।
पु. विष्टरो(विटपी दर्भमुष्टिः पीठाद्यमासनम्) ॥ १७८ ॥

जङ्गम विशेष या परिजन, तलवार का ढकना या म्यान, उपकरण और सहायक कोभी 'परीवार' कहते हैं यह परिजन, खड्गकोश और पुरस्कर यानी उपयोगी वस्तु, साज, बिछौना आदिकों में भी पुंलिङ्ग है यह १ जङ्गम आदिकों का नामहै । वृक्ष, मूठीभर कुश और पीढ़ा आदि आसन तथा आद्यशब्द से कालामृगचर्म ये 'विष्टर' कहलाते हैं जैसे कहा है कि "पञ्चाशता भवेद् ब्रह्मा तदर्धेन तु विष्टरः" पचास कुशों का ब्रह्मा और पचीस कुशों का विष्टर कहाजाता है यह १ वृक्ष आदि का नाम है ॥ १७८ ॥

दरवाज़ा, द्वारपाल, ड्योढ़ीदारिन, विशाल, नेवला, विष्णु, पीलारंग.

पु. स. (द्वारि द्वाःस्थे) प्रतीहारः (प्रतीहार्यप्यनन्तरे) ।
पु. (विपुले नकुले विष्णौ)बभ्रुः(स्यात्पिङ्गले त्रिषु) ॥१७९॥

दरवाज़ा और द्वारपाल को 'प्रतीहार' कहते हैं और अपिशब्द से निकट व्यवधानरहित द्वारपालिका (ड्योढ़ीदारिन) भी 'प्रतीहारी' कहलाती है यह द्वार व द्वारपाल में पुंलिङ्ग और घरके भीतरी ड्योढ़ीदारिन में स्त्रीलिङ्ग है यह १ द्वारपाल आदि का नाम है । विशाल, नेवला, या बड़ा नेवला, विष्णु और पिङ्गल को 'बभ्रु' कहते हैं यह नेवला विष्णु और विपुल में पुंलिङ्ग है और पीतवर्ण

का वाची त्रिलिङ्ग है एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, " बभ्रुर्विशाले नकुले कृशानावजे मुनौ शूलिनि पिङ्गले च " त्रिशाल, नेवला, आगी, ब्रह्मा, मुनिविशेष, महादेव और पिङ्गल ये ' बभ्रु ' कहलाते हैं यह १ विपुल आदि का नाम है॥१७६॥

सामर्थ्य, स्थिरांश, न्याय्य, श्रेष्ठ, जूआरी, बाजी, जूआ. पु. सारो (बले स्थिरांशे च न्याय्ये क्लीबं वरे त्रिषु) । पु. दुरोदरो(द्यूतकारे पणे) (द्यूते) न. दुरोदरम् ॥ १८० ॥

मोटाई-सामर्थ्य या फ़ौज, वृक्षादिकों का स्थिरांश या हीर, न्याययुक्त और श्रेष्ठ ये ' सार ' कहलाते हैं यह बल और स्थिरांश में पुंलिङ्ग, न्याय्य में नपुंसक और वर में त्रिलिङ्ग है एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, बल, स्थिरांश, मज्जा, जल, धन, न्याय्य और वरको ' सार ' कहते हैं यह बल, हीर और मज्जा में पुंलिङ्ग, जल, धन और न्याय्य में नपुंसक तथा श्रेष्ठ में त्रिलिङ्ग है यह १ बल आदि का नाम है। जूआ करानेवाला, मूल्य या धन और जूआ को दुरोदर या दरोदर कहते हैं यह द्यूतकार और बाजी में पुंलिङ्ग और जूआ में नपुंसक है यह १ द्यूतकार आदि का नाम है ॥ १८० ॥

महावन, दुर्गम मार्ग, परसम्पत्ति का नहीं सहने वाला आदि. पु.न. (महारण्ये दुर्गपथे) कान्तारः (पुन्नपुंसकम्) । पु. मत्सरो(ऽन्यशुभद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु) ॥ १८१ ॥

बड़ावन और कठिनमार्ग को ' कान्तार ' कहते हैं यह पुन्नपुंसक है एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, महावन, बिल, और दुर्गममार्ग का वाची 'कान्तार' पुन्नपुंसक है और कालेगन्ना में पुंलिङ्ग है यह १ महावन आदि का नाम है । परसंपदा के असहन का वाची ' मत्सर ' पुंलिङ्ग है, मत्सर से युक्त और कृपण का वाची त्रिलिङ्ग है एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, मक्खी का वाची मत्सर स्त्रीलिङ्ग, मात्सर्य और क्रोधका वाची पुंलिग, पराई संपदाका नहीं चाहनेवाला और कृपण में वाच्यलिङ्ग है यह १ पराया अनभल चाहना आदिका नाम है ॥ १८१ ॥

देवता से चाहा, श्रेष्ठ, थोड़ा प्यारा, बांसकाअँखुआ, करील, कलश. (देवाहृते) वरः (श्रेष्ठ त्रिषु क्लीबं मनाक्प्रिये) । (वंशाङ्कुरे)करीरो(ऽस्त्री तरुभेदे घटे च ना)॥ १८२ ॥

देवता से चाहाहुआ, श्रेष्ठ और थोड़ा प्रिय इनको ' वर ' कहते हैं यह देवता से चाहे हुए में पुंलिङ्ग श्रेष्ठ में त्रिलिङ्ग और अल्पप्रिय में नपुंसक है एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, दामाद, वरण करना, देवताआदिकों से चाहा हुआ पदार्थ और

चञ्चल में 'वर' पुंलिङ्ग, श्रेष्ठ में त्रिलिङ्ग, कुङ्कुम में नपुंसक शतावरी और त्रिफला में स्त्रीलिङ्ग है और थोड़े प्रिय में नपुंसक है परन्तु कितेक आचार्यों ने अव्यय भी कहा है यह १ देवता से अभिलषित आदि का नाम है। बांसका अँखुआ, वृक्षभेद और घट (कलश) इनको 'करीर' कहते हैं यह वंशाङ्कुर में पुन्नपुंसक, तरुभेद और घटमें पुंलिङ्ग है एवं मेदिनीकोषमें भी कहा है कि, बांस के अँखुवा से 'करीर' पुन्नपुंसक. वृक्षभेद=(करील) और घट में पुंलिङ्ग तथा झींगुर व हाथी के दांतों की जड़में स्त्रीलिङ्ग है यह १ वंशाङ्कुर आदि का नाम है ॥ १८२ ॥

पु.
सेनाका पृष्ठभाग या पुरोभाग, रक्षासूत्र, यम, पवन आदि. (ना चमूजघने हस्तसूत्रे) प्रतिसरो (ऽस्त्रियाम्)।
(यमानिलेन्द्रचन्द्रार्कविष्णुसिंहांशुवाजिषु ॥ १८३ ॥
शुकाहिकपिभेकेषु) हरि (र्ना कपिले त्रिषु)।

सेनाका पुरोभाग या पिछिलाभाग और मङ्गलार्थ मन्त्रों से अभिमन्त्रित जो सूत हाथ में बाँधाजाता है उसको 'प्रतिसर' कहते हैं यह सेनापृष्ठ में पुंलिङ्ग और करसूत्र में पुन्नपुंसक है एवं मेदिनीकोषमें भी कहा है कि, मन्त्रभेद, माल्य, कङ्कण, घावशुद्धि और सेनापृष्ठ में 'प्रतिसर' पुंलिङ्ग, मण्डल व करसूत्र में पुन्नपुंसक और नियोज्य में त्रिलिङ्ग है १ यह सेनापृष्ठ आदि का नाम है। यमराज, पवन, इन्द्र, चन्द्र, सूर्य, विष्णु, सिंह, किरण, घोड़ा, तोता, सांप, वानर और मेंडक इनका वाची 'हरि' पुंलिङ्ग है और कपिल में त्रिलिङ्ग है एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, वायु, सूर्य, चन्द्र, इन्द्र, यम, उपेन्द्र (वामन), किरण, सिंह, घोड़ा, मेंडक, सर्प, शुक और लोकान्तर को 'हरि' कहते हैं यह पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग है और हरे व पीले वर्ण में वाच्यलिङ्ग है यह १ यम आदि का नाम है ॥ १८३ । ३ ॥

सिटकी, खांड़, पत्थर, चलाना या बिताना, स. स. ‡
शर्करा (कर्परांशेऽपि) यात्रा (स्याद्यापने गतौ)॥ १८४॥

चलना, देवपूजनविषयक उत्साह, पृथ्वी, वाणी, मदिरा, स. स.
इरा (भूवाक्सुराप्सु) (स्या) त्तन्द्री (निद्राप्रमीलयोः)।

जल, नींद, आलस्य, धाई, धरती, आंवला. स.
धात्री (स्यादुपमातापि क्षितिरप्यामलक्यपि) ॥ १८५॥

‡ "कोकिल तावद्दिवसान्यापय दिवसान् वनान्तरे निवसन्। यावदलिकुलमालः कोपि रसालःसमुल्लसति" (इति भामिनीविलासः) ॥

१–"पीताय यदि बालस्य विदध्यादुपमातरम्। सुविचार्य गुणान्दोषान्कुर्याद्धात्रीं तदेदृशीम्। सवर्णां मध्यवयसां सच्छीलां मुदितां सदा। शुद्धदुग्धां बहुक्षीरां सवत्सामविवत्सलाम्। स्वाधीनामल्पसंतुष्टां कुलीनां सज्जनात्मजाम्। कैतवेन परित्यक्तां निजपुत्रदृशां शिशौ" (इति भावप्रकाशः) ॥

सिटकी, सिकता या बालू अपिशब्द से पत्थर, खांड़का विकार बूरा या चीनी और सिटकिहा देश आदि को ' शर्करा ' कहते हैं। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, खांड़का विकार, पत्थर, सिटकी, सिटकीसमेत देश, रोगविशेष (प्रमेह) और टुकड़ा ये ' शर्करा ' कहलाते हैं यह १ सिटकी आदि का नाम है । चलाना या निकालना, और गमन को यात्रा कहते हैं यह यापन, उपाय, गमन और देवपूजन के उत्सव में स्त्रीलिङ्ग है यह १ यापन आदि का नाम है । पृथ्वी, वाणी, मदिरा और जल को " इरा " कहते हैं यह १ पृथ्वी आदि का नाम है शयन, आलस्य या अत्यन्त परिश्रम आदिकों से बेहोश होजाना इनको तन्द्रि, तन्द्री या तन्द्रा कहते हैं यह १ निद्रा आदि का नाम है । बच्चों को दूध पिलानेवाली, पृथ्वी, आंवला अपिशब्द से उपजानेवाली माता को भी ' धात्री ' कहते हैं यह जननी-आमलकी, धरती और उपमाता में स्त्रीलिङ्ग है यह १ धाई आदि का नाम है ॥ १८४ । १८५ ॥

अङ्गहीन, नटी, वेश्या, मधुमक्खी, भटकटैया, निर्दय, नीच, थोड़ा, उपकरण, स्वल्प, माप, समग्र, निश्चित.

स.
क्षुद्रा (व्यङ्गा नटी वेश्या सरघा कण्टकारिका) ।
पु. स.
(त्रिषु क्रूरेऽधमेऽल्पेऽपि) क्षुद्रो मात्रा (परिच्छदे १८६ ॥
न.
अल्पे च परिमाणे स्या) न्मात्रं (कार्त्स्न्येऽवधारणे) ।

हीनाङ्गी, नाचनेवाली, वेश्या या वारस्त्री, मधुमक्खी, भटकटाई या कटेरी इन को ' क्षुद्रा ' कहते हैं और निर्दय, अधम तथा अल्प और कृपणको भी ' क्षुद्र ' कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है एवं विश्वकोष में भी कहा है कि अधम, क्रूर, कृपण, और अल्प में ' क्षुद्र ' त्रिलिङ्ग है और अङ्गहीन नारी, नटी, कण्टकारी, शहद की मक्खी, अम्ललोणिका (अमलोनियां) वेश्या, मारडालनेवाली और मक्खीमात्र को भी ' क्षुद्रा ' कहते हैं यह पूर्वोक्त अर्थों में स्त्रीलिङ्ग है यह १ हीनाङ्गी आदि का नाम है । पुरस्कर उपयोगी वस्तु साज बिछौना आदि, अल्प, माप ये ' मात्रा ' कहलाते हैं यह पूर्वोक्त अर्थों में स्त्रीलिङ्ग है और समग्रता तथा निश्चयार्थ का वाची ' मात्र ' नपुंसक है एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि कानों का गहना, धन, माप, उपकरण, अक्षरोंका अवयव और स्वल्प में स्त्रीलिङ्ग है और संपूर्णता व अवधारण में नपुंसक है परिच्छद में जैसे " महामात्रः " अल्प में जैसे ' शाकमात्रा ' परिमाण में जैसे ' किं हस्तिमात्रोऽङ्कुशः ' कार्त्स्न्य में जैसे ' जीवमात्रं न हिंस्यात् ' अवधारण में जैसे ' पयोमात्रं भुङ्क्ते ' यह १ परिच्छद आदि का नाम है ॥ १८६ । ३ ॥

न. न.
चित्रसारी, आश्चर्य, कमर, स्त्री, (आलेख्याश्चर्ययो)श्चित्रं कलत्रं(श्रोणिभार्ययोः) १८७॥
न. न.
उचित, भाजन, वाहन, (योग्यभाजनयोः) पात्रं पत्रं (वाहनपक्षयोः) ।
न. न.
पक्ष, हुक्म, ग्रन्थ, हथियार, लोहा. (निदेशग्रन्थयोः)शास्त्रं[1] शस्त्र (मायुधलोहयोः) ॥१८८॥

भीति आदि में नानावर्ण लिखना, अद्भुत या विस्मय को ' चित्र ' कहते हैं । यह मूसापर्णी, गोमाककड़ी, श्यामलता, दन्तीवृक्ष, माया, सांप, नक्षत्र और नदी विशेष में स्त्रीलिङ्ग, तिलक, चित्रसारी, कबरा, और आश्चर्य में नपुंसक, तद्वान् में वाच्यलिङ्ग, झिल्ली में स्त्रीलिङ्ग, दाख, वस्त्रभेद, रेखा और लिखना में नपुंसक है यह १ आलेख्य आदि का नाम है । कमर और भार्या को ' कलत्र ' कहते हैं। यह नरपाल आदिकों का दुर्गस्थान (क़िलाघर) कमर और जाया में नपुंसक है। यह १ कटि आदि का नाम है । उचित या निपुण और भाजन (वर्तन) को ' पात्र ' कहते हैं। यह भाजन, योग्य, दोनों किनारों का बिचिला भाग, स्रुवाआदि, पत्ता और राजमन्त्री में नपुंसक है। यह १ योग्य आदि का नाम है । हाथी-घोड़ा-रथ आदि वाहन, शुक्लपक्ष, कृष्णपक्ष या सहायक आदि, पखेरुओं का पंख और बाण के पुंख का पांख, चिट्ठी तथा पत्तेको भी ' पत्र ' कहते हैं। यह १ वाहन आदि का नाम है । आज्ञा (हुक्म) और व्याकरण आदि ग्रन्थों को ' शास्त्र ' कहते हैं । यह १ निदेश आदि का नाम है । हथियार और लोह को ' शस्त्र ' कहते हैं । यह लोहा और अस्त्र में नपुंसक तथा छूरी (चाकू) में स्त्रीलिङ्ग है । यह १ आयुध आदि का नाम है ॥ १८७ । १८८ ॥

न. न.
जटा, वस्त्रभेद, भार्या, शरीर, (स्या) (ज्जटांशुकयो) र्नेत्रं क्षेत्रं (पत्नीशरीरयोः) ।
न. न.
सूअर व हलका मुखाग्र, नाम, वंश आदि. (मुखाग्रे क्रोडहलयोः)पोत्रं गोत्रं (च नाम्नि च)॥१८९॥

आपस में मिले जुले केश और वस्त्रविशेष को ' नेत्र ' कहते हैं । यह मथानी की रस्सी, वस्त्रभेद, वृक्षोंकी जड़, रथ, और नयनों में नपुंसक और नदी व नाड़ी में स्त्रीलिङ्ग तथा नेता में वाच्यलिङ्ग है। यह १ जटा आदि का नाम है । धर्मपत्नी और शरीर को ' क्षेत्र ' कहते हैं। यह शरीर, क्षेत्र (खेत) सिद्धस्थान और कलत्र (भार्या) में नपुंसक है। यह १ पत्नी आदि का नाम है। सूअर और हलके मुखाग्र को ' पोत्र ' कहते हैं। यह वस्त्र और सूकर तथा हलके मुखाग्र में नपुंसक है। यह १

[1] " शासनादनिशं देवि ! वर्णाश्रमनिवासिनाम् । तारणात्सर्वपापेभ्यः शास्त्रमित्यभिधीयते " (इति कुलार्णवतन्त्रम्) ॥

सूकर मुखाग्र आदि का नाम है। नामधेय और चशब्द से कुल, संभावनीयबोध वन, खेत और मार्ग आदि को 'गोत्र' कहते हैं। यह पृथ्वी व गोसमुदाय में स्त्रीलिङ्ग, पर्वत में पुंलिङ्ग, वंश, नाम, संभावनीय बोध, जंगल, खेत और रास्ते में नपुंसक है। यह १ अभिधान आदि का नाम है ॥ १८९ ॥

ढांपना, यज्ञ, नित्यदान, जं-गल, छल, शब्दादिविषय, काया, आकाश, वस्त्र.

न. **सत्र (माच्छादने यज्ञे सदादाने वनेऽपि च)।**
अजिरं (विषये काये)ऽप्यम्बरं (व्योम्नि वाससि) ॥ १९० ॥

ढांपना या कपड़ा, देवयज्ञ, नित्यदान, वन और अपिशब्द से छल को भी 'सत्र' कहते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में नपुंसक है। यह १ आच्छादन आदि का नाम है। शब्द, स्पर्श, रूप, रस आदि विषय, देह, अपिशब्द से आंगन या चौराहा, वात और मेढक ये 'अजिर' कहलाते हैं। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, आंगन, वायु, विषय, मेढक और शरीर में 'अजिर' नपुंसक और चवडी में स्त्रीलिङ्ग है। यह १ विषय आदि का नाम है। आकाश और वस्त्रको 'अम्बर' कहते हैं। एवं विश्वकोष में भी कहा है कि वस्त्र, आकाश, कपास से बुना कपड़ा, लाल तुलसी, गन्धक, नारङ्गी या एक प्रकार का ककोड़ा ये 'अम्बर' कहलाते हैं। यह १ आकाश आदि का नाम है ॥ १९० ॥

राज्यादि, मोक्षादि, जल, दूध, सोनाआदि, द्वारमात्र या नगरद्वारआदि.

न. न. न.
चक्रं (राष्ट्रे)ऽप्यक्षरं (तु मोक्षेऽपि) क्षीर (मप्सु च)।
पु. पु. न.
(स्वर्णेऽपि) भूरिचन्द्रौ (द्वौ) (द्वारमात्रे तु) गोपुरम् ॥ १९१ ॥

राज्य या देश अपिशब्द से समूह या गोस्थान, सेना, रथकापहिया, छल, कुम्हार का चाक और जलभँवर तथा अस्त्रविशेष को 'चक्र' कहते हैं। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, 'चक्र' यह चकवा चकई में पुंलिङ्ग, और समूह, सेना, रथका पहिया, राज्य या देश, कपट, कुम्हार का चाक, अस्त्रभेद और जलों का भँवर इन में नपुंसक है। यह १ राष्ट्र आदि का नाम है। मोक्ष, अपिशब्द से अकार आदि वर्ण, नाशरहित, ब्रह्म, अच्युत, आकाश, धर्म, तपस्या और मूलकारण को 'अक्षर' कहते हैं। एवं अनेकार्थकोष में भी कहा है, कि अपवर्ग, ओंकार, ब्रह्म और अच्युत ये 'अक्षर' कहलाते हैं। यह पुंलिङ्ग व नपुंसक है। यह १ मोक्ष आदि का नाम है। जल और दूधको 'क्षीर' कहते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में नपुंसक है। यह १ जल आदि का नाम है। सोना अपिशब्द से वासुदेव, महादेव, ब्रह्मा, कपूर, कबीला, कलानिधि और यज्ञकी खीरको भी, भूरि, व 'चन्द्र' कहते हैं। एवं मेदिनीकोष में भी

कहा है कि 'भूरि' यह वासुदेव, शिव, ब्रह्मा में पुंलिङ्ग, सुवर्ण में नपुंसक और अधिकता में वाच्यलिङ्ग है और 'चन्द्र' यह कपूर, कबीला, कलाधर, काञ्चन और यज्ञकी जाउरि में पुंलिङ्ग है। ये २ स्वर्ग आदि के नाम हैं। द्वारमात्र (दरवाज़ा) या नगर के द्वारको भी 'गोपुर' कहते हैं। यह द्वार, पुरद्वार और केवटी मोथा में भी नपुंसक है। यह १ दरवाज़ा आदि का नाम है ॥ १६१ ॥

गुफा, कपट, एकान्त, समीप, (गुहादम्भौ) गह्वरे (न.) (द्वे) (रहोऽन्तिक) मुपह्वरे (न.)।
अगाड़ी, अधिक, ऊपर, घर नगर (पुरोऽधिकमुप) र्यग्राण्य (न.) (गारे नगरे) पुरम् (न.) ॥ १६२ ॥
विषय, उपद्रव. मन्दिरं (न.) (चाथ) राष्ट्रो (पु.न.) (ऽस्त्री विषये स्यादुपद्रवे)।

पर्वत की गुफा, कपट या शठता को 'गह्वर' ‡ कहते हैं। यह गुफ़ा, दम्भ (छल) कुञ्ज और गहनवन में पुन्नपुंसक है। यह १ गुफा आदिका नाम है। निर्जन या एकान्त और समीप ये दोनों 'उपह्वर' कहलाते हैं। यह समीप और एकान्त में नपुंसक है। यह १ विजन आदिका नाम है। पुरस्, अधिक और उपरि ये तीनों 'अग्र' कहलाते हैं। इनमें पुरः पुरस्तात् जैसे 'अग्रगामी' अधिक में जैसे "साग्रंशतम्" ऊपर में जैसे "वृक्षाग्रम्" यह अगाड़ी, ऊपर, पलका परिमाण, आलम्बन, समूह और प्रान्त अन्तभाग, किनारा, छोर या (प्रदेश–खण्ड–सूबा) में नपुंसक और अधिक, प्रधान व प्रथम में वाच्यलिङ्ग है। यह १ अगुआ आदिका नाम है। घर और नगर को 'पुर' व 'मन्दिर' कहते हैं। एवं धरणीकोष में भी कहा है कि, 'पुर' यह शरीर और घरके ऊपरले घरमें नपुंसक, गूगल में पुंलिङ्ग और नगर में नपुंसक व स्त्रीलिङ्ग है और 'मन्दिर' यह नगर व घरमें नपुंसक और मकरालय में पुंलिङ्ग है। यह १ घर आदिका नाम है। राज्य या देश और मरण आदि उपद्रव को 'राष्ट्र' कहते हैं। यह पुन्नपुंसक है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, 'राष्ट्र' यह देश में नपुंसक और उपद्रव में पुन्नपुंसक है। यह १ विषय आदिका नाम है ॥ १६२ ॥

डर, गड़हा, हीरा, वज्र आदि. दरो (पु.न.) (ऽस्त्रियां भये श्वभ्रे) वज्रो (पु.न.) (ऽस्त्री हीरके पवौ) १६३॥

भय या डर और गड़हा को 'दर' कहते हैं। यह पुन्नपुंसक है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, 'दर' यह साध्वस व गर्त में पुन्नपुंसक, कन्दरा में स्त्रीलिङ्ग और अल्पार्थ में अव्यय है। यह १ भीति आदिका नाम है। हीरा और कुलिश को 'वज्र' कहते हैं। यह पुन्नपुंसक है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि 'वज्र' यह बालक व

‡ "अन्येद्युरात्मानुचरस्य भावं जिज्ञासमाना मुनिहोमधेनुः। गङ्गाप्रपातान्तविरूढशष्पं गौरीगुरोर्गह्वरमाविवेश" (इति रघुः) ॥

आँवला में नपुंसक, योग में पुलिङ्ग, सेहुँड़ा व गिलोय में टाबन्त थूहरभेद में ङीपन्त, अशनि व हीरा या मणिभेद में पुन्नपुंसक, रांगा और बाधी में नपुंसक है। यह १ हीरा आदिका नाम है ॥ १६३ ॥

प्रधान, सिद्धान्त, कोली, बिछौना आदि सामान, चवँर की डांड़ी, खस की टट्टी, शयन, आसन.

न. तन्त्रं (प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परिच्छदे)।

न. औशीरं (चामरे दण्डेऽप्यौशीरं शयनासने) ॥१६४॥

स्वतन्त्र, महामात्र या परमात्मा, सिद्धान्त, तन्तुवाय (कोली या जुलाहा) बिछौना आदि सामान, वस्त्र, शास्त्र और कुटुम्बकृत्य को 'तन्त्र' कहते हैं। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि कुटुम्बकृत्य, सिद्धान्त, उत्तम औषध, मुख्य या महामात्य, कोली, शास्त्रभेद, उपकरण, वेदशाखाविशेष और दो अर्थ का बोधक कारण ये तन्त्रपदवाच्य कहलाते हैं। यह १ प्रधान आदिका नाम है। चवँर का दण्ड और खस की टट्टी को 'औशीर' तथा शयन और पीढ़ा आदि आसन को भी 'औशीर' कहते हैं। एवं अजयकोष में भी कहा है कि, चवँर की डाँड़ी, सोना और पीढ़ा आदि को 'औशीर' कहते हैं। यह १ चवँरदण्ड आदिका नाम है ॥ १६४ ॥

हाथीसूंड़ का अग्रभाग, बाजा का मुख, पानी, आकाश, तलवार की नोक, कमल, तीर्थ, कूट.

न. पुष्करं (करिहस्ताग्रे वाद्यभाण्डमुखे जले।

व्योम्नि खड्गफले पद्मे तीर्थौषधिविशेषयोः) ॥ १६५ ॥

हाथी की सूंड़ का अग्रभाग, बाजा के पात्र का मुख, पानी, आकाश, तलवार की नोक, कमल, तीर्थविशेष और कूटनामक औषध को 'पुष्कर' कहते हैं। एवं हैमकोष में भी कहा है कि, द्वीप, तीर्थ, सर्प, गरुड़, औषधभेद, बाजा का मुख, तलवार की नोक, बाण या वृक्ष का कन्धा, हाथी की सूंड़ का अग्रभाग, आकाश, जल और कमल ये पुष्कर पदवाच्य कहलाते हैं। यह १ गजशुण्डाग्र आदिका नाम है ॥१६५॥

अवकाश आदि. न. अन्तरं (मवकाशावधिपरिधानान्तर्धिभेदतादर्थ्ये।

छिद्रात्मीयविनाबहिरवसरमध्येऽन्तरात्मनि च)॥१६६॥

अवकाश, अवधि, परिधान, अन्तर्धान, भेद, तादर्थ्य, छेद, आत्मीय विना, बाह्य, अवसर, मध्य, अन्तरात्मा और चशब्दसे सादृश्य तथा 'घटाना' फ़ासिला या दूर को भी 'अन्तर' कहते हैं। अवकाश में जैसे ठंढ या पाला के समय में अवधि में

जैसे महीना भरे में देना चाहिये, परिधान में जैसे साड़ियाँ पहिनना चाहिये, अन्तर्धान में जैसे 'सूर्य पहाड़ में छिपगया' भेद में जैसे 'सरसों और शैलराज का जो भेद (फ़रक़) है' तादर्थ्य में जैसे 'तुम्हारे लिये यह ऋण (क़र्ज़ा) है' छिद्र में जैसे 'वैरी को दांव या घात पाजाने पर प्रहार करना चाहिये' आत्मीय में जैसे 'यह मेरा आत्मीय है' विनार्थ में जैसे 'पुरुषकार के विना।' बाह्य में जैसे 'चाण्डालों के घर बाहर हैं' अवसर में जैसे सेवक समय पर पहुँचनेवाला है, मध्य में जैसे हम दोनों के बीच पहाड़ पैदा हुआ, अन्तरात्मा में जैसे अन्तर में ज्योतीरूप परमात्मा देखा गया, और चशब्द से सादृश्य में जैसे 'घकार हकार का सादृश्यतम है' यह १ अवकाश आदिका नाम है ॥ १९६ ॥

मोथा, कन्दविशेष, बड़ा अँधेरा, घातुक, हिंसक, कठोर आदि.

न. न.
(मुस्तेऽपि) पिठरं (राजकशेरुण्यपि) नागरम् ।
न.
शार्वरं (त्वन्धतमसे घातुके भेद्यलिङ्गकम्) ॥ १९७ ॥

मोथा, अपिशब्द से मथानी का दण्ड, स्थावर विषका भेद और सुगन्ध द्रव्य आदिको भी 'पिठर' कहते हैं। यह बटलोही में पुंलिङ्ग, मोथा और मंथानदण्ड में नपुंसक है। यह १ मोथा आदिका नाम है। जलतृण मूल या कन्दविशेष अपिशब्द से नागरमोथा, सोंठि, चतुर, नगर में पैदाहुआ मनुष्य या गुजराती ब्राह्मणों की एकजाति ये 'नागर' कहलाते हैं। यह १ राजकसेरू आदिका नाम है। बड़ा अन्धकार, घातुक, हिंसक या क्रूर इनको 'शार्वर' कहते हैं। यह वाच्यलिङ्ग है और स्वामी के मत में 'शार्वर' यह महान्धकार में नपुंसक मतवाले मारडालनेवाले हाथी में पुंलिङ्ग है। यह १ गाढ़े अन्धकार आदि का नाम है ॥ १९७ ॥

लाल, सफ़ेद, पीला, घावकरने वाला, कठिन नीच आदि.

पु.स.न. पु.स.न.
गौरो(ऽरुणे सिते पीते) (व्रणकार्य्य) (प्यरुष्करः) ।
पु.स.न. पु.स.न.
जठरः (कठिनेऽपि स्या) (दधस्तादपि) चाधरः ॥ १९८ ॥

सूर्य, सूर्य का सारथी, सन्ध्याराग, लाल, सफ़ेद और पीलेवर्ण को 'गौर' कहते हैं। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि 'गौर' यह पीला, लाल, सफ़ेद और साफ़ में वाच्यलिङ्ग, सफ़ेद सरसों और चन्द्रमा में पुंलिङ्ग और कमल की धूलि में नपुंसक है। यह १ रक्तवर्ण आदि का नाम है। घाव करनेवाला और अपिशब्द से भिलावां ये दोनों 'अरुष्कर' कहलाते हैं। यह घाव करनेवाले में त्रिलिङ्ग और भिलावां में पुंलिङ्ग है। यह १ व्रणकारी आदिका नाम है। कठोर, अपिशब्दसे उदर और बँधुआको 'जठर' कहते हैं। यह उदर में स्त्रीलिङ्ग नहीं है, बँधुआ और कठिन, निष्ठुर-

या कठोर में त्रिलिङ्ग है। यह १ कठिन आदिका नाम है। नीच अपिशब्द से निचला ओठ और हीन को 'अधर' कहते हैं। यह ओठ में पुंलिङ्ग, हीन और नीच में वाच्यलिङ्ग है। यह १ नीच आदिका नाम है ॥ १९८ ॥

पु.स.न. पु.स.न.

स्वस्थ या साव- धान, अनेक कार्यों में लगा, व्याकुल, ऊपर, उत्तरदिशा, उ- त्तम, इनका विपर्यय, श्रेष्ठ, दूर, देहादि उत्तम, स्वादु, मनोज्ञ.

(अनाकुलेऽपि) चैकाग्रो व्यग्रो (व्यासक्त आकुले)।

पु.स.न. पु.स.न.

(उपर्युदीच्यश्रेष्ठेष्व) प्युत्तरः (स्या) दनुत्तरः ॥ १९९ ॥

पु.स.न.

(एषां विपर्यये श्रेष्ठे) (दूरानात्मोत्तमाः) पराः।

पु.स.न. पु.स.न.

(स्वादुप्रियौ च) मधुरौ क्रूरौ (कठिननिर्दयौ) ॥ २०० ॥

स्वस्थ, अपिशब्द से सावधान या एक विषय में आसक्त चित्तवाला इनको 'एकाग्र' कहते हैं। यह एकतान और अनाकुल में वाच्यलिङ्ग है। यह १ अव्यग्र आदि का नाम है। कामों में लगा या जिसका मन अनेक कामों में फँसा है और व्याकुल चित्तवाला इन दोनों को 'व्यग्र' कहते हैं। यह १ व्यासक्त आदि का नाम है। ऊपर, उदीच्य और उत्तम को 'उत्तर' कहते हैं। यह वाच्यलिङ्ग है। अपिशब्दसे विराट राजा के राजकुमार में पुँल्लिङ्ग, उत्तरदिशा में स्त्रीलिङ्ग और राजसभा में वादी के किये प्रश्नके उत्तर में नपुंसक है। एवं विश्वकोष में भी कहा है कि 'उत्तर' यह प्रतिवाक्य में नपुंसक, ऊर्ध्व, उदीच्य, उत्तम में त्रिलिङ्ग, विराटराजा के राजपुत्र में पुंलिङ्ग और उत्तरदिशा में स्त्रीलिङ्ग है। यह १ ऊपर आदि का नाम है। इन्हीं उपर्यादि के विपर्यय और श्रेष्ठ को 'अनुत्तर' कहते हैं। यह १ उपर्यादि व्यत्यय का नाम है। दूर यानी इन्द्रियों से अगोचर, आत्मा से भिन्न या देह आदि, और उत्तम ये 'पर' कहलाते हैं। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि श्रेष्ठ, शत्रु, दूर, अन्य और उत्तर में 'पर' यह पुंलिङ्ग और केवल में नपुंसक है। यह १ दूर आदि का नाम है। स्वादु और प्रिय को 'मधुर' कहते हैं। एवं विश्वकोष में भी कहा है कि 'मधुर' यह रस में पुंलिङ्ग, विषमें नपुंसक, रसवान्, स्वादु और प्रिय में वाच्यलिङ्ग है। कठोर और निर्दय को 'क्रूर' कहते हैं। यह १ कठिन, घोर और मनुष्यों के मारनेवाले (हत्यारे) में वाच्यलिङ्ग है। यह १ कठिन आदि का नाम है ॥ १९९ । २०० ॥

पु.स.न. पु.स.न.

दाता, पूज्य, अन्य, नीच, मूर्ख, स्वाधीन, उज्ज्वलित, सफेद.

उदारो (दातृमहतो) रितर (स्त्वन्यनीचयोः)।

पु.स.न. पु.स.न.

(मन्दस्वच्छन्दयोः) स्वैरः शुभ्र(मुद्दीप्तशुक्लयोः)॥२०१॥

दाता या दानी, बड़ा या पूज्य और सरलचित्त को भी 'उदार' कहते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में वाच्यलिङ्ग है। यह १ दानी सखी, फ़ैयाज आदिका नाम है। अन्य या भिन्न, और नीच, पामर, अधम या वामन (बौना) को 'इतर' कहते हैं। यह पामर और अन्य में वाच्यलिङ्ग है। मूर्ख और स्वाधीन ये 'स्वैर' कहलाते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में त्रिलिङ्ग है। यह १ मूढ़ आदिका नाम है। उद्दीप्त या उज्ज्वलित और सफ़ेद या साफ़ को 'शुभ्र' कहते हैं। यह बादल में नपुंसक और प्रदीप्त तथा शुक्ल में त्रिलिङ्ग है। यह १ उद्दीप्त आदिका नाम है ॥ २०१ ॥

इति रान्ताः ॥

अथ लान्ता व्याख्यायन्ते ॥

चोटी, मुकुट, जूड़ा, वृक्षभेद, हाथी, बाण, फूल.

पु.स.न
(चूडा किरीटं केशाश्च संयता) मौलय (स्त्रयः)।
पु.
(द्रुमप्रभेदमातङ्गकाण्डपुष्पाणि) पीलवः ॥ २०२ ॥

शिखा या चोटी किरीट या मुकुट और बँधेकेश (जूड़ा) ये तीनों 'मौलि' कहलाते हैं। यहां 'त्रयः' यह मौलिके पुंस्त्व सूचनार्थ कहागया है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि "मौलिः किरीटे धम्मिल्ले चूडायामनपुंसकम्। नाशोकाद्रौ स्त्रियांभूमाविति" मौलि यह मुकुट, जूड़ा और चूड़ा में नपुंसक नहीं बरन पुंलिङ्गहै। एवं रभसकोष में भी कहा है कि, किरीट, चूड़ा और बँधेबालों में 'मौलि' पुंलिङ्ग है। यह १ चोटी आदिका नाम है। वृक्षभेद, हाथी, बाण और फूलको 'पीलु' और बहुत्व में 'पीलवः' कहते हैं। यह फूल, परमाणु, हाथी, तालका अस्थिखण्ड यानी ताड़वृक्ष की हड्डी का टुकड़ा बाण और पीलुवृक्ष में पुंलिङ्ग है। यह १ वृक्षभेद आदि का नाम है ॥ २०२ ॥

यमराज, समय आदि, चौथा युग, कलह आदि, मृग, जल, कमल-आदि, दुपट्टा, नागराजादि.

पु. पु.
(कृतान्तानेहसोः) काल (श्चतुर्थेऽपि युगे) कलिः।
‡ पु. पु.
(स्यात्कुरङ्गेऽपि) कमलः (प्रावारेऽपि च) कम्बलः ॥ २०३ ॥

यमराज, समय और "पाप, दैव, सिद्धान्तज्ञाता, मौत, महाकाल व श्यामवर्ण" को 'काल' कहते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग और काली व महाकली में स्त्रीलिङ्ग है। एवं मेदिनीकोष में कहा है कि, मौत, महाकाल, समय, यम, और कृष्ण में 'काल'

‡ "पतङ्गमातङ्गकुरङ्गभृङ्गमीनाहताः पञ्चभिरेव पञ्च। एकः प्रमादी स कथं न हन्यते यः सेवते पञ्चभिरिन्द्रियैर्वा" ॥ १ ॥

पुंलिङ्ग, वर्ण में 'काली' व अन्यार्थ में 'काला' स्त्रीलिङ्ग है। यह १ यमराज आदि का नाम है। चौथायुग, अपिशब्दसे शूरमा, संग्राम और लड़ाई को 'कलि' कहते हैं। यह पुंलिङ्गहै और कलिका या कली में स्त्रीलिङ्ग है। यह १ कलियुगआदि का नाम है। लालमृग या मृगमात्र अपिशब्दसे जल, तांबा, पङ्कज और बाहुओं का मध्यस्थान तथा औषधको भी 'कमल' कहते हैं। यह नपुंसक है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि पानी, तांबा, सरोज, और फेफड़ा में 'कमल' यह नपुंसक और मृगभेद में पुंलिङ्ग है। यह १ हरिण आदिका नाम है। उत्तरीयवस्त्र, उपर्ना, या रोमसमूहों से बना कपड़ा अपिशब्द से नागराज और कृमि ये 'कम्बल' कहलाते हैं। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, नागराज, गऊके गले का लटकताहुआ चाम, अंगौछा या डुपट्टा, किरवा और उपर्ना में कम्बल पुंलिङ्ग और जलमें नपुंसक है। यह १ प्रावार आदिका नाम है ॥ २०३ ॥

पोत, पूजासामग्री, ढीली खाल, मोटापन, सामर्थ्य, फ़ौज, कौआ, बलदाऊ.

पु.

(करोपहारयोः पुंसि) बलिः (प्राण्यङ्गजे स्त्रियाम्)।

न.

(स्थौल्यसामर्थ्यसैन्येषु) बलं (ना काकसीरिणोः) २०४

पोत, महसूल या मालगुज़ारी, पूजाकी सामग्री या देवताकी भेट को 'बलि' कहते हैं। यह पुंलिङ्ग है और प्राणियोंकी खाल का सिकुड़ना या त्रिबली में स्त्रीलिङ्ग है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है, कि दानवराज, राजदेयभाग, चवँरकादण्ड, और पूजाका सामान इनमें 'बलि' यह पुंलिङ्ग है और बुढ़ापे से ढीली खाल, गृहदारुविशेष, (बँड़ेर) और पेटकी त्रिबली में स्त्रीलिङ्ग है। यह १ राजग्राह्य भागआदिका नाम है। मोटापन, सामर्थ्य और फ़ौज को 'बल' कहतेहैं। यह नपुंसक है। कौआ और बलदाऊ में पुंलिङ्ग है। एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, गन्धरस (वणिग्द्रव्य विशेष) रूप, पराक्रमी, स्थूलता और सेना में 'बल' नपुंसक और बलदेव, बलासुर, बलवान् और वायस में पुंलिङ्ग है। यह १ स्थूलता आदिका नाम है ॥२०४॥

वातसमूह, वात व्याधि का न सहनेवाला, शठ, जंगली हिंसकजीव, सांप.

पु. न

वातूलः (पुंसि वात्यायामपि वातासहे त्रिषु)।

पु.स न.

(भेद्यलिङ्गः शठे) व्यालः (पुंसि श्वापदसर्पयोः) २०५॥

वातसमूह और वातविकार के न सहनेवाले प्राणी को भी 'वातूल' या 'वातुल' कहते हैं। यह वातसमूह में पुंलिङ्ग और वातासह में त्रिलिङ्ग है और द्विरूपकोष के प्रमाण से 'वातुल' ह्रस्वमध्य भी है। यह १ वातसमुदाय आदिका नाम है। शठ अर्थ का वाची व्याल वाच्यलिङ्ग यानी त्रिलिङ्ग है और जंगली हिंसक पशु

बाघ आदि, सांप, दुष्टहाथी और सिंहको भी 'व्याल' स्त्रीलिङ्ग में 'व्याली' कहते हैं। यह १ शठ आदिका नाम है ॥ २०५ ॥

पाप, बीट, कीट, पु.न. · न.
रोग, हथियार, **मलो (ऽस्त्री पापविट्किट्टान्यस्त्री) शूलं (रुगायुधम्)।**
स्थाणु, शल्य,
ज्वाला, कोन, पु.स. स.
धार, गोद, **(शङ्कावपिद्वयोः) कीलः पालिः स्त्र्यश्र्यङ्कपङ्क्तिषु २०६॥**
पांति.

पाप या नरकहेतुककर्म, विष्ठा, कीट, नाककी गूज़ी, कानका खूंट और पसीना आदिको 'मल' कहते हैं, यह पुन्नपुंसक है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, पाप, विष्ठा और कीट में 'मल' पुन्नपुंसक है और कृपण में वाच्यलिङ्ग है "चर्बी, वीज, खून की चिकनई, मूत, विष्ठा, कान, खाल, नाखून, खखार, आँसू, कीचड़ और पसीना" ये मनुष्यों के १२ मल हैं। यह १ पाप आदिका नाम है। रोग, और हथियार को 'शूल' कहते हैं। यह पुन्नपुंसक है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि पीड़ा, हथियार, मौत, कोड़ा या लोहे का तीखा कांटा और योग ये 'शूल' कहलाते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में पुन्नपुंसक है और वेश्या में स्त्रीलिङ्ग है। यह १ रोगआदिका नाम है। ठुंडावृक्ष, फर, खूंटा या कांटा अपिशब्द से अग्नि की ज्वाला इनको 'कील' कहते हैं। यह स्त्री पुंलिङ्ग है। एवं धरणीकोष में भी कहा है कि, कोहनी का आघात, खंभा और अग्निकी ज्वाला ये 'कील' कहलाते हैं। यह १ शंकुआदिका नाम है॥ धार या कोन, गोदी या निशान और पांति को 'पालि' कहते हैं। यह स्त्रीलिङ्ग है एवं अजयकोष में भी कहा है कि, कानकी लौर, परदेश, पांति और निशान को 'पालि' कहते हैं। यह १ कोन आदिका नाम है ॥ २०६ ॥

स. स.
कारीगरी, काल- **कला (शिल्पे कालभेदे) ऽप्याली (सख्यावली अपि)।**
भेद, सखी,
पांति, ज्वार- स.
भाटा, समय, **(अब्ध्यम्बुविकृतौ) वेला (कालमर्यादयोरपि) ॥२०७॥**
सीमा.

गाने बजाने आदिकी निपुणता, कारीगरी, हुनर, गुण या कलविद्या, तीसकाष्ठा का समय या साठ सेकण्ड, अपिशब्दसे चित्रकला आदिकर्म, चित्राआदि का कर्ता मूलधन का सूद, चन्द्रमण्डल का सोलहवां भाग इनको 'कला' कहते हैं। एवं मेदिनी कोष में भी कहा है कि, मूलधनकी बढ़ती (ब्याज) कारीगरीआदि, अंशमात्र, चन्द्रमा का सोलहवां भाग, गणना और कालका मान इनमें 'कला' स्त्रीलिङ्ग है, भागवतआदि पुराणों में ६४ कला हैं। यह १ शिल्पआदि का नाम है। सहेली और पांतिको 'आलि' या 'आली' कहते हैं। अपिशब्द से विशद आशय में त्रिलिङ्ग और सेतु में स्त्रीलिङ्ग है एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि "आलि" यह साफ़ अभिप्राय

में त्रिलिङ्ग, सहेली, सेतु और पांति में स्त्रीलिङ्ग है। यह १ सखी आदिका नाम है। चन्द्रोदय से समुद्र के जल का बढ़ना या ज्वारभाठा, समय, सीमा या न्यायपथ की स्थिति और अपिशब्द से बड़े लोगों के भोजन का समय इनको 'बेला' या 'वेला' कहते हैं। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि काल, मर्यादा, समुद्र का किनारा या उसके जलका बढ़ना, विना क्लेश मरना, रोग और बड़ों के भोजन का समय ये वेलापद वाच्य कहलाते हैं। यह १ समुद्र की लहर आदि का नाम है ॥ २०७ ॥

कृत्तिका, गैया आदि, आगी, श्यामता, विलास, क्रिया, सिटकी या चीनी.

स. पु.स.न.

बहुलाः (कृत्तिका गावो) बहुलो (ऽग्नौ शितौ त्रिषु) ।

स. स.

लीला (विलासक्रिययो) रुपला (शर्करापि च) ॥२०८॥

कृत्तिका और गौओंको 'बहुला' कहते हैं। तथा अग्निवाची 'बहुल' पुंलिङ्ग है, और कृष्णवर्णवाची त्रिलिङ्ग है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, नीलिका इलायची और धेनुओं में 'बहुला' स्त्रीलिङ्ग, कृत्तिकानामक तारा में बहुवचनान्त स्त्रीलिङ्ग, आकाश में नपुंसक, आगी और कृष्णपक्ष में पुंलिङ्ग, अधिकता और श्यामता में त्रिलिङ्ग है। यह १ कृत्तिकाआदिका नाम है। स्त्रियों का शृङ्गारचेष्टाभेद और क्रियाको 'लीला' कहते हैं। एवं विश्वप्रकाशमें कहा है कि, केलि, विलास, खेल, शृङ्गार, भाव, प्रभव और क्रिया ये लीलापदवाच्य कहलाते हैं। यह १ विलासआदि का नाम है। सिटकी, बालू और चीनी को 'उपला' कहते हैं। यह पत्थर व रत्न में पुंलिङ्ग और बालू व बूरा में स्त्रीलिङ्ग है। यह १ शक्कर आदिका नाम है ॥ २०८ ॥

रुधिर, जल, प्रथम, जटा, नक्षत्र, समूह आदि.

न. न.

(शोणितेऽम्भसि) कीलालं मूल(माद्ये शिफाभयोः) ।

न.

जालं (समूहआनायोगवाक्षक्षारकावपि) ॥ २०९ ॥

रुधिर और पानी को 'कीलाल' कहते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में नपुंसक है। यह १ खून आदिका नाम है। पहिला, जटा या जड़ और नक्षत्रको 'मूल' कहते हैं। यह जटा, आद्य, मूलधन, निकट, पैर, पिपलामूल, टीका आदिसे व्याख्यान करने योग्य ग्रन्थ में नपुंसक और नक्षत्रविशेष में पुंलिङ्ग है। यह १ प्रथमआदि का नाम है। समूह (गरोह), सनई या सूत से बनाहुआ रस्सी का समुदाय, झरोखा, कुछेक फूलती कली इनको 'जाल' और स्त्रीलिङ्ग में 'जाली' कहते हैं। यह झरोखा, जाल, फूलती कली, कपट और समूह में नपुंसक और कदम्बवृक्ष में पुंलिङ्ग है जैसे कि "तृणा जालम्" तिनकों का समूह व जैसे मछली पकड़ने का जाल आदि, यह गरोह आदिका नाम है ॥ २०९ ॥

* न.　　न.

स्वभाव, सुयश, वृक्षादिफल, हेतु-सिद्धफल, छानी, नेत्ररोग, समूह.

शीलं (स्वभावे सद्वृत्ते) (सस्ये हेतुकृते) फलम् ।
　　न.
(छदिर्नेत्ररुजोःक्लीबं) (समूहे) पटलं (न ना) ॥ २१० ॥

स्वभाव और अच्छा यश ये दोनों 'शील' कहलाते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में नपुंसकलिङ्ग है। यह १ प्रकृतिआदि का नाम है । वृक्षआदिकों का फल, और हेतु से सिद्धहुआ फल इन दोनों को 'फल' कहते हैं। यह हेतु से उपजा फल, वृक्षादिकों का फल, संपदा, लाभ, जायफल, शीतलचीनी, अनाज और वाण का अग्रभाग इनमें नपुंसक है। हेतुकृतमें जैसे कि "यागात्स्वर्गोभवति" यज्ञ करने से स्वर्ग होता है। यानी यागका फल स्वर्ग है। यह १ सस्य आदिका नाम है । घरका छावना, नेत्ररोग और समूह को 'पटल' कहते हैं। यह छानी और नेत्ररोग में नपुंसक है तथा समुदाय में पुंलिङ्ग नहीं वरन स्त्रीनपुंसक है। एवं मेदिनीकोप में भी कहा है कि, फोड़ा, बिछौना आदि सामान, घरका छावना, नेत्ररोग और तिलक में 'पटल' नपुंसक और समूहमें पुंलिङ्ग नहीं है। यह १ छानी आदिका नाम है ॥ २१० ॥

पु.न.　　न.

नीचे, स्वरूप, मांस, उन्मान, आगी, नागलोक, कपड़ा, अधम.

(अधःस्वरूपयोरस्त्री) तलं(स्याच्चामिषे) पलम् ।
　　न.　　न.
(औौर्वानलेऽपि) पातालं चेलं (वस्त्रेऽधमे त्रिषु) ॥२११॥

नीचे और स्वरूपको 'तल' कहते हैं। यह पुन्नपुंसक है । एवं मेदिनीकोपमें भी कहा है कि, स्वरूप और नीचे में 'तल' पुन्नपुंसक है, ज्याघात का वारण, जंगल, और कार्य का वीज इनमें नपुंसक, ताड़वृक्ष, चपेटा, तलवारकी मूठि और बायें हाथ से वीणा का बजाना इनमें पुंलिङ्ग है। यह १ अधस्थल आदिका नाम है । बड़वानल, अपिशब्द से बिल और नागलोकको 'पाताल' कहते हैं। यह नागलोक, बिल और बड़वानल में नपुंसक है। यह १ बड़वानल आदिका नाम है। कपड़ा और अधमको 'चेल' कहते हैं। यह त्रिलिङ्ग है। एवं मेदिनीकोपमें भी कहा है कि नीच और अधम में 'चेल' या 'चैल' त्रिलिङ्ग और वस्त्र में नपुंसक है। यह १ वस्त्रआदि का नाम है ॥ २११ ॥

न.

कीलों से भरा गड़हा, भूसीकी आग, निश्चित, अकेला, पूरा, या समग्र.

कुकूलं (शङ्कुभिः कीर्णे श्वभ्रे ना तु तुषानले) ।
　　न.
(निर्णीते) केवलमिति (त्रिलिङ्गं त्वेककृत्स्नयोः)॥२१२॥

* "शीलं स्वभावे सद्वृत्ते" (इति विश्वः) चरित्रमात्रेऽपि शीलं स्यादिति ॥

कीलियां या खूंटियों से भरे बिल को 'कुकूल' कहते हैं। यह नपुंसक है और भूसी या धानकी भूसी की आग भी 'कुकूल' कहलाती है। यह पुंलिङ्ग है। यह १ कीलआदि से पूर्ण गड़हा आदिका नाम है । निश्चित, एकता और संपूर्णता को ' केवल ' कहते हैं। यह निश्चित में नपुंसक, अकेले और समग्र में त्रिलिङ्ग है, निर्णीत में जैसे ' केवलं मूर्खः ' निश्चय कर मूर्ख है। एकता में जैसे "केवलोऽयं व्रजति" यह अकेला ही जाता है। संपूर्णता में जैसे ' केवलाभिक्षवः ' समस्त भिक्षुकलोग, और नाम व वेद में 'केवली' यह भी होता है। यह १ निश्चित आदिका नाम है ॥ २१२ ॥

न.

पूर्णता, क्षेम, पुण्य, शिक्षित, अंखुवा, मूर्ख-आदि.

(पर्याप्तिक्षेमपुण्येषु) कुशलं (शिक्षिते त्रिषु) ।

पु.न. पु स.न. ‡

प्रवाल(मङ्कुरेऽप्यस्त्री) (त्रिषु) स्थूलं (जडेऽपिच)॥२१३॥

सामर्थ्य, पूर्णता या प्राप्ति, क्षेम या पाई हुई वस्तुकी रक्षा करना, पुण्य, सुकृत, शुभ, अदृष्ट या धर्म और अभ्यास किये या सिखलाये हुए या प्रवीण को भी'कुशल' कहते हैं। यह पर्याप्ति, क्षेम, और पुण्य में नपुंसक और शिक्षित में त्रिलिङ्ग है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, ' कुशल ' यह शिक्षित में त्रिलिङ्ग क्षेम, सुकृत और सामर्थ्य में नपुंसक है। यह १ पूर्णता आदि का नाम है । अँखुवा या नयापत्ता अपि शब्द से वीणादण्ड और मूंगा ये 'प्रवाल' कहलाते हैं। यह पुन्नपुंसक है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि किसलय, वीणादण्ड और विद्रुम में ' प्रवाल ' पुन्नपुंसक है यह १ अंकुर आदिका नाम है । मूर्ख, सुस्त, ठंढा, अज्ञानी, निर्बोध, गावदी या भकुआ अपि शब्दसे पहाड़ की चोटी, ढेर, छल, कपट, भूंठ, घन, हथौड़ा या निहाई और मोटे को भी 'स्थूल' कहते हैं। यह कूट और मूढ़में नपुंसक और मोटे में त्रिलिङ्ग है। यह १ जड़ आदिका नाम है ॥ २१३ ॥

* पु. पु.

ऊंचे दांतवाला, ऊंचा, सुन्दर, चतुर, मूर्ख, बालक, चञ्चल, तृष्णासहित.

करालो (दन्तुरे तुङ्गे) (चारौ दक्षे च) पेशलः ।

पु. पु. ‡

(मूर्खेऽर्भकेऽपि)बालः(स्या)ल्लोल(श्चलसतृष्णयोः)२१४

इति लान्ताः ॥

ऊंचे दाँतवाला और ऊंचा या उँचाई से युक्तको भी ' कराल ' कहते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग है। एवं मेदिनीकोष में कहा है कि दन्तुर व उन्नत में 'कराल' नपुंसक और भीषण में वाच्यलिङ्ग यानी त्रिलिङ्ग है। यह १ दन्तुर आदिका नाम है । सुन्दर, आलसहीन, चतुर और शिक्षित ये ' पेशल ' कहलाते हैं। यह १ सुन्दर या

‡ इष्टं वानिष्टं वा सुखदुःखे न चेहते मोहात् । विन्दति परवशगः स भवेदिह जडसंज्ञकः पुरुषः ॥ १ ॥

* दन्तुरे यथा ' करालदंष्ट्रः ' ‡ चञ्चले यथा " लोलाक्षीं सुन्दरीं पश्य " ॥

मनोरम आदिका नाम है। मूढ़ या क्रियाहीन, बच्चा या लड़का, अपिशब्दसे केश, नेत्रबाला, घोड़ा व हाथीकी पूंछ इनको ' वाल ' कहते हैं। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, 'बाल' यह बालों में पुंलिङ्ग, घोड़े व हाथी आदिकी पूंछ में वाच्यलिङ्ग, बच्चे व मूर्ख में पुंलिङ्ग, नेत्रबाला में पुन्नपुंसक, कानों का भूषण व मेढ़ी में ङीषन्त, छोटी इलायची और सोलहबरस से कम उमरवाली स्त्री में टाबन्त है। यह १ मूढ़ आदिका नाम है। चञ्चल और तृष्णा सहित ये दोनों ' लोल ' कहलाते हैं। एवं हैमकोष में भी कहा है कि चञ्चल व तृष्णासहित में ' लोल ' यह पुंलिङ्ग और जीभ व लक्ष्मी में स्त्रीलिङ्ग है। यह १ चञ्चल आदिका नाम है॥ २१४॥

इति लान्ताः॥

अथ वान्ता व्याख्यायन्ते॥

वन, वनाग्नि, जन्म, शिव, (पु. पु. पु.) **दवदावौ (वनारण्यवह्नी) (जन्महरौ) भवौ।**

प्रधान, सखा, स्वामी, खैर, मनुष्य, (पु. पु.) **(मन्त्रीसहायः)सचिवौ (पतिशाखिनरा) धवाः॥२१५॥**

वन और वनकी आग ये दोनों 'दव' या 'दाव' कहलाते हैं। ये २ वन व वनाग्नि के नाम हैं। उत्पत्ति और शिव को ' भव ' कहते हैं। यह क्षेम, महादेव, संसार, सत्ता, प्राप्ति और जन्म (पैदाइश) में पुंलिङ्ग है। यह १ जन्म आदिका नाम है। मन्त्री (सलाहकार) और सखा ये दोनों ' सचिव ' कहलाते हैं। यह १ प्रधान आदिका नाम है। स्वामी या भर्ता, वृक्षभेद या खैर (कत्था) और मनुष्य ये (धव) कहलाते हैं। यह धूर्त मनुष्य, स्वामी और वृक्षान्तर में भी पुंलिङ्ग है। एवं हैमकोष में भी कहा है " धवो धूर्ते नरे पत्यौ। द्रुमभेदे " धव यह धूर्त, वञ्र, द्रुमभेद और धात्वर्थ से कम्पन में भी पुंलिङ्ग है। यह १ स्वामी आदिका नाम है॥ २१५॥

पहाड़, भेड़ा, सूर्य, हुक्म, बुलाना, यज्ञ, (पु. पु.) **अवयः(शैलमेषार्का) (आज्ञाह्वानाध्वरा) हवाः।**

सत्ता, स्वभाव, आशय, चेष्टा, आत्मा, जन्म, (पु.) **भावः (सत्तास्वभावाभिप्रायचेष्टात्मजन्मसु)॥ २१६॥**

पर्वत, भेंड़ा और सूर्य तथा " छाग, मूषिककम्बल और प्रभु " ये ' अवि ' कहलाते हैं। यह पृथ्वी और रजोवती नारी में स्त्रीलिङ्ग, वायु, प्राकार और दीप्ति में पुंलिङ्ग है। यह १ पहाड़ आदिका नाम है। आज्ञा (हुकम) पुकारना या बुलाना और याग को ' हव ' कहते हैं। यह १ निदेश आदिका नाम है। विद्यमानता, प्रकृति, आशय, चेष्टा, अपनपो, यत्न, धृति, बुद्धि, परमात्मा, स्वभाव, ब्रह्म या देह और पैदा-

इश इनको ' भाव ' कहते हैं । यह सत्ता, स्वभाव, अभिप्राय, चेष्टा, आत्मा, जन्म, क्रिया, लीला, पदार्थ, विभूति, बन्धु, प्राणी और रति आदिकों में भी पुंलिङ्ग है । " सत्तायां यथा घटभावः, पटभावो वा " आत्मनि यथा " स्वंभावं भावयेद्योगी " सत्ता में जैसे घटका होना, कपड़े का होना आत्मा में जैसे कि योगीलोग अपने भावकी भावना करें आदि जानना चाहिये । यह १ सत्ता (होना) आदि का नाम है ॥ २१६ ॥

उत्पत्ति, फल, फूल, गर्भप्रसव, — पु. (स्यादुत्पादे फले पुष्पे) प्रसवो (गर्भमोचने) ।
अविश्वास, अपह्नव, शठता. — पु. (अविश्वासेऽपह्नवेऽपि निकृतावपि) निह्नवः ॥ २१७ ॥

उत्पत्ति, फल, फूल, गर्भमोचन (पैदाइश) और अपत्य को भी ' प्रसव ' कहते हैं । यह गर्भमोचन, उत्पत्ति, अपत्य, फल और फूल में भी पुंलिङ्ग है । यह १ उत्पत्ति आदि का नाम है । विश्वासहीन, अपलाप या बकवाद और शठता ये ' निह्नव ' कहलाते हैं । यह शठता, अविश्वासता, और बकवाद में पुंलिङ्ग है । यह १ विश्वासरहित आदिका नाम है ॥ २१७ ॥

ऊपर उठाना, चाहनाकी उपज, उछाह, — पु. (उत्सेकामर्षयोरिच्छाप्रसवे मह) उत्सवः ।
प्रभाव, ज्ञान का निश्चय, भावका बोधक. — पु. अनुभावः (प्रभावे च सतां च मतिनिश्चये) ॥ २१८ ॥

ऊपर उठाना या सींचना, कोप, अभिलाषा या वाञ्छा की उत्पत्ति या इच्छा के फैलाव का वेग, क्षण या आनन्द का वेग इनको ' उत्सव ' कहते हैं । यह उछाह, सींचना, मनोरथ की पैदाइश और कोप में पुंलिङ्ग है । यह १ उद्रेक आदिका नाम है । प्रताप, सज्जनों की मति का निर्णय यानी ज्ञान का निश्चय च शब्द से भावसूचक को भी ' अनुभाव ' कहते हैं । यह प्रभाव, निश्चय और भावबोधक में पुंलिङ्ग है यह १ प्रभाव आदिका नाम है ॥ २१८ ॥

जन्म का कारण, ज्ञान का पहला स्थान, — पु. (स्याज्जन्महेतुः) प्रभवः (स्थानं चाद्योपलब्धये) ।
शूद्रा में ब्राह्मणसे उपजा बालक, फरसा. — पुं. (शूद्रायां वि[illegible]तनये शस्त्रे) पारशवो (मतः) ॥ २१९ ॥

जन्म का हेतु यानी पैदाइश का आदिकारण और पहले ज्ञान का स्थान इन दोनों को ' प्रभव ' कहते हैं । यह जलमूल, जन्महेतु, पराक्रम और ज्ञान का पहला स्थान इनमें पुंलिङ्ग है । जन्मका हेतु जैसे कि पिता आदि और ज्ञानके पहले स्थानमें

जैसे कि ' गङ्गा प्रभवो हिमवान् ' गङ्गाके ज्ञान का पहला स्थान हिममान्नामक पहाड़ है। यह १ जन्महेतुआदि का नाम है । शूद्रा में ब्राह्मण से उपजा हुआ बालक और फरसानामक हथियार ये दोनों 'पारशव' कहलाते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि परस्त्री का पुत्र, फरसा और द्विजसे शूद्रा में जना हुआ बालक इन तीनों में 'पारशव' पुंलिङ्ग है। यह १ शूद्रामें ब्राह्मण से उत्पन्न हुए पुत्र आदि का नाम है ॥ २१९ ॥

तारामेद, निश्चित, हमेशा, ज्ञाति, आत्मा, आत्मीय और धन.

पु. * ध्रुवो(भभेदे क्लीबे तु निश्चिते शाश्वते त्रिषु) ।
पु. स्वो(ज्ञातावात्मनि) पु.स.न. स्वं(त्रिष्वात्मीये) पु.न. स्वो(ऽस्त्रियांधने)२२०

तारामेद, निश्चित और नित्य को ' ध्रुव ' कहते हैं। यह नक्षत्रविशेष में पुंलिङ्ग, निश्चित में नपुंसक और शाश्वत (हमेशा) में त्रिलिङ्ग है। एवं विश्वकोष में कहा है कि, कीला, शंकर, ठूंठ, वसुभेद, योगभेद, वरगद और मुनि में ' ध्रुव ' पुंलिङ्ग, मूर्वा स्वनामख्यातलताविशेष या चिनार, शालिपर्णी, गीतिभेद और स्रुवाभेद में स्त्रीलिङ्ग, निश्चित व तर्क में नपुंसक और निश्चल तथा शाश्वत में त्रिलिङ्ग है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है " ध्रुवः शङ्कौ हरे विष्णौ वटे चोत्तानपादजे । वसुयोगभिदोः पुंसि क्लीबं निश्चिततर्कयोः " खूंटा या ठूंठवृक्ष, महादेव, विष्णु, वरगद, उत्तानपाद राजा का पुत्र, वसुभेद और योगभेद में ' ध्रुव ' पुंलिङ्ग है। निश्चित और तर्क (दलील) में नपुंसक है। यह १ ताराभेद या उत्तरकेन्द्र आदिका नाम है। सगोत्र, आत्मा (क्षेत्रज्ञ) आत्मीय और धन को ' स्वः ' कहते हैं। यह ज्ञाति व आत्मा में पुंलिङ्ग, आत्मीय में त्रिलिङ्ग और धन में पुन्नपुंसक है। एवं हेमचन्द्र व मेदिनीकोष में भी कहा है कि स्व शब्द आत्मा व ज्ञाति में पुंलिङ्ग, आत्मीय में त्रिलिङ्ग और धनमें पुन्नपुंसक है। यह १ ज्ञाति आदिका नाम है ॥ २२० ॥

नारा, राजपुत्रादि के पास गिरवी धरना, मूलधन, पार्वती, सियार, कलह, जोड़ा.

स. (स्त्रीकटीवस्त्रबन्धेऽपि) नीवी (परिपणेऽपि च) ।
स. ‡ शिवा (गौरीफेरवयो) न. द्वन्द्वं(कलहयुग्मयोः)॥२२१॥

स्त्री की कमर में वस्त्र का बन्धन यानी कमरबन्द, इज़ारबन्द या नारा, राजपुत्र आदि के पास गिरवी रखना या उसके धन का अदल बदल करना और अपिशब्द से

---

* " जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च " (इति भागवतम्) ॥

‡ " गौरी त्वसंजातरजःकन्याशंकरभार्ययोः । रोचनीरजनीपिङ्गाप्रियङ्गुवसुधासु च । आपगाया विशेषेऽपि यादसां पतियोषिति " (इति कोषान्तरम्) ॥

बनियों का मूलधन (पूंजी) इनको 'नीवी' या 'नीवि' कहते हैं। यह नाग, मूलधन और परिपण में स्त्रीलिङ्ग है । यह १ इज़ारबन्द आदिका नाम है। पार्वती, आठ वर्ष की लड़की, वरुणभार्या, नदीविशेष, पृथ्वी, हल्दी, दारुहल्दी, गोरोचना, राई, पीपल, ककुनी, कुटकी, मंजीठ, सफ़ेद दूब, मोगरा या बेला, तुलसी, पीला केला या सूक्ष्म जटामांसी और सियार या राक्षस इनको 'शिवा' कहते हैं । यह भुइँ आंवला या जूही, हड़, आंवला, पार्वती, सियारी और छिउकरा वृक्ष में स्त्रीलिङ्ग है। यह १ गौरी आदिका नाम है । विवाद या लड़ाई झगड़ा, जोड़ा या दो से मिला जुला ये 'द्वन्द्व' कहलाते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में नपुंसक है और " चार्थे द्वन्द्वः " इस सूत्र के निर्देश से पुलिङ्ग भी है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि रहस्य, कलह, स्त्री पुरुष का जोड़ा और युगल या मिथुनराशि को 'द्वन्द्व' कहते हैं। यह १ लड़ाई आदिका नाम है ॥ २२१ ॥

धन, प्राण, निश्चय, हिजड़ा, बधिया बैल, डरपोक या कायर.

न.
(द्रव्यासुव्यवसायेषु) सत्त्व (मस्त्री तु जन्तुषु) ।

न.
क्लीवं (बं) (नपुंसके षण्ढे वाच्यलिङ्गमविक्रमे) ॥ २२२ ॥

इति वान्ताः ।

धन–दौलत–सारपदार्थ या औषध, प्राण, निश्चय और प्राणीमात्र को 'सत्त्व' कहते हैं। यह द्रव्य, प्राण व व्यवसाय में नपुंसक और प्राणीमात्र में पुन्नपुंसक है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि गुण, पिशाच आदि, बल, द्रव्य, स्वभाव, आत्मा, व्यवसाय, प्राण और वित्त में 'सत्त्व' नपुंसक और जीवमात्र में पुन्नपुंसक है। यह १ द्रव्य आदिका नाम है। नपुंसक=नामर्द, खोजा, हिजड़ा और बधिया बैल, तथा अलस, (सुस्त) अपौरुष, सामर्थ्यहीन, कायर या डरपोक को 'क्लीब' या 'क्लीव' कहते हैं । यह नपुंसक, षण्ढ या शण्ढ में पुन्नपुंसक और सामर्थ्यहीन में वाच्यलिङ्ग यानी त्रिलिङ्ग है । एवं रुद्रकोष में भी कहा है कि नामर्द में क्लीबशब्द पुन्नपुंसक और डरपोक या कायर में वाच्यलिङ्ग है। यह विश्व–हैम–व मेदिनीकोष में भी यणान्तों में ही पढ़ागया है और "क्लीबृ अधाष्टर्ये" धातुभी बान्त और ब–व की सवर्णता भी है इस लिये विद्वानों को बान्त व वान्तभी जानना चाहिये। यह १ नपुंसक आदिका नाम है ॥ २२२ ॥

इति वान्ताः ॥

अथ शान्ता व्याख्यायन्ते ॥

बनियां, मनुष्य, दूत, लड़ाई, समूह, मेषादि, वंश या बांस.

पु. पु.
(द्वौ) विशौ (वैश्यमनुजौ) (द्वौ चराभिमर्शौ) स्पशौ ।

पु. पु.
(द्वौ) राशी (पुञ्जमेषाद्यौ) (द्वौ) वंशौ (कुलमस्करौ) ॥ २२३ ॥

बनियां और मनुष्य ये दोनों 'विश्' कहलाते हैं। एक वचन में विट् व द्विवचन में 'विशौ' होते हैं। एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, वैश्य वर्णभेद, मनुज और प्रवेश को विट् कहते हैं। यह शान्त होकर पुंलिङ्ग है। यह १ बनियां आदिका नाम है। गूढ़ पुरुष या अपने व दूसरे राज्य का भेद जानने के लिये राजा के हुक्म से इधर उधर घूमनेवाला, दूत या चलनेवाला या हलकारा आदि, युद्ध या मरने की अपेक्षा छोड़ कर किये युद्ध का उत्साह इनको 'स्पश' कहते हैं। यह १ दूत आदिका नाम है। समूह और मेष, वृषभ आदिको 'राशि' कहते हैं। यह मेष आदि बारह राशियों तथा समुदाय में पुंलिङ्ग है। यह १ पुञ्ज आदिका नाम हैं। सजातिसमूह या गण, बांस या छेदसमेत बांस ये दोनों 'वंश' कहलाते हैं। यह बांस, कुल, वर्ग और पीठ आदिके अवयव में भी पुंलिङ्ग है "वंशःसंघेऽन्वये वेणौ पृष्ठाद्यवयवेऽपि च" (इति हैम:) समुदाय, वंश, बांस और पृष्ठवंश ये 'वंश' कहलाते हैं। यह १ कुल आदिका नाम है ॥ २२३ ॥

एकान्त, प्रकाश, तनख़्वाह, भोग, यमराज, क्षुद्र, अधम, किसान.

(रहःप्रकाशौ) वीकाशौ (पु.) निर्वेशो (पु.) (भृतिभोगयोः)।
(कृतान्ते पुंसि) कीनाशः (पु.) (क्षुद्रकर्षकयोस्त्रिषु) ॥ २२४ ॥

विजन, गोप्य, रमण या याथार्थ्य और प्रकाश या घाम इनको वीकाश या विकाश कहते हैं। यह विजन व प्रकट में पुंलिङ्ग है। यह १ एकान्त आदिका नाम है। वेतन या (तनख़्वाह) भरण–पोषण आदि, उपभोग या भोजन आदिकों से उपजे हुए सुख का अनुभव करना इनको 'निर्वेश' कहते हैं। यह भोग, वेतन, मूर्च्छन और स्थान में पुंलिङ्ग है। यह १ वेतन मज़दूरी या मासिक आदिका नाम है। यमराज, क्रूर, अधम, अल्प और किसान या खेती करनेवाला ये 'कीनाश' कहलाते हैं। यह यमराज में पुंलिङ्ग, क्षुद्र और कर्षक में त्रिलिङ्ग है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है। कि, किसान, क्षुद्र और एकान्तघाती में वाच्यलिङ्ग और यमराज में पुलिङ्ग है। यह १ यम आदिका नाम है ॥ २२४ ॥

स्थान, निशाना, कारण, जल आदि, अनेकावस्था, दीपवर्तिका, वस्त्र का छोर, चाहना, पूर्वादि दिशा.

(पदे लक्ष्ये निमित्ते) ऽपदेशः (पु.) (स्या) त्कुश (न.) (मप्सु च)।
दशा (स.) (वस्थानेकविधाऽ) प्याशा (स.)‡ (तृष्णापि चायता) २२५

उद्योग, विचार या अभिप्राय, रक्षा करना, स्थान, चिह्न, पाँव, सर्ववस्तु, सुभिक्ष-

‡ "तृष्णायां यथा–आशा हि परमं दुःखं नैराश्यं परमं सुखम्" (इति भागवतम्) ॥

रूप, प्रदेश, छल या निशाना और हेतु या कारण ये 'अपदेश' कहलाते हैं। यह लक्ष्य (उद्देश्य) निमित्त और व्याज (कपट) में पुंलिङ्ग है। यह १ पद आदिका नाम है। जल और चशब्दसे द्वीप, जुवां में बैल जोड़ने की रस्सी (जोत) कुश और रामजीका पुत्र इनको 'कुश' कहते हैं। यह जल में नपुंसक और अन्य अर्थों में पुंलिङ्ग है। एवं विश्वकोष में भी कहा है। कि, रामसुत, डाभ, योक्त्र और द्वीप में 'कुश' पुंलिङ्ग और पानीय में नपुंसक है। यह १ जल आदिका नाम है। बाल्यादिरूप अवस्था, अपिशब्द से दिया की बत्ती और वस्त्र का किनारा या छीरा इनको 'दशा' कहते हैं। यह अवस्था व बत्ती में स्त्रीलिङ्ग है। और वस्त्रके छीरा में स्त्री लिङ्ग होकर बहुवचनान्त है। यह १ बाल्यादि अवस्था का नाम है। बड़ी चाहना अपिशब्द से दिशा को भी 'आशा' कहते हैं। यह १ तृष्णा आदिका नाम है २२५॥

नारी, हथिनी, ज्ञान, ज्ञाता, आँखआदि, साहसिक, कठिन, दुःस्पर्श आदि.

स. स.
वशा (स्त्री करिणी च स्या) द् दृग् (ज्ञाने ज्ञातरि त्रिषु)।
पु.स.न.
(स्या) त्कर्कशः (साहसिकः कठोरामसृणावपि) ॥२२६॥

लुगाई या औरत, हथिनी चशब्दसे बहिला गौ और लड़की इनको 'वशा' कहते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में स्त्रीलिङ्ग है। एवं हैमकोष म भी कहा है कि, नारी, बहिलागाय, हथिनी और लड़की में 'वशा' स्त्रीलिङ्ग है। यह १ स्त्री आदिका नाम है। ज्ञान या बुद्धि, ज्ञाता (जाननेवाला) या देखनेवाला, आँखें और दर्शन ये 'दृक्' कहलाते हैं। यह ज्ञान व ज्ञाता में त्रिलिङ्ग और चशब्द के अनुवर्तन से नयनों व दर्शनों में स्त्रीलिङ्ग है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, दर्शन और नेत्रों में 'दृक्' स्त्रीलिङ्ग, बुद्धि व देखनेवाले (द्रष्टा) में त्रिलिङ्ग है। यह १ ज्ञान आदिका नाम है। इसके अनन्तर वर्गसमाप्ति पर्यन्त 'त्रिषु' इसका अधिकार किया जाता है—विवेक रहित–मिथ्यावादी-मनुष्यों के मारडालने आदि में तत्पर या चोर आदि, कठोर या कठिन और जो चिकना न हो या बड़ी मुश्किल से छुवा जावे इनको 'कर्कश' कहते हैं। यह त्रिलिङ्ग है। एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, परुष, क्रूर, कृपण (कंजूस) निर्दय, दृढ़ (ठोस) ईख या गन्ना साहसिक, कसौंधी और कबीला ये 'कर्कश' कहलाते हैं। यह १ एकाएकी विना विचारे काम करनेवाले आदिका नाम है ॥ २२६ ॥

बड़ा प्रसिद्ध, प्रहास, घाम, खिलना, बच्चा या लड़का व मूढ़ आदि.

पु.स.न. पु.स.न.
प्रकाशो (ऽतिप्रसिद्धेऽपि) (शिशावज्ञे च) वालिशः ॥

इति शान्ताः।

बड़ा प्रसिद्ध या महाविख्यात अपिशब्द से बड़ा हास, घाम, और खिलना ये 'प्रकाश' कहलाते हैं। यह त्रिलिङ्ग है। एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, महाप्रसिद्ध, प्रहास (ठाकर बहुतही हँसना) घाम, फूला या साफ़ इनको प्रकाश कहते हैं। यह १ बड़े विख्यात आदिका नाम है। बच्चा, लड़का या ऊंट का बच्चा, जड़ (अज्ञानी) या मूर्ख ये 'वालिश' कहलाते हैं। यह त्रिलिङ्ग है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि बच्चा और मूर्ख को 'वालिश' कहते हैं। यह १ छोटे से बच्चे आदिका नाम है ॥

इति शान्ताः ।

अथ षान्ता व्याख्यायन्ते ।

देवता, मछली, परमात्मा, मनुष्य, कौआ, बगला, तृण या घास, लता.

पु. पु.
(सुरमत्स्याव) निमिषौ पुरुषा (वात्ममानवौ) ॥ २२७ ॥

पु. पु.
(काकमत्स्यात्खगौ) ध्वाङ्क्षौ कक्षौ (तु तृणवीरुधौ) ।

देवता और मछली को 'अनिमिष' कहते हैं। यह १ देवता आदिका नाम है। परमात्मा और मनुष्य को 'पुरुष' कहते हैं। यह पुरुष, सांख्यशास्त्र का ज्ञाता और पुन्नागवृक्ष इनमें पुंलिङ्ग है। यह १ पुरुष आदिका नाम है। कौआ और बगुला या बगला ये दोनों 'ध्वाङ्क्ष' कहलाते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग है। एवं मेदिनी कोष में भी कहा है कि बगला, कौआ, भिखारी या मंगता और सर्प को 'ध्वाङ्क्ष' कहते हैं। यह १ कौआ आदिका नाम है। घास फूस, तिनका या खर और लता या बेल इन दोनों को 'कक्ष' कहते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग है। एवं धरणी-कोष में भी कहा है कि बगल या (कांख) जङ्गल, बेल, सूखा तिन और कछार को 'कक्ष' कहते हैं। यह पुंलिङ्ग है। एवं डाह का घर, स्त्रियों के कमरकी कंभनी, रथ का बैठका, राजमहलों की ड्योढ़ी, हाथी के कमरबन्धन की रस्सी और धोतीकी कांच तथा दफ़ा आदिको भी 'कक्षा' कहते हैं। यह १ तिनका या घास आदिका नाम है ॥ २२७ ॥ ½ ॥

घोड़े की पगही, किरण, भेजना या हुक्म देना, मर्दन करना.

पु. पु.
अभीषुः (प्रग्रहे रश्मौ) प्रैषः (प्रेषणमर्दने) ॥ २२८ ॥

घोड़े आदिकों की रस्सी या पगही और किरण इन दोनों को 'अभीषु' या 'अभीशु' कहते हैं। यह पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग है। यह १ पगही या पगहा आदिका नाम है। भेजना या हुक्म देना, मारना या पीटना ये दोनों 'प्रैष' या 'प्रेष' कहलाते हैं। यह भेजना, क्लेश देना, मर्दन करना और पागलपना इनमें पुंलिङ्ग है। यह १ प्रेषण यानी प्रेरणा करना या पठावना आदिका नाम है ॥ २२८ ॥

सहाय, आधा मास आदि, पगड़ी, मुकुट, महावीर्यवान्, मूसा, श्रेष्ठ, धर्म, बैल.

पु. न.
पक्षः (सहायेऽप्यु) ष्णीषं (शिरोवेष्टकिरीटयोः)।
पु
(शुक्रले मूषिके श्रेष्ठे सुकृते वृषभे) वृषः ॥ २२९ ॥

सहाय, सहचर या अनुकूल अपिशब्द से आधा महीना, चिड़ियों का पंख, बाण के पुंख का पत्र, केशसमूह, समुदाय, बल, सखा, चूल्हे का मुख, पांजर, तरफ़दार और घोड़े व हाथी का पार्श्वभाग इनको ' पक्ष ' कहते हैं । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, मास का आधा यानी अँधेरा उजेला पाख, पांजर, ग्रह, साध्य, विरोध, जुल्फ या जूरा, जत्था–दल, टोली या तड़, बल, मित्र, सहाय, चूल्हे का छेद, पखेरुओं का पंख, वाजी और कुञ्जर का पार्श्वभाग ये ' पक्ष ' कहलाते हैं । यह १ सहाय आदिका नाम है । शीश बाँधने का वस्त्रविशेष (पगड़ी) और मुकुट को ' उष्णीष ' कहते हैं । यह पगड़ी, किरीट और लक्षणान्तर में नपुंसक है । यह १ शिरबन्द आदिका नाम है । बड़े वीर्यवाला या अण्डकोष, मूसा या चूहा, पूज्य या राजा, धर्म और बैल इनको ' वृष ' कहते हैं । यह पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग है । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है । कि, धर्म, बैल, काकड़ासिंगी, पुरुषविशेष, राशिभेद, श्रेष्ठ, उत्तर में टिका, अडूसा, मूसा और महावीर्यवाले ये वृष कहलाते हैं । यह १ महावीर्यवान् आदिका नाम है ॥ २२९ ॥

फूलती कली, तलवार का घर, खज़ाना, सौगन्द, जूआ, पांशा, चौपड़, इन्द्रियां, जूआ, सोलहमाशे, रथ का पहिया, लेन देन, बहेड़ा.

पु.न.
कोषो (ऽस्त्री कुड्मले खड्गपिधानेऽर्थौघदिव्ययोः)।
पु. पु.न.
(द्यूतेऽक्षेशारिफलकेऽ)प्याकर्षोऽथाक्ष(मिन्द्रिये)॥२३०॥
(ना द्यूताङ्गे कर्षे चक्रे व्यवहारे कलिद्रुमे)।

कुछेक फूलती हुई कली, तलवार का म्यान, धनसमूह (खज़ाना) सौगन्द या स्वर्गीयपदार्थ इनको ' कोष ' कहते हैं । यह पुन्नपुंसक है । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, मुकुल यानी फूलनेवाली कली, इसपार उसपार का बीच या बरतन शपथ, खड्ग का घर, जायफल, धनसमूह, अण्डा, अनेकार्थाभिधान (डिक्शनरी) ये कोष या कोश कहलाते हैं । यह पुन्नपुंसक है और पूर्वोक्त अर्थों में तालव्यान्त भी है । यह १ कुछेक खिलीहुई कली आदिका नाम है । जूआ, पाशा, चौपड़ खेलने का सामान अपिशब्द से धनुर्धारियों के धनुष का अभ्यास और खलिहान में धान्य बटोरने का पांचा ये ' आकर्ष ' कहलाते हैं । यह पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग है । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, जूआ, इन्द्रियां, पाशा, चौपड़, धनुष का अभ्यास

और आकर्षण को भी ' आकर्ष ' कहते हैं । यह पुंलिङ्ग है । यह १ जूआ आदिका नाम है । इन्द्रियवाची ' अक्ष ' नपुंसक और जूआ, मानभेद (बारह या सोलह माशे) रथका पहिया, लेनदेन का व्यवहार और बहेड़ा इनमें पुंलिङ्ग है । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि एक तोला या सोलहमाशे, बहेड़ा, रथका चाक, गाड़ा, लाभ-खर्च की चिन्ता, आत्मज्ञाता, पाशा इन अर्थों का वाची ' अक्ष ' पुंलिङ्ग और तूतिया, सोंचरनमक व इन्द्रियों का वाची नपुंसक है । यह १ इन्द्रिय आदिका नाम है ॥ २३० ॥

जीविका, बिनु-वांकण्डा, नदी मात्र या तलैया.

पु. स. ‡
कर्षू (र्वार्ता करीषाग्निः) कर्षूः (कुल्याभिधायिनी) २३१॥

जीविका या रोज़ी, बिनुवां कण्डों की आग और नदीमात्र या तलैया ये 'कर्षू' कहलाते हैं । जीविका व नदीमात्र में ' कर्षू ' स्त्रीलिङ्ग और उपलों की आग में पुंलिङ्ग है । एवं रभसकोष में भी कहा है कि, सूखे कण्डों की आग का वाची 'कर्षू' पुंलिङ्ग और नदीमात्र का वाची स्त्रीलिङ्ग है । यह १ जीविका आदि का नाम है ॥ २३१ ॥

पुरुषपना, पुरुषकर्म, जल, जहर, घूस लेना आदि, जुर्म, गुनाह, पाप, रोग.

न. न.
(पुंभावे तत्क्रियायां च) पौरुषं विष (मप्सु च) ।
न. न.
(उपादानेऽप्या)मिषं(स्या)दपराधेऽपि) किल्विषम् २३२

पुरुष का भाव (पुरुषपना) और पुरुष का कर्म च शब्द से तेज या प्रताप इनको ' पौरुष ' कहते हैं । यह पूर्वोक्त अर्थों में नपुंसक है । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, पुरुषत्व, पराक्रम, बल, पुरुषार्थ, तेज, प्रभाव या चमक तथा ऐश्वर्य में ' पौरुष' नपुंसक और पुरसा में वाच्यलिङ्ग है । यह १ पुरुषभाव आदि का नाम है। जल और च शब्द से ज़हर को भी ' विष ' कहते हैं । यह माहुर व पानी में नपुंसक है । यह १ जल आदि का नाम है । ग्रहण करना या घूस लेना अपि शब्द से भोग्य वस्तु, संभोग और मांस ये ' आमिष ' कहलाते हैं । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि भोग्यवस्तु, संभोग, उत्कोच=(रिशवत) और मांस में भी आमिष, पुन्नपुंसक है । यह १ उपादान आदि का नाम है । अपराध, पाप, दोष, अधर्म या अन्याय अपिशब्द से रोग ये ' किल्विष ' कहलाते हैं । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, पाप और रोग में 'किल्विष' नपुंसक है । यह १ अपराध आदि का नाम है ॥ २३२ ॥

‡ कुल्या नदीमात्रं च । " कुल्या धुनी द्वीपवती तटिनी ह्रादिनी सरित् । रोधोवक्रापगा कर्षूः स्रवन्ती निम्नगा नदी " (इति रत्नकोषः) ॥

वर्षा, मेह, जम्बूद्वीप का भारतखण्ड, साल या संवत्, नाच का देखना, बुद्धि, आराधना, मांगना, तनख्वाह.

पु.न.
(स्याद्वृष्टौ लोकधात्वंशे वत्सरे) वर्ष (मस्त्रियाम्) ।
स. स.
प्रेक्षा (नृत्येक्षणं प्रज्ञा) भिक्षा (सेवार्थना भृतिः) २३३

मेघ की वर्षा, लोक के धारनेवाले जम्बूद्वीप आदि का भारतवर्ष आदि खण्ड और बरस या साल इनको 'वर्ष' कहते हैं। यह पुन्नपुंसक है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि भारत आदि खण्ड, जम्बूद्वीप, बरस और वृष्टि का वाची 'वर्ष' पुन्नपुंसक है। और वर्षाकाल का वाची स्त्रीलिङ्ग हो कर नित्य बहुवचनान्त है। यह १ वृष्टि आदि का नाम है। नाच का देखना और बुद्धि को 'प्रेक्षा' कहते हैं अथवा "प्रेक्षा धीरीक्षणं नृत्तमिति" इस हैमकोष के प्रमाण से नाचना, देखना और बुद्धि ये तीनों 'प्रेक्षा' कहलाते हैं। यह १ नाच आदि का नाम है। सेवा करना, माँगना और वेतन (तनख्वाह) या भरण पोषण आदि इनको 'भिक्षा' कहते हैं। एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, भरण, पोषण, माँगना, सेवना या भजन करना और माँगी हुई वस्तु इनमें भिक्षा स्त्रीलिङ्ग है। यह १ आराधना आदि का नाम है ॥२३३॥

शोभा, संपूर्ण, अधम, प्रत्यक्ष, अधिकृत, अप्रेम, अचिक्कण.

स. पु.स.न.
त्विट् (शोभापि) (त्रिषु परे) न्यक्षं (कात्स्न्र्यनिकृष्टयोः) ।
पु.स.न. पु.स.न.
(प्रत्यक्षेऽधिकृते) ऽध्यक्षोरूक्ष (स्त्वप्रेम्ण्यऽचिक्कणे) २३४

इति षान्ताः ॥

शोभा=छवि कान्ति या द्युति अपिशब्द से वाणी और रुचि को त्विट् (ष्) कहते हैं। एवं रभसकोष में भी कहा है कि, कान्ति, वाणी और रुचि में षान्त (त्विट्) स्त्रीलिङ्ग है। यह १ शोभा, दमक—चमक या चाहना आदिका नाम है। इसके अनन्तर कहेजानेवाले न्यक्ष आदि तीनों शब्द त्रिलिङ्ग हैं। साकल्य या संपूर्ण और अधम या नीच अपिशब्द से परशुराम ये 'न्यक्ष' कहलाते हैं। एवं विश्वकोष में भी कहा है कि परशुराम, संपूर्णता और निकृष्टता में 'न्यक्ष' वाच्यलिङ्ग है। यह १ समग्र आदिका नाम है। प्रत्यक्ष यानी साक्षात्प्रमाणीकृत या सम्मुख, सामने, आगे, प्रकट, प्रसिद्ध और अधिकृत यानी नियुक्त या अधिकार किया हुआ या अधिकार पाया हुआ (मक़बूज़ा) इनको 'अध्यक्ष' कहते हैं। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि अधिकार पायेहुए में 'अध्यक्ष' पुंलिङ्ग और प्रत्यक्ष में वाच्यलिङ्ग है। यह १ प्रत्यक्ष आदिका नाम है। प्रेम का अभाव और चिक्कणतारहित ये दोनों 'रूक्ष' कहलाते हैं। यह १ प्रेमाभाव (निठुराई) आदिका नाम है ॥२३४॥

इति षान्ताः ॥

अथ सान्ता व्याख्यायन्ते ॥

दिवाकर, सफ़ेद पंखवाला पक्षी, सूर्य, आगी, बछड़ा, बरस, चातक, देवता.

पु. पु.
(रविश्वेतच्छदौ) हंसौ (सूर्यवह्नी) विभावसू ।
पु. पु.
वत्सौ (तर्णकवर्षौ द्वौ) (सारङ्गाश्च) दिवोकसः ॥२३५॥

सूर्य, सफ़ेद पंखवाला पक्षीविशेष जोकि मानसरोवर में रहता है या ब्रह्माजी का वाहन इनको 'हंस' कहते हैं । एवं विश्वकोष में भी कहा है । पक्षीविशेष, सूर्य, विष्णु, सफ़ेद घोड़ा, योगी या मन्त्रआदि, आत्मा, परमात्मा, डाहरहित, निर्लोभ राजा और जीव या प्राणवायु ये 'हंस' कहलाते हैं । यह १ दिवाकर आदिका नाम है । सूर्य, मदार, दानवविशेष और आगी को 'विभावसु' कहते हैं । यह सूर्य, हारभेद और आगी में पुंलिङ्ग है । यह १ सूर्य आदिका नाम है । गौका बछड़ा या पुत्रआदि और बरस ये 'वत्स' कहलाते हैं । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि पुत्रआदि, बरस, गौका बछड़ा और वक्षस्थल इनको 'वत्स' कहते हैं । यह पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग होकर वक्षस्थल में नपुंसक है । यह १ बछड़ा आदिका नाम है । मृग, चातक (पपीहा) हरिण और देवता ये 'दिवोकस्' या 'दिवौकस्' कहलाते हैं । यह देवता और चातक में पुंलिङ्ग है । यह १ मृगआदि का नाम है ॥ २३५ ॥

शृङ्गार, वीर आदि, कर्ण भूषण आदि.

पु.
(शृङ्गारादौ विषे वीर्ये गुणे रागे द्रवे) रसः ।
पु. पु.
(पुंस्यु) त्तंसावतंसौ (द्वौ कर्णपूरे च शेखरे) ॥ २३६ ॥

शृङ्गार-वीर-करुणा आदि, ज़हर, बल या प्रभाव, खट्टा-कड़ुवा, तीखा आदि स्वाद, प्रीति या अनुराग, द्रवतायुक्त पदार्थ और वेग ये 'रस' कहलाते हैं । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, गन्धरस (बोर) तीखा आदि स्वाद, विष, राग-शृङ्गारआदि, द्रवतासमेत पदार्थ, देहकी धातु, पानी और पारा में 'रस' पुंलिङ्ग और शालईवृक्ष, पाढ़रि, जीभ, पृथ्वी और काकुनि में स्त्रीलिङ्ग है । यह १ शृङ्गारआदि का नाम है । कानोंका आभरण (कर्णफूल-झुमकाआदि) और शिरोभूषण (मुकुट-पगड़ी आदि) इनको उत्तंस, अवतंस या 'वतंस' कहते हैं । ये दोनों पुंलिङ्ग हैं, ये २ कर्णभूषण या शिरोभूषण के नाम हैं ॥ २३६ ॥

आठो वसुदेवता, आगी, किरण, रत्न, धन, विष्णु, बुद्धि-मान्, ब्रह्मा, हितकी चाहना, सांपकी दाढ़.

पु. न.
(देवभेदेऽनले रश्मौ) वसू (रत्ने धने) वसु ।
पु. स.
(विष्णौ च) वेधाः (स्त्री) त्वाशीः (हिताशंसाहिदंष्ट्रयोः) २३७

देवभेद यानी देवताविशेष या एक भाँतिके देवता जोकि आठ हैं (धर, ध्रुव, सोम, सावित्र, अनिल, अनल, प्रत्यूष, प्रभास) आगी या कृत्तिकानक्षत्र, किरण, घोड़े की रस्सी का वाची 'वसु' पुंलिङ्ग है । रत्न=माणिक्य, जवाहिर आदि और द्रव्यमात्र का वाची नपुंसक है । एवं उणादिकोष में कहा है कि, कुण्ड, आगी, जोते की जेवरी और किरण में 'वसु' पुंलिङ्ग तथा जल, धन और मणि में नपुंसक है । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, आठो वसुदेवता, आगी या कृत्तिका या दीप्ति, सूखा या बगुला और राजा में 'वसु' पुंलिङ्ग है । वृद्धिनामक औषध, साला, धन तथा रत्न में नपुंसक और मीठे में त्रिलिङ्ग है । यह १ अष्टवसुदेवता आदिका नाम है । विष्णुदेव, चशब्द से बुध और ब्रह्मा को 'वेधाः †' कहते हैं । यह सान्त होकर पूर्वोक्त अर्थों में पुंलिङ्ग है । यह १ हृषीकेश आदिका नाम है । हितकी चाहना और सांप की दाढ़ इन दोनों को 'आशीः' कहते हैं । यह सान्त होकर स्त्रीलिङ्ग है । एवं कोषान्तर में भी कहा है कि आशीर्वाद, असीस या दुआ और सांपकी दाढ़ कि 'जिससे बिधाहुआ जीव जीता नहीं है' वह 'आशीः' कहलाती है । यह १ हित चाहना आदिका नाम है ॥ २३७ ॥

प्रार्थना, बड़ी चाहना आदि, चोरी, वध आदि, घोड़ी, माता आदि, भूमि, स्वर्ग.

लालसे (स.) **(प्रार्थनौत्सुक्ये) हिंसा** (स.) **(चौर्यादि कर्म च) ।**
प्रसू (स.) **(रश्वाऽपि) (भूद्यावौ) रोदस्यौ** (स.) **रोदसी** (न.अ.) **(च ते) २३८**

माँगना और बड़ी चाहना इन दोनों को 'लालसा' कहते हैं । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, औत्सुक्य, अधिकतृष्णा और याचना में 'लालसा' स्त्री-पुंलिङ्ग है । यह १ प्रार्थना आदि का नाम है । चोर का कर्म (चोरी करना) आदि शब्द से बाँधना, त्रासदेना, मारना, पीटना और चशब्द से वध करना ये 'हिंसा' कहलाते हैं । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि चौर्य आदि कर्म और मार डालना इनको 'हिंसा' कहते हैं । यह १ चौर्य आदि का नाम है । घोड़ी, अपिशब्द से माता, केला और लता (बेल) इनको 'प्रसू' कहते हैं । यह पूर्वोक्त अर्थों में स्त्रीलिङ्ग है । यह १ घोड़ी आदि का नाम है । जो भूलोक और स्वर्लोक हैं उन दोनों को रोदसी व रोदसी कहते हैं इनमें पहला स्त्रीलिङ्ग हो कर द्विवचनान्त है । और दूसरा सान्त व द्विवचनान्त होकर नपुंसक है । अथवा अव्यय है जैसे कहा है कि "द्युलोक और भूलोक को रोदसी, रोदसी, व रोदसी कहते हैं । इनमें पहला ङीषन्त, दूसरा नपुंसक और तीसरा अव्यय है । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि स्वर्गलोक और भूलोक को रोदस् और रोदसी अलग २ कहते हैं यानी द्युलोक रोदस्

---

† "वेधा धातृज्ञविष्णुषु" (इति हैमः) ॥

और भूलोक रोदसी कहलाते हैं । और इन दोनों के एक साथ कहने में भी 'रोदस्' और 'रोदसी' ये प्रयोग किये जाते हैं । यह १ द्यावाभूमी का नाम है ॥ २३८ ॥

ज्वाला, दीप्ति, नक्षत्र, प्रकाश, दृष्टि, पाप, गुनाह, पक्षी, बाल्यावस्था आदि.

न. न.
(ज्वालाभासोर्नपुंस्य) र्चिर्ज्योति (र्भद्योतदृष्टिषु) ।
न.+ न.
(पापापराधयो) रागः (खगबाल्यादिनो) र्वयः ॥ २३९ ॥

आग की शिखा या आग का जलना और दीप्ति या प्रकाश को अर्चिः (स्) कहते हैं । यह इसन्त होकर पुंलिङ्ग नहीं है । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि किरण, ज्वाला, शोभा और प्रकाश ये 'अर्चिः' (स्) कहलाते हैं। यह १ ज्वाला आदि का नाम है । नक्षत्र, प्रकाश और आँख यानी कनीनिका का मध्यभाग ये 'ज्योतिः' (इस्) कहलाते हैं। यह आगी और दिवाकर में पुंलिङ्ग, दृष्टि, नक्षत्र और प्रकाश में नपुंसक है । यह १ नक्षत्र आदि का नाम है । पाप और अपराध को 'आगः' (स्) कहते हैं । यह अपराध और पाप में नपुंसक है । यह १ पाप आदि का नाम है । पक्षी—पखेरू या चिड़िया और बाल्यावस्था आदि शब्द से यौवन को भी 'वयः' (स्) कहते हैं । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि, पक्षी, बाल्य आदि अवस्था और यौवन ये 'वयः' (स्) कहलाते हैं । यह पूर्वोक्त अर्थों में नपुंसक है । यह १ खग आदि का नाम है ॥ २३९ ॥

प्रताप, विष्ठा, उत्सव, तेज, गुण, स्त्रीपुष्प, राहु, अँधेरा, तीसरा गुण.

न. न.
(तेजःपुरीषयो) र्वर्चो मह (स्तूत्सवतेजसोः) ।
न. न.
रजो (गुणे च स्त्रीपुष्पे) (राहौ ध्वान्ते गुणे) तमः ॥ २४० ॥

प्रताप, प्रभाव या सूर्य आदिका प्रकाश और विष्ठा को वर्चः (स्) कहते हैं । यह नपुंसक है । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि रूप, विष्ठा और तेज में 'वर्चः' नपुंसक तथा बुध में पुंलिङ्ग है । यह १ प्रताप आदिका नाम है । उत्सव (विवाह आदिका उछाह) और तेज ये दोनों महः (स्) कहलाते हैं । यह मुकुट के मत में अदन्त भी है । इसीसे मेदिनीकोष में भी कहा है कि नदीविशेष व पृथ्वी में स्त्रीलिङ्ग तथा उत्सव और तेज में नपुंसक है । यह १ उछाह आदिका नाम है । दूसरा गुण और स्त्रीका फूल (आर्तव या मासिकधर्म) चशब्दसे सुगन्धित फूलों की धूलि और रेणुमात्र को भी रजः (स्) कहते हैं । एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि गुणान्तर, आर्तव, पराग और रेणुमात्र ये रजः (स्) कहलाते हैं । यह नपुंसक है और अदन्त भी है । यह १ गुण आदिका नाम है । राहु, अन्धकार और गुण तथा पाप और

+ आगच्छतीति आगः—इति स्वाम्युक्तिस्तु चिन्त्या ।

शोक को भी तमः (स्) कहते हैं । यह अन्धकार गुण और शोक में नपुंसक और राहु में पुंलिङ्ग है । यह १ राहु आदिका नाम है ॥ २४० ॥

अनुष्टुबादि, मनोरथ, सान्तपनादि कर्म, बल, मार्ग, आकाश, श्रावण मास.

न. न.
छन्दः (पद्येऽभिलाषे च) तपः (कृच्छ्रादि कर्म च) ।
न. पु. न. पु.
सहो(बलं)सहा(मार्गो)नभः(खं)(श्रावणो)नभाः २४१॥

अनुष्टुप्–गायत्रीआदि वृत्त, मनोरथ चशब्दसे वेद और स्वैराचार इनको छन्दः (स्) कहते हैं । यह पद्य, वेद, स्वैराचार और अभिलाष में नपुंसक है । यह १ पद्य आदिका नाम है । कृच्छ्र आदिकर्म यानी सान्तपन आदि व्रत, आदिशब्द से प्राजापत्य, चान्द्रायण आदि व्रतरूप कर्म चशब्दसे लोकभेद, धर्म, शिशिर और माघमास ये तपः † (स्) कहलाते हैं । यह लोकान्तर, चान्द्रायण आदिव्रत और धर्म में नपुंसक तथा शिशिर व माघ महीना में पुंलिङ्ग है । यह १ सान्तपन आदिका नाम है । मोटापन, सामर्थ्य, सैन्य और ज्योति को सहः (स्) कहते हैं । और अगहन मास तथा राह या डगर ये सहाः (स्) कहलाते हैं । यहां दो प्रकार का पाठ लिङ्ग भेद के लिये जानना चाहिये. ऐसेही आगे भी जानो। यह १ बल आदिका नामहै । आकाश, श्रावणमास चशब्द की अनुवृत्ति से मेघ, पीकदान, नाक और मसीड़ा क सूत्र तथा वर्षा इनको नभः (स्) या नभाः (स्) कहते हैं । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि आकाशवाची नभ नपुंसक तथा मेघ, श्रावण, पीकदान, नासिका और मृणालसूत्र का वाची पुंलिङ्ग और वर्षा का वाची स्त्रीलिङ्ग है । यह १ आकाश आदिका नाम है ॥ २४१ ॥

घर, आश्रयमात्र, दूध, पानी, प्रकाश, बल, बीज, नदीका वेग.

न. पु. न. न.
ओकः(सद्माश्रयश्चौ)काः पयः (क्षीरं) पयो (ऽम्बु च) ।
न. न.
ओजो (दीप्तौ बले) स्रोत (इन्द्रिये निम्नगारये) ॥२४२॥

घर या मन्दिर को ओकः (स्) या ओक और आश्रयमात्र या सहारामात्र को ओकाः (स्) कहते हैं । यह आश्रयमात्र में पुंलिङ्ग और मन्दिर में नपुंसक है । यह १ घर आदिका नाम है । दूध को पयः (स्) और जल को भी पयः (स्) कहते हैं । यह पूर्वोक्त अर्थों में नपुंसक है । एवं हैमकोष में भी कहा है कि क्षीर और नीर ये दोनों पयः (स्) कहलाते हैं । यह १ दूध आदिका नाम है । दीप्ति और बल को ओजः (स्) या ओज कहते हैं । यह दीप्ति, अवष्टम्भ (रुकना) प्रकाश और बल

† अदन्तोऽपि ग्रीष्मार्थः । यथा "तपेन वर्षाः शरदा हिमागमः" (इति स्वामी) ॥

में नपुंसक है । और स्वामी आदिकों के मत में विषमसंख्यावाची 'ओज' अदन्त * भी है । यह १ प्रकाश आदिका नाम है । बीज, नदी का वेग या जल का वेग ये स्रोत: (स्) कहलाते हैं । यह जलवेग और शुक्र में नपुंसक है । यह १ वीर्य आदि का नाम है ॥ २४२ ॥

प्रभाव, प्रकाश, असहन, बल, शुक्र, पण्डित, क्रूर आदि.

† न.
तेज: (प्रभावे दीप्तौ च बले शुक्रेऽप्य) तास्त्रिषु ।

पु. पु.
विद्वान् (विदंश्च) बीभत्सो (हिंस्रोऽप्य (तिशयेत्वमी) २४३

प्रभाव, प्रकाश, असहन, सामर्थ्य, वीज और अपिशब्द से धाम इनको तेज: (स्) कहते हैं । यह पूर्वोक्त अर्थों में नपुंसक है । एवं विश्वकोप में भी कहा है कि धाम, पराक्रम, प्रभाव और वीर्य को 'तेज:' कहते हैं । तथा मेदिनीकोप में भी कहा है कि, दीप्ति, प्रभाव, पराक्रम और रेतस् ये तेज: (स्) कहलाते हैं । यह १ प्रभाव आदि का नाम है । इसके अनन्तर वर्गसमाप्ति पर्यन्त कहेजानेवाले सान्तशब्द त्रिलिङ्ग यानी वाच्यलिङ्ग होते हैं । पण्डित, चशब्द से आत्मवेत्ता और प्राज्ञ को भी 'विद्वान्' कहते हैं । एवं विश्वकोप में भी कहा है कि आत्मवेत्ता, प्राज्ञ और पण्डित में 'विद्वान्' वाच्यलिङ्ग है । यह १ पण्डित आदिका नाम है । क्रूर, घातुक या हत्यारा अपिशब्द से रसभेद, विकृत, अर्जुन, पापी और घृणात्मा ये 'बीभत्स' कहलाते हैं । एवं अजयकोष में भी कहा है कि विकारयुक्त, पार्थ, क्रूर, पापात्मा और घृणात्मा को 'बीभत्स' कहते हैं । यह १ हिंसा करनेवाले आदिका नाम है । अब आगे कहेजाने वाले ये "ज्यायान्" आदि चारों शब्द अतिशय अर्थ में वर्तमान होतेहैं ॥ २४३ ॥

बूढ़ा, प्रशंसनीय, ज्वान, थोड़ा, महान्, श्रेष्ठ, साधु, स्वीकार या मजबूत.

पु.स.न. पु.स.न.
(वृद्धप्रशस्ययो) र्ज्यायान् कनीयांस्तु (युवाल्पयो:) ।

पु.स.न. पु.स.न.
वरीयां (स्तूरुवरयो:) साधीया (न्साधुबाढयो:) ॥ २४४ ॥

इति सान्ता: ॥

अतिशय वृद्ध और प्रशंसनीय को 'ज्यायान्' स्त्री 'ज्यायसी' कहते हैं । एवं हैमकोष में भी कहा है कि अतिबूढ़ा और बड़ाईयोग्य पुरुष ये दोनों 'ज्यायान्' कहलाते हैं । यह १ अतिवृद्ध आदिका नाम है । अतिशय से युवा और अल्प को 'कनीयान्' स्त्री 'कनीयसी' कहते हैं । यह अत्यन्त जवान, अति थोड़ा और छोटे भाई में त्रिलिङ्ग है । यह १ युवाआदिका नाम है । अतिशय से महान् और

---

* "ओजे रवीन्द्वो: सम इन्दुरव्यो:" (इति नीलकण्ठ:) ॥

† "अधिक्षेपावमानादे: प्रयुक्तस्य परेण यत् । प्राणात्ययेऽप्यसहनं तत्तेज: समुदाहृतम्" (इति भरत:)॥

श्रेष्ठ को 'वरीयान्' स्त्री 'वरीयसी' कहते हैं। यह योगभेद, श्रेष्ठ, वरिष्ठ और महायुवक में त्रिलिङ्ग है। यह १ महान् आदिका नाम है। अतिशयित सज्जन या महज्जन और अतिशयित बाढ़ यानी स्वीकार तथा मज़बूत को भी 'साधीयान्' स्त्री 'साधीयसी' और क्लीब-'साधीयः' कहते हैं। यह १ साधुआदिका नाम है ॥२४४॥

इति सान्ताः ॥

अथ हान्ता व्याख्यायन्ते ॥

पत्ता, मोर का पंख, निर्बन्ध, ग्रहण, सूर्यादि, द्वार, शिरोभूषण आदि.

(दलेऽपि) बर्हं (न.) (निर्बन्धोपरागार्कादयो) ग्रहाः (पु.)।
(द्वार्यापीडे क्वाथरसे) निर्यूहो (पु.) (नागदन्तके) ॥ २४५ ॥

पत्ता अपिशब्द से मोर का पंख इन दोनों को 'बर्ह' कहते हैं। यह मोरपंख और पत्तों में पुन्नपुंसक है। एवं हैमकोष में भी कहा है कि "बर्हं पर्णे परीवारे कलापे इति" पत्ता, परीवार और कलाप (मोरपंख) में नपुंसक है। यह १ दलआदिका नाम है। आग्रहविशेष या ज़िद, सूर्य चन्द्र का ग्रहण और सूर्य आदि ये 'ग्रह' कहलाते हैं। एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, अनुग्रह, निर्बन्ध, ग्रहण, रणोद्यम, सूर्यआदि, पूतनाआदि, राहु और उपराग इनमें 'ग्रह' पुंलिङ्ग है। यह १ आग्रह-विशेष आदिका नाम है। दरवाज़ा, शीश का आभूषण, काढ़ा का रस और घर आदिकी भीत में गड़ी हुई कील या खूंटी को 'निर्यूह' कहते हैं। यह १ द्वारआदि का नाम है ॥ २४५ ॥

तुलासूत्र, घोड़े आदिकी रस्सी, पत्नी, परिवार, ग्रहण, मूल धन, सौगन्द आदि.

(तुलासूत्रेऽश्वादिरश्मौ) प्रग्राहः (पु.) प्रग्रहो (पु.) (ऽपि च)।
(पत्नीपरिजनादानमूलशापाः) परिग्रहाः (पु.) ॥ २४६ ॥

हाथसे जिसको पकड़ के तराजू से तौलते हैं वह "तुलासूत्र" या "मंझा" कहलाता है। घोड़ा आदिशब्द से बैल आदिकों की रस्सी अपिशब्द से किरण, भुजा, सोना, अर्जुनवृक्ष, बन्धन और बन्दीखाना इनको 'प्रग्राह' और 'प्रग्रह' कहते हैं। एवं हैमकोष तथा विश्वकोष में भी कहा है कि, तुलासूत्र और बैलआदि कों का बन्धन ये दोनों 'प्रग्राह' और तुलासूत्र, बन्दीखाना, नियमन=(रोकना) भुजा, घोड़े आदिकों की पगही, किरण, सोना और हरिपादप ये 'प्रग्रह' कहलाते हैं। यह १ तुलासूत्र आदिका नाम है। स्त्री, परिवार, ग्रहण या स्वीकार, मूलधन और सौगन्द इनको 'परिग्रह' कहते हैं। एवं अजयकोष में भी कहा है कि भार्या,

मूलधन, अङ्गीकार, सौगन्द, परिवार और राहु के मुख में समायाहुआ सूर्य ये 'परिग्रह' कहलाते हैं। यह १ पत्नी आदिका नाम है ॥ २४६ ॥

स्त्री, वरस्त्री की कमर, समूह, वृत्रासुर, आगी, चन्द्रमा, सूर्य आदि.

पु.ब. पु.
(दारेषु च) गृहाः (श्रोण्यामप्या)ऽऽरोहो (वरस्त्रियाः)।
पु. पु. पु.
व्यूहो(वृन्देऽप्य)हि(र्वृत्रेऽप्य)(ग्नीन्द्वर्का)स्तमोपहाः२४७

स्त्री, अपि शब्दसे घर इन दोनों को 'गृह' कहते हैं। यह पुंलिङ्ग होकर बहुवचनान्त है। और नपुंसकभी है। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि भार्या और मन्दिर में 'गृह' नपुंसक व पुंलिङ्ग है जहां पुंलिङ्ग है वहां नित्य बहुवचनान्त रहता है। यह १ गृहिणी आदि का नाम है । उत्तम स्त्री की कमर अपिशब्द से बरगद की जटा, चढ़ना, गजारोह, दीर्घता और उच्चता ये 'आरोह' कहलाते हैं। एवं मेदिनीकोष में भी कहा है कि बरगद की जटा, वराङ्गना की कमर, आरोहण, गजारोह, लम्बाई और उँचाई में 'आरोह' पुंलिङ्ग, है । यह १ वरस्त्री की कमर आदि का नाम है। समूह, अपिशब्द से तर्क, निर्माण और सेना का रीतिविशेष से ठहराना इनको 'व्यूह' कहते हैं। एवं विश्वकोष में भी कहाहै कि, सेना को रीतिविशेष से टिकाना, निर्माण, (बनावट) रचनासमूह और तर्क (शास्त्रार्थ या दलील) इनमें 'व्यूह' पुंलिङ्ग है। यह १ समूह आदिका नाम है। वृत्रासुर और अपि शब्द से सर्प इन दोनों को 'अहि' कहते हैं। एवं विश्वकोषमें भी कहा है कि, वृत्रासुर और सांप का वाची 'अहि' पुंलिङ्ग है। यह १ वृत्र आदि का नाम है। आगी, चन्द्रमा और सूर्य ये 'तमोपह' कहलाते हैं। एवं विश्वकोष में भी कहाहै कि, सूर्य, चन्द्र, जिन और आगी को 'तमोपह' कहते हैं। यह १ आगी आदि का नाम है ॥ २४७ ॥

उपकरण या बिछौना आदि सामान, राजा के योग्य वस्तु.

पु.
(परिच्छदे नृपार्हेऽर्थे) परिबर्हो (ऽव्ययाः परे)।

इति हान्ताः ॥

उपकरण या पुरस्कर, साज, बिछौना, ढपना, सभा, रक्षक आस्तरण या हाथियों की झूल आदि सामान और राजा के योग्य वस्तु को भी 'परिबर्ह' कहते हैं। अथवा वस्त्र, आभूषण, परिवार, हाथी, घोड़ा, रथ आदि या पैदल और राजा के योग्य द्रव्य, सफ़ेद छाता व चमर आदि ये 'परिबर्ह' कहलाते हैं। इसके अनन्तर कहे जाने वाले जो आङ् आदि शब्द हैं वे 'अव्यय' कहलाते हैं—जैसे कहाहै कि "सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु। वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्" जोकि तीनों लिङ्ग, सातों विभक्तियाँ, एकवचन, द्विवचन और बहुवचन में समान बना रहता है और उसमें कुछ विकार नहीं पायाजाता वह अव्यय कहाजाताहै। यहां हान्तवर्गों में कहना पूर्व के समान नानार्थत्वबोधनार्थक है ॥ इति हान्ताः ॥

अथ अव्यया व्याख्यायन्ते ॥

अल्पार्थ, अभिव्याप्ति, मर्यादार्थ, क्रिया योगज.

आङीषदर्थेऽभिव्याप्तौ सीमार्थे धातुयोगजे ॥ २४८ ॥

अल्पार्थ, अभिव्याप्ति, मर्यादार्थ और क्रियायोगज इन अर्थों का वाची 'आङ्' है। एवं सिद्धान्त में भी कहा है कि ईषत् अर्थ, क्रियायोग, मर्याद और अभिविधि में वर्तते हुए इस 'आ' को ङित्संज्ञक जानो और वाक्यारम्भ व स्मरण में अङित् जानना चाहिये। अल्पार्थ में जैसे कि 'आपिङ्गलः' कुछेक पीला है। अभिव्याप्ति में जैसे "आसत्यलोकात् सत्यलोकमभिव्याप्य आपातालात्पातालमभिव्याप्य देवो विहरति" सत्यलोक और पाताललोक में व्याप्त होकर देवता विहार करता है। मर्यादा में जैसे कि "आसमुद्रं राजदण्डः" समुद्रपर्यन्त राजदण्ड है। क्रियायोग में जैसे कि, "आक्रामति धूमो हर्म्यतलात्" धनियों के घरसे धुआं निकलता है। आदि जानना चाहिये ॥ २४८ ॥

स्मरण, वाक्यारम्भ, कोप, पीड़ा, पाप, निन्दा, थोड़ा, घुड़कना या लानत.

आ (प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्येऽ)प्यास्तु(स्यात्कोपपीडयोः)।
(पापकुत्सेषदर्थे)कु धिग्नि(र्भर्त्सननिन्दयोः) ॥ २४९ ॥

स्मरण, वाक्यारम्भ, अपि शब्दसे अनुकम्पा और समुच्चय में विद्यमान 'आ' यह प्रगृह्यसंज्ञक होता है। प्रगृह्यसंज्ञा होनेसे "प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्" इस सूत्र से प्रगृह्यसंज्ञक अच् के परे नित्यही प्रकृतिभाव से रहता है यानी सन्धि को नहीं प्राप्त होता है। स्मरण में जैसे 'आ एवं किल तत्' हां सत्य वह ऐसाही है, वाक्यारम्भ में जैसे 'आ एवंनु मन्य से' क्या अब तुम ऐसाही मानते हो? 'आः' यह जो सविसर्ग निपात है वह कोप और पीड़ा में विद्यमान रहताहै। कोप में जैसे 'आः पाप किं विकत्थसे' आः पापिन्! क्या तू बड़बड़ाता है। और पीड़ामें जैसे 'आः शीतं वर्तते' आः ठंढा है। 'कु' यह पाप, निन्दा और अल्पार्थ तथा निवारण में भी बर्तता है। पाप में जैसे 'कुकर्मपरोऽयंजनः' यह प्राणी पापपरायण है। निन्दा में जैसे 'कापथोऽयं देशो वर्तते' यह देश बुरी रास्ता वाला है, अल्पार्थ में जैसे 'कवोष्णं जलं शीते रोचते' जाड़े में कुछेक गरम जल अच्छा लगता है। अपकार शब्दों से भयका उपजाना, निर्भर्त्सन है और दोषोंका कीर्तन करना निन्दा कहलाती है इन दोनों अर्थों का वाची 'धिक्' है। निर्भर्त्सन में जैसे 'धिक् त्वां ताडनार्ह-

१ तेन सहेत्यभिविधिः। तेन विना मर्यादा ॥
२ "आः किमेतदितिक्रोधादाभाष्य महिषासुरः" (इति मार्कण्डेयपुराणम्) ॥

मनध्ययनशीलम् ' मारने योग्य, नहीं पढ़नेवाले तुझको धिक्कार है । निन्दा में जैसे 'धिक् परस्त्रीगामिनं पुरुषम्' परस्त्रीगामी पुरुष को धिक्कार यानी (ल अनत) है ॥२४६॥

अन्वाचय, समाहार, इतरेतर, समुच्चय, आशीर्वाद, क्षेम, पुण्य आदि, प्रकर्ष, लांघना और प्रशंसा.

चा (न्वाचयसमाहारेतरेतरसमुच्चये) ।
स्वस्त्या (शीः क्षेमपुण्यादौ)(प्रकर्षे लङ्घनेऽप्य)ति २५०

अन्वाचय, समाहार, इतरेतरयोग और समुच्चय इन अर्थों का वाची 'च' है । दोमें से एक के अनुषङ्ग से जो अन्वय होता है वह 'अन्वाचय' कहलाता है। जैसे कि 'वटो ! भिक्षामट गां चानय ' हे वटो ! भीख को जाओ और गऊ को लाओ । अनेकपदों के समूह को समाहार कहते हैं । जैसे कि 'संज्ञा च परिभाषाचानयोः समाहारः संज्ञापरिभाषम ' । मिलेहुओं का अन्वय 'इतरेतरयोग' है । जैसे कि 'धवखदिरौ छिन्धि ' धव और खैर के वृक्ष को साथही काटो । अनेक पदार्थ जोकि परस्पर निरपेक्ष हों उनका एकपदार्थ में अन्वय होना 'समुच्चय' कहाजाता है । जैसे कि 'रमेशं गुरुं च भजस्व ' रमानाथ और गुरु को भजो । एवं त्रिकाण्डशेष में भी कहा है । कि पादपूरण, पक्षान्तर, हेतु और विनश्चय में चशब्द विद्यमान रहता है । आशीर्वाद, क्षेम और पुण्य आदिका वाची 'स्वस्ति' है । आशीर्वाद में जैसे, 'स्वस्ति ते भूयात् ' तुम्हारा कल्याण हो । क्षेम में जैसे कि, 'स्वस्ति गच्छ ' कुशलता के साथ चलाजा । पुण्य में जैसे कि, 'स्वस्तिमान्स्वर्गमश्नुते ' पुण्यवान् जन स्वर्गलोक को पाता है । एवं भागुरि तथा मेदिनीकोष में भी कहा है कि, मङ्गल, आशीर्वाद, पापों की शुद्धता करना और पुण्य इनका वाचक 'स्वस्ति' है । प्रकर्ष यानी उत्कर्ष, लांघना या उछलना या पारहोना और अपिशब्द से बड़ाई या तारीफ़ करना इन अर्थों का वाची 'अति' है । एवं विश्वकोष में भी कहा है कि, प्रशंसा, प्रकर्ष और लांघना इन अर्थों का वाची अतिशब्द है । प्रकर्ष में जैसे कि, 'देवानामत्युत्तमोविष्णुः ' सब देवताओं के बीच श्रीविष्णुजी अत्युत्तम हैं । लांघने में जैसे कि, 'अतिवेलं जलधितलम् ' समुद्र का तल मर्यादा का उल्लङ्घनेवाला है ॥ २५० ॥

पूछना, विचार, भेद, निश्चय, साथ, एकबार, दूर, समीप.

स्वि(त्प्रश्ने च वितर्के च) तु (स्याद्भेदेऽवधारणे) ।
सकृत् (सहैकवारे स्या) दारा (दूरसमीपयोः) ॥ २५१ ॥

पूछना या सवाल करना और नानापक्ष का विचार इन दोनों का वाची 'स्वित्' है । प्रश्न में जैसे कि, 'किंस्वित्ते कुशलमस्ति ' क्या तुम्हारा कुशल है ? वितर्क में जैसे कि, 'सर्वेश्वरत्वं विष्णोराहो स्वित् शिवस्य ' विष्णुजी का सर्वेश्वरत्व है या

शिवजी का । भेद (फ़रक) और निश्चय का वाची ' तु ' है । भेद में जैसे कि, ' क्षीरान्मांसं तु पुष्टिकृत् ' दूध से मांस पुष्टिकारी है, निश्चय में जैसे कि, ' शिष्टैर्मतं तु तद्युक्तम् ' महात्माओं ने जिसको माना है वह निश्चय कर योग्य ही है । सहार्थ और एक बार का वाची ' सकृत् ' है । सहार्थ में जैसे कि, ' सकृद्यान्ति सुरस्त्रियः, साथ ही देवङ्गनायें जाती हैं । एकबार में जैसे कि ' सकृदपि कुर्याद्गया श्राद्धम् ' एकबार भी गया का श्राद्ध करे । दूर और समीप का वाची ' आरात् ' है, दूर में जैसे कि, ' आराच्छत्रोः सदा वसेत् ' हमेशा वैरी से दूर बसना चाहिये । समीप में जैसे कि, ' सखायं स्थापयेदारात् ' मित्र को पास ही वैठालना चाहिये यानी सनेही को समीप ही रखना चाहिये आदि उदाहरणों को जानना चाहिये ॥२५१॥

पछाँह, अन्त, समुच्चय, विकल्प, बारम्बार, सहार्थ, प्रत्यक्ष, तुल्य.

(प्रतीच्यां चरमे) पश्चादुता (प्यर्थविकल्पयोः) ।
(पुनः सहार्थयोः) शश्वत्साक्षा(त्प्रत्यक्षतुल्ययोः) २५२॥

पश्चिम दिशा और अन्त्य (आख़िरी) इन दोनों का वाची ' पश्चात् ' है । पश्चिम में जैसे कि, ' पश्चादस्तंगतोरविः ' पछाँह में सूर्य अस्त होगया, अन्त्य में जैसे कि, ' पश्चिमे वयसि नैमिषे वसेत् ' अन्त्य अवस्था के आजाने पर नैमिष क्षेत्र में बसना चाहिये । समुच्चय और विकल्पका वाचक ' उत ' है । समुच्चय में जैसे कि ' अर्जुन उत भीमो रणे गमिष्यतः ' अर्जुन और भीमसेन संग्राम में जावेंगे । विकल्प में जैसे कि ' विष्णुरुत शिवः सेव्यः ' भगवान् विष्णु या शिवजी को सेवन करना चाहिये । पुनः पुनः और सहार्थ का वाचक शश्वत् या " सस्वत " है । पुनरर्थ में जैसे कि ' शश्वद्विष्णुं स्मरेत् ' बारम्बार विष्णुजी का स्मरण करना चाहिये । सहार्थ में जैसे कि, ' शिष्यैः शश्वद्गतो गुरुः ' शिष्यों के साथ गुरुजी गये । प्रत्यक्ष और तुल्य का वाची 'साक्षात्' है । प्रत्यक्ष यानी समक्ष में जैसे कि ' साक्षाद् दृष्टो मया हरिः ' मैंने सामने हरिजी को देखा । तुल्य में जैसे कि, ' साक्षाल्लक्ष्मी रियं वधूः ' यह बहू लक्ष्मी के समान है ॥ २५२ ॥

खेद, अनुकम्पा, संतोष, विस्मय, आमन्त्रण, हर्ष, दया, वाक्यारम्भ, विषाद.

(खेदानुकम्पासन्तोषविस्मयामन्त्रणे) वत ।
हन्त (हर्षेऽनुकम्पायां वाक्यारम्भविषादयोः)॥२५३॥

खेद, अनुकम्पा, सन्तोष, विस्मय और सम्बोधन का वाची ' वत ' है । खेदमें जैसे कि 'अहो वत महत्कष्टम्' अहो खेद है कि, बड़ा कष्ट हुआ । अनुकम्पा में जैसे कि, ' वत निःस्वो भरणीयः ' दयासे निर्द्रव्यको भरना चाहिये । सन्तोषमें जैसे कि ' वत रमणया पतिरालिङ्गितः ' सन्तुष्टता से रमणी ने पति का आलिङ्गन किया ।

१ " उत प्रश्नविकल्पयोः । समुच्चये विकल्पे चेति " (हैमः) ॥

विस्मय में जैसे कि, 'अहो वतायं ध्रुव आप देवम्' आश्चर्य है कि इस ध्रुव ने देवता को पाया । सम्बोधन में जैसे कि, 'अत्र एहि वत सखे' अय प्यारे ! यहां आओ । हर्ष, अनुकम्पा, वाक्यारम्भ और विषाद का वाचक 'हन्त' है । हर्ष में जैसे कि, 'हन्त ते लाभः शतगुणः' खुशी हुई कि तुम को सौगुणा लाभ हुआ । अनुकम्पा में जैसे कि, 'हन्त दीनो रक्षितव्यः' दया के साथ दीन की रक्षा करनी चाहिये । वाक्यारम्भ में जैसे कि, 'हन्त ते कथयिष्यामि' अब मैं तुमसे कहूंगा । विषाद में जैसे कि, 'हन्त जातमजातारेः प्रथमेन त्वयारिणा' दुःख की बात है कि, युधिष्ठिर के पहले तुमही शत्रु उपजे हो ॥ २५३ ॥

मुख्य सदृश, वीप्सा, लक्षणा आदि, कारण, प्रकरण, प्रकाश आदि, समाप्ति.

प्रति (प्रतिनिधौ वीप्सालक्षणादौ प्रयोगतः) ।
इति (हेतुप्रकरणप्रकर्षादिसमाप्तिषु) ॥ २५४ ॥

मुख्य के बराबर यानी एककी जगह दूसरा, व्याप्त होनेकी इच्छा या फैलना, लक्षणा यानी अन्वय के न होने पर अध्याहार जो ऊपर से लियाजाता है । अथवा चिह्न, आदि शब्द से इत्थंभूताख्यान, भाग, प्रतिदान और अल्पआदि इन अर्थों में महात्मा या शिष्टों के प्रयोगानुसार प्रतिशब्द का प्रयोग करना चाहिये । प्रतिनिधि (एवज़) में जैसे कि, 'अभिमन्युं प्रति परीक्षित्' राजा परीक्षित् अभिमन्यु के बराबर है । वीप्सा में जैसे कि, 'तीर्थं तीर्थं प्रति गच्छति बलः' बलदाऊजी प्रत्येक तीर्थों में जाते हैं । लक्षणा में जैसे कि 'वृक्षं प्रति विद्योतते विद्युत्' वृक्षकी ओट में बिजली चमकती है । इत्थंभूताख्यान में जैसे कि, 'भक्तो विष्णुं प्रति यज्ञदत्तः' यज्ञदत्त विष्णु का भक्त यानी विष्णु का स्वरूपही है । भाग में जैसे कि 'लक्ष्मीर्हरिंप्रति' लक्ष्मीजी हरि का भाग हैं । प्रतिदान में जैसे कि, 'तिलेभ्यः प्रतियच्छति माषान्' तिलों के बदले उड़दों को देता है । यहां (प्रयोगतः) इस कथन से " केतई, की ओर, पास, सामने, विरुद्ध, उलटा, विपरीत, इसकी अपेक्षा, इसके देखते, बनिस्बत, ऊपर, पर, लगभग, लिये, वास्ते, विषय, अनुसार, नक़ल, पुस्तक और जिल्द " इन अर्थों में भी प्रति शब्द का प्रयोग करना चाहिये । कारण या सबब, प्रकार, प्रकाशआदि और समाप्ति इन अर्थों का वाची 'इति' है । हेतु में जैसे कि 'रामो हन्तीति रावणः पलायते' रामजी मारते हैं इस कारण रावण भागता है । प्रकरण में जैसे कि, 'ब्राह्मण–क्षत्रिय–विट्–शूद्रा इति' ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण हैं । प्रकर्ष या प्रकाश में जैसे कि 'इति पाणिनिः' पाणिनि शब्द लोक में प्रकाशित है । आदिशब्द से 'क्रमादमुं नारद इत्यबोधि सः' क्रम से यह नारद हैं । ऐसा उन हरिने जाना । समाप्ति में जैसे कि, 'धर्ममाचरेदिति' अन्त्यावस्था में धर्म का आचरण करना चाहिये ॥ २५४ ॥

---

१ " हन्तदानेऽनुकम्पायां वाक्यारम्भविषादयोः । निश्चये च प्रमोदे च" (इति हैमः) ॥

पूर्वदिशा, पहला, व्यतीत, संपूर्ण, अवधि, परिमाण, निश्चय.

(प्राच्यां) पुरस्तात् (प्रथमे पुरार्थे) ऽग्रतइत्यपि) ।
यावत्तावच्च (साकल्येऽवधौ मानेऽवधारणे) ॥ २५५ ॥

पूर्वदिशा, पहला और व्यतीत विषय इन अर्थों का वाचक 'पुरस्तात्' या 'पुरः' और 'अग्रतः' यह भी है । पूर्व दिशा में जैसे कि, 'पुरस्ताद्गतोब्रह्मदत्तः' ब्रह्मदत्त पूर्वदिशा में गया । प्रथम में जैसे कि, 'पुरस्ताद्भुङ्क्ते' पहले भोजन करता है । व्यतीत में जैसे कि, 'पुरस्ताद्वासोऽभूत्' पुरातन समय वास हुआ था । ऐसेही 'अग्रतः संस्थाप्य देवेशं पूजयेत्' पहले या आगे देवेश को भलीभाँति स्थापन कर पूजना चाहिये । साकल्य, अवधि, मान और अवधारण (निश्चय) इन अर्थों का वाची 'यावत्' और 'तावत्' है । संपूर्णता में जैसे कि, 'यावद्दत्तं तावद्भुक्तम्' जितना दियागया उतना सबही खागया । अवधि में जैसे कि, 'मूलाच्छाखां यावत्प्रकाण्डः' जड़से लेकर जहांतक शाखा है वहांतक प्रकाण्ड यानी पीड़ है । परिमाण में जैसे कि, 'यावत्स्वर्णं तावद्रजतम्' जितना सोना उतनीही चाँदी है । अवधारण में जैसे कि, 'श्रोत्रियं तावदामन्त्रयस्व' निश्चय कर वैदिकब्राह्मण का न्योता करो ॥ २५५ ॥

मङ्गल, अनन्तर, आरम्भ, प्रश्न, कात्स्र्न्य, निरर्थक, विधिहीन, अनेकार्थ, उभयार्थ.

(मङ्गलानन्तरारम्भप्रश्नकात्स्र्न्ये) ष्वथो अथ ।
वृथा(निरर्थकाविध्योः) नाना(ऽनेकोभयार्थयोः)॥२५६॥

मङ्गल, अनन्तर, आरम्भ, प्रश्न (पूछना) और संपूर्णता इन अर्थोंका वाचक अथो और अथ है । मङ्गल में जैसे कि, 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' मङ्गल है इस लिये ब्रह्म के जानने की अभिलाषा हुई । अनन्तर में जैसे कि, 'स्नानं कृत्वाथ भुञ्जीत' स्नान के बाद भोजन करना चाहिये । आरम्भ में जैसे कि, 'अथ शब्दानुशासनं लिख्यते' अब शब्दों का अनुशासन आरम्भ किया जाताहै । प्रश्न में जैसे कि, 'अथ वक्तुं समर्थोऽसि' क्या कहने को समर्थ हो ? संपूर्णता में जैसे कि, 'अथ धातून् ब्रूमः' समस्त धातुओं को, कहते हैं । निरर्थक या निष्कारण और विधिहीन या विधिवर्जित का वाची 'वृथा' है । निरर्थक में जैसे कि, 'वृथा दुग्धोऽनड्वान्' बैल को वृथा दुहा यानी बैलका दुहना बेकार है । अविधि में जैसे कि, 'वृथा दानं धनाढ्येषु' धनीलोगों में दान देना वृथा यानी विधिरहित है । अनेकार्थ और उभयार्थ का वाचक 'नाना' है । अनेकार्थ में जैसे कि, 'इह निवसन्ति नानाविधा जनाः-'

---

१ "अथो अथ समुच्चये । मङ्गले संशयारम्भाधिकारानन्तरेषु च । अन्वादेशे प्रतिज्ञायां प्रश्नसाकल्ययोरपि" (इति हैमः) ॥ शास्त्रं सुचिन्तितमथो परिचिन्तनीयं स्वाराधितोऽपि नृपतिः परिशङ्कनीयः । अङ्के स्थितापि युवतिः परिशङ्कनीया शास्त्रे नृपे च युवतौ च कुतो वशित्वम् ॥ १ ॥

यहां अनेकप्रकार के जन निवास करते हैं । उभयार्थ में जैसे कि, 'नानाविधं न सज्जेत' दुबिधा को न लावे यानी दुबिधा में नहीं पड़ना चाहिये ॥ २५६ ॥

पूछना, विकल्प, पीछे, बराबरी, नु* (पृच्छायां विकल्पे च) (पश्चात्सादृश्ययो) रनु ।

सवाल, निश्चय, आज्ञा, तसल्ली देना, सम्बोधन. (प्रश्नावधारणानुज्ञानुनयामन्त्रणे) ननु ॥ २५७ ॥

जानने की इच्छा और विकल्प इन दोनों का वाचक 'नु' है । पृच्छा में जैसे कि 'कोनु धावति' भला कौन दौड़ताहै ? विकल्प में जैसे कि, 'अयं भीमो नु धर्मोनु' यह भीमसेन हैं अथवा युधिष्ठिर हैं। पश्चादर्थ और सादृश्य का वाची 'अनु' है । पश्चादर्थ में जैसे कि 'रथमनुगच्छति' रथ के पीछे जाता है । सादृश्य अर्थ में जैसे कि, 'ज्येष्ठमनुकरोति' जेठ की बराबरी करता है । हीन में भी जैसे कि 'अनु हरिं सर्वे सुराः, हरेर्हीना इत्यर्थः' हरिजीसे सब देवता छोटे हैं । प्रश्न, अवधारण, (निश्चय) अनुज्ञा (आज्ञा) अनुनयः=(विनय, शिक्षा, या तसल्ली देना) और सम्बोधन इन अर्थों का वाची 'ननु' है । प्रश्न में जैसे कि, 'ननु किमेतत्' भला यह क्या है ? अवधारण में जैसे कि 'नन्वयं योगी' निश्चय कर यह योगी है । अनुज्ञा में जैसे कि 'ननु गच्छ' अच्छा चले जाओ । अनुनय में जैसे कि, 'ननु कोपं मुञ्च दयां कुरु' बस कोप को छोड़ो दया करो । सम्बोधन में जैसे कि, 'ननु राजन् ! मया सह वाराणसीं व्रज' हे राजन् ! मेरे साथ बनारस को चलो ॥ २५७ ॥

निन्दा, समुच्चय, प्रश्न, शङ्का, संभावना, मिसाल, भेद, आधा, निन्दित. (गर्हासमुच्चयप्रश्नशङ्कासंभावनास्व) पि ।

(उपमायां विकल्पे) वा सामि(त्वर्धे जुगुप्सिते)॥ २५८

निन्दा, समुच्चय, प्रश्न, शङ्का और संभावना इन अर्थों का वाचक 'अपि' है । गर्हा में जैसे कि, 'तं धिक् योऽपि सिञ्चेत्पलाण्डुम्' उसको लानत है जो कि प्याज को सींचे । समुच्चय में जैसे कि 'स्त्रियं पालय पुत्रमपि' स्त्री और पुत्रकी पालना करो अथवा 'अपि सिंच, अपि स्तुहि' सींचो और स्तुति करो । प्रश्ने यथा 'अपि जानासि किञ्चिन्त्वम्' क्या तुमभी कुछ जानते हो ? शङ्का में जैसे कि 'अपि चोरो भवेत्' हो न हो चोरही होगा । संभावना में जैसे कि 'अपि स्थाणुं जयेद्रामः' रामजी शिवको भी जीतेंगे अथवा 'अपि स्तुयाद्विष्णुम्' वाणी व मनसे परे विष्णु की भी स्तुति करेगा तो "अन्य देवताओं की स्तुति करने में क्या कहना चाहिये" उपमा (मिसाल) और विकल्प का वाचक 'वा' है । उपमा में जैसे कि, 'आशीविषो

* "नु प्रश्नेऽनुनयेऽतीतार्थे विकल्पवितर्कयोः" (इति हैमः) ॥

१ "स्थाणुः कीले हरे पुमान् । अस्त्री ध्रुवे" (इति कोषान्तरम्) ॥

वा संक्रुद्धः ' विषधर सांपके नाईं बहुतही क्रोधित हुआ । विकल्प में जैसे कि । 'शिवं यदि वा विष्णुं पूजयेत् ' शिव या विष्णु की पूजा करना चाहिये । आधा और निन्दा का वाची ' सामि ' है । आधे में जैसे कि ' सामि संमीलिताक्षी ' अधखुली आँखोंवाली । निन्दा में जैसे कि ' सामिकृतमकल्याणकारि ' निन्दा से किया हुआ काम मङ्गलकारी नहीं होता है ॥ २५८ ॥

साथ, समीप, जल, मस्तक, **अमा (सह समीपे च) कं (वारिणि च मूर्धनि)।**
उपमा, प्रकार, तर्क, निश्चय. **(इवेत्थमर्थयो) रेवं नूनं (तर्केऽर्थनिश्चये) ॥ २५९ ॥**

साथ और समीप का वाची ' अमा ' है। सहार्थ में जैसे कि ' पुत्रेणामाभुङ्क्ते ' पुत्रके साथ खाता है । समीपमें जैसे कि, 'अमात्यः' वज़ीर पासही रहता है। जल और मस्तक का वाचक ' कम् ' है । जल में जैसे कि, ' वेत्रवत्याः कममलं पश्य सखे ! अय सखे ! देखिये वेत्रवती का जल कैसा निर्मल है । मस्तक में जैसे कि, ' मम कं पातु माधवः ' माधवजी मेरे शीश की रक्षा करें । उपमा और प्रकार का वाची ' एवम् ' है । उपमा (मिसाल) में जैसे कि, 'अग्निरेवं द्विजः ' ब्राह्मण अग्नि के समान है । प्रकार अर्थ में जैसे कि, ' एवं वादिनि देवर्षौ ' इस प्रकार नारदजी के कहने पर । तर्क और निश्चय अर्थ का वाचक ' नूनम् ' है । तर्क में जैसे कि ' नूनमयमति पथ्वानां प्रियः ' क्या यह पथ्वों का अति प्यारा है ? निश्चयार्थ में जैसे कि ' क्षुद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने ' निश्चयकर क्षुद्र के भी शरणागत होने पर रक्षा करना चाहिये ॥ २५९ ॥

मौन, आनन्द, पूछना, निन्दा, **(तूष्णीमर्थे सुखे) जोषं किं (पृच्छायां जुगुप्सने)।**
प्रसिद्ध, संभावना, कोप, प्राप्ति, निन्दा. **नाम (प्रकाश्यसंभाव्यक्रोधोपगमकुत्सने) ॥ २६० ॥**

मौन और सुख का वाची ' जोषम् ' है । मौन में जैसे कि ' जोषं तिष्ठ ' चुपचाप खड़े रहो । सुख में जैसे कि ' जोषमासीत वर्षासु ' वर्षा में सुख से बैठा रहे । पूछना और निन्दा का वाचक ' किम् ' है । पृच्छा में जैसे कि ' किमाद्रियेरन् रसिकाः कृतिं मे ' क्या रसिकलोग मेरी कविता का आदर करेंगे ? निन्दामें जैसे कि ' सकिं राजा यः प्रजां न रक्षति ' जो प्रजाकी रक्षा नहीं करता है वह क्या राजा है यानी निन्दित है । अथवा " सकिं सखा साधु न शास्ति योऽधिपं, हितान्नयः संशृणुते सकिं प्रभुः " जो स्वामी को भली सीख नहीं देता है वह क्या सखा है ? यानी बुरा मिलापी है और जो हित से नहीं सुनता है वह क्या स्वामी है । प्रकाश्य सम्भावना, क्रोध, उपगम (प्राप्ति, स्वीकार या उदय) और निन्दा इन अर्थों का

वाची ' नाम ' है। प्रकाश्य ‡ में जैसे कि ' हिमालयो नाम नगाधिराजः ' प्रसिद्ध है कि उत्तरदिशा में हिमाचल पर्वतों का अधिनायक है। संभावना में जैसे कि ' रामरावणयोर्भविष्यति युद्धं नाम ' राम—रावण के युद्ध होने की संभावना है। क्रोध में जैसे कि ' मम वैरी रावणो नाम पापः ' पापी रावण मेरा वैरी है। उपगम में जैसे कि ' शत्रोः सकाशाद्गृह्णाति राज्यं नाम ' वैरी के द्वारा राज्यको स्वीकार ही करता है। निन्दा में जैसे कि, 'को नामायं प्रलपति मे विशतः सभायाम् ' यह कौन है जो कि सभा में प्रवेश करते हुए मेरी बुराई करता है ॥ २६० ॥

भूषण, परिपूर्णता, सामर्थ्य, निषेध, संदेह, प्रश्न, पास, मध्य.

अलं (भूषणपर्याप्तिशक्तिवारणवाचकम्)।
हुं (वितर्के परिप्रश्ने) समया (न्तिकमध्ययोः) ॥ २६१ ॥

अलंकार (गहना) परिपूर्णता, सामर्थ्य और निषेध इन अर्थों का वाचक ' अलम् ' है। भूषण में जैसे कि ' सर्वालंकरणैरलंकृतोऽयंबालः ' समस्त अलंकारों से अलंकृत यानी सजाहुआ यह बालक है। पर्याप्ति में जैसे कि 'अलं भुक्तवान् यज्ञदत्तः ' यज्ञदत्तने परिपूर्णता से भोजन किया। सामर्थ्य में जैसे कि 'अलं मल्लो मल्लाय' पहलवान पहलवान के लिये समर्थ है "यानी कुश्ती लड़नेवाला कुश्ती लड़नेवाले के साथ लड़सक्ता है" निषेध में जैसे कि ' अलं महीपाल तव श्रमेण ' हे महीपाल ! तुम्हारे श्रमसे क्या है ? यानी तुम्हारा श्रम करनाही बेफ़ायदा है। सन्देह या ऊहा और प्रश्न (पूछना) इन दोनों का वाचक ' हुम् ' है। वितर्क में जैसे कि ' हुं जलं मृगतृष्णा हुम् ' क्या जल है या मृगतृष्णा ? परिप्रश्न में जैसे कि ' हुं यज्ञदत्तोऽयमायाति ' क्या यह यज्ञदत्त आता है ? । समीप और मध्य (बीच) का वाचक ' समया ' है। समीप में जैसे कि ' समया पत्तनं नदी वहति ' शहर के समीपही नदी बहती है। मध्यमें जैसे कि 'समया शैलयोर्ग्रामो वसति' दो पर्वतों के बीच गांव बसता है॥ २६१ ॥

अप्रथम, भेद, निश्चय, निषेध, प्रबन्ध, चिरातन, व्यतीत, समीप, भावी.

पुन (रप्रथमे भेदे) नि (र्निश्चयनिषेधयोः)।
(स्यात्प्रबन्धे चिरातीते निकटागामिके) पुरा ॥ २६२॥

प्रथम का अभाव और भेद (अन्तर या फ़रक़) इन दोनों का वाचक ' पुनर् ' है। प्रथम के अभाव में जैसे कि, ' पुनरुक्तं पुण्यदत्तेन ' पुण्यदत्तने फिर कहा। भेद में जैसे कि, ' किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्याः ' पुण्यवान् ब्राह्मणों को फिर क्या कहना

---

‡ प्रकाश्ये यथा " नदीज ! लङ्केशवनारिकेतुर्नगाह्वयोनाम नगारिसूनुः । एषोऽङ्गनावेषधरःकिरीटी जित्वावयं नेष्यति चाद्यगावः " (इति महाभारतम्) ॥

१ वसन्तीह पुरा छात्राः-अवात्सुः-अवसन्-ऊषुर्वा । पुराभुङ्क्ते निश्चितं भोक्ष्यत इति । " इति गुह्यतमं शास्त्रं प्राप्तं ब्रह्मादिकैः पुरा " (इत्यथर्वणरहस्यम्) ॥

चाहिये ? निश्चय और निषेध का वाची ' निर् ' है । निश्चय में जैसे कि, 'निरुक्त-मिदं नित्यानन्देन ' निश्चय कर इसको नित्यानन्द ने कहा है । निषेध में जैसे कि, ' निर्धनोऽयं राजा बहुदानात् ' बहुतसा दान देनेके कारण यह राजा निर्धन होगया । प्रबन्ध, चिरन्तन, अतीत, समीप और आगामिक (भावी) इन अर्थों का वाचक ' पुरा ' है । प्रबन्ध में जैसे कि, ' पुराऽधीते धीरोऽयम् ' यह धीर निरन्तर पढ़ता था यानी " क्षणमात्र भी पढ़ने से नहीं रुकता था बरन लगातार पढ़तेही चलाजाता था " । चिरन्तन में जैसे कि, 'पुरातना ऋषयो यमैडयंस्तमाहुरग्र्यं पुरुषं पुराणमिति' पुराने ऋषियों ने जिसकी प्रशंसा की है उसको अग्र्य, पुरुष और पुराण कहते हैं । अतीत में जैसे कि, 'पुरा रामो राजा बभूव' पुरातन समय श्रीरामचन्द्रजी राजा हुए । समीप में जैसे कि, ' पुरा रामं तस्थौ रामानुजः ' रामके समीपही रामानुज ठहर गये । आगामिक में जैसे कि, ' चतुर्विंशतितः पुरा मे भाग्यमुदेष्यति ' चौबीस वर्ष के आजाने पर मेरे भाग्य का उदय होगा ॥ २६२ ॥

विस्तार, अङ्गीकार, स्वर्ग, परलोक, बात, संभावना या बड़ाई.*

ऊरर्यूरी चोररी च (विस्तारेऽङ्गीकृतौ त्रयम्) ।
(स्वर्गे परे च लोके) स्व (र्वार्तासंभाव्ययोः)किल†॥२६३॥

ऊररी, ऊरी, " उरी " और ' उररी ' ये तीनों विस्तार (फैलाव) और अङ्गीकार के वाचक हैं । विस्तार में जैसे कि ' ऊररी करोति ग्रन्थं गुरुः ' गुरुजी ग्रन्थ का विस्तार करते हैं । अङ्गीकार में जैसे कि ' ऊरीकृत्य पितुर्वाक्यं रामोऽरण्यं जगाम ह ' पिता का वचन अङ्गीकार कर श्रीरामजी वनको चलेगये । एवम् ' उररी करोति प्रभो राज्ञां रामदत्तः ' रामदत्त स्वामी की आज्ञा को स्वीकार करता है । स्वर्गलोक और परलोक का वाची ' स्वर् ' है । स्वर्ग में जैसे कि, ' स्वर्णद्यां स्नाति नारदः ' स्वर्ग की नदी में नारदजी नहाते हैं। परलोक में जैसे कि " स्वर्गतस्य क्रिया कार्या पुत्रैः परमभक्तितः " परलोक गयेहुए पुरुष की क्रिया पुत्रों को परमभक्ति से करना चाहिये । वार्ता और संभावना या संभाव्य बड़ाई के योग्य इन अर्थों का वाचक ' किल ' है । बात में जैसे कि, ' जघान कंसं किल वासुदेवः ' प्रसिद्ध है कि वासुदेवजी ने कंस को मारा । संभाव्य में जैसे कि ' गुरून् किल अतिशेते शिष्यः ' धन्य है शिष्य को जोकि गुरुजी को सुलाकर सोता है ॥ २६३ ॥

निषेध, वाक्य भूषण, जिज्ञासा, अनुनय, समीप, उभयार्थ, शीघ्र, संपूर्णता, सामने.

(निषेधवाक्यालङ्कारजिज्ञासानुनये) खलु ।
(समीपोभयतःशीघ्रं साकल्याभिमुखे)ऽभितः ॥२६४॥

---

† ' अलीके यथा-' प्रसह्य सिंहः किल तां चकर्ष ' (इति रघु०-)। अज्ञानसूचके यथा ' सुप्तोऽहं किल विललाप ' ॥

निषेध, वाक्यालंकार, जाननेकी अभिलाषा और अनुनय (सान्त्वन करना) इन अर्थों का वाचक 'खलु' है । निषेध में जैसे कि, 'पीत्वा खलु † गतो गङ्गदत्तः' विनापिये गङ्गदत्त चलागया । वाक्यालङ्कार में जैसे कि, 'एतत्खल्वाहुर्लोकाः' ऐसा लोग कहते हैं यहां 'खलु' वाक्यालंकार में जानना चाहिये । जिज्ञासा में जैसे कि 'खलु जानाति यज्ञदत्तः' यज्ञदत्त जानने की अभिलाषा करता है । अनुनय में जैसे कि 'देहि खलु वाचकम्' अब बाँचने वाले को देदीजिये । समीप, उभयार्थ, शीघ्रता, संपूर्णता और सम्मुखता इन अर्थों का वाची 'अभितः' है । समीप में जैसे कि, 'वाराणसीमभितो भागीरथी' बनारस के पासही भागीरथी गङ्गाजी हैं। उभयार्थ में जैसे कि 'अभितः कृष्णं गोपाः' श्रीकृष्णजी के दोनों तरफ़ ग्वालबाल हैं । अथवा 'अभितः कुरु चामरौ' दोनों ओर चवँरों को कीजिये। शीघ्रार्थ में जैसे कि, 'अभितोऽधीष्व' जल्द पढ़ो । संपूर्णता में जैसे कि 'अभितो ग्रामं वनानि सन्ति' गांव के चारों तरफ़ जंगलही जंगल हैं । सम्मुख में जैसे कि 'अभितोहिंसको हन्ति मामेव परिधावति' मारनेवाला सामने मुझकोही मारता और घेर कर दौड़ता है ॥ २६४ ॥

शब्द, प्रकाश, परस्पर, छिपना, टेढ़ा, दुःख, शोक, पीड़ा.

(नामप्राकाश्ययोः) प्रादुर्मिथो (ऽन्योन्यं रहस्यपि) ।
तिरो(ऽन्तर्धौ तिर्यगर्थे) हा (विषादशुगार्तिषु) ॥ २६५ ॥

नाम या शब्द और प्रकाश इन दोनों का वाचक 'प्रादुः' है । नाम में जैसे कि 'प्रादुरासीच्चक्रपाणिः' चक्रपाणिनामक पुरुष प्रकट हुआ । प्रकाश में जैसे कि ' 'प्रादुर्बुद्धिर्भविष्यति' तेरी बुद्धि का प्रकाश होगा । परस्पर और एकान्त का वाची 'मिथः' या 'मिथो' है । परस्पर में जैसे कि 'वासिष्ठ-कौण्डिन्य-मैत्रावरुणानां मिथो न विवाहः' वासिष्ठ, कौण्डिन्य और मैत्रावरुण गोत्रों का परस्पर विवाह-सम्बन्ध नहीं होता है । एकान्त में जैसे कि 'मिथः सीतामश्लिक्षद्रामः' रामजी ने एकान्त में सीता का आलिङ्गन किया । अन्तर्धान (छिपजाना) और टेढ़ा इन अर्थों का वाचक तिरः (स्) है । अन्तर्धान में जैसे कि, 'तिरो बभूव वामनः' वामनजी अन्तर्धान हुए । अथवा 'तिरोभूय आस्ते आत्मारामः' आत्माराम छिपकर बैठता है । टेढ़े अर्थ में जैसे कि 'तिरो वर्तते निशानाथः' चन्द्रमा टेढ़ा होकर रहता है अथवा 'द्वितीयायामिन्दुस्तिरोदृश्यते' द्वितीया में चन्द्रमा टेढ़ा देख पड़ता है । दुःख, शोक और पीड़ा का वाचक 'हा' है । विषाद में जैसे कि, 'हा ! मे रमणीयो गतः कालः' हाय ! बड़ा दुःख है कि मेरा समय जोकि रम-

† "अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा" ३ । ४ । १८ प्रतिषेधार्थयोरलंखल्वोरुपपदयोःक्त्वा स्यात् । प्राचां ग्रहणं पूजार्थमिति ॥ "संप्रत्यसांप्रतंवक्तुमुक्ते मुसलपाणिना । निर्धारितेऽर्थे लेखेन खलूक्त्वा खलुवाचिकम्" अत्रखलुराद्यः प्रतिषेधे । द्वितीयोवाक्यालंकारे ज्ञेयः ॥

णीय था वह चलागया । शोक में जैसे कि 'हा राम ! वनं गतोसि "कथं जीवामि" हा रामजी ! तुमतो बनको चलेगये " मैं कैसे जीऊंगा " ? पीड़ा में जैसे कि ' हा हतोऽस्मि ' हाय ! मैं मारा गया ॥ २६५ ॥

आश्चर्य, खेद, कारण और निश्चय. अहहे (त्यद्भुते खेदे) हि (हेताववधारणे) ॥२६६॥

इति नानार्थवर्गः ॥

आश्चर्य और खेद का वाचक ' अहह ' या ' अहहा ' है । आश्चर्य में जैसे कि ' अहह ! बुद्धिप्रकर्षो राज्ञः ' आश्चर्य है कि राजा की बुद्धि का प्रकाश हुआ । खेद में जैसे कि ' अहह नीतो मया द्यूतेन कालः ' हाय ! मैंने जूआ खेलने से समय को बिताया । परिक्लेश (पीड़ा) में जैसे कि, ' अहहा परिपीडितोऽहं व्याधिनातोगङ्गाम्भसि पतिष्यामि ' हाय ! मैं व्याधिसे बहुतही पीड़ित होरहा हूं इस लिये गङ्गा के जल में कूद पड़ूंगा । प्रहर्ष में जैसे कि ' अहहा मे रात्रौ पौत्रो जातः ' अहा हा आनन्द हुआ कि रात्रि में मेरे पौत्र पैदा हुआ । सम्बोधन में जैसे कि ' अहह सखे भोक्तव्यं मया साकम् ' अय प्यारे ! मेरे साथ भोजन करना चाहिये । कारण और निश्चय का वाची ' हि ' या ' ही ' अव्यय है । हेतु में जैसे कि, ' अग्निरत्रास्ति धूमोहि दृश्यते ' यहां आगी है क्योंकि धुआं देख पड़ता है । अवधारण में जैसे कि ' चन्द्रोहि शीतो वर्तते ' निश्चयकर चन्द्रमा ठण्ढा है ॥ २६६ ॥

इति नानार्थवर्गविवरणम् ।

अथ अव्ययवर्गो व्याख्यायते ।

दीर्घकाल, (चिरायचिररात्रायचि स्याद्या) श्चिरार्थकाः ।

बारम्बार. मुहुः पुनः पुनः शश्वदभीक्ष्णमसकृ (त्समाः) ॥ १ ॥

चिराय, चिररात्राय, चिरस्य आद्यपदसे चिरम्, चिरेण, चिरात्, और चिरे ये चिरकालके वाचक हैं—(अब क्रमसे उदाहरण कहते हैं) जैसे कि ' चिराय संतर्प्य समिद्भिरग्निम् ' बहुत समय तक समिधाओं से आगी को भलीभाँति तृप्त कर । ' चिररात्राय संचितं मधु मक्षिकाभिः ' मक्खियों ने चिरकाल से शहद को इकट्ठा किया । ' चिरस्य दृष्टैव मृतोत्थितेव ' मरे से उठी के नाईं रमणी को देर तक देखा । ' चिरंजीवतु बालोऽयम् ' । यह बालक बहुत दिनतक जीवे । चिरेण नाभि प्रथमोदबिन्दवः ' चिरकालसे नाभी के सामने पहलेही के जलबिन्दु देख पड़ते हैं । ' चिरात्सुतस्पर्शरसज्ञतां ययौ ' " राजा दिलीप बहुत समय तक राजकुमार के छूने की रसज्ञता को प्राप्तहुए । ' सचिरे तपसि स्थितः ' वह चिरकाल पर्यन्त

तपस्या में टिकारहा। ये ७ दीर्घकाल के नाम हैं। मुहुः, पुनःपुनः, शश्वत्, अभीक्ष्णम् और असकृत् ये तुल्यार्थक हैं। जैसे कि 'मुहुः पश्यसि कौन्तेय' हे अर्जुन! तुम बारम्बार देखते हो। 'आगच्छति पुनः पुनः' फिर फिर आता है। 'शश्वच्छान्तिं निगच्छति' निरन्तर शान्ति को प्राप्त होता है। 'अभीक्ष्णं स्थाल्यामोदनं पचति' बारम्बार बटलोही में भात को पकाता है। 'असकृज्जलपानाच्च' बारम्बार जल पीने से व्रत भङ्ग होजाता है। ये ५ बारम्बार के नाम हैं॥ १॥

शीघ्रतावाचक, **स्राग्झटित्यञ्जसान्हायसपदिद्राङ्मङ्क्षु (द्रुते)।**
अतिशयार्थक. **बलवत्सुष्ठुकिमुतस्वत्यतीव च (निर्भरे)॥ २॥**

स्राक्, झटिति अञ्जसा, अह्नाय, सपदि, द्राक् और मङ्क्षु ये ७ शीघ्रता के वाचक हैं। जैसे कि 'स्राग्वयो याति देहिनाम्' देहधारियों की वयस्=(उमर) शीघ्रता से बीत जाती है। 'वृक्षं झटित्यारुरोह वानरः' वानर वृक्षपर झटसे चढ़ गया। 'अञ्जसा याति तुरगः' घोड़ा वेग से जाता है। 'अह्नाय सूर्येण तमोनिरस्तम्' सूर्य ने अन्धकार को शीघ्रता से दूर करदिया। 'सपदि तां तरुणीं सरणिं मणिं किरतु नाम नवं नवनीविजम्' अहो घनश्यामजी! उस तरुणी रमणी को तुरन्त त्यागो, राधिकाजी के निकुञ्ज वनमार्ग को पधारो और निश्चयकर नये नाग में टकेहुए नवीनमणि को अलग करदो। 'द्राक् भविष्यति सुखं प्रिये' अयि प्यारी! तुझे जल्द सुख होगा। 'मङ्क्षूदपाति परितः पटलैरलीनाम्' भ्रमरसमूह चारोंतरफ़ से जल्द उड़े। ये ७ शीघ्रता के नाम हैं। बलवत्, सुष्ठु, किमुत, सु, अति और अतीव ये छः अतिशय अर्थ के वाचक हैं। जैसे कि, 'पुनर्वशित्वाद्बलवन्निगृह्य गतः' फिर वश में आजाने के कारण खूबही जकड़ के बांधकर चलागया। 'सुष्ठु पीतं मया घृतम्' मैंने घीको अघाकर पीलिया। 'किमुता वर्धितं क्षेत्रम्' खेतको खूबही बढ़ाया। 'सुपक्वं कदलीफलम्' केला का फल खूबही पका है। 'अति वर्षति तोयदः' मेह बहुतही बरसता है। 'अतीव शोभते राजा' राजा अत्यन्त सोहता है। ये ६ अतिशय के नाम हैं॥ २॥

वर्जनार्थक, **पृथग्विनान्तरेणर्ते हिरुङ् नाना च (वर्जने)।**
कारणार्थक,
असंपूर्णार्थक. **यत्तद्यतस्ततो (हेता) वसाकल्ये तु (चिच्चन)॥ ३॥**

पृथक्, विना, अन्तरेण, ऋते, हिरुक् और नाना ये छः वर्जन अर्थ के वाचक हैं। जैसे कि 'किञ्चिदत्त्वा पृथक् क्रिया' कुछेक देकर क्रिया=कर्म को अलग करना चाहिये। "विना वातं विना वर्षं विद्युतः पतनं विना। विना हस्तिकृतं दोषं केनेमौ पातितौ द्रुमौ" वायु विना, वर्षा विना, बिजली के गिरने विना और हाथी

के किये दोष विना इन दोनों वृक्षों को किसने गिराया ? 'अन्तरेण सुतं नास्ति सुखं संसारिणां भुवि' पृथ्वीमण्डल में पुत्र के विना संसारी जनों को सुख नहीं होता है। 'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः' ज्ञान के विना मुक्ति नहीं होती है। 'हिरुक् कर्म न मोक्षः' कर्म के विना मोक्ष नहीं होता है। 'विष्णुं नाना नास्ति मोक्षदो देवः' विष्णुजी के विना मोक्षदाता देवता नहीं है। ये ६ वर्जन के नाम हैं। यत्, तत्, यतः, ततः और यहां च शब्द की अनुवृत्ति से येन, और तेन, आदि भी जानना चाहिये। जैसे, कि 'यन्न रम्यं तरस्विभ्यः' अयि शोभने ? जिससे कि वेगवालों से रमण करने योग्य नहीं है 'तदिदं रक्ष शोभने' इस लिये तुम इसकी रक्षा करो। 'यतो गङ्गाम्भसि स्नातः' जिसस कि गङ्गाजल में नहाया है 'ततो निष्कल्मषो भवेत्' इस लिये पापरहित होजावेगा। 'वितर गिरमुदारां येन मूकाः पिकाः स्युः' प्यारी वाणी को बोलो कि जिससे पपिहागण मूक होजावें। 'तेन तुष्टा जनाः सर्वे महामोदं प्रलेभिरे' उसीसे सारे जनों ने सन्तुष्ट होकर परमानन्द को पाया। ये ४ कारण के नाम हैं। चित्, चन ये दोनों असंपूर्णार्थ के वाचक हैं। जैसे कि "कश्चित्कान्ता विरहगुरुणा स्वाधिकारप्रमत्तः" कोई यक्ष कान्ता के विरह की गुरुता से अपने अधिकार में असावधान हुआ। 'ततः कञ्चन नाश्रयेत्' तदनन्तर किसी का आश्रय न करे। ये २ असाकल्य के नाम हैं ॥ ३ ॥

किसी काल, सहार्थक, अनुकूलता, निरर्थक.

कदाचिज्जातु सार्धं (तु) साकं सत्रा समं सह।
(आनुकूल्यार्थकं) प्राध्वं (व्यर्थके तु) वृथा मुधा ॥ ४ ॥

कदाचित्, जातु ये दोनों किसीकाल के वाचक हैं। जैसे कि 'कण्डूयमानेन कटं कदाचित्' कभी गालको खजुआते हुए। 'ज्ञानं ते जातु सूत्तमम्' कभी तुझे बड़ाही उत्तम ज्ञान होवेगा। ये २ किसीकाल के नाम हैं। सार्धम्–साकम्–सत्रा–समम्–सह और यहां त्रिकण्डशेष कोष के प्रमाण से 'सजूः' शब्द भी जानना चाहिये। ये पांच सहार्थ के वाची हैं। जैसे कि 'सार्धं दानववैरिणा' विष्णुजी के साथ। 'पत्न्या साकं पतिर्भुङ्क्ते' पत्नी (प्यारी) के साथ पति भोजन करता है। 'सत्रा कलत्रेण सुखं समश्नुते' भार्या के साथ सुखको पाता है। 'समं वधूभिस्तरुणा रमन्ते' युवकलोग बहुओं के साथ रमते हैं। 'पुत्रेण सहागतः पिता' पुत्र के साथ पिता आया। 'सजूः सख्या गन्तव्यम्' सखी या सखा के साथ चले जाना चाहिये। ये ५ सहार्थ के नाम हैं। 'प्राध्वम्' यह एक आनुकूल्य अर्थ का वाचक है। जैसे कि 'प्राध्वं प्रणमति गुरुं गौरिनाथः' गौरीनाथ गुरु को अनुकूलता से प्रणाम करता है। वृथा–मुधा ये दोनों व्यर्थ या निरर्थक के वाचक हैं। जैसे कि 'पञ्चयज्ञा वृथा तस्य नीलवस्त्रस्य धारणात्' जो नीलाम्बर को धारण

करता है, उसके स्नान, दान, तप, होम और वेदपाठ ये ५ यज्ञ व्यर्थ होजाते हैं। 'मुधा वृथा भ्रमन्त्यत्र' यहां बुधलोग व्यर्थ भ्रमते हैं। ये २ व्यर्थ के नाम हैं ॥ ४ ॥

विकल्पार्थक, **आहो उताहो किमुत (विकल्पे) किं किमूत (च)।**
पादपूरणार्थक. **तु हि च स्म ह वै (पादपूरणे) (पूजने) स्वती ॥ ५ ॥**

आहो, उताहो, किमुत, किम्, किमु और उत ये छः विकल्पार्थक हैं। जैसे कि, "देवः आहो गन्धर्वः" देव है या गन्धर्व। "विकल्पे विस्मयेऽप्यहो" इस रुद्र-कोष के प्रमाण से 'अहो' यह ह्रस्वादि भी है। जैसे कि, 'रामः अहो शिवः' राम हैं या शिव। विस्मय में जैसे कि 'अहो अलं श्लाघ्यतमं यदोः कुलम्' आश्चर्य है कि यदुकुल बड़ाही प्रशंसनीय है। 'उताहो ब्रह्म चोच्यते' अथवा ब्रह्म कहा जाता है। 'किमुत त्वं शिवो ब्रह्मा' तुम शिवहो या ब्रह्मा। 'स्थाणुरयं किं पुरुषः' यह ठूंठ है याकि पुरुष। 'किमु गृहं वनं गतः' वह घर या वनको गया। 'विष्णुरुत शिवः सेव्यः' विष्णु या शिवजी सेवनीय हैं। यह ६ वितर्कण के नाम हैं। तु, हि, च, स्म, ह, वै ये छः पादपूरणार्थक हैं। जैसे कि, 'रामस्तु लक्ष्मणं प्राह' रामजी ने लक्ष्मण से कहा। 'अहं हि यास्ये नगरं मनोज्ञम्' मैं सुन्दर नगर को जाऊंगा। 'स च प्राह च राजानम्' उसने राजा से कहा। 'कुर्वेस्मा हम्' मैं करता हूं। 'स ह तं प्राह लक्ष्मणः' उन लक्ष्मण ने उससे कहा। 'हतो वै रामचन्द्रेण रावणो लोकरावणः' रामचन्द्रजीने लोकरावण रावण को मारडाला। ये ६ पादपूरण के नाम हैं। सु—अति ये दोनों पूजा, प्रशंसा या बड़ाई करने के वाचक हैं। जैसे कि, 'सुस्तुतो देवदेवेशः शिवया सहितो हरः' शिवासमेत देवाधिदेव हरजी की भलीभांति प्रशंसा की। 'अत्युत्तमोहि देवानां विष्णुः सर्वगुहाशयः' सर्वगुहाओं में शयन करने हारा विष्णु देवताओं में बड़ाही उत्तम है। ये २ पूजाके नाम हैं ॥ ५ ॥

दिनार्थक, रात्र्यर्थक, कुटिलार्थक, सम्बोधनार्थक. **(दिवाह्नीत्यथ) दोषा (च) नक्तं (च रजनाविति)।**
(तिर्यगर्थे) साचि† तिरो (ऽप्यथ सम्बोधनार्थकाः) ॥ ६ ॥

दिवस इस अर्थ में 'दिवा' वर्तता है यानी दिनार्थ का वाची दिवा है। जैसे कि "दिवानिशं तप्यति मर्मताडितः" मर्मों में ताडित होता हुआ प्राणी दिन रात तपता है। यह १ दिनका नाम है। दोषा—नक्तम् और चकार से उषा ये तीनों रात्रिके वाचक हैं। जैसे कि 'चौराश्च दोषा ययुः' चौरगण रात में गयेथे। 'नक्तं गृहस्थो भुञ्जीत' गृहस्थजन रात्रि में भोजन करे। "उषागतो राधां माधवः"

† साचिः स्त्रीलिङ्गापि प्रकृत्यन्तरमस्ति। 'भित्तौ साची परिणतमुखी' (इति सप्तकुमारिका) "तिर्यक् साचिरपिस्त्रियाम् ॥ (इति रत्नकोषः) ॥

माधवजी रात या प्रभातसमय राधाजी को जाप्राप्त हुए । साचि और तिरस् ये दोनों कुटिल (टेढ़ा) अर्थ के वाचक हैं। जैसे कि, ' कृतं साचि धनुस्तेन ' उसने धनुष को तिरछा किया । " तिरो गत्वा समीक्षेत " तिरछा जाकर भलीभांति दर्शन करे । इसके अनन्तर सम्बोधनार्थक हैं ॥ ६ ॥

सम्बोधनार्थक, सामीप्यार्थक, अविचारित, अग्रार्थक.

स्युः (पाट् प्याडङ्गहेहैभोः) (समया निकषा हिरुक्) ।
(अतर्किते तु) सहसा (स्या)त्पुरः पुरतोऽग्रतः ॥ ७ ॥

पाट्—प्याट्—अङ्ग—हे—है—भोः—ये छः सम्बोधनार्थक हैं । जैसे कि, ' पाट् भीम ! यज्ञं रक्षस्व ' अयभीम ! यज्ञकी रक्षा करो । ' प्याट् पार्थ जयद्रथं पश्य ' अय अर्जुन ! जयद्रथ को देखो । ' अङ्ग देव ! दयांकुरु ' अयदेव ! दया करो । ' हे राम ! तव दासोऽस्मि ' हे रामजी ! मैं तुम्हारा दास हूं । ' है अम्ब ! मां सन्निधेहि ' अयि माताजी ! तुम मेरे समीप आओ ! ' क्षमस्व भोदुराराध्य ' भोदुराराध्य ! क्षमाकरो, ये ६ सम्बोधनके नाम हैं । समया, निकषा, हिरुक् ये ३ समीप के वाचक हैं । जैसे कि 'समया ग्रामं नदी वहति' गांव के पास ही नदी बहती है । ' विलङ्घ्य लङ्कां निकषा हनिष्यति ' समुद्र को नांघकर रामने लङ्का के पास ही रावण को मार गिराया । ' हिरुग्रामं गतो भरतः ' श्रीरामके पास भरत ने गमन किया । ये ३ समीप के नाम हैं । अविचारित, अकस्मात् या एकाएकी अर्थ का वाचक ' सहसा ' है । जैसे कि ' दिवः प्रसूनं सहसा पपात' अचानक ही आकाश से फूलों की वर्षा हुई । अथवा ' सहसा विदधीत न क्रियाम् ' एकाएकी विना विचारे काम को न करे । यह १ आकस्मिक या अचानक का नाम है । पुरः, पुरतः, अग्रतः—ये तीनों सम्मुख या सामने अर्थके वाचक हैं । जैसे कि, 'पुरः पश्यसि किं बाले ' अयि बाले ! तू सामने क्या देखती है ? ' पुरतः स्थाप्य सर्वेशं पूजयेदिति ' सर्वेश्वर को आगे स्थापन कर पूजे । " ददर्श राजा जननीमिव स्वां गामग्रतः प्रस्रविणीं न सिंहम् " राजाने अपनी माता के नाईं दूधको झरती हुई गऊको आगे देखा सिंह को नहीं ॥७॥

देवतार्थक, पित्रर्थक, अल्पार्थक, जन्मान्तरार्थक.

स्वाहा (देवहविर्दाने) श्रौषड्वौषड्वषट् स्वधा ।
किञ्चिदीषन्मना (गल्पे) प्रेत्यामुत्र (भवान्तरे) ॥ ८ ॥

स्वाहा, श्रौषट्, वौषट्, वषट् और स्वधा ये पांचो देवतार्थ हविष्यदानविशेष में प्रयोग कियेजाते हैं । जैसे कि, ' इन्द्राय स्वाहा ' इन्द्रदेवता के लिये यह होतव्य वस्तु है । एवं ' शम्भवे श्रौषट् ' शम्भुदेवता के लिये यह दातव्य वस्तु है । ' वासुदेवाय वौषट् ' वासुदेव के लिये यह देय पदार्थ है । ' बलाय वषट् ' बलदेवता के

२ " मम तावन्मतमिदं श्रूयतामङ्गवामपि । " (इति माघः) ।

लिये यह देनेयोग्य वस्तु है । 'पितृभ्यः स्वधा' पितरों के लिये यह कव्य (दातव्य) पदार्थ है । ये ५ देवतार्थ हविष्यदान के नाम हैं । किञ्चित्, ईषत्, मनाक् ये तीनों अल्पार्थ के वाचक हैं । जैसे कि 'किञ्चिद्विकसितं पुष्पमिति' फूल कुछेक खिला है । 'ईषदुष्णं पयः पिब' कुछेक गरम दूध को पिवो । 'मनाक् विहस्य सन्तुष्टो बभूव' कुछेक हँसकर सन्तुष्ट होगया । ये ३ अल्पार्थक के नाम हैं । प्रेत्य—अमुत्र ये दोनों जन्मान्तर के वाचक हैं । जैसे कि, 'प्रेत्य स्वर्गे महीयते' मरकर स्वर्गलोक में पूजित होता है । 'अमुत्र गत्वा फलमश्नुतेऽसौ' यह प्राणी परलोक में जाकर फलको पाता है । ये २ जन्मान्तर के नाम हैं ॥ ८ ॥

तुल्यार्थक, विस्मयार्थक, मौनार्थक, तत्कालार्थक.

व वा यथा तथैवैवं (साम्ये) ऽहो ही च (विस्मये) ।
(मौने तु) तूष्णीं तूष्णीकां सद्यः सपदि (तत्क्षणे) ॥ ६ ॥

व, वा, यथा, तथा, एव या 'इव' एवम् ये छः तुल्यार्थ या उपमार्थ के वाचक हैं । जैसे कि 'शरच्चन्द्रोव ते यशः' तुम्हारा यश शरच्चन्द्रमा के नाईं प्रकाशता है । "मणीवोष्ट्रस्य लम्बेते प्रियौ वत्सतरौ मम । म्रियमाणौ च तौ दृष्ट्वा मङ्किस्तत्रेदमब्रवीत्" । मेरे प्यारे बछड़े ऊंट के गले में युगलमणियों की नाईं लटकते हैं । वहां उनको मरा हुआ देखकर मङ्की ब्राह्मण ने ऐसा कहा । 'विषन्धरो वा चुक्रोध मेघनादो महाबलः' महाबली मेघनाद ने विषधर सांप के नाईं कोप किया । 'यथा बुभुक्षितस्यान्नम्' जैसे भूंखे हुए को अन्न अच्छा लगता है । 'तथैवार्तस्य चौषधम्' वैसेही आर्त (रोगी) को औषध भली भाती है । 'शार्दूल एव भूपालो भाति लोके भयंकरः' भयकारी सिंह के समान राजा सोहता है । यहां पर स्वामी और मुकुटने 'इव' शब्द का ग्रहण किया है । जैसे कि, 'छायेव तां भूपतिरन्वगच्छत्' राजा छाया के नाईं उस गऊके पीछे चलागया । 'अग्निरेवं द्विजोभाति रामान्तिकमुपागतः' रामजीके निकट आया हुआ ब्राह्मण आगीके समान चमकता है । ये ६ तुल्यार्थ के नाम हैं । अहो, ही—ये दोनों विस्मय अर्थ के वाचक हैं । जैसे कि, 'अहो अलं पुण्यतमं मधोर्वनम्, विस्मय है कि मधुवन अतीव पुण्यदायक है । 'ही विचित्रो विपाकः' विस्मयदायक विचित्र विपाक है । ये २ आश्चर्य के नाम हैं । तूष्णीम्, तूष्णीकाम्—ये दोनों मौन के वाचक हैं । जैसे कि, "तूष्णीं स्थित्वा क्षणं रामो जगाम गुरुसन्निधिम्" श्रीरामजी क्षणभर चुपचाप खड़े होकर गुरुजी के पास चलेगये । "तूष्णीकामासने रामः स्थित्वा दध्यौ महेश्वरम्" श्रीरामजी आसन पर चुपचाप बैठकर महादेवजी का ध्यान किया । ये २ चुपचाप के नाम हैं । सद्यः, सपदि—ये दोनों तत्काल के वाचक हैं । जैसे कि, 'सद्योहतः समुत्तस्थौ' माराहुआ प्राणी तुरन्त उठबैठा । 'ध्यात्वा सपदि तं रामं बाणं जग्राह लक्ष्मणः' उन रामजी को ध्यानकर

लक्ष्मण ने जल्द बाण को लिया। ये २ तत्क्षण (उसीक्षण,) के नाम हैं ॥ ९ ॥

कल्याणार्थक, **दिष्ट्या समुपजोषं (चेत्यानन्द)ऽथान्तरेऽन्तरा।**
मध्यार्थक, हठार्थक. **अन्तरेण च (मध्ये) स्युः प्रसह्य तु (हठार्थकम्) ॥ १० ॥**

दिष्ट्या, समुपजोषम् या समुपयोषम् ये दोनों आनन्दार्थ के वाचक हैं और मुकुटने 'दिष्ट्या शमुपजोषं च' ऐसा पढ़कर दिष्ट्या, शम्, उपजोषम्, या उपयोषम् इन तीन नामों को कहा है। जैसे कि, 'दिष्ट्याते दर्शनं कान्ते' अय कान्ते ! बड़ा आनन्द है कि तेरा दर्शन हुआ। 'समुपजोषं समीपं ते दर्शनं यातमुत्तमम्' आनन्द की बात है कि मैंने समीपही तेरा उत्तम दर्शन पाया। 'शंकरः शंकरो तु मे' शंकरजी मेरा कल्याण करें। 'उपजोषमुमानाथदर्शनं प्राप्त मद्यमे' बड़े मङ्गल की बात है आज मुझको उमानाथ का दर्शन प्राप्त हुआ। ये ३ कल्याण के नाम हैं। अन्तरे, अन्तरा, अन्तरेण ये तीनों मध्यार्थ के वाची हैं। जैसे कि, 'अनयोरन्तरेतिष्ठ' इन दोनों के बीच खड़े हो। 'त्वां मामन्तरा हरिः' तेरे-मेरे बीच हरिजी विराजते हैं। 'नारद पर्वतयोरन्तरेण कमण्डलुः' नारद व पर्वत के बीच कमण्डलु रक्खा है। ये ३ मध्य के नाम हैं। 'प्रसह्य' यह एक बलात्कार का वाचक है। जैसे कि, 'प्रसह्य सिंहः किल तां चकर्ष' सिंहने बलात्कारता 'ज़बरदस्ती' से उस गऊको किलकिलाकर खींचा। यह १ हठ का नाम है ॥ १० ॥

उचितार्थक, निरन्तरार्थक, **(युक्ते द्वे) सांप्रतं स्थानेऽभीक्ष्णं शश्व (दनारते)।**
अभावार्थक, वारणार्थक. **(अभावे) नह्यनो†नापि मास्म मालं च (वारणे) ॥ ११ ॥**

सांप्रतम्, स्थाने-ये दोनों उचितार्थ के वाचक हैं। जैसे कि 'क्रमशो वच्मि सांप्रतम्' उचित है कि मैं क्रमसे कहता हूं। विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्' विषैले वृक्षको भी भलीभाँति बढ़ाकर आपही काटने छाटने योग्य नहीं होता है। 'स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च' अहो हृषीकेश ! यह उचितही है कि तुम्हारे कीर्तन से जगत् हर्षित होता और अनुराग को करता है। ये २ युक्तार्थ के नाम हैं। अभीक्ष्णम्, शश्वत्-ये दोनों निरन्तर के वाची हैं। जैसे कि, 'अभीक्ष्णमुष्णैरपि तस्य सोष्मणः' कामज्वर समेत उस रावण का शरीर अत्यन्त गरम, सुरेन्द्र की बन्दीकृत रमणियों के निःश्वास पवनों से जैसा शान्त हुआ है। वैसा चन्दनोदक बिन्दु समेत कोमल जलोक्षित पंखों की पवनों से न शान्त हुआ। 'शश्वच्छान्ति प्रदेहि मे' मुझको हमेशा शान्ति को दीजिये। ये २ लगातार या हमेशा के नाम हैं। नहि-अ-नो-न ये चारो अभाव अर्थ के वाचक हैं। जैसे कि 'नहि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति' अमने आत्माराम को विषय मृगतृष्णा

† 'अनशब्दोऽपि निषेधे' अनोपमाते बुद्धिरिति मुकुटः।

नहीं घुमाती है । " अ स्यादभावे स्वल्पार्थे " (इति विश्वः) अ—यह अभाव और स्वल्पार्थ का वाचक है । अभाव में जैसे कि ' अ विप्रवद्भाष से ' ब्राह्मण के नाईं तू नहीं बोलता है । ' नो चक्री किं कुलालः ' जो तुम चक्रधारी नहीं तो क्या कुम्हार हो ? ' नायं जनो मे सुख—दुःख—हेतुः ' यह जन मेरे सुख—दुःख का कारण नहीं है । ये ४ अभाव के नाम हैं । मास्म, मा, अलम् ये तीनों वारण अर्थ के वाची हैं । जैसे कि, ' मास्मकार्षीरिदं प्रिये ' । अय प्यारी जी ! ऐसा मत करो । ' मा निषाद ! प्रतिष्ठां त्वमगमश्शाश्वतीः समाः ' अय निषाद ! तू बहुत वर्षोंतक प्रतिष्ठा (बड़ाई) को न पावेगा । ' अलं महीपाल तव श्रमेण ' अय महीपाल ! तुम्हारे श्रम से क्या है यानी तुम्हारा श्रम करनाही बेकार है ? ये ३ वारण (मने करने) का नाम हैं ॥ ११ ॥

पक्षान्तरार्थक, यथार्थक, प्रकटार्थक, अङ्गीकारार्थक.

(पक्षान्तरे) चेद्यदि च (तत्त्वे) त्वद्धाऽञ्जसा (द्वयम्)।
(प्राकाश्ये) प्रादुराविः (स्या)दोमेवं परमं (मते) ॥१२॥

चेत्—यदि ये दोनों पक्षान्तर (विकल्पार्थ) के वाचक हैं । जैसे कि, ' सत्यं चेत्तपसा च किम् ' यदि सत्य है तो तपस्या से क्या ? ' शुचिमनो यद्यस्ति तीर्थेन किम् ' यदि मन शुद्ध है तो तीर्थ से क्या ? ये २ पक्षान्तर के नाम हैं । अद्धा—अञ्जसा ये दोनों यथार्थ के वाचक हैं । जैसे कि, ' भ्रातरं चावधीत्कंसं मातुरद्धाऽत दर्हणम् ' माताके भाई (मामा) कंस को श्रीकृष्णजीने मारडाला वास्तव में यह काम उनके अयोग्य हुआ । ' अञ्जसा मथुरां रुध्वा जरासन्धो जगर्जह ' वास्तव में मथुरा को घेर कर जरासन्ध बहुतही गर्जा । ये २ तत्त्वार्थ के नाम हैं । प्रादुः—आविः ये दोनों प्रकटार्थ के वाची हैं । जैसे कि " प्रादुर्भूत्वा तयोर्मध्ये जहार स्वां प्रियां हरिः " उन दोनों मुनियों के बीच प्रकट होकर श्रीहरिजी ने अपनी प्यारी लक्ष्मी का हरण किया । ' देवक्यां देवरूपिण्यां विष्णुः सर्वगुहाशयः । आविरासीद्यथा प्राच्यां दिशीन्दुरिव पुष्कलः ' । देवरूपिणी देवकी में सर्वगुहानिवासी श्रीविष्णुजी प्रकट हुए जैसे कि पूर्वदिशा में पूर्णरूप होकर चन्द्रमा प्रकट होता है । ये २ प्रकटार्थ के नाम हैं । ओम्, एवम्, परमम्—ये तीनों अनुमति या अङ्गीकार के वाची हैं । जैसे कि, ' ओमित्युक्तवतोऽथ शार्ङ्गिण इति ' वैसाही हो ऐसा स्वीकार करते व शिशुपाल से क्रोधित होतेहुए शार्ङ्गधारी श्रीकृष्ण के बदन में आकाश के नाईं सदा शत्रुविनाशक उत्पात विशेष ने भौंहों के छल से प्रतिष्ठा को किया । ' एवं यदाह भगवान् ' ऐसाही हो ऐसा अङ्गीकार कर जिसको भगवान् ने कहा । " इत्युक्त्वा परमं रामो हनुमन्तमुवाचह " अङ्गीकार है ऐसा कह कर श्रीरामने हनूमान् से कहा, ये ३ अनुमत के नाम हैं ॥ १२ ॥

सब तरफ़, यथेष्ट, अत्यर्थ, या विनाकामना स्वीकार, निन्दा-समेत स्वीकार.

समन्ततस्तु परितः सर्वतो विष्वगि (त्यपि) ।
(अकामानुमतौ) कामम(सूयापगमे) ऽस्तु (च) ॥ १३ ॥

समन्ततः, परितः, सर्वतः, विष्वक् ये चारो सर्वतः (सब कहीं) इस अर्थ में प्रयोग कियेजाते हैं । अपि शब्द से 'अभितः, विश्वतः, समन्तात्'—आदिकों का संग्रह कियाजाता है । जैसे कि 'समन्ततो वर्षति वारिवाहः' मेह चारों तरफ़ वर्षता है । 'आयान्ति परितःश्रियः' संपत्तियाँ चारों ओरसे आती हैं । 'सर्वतो वाति पवनः' हवा सब तरफ़ से चलती है । 'विष्वक् पतन्ति किरणाः' किरणें चारों तरफ़ पड़ती हैं । 'अभितो ग्रामं वनानि सन्ति' गांव के चारों तरफ़ जंगलही जङ्गल हैं । 'विश्वतो वाति वातोऽयम्' यह वायु चारोंतरफ़ बहती है । 'समन्तात्सरति स्मरः' कामदेव सबही ओर सरकता है । ये ७ सब कहीं इस अर्थ के नाम हैं । विना कामना अङ्गीकार, यथेष्ट या अत्यर्थ का वाचक 'कामम्' यह । एक अव्यय है । जैसे कि 'त्वं हनिष्यसि चेत्कामम्' † यदि तू यथेष्ट उसको मारेगा । यह १ विना कामना स्वीकार का नाम है । निन्दापूर्वक स्वीकार अर्थ का वाची 'अस्तु'—यह एक है । च शब्दसे 'नाम' का भी संग्रह किया जाता है । जैसे कि, 'माजीवन् यः परावज्ञादुःखदग्धोऽपिजीवति । तस्या जननिरेवास्तु जननीक्लेशकारिणः' (इति माघः) जो प्राणी पराये अनादर के दुःख से जला व निन्दितजीवी होता हुआ प्राणों को धारता है उस मातृकष्टकारी का न पैदा होनाही भला है । यह १ निन्दापूर्वक अङ्गीकार का नाम है ॥ १३ ॥

विरोधोक्ति, इष्ट प्रश्न, निन्दा योग्य, यथा योग्य.

ननुच (स्याद्विरोधोक्तौ) कच्चित् (कामप्रवेदने) ।
निःषमं दुःषमं (गर्ह्ये) यथास्वं (तु) यथायथम् ॥ १४ ॥

'ननुच' या 'ननु' यह एक अव्यय विरोधवचन में वर्तता है यानी विरोधोक्ति का वाचक है । जैसे कि, "ननु (च) एवं मन्यसे तर्हि किमपि न स्यात्" जो तू ऐसाही मानेगा तो कुछ भी न होगा ? यह १ विरोधोक्ति का नाम है । 'कच्चित्' यह एक अव्यय इष्ट परिप्रश्न या इच्छार्थ प्रकाश करने का वाची है । जैसे कि, 'कच्चिज्जीवति मे माता' क्या मेरी माता जीती है ? यह १ कामप्रवेदन का नाम है । निःषमम्—दुःषमम् ये दोनों निन्दनीय अर्थ के वाचक हैं । जैसे कि, "निःषमं वक्ति मे मूर्खो वेदविद्याविनिन्दकः" । वेदविद्याविदूषक होकर मूढ़ प्राणी मुझसे निन्दनीय वचन कहता है । "दुःषमं वर्तते कान्ता कान्तिहीना कलिप्रिया," झगड़नेहारी

† "आरभन्तेऽल्पमेवाज्ञाः कामं व्यग्रा भवन्ति च । महारम्भाः कृतधियस्तिष्ठन्ति च निराकुलाः" (इति माघः) ।

नारी शोभा रहित होकर दुःखसे वर्तती है । ये २ निन्दनीय के नाम हैं । यथा स्वम्, यथायथम्—यें दोनों यथायोग्य के वाची हैं । जैसे कि ' यथास्वमाश्रमं चक्रे चित्रकूटे नगोत्तमे' पर्वतों में उत्तम चित्रकूट पर श्रीरामजीने यथायोग्य आश्रम का निर्माण कराया । ' यथायथं फलायन्ते रसालाद्या रसाकराः ' रसखानि आम आदि फल यथायोग्य फलते हैं । ये २ यथोचित के नाम हैं ॥ १४ ॥

असत्यार्थक, सत्यार्थक, निश्चयार्थक.

मृषा मिथ्या च (वितथे) यथार्थं (तु) यथातथम् ।
(स्यु) रेवं तु पुनर्वै वे (त्यवधारणवाचकाः) ॥ १५ ॥

मृषा, मिथ्या—ये दोनों असत्यार्थ के वाचक हैं । जैसे कि " उच्छ्रायसौन्दर्यगुणा मृषोद्याः" उंचाई व सौन्दर्यता के गुण कवियों को झूंठ कहने योग्य नहीं होते हैं । " सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किञ्चित्त्वयोदितम् " तूने सत्य कहा इसमें तैंने कुछ झूंठ नहीं कहा है । ये २ असत्य के नाम हैं । यथार्थम्, यथातथम्—ये दोनों यथायोग्य के वाची हैं जैसे । कि, " यथार्थमुक्तं भवता न चान्यत् " आपने यथार्थ कहा असत्य नहीं । " गुरुर्यथातथं ब्रूते गोविन्दगुणगायकः " गोविन्दगुणगायक गुरुजी सत्यही कहते हैं । ये २ यथार्थ के नाम हैं । एवम्—तू—पुनः—वै, वा या वा—एव ये पांचो निश्चयार्थ के वाचक हैं. और सुभूति के मतमें एवम्, तु, पुनः, वा, च ये ५ निश्चयार्थक हैं । जैसे कि " एवमेव यथा प्राह " जैसा आप कहते हैं ऐसाही है । "रावणं तु दुरात्मानमवधीद्राघवः प्रभुः " स्वामी रामजीने दुरात्मा रावणको निश्चय कर मारडाला । " पुनर्बभाषे वसुदेवसूनुः " वासुदेवजीने निश्चित वचन कहा । " धर्मज्ञो व्याससूनुर्वै सज्जनानन्ददायकः " व्यासपुत्र शुकदेवजी निश्चय कर धर्मज्ञाता होकर सज्जनों के आनन्ददायक हैं । " स्वामिना तु वचो वोक्तं तन्मे भद्रकरं भवेत् " स्वामीजीने जो निश्चित वचन कहा था वह मेरे को मङ्गलकारी होगा । " तदेव सत्यं वद मे मुरारे " अहो मुरारे ! मुझ से उस सत्य वचन कोही कहिये । ये ५ अवधारण के नाम हैं ॥ १५ ॥

अतीतार्थक, निश्चयार्थक, संवत्सरार्थक. पश्चादर्थक, आत्मार्थक.

प्राग (तीतार्थकं) नूनमवश्यं (निश्चये द्वयम्) ।
संव(द्वर्षे)(ऽवरे)त्ववागामेवं स्वय (मात्मना) ॥ १६ ॥

" प्राक् " यह एक अतीतार्थ का वाचक है । जैसे कि " प्राक्कर्मकृतं भुङ्क्ते जनो-जातो धरातले " पृथ्वीतल में उपजा हुआ प्राणी पूर्वकृत कर्म को भोगता है । यह १ भूतार्थ का नाम है । नूनम्—अवश्यम् ये दोनों निश्चयार्थ के वाची हैं । जैसे कि " धर्मज्ञो धर्मराजोऽयं नूनं राज्यं प्रपत्स्यते " यह धर्मराज (युधिष्ठिर) जी धर्म के ज्ञाता हैं. इस लिये निश्चय कर राज्य को पावेंगे । " अवश्यं यातारश्चिरतरमुषि-

त्वापि विषयाः " कामादि विषयगण चिरकालपर्यन्त बस करके भी अवश्यही जानेवाले होते हैं। ये २ निश्चयार्थ के नाम हैं । ' संवत् ' यह एक बर्ष या सालका वाचक है । जैसे कि ' साम्प्रतं क्षयनामकं संवत् प्रवर्तते ' इस समय क्षयनामक संवत्सर प्रवर्तमान है। यह १ संवत्सर का नाम है । पूर्वकाल से पीछे इस अर्थ का वाचक ' अर्वाक् ' है । जैसे कि " कुले भृतुत्रयादर्वाक् मण्डनान्नतु मुण्डनम् " वंशस्थ तीन पुरुषों के मध्य में यज्ञोपवीत के अनन्तर छ:महीना तक मुण्डन नहीं करना चाहिये। यह १ पश्चादर्थ का नाम है। आम्—एवम् ये दोनों निश्चयार्थ या अङ्गीकारार्थ के वाचक हैं । जैसे कि " आं कुर्मो वचनं गुरोः " हमलोग गुरुके वचनों को स्वीकार करते हैं। " एवं कृत्वा पितुर्वाक्यं रामो मात्रन्तिकं गतः " पिता (दशरथ) का वचन मानकर रामजी माता (कौसल्या) के पास चलेगये। ये २ अङ्गीकार के नाम हैं। ' स्वयम् ' यह एक आत्मा इस अर्थ का वाचक है। जैसे कि " जायते श्रीपतिः स्वयम् " श्रीपतिजी आपही प्रकट होते हैं। यह १ आत्मार्थ का नाम है ॥१६॥

अल्पार्थक, महत्त्वार्थक, बाहुल्यार्थक, अशीघ्रार्थक, नित्यार्थक, बाह्यार्थक, अतीतार्थक, अदर्शनार्थक.

(अल्पे) नीचै (र्मह) त्युच्चैः प्रायो (भूम्न्यद्रुते) शनैः ।
सना(नित्ये)बहि(र्बाह्ये)स्मा(तीते)ऽस्त(मदर्शने)॥१७॥

' नीचैः ' यह एक अल्पार्थ का वाचक है। जैसे कि " तथापि नीचैर्विनयाददृश्यत " तौ भी विनय से नीचेही देखे गये। यह १ अल्पार्थ का नाम है। ' उच्चैः ' यह एक महत्त्व अर्थ का वाची है । जैसे कि " उच्चैरधः पातिपयोमुचोऽपि समूहमूहुः पयसां प्रणाल्यः " ऊंचे व जिनके नीचे मेघ गिरे हैं उन पनारों ने जलसमूहों को वहाया। यह १ महदर्थ का नाम है। " प्रायः " यह एक बाहुल्यार्थ का नाम है। जैसे कि " प्रायः साहसिकाः स्त्रियः " स्त्रीगण बहुधा साहसकर्म की करनेहारी होती हैं। ' शनैः ' यह एक अशीघ्र (विलम्ब) अर्थ का वाचक है । जैसे कि, " शनैरनीयन्त रयात्पतन्तो रथाः क्षितिं हस्तिनखादखेदैः " ओटेसे खेदरहित घोड़ोंने वेगसे गिरते हुए रथों को पृथ्वी पै धीरे से पहुँचाया । यह १ अशीघ्रार्थ का नाम है। ' सना ' यह एक अथवा सना—सनात्—सनत् ये तीनों नित्य (हमेशह) अर्थ के वाचक हैं। जैसे कि " सनातनोऽयं पुरुषः पुराणः " यह पुराण पुरुष सनातन यानी तीनों कालों में एकरस बना रहता है। " सनान्नमस्ये चरणौ मुरारेः " मुरारिजीके चरणों को मैं सदैव नमस्कार करता हूं । " सनत्कुमारो वचनं बभाषे " ब्रह्मा का बेटा " एक मुनि " जो कि सदा कुमाररूपसे ही रहता है, उसने वचन को कहा। यह १ नित्यार्थ का नाम है। ' बहिः ' यह एक बाह्य अर्थ का वाचक है। जैसे कि, " बहिर्विकारं प्रकृतेः पृथग्विदुः पुरातनं त्वां पुरुषं पुराविदः " विकारों से

बाहर, प्रकृति से परे हुए तुमको कपिलादिकों ने पुरातन पुरुष कहा है । 'स्म' यह एक अतीतार्थ का वाचक है । जैसे कि, "शीतालुः सलिलगतेन सिच्यते स्म" शीतसे कांपती या डरती हुई नायिका को जलगत नायक ने सींचा यानी जल के छिट्टाओं से तर बतर करदिया । यह १ अतीतार्थ का नाम है । "अस्तम्" यह एक दर्शनाभाव अर्थ का वाचक है । जैसे कि "उदयति विततोर्ध्वरश्मिरज्जावहिमरुचौ हिमधाम्नि याति चास्तम्" फैली व ऊपर को गई किरणरूप रस्सीवाले सूर्य के उदय होते व चन्द्रमा के अस्तमयमान होते हुए इस पर्वत ने मानों लटकते हुए दो घण्टाओं से परिवारित गजेन्द्रलीला को किया है । यह १ अदर्शनार्थ का नाम है ॥ १७ ॥

सत्ता, कोपोक्ति, प्रश्न, सान्त्वन, तर्क, रात्रि विराम, नमस्कार.

अस्ति (सत्त्वे) (रुषोक्तावू)मु (प्रश्ने) (ऽनुनये) त्वयि ।
हुं (तर्के) स्यादुषा (रात्रेरवसाने) नमो (नतौ) ॥ १८ ॥

अस्ति, यह एक सत्ता या विद्यमानता अर्थ का वाचक है। जैसे कि "मित्रमस्तिधनं कृष्णं पश्येत्याह प्रिया पतिम्" विद्यमान धनवाले मित्ररूप श्रीकृष्णजी का दर्शन कीजिये । ऐसा प्यारी ने प्यारे से कहा । यह १ सत्ता का नाम है। क्रोधसे कहने अर्थ का वाची 'ऊम्' यह एक अव्यय है । जैसे कि "ऊमागतोहं शत्रुस्ते पौरुषं दर्शयाशु मे" ओ बे मैं तेरा बैरी आ पहुंचा हूं मुझे जल्द पौरुष को देखला । यह १ कोपोक्ति का नाम है । पूछने या क्रोधसे पूछने अर्थ का वाचक 'उम्' यह एक अव्यय है । जैसे कि 'उं गच्छसि बहिर्धव' अय प्यारे ! क्या बाहर जाते हो ? यह १ प्रश्न का नाम है । 'अयि' या 'अये' यह एक अनुनय=सान्त्वन (तसल्ली देना) प्रीति या प्रार्थना का वाचक है । जैसे कि, "अयि विजहीहि दृढोपगूहनम्" अय प्यारे ! दृढ़ आलिङ्गन को त्यागिये ! "माकुरु मानिनि मानमये" अये मानिनि ! मानको मतकरो। यह १ अनुनय का नाम है । 'हुम्' यह एक तर्क का वाची है । जैसे कि "हुं रामो भरतो हुं च" क्या रामजी हैं या भरत । यह १ तर्क का नाम है । उषा या उषः (स्) यह एक रात्रि के अवसान का वाचक है । जैसे कि 'उषातनो वाति वायुः' उषाकालीन वायु बहता है । यह १ रजनीशेष का नाम है । नमः (स्) यह एक नमस्कार अर्थ का वाची है । जैसे कि "नमो ब्रह्मण्यदेवाय" ब्रह्मण्यदेव के लिये नमस्कार है । यह १ प्रणाम का नाम है ॥ १८ ॥

पुनरर्थक, निन्दार्थक, प्रशंसार्थक, सायंकालार्थक, प्रभातार्थक, समीपार्थक.

(पुनरर्थे) ऽङ्ग (निन्दार्थे) दुष्ठु सुष्ठु (प्रशंसने) ।
सायं (साये) प्रगे प्रातः (प्रभाते) निकषा (ऽन्तिके) ॥ १९ ॥

'अङ्ग' यह एक पुनरर्थ का वाचक है। जैसे कि, "मूर्खोऽपि नावमन्येत किमङ्ग ! विद्वान्" मूर्ख का भी अनादर न करे फिर विद्वान् को क्या कहना चाहिये ? यह १ पुनरर्थका नाम है। 'दुष्टु'—यह निन्दा का वाचक है। जैसे कि, "दुष्टु खलु त्वम्" निश्चयकर तू दुष्टु, यानी बुरा है। यह १ निन्दा का नाम हैं। 'सुष्टु'—यह प्रशंसा, बड़ाई या तारीफ़ का नाम है। जैसे कि, "सुष्टु काव्यं त्वया कृतम्" तुमने काव्य को अच्छा बनाया है। यह १ प्रशंसा का नाम है। सायम्—यह एक सन्ध्याकाल (शाम) का वाचक है। जैसे कि, "सायं सन्ध्यामुपासिष्ये" मैं सायंकालीन सन्ध्या की उपासना करूंगा। यह १ सायंकाल का नाम है। प्रगे, और प्रातः ये दोनों प्रभातकाल के वाचक हैं। जैसे कि "इत्थं रथाश्वेभनिषादिनां प्रगे गणो नृपाणा-मथतोरणाद्बहिः" इस प्रकार सूर्योदय के अनन्तर रथ, घोड़े और हाथियों पै सवार राजाओं के गणों ने बाहिरी दरवाज़े के बाहर अच्युत भगवान् को देखा। "रेवती रमणो रामः प्रातरत्र समागतः" प्रभातसमय रेवतीरमण बलरामजी यहां आये थे। ये २ प्रातःकाल के नाम हैं। और निकषा। यह एक समीप अर्थ का वाचक है। जैसे कि, "निकषा पत्तनं नदी वहति" शहर के पासही नदी बहती है। यह १ समीप या निकट का नाम है ॥ १९ ॥

पूर्वगत, पूर्वपूर्व गत, वर्तमानवर्ष, आजदिन, पूर्व-गत दिनादि·

परुत्परार्यैषमो (ऽब्दे पूर्वे पूर्वतरे यति)।
अद्या (त्राह्वय) थ पूर्वेऽह्नीत्यादौ पूर्वोत्तरापरात् ॥२०॥
तथाधरान्यान्यतरेतरात्पूर्वेद्युरादयः।

पूर्ववर्ष, पूर्वतरवर्ष और वर्तमान वर्ष इन्होंके वाचक परुत्—परारि—और ऐषमः ये तीनों क्रमसे होते हैं। यानी बीते पूर्ववर्ष को 'परुत्' कहते हैं, जैसे कि, "परु-न्नागतः कामिनीं कान्तकोऽसौ" बीते हुए पूर्ववर्ष में यह कान्त कामिनी के पास नहीं आया था। एवं पूर्व से पूर्वगत वर्ष को 'परारि' कहते हैं जैसे कि "परारि नागतः कृष्णो राधां बाधाहरीं प्रियाम्" पूर्वसे पूर्वगत वर्ष में बाधा हरने हारी प्यारी राधाजीके पास श्रीकृष्णजी नहीं आये थे। वर्तमान वर्ष को 'ऐषमः' (स्) कहते हैं। जैसे कि, "ऐषमो भगवानिन्द्रो भूरि वृष्टिं करिष्यति" इस साल भगवान् इन्द्रजी बड़ीभारी वर्षा करेंगे। आज के दिन का वाचक 'अद्य' यह एक अव्यय है। जैसे कि, "अद्यापि सेनातुरगाः सविस्मयैरलूनपक्षा इव मेनिरे जनैः" विस्मय-समेत जनोंने आजके दिन सेनाके घोड़ोंको बिना कटे हुये पंखोंके नाई माना। यह १ आज के दिन का नाम है। इसके अनन्तर पूर्व, उत्तर, अपर तथा अधर, अन्य, अन्यतर और इतर इन शब्दों से पूर्व दिवस आदि अर्थों में (एद्युस्) प्रत्यय करने पर 'पूर्वेद्युः' आदि सात शब्द क्रमसे सिद्ध होते हैं यानी "पूर्वस्मिन्नहनि" इस अर्थ का वाचक 'पूर्वेद्युः' कहा जाता है। जैसे कि, "पूर्वेद्युः प्राह पितरं पूर्णानन्दः परेश्वरः"

प्रातःकाल या पूर्वदिन में परों के स्वामी पूर्णानन्द पिताजी से बोले । एवं "उत्तरेऽहनि" उत्तर दिन का वाचक 'उत्तरेद्युः' कहाता है । जैसे कि "नान्दीमुखादुत्तरेद्युर्विवाहः परिकीर्तितः" नान्दीमुख श्राद्ध से उत्तर दिन में विवाह कहा गया है । "अपरेऽहनि" अपर दिन का वाचक 'अपरेद्युः' कहलाता है । जैसे कि, "अपरेद्युर्गमिष्यामि मथुरां माधवप्रियाम्" अपर दिन में माधव की प्यारी मथुरा को मैं जाऊंगा । "अधरेऽहनि" अधर दिन का वाची 'अधरेद्युः' कहाता है । जैसे कि "अधरेद्युरधोगत्वा नागनाथं ददर्शह" अधर दिन में नीचे जाकर उसने नागनाथ को देखा । "अन्यस्मिन्नहनि" अन्य दिनका वाचक 'अन्येद्युः' कहा जाता है । जैसे कि, "अन्येद्युरात्मानुचरस्य भावम्" अन्य दिन में अपने सेवक का भाव जानना चाहती । "अन्यतरस्मिन्नहनि" अन्यतर दिन को 'अन्यतरेद्युः' कहते हैं । जैसे कि, "दृष्ट्वात्वन्यतरेद्युर्मामानन्दुर्मुनयोऽमलाः" अन्यतर दिवस में मुझे देखकर मलरहित मुनियों ने आनन्द मनाया । "इतरस्मिन्नहनि" इतर दिन का वाचक 'इतरेद्युः' कहाता है । जैसे कि, "इतरेद्युर्निरीक्षेहमीशानं पार्वतीप्रियम्" इतर दिन में पार्वती के प्यारे महादेवजी को मैं देखता हूं । यह एक २ क्रम से पूर्वादि दिवसों का नाम है ॥ २० ॥

दोनों दिन, पर दिन. **उभयद्युश्चोभयेद्युः (परेत्वह्नि) परेद्यवि ॥ २१ ॥**

उभयद्युः, उभयेद्युः—ये दोनों उभय दिवस के वाचक हैं । जैसे कि "उभयद्युरुमानाथपादकञ्जं भजाम्यहम्" उमानाथजीके चरण कमलों को मैं दोनों दिवसों में भजता हूं । "उभयेद्युर्भजेरामं ससीतं लक्ष्मणानुगम्" दोनों दिनमें अनुगामी लक्ष्मण व सीता समेत रामजीको मैं भजताहूं । ये २ उभय दिन के नाम हैं । पर दिन का वाची 'परेद्यवि' कहाता है । जैसे कि, "मित्रं दृष्टं परेद्यवि" परदिन में उसने मित्र को देखा । यह १ पर दिन का नाम है ॥ २१ ॥

गयादिन, आने वाला दिन, परसों, उसीसमय, एकसमय, सर्व समय. **ह्यो (ऽतीते) (ऽनागतेऽह्नि) श्वः परश्वश्च (परेऽहनि)**
तदा तदानीं युगपदेकदा सर्वदा सदा ॥ २२ ॥

'ह्यस्' यह गये दिन का वाचक है । जैसे कि "ह्योऽभवत्त्वत्पुत्रः" गये दिन में तुम्हारे लड़का हुआ । यह १ बीते दिन का नाम हैं । 'श्वस्' यह आगामी दिन का वाची है । जैसे कि, "श्वोभविता राज्यभारो रामस्य" आनेवाले दिन में श्रीरामजी को राज्य का भार प्राप्त होगा । यह १ आगामी दिन का नामहै । परश्वः यह परदिन (परसों) का वाचक है । जैसे कि, "रामःपरश्वः समुपैष्यते माम्" परसों के दिवस श्रीरामजी मुझको प्राप्त होंगे । यह १ परसों का नाम है । तदा—

तदानीम् ये दोनों तत्काल के वाचक हैं। जैसे कि, " तदा चक्षुष्मतां प्रीतिः " उस समय नेत्रवानों की प्रीति होती है । एवं " यदा स्याद्राधया संगस्तदानीमेव मे सुखम् " अयि सखि ! जब राधा के साथ समागम होगा तबहीं मुझको सुख होवेगा । ये २ तत्काल के नाम हैं । युगपद्–एकदा ये दोनों एकसमय के वाची हैं । जैसे कि, " उदयाद्रिमूर्ध्नियुगपद्बभासतो: " उदयाचल के शिखरपै एकही समय चन्द्रमा व सूर्य ये दोनों प्रकाशमान होते हुए । " एकदा भगवान्व्यासो वासुदेवं ददर्शह " एक समय भगवान् व्यासजीने वासुदेवजी को देखा । ये २ एककाल के नाम हैं। सर्वदा–सदा ये दोनों सर्वकाल ' हमेशा ' के वाचक हैं । जैसे कि, " तैरस्मान्रक्ष सर्वदा " अहोमातः ! उन पूर्वोक्त हथियारों से हमेशा हम लोगों की रक्षा कीजिये । एवं " याचन्ते याचकाः सदा " मंगतालोग हमेशा मांगा करते हैं । ये २ सब काल के नाम हैं ॥ २२ ॥

अब या इस समय, पूर्व, उत्तर, पश्चिम.

एतर्हि संप्रतीदानीमधुनासाप्रतं तथा ।
(दिग्देशकालेपूर्वादौ) प्रागुदक्प्रत्यगादयः ॥ २३ ॥

इत्यव्ययवर्गः ॥

एतर्हि–संप्रति–इदानीम्–अधुना और सांप्रतम् ये ५ इस समय या अबके वाचक (नाम) हैं । जैसे कि " एतर्हि क्रियते कार्यम् " अभी कार्य किया जाता है। " हरत्यघं संप्रति हेतुरेष्यतः " इस समय आनेवाले शुभका कारण आपका दर्शन पापको हरता है । " इदानीं नास्ति ते भयम् " अब तुमको भय नहीं है । " नीर क्षीरविवेके हंसालस्यं त्वमेव तनुषे चेत् । विश्वस्मिन्नधुनान्यः कुलव्रतं पालयिष्यति कः " अहो हंस ! पानी व दूध के विवेक में यदि तुम्हीं आलस करोगे तो अब विश्व में दूसरा कौनसा है जो कि कुलव्रत को पालेगा । " मानिनीमानविध्वंसदक्षो जयति सांप्रतम् " इस समय मानिनियों के मानहरने में चतुर कृष्णजी जय करें । जब पूर्व आदि शब्द दिशा–देश व कालके वाच्य रहते हैं तो प्राक्–उदक्–और प्रत्यक् आदि शब्द साधु होते हैं । जैसे कि " प्रागेव विद्यमानत्वान्न तेषामिह संभवः " पहलेही विद्यमान होने के कारण उन विकारों का संभव नहीं है । " उमानाथो ह्युदग्गतः " उमानाथ उत्तरदिशा में गये । " प्रत्यग्गतो महेशानो रामं दृष्ट्वा जहर्षह " पश्चिम में पहुँचे हुए महेशजी रामजीको देखकर हर्षित हुए। "पूर्वादौ" इस आदि शब्द से उत्तर–दक्षिण–अधर और ऊर्ध्व आदि का ग्रहण किया जाता है । और "प्रत्यगादयः" इस आदि शब्द से उत्तरात्–अधरात्–दक्षिणात्–उत्तरेण–अधरेण–दक्षिणेन–दक्षिणा–दक्षिणाहि–दक्षिणतः और उतरतः आदि का भी ग्रहण होता है जैसे कि "उत्तरात्तु गतो योगी जटाधारी दिगम्बरः " दिगम्बर जटाधारी योगी उत्तर दिशा में चला गया "अधरात्तु गमिष्यामि" मैं अधोदिशा में जाऊंगा "दक्षिणात्तु ययौ देवः" देव

दक्षिणादिशा में चला गया " उत्तरेण गतो रामः " रामजी उत्तरदिशा में पासही चले गये " अधरेण नदी वहति " नदी अधोदिशा में पासही बहती है । " दक्षिणेन शिवानाथो रमानाथं ददर्शह " शिवानाथ ने दक्षिणादिशा में पासही रमानाथ को देखा । " दक्षिणा दुर्जना यन्ति " दक्षिणादिशा में दूर पै दुर्जनलोग जाते हैं । " दक्षिणाहि वसन्त्यत्र श्वपाकाः पापकारिणः " पापकारी भङ्गीलोग या चाण्डाल लोग यहां दक्षिणादिशा में दूर पै बसते हैं । " गतो दक्षिणतः खलः " खल रावण दक्षिणादिशा में चला गया । "शिवोह्युत्तरतो नित्यं विजह्रे शिवया सह" उत्तरदिशा में शिवजीने शिवा के साथ नित्य विहार किया " ग्रामस्योपरि पक्षिणः पतन्ति " पखेरू गांव के ऊपर गिरते हैं । " उपरिष्टान्नारदोभ्यागात् " ऊपर से नारद आगये । " ततोह्यधस्ताद्वसतीह भौमः " उसकी अधो दिशा में मङ्गल बसता है । इत्यादि जानना चाहिये ॥ २३ ॥

इत्यव्ययवर्गः ॥

अथ लि[illegible]संग्रहवर्गो व्याख्यायते ॥

सलिङ्गशास्त्रैः सन्नादिकृत्तद्धित[illegible]ः ।
अनुक्तैः संग्रहे लिङ्गं संकीर्णवदिहोन्नयेत् ॥ १ ॥

" सलिङ्गशास्त्रैः" पाणिनिआदिकोंसे कहेहुए लिङ्गानुशासनसमेत ' सन् ' आदिप्रत्ययों से उत्पन्न चिकीर्षा, लोलूया कण्डूया, पुत्रकाम्या, आदि शब्दों से, कृत्प्रत्ययों से उत्पन्न भूतिः—इष्टिः—कृतिः—स्मृति आदिकों से, तद्धित प्रत्ययों से उपजे अणाद्यन्त औपगवः—औपगवी, गार्ग्यः, गार्गी आदिकों से, समासप्रयुक्त लिङ्गभागी संज्ञापरिभाषम्, बदरामल[illegible] आदिकों से और पहले अनुक्तशब्दों से संग्रह किया जाता है । यहां इस संग्रहवर्ग में लिङ्गका ज्ञान किसभाँति करना चाहिये ? इस आशङ्कामें कहतेहैं कि ' संकीर्णवत् ' जैसे संकीर्णवर्ग में प्रकृति-प्रत्ययाद्यर्थों से लिङ्ग जानेजाते हैं वैसेही यहां भी जानना चाहिये । तहां प्रकृति से जैसे कि " अर्धर्चाः पुंसि च " से अर्धर्चः, अर्धर्चम् । प्रत्ययार्थ से जैसे " स्त्रियां क्तिन् " "पुंसि संज्ञायां घः " । " नपुंसके भावे क्तः " आदि । "प्रकृतिप्रत्ययाद्यर्थैः " इस आदि शब्द से क्रियावि[illegible]णों को नपुंसकत्व और एकवचनान्तत्व भी होता है । उसीसे " सुखं सुष्वाप पिङ्गला " आदि सिद्ध होते हैं। यदि कहाजावे कि ' कृत्प्रत्ययजैः' इस वचन से चिकीर्षा व पुत्रकाम्या आदिकों का संग्रह सिद्धही है अलग सन्नादिकोंका ग्रहण किस लिये किया गया है ? तहां कहते हैं कि, गोबलीवर्दन्याय या ब्राह्मणवसिष्ठन्याय से प्राधान्यसूचनार्थ जानना चाहिये ॥ १ ॥

लिङ्गशेषविधि, ईदन्त—ऊदन्त—एकस्वर, भगसमेत प्राणिनाम.

लिङ्गशेषविधिर्व्यापी विशेषैर्यद्यबाधितः ।
स्त्रियामीदूद्विरामैकाच्सयोनिप्राणिनाम च ॥ २ ॥

सन् आदि—कृत्—तद्धित और समास से उत्पन्न विषय पूर्वोक्त शब्दों का अन्यलिङ्ग " शेषलिङ्ग " कहलाता है उसकी विधि उत्सर्ग होनेसे काण्डत्रय की व्यापक है । जो पूर्वोक्त और यहां की कही हुई विशेष विधियों से बाधित न होवे तभी व्यापक होती है । क्योंकि " अपवाद विषय को छोड़ कर उत्सर्ग सर्वत्र प्रवृत्त होता है " । इस कथन से लिङ्गविशेषविधि को जोकि उत्सर्गभूत का स्वर्ग आदि वर्ग अपवाद हैं उनमें प्रथम कहे हुए विशेषों को पुनरुक्त दोष व विस्तारकी भय से फिर यहां विधान नहीं किया जाता है । और यहां स्वर्गपर्याय पुंलिङ्ग कहेंगे उसका " द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम् " यह पूर्वोक्त अपवाद है । और नी प्रभृतियों को तो " कृतः कर्तरि " आदिकों से कहेंगे—यद्यपि पहले ' लिङ्ग ' कहा है तो भी अप्राप्त की प्रापणार्थकता के कारण यहां भी लिङ्गानुशासनही प्रधान है । "स्त्रियाम्" इसका अधिकार 'मसी' शब्द पर्यन्त जानना चाहिये । जिनके ईकार व ऊकार अवसानस्थ हैं वे और एकाच् ये दोनों स्त्रीलिङ्ग होते हैं । यानी—ईदन्त और ऊदन्त एकस्वर शब्दरूप स्त्रीलिङ्ग होते हैं । जैसे कि श्रीः=लक्ष्मी । धीः=बुद्धि । ह्रीः=लज्जा । भ्रूः=भौंह । स्रूः=यज्ञपात्र । द्रूः=सोना या राक्षस जूः=आकाशवाणी या पिशाची । लूः=काटना, भूः=होना । और " नयतीति नीः" लुनातीति लूः " आदिकों में " कृतः कर्तर्यसंज्ञायाम् " इसके बाध होनेसे वाच्यलिङ्गता होती है । और भगसमेत प्राणियों के नामभी स्त्रीलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि माता=मइया या जननी । दुहिता=पुत्री । याता=देवरानी या जेठानी । पौत्ता=पोती । ननान्दा=नन्द या ननँद । स्वसा=बहिन । स्त्री=औरत आदि जानना चाहिये । और दारशब्द में तो "दाराः पुंभूम्नि," यह बाधक पहले ही कह चुके हैं और 'कलत्रम्' शब्द में " कलत्रं श्रोणिभार्ययोः " यहां का क्लीब पाठही बाधक है । ऐसे ही अन्यत्र भी जानलेना चाहिये ॥ २ ॥

बिजली आदि. अदन्त शब्दों के साथ द्विगुसमास, पात्राद्यदन्त का निषेध.

नाम विद्युन्निशावल्लीवीणादिग्भूनदीह्रियाम् ।
अदन्तैर्द्विगुरेकार्थो न स पात्रयुगादिभिः ॥ ३ ॥

विद्युत् आदि ह्री शब्दपर्यन्त आठ शब्दों के जो नाम (संज्ञा) हैं वे स्त्रीलिङ्गमें होते हैं । जैसे कि विद्युत्=बिजली । तडित्=बिजली । रात्रिः=राति । रजनिः=राति । वल्ली=लता । वीरुत्=फैलीलता । वीणा=बीन । विपञ्ची=बीन । इत्यादिकों में ' ङ्याबन्तम् ' इससे सिद्ध ही था वीणा का ग्रहण करना चिन्तनीय है ।

कितेक आचार्य ' वीणा ' के स्थान में ' वाणी ' पढ़ते हैं । वाक्=वाणी । गौः=वाणी । गीः=वाणी । दिक्=दिशा । हरित्=दिशा । भूः=पृथ्वी । भूमिः=पृथ्वी । कुः=पृथ्वी । सरित्=नदी । त्रिस्रोता=तीन सोतोंवाली नदी । विपाट्=विपाशा नदी । ह्री का ग्रहण चिन्तनीय है । " इदूद्विरामैकाच् " इससे और 'त्रपा' आदिकों में ' ङ्याबूङन्तम् ' से सिद्ध होजाने के कारण कितेक आचार्य "धियाम् " ऐसा पढ़ते हैं । संवित्, चित, प्रतिपद्=बुद्धि । अदन्त उत्तर पदोंके साथ जो द्विगुसमास कि जिसका " द्विगुरेकवचनम् " से एकार्थ रहता है वह स्त्रीलिङ्ग होताहै । जैसे कि दशानां मूलानां समाहारो 'दशमूली' दशमूलों का समाहार दशमूली, तीनलोकों का समाहार त्रिलोकी, पांच अक्षरों का समाहार ' पञ्चाक्षरी ' कहलाता है । अदन्तः किम् । अदन्त क्यों कहा गया ? यदि न कहते तो ' पञ्चकुमारि ' व ' दशधेनु ' में होजाता । यदि एकार्थ न किया जाता तो ' पञ्चकपालः ' आदि में होजाता । और पात्रयुग आदि अदन्त शब्दों के साथ जो द्विगुसमास वह स्त्रीलिङ्ग नहीं होता है । जैसे कि पांचपात्रों के समाहार को पञ्चपात्रम्, चार युगों के समाहार को चतुर्युगम्, तीन भुवनों के समाहार को त्रिभुवनम् और तीनपुरों के समाहार को ' त्रिपुरम् ' कहते हैं । परन्तु भाष्य में ' त्रिपुरी ' ऐसाही देखा जाता है ॥ ३ ॥

भावाद्यर्थक, समूहार्थक, वैर मैथुनिकाद्यर्थक, स्त्रीभावाद्यर्थक.

तल् (वृन्दे) येनिकटयत्रा वैरमैथुनिकादिवुन् ।
(स्त्रीभावादाव)निक्तिण्णवुल्णच्ण्वुक्यञ्युजिञ्ङ्निशाः ४

भाव आदि अर्थ में विहित ' तल् ' प्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे कि शुक्लता=सफ़ेदी का होना । ग्रामता=गांवों का समूह । गोता=गौओं का समुदाय । ब्राह्मणता=ब्राह्मणपना । समूह अर्थ में " य–इनि–कटय–त्र " प्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे कि पाश्या=पाशों का समूह । खलिनी=खलों का समुदाय । शाकिनी=शाकों का समूह । रथकट्या=रथों का समुदाय । गोत्रा=गौओं का झुण्ड या लेहड़ । ' वृन्दे किम ' समूह अर्थ क्यों कहा ? यदि न कहते तो मुख्यः=प्रथम कल्प या प्रधान । दण्डी=दण्डवाला इनमें होजायगा। " द्वन्द्वाद्वुन्वैरमैथुनिकयोः " से ' वुन् ' व अकादेश करने पर अश्वमहिषिका=घोड़ा भैंसी का वैर । काकोलूकिका=कौआ–उल्लू का वैर । अत्रिभरद्वाजिका=अत्रि–भरद्वाज की मैथुनि का (विवाह संबन्ध) । एवं कुत्स व कुशिक का विवाहसंबन्ध । आदि शब्द से " पादशतस्य संख्यादेर्वीप्सायां वुन्लोपश्च " और " दण्डव्यवसर्गयोश्च " से ' वुन् ' का ग्रहण होता है । वीप्सा में जैसे कि ' द्विपदिकां ददाति ' दो २ पाद को देता है । द्विशतिकां ददाति दो २ सौ देता है । दो पाद दण्डित को ' द्विपदिका ' कहते हैं । द्विशतिकां ददाति=दोसौ देता है । ' वैरेत्यादिकिम् ' वैर आदि न करते तो " वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन् " से 'वुन्' करने पर वासुदेवकः=वासुदेवकी भक्ति रखनेवाला । यहां

होजाता । ' वुन् ' का ग्रहण ' वुञ् ' का ' उपलक्षण ' जतलानेवाला है । कहीं ' वु ' ऐसा भी पाठ है । " गोत्रचरणाच्छ्लाघात्याकारतदवेतेषु " से ' वुञ् ' करने पर गार्गिकया श्लाघते, गर्गगोत्रत्व से बड़ाई करता है । काठिकया विकत्थते= कठशाखाध्येतृत्व से प्रशंसा करता है । " द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च " से ' वुञ् ' करने पर शैष्योपाध्यायिका=शिष्य–उपाध्याय का होना । स्त्रीलिङ्ग के अधिकार होने पर कर्तृवर्जित कारक में जो ' अनि ' आदिप्रत्यय तदन्त स्त्रीलिङ्ग होते हैं । जैसे कि " आक्रोशे नञ्यनि: " से ' अनि ' करनें पर ' अकरणि: ' नहीं करना । अजीव- निस्ते शठ भूयान्=रे शठ ! तेरा जीना न हो । " स्त्रियां क्तिन् " से ' क्तिन् ' करने पर कृति:=करना । भूति:=होना । ' ण्वु ' इस करके ' ण्वुल् ' व ' ण्वुच् ' का सामान्य ग्रहण किया जाता है । " रोगाख्यायां ण्वुल् बहुलम् " से " ण्वुल् " करने पर प्रच्छर्दिका=बड़ा भारी वमनरोग, उलटी, कै या रद्द । प्रवाहिका=संग्रहणी रोग या दस्तों की बीमारी । " धात्वर्थनिर्देशे ण्वुल्वक्तव्य: " से ' ण्वुल् ' करने पर आसिका=आसन । शायिका=शयन । " पर्यायार्हर्णोत्पत्तिषु ण्वुच् " से ' ण्वुच् ' करने पर ' भवत: शायिका ' आपके शयन की पारी । " भवानिक्षुभक्षिकामर्हति " आप ईख खाने को योग्य हैं । " कर्मव्यतिहारे ' णच् ' स्त्रियाम् " से णच्, णजन्त से " णच: स्त्रियामञ् " से ' अञ् ' तदन्तसे ङीप् करने पर व्यावक्रोशी=परस्पर बुराई करना । व्यावहासी=परस्पर हँसी करना । व्यात्युक्षी=परस्पर पानी फेकना या छिड़कना । " व्रजयजोर्भावे " से ' क्यप् ' करने पर व्रज्या=चलना या जाना । इज्या= पूजना । " संज्ञायां समजनिषद्– " से ' क्यप् ' करने पर समज्या=सभा । निषद्या= बाज़ार । विद्या=शास्त्र का ज्ञान, इल्म, चौदह विद्या प्रसिद्ध हैं (चार वेद और छ: वेदों के अङ्ग, पुराण, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र) देवी का मन्त्र और दुर्गा । ' स्त्री भावादौ किम् ' स्त्रीभावादि क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो " वद:सुपि क्यप् च " से ' क्यप् ' करने पर ब्रह्मोद्यम्=ब्रह्म का कहना । " भुवो भावे " से ' क्यप् ' करने पर ब्रह्मभूयम्=ब्रह्म का होना । यहां होजायगा । " ण्यासश्रन्थो युच् " से ' युच् ' करने पर कारणा=तीव्रवेदना । कामना=चाहना । " विभाषाख्यानपरिप्र- श्नयोरिञ् च " से ' इञ् ' करने पर " कां त्वं कारिं गणिं वा ऽकार्षी: " तुमने किस क्रिया या गणना को किया ? ' सर्वां कारिं गणिं वा ऽकार्षम् ' मैंने सारी क्रिया वा गणना को किया । ' इञ् ' यह " इण्–इक् " का उपलक्षण है । " इणजादिभ्य: " से ' इण् ' करने पर आजनमाजि[1]:=संग्राम या लड़ाई । " इकृ- ष्यादिभ्य: " से ' इक् ' करने पर कर्षणं, कृषि:=खेती । " षिद्भिदादिभ्योऽङ् " से ' अङ् ' करमे पर पचा=पकाना । त्रपा=लजाना । भिदा=तोड़ना या फाड़ना । छिदा=छेदना या काटना । " अ प्रत्ययात् " से ' अ ' प्रत्यय करने पर चिकीर्षा=

१—" तिष्ठाम्याजौ स्थिरोभव " (इति मार्कण्डेय:) ॥

करने की चाहना । पुत्रीया=पुत्रकी अभिलाषा । " गुरोश्च हलः " से ' अ ' प्रत्यय करने पर ईहा=चेष्टा या उपाय । ऊहा=तर्क, वितर्क या दलील । " ग्लाम्ला-ज्याहाभ्यो निः " से ' नि ' करने पर ग्लानिः=हर्षक्षय । म्लानिः=मलिनता । ज्यानिः=जियान या नुक़सान । हानिः=घटी या टोटा । " कृञः शच " से ' श ' करने पर क्रिया=काम, काज, व्यवहार, क्रियाकर्म, धर्मसम्बन्धी काम आदि । एवं इच्छा=चाहना ॥ ४ ॥

औणादिकन्यन्त, ऊदन्त, ईदन्त, ङ्यन्त, आबन्त, चल, स्थिर, जिस खेल में मार पीट हो वहां ण प्रत्यय का होना.

उणादिषु निरूरीश्च ङ्याबूङन्तं चलं स्थिरम् ।
(तत्क्रीडायां प्रहरणं) चेन्मौष्टा पाल्लवा "ण दिक्" ॥ ५ ॥

उणादिकों में नि प्रत्ययान्त, ऊ प्रत्ययान्त, और ई प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि, "वीज्याज्वरिभ्योनिः" से नि, प्रत्यय करने पर वेणिः या प्रवेणिः= बालों का गूंथना । ज्यानिः=जियान । जूर्णिः=ज्वररोग । " सृवृषिभ्यां कित् " से कित् होने पर सृणिः=अङ्कुश । " वह्निश्रिश्रुयुद्रुग्लाहात्वरिभ्योनित् " से नि प्रत्यय करने पर श्रेणिः=पङ्क्तिः । श्रोणिः=कमर । द्रोणिः=डोंगी । ' अनिरिति पाठान्तरम् ' । ' अनि ' यह पाठान्तर है । " अर्तिसृधृधम्यश्यवितृभ्योऽनिः " से 'अनि' प्रत्यय करने पर धरणिः=पृथ्वी । धमनिः=नाडी । सरणिः=मार्ग-राह या डगर । " कृषिचमितनिधनिसर्जिखर्जिभ्यऊः" । से ऊ प्रत्यय करने पर कर्षूः=जीविका, छोटी नदी, (नहर) या नदीमात्र । चमूः=सेना या फ़ौज । " अवितृस्तृतन्त्रिभ्य ईः " से ' ई ' प्रत्यय करने पर ' अवीः=रजोवती नारी । तरीः=नौका । स्तरीः=धुआं । तन्त्रीः=वीणा आदिकों की तांति । " ङ्याबूङन्तम् " ङ्यन्त, आबन्त और ऊङन्त स्त्रीलिङ्ग होते हैं । कदली=मृगभेद, केला या वैजयन्ती । कन्दली=गंभीरध्वनि, मृगभेद, सेनाभेद । रमा=लक्ष्मी । गङ्गा=देवनदी । वामोरूः[1]=मनोहर जांघोंवाली । करभोरूः[2] । चढ़ा, उतार गोल सुन्दर जांघोंवाली । जंगम और स्थावर स्त्रीलिङ्ग में होते हैं । जंगम में जैसे नारी=औरत, अबला, वनिता । शिवा=गौरी या सियारी आदि । ब्रह्मवधूः=ब्रह्माणी । स्थावर में नाड़ी=धमनी, शिरा, नब्ज, नस । खट्वा=खाट, पलंग या चारपाई । अलाबूः=लौकी या तोंबी । चर स्थिर का ग्रहण करना चिन्तनीय है । क्योंकि अन्य व्यवच्छेद्य का अभाव है । वह प्रहार यदि खेल में हो तो 'मौष्टा' व ' पाल्लवा ' होता है । " तदस्यां प्रहरणमिति क्रीडायां णः " से 'ण' प्रत्यय

१ वामौ सुन्दरावूरू यस्याः सा वामोरूः । २ " मणिबन्धादाकनिष्ठं करस्य करभो बहिः " करभाविवोरू यस्याः सा करभोरूः ॥

करने पर जिस क्रीड़ा में मूठी से मारना होता है उसे ' मौष्टा ' कहते हैं व जिस खेल में हाथ या पत्तों से मारना होता है उसे ' पाल्लवा ' कहते हैं । यह ' ण ' प्रत्यय का उदाहरण है परिगणन नहीं है । उसीसे जिस क्रीडा में मूसल से मारना होता है उसे ' मौसला ' और जिस क्रीड़ा में दण्ड से प्रहार किया जाता है उसे ' दाण्डा ' कहते हैं ॥ ५ ॥

घञन्त से ञ प्रत्ययका होना, फगुई, शिकार, स्वधा.

घञो ञः सा क्रियास्यां चेद्दाण्डपाता हि फाल्गुनी ।
श्यैनंपाता च मृगया तैलंपाता स्वधे (ति दिक्) ॥ ६ ॥

यदि वह घञन्तपद वाच्य दण्डपात आदि क्रिया इस फाल्गुनी के अर्थ में बर्तती हो तो घञन्त से ' ञ ' प्रत्यय होता है तदन्त स्त्रीलिङ्ग होते हैं । " घञः सास्यां क्रियेति ञः " से ' ञ ' करने पर ' दण्डपातोऽस्यां फाल्गुन्यां वर्तते ' दाण्डपाता फाल्गुनी । जिस देश में फाल्गुनमास पूर्णिमा को दण्ड या लट्ठ से पात होता है उसको ' दाण्डपाता ' फाल्गुनी कहते हैं । एवं जिस क्रिया में बाज का गिरना होता है उसे ' श्यैनंपाता ' कहते हैं—यह मृगया=शिकार का नाम है । जिस में तिलों का ' पात '=(गेरना) होता है वह तैलंपाता, कहलाती है । यह स्वधा का नाम है । " पितृदाने स्वधा मता " पितरों के दान में स्वधा शब्द माना गया है। यह अमरमाला का मत है । परन्तु वररुचिने " स्वधा क्रिया प्रवेशणी " से स्त्रीलिङ्गता कही है । यह उदाहरण है । ' श्येनतिलस्य किम् ' श्येन, तिल का ग्रहण क्यों किया गया ? यदि न करोगे तो जिस तिथि में ' दण्डपात ' होता है वह ' दाण्ड-पाता ' और जिस भूमि में मूसलपात होता है उसे ' मौसलपाता ' कहते हैं । यहां होजावेगा ॥ ६ ॥

अल्पत्व विवक्षा में मृणाली आदि, लङ्का, निर्गुण्डी या नेवारी, निरन्तरव्याख्या, धवई, निश्शेष पदव्याख्या, अरहर या तोरई.

(स्त्री स्या) त्काचिन्मृणाल्यादि (र्विवक्षापचये यदि) ।
लङ्का शेफालिका टीका धातकी पञ्जिकाऽऽढकी ॥ ७ ॥

यदि अल्पार्थ में कहने की इच्छा हो तो ' मृणाली ' आदि कितेक शब्द स्त्री लिङ्ग में होते हैं । जैसे कि अल्पं मृणालम्=थोड़े से मृणाल को 'मृणाली' कहते हैं। यह भसीड़े का नाम है । आदि शब्द से कुम्भी=पुरइनि या जलपर्णी । प्रणाली= पनारी या पनारा । मुशली=तालमूलिका या गृहगोधिका । छत्री=छोटीसी छतुरी । पटी=कपड़ा या दुपटी । मठी=झोपड़ी या कुटी । ' काचिदिति किम् ' काचित् ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो ' अल्पो वृक्षः, वृक्षकः ' यहां हो जावेगा ।

'ङ्याबूङन्तम्' इससे सिद्धही था लङ्कादिकों का पाठ नामानुशासनार्थ जानना चाहिये। 'भङ्गि' आदिकों का पाठ दोनों के शासनार्थ है और 'शेफालिका' आदिकों का पाठ व्यर्थ किया गया है। क्योंकि अपने नामों में पढ़चुके हैं। लङ्का=राक्षसपुरी, शाखा, शाकिनी और कुलटा। शेफालिका=काले फूल की नेवारी। टीका=निरन्तर व्याख्या या कठिनपदों की व्याख्या, टिप्पणी, विवरण, शरह या गूढ अभिप्राय को भलीभाँति समझाना। धातकी=धवई का फूल या आँवला। पञ्जिका=निःशेष पदकी व्याख्या। या पञ्चिका=रोज़नामचा। आढ़की=अरहर या तोरई में स्त्रीलिङ्ग और परिमाणान्तर में त्रिलिङ्ग भी होता है॥ ७॥

सीध, मैना, हिचकी, बनमक्खी, लूका, चींटी, तेंदुआ, किनका भर, टेढ़ाई, सुरंग, सूजी, पत्ते का सिरा.

सिध्रका सारिका हिक्का प्राचिकोल्का पिपीलिका।
तिन्दुकी कणिका भङ्गिः सुरङ्गासूचिमाढयः॥ ८॥

सिध्रका=सीधनामक वृक्षभेद। सारिका या शारिका पक्षिभेद या मैना। हिक्का स्वरभेद या हिचकी। प्राचिका या पाचिका वनमक्खी या पक्षिभेद। उल्का=तेज का समुदाय या लूका आग या तारा जो आकाश से गिरता है। पिपीलिका=कीटभेद चींटी या चींटा। स्वामी के मत में "शनैर्याति पिपीलकः" इस उदाहरण से पुंलिङ्ग भी है। तिन्दुकी=वृक्षभेद या 'तेंदुआ' इस नाम से प्रख्यात द्रुमविशेष। कणिका=अत्यन्त सूक्ष्म या परमाणु। भङ्गिः=कुटिलता का भेद या टेढ़ाई। सुरङ्गा=बिल या सुरंग। सूचिः=सूजी या व्यधनी, शिखा या नाचका भेद। माढिः=पत्ते का सिरा या दीनता का प्रकाश करना॥ ८॥

सेमर या भात आदि का मांड़, वितण्डावाद, कौड़ी, सौ कौड़ी, साड़ी या कसौटी, कछुई, झरना, दान, कथरी, कुर्सी, तोंदी, कचहरी.

पिच्छा वितण्डा काकिण्यश्चूर्णिः शाणी द्रुणी दरत्।
सातिः कन्था तथासन्दी नाभी राजसभापि च॥ ९॥

पिच्छा=सेमर का गोंद या भात आदिकों का माँड़। वितण्डा=वादभेद। काकिणी या काकिनी=पण का चौथा भाग या कौड़ी या छदाम, कभी दो दमड़ी। "चूर्णिः=कपर्दकशतम्" सौकौड़ी। शाणी=सनका बिना कपड़ा, या कसौटी। द्रुणी=कर्णजलौका या कछुई। दरत्=म्लेच्छजाति, झरना, भय, पर्वत। सातिः=दान या अवसान। कन्था=कथरी या मिट्टी की भीति, गुदड़ी या कमरी। आसन्दी=आस-

नभेद, बेतका आसन या कुर्सी। नाभिः=मुख्य राजा, पहिया का मध्य भाग, क्षत्रिय, नाभी, तोंदी या ढोंढ़ी, कस्तूरी का मद। राजसभा=राजा का दरबार या कचहरी इस प्रसिद्ध का नाम है ॥ ९ ॥

झालरि, गीत-भेद, गगरी, होराशास्त्र, गौरैया चिड़िया, मत्स्य विकार, लाह, लीख, कुल्ला, वातरोग, चौंसी, रोशनाई.

झल्लरी चर्चरी पारी होरा लट्वा (च) सिध्मला ।

लाक्षा लिक्षा (च) गण्डूषा गृध्रसी चमसी मसी ॥ १० ॥

इति स्त्रीलिङ्गशेषः ॥

' झल्लरी ' या ' झिल्लरी ' ये दोनों वाद्यभेद—हुडुक या बालचक्र के नाम हैं, या झालरि, खंजड़ी वा डफली को कहते हैं। चर्चरी=गीतभेद, केशभेद या हाथ का शब्द। पारी=ककड़ी, गगरी (छोटा घड़ा) पूरा या हाथी के पैरकी रस्सी। होरा=लग्न, राशिका आधा भाग, रेखा या होराशास्त्र। लट्वा=कञ्जा का भेद, फल या गौरैयाचिड़िया। सिध्मला=मत्स्यविकार में स्त्रीलिङ्ग और सेहुआंरोगवाले में त्रिलिङ्ग है। लाक्षा=लाख वा लाह। लिक्षा=यूकाण्ड या लीख। गण्डूषा=ऊंची-तोंदी या ढोंढ़ी या जलादिकों से मुख का पूर्ण करना यानी ' कुल्ला ' इस प्रसिद्ध का नाम है। गृध्रसी=वातरोग भेद जो कि ऊरुओं की संधि में होता है। चमसी=यज्ञपात्र भेद या उड़द के आटे की चौंसी। मसी या मसिः=स्याही या काली रोशनाई। परन्तु हैमकोष के प्रमाण से मूर्धन्योपधमी है। जैसे कि " मलिनाम्बु मषी मसी " मैले जल को ' मषी ' या ' मसी ' कहते हैं ॥ १० ॥

इति स्त्रीलिङ्गशेषविवरणम् ॥

अथ पुंलिङ्गसंग्रहो व्याख्यायते ॥

सभेद-सानुचर-सपर्याय, देव और दैत्य, स्वर्ग, याग, पर्वत, मेघ, समुद्र, वृक्ष, समय, तरवार, बाण, वैरी.

पुंस्त्वे सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः ।

स्वर्गयागाद्रिमेघाब्धिद्रुकालासिशरारयः ॥ ११ ॥

" अब पुंलिङ्ग संग्रह का व्याख्यान करते हैं " कि, ' पुंस्त्वे ' इसका अधिकार ' पतद्ग्रह ' पर्यन्त जानना चाहिये। भेद—अनुचर और पर्याय समेत वर्तमान देव

१—" मषीवर्णमभूत्तदा " (इति मार्कण्डेयः) ॥

और दैत्य शब्द पुंलिङ्ग में होते है । जैसे कि अमराः, निर्जराः, देवाः—ये देवताओं के नाम हैं । उनके भेद जैसे कि तुषिताः, साध्याः, आभास्वराः, इन्द्रः, शक्रः, सूर्यः आदित्यः ' आदि होते हैं । देवताओं के अनुचर जैसे कि " हाहाः, हूहूः, तुम्बुरुः, नारदः, मातलिः " आदि होते हैं । असुरपर्याय जैसे कि, ' दैत्याः, दैतेयाः, दानवाः ' ये दैत्यों के नाम हैं । उनके भेद जैसे कि बलिः, नमुचिः, जम्भः आदि होते हैं । दैत्यों के अनुचर जैसे कि कूष्माण्डः, मुण्डः, कुम्भाण्डः आदि कहलाते हैं । इनका दैवतानि, देवता आदि बाधक हैं । भेद व पर्याय समेत उन्नीस स्वर्ग आदि शब्द पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि, स्वर्गः, नाकः, त्रिदिवः ये स्वर्ग के नाम हैं । इनका " द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम् " यह विशेषों से बाध है । 'यज्ञः, मखः, क्रतुः ' ये यज्ञ के नाम हैं । उनके भेद—जैसे कि, उक्थः, अतिरात्रः, अग्निष्टोमः, अश्वमेध आदि होते हैं । ' अद्रिः, गिरिः, पर्वतः—ये पर्वत के नाम हैं । इनके भेद—जैसे कि, मेरुः, हिमवान्, सह्य आदि होते हैं । इनका ' गन्धमादनम् ' यह बाध है । मेघः, घनः, जलदः—ये मेघके नाम हैं । उनके भेद—जैसे कि, पुष्करः, आवर्तकः आदि होते हैं । इनका ' अभ्रम् ' यह बाध है । अब्धिः, समुद्रः, सागरः ये सागर के नाम हैं । इनके भेद जैसे कि, क्षीरोदः, लवणोदः, सुरोदः आदि कहलाते हैं । ' द्रुः, वृक्षः, शाखी ' ये वृक्ष के नाम हैं । उनके भेद—जैसे कि लक्षः=पाकर, वटः=बरगद, आम्रः=आम इनका शिंशपा व पाटला आदि में बाध है । ' कालः, दिष्टः, समयः ' ये समय के नाम हैं । इनके भेद—जैसे कि, मासः=महीना । पक्षः=पखवारा । ऋतुः=वसन्त आदि छः ऋतुवें होती हैं । इनका ' दिनतिथ्यादौ ' यह बाधक है । असिः, खड्गः, मण्डलाग्रः—ये तलवार के नाम हैं । इनके भेद—जैसे कि नन्दकः, चन्द्रहासः आदि होते हैं । इनका 'कटित्र' आदि में बाध है । शरः, बाणः, विशिखः—ये बाण के नाम हैं । उनके भेद—जैसे कि, नाराचः, काण्डः, भल्ल आदि होते हैं । इनका ' इषुर्द्वयोः ' यह बाध है । अरिः, शत्रुः, अरातिः ये वैरी या दुश्मन के नाम हैं । उनके भेद 'आततायी' आदि होते हैं ॥ ११ ॥

हाथ, गाल आदि **करगण्डौष्ठदोर्दन्तकण्ठकेशनखस्तनाः ।**
अहाहान्त, विष भेद, रात्रान्त. **अह्नाहान्ताः क्ष्वेडभेदा रात्रान्ताः प्रागसंख्यकाः ॥ १२ ॥**

करः=राजभागभाग यानी महसूल, मालगुज़ारी, किरण या हाथ को कहते हैं । इनमें मरीचि आदिकों का बाध है । गण्डः, कपोलः=गाल । ओष्ठः, दन्तच्छदः, अधरः=ओठ या होठ । दोः, प्रवेष्टः=भुजा या बाँह । भुजा आदि का ' द्वयोः ' यह बाध है । दन्तः, दशनः, रदः=दाँत । इसका भेद ' जम्भः ' है । कण्ठः, गलः=कण्ठ या गला । समीप—गल व शब्द इनमें पण्डितलोग ' कण्ठ ' को त्रिलिङ्ग कहते हैं । केशः, कचः=बार या बाल । नखः, पुनर्भवः=नख या नाखून । इसका

" नखरोऽस्त्रियाम् " यह बाध है । स्तनः, कुचः, पयोधरः=चूची, दूध, छाती या पयोधर। जिनके अन्त में 'अह्न' और 'अह'–हों वे पुंलिङ्ग में होते हैं। यह परवल्लिङ्गता का अपवाद है । जैसे कि ' अह्नः पूर्वम्, पूर्वाह्णः। दिन के पूर्व भागको ' पूर्वाह्णः ' व अपरभाग को ' अपराह्णः ' कहते हैं । दो दिनों के समाहार को ' द्व्यहः ' और तीन दिनों के समाहार को ' त्र्यहः ' कहते हैं । यहां " सनपुंसकम् " इसका अपवाद है । क्ष्वेडः=विषको कहते हैं । उसके भेद–पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि, सौराष्ट्रिकः, शौल्किकेयः, ब्रह्मपुत्र आदि कहलाते हैं । जिनके अन्तरात्र हो व जिनके पूर्वपद संख्या न हो वे शब्द पुंलिङ्ग में होते हैं । यह परवल्लिङ्गता का अपवाद है, और परत्व से समाहार नपुंसकता को भी बाधता है । उसीसे अहोरात्रः=दिन–रात सर्वरात्रः=सारीरात । पूर्वरात्रः=रातिका पूर्वभाग । 'प्रागसंख्यकाः ' यह क्यों किया ? यदि न करोगे तो ' पञ्चरात्रम् ' व ' गणारात्रम् ' इनमें दोष आवेगा इस लिये किया गया है ॥ १२ ॥

गोंद आदि, विशेष धूप आदि, कसेरू आदि.

श्रीवेष्टाद्याश्च निर्यासा असन्नन्ता " अबाधिताः " ।
कशेरुजतुवस्तूनि (हित्वा) तुरुविरामकाः ॥ १३ ॥

श्रीवेष्ट आदि जो निर्यास यानी वृक्षद्रव–गोंद या सार हैं वे पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि, श्रीवेष्टः, सरलद्रवः=विशेषधूप । कहीं 'श्रीपिष्टः' ऐसा भी पाठ है । आद्य-शब्द से श्रीवासः=विशेषधूप । वृकधूपः=बनाई धूप । गुग्गुलुः=गूगलधूप । सिह्लकः= लोबानकी धूप । आदि शब्द पुंलिङ्ग में जानना चाहिये । यदि असन्त और अन्नन्त शब्द अबाधित हों तो पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि अङ्गिराः=एक ऋषि का नाम है । वेधाः=ब्रह्मा । चन्द्रमाः=चांद । अन्नन्त जैसे कि कृष्णवर्त्मा=आगी । प्रतिदिवा=दिवस या दिन । मघवा=इन्द्र या धनाढ्य । "अबाधिताः किम्" अबाधित क्यों कहा? यदि न कहोगे तो ' अप्सरसः '=अप्सरायें । जलौकसः=जोंक । सुमनसः=मालती या चमेली यहां होजावेगा । लोम=रोम या रूंगटे । साम=सामवेद या मिलाप । वर्म=कवच या बख्तर । कशेरु=कशेरुवा या अस्थिविशेष । जतु=लाख या लाह । वस्तु=पदार्थ या चीज़ । इन्हों को छोड़कर जिनके अन्त में " तु–रु " ये रहते हैं वे पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि, हेतुः=कारण । सेतुः=पुल, बांध या बन्ध । धातुः=मनुष्य के शरीर का सार अंश जैसे कि (वात–पित्त–कफ) बीज या वीर्य, सोना, रूपा, चाँदी, तांबा आदि खानि से निकली हुई चीज़ या क्रिया । कुरुः=दिल्ली के एक पुराने राजा का नाम । मेरुः=सुमेरुपर्वत । त्सरुः=तलवार आदि की मूठ । ' कशेरु जतुवस्तूनि हित्वा ' यह व्यर्थ किया गया है क्योंकि ' अबाधिताः ' इसके अन्वय का संभव है । वास्तव में ' अबाधिताः ' ये भी व्यर्थ है । क्योंकि ' विशेषैर्यद-बाधितः ' इससेही निर्वाह होजावेगा । इस लिये दारु=काठ । अश्रु=आंसू आदिकों

में निर्वाह जानना चाहिये ऐसा सुधा आदि व्याख्याकारों ने कहा है ॥ १३ ॥

कषणभमरोपध, पथनयसटोपध, गोत्र व वेदशाखा के नाम.

कषणभमरोपान्ता (यद्यदन्ता अमी अथ) ।
पथनयसटोपान्ता गोत्राख्याश्चरणाह्वयाः ॥ १४ ॥

क–ष–ण–भ–म–र– ये छः वर्ण जिनके उपान्त्य में हों यानी उपधा में रहते हों और यदि ये अकारान्त हों तो पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि, अङ्कः=आंक, चिह्न, संख्या, संकेत, नम्बर या गोद । अर्कः=सूर्य या मदार । लोकः=भुवन या लोग । शोकः=शोक या शोच । षान्त जैसे कि माषः=उड़द या माशा । तुषः=भूसी, छिलका या चोकरा । तोषः=संतोष, हर्ष, आनन्द । पोषः=पालन, पोषण । रोषः= क्रोध, कोप, गुस्सा । णान्त जैसे कि, पाषाणः=पत्थर । शाणः=शाणयन्त्र जिस पर हथियार पैने किये जाते हैं । गुणः=स्वभाव, विशेषण, हुनर, चतुराई, प्रवीणता, विद्या, रस्सी, डोरी, सत्त्व–रज–तम तीन गुण, कृपा–मेहरबानी, भला, भलाई या गुना हुआ । घुणः=एक कीड़ा जो कि लकड़ी या अनाज को खाकर थोथा कर देता है । भान्त जैसे कि, दर्भः=कुश या डाभ । सरभः=लड़ीसरा या वानरविशेष । गर्दभः=गधा । मान्त जैसे कि, सोमः=सोमरस या चन्द्रमा । होमः=हवन या आगी में साकल्यडालना । ग्रामः=गांव, बस्ती, खेड़ा, पुरा, समूह । धूमः=धुआं, भाफ़ । रान्त जैसे कि, झर्झरः=झांझ । शीकरः=जलकण । सीरः=हल । समीरः=पवन या हवा । प–थ–न–य–स–ट ये वर्ण जिनकी उपधा में वर्तते हों और यदि ये अबाधित हों तो पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि कूपः=कुआं, इन्दारा । यूपः=यज्ञाङ्ग-भेद या यज्ञपशु बाँधने का काष्ठविशेष । सूपः=दाल या पहिती । कलापः=अलंकारमात्र, मोरशिखा, तरकश या समुदाय । नाथः=स्वामी, मालिक, पति, धनी या योगियों की पदवी । सार्थः=जन्तुसमूह । शपथः=सौगन्द । नान्त जैसे कि, अपघनः=अङ्गावयव, इनः=स्वामी । जनः=लोग । अपनयः=दुर्नीति । विनयः=बिनती या शिष्टाचार । प्रणयः=प्यार या प्यार से मांगना । रसः=शृङ्गार, वीर, करुणा आदि नवरस, मधुरादि छः रस, गरल, प्रीति, अर्क, वेग, पारा । हासः=हँसना । पनसः=कटहल । करटः=कौआ या हाथी का गाल । पटः=कपड़ा, पल्ला, पड़दा या आड़ । सरटः=गिरगिट । ये शब्द पुंलिङ्ग में होते हैं । यहां पर मुकुट के मत में 'अदन्ताः' यह सम्बन्ध नहीं करता है क्योंकि आदि में अथ का प्रयोग किया गया है उसीसे गोमायुः=शृगाल या सियार । जायुः=औषध । वायुः=पवन । पायुः=गुदा आदि शब्द पुंलिङ्ग में होते हैं । जिनकी वंश में संज्ञा है वे गोत्राख्य ऋषिसंज्ञक कहलाते हैं । गोत्र के आदि पुरुष जो कि प्रवराध्याय में पढ़े गये हैं और जो अन्य अपत्य प्रत्यय के विना गोत्रवाचित्व से लोक में प्रसिद्ध हैं वे पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि, गौतमः, भरद्वाजः, अत्रिः, वसिष्ठः, कश्यपः और वत्स आदि पुँल्लिङ्ग में होते हैं ।

जैसे कि " गोत्रमस्माकं भरद्वाजः " हमारा गोत्र भरद्वाज है । वेदशाखा की नामवाली संज्ञा पुलिङ्ग में होती हैं । जैसे कि कठः, कलापः, बह्वृचः-आदि पुंलिङ्ग हैं ॥ १४ ॥

घञ् आदि, **नाम्न्यकर्तरि भावे (च) घञजबनङ्णघाथुचः ।**

ल्युआदि. **ल्युःकर्तरीमनिज्भावे कोघोःकिः(प्रादितोऽन्यतः) ॥१५॥**

घञ्—अच्—अप्—नङ्—ण—घ—अथुच् ये सात प्रत्यय जो कि संज्ञाविषय, कर्तृवर्जित कारक और भाव में विहित हैं तदन्त शब्द पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि प्रसीदन्त्यस्मिन्मनांसि, इस विग्रह में " हलश्च " से अधिकरण में ' घञ् ' करने पर प्रासादः=देवता व राजाओं का मन्दिर । प्रास्यते, यहां कर्म में 'घञ्' करने पर प्रासः=सांग । ' विदन्त्यनेन ' यहां करण में ' घञ् ' करने पर वेदः=आम्नाय हिन्दुओं की पवित्र पुस्तक, ऋग्वेद—यजुर्वेद—साम और अथर्ववेद, और इतिहास व पुराणों को पांचवां वेद भी कहते हैं । प्रपतन्त्यस्मात्, यहां अपादान में ' घञ् ' करने पर प्रपातः=बीहड़ या पहाड़ से जल गिरने का स्थान । भाव में जैसे कि, पाकः=पकाना । त्यागः=छोड़ना या दानदेना । चकार से " पदरुजविशस्पृशो-घञ् " से ' घञ् ' करने पर पद्यतेऽसौ पादः=पैर या चौथा भाग । रुजतीति रोगः=व्याधि या बीमारी । दायः=देना या देनेवाला, धायः=धारना या धारने वाला आदि शब्द संज्ञा में विहित भी ग्रहण किये जाते हैं । " एरच् " से ' अच् ' करने पर चयः=खांवां, चुनना या ढेर करना । जयः=जीतना । "ऋदोरप्" से ' अप् ' करने पर करः=पोत या लगान, किरण या हाथ । गरः=गला । लवः=काटना, लेश, कालभेद या रामात्मज । स्तवः=स्तुति, बड़ाई, या तारीफ़ करना । इज्यतेऽनेनात्रेतिवा इस विग्रह में " यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षोनङ् " से ' नङ् ' करने पर यज्ञः=याग, आत्मा, नारायण और अग्नि को कहते हैं । यत्नः=उपाय या तदबीर । ' नङ् ' यह उपलक्षण है उसीसे " स्वपोनन् " से क्रिया नन्, भी ग्रहण किया जाता है अथवा " स्वप्नः संवेश इत्यपि " इस मूलसे भी पुंलिङ्ग की सिद्धि जाननी चाहिये । " नौणच " से ' ण ' करने पर न्यदनं, न्यादः=आहार या जीमना । " पुंसि संज्ञायां घः—" से ' घ ' करने पर उरच्छदः=कवच या बख़्तर । प्रच्छदः=पट या ओहार । " ट्वितोऽथुच् " से 'अथुच्' करने पर श्वयथुः=शोथ या सूजना । वेपथुः=काँपना या हिलना " नन्दिग्रहिपचादिभ्यः " से कर्ता अर्थ में नन्द्यादिकों से विहित ' ल्यु ' प्रत्यय पुंलिङ्ग में होता है, जैसे कि नन्दयतीति, नन्दनः=सुखदायक, आनन्द देनेवाला, बेटा या इन्द्र का बागीचा । रमते इति रमणः=रमनेवाला । मधुसूदनः=मधुनामक दैत्य का मारनेवाला । यह संज्ञा में है और असंज्ञा में " कृतः कर्तर्य संज्ञायाम " इससेही सिद्ध है । भाव में ' इमनिच् ' तदन्त शब्द पुंलिङ्ग में होते हैं ।

जैसे कि 'पृथोर्भावः' इस विग्रह में "पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा" इसमें 'इमनिच्' प्रत्यय करने पर प्रथिमा=विस्तार का होना । मृदोर्भावो, म्रदिमा=कोमलका होना । भाव में 'क' प्रत्यय तदन्त पुंलिङ्ग होते हैं । जैसे कि "सुपिस्थः" इस योगविभाग से भाव में 'क' प्रत्यय अथवा "घञर्थे कः" से 'क' करने पर आखूना-मुत्थानमाखूत्थः=मूसों का उठना या प्रकट होना । प्रस्थानम्, प्रस्थः=चल-ना या युद्धके लिये कूच करना, विस्तार, आधसेर, सेर या दोसेर का नाम है । उप-सर्ग और अन्यसुबन्त से परे जो घुसंज्ञक धातु उससे विहित जो 'कि' प्रत्यय तदन्त शब्द पुंलिङ्ग में होते हैं । "दाप्–दैप्" के विना दारूप व धारूप भी धातु घुसंज्ञक हैं" । जैसे कि "उपसर्गे घोः किः" से 'कि' प्रत्यय करने पर निवरां धीयतेऽनेन निधिः=सामान्यनिधि, कुबेर का भंडार या ख़ज़ाना । परिधीयतेऽनेन परिधिः=घेरा या सूर्य-चांद का मण्डल । आदीयते गृह्यतेऽर्थोऽनेनेत्यादिः=पहला, प्रथम, आरम्भ, मूल । विधानम्, विधीयतेऽनेनेति वा विधिः=विधान–ब्रह्मा, भाग या दैवज्ञ । उदका-नि धीयन्तेऽस्मिन्निति, इस विग्रह में "कर्मण्यधिकरणे च" से 'कि' करने पर उदधिः= समुद्र । जलानि धीयन्तेऽस्मिन्निति जलधिः=सागर । यहां पर 'प्रादितोऽन्यतः' यह व्यर्थ है क्योंकि 'घोः किः' इससे ही इष्ट की सिद्धि होजावेगी तो भी स्पष्टार्थ किया गया है ॥ १५ ॥

घोड़ा-घोड़ी, सूर्यकान्त, इन्दुकान्त, लोहकान्त आदि.

द्वन्द्वेऽश्ववडवावश्ववडवानसमाहृते ।
कान्तः सूर्येन्दुपर्यायपूर्वोऽयः पूर्वकोऽपि च ॥ १६ ॥

समाहार से अन्यत्र द्वन्द्वसमास में 'अश्ववडवौ' यह पुंलिङ्ग में होताहै । जैसे कि, अश्वश्च वडवा च 'अश्ववडवौ' यहां "पूर्ववदश्ववडवौ" इस शास्त्र से पूर्वपदस्थ पुंलिङ्ग हुआ । यह परवल्लिङ्गता का अपवाद है । द्विवचन अतन्त्र है यानी कहने को इष्ट नहीं है । उसीसे "अश्वाश्च वडवाश्च अश्ववडवाः, अश्ववडवान्, अश्ववडवैः" आदि प्रयोग साधु होते हैं । 'असमाहृते किम्' असमा-हार क्यों किया ? यदि न करोगे तो 'अश्वाश्च वडवाश्चैषां समाहारः' अश्ववड-वम्–यहां "विभाषा वृक्षमृगतृणधान्यव्यञ्जनपशुशकुन्यश्ववडवपूर्वापराधरोत्तराणाम्" से जो नपुंसकत्व व एकवचनान्त होता है वह न होगा इसलिये किया है । सूर्य-चन्द्र के पर्यायपूर्वक कान्तशब्द पुंलिङ्ग है । जैसे कि, सूर्यकान्तः, अर्ककान्तः, इन्दु-कान्तः, चन्द्रकान्तः, सोमकान्तः आदि होते हैं । अयोवाचक यानी लोहवाचक पूर्व-कभी कान्त शब्द पुंलिङ्ग है । जैसे कि अयस्कान्तः, लोहकान्तः, पिण्डकान्त आदि पुंलिङ्ग में होते हैं ॥ १६ ॥

बरा आदि, **वटकश्चानुवाकश्च रल्लकश्चकुडङ्गकः ।**

फोंक आदि. **पुङ्खोन्यङ्कः समुद्गश्च विटपट्टघटाः खटः ॥ १७ ॥**

वटकः=उड़द की पीठी का विकार यानी बरा का नाम है । अनुवाकः=वेद का अवयव या भाग या ऋग्यजुर्वेद का समुदाय । रल्लकः=कम्बल या पक्ष्मकम्बल या कमरा इस प्रसिद्ध का नाम है । कुडङ्गकः, कुटङ्गकः, कुटुङ्गकः=छावना या वृक्षलता का समूह या घर । पुङ्खः=बाण का अवयव यानी फोंक । न्युङ्खः या न्यूङ्खः बड़ा सुन्दर या सामवेद में धरा ओंकार । समुद्गः=संपुट या डब्बा । विटः=पहाड़, उजला, भौंरा, मूसा, खैर, धूर्त या ठग । पट्टः=पीसने का पत्थर, घाव आदि का बन्धन, चौराहा या काष्ठ आदि का बना हुआ आसनविशेष, पीढ़ा या पाटा । धटः= तुला या तराजू । खटः=अन्धकूप, खपजाना, प्रहारान्तर, टांकना या बांधना ॥ १७ ॥

कोट, अरहट, बाजार आदि, गलगण्ड, प्यटारी, लाठी, मुखरोग, घावका चिह्न, घुन.

कोट्टारघट्टहट्टाश्च पिण्डगोण्डपिचण्डवत् ।
गडुः करण्डो लगुडो वरण्डश्च किणो घुणः ॥ १८ ॥

कोट्टारः=नगरवासी या नागरब्राह्मण, कुआं या पुखरिया का पाट । घट्टः=घाट का नाम है । कितेक आचार्यों ने 'कोट्टः' व 'अरघट्टः' ऐसा पदच्छेद कर कोट्टः=दुर्ग, क़िला—गढ़ या पुर । अरघट्टः=कुआं का भेद ऐसा व्याख्यान किया है । या उसके ऊपर बंधा जलके निकालने का काष्ठ रहट अरहट या पुरवट । हट्टः=क्रय विक्रय का स्थान, हटिया या बाज़ार । पिण्डः=गन्धरस, बल, सघन, देह व घर का एकदेश, देहमात्र, पिण्डदान, पति के मरजाने पर जार से उपजा हुआ बालक या गोलाकार और लोबान का नाम है । गोण्डः=नीचजाति भेद या बड़ीनाभि । पिचण्डः=पशु का अवयव, उदर या पेट " पिचण्डवत् " यहां के ' वत् ' शब्द से वक्ष्यमाण गडु आदिक शब्द भी पुंलिङ्ग हैं, यह बोधित होता है । गडुः=गलगण्ड, पृष्ठगुड या कुबड़ा । करण्डः=कौआ, डब्बा, डिबिया, प्यटारी, पात्र, मधुचक्र, शहद का छत्ता, पानपात्र या पुष्पभाजन । लगुडः=बांस आदि का दण्ड, लट्ठ या लाठी । वरण्डः=अन्तरावेदि—समूह—मुखरोग । किणः=मांसकी गांठि का भेद जो कि फावड़ा व लाठी के चलाने से हाथ आदि में होजाती है और घाव से उपजे हुए चिह्न को भी कहते हैं । घुणः=काठ का कीड़ा या घुन इस प्रसिद्ध का नाम है ॥ १८ ॥

मशक, बालों का बांधना, हरारंग, पागुर, सामवेद, ध्वनि, बुल्ला. रोगभेद, दशकरोड़, कुन्द, फेना, उंचाई, पुआ या बरा.

*** दृतिसीमन्तहरितोरोमन्थोद्गीथबुद्बुदाः ।**
कासमर्दोऽर्बुदःकुन्दः फेनस्तूपौ सपूपकौ ॥ १९ ॥

दृतिः=चामका दोना या मशक । सीमन्तः=केशविन्यास, पटिया पारना या

* इन्द्रियाणान्तु सर्वेषां यद्येकं क्षरतीन्द्रियम् । तेनास्य क्षरति प्रज्ञा दृतेः पात्रादिवोदकम् ॥ (इति मनुः)॥

गुथा हुआ चूड़ा । हरित्=हरा घोड़ा, हरारंग, पलाश, या तृणविशेष । रोमन्थः=पशुओं के चबाये हुए को फिर चबाना, रौंथ या पागुर । उद्गीथः=ॐकार, सामवेद की ध्वनि या सामवेद का विशेषभाग । बुद्बुदः=जलका विकार या बुल्ला का नाम है । कासमर्दः या काशमर्दः=मसाले का भेद, गुल्मभेद या रोगभेद । अर्बुदः=मांसग्रन्थि, दशकरोड़, या अर्बुदपर्वत यानी अर्वली पहाड़ विशेष । कुन्दः=कुन्द का फूल, मुकुन्द, भ्रमण करना, खज़ाने का भेद, औज़ार रखने का पात्र या शिल्पभाण्ड । फेनः=जल का विकार या समुद्रफेन । स्तूपः=वृक्ष या पर्वत की बड़ी उंचाई या घी आदिकों से किया हुआ कूट । पूपकः पुआ या बरा का नाम है । यूपः या यूपकः=यज्ञ का खंभा कि जिसमें यज्ञीयपशु बांधा जाता है ॥ १६ ॥

घाम, राजा व क्षत्रिय, भाला, मुर्दा, छूरा, व्यवहार, पदार्थ, पानी की धारा, बाण, अम्लवेतस, गोल, ईंगुर, देह.

आतपः क्षत्रिये नाभिः कणपक्षुरकेदराः ।
पूरक्षुरप्रचुक्राश्च गोलहिङ्गुलपुद्गलाः ॥ २० ॥

आतपः=उजेला, सूर्य का प्रकाश या घाम का नाम है । क्षत्रियवाचक नाभिशब्द पुंलिङ्ग है । नाभिः=राजाविशेष, नाह या क्षत्रिय । कणपः=प्रासविशेष या भाला । कुणपः=बे प्राण की देह, मुर्दा या लाश या दुर्गन्ध को कहते हैं । क्षुरः=नाई का छूरा, तालमखाना, या गोखुरू । केदरः=व्यवहार का द्रव्य या पदार्थ या वृक्षविशेष । पूरः=जलका प्रवाह, घावका पूरना या खाने का पदार्थ । क्षुरप्रः या खुरप्रः=बाणभेद जो कि छूरा के समान पैना होता है । चुक्रः=चूक, खट्टा पदार्थ, अम्लवेतस । गोलः=गोलाकार या गोलपदार्थ जो कि तोप के गोले व गेंद आदि में विख्यात है । हिङ्गुलः या हिङ्गुलुः=राग द्रव्य का भेद, रक्तवर्ण सेंदुर के समान कोई सा पदार्थ या ईंगुर का नाम है । पुद्गलः=सुन्दर आकारवाला, आत्मा या देह । जैसे कि "पुद्गलः सुन्दराकारे त्रिषु पुंस्यात्मदेहयोः" (इति मेदिनी) 'पुद्गलः' यह सुन्दर आकार में त्रिलिङ्ग है और आत्मा व देह में पुंलिङ्ग कहा जाता है ॥ २० ॥

भूत, पहलवान, भालू, जाउरि, पटा-पीढा या अन्नभेद, कांजी, हर्ष, कड़ाह, पीकदान.

वेतालमल्लभल्लाश्च पुरोडाशोऽपि पट्टिशः ।
कुल्माषो रभसश्चैव सकटाहः पतद्ग्रहः ॥ २१ ॥

इति पुंलिङ्गसंग्रहः ॥

वेतालः=वह मुर्दा जो कि भूत के प्रविष्ट होजाने से जीता सा जाना जाता है. या शिवजीके अनुचर का नाम, या द्वारपाल को भी कहते हैं । मल्लः=पात्र, गाल,

मल्ली का भेद या बाहुयुद्धकुशल, कुश्ती लड़नेवाला ' मल्लविशेष ' । भल्लः= भालू, बाणविशेष, भाला या भांटा । पुरोडाशः=या पुरोडासः=हविष का भेद, उड़द आदि की पीठी की चौंसी, सोमलता का रस या हवन शेष का नाम है । पट्टिशः या पट्टिसः=आयुधविशेष या ' पटा ' इस प्रसिद्ध का नाम कहा जाता है । कुल्माषः या कुल्मासः=अधभिगा जौ, कांजी, या उड़द आदि से मिला अधगीला भात या कि जिसको लोक में ' खिचड़ी ' कहते हैं । जैसे कि " कुल्माषं काञ्जिके यावके पुमान् " (इति मेदिनी) रभसः=हर्ष, वेग, उत्सुकता या पूर्वापर का विचार करना । कटाह समेत पतद्ग्रह शब्द पुंलिङ्ग में होता है । कटाहः=घी व तेल आदि के पकाने का पात्र, कराह या कराही खपड़ा, कछुवा की पीठ, स्तूप यानी वृक्ष या पहाड़ की उंचाई या भैंसी का बच्चा । जैसे कि, " कटाहः कूर्मकर्परे । द्वीपस्य च प्रभेदे च तथा स्यान्महिषीशिशौ । तैलादिपाकपात्रे च " (इति कोषान्तरम्) । पतद्ग्रहः=थूंकने का पात्रविशेष यानी " पीकदान " इस प्रसिद्ध का नाम पण्डितों ने कहा है ॥ २१ ॥

इति पुंलिङ्गसंग्रहविवरणम् ॥

आकाशादि, **(द्विहीने) ऽन्यच्च खारण्यपर्णश्वभ्रहिमोदकम् ।**
शीतादि. **शीतोष्णमांसरुधिरमुखा† क्षिद्रविणं बलम् ॥ २२ ॥**

अब स्त्री व पुंलिङ्ग दोनों से रहित नपुंसकलिङ्ग का अधिकार बाह्लीकशब्द पर्यन्त किया जाता है । अन्य अवशिष्ट यानी उक्तसंग्रह से शेष और चकार से वस्त्र व भूषणों का संग्रह भी नपुंसकलिङ्ग में होता है । तहां " पर्यायसमेत " कितेक शब्दों को दिखलाते हैं । जैसे कि खम्=इन्द्रिय, पुर, क्षेत्र, शून्य, बिन्दु, आकाश, संवेदन, देवलोक और सुख को कहते हैं । अरण्यम्=बन, कानन, विपिन या जंगल का नाम है । पर्णम्=पत्ता, दल या पलाश । श्वभ्रम् या स्वभ्रम्=पाताल या अधोभुवन । हिमम्=पाला या ठंढा । उदकम्=जल, नीर या पानीय । शीतम्=शीतल, ठंढा या आलस । उष्णम्=ग्रीष्म, दक्ष या गरम । मांसम्=पिशित, तरस या आमिष । रुधिरम्=शोणित, रक्त या कुंकुम । मुखम्=वदन, वक्त्र, निस्सरण, प्रारम्भ, उपाय, नाटक आदि की संधि या शब्द । अक्षि=नयन, नेत्र, लोचन या आंख । द्रविणम्= धन, वित्त, काञ्चन, पराक्रम या बलको भी कहते हैं । बलम्=गन्धरस, रूप, शौर्य, स्थौल्य और फ़ौज में नपुंसक । बलदेव, बलासुर और वायस (कौआ) में पुंलिङ्ग । और बलवान् में वाच्यलिङ्ग तथा बरियारा में स्त्रीलिङ्ग है ॥ २२ ॥

† " प्राक्खनो मुखुदात्तश्च ततोऽच्प्रत्ययो भवेत् । प्रजासृजा यतः खातं तस्मादाहुर्मुखं बुधाः " (इति निरुक्तम्) ॥

फल, सोना, तांबा, लोहा, सुख, दुःख, शुभ, अशुभ, कमल आदि फूल, नमक, पक्वान्न, उबटन.

फलहेमशुल्वलोहं सुखदुःखशुभाशुभम्।
जलपुष्पाणि लवणं व्यञ्जनान्यनुलेपनम्॥ २३॥

फलम्=फलमात्र या काम का सिद्ध होना, जायफर, अनाजफल, त्रिफला, कंकोल, हथियार की नोक, संपदा, लाभ, मेवा, प्रयोजन, परिणाम, संतान, वंश, संतति प्रतिफल, पारितोषिक, बाणके आगे का लोहा, फार, (गणित में) लब्धि, ढाल, या फरी। हल=लाङ्गल या सीर। हेम=हाटक, हिरण्य, काञ्चन या स्वर्ण। शुल्वम्=ताम्र (तांबा) द्व्यष्ट, वरिष्ठ या म्लेच्छमुख। लोहम्=लोहा, तीक्ष्ण, पिण्ड या शस्त्रक। सुखम्=सुख, शात या शर्म। दुःखम्=दुःख, कृच्छ्र, कष्ट या कलाकुल। शुभम्=शुभ, कल्याण, मङ्गल। अशुभम्=अशुभ, अभद्र, अकल्याण। जलपुष्पाणि=जलसे उपजे पुष्प (फूल) कुमुद, कमल, कह्लार या उत्पल आदि। लवणम्=सैन्धव आदि नमक, समुद्र, लवणासुर, रस, नदीभेद या वैरी। व्यञ्जनानि=तेमन, निष्ठान, चिह्न, दाढ़ी, व्यञ्जनविशेष से दही, तक्र, तरकारी, साग भोजन के अच्छेपदार्थ और वह अक्षर जिसमें स्वर न हो, जैसे क. से लेकर ह पर्यन्त वर्णों को 'व्यञ्जन' कहते हैं। अनुलेपनम्=उबटन लगाना, तेल लगाना जैसे कि "कुंकुमाद्यनुलेपनम्" कुंकुम, केसर या चन्दन आदि का लेप करना। 'बाधितादन्यत्' किम्। बाधित से "अन्यत्" ऐसा क्यों कहा गया? यदि न कहोगे तो आकाशः-विहायाः-द्यौः, अटवी-आदि में दोष आजावेगा-ये ख आदि शब्द पर्याय व विशेषता समेत नपुंसकलिङ्ग में होते हैं ऐसा मुकुट व स्वामी आदिकों ने व्याख्यान किया है॥ २३॥

करोड़ से भिन्न सौ आदि संख्या लाख, द्विस्वर इसन्त, उसन्त, अमन्त, अनान्त

कोट्याः शतादिः संख्यान्या वा लक्षा नियुतं (च तत्)।
द्व्यच्कमसिसुसन्नन्तं यदनान्तमकर्तरि॥ २४॥

कोटि से भिन्न शतादि संख्या नपुंसकलिङ्ग में होती है। जैसे कि शतम्=सौ। सहस्रम्=हज़ार। अयुतम्=दशहज़ार। अर्बुदम्=दशकरोड़। लक्षा=लाख जैसे कि "लक्षा न पुंसि संख्यायां क्लीबे व्याजशरव्ययोः" (इति मेदिनी) संख्यावाची लक्षा शब्द पुंलिङ्ग में नहीं होता है। छल व निशाना में नपुंसक है। और वह लक्ष नियुत शब्दवाच्य भी है। जैसे कि "शतं सहस्रमयुतं नियुतं प्रयुतं मतम्। कोटिरर्बुदमिति क्रमादशगुणोत्तरम्" (इति रत्नकोषः) सौ, हज़ार, दशहज़ार, लाख, दशलाख, करोड़ और दशकरोड़ ये क्रमसे दशगुना उत्तरवाले हैं। असन्त-इसन्त-उसन्त-अमन्त जो दो स्वरवाले शब्द हैं वे नपुंसक में होते हैं। जैसे कि

यश:=कीर्ति या नामवरी । पय:=दूध या पानी । तेज:=प्रताप या प्रकाश । तम:= अन्धकार, तमोगुण व शोक में नपुंसक और राहु में विकल्प से पुंलिङ्ग होता है । इसन्त जैसे कि, सर्पि:=घी । हवि:=घी या साकल्यविशेष । रोचि:, या शोचि:= दीप्ति या प्रकाश । उसन्त जैसे कि धनु:=धनुष् या चाप । वपु:=शरीर, देह या काय । यजु:=यजुर्वेद । अन्नन्त जैसे कि कर्म=काम, धन्धा, धर्मसम्बन्धी काम जैसे कि यज्ञ—होम—दान आदि, पहले जन्म में किया हुआ, कर्मकारक, भाग या क़िस्मत । चर्म=चमडा या ढाल । वर्म=कवच या बख़्तर । शर्म=सुख या ब्राह्मणों की पद्वी । कर्तृवर्जितकारक में जो अनान्त शब्द वह नपुंसक में होते हैं । जैसे कि कदनम्= मारना, पीटना या रुलाना । गगनम्=आकाश या आस्मान । दमनम्=दमन करना । शमनम्=शमनकरना । ‘ अकर्तरि किम् ’ कर्तृवर्जित ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो नन्दन:=सुखदायक, आनन्द देने वाला । रमण:=रमनेवाला । सूदन:=मारने या छरनेवाला आदिकों में भी होजावेगा ॥ २४ ॥

त्रान्त, सलोपध, संख्यापूर्वपद रात्रान्त, पात्राद्यन्तद्विगुसमास.

त्रान्तं सलोपधं शिष्टं रात्रं प्राक्संख्ययान्वितम् ।
पात्राद्यदन्तैरेकार्थो द्विगु (र्लक्ष्यानुसारतः) ॥ २५ ॥

जिनके अन्तमें ‘ त्र ’ हो और जिनकी उपधा में सकार व लकार हो वे शब्द नपुंसकलिङ्ग में होते हैं । त्रान्त जैसे कि गात्रम्=गात या शरीर । दात्रम्=दांतरि या हंसिया । पात्रम्=बरतन, बासन, आधार, दानदेने योग्य या उचित । मित्रम्=मिलापी, सखा या हितू । यन्त्रम्=शीसा आदि यन्त्र, कल या तावीज़ । वहित्रम्=जलयान या जहाज़ । वस्त्रम्=वसन या कपड़ा । सोपध जैसे बिसम्=मृणाल या भंसीड़ा । बुसम्=भुस या भूसा । अन्धतमसम्=गाढ़ा अन्धकार या बड़ा अँधेरा । लोपध जैसे कि कूलम्=तीर या किनारा । तूलम्=सहतूत या रुई । मूलम्=जड़, असल, वंश, कुल, संतान, असलधन, पूंजी, किसी पुस्तक का मूल या उन्नीसवां नक्षत्र । शूलम्= पीड़ा, दु:ख, रोग, लोहे का तीखा कांटा या त्रिशूल । ‘ शिष्टम् ’ यह जो प्रागुक्त से भिन्न है वह भी और वह प्रागुक्त जो कि अबाधित है वह भी त्रान्तादिक नपुंसक में होते हैं ‘ शिष्टम् ’ यह क्यों कहा यदि न कहोगे तो पुत्र:=पुन्नामनरक से बचाने या कुलको पवित्र करनेवाला पुत्र या बेटा । मन्त्र:=वेदों का भेद, देवादिकों का साधन या सलाह करना । वृत्र:=मेघ, वैरी, अंधेरा, दानव, इन्द्र या पर्वत । कंस:= पानपात्र, कटोरा, आबख़ोरा या उग्रसेन का बेटा । पनस:=कटहल या बानरविशेष । हंस:=एक प्रकार के पक्षी जो कि पानी के सरोवर में रहते हैं, आत्मा, जीव, पर- मात्मा, ब्रह्म, राजा, योगी घोड़ा या सफ़ेद पदार्थ । काल:=समय, कालारंग, यमराज या मौत । शाल:=सौरीनामक मछली, आवरण या घेर । संख्यापूर्वक रात्र शब्द नपुंसक में होता है । “ रात्राह्नाहा: पुंसि ” इस सूत्र से पुंस्त्व प्राप्त था उसका

यह अपवाद है । जैसे कि द्विरात्रम्=दो रातियों का समाहार । त्रिरात्रम्=तीन रातियों का समाहार । पञ्चरात्रम्=पांचरातियों का समाहार । संख्यया, यह क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो अर्धरात्रः=आधीरात । मध्यरात्रः=राति का मध्यभाग यहां दोष आवेगा । पात्र आदि अदन्त शब्दों से जो एकार्थ द्विगुसमास वह शिष्टप्रयोगों के अनुसार क्लीब में होता है । जैसे कि पञ्चपात्रम्=पांचपात्रों का समाहार । त्रिभुवनम्=तीन भुवनों का समाहार । 'एकार्थः किम्' एकार्थ क्यों कहा ? पञ्चकपालः= पांच कपालों में धरा हुआ यज्ञ का भाग । यह तद्धितार्थ में द्विगु है । 'लक्ष्यानुसारतः किम्' "लक्ष्य के अनुसार" ऐसा क्यों कहा ? त्रिपुरी=तीनपुरों का समाहार । पञ्चमूली=पांच जड़ों का समाहार । त्रिलोकी=स्वर्ग–मर्त्य–पाताल इन तीनों का समाहार । आदि अपवाद हैं ॥ २५ ॥

एकार्थकद्वन्द्व, अव्ययीभाव, संख्याव्यय से परे पथिन्, षष्ठ्यन्त परछाया, समूह में सभा.

द्वन्द्वैकत्वाव्ययीभावौ पथः संख्याव्ययात्परः ।
षष्ठ्याश्छाया (बहूनां चे) द्विच्छायं (संहतौ)सभा ॥ २६ ॥

एकार्थकद्वन्द्व यानी समाहारद्वन्द्व और अव्ययीभावसमास ये दोनों नपुंसकलिङ्ग में होते हैं । द्वन्द्वैकत्व जैसे–पाणिपादम्=हाथ पैरों का समाहार । शिरोग्रीवम्= शीश–ग्रीवा का समाहार । मार्दङ्गिकपाणविकम्=मृदङ्गवादक, पणववादकों का समुदाय । अव्ययीभाव जैसे–अधिगोपम्=गोपों में अधिकार करके जो बर्तता है । उपगङ्गम्=गङ्गाके समीप । अधिस्त्रि=स्त्रीके अधीन घर का कार्य । यथाशक्ति= शक्ति को नहीं नांघकर । संख्या और अव्यय से परे पथ शब्द यानी कृतसमासान्त पथिन् शब्द नपुंसक में होता है । जैसे कि द्विपथम्=दो मार्गों का समाहार । त्रिपथम्=तीन मार्गों का समाहार । चतुष्पथम्=चौराहा । अव्यय से परे जैसे कि, विपथम्=विरूप या विरुद्धमार्ग । कापथम्=कुमार्ग या कुराह । संख्याव्ययात्परः किम्, संख्या व अव्यय से परे ऐसा क्यों किया ? यदि न करोगे तो 'धर्मस्य पन्थाः' धर्मपथः=धर्म का मार्ग । योगस्य पन्थाः, योगपथः=योग का मार्ग । यहां होजावेगा । 'कृतसमासान्तःकिम्' कृतसमासान्त ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो अतिपन्थाः= अत्युत्तममार्ग । सुपन्थाः=शोभनमार्ग । यहां "न पूजनात्" से समासान्त का निषेध होजाता है । षष्ठ्यन्त से परे तत्पुरुष समास में छाया शब्द नपुंसक में होता है । यदि वह छाया बहुतों की हो । जैसे कि वीनां=पक्षिणां छाया, विच्छायम्= पक्षियों की छाया । इक्षूणां छाया, इक्षुच्छायम्=ईखों या गन्नों की छाया । "बहूनां किम्" ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो कुड्यस्य छाया, कुड्यच्छाया–कुड्यच्छायम्=भीत या दीवाल की परछाईं । यहां "विभाषासेनासुराच्छायाशाला-

निशानाम् " से क्लीबता विकल्प से होती है। समूह अर्थ में वर्तमान जो सभा-शब्द तदन्त तत्पुरुष नपुंसक में होता है। यदि सभा षष्ठयन्त से परे हो। जैसे कि-स्त्रीणां सभा, स्त्रीसभम्=स्त्रियों की सभा यानी समुदाय। यहां " अशाला च " इस सूत्र से क्लीबता होती है। ' संहतौ ' ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो धर्मस्य सभा, धर्मसभा=धर्मशाला यहां दोष आवेगा इस लिये कहा है ॥ २६ ॥

राजशब्द वर्जित राजपर्याय-रक्षःपिशाचादि वाचक षष्ठयन्त पर शालार्थक सभा शब्द.

शालार्थापि परा राजाऽमनुष्यार्थादराजकात्।
दासीसभं नृपसभं रक्षःसभ (मिमादिशः) ॥ २७ ॥

राजशब्द वर्जित राजपर्याय और मनुष्यहीन राक्षसपिशाचादि वाचक षष्ठयन्त से परे शाला (घर) अर्थवाला अपिशब्द से समूहार्थवाला भी सभा शब्द तत्पुरुष समास होजाने पर नपुंसकलिङ्ग में होता है। राजपर्याय से जैसे कि इनस्य सभा, इनसभम्=स्वामी की सभा। प्रभूणां सभा, प्रभुसभम्=प्रभुओं की सभा। अमनुष्यार्थ से जैसे रक्षसां सभा, रक्षःसभम्। राक्षसों की समाज। पिशाचानां सभा, पिशाचसभम्=पिशाचों की सभा। दासीनां सभा दासीसभम्=दासियों का घर। नृपाणां सभा, नृपसभम्=नरपालों की समाज। इन्हों में " सभा राजामनुष्यपूर्वा " इस सूत्र से नपुंसकलिङ्ग हुआ। ये उदाहरण जानना चाहिये। ' अराजकादिति किम् ' ' अराजक से ' ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो राज्ञांसभा, राजसभा=राजाओं की समाज। यहां नपुंसक होजावेगा। राजपर्याय के ग्रहण से यहां न हो जैसे कि चन्द्रगुप्तस्य सभा, चन्द्रगुप्तसभा=चन्द्रगुप्तकी समाज। यह राजविशेष है। ' षष्ठयन्तात्किम् ' षष्ठयन्त से ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो ' ईश्वराचासौ सभाचेति ' ईश्वरसभा ' यहां दोष आवेगा। न सभा, असभा=नहीं सभा। ' तत्पुरुषे ' इति किम्, ' तत्पुरुषे ' ऐसा क्यों कहा यदि न कहोगे तो ' ईश्वरस्य सभेव सभा यस्येति ' ईश्वरकी सभा की नाईं सभा है जिसकी उसे ' ईश्वरसभः ' कहते हैं। यहां बहुव्रीहि समास में दोष आजावेगा इस लिये किया है ॥ २७ ॥

उपज्ञान्तआदि, **उपज्ञोपक्रमान्तश्च तदादित्वप्रकाशने।**
कौपज्ञान्तआदि. **कौपज्ञकोपक्रमादिकन्थोशीनरनामसु ॥ २८ ॥**

यदि उपज्ञा और उपक्रम इन दोनों का पहले प्रकाश करना हो तो उपज्ञान्त व उपक्रमान्त तत्पुरुषसमास नपुंसक में होता है। उसीको पाणिनिजी भी कहते हैं कि, " उपज्ञोपक्रमंतदाद्याचिख्यासायाम् " उपज्ञान्त और उपक्रमान्त तत्पुरुष नपुंसक में होता है। यदि उन उपज्ञायमान व उपक्रममाणों का पहले कहने को इष्ट

१ कस्य प्रजापतेः उपज्ञा, उपक्रमश्च। सृष्टिस्तेनादौ ज्ञाता प्रक्रान्ता च ॥

हो । जैसे कि उपज्ञायते इत्युपज्ञा, को ब्रह्मा तस्य उपज्ञा आद्यं ज्ञानम्, कोपज्ञम्=प्रजा । प्रजापति ने प्रथम बनाया था इसीसे उसीने आदि में प्रजाको जाना था । कस्य ब्रह्मणः उपक्रमः, आद्यारम्भः, कोपक्रमम्=लोकः । ब्रह्मा का आद्यारम्भ यानी ब्रह्माने पहले रचा था इसीसे उसने आदि में लोक का आरम्भ किया था । आदि शब्द से पाणिनेरुपज्ञा आद्यं ज्ञानम्, पाणिन्युपज्ञं=ग्रन्थः । पाणिनि ने पहले बनाया था इसीसे आदि में उसने ग्रन्थ को जाना था । नन्दस्य उपक्रमः आद्यारम्भः, नन्दोपक्रमम्=द्रोणः । नन्दका आद्यारम्भं यानी नन्द ने आदि में उस द्रोण का आरम्भ किया था । षष्ठ्यन्त से परे जो कन्था शब्द तदन्त तत्पुरुष नपुंसक में होता है । यदि वह कन्था शब्द उशीनरदेशस्थ संज्ञाओं में बर्तता हो । जैसे कि सौशमीनां कन्था, सौशमिकन्थम्=सौशमियों की कथड़ी, गुदड़ी या कमरी । आह्वीनां कन्था, आह्विकन्थम्=आह्वियों की कन्था । 'उशीनर इति किम्' उशीनर ऐसा क्यों कहा यदि न कहोगे तो दाक्षिकन्था=दाक्षियों की गुदड़ी । यह संज्ञा बाह्लिकों में है । 'नामसु' ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो वीरणानां कन्था, वीरणकन्था=गांडर की कथड़ी । यह संज्ञा कहीं भी नहीं है ॥ २८ ॥

भाव में नणक चितों से अन्य अदन्त प्रत्यय, समूह व भाव कर्म में तद्धित प्रत्ययांत, पुण्य सुदिन पर अहन्शब्द.

भावे नणकचिद्भ्योन्ये समूहे भावकर्मणोः ।
अदन्तप्रत्यया पुण्यसुदिनाभ्यां त्वहः परः ॥ २९ ॥

न—ण—क—और चित् उन्हों से भिन्न अदन्त प्रत्यय कृत्संज्ञक जो भाव में विधान कियेगये हैं तथा समूहार्थ व भावकर्म में विहित अदन्त प्रत्ययवाले तद्धित तदन्तनाम नपुंसक में होते हैं । जैसे कि भूतम्=होना । यहां भाव में क्त प्रत्यय नपुंसक हुआ । भवितव्यम् या भवनीयम् भवद्भिः=आप लोगोंका होना उचित है । भवति—भूयते भवितुं योग्यमिति वा भव्यम् । होता या होना या होनेयोग्य, कुशल-क्षेम । ब्रह्मणोभवनम्, ब्रह्मभूयम्=वेद या ब्रह्म का होना यहां "भुवो भावे क्यप्" से भाव में क्यप् हुआ । "संरवणम्, सांराविणम् । संकूटनम्, सांकूटिनं वर्तते=परस्पर बहुतही चिल्लाते और कूट करतेहुए वर्तमान है ।" इन दोनों में "अभिविधौ भावे इनुण्" से 'इनुण्' तदन्त से "अणिनुणः" से 'अण्' और "इनण्यनपत्ये" से 'इन्' प्रकृति से रहता है । उसीसे "नस्तद्धिते" इस सूत्र से टिलोप नहीं हुआ । "नणक" ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो यज्ञः=याग । यत्नः=उपाय । यहां "यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षोनङ्" से भावादि में 'नङ्' हुआ । स्वप्नः=स्वपना । यहां "स्वपोनन्" से भाव में 'नन्' हुआ । न्यादः=जीमना । यहां "नौणच्"

से भाव में ' णच् ' हुआ। आखूत्थः=मूषकों (मूसों) का उठना। यहां "सुपीति" से ' क ' हुआ। विघ्नः=रोक, रुकाव, अटकाव, बिगाड़ या बाधा। यहां 'घञर्थे' से 'क' हुआ। चित् प्रत्ययान्त जैसे कि, चयनम्, चयः=ढेर करना। जयनम्, जयः=जीतना। यहां " एरच् " से ' अच् ' हुआ। कारणं, कारणा=तीव्रवेदना। यहां " णयास-श्रन्थोयुच् " से ' युच् ' हुआ। इन उदाहरणों में दोष आवेगा। समूह में तद्धित जैसे कि, भिक्षाणां समूहो, भैक्षम्=भिक्षाओं का समूह। यहां ' भिक्षादिभ्योऽण् ' से ' अण् ' हुआ। औपगवानां समूहः, औपगवकम्=उपगु अपत्यों का समुदाय। यहां " गोत्रोक्षोष्ट्र-" से ' वुञ् ' हुआ। काकानां समूहः, काकम्=कौओं का समूह। यहां " तस्य समूहः " से ' अण् ' हुआ। केदाराणां समूहः, कैदार्यम्—कैदारकं वा=खेतों का समूह। यहां " केदाराद्यञ्च " से ' यञ् ' या ' वुञ् ' हुआ। गोर्भावो, गोत्वम्=गौका होना। यहां " तस्यभावस्त्वतलौ " से ' त्व ' प्रत्यय हुआ। शुचेर्भावः शौचम्=पवित्रता का होना। मुनेर्भावो मौनम्=मुनि का होना। यहां " इगन्ताच्चलघुपूर्वात् " से ' अण् ' हुआ। मनोज्ञानां समूहो, मानोज्ञकम्=सुन्दरता या सुडौलता का समूह। यहां " द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च " से ' वुञ् ' हुआ। स्तेनस्य भावः, कर्म वा स्तेयम्=चोर का होना या कर्म। यहां " स्तेनाद्यन्नलोपश्च " से ' यत् ' और नलोप हुआ। शुक्लस्य भावः, कर्म वा शौक्ल्यम्=सफ़ेद का होना या कर्म। यहां " गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च " से ' ष्यञ् ' हुआ। पुण्य व सुदिन से परे कृतसमासान्त अहन् शब्द नपुंसक में होता है। जैसे कि, पुण्यं च तदहश्च पुण्याहम्=पुण्यदिन। सुदिनं च तदहश्च, सुदिनाहम्=भला दिन। यहां " राजाहः सखिभ्यष्टच् " से ' टच् ' और " पुण्यसुदिनाभ्यामह्नः क्लीबता " से नपुंसक हुआ। " समासान्त " ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो जिस मास में पुण्यदिन होते हैं उसे ' पुण्याहा ' कहते हैं। यहां दोष आवेगा इस लिये कहा है ॥ २९ ॥

क्रियाव्ययवि-शेषण, साम-भेद, वृत्तभेद, ताड़फल या केला का फल, गोंद या भात, थूनीं, सोना, मर्म—योजन.

क्रियाव्ययानां भेदकान्येकत्वेऽप्युक्थतोटके।

चोचं पिच्छं गृहस्थूणं[१] तिरीटं मर्मयोजने ॥ ३० ॥

क्रिया और अव्ययों के विशेषण नपुंसक व एकवचन में होते हैं। क्रियाविशेषण, जैसे कि, मन्दं पचन्ति—धीरेसे पकाते हैं। सुखं तिष्ठन्ति योगिनः=योगीलोग

१ " गृहशशाभ्यां क्लीबे (नियमार्थमिदम्) गृहशशपूर्वे स्थूणोर्णे यथासंख्यं नपुंसके स्तः। इति क्लीबत्वम् " ॥

सुख से टिकते हैं। सलीलं नृत्यन्ति बालाः=बालगण लीला से नाचते हैं। अव्यय-विशेषण जैसे कि, रम्यं श्वः=कल्ह का दिन रमणीय है। प्रातः कमनीयम्=प्रभात-काल सुहावना है। उक्थम्=सामविशेष या भेद। तोटकम्=छन्द का भेद। चोचम्=खाये हुए फल का शेष, तालफल या केला का फल। पिच्छम्=पूंछ, मोरपंख, मुकुट, मोर, हिंसा, कपासवृक्ष, केला, सेमर, भात का मांड़, घोड़े के पैर का रोग। गृह-स्थूणम्=घर का खंभा या थून्ही। तिरीटम्=वेठन, सोना या शिरोभूषण। मर्म (न्)=सन्धिस्थान या हड्डियों के जोड़ का स्थान। योजनम्=मिलना, मिलाना, परमात्मा, चार कोस या योग को कहते हैं॥ ३०॥

राजसूय, वाज-पेय, गद्य-पद्य, माणिक्य, भाष्य, सेंदुर, चीर, चीवर, पञ्जर या पिंजरा

राजसूयं वाजपेयं गद्यपद्ये (कृतौ कवेः)।
माणिक्यभाष्यसिन्दूरचीर[1]चीवरपञ्जरम्॥ ३१॥

राजसूयम्=एकयज्ञ जिसको केवल चक्रवर्ती राजाही करसक्ते हैं और इस यज्ञ का सारा कामकाज केवल उसके अधीन और राजालोग करते हैं। वाजपेयम्=जिसमें वाज=अन्न, घी या पैष्टी सुरा पीजाती है उसे 'वाजपेयम्' कहते हैं। एकप्रकार का यज्ञ। ये दोनों अर्धर्चादि हैं। कवि की रचना में गद्य—पद्य ये दोनों नपुंसकलिङ्ग में होते हैं। जैसे कि गद्यम्=छन्दरहितवाक्य, विना छन्द का वाक्य, वार्तिक या नसर। पद्यम्=पदसमूह की रचना या श्लोक "पद्यं श्लोके पुमाञ्शूद्रे पद्या वर्त्मनि कीर्त्तिता" (इति मेदिनी) श्लोक में 'पद्यम्' नपुंसक, शूद्र में 'पद्यः' पुंल्लिङ्ग और मार्ग में 'पद्या' स्त्रीलिङ्ग कहा है। 'कवेः कृतौ' ऐसा क्यों कहा? यदि न कहोगे तो 'गद्या वार्ता' बात कहने योग्य है। पद्यः=कीचड़ या चहला। पद्यम्=रज या धूल। यहां दोष आवेगा। माणिक्यम्=रत्नभेद या बड़े मोलवाला एक लाल रंग का पत्थर। या "मणिके मणिपूराख्ये नगरे भवं माणिक्यम्" मणिक यानी मणिपुर विख्यात नगर में जो उपजा है उसे 'माणिक्यम्' कहते हैं। भाष्यम्=टीका, टिप्पणी, विवृति, विवरण या सूत्रार्थ। जैसे कि "सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः। स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः" सूत्रानुसारी वाक्यों से जिसमें सूत्रों का अर्थ कहाजाता है और स्वपद वर्णित होते हैं उसे भाष्यवेत्ता पण्डितों ने भाष्य कहा है। सिन्दूरम्=सेंदुर या लालचूर्ण जैसे कि "सिन्दूरस्तरुभेदे स्यात्सिन्दूरं रक्त-चूर्णके। सिन्दूरी रोचनारक्तवेल्लिकाधातकीषु च" (इति विश्वप्रकाशः) वृक्ष-भेद में 'सिन्दूरः' पुंलिङ्ग, लालचूर्ण में 'सिन्दूरम्' निशोत—कवीला—रक्तवेल्लिका और धवई तथा आंवला में 'सिन्दूरी' होता है। चीरम्=कपड़ा, वस्त्र, साड़ी या

---

[1] "चीराणि किं पथि न सन्ति दिशन्ति भिक्षाम्" (इति भागवतम्)॥

चीथड़ा। जैसे कि " चीरी झिल्यां नपुंसकम्। गोस्तने वस्त्रभेदे च रेखालिखनभेदयोः " (इति मेदिनी) झींगुर में चीरी, गऊका थन, वस्त्रभेद, रेखा और लिखनभेद में ' चीरम् ' नपुंसक है। चीवरम्=मुनियों का वस्त्र या बौद्धमती का चोलना। पञ्जरम् या पिञ्जरम्=काया की हड्डियों का समुदाय या पींजरा का नाम है कि, जिसमें पाले हुए पक्षी तोता व मैना आदि रहते हैं ॥ ३१ ॥

चार्वाकशास्त्र, हरितार, बांस का पात्र, थारा या देशभेद.

लोकायतं हरितालं विदलं स्थालबाह्लवम्।

इति क्लीबसंग्रहः॥

लोकायतम्=चार्वाकों का शास्त्र। हरितालम्=हरितार या पीलेरंगकी धातु। जैसे मेदिनी कोष में कहा है कि " हरितालं धातुभेदे स्त्री दूर्वाकाशरेखयोः " धातुभेद में ' हरिताल ' नपुंसक है। दूब और आकाशरेखा में स्त्रीलिङ्ग है। विदलम्=बांसका बना पात्रभेद। स्थालम्=थारा या थार में नपुंसक, पुष्पविशेष या पाढ़रि, थाली या बटलोही में स्त्रीलिङ्ग है। बाह्लवम् या बाह्लकम्=देशभेद, कुंकुम या बह्लुदेश का उपजा हुआ कुंकुम " बाह्लवम् " कहलाता है॥

इति क्लीबसंग्रहविवरणम्।

आधीऋचा, तिलोंकी खली, कांटा.

(पुंनपुंसकयोः) शेषोऽर्धर्चपिण्याककण्टकाः ॥ ३२ ॥

अब पुंलिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग का अधिकार किया जाता है—कहे हुए से शेष पुन्नपुंसक में होता है। जैसे कि " अर्धर्चः—अर्धर्चम्=आधीऋचा या वेद का भाग। पिण्याकः—पिण्याकम्=तिलों की खली, हींग, बाह्लिकदेश का घोड़ा या कुंकुम, लोबान। कण्टकः— कण्टकम्=क्षुद्रवैरी, मछली आदि का कांटा, नैयोगिक आदि दोषों का कहना, रोमहर्ष, और द्रुमाङ्ग को कहते हैं॥ ३२ ॥

लड्डू, उपताप, टांकी, साड़ी, कपड़ा, खर्व, दशकरोड़, पातक, उद्योग, चरकशास्त्र, तमाखू, आंवला, नरई.

मोदकस्तण्डकष्टङ्कः शाटकः खर्वटोऽर्बुदः।
पातकोद्योगचरकतमालामलका नडः ॥ ३३ ॥

मोदकः=एक प्रकार का लड्डू या आनन्द का करनेवाला। तण्डकः=लंगड़ाके चलना या एक प्रकार का पक्षी (खंड़रैचा) फेना, घरका काठ, वृक्षका कंधा या बड़ा मायावी। दण्डकः=बन, छन्दभेद या दण्ड करना। टङ्कः=नील, कैथा, खुरपा या बेल्चा, टांक इनमें पुन्नपुंसक। जंघा में स्त्रीलिङ्ग, तलवार, पत्थर काटने का औज़ार, अहंकार, कोप करना। इनमें पुंलिङ्ग है। किसी के मतमें तङ्क भी है तङ्कः=

भय या डर । शाटकः=साड़ी या स्त्रियों के पहिरने का कपड़ा । खर्वटः=स्थानभेद या नदी पहाड़ के बीच की बस्ती को कहते हैं । अर्बुदः=मांसकील, कठोर, दश-करोड़ या अर्बलीनामक पर्वतविशेष । पातकः, पातकम्=ब्रह्महत्यादि पाप, दोष, अपराध या गुनाह । उद्योगः=उद्यम, उपाय, यत्न, परिश्रम या चेष्टा करना । चर-कम्=वैद्यकशास्त्र भेद—कोढ़, दूत या जासूस । वरकम्=सियां हुआ कपड़ा । तमालः=तिलक, तलवार, तमाखू, वृक्षभेद या वरनानामक वृक्ष । आमलकः या आमा-लकः=धात्रीफल या आंवला इस प्रसिद्ध का नाम है । नडः=भीतर का बिल, नर-कुल या नरई को कहते हैं ॥ ३३ ॥

कोढ़, मूंड़, मद्य, भूंजामांस, वीरनाद, कुशल, भीति, संयोग, तौल-भेद, अक्षिरोग, रस्ताखर्च, वि-कारशून्य, ना-चना.

कुष्ठं मुण्डं शीधु बुस्तं क्ष्वेडितं क्षेम कुट्टिमम् ।
संगमं शतमानार्मशम्बलाव्ययताण्डवः ॥ ३४ ॥

कुष्ठम्=कोढ़रोग, पुष्कर या कमल "कुष्ठं रोगे पुष्करेऽस्त्री" (इति मेदिनी) मुण्डम्=शीश या असुरभेद । शीधु=मद्य या शराब । बुस्तम्=शष्कुलीसमेत मांस, भूंजामांस या फल का सारभाग यानी कटहल आदिका गूदा । कहीं 'पुस्तम्' या शस्तं पाठ है । कहीं 'चुस्तम्' या 'तुस्तं' भी पाठ है । क्ष्वेडितम्=वीरों का सिंहनाद । क्षेमम्=कुशल "जानीयान्मङ्गलं क्षेमं क्षेमं लब्धार्थरक्षणम्" मङ्गल को क्षेम जानना चाहिये व लब्धहुए अर्थरक्षण को भी "क्षेम" कहते हैं । कुट्टिमम्=भीतका भेद । संगमम्=संयोग, मेल—मिलाप । शतमानम्=रूप्यपल या मानभेद । अर्मम्=नयनों का रोग । शम्बलम्—वा सम्बलं "पाथेयं च शम्बलोऽस्त्री शम्बलवत्कूलपाथेय मत्सरः" (इति मेदिनी) रस्ता खर्च, तोशाराह, मार्गव्यय, पानी, किनारा या डाह । अव्य-यम्=स्वरादिनिपात या विकाररहित । "अव्ययोऽस्त्री शब्दभेदे ना विष्णौ निर्व्यये-त्रिषु" (इति मेदिनी) अव्ययः=शब्दभेद में पुन्नपुंसक, विष्णु में पुंलिङ्ग और निर्व्यय में त्रिलिङ्ग है । ताण्डवम् या ताण्डव्यम्=नाचका भेद ॥ ३४ ॥

तोबड़ा, जिमी-कन्द, कपास, नदी के दोनों किनारे, जूआ आदि, यज्ञ-स्तम्भ, झरोखा, यज्ञपात्र, जूस, यज्ञपात्र, पात्र-विशेष.

कवियं कन्दकर्पासं पारावारं युगन्धरम् ।
यूपं प्रग्रीवपात्रीवे यूषं चमसचिक्कसौ ॥ ३५ ॥

कवियम्=तोबड़ा, लगाम या बागडोर । कन्दम्=ज़िमीक़न्द, कमलिनी आदि की जड़ " कन्दोऽस्त्री सूरणे शस्यमूले जलधरे पुमान् " (इति मेदिनी) सूरण व सस्यमूल में कन्दः=पुन्नपुंसक है और मेघ में पुंलिङ्ग है । कहीं 'कर्म' ऐसा भी पाठ है । कर्म=काम, धंधा, धर्मसम्बन्धी काम,जैसे यज्ञ-होम-दानआदि, पहले जन्ममें किया हुआ कर्म या कर्मकारक । कर्पासम्=कपास, रुई या वस्त्र का कारण । पारावारम्=नदी आदि के दोनों पारको क्रम से ' पारम् ' और अवारम्, कहते हैं "पारावारः पयोराशौ पारावारं तटद्वये " (इति हैमः) युगन्धरम्=कूबर या रथके जूआ के काठ को पुष्ट करनेवाला काठ या पर्वतभेद । यूपम्=यज्ञाङ्ग भेद या यज्ञपशु बांधने का काष्ठविशेष । प्रग्रीवम्=झरोखा, मुखशाला=खिड़की आदि या वृक्षका शिरोभाग । पात्रीवम् या पात्रीबम्=यज्ञपात्रविशेष यानी यज्ञ के उपकरण का पात्र भेद । यूषं या जूषम्=जूस-रस या माड़ इस प्रसिद्ध का नाम है (उक्तं हि वैद्यके) " मुद्गामलकयूषस्तु ग्राही पित्तकफेहितः " मूंग और आंवलेका 'जूस' ग्राही होकर पित्त कफ में हितदायक होता है । चमसम्=सोम पीने का पात्रविशेष । चिक्कसः=पानपात्र विशेष या यज्ञ में सोमपान करने के लिये जो पात्रविशेष यानी चिकना पात्र बनाया जाता है उसे 'चिक्कसः' कहते हैं ॥ ३५ ॥

अर्धर्चादौ घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं ध्रुवम् ।
तन्नोक्तमिहलोकेऽपि तच्चेदस्त्यस्तु (शेषवत्) ॥ ३६ ॥

इति पुन्नपुंसकसंग्रहः ॥

" अर्धर्चादौ " इस पुन्नपुंसकाधिकारवर्ग में घृत (घी) आदि शब्दों का पुंस्त्व आदि पाणिन्यादिकों ने कहा है । वह तो वैदिक है यानी वेद में ही प्रसिद्ध है । इस लिये यहां नहीं कहागया है और यदि लोक में है भी तो वह शिष्टप्रयोगानुसार ग्रहण करना चाहिये ॥ ३६ ॥

इति पुन्नपुंसकसंग्रहविवरणम् ॥

स्त्रीपुंसयोरपत्यान्ता द्विचतुःषट्पदोरगाः ।
जातिभेदाः पुमाख्याश्च स्त्रीयोगैः सह मल्लकः ॥ ३७ ॥

" स्त्रीपुंसयोः " इसका अधिकार किया जाता है—अपत्य अर्थ में विधान किये हुए अण् आदि प्रत्यय तदन्त समस्तशब्द स्त्रीलिङ्ग व पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि उपगोरपत्यं पुमान् औपगवः=उद्धवपूर्वज उपगुनामक यादवविशेष के गोत्रापत्य को 'औपगवः' और स्त्री को ' औपगवी ' । गर्गगोत्रापत्यपुरुष को ' गार्ग्यः ' और स्त्री को ' गार्गी ' । एवं विदेहगोत्रापत्य को 'वैदेहः' और स्त्रीको ' वैदेही ' कहते हैं ।

द्विपद-चतुष्पद-और षट्पदवाची तथा उरगवाची जातिविशेष शब्द स्त्री पुंलिङ्ग में होते हैं । द्विपद जैसे कि. मानुषःपुमान् । स्त्री मानुषी । विप्रःपुमान् । स्त्री विप्रा । यहां अजादित्व से 'टाप्' हुआ । शूद्रः पुमान् । स्त्री शूद्रा=(शूद्रा तज्जातिरङ्गना) शूद्र-जातिवाली स्त्री ' शूद्रा ' कहलाती है । यहां " शूद्रा चामहत्पूर्वाजातिः " से ' टाप् ' हुआ है । बकः पुमान् । स्त्री बकी । हंसःपुमान् । स्त्री हंसी । चतुष्पद जैसे कि सिंहः पुमान् । स्त्री सिंही । मृगःपुमान् । स्त्री मृगी । हयः=घोड़ा । हयी=घोड़ी । भ्रमरः= भौंरा । भ्रमरी=भौंरी । उरगः=सांप । उरगी=साँपिनि । यहां " जातेरस्त्रीविषया-दयोपधात् " से ' ङीष् ' जानना चाहिये । " अबाधिता इत्येव " जब अबाधित हों तभी स्त्री पुंलिङ्ग में होते हैं । मक्षिका=मक्खी । शिवा=सियारिनि । लूता= मकड़ी । पिपीलिका=चिउँटी । जातिवाची शब्द स्त्री पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि द्रुणः=बिच्छू । द्रुणी=बीछी । मत्स्यः=मच्छ । मत्सी=मछली । कितेक आचार्य षट्-पदादिकों के साथ इसकी एकवाक्यता कहते हैं । स्त्रीवाचक शब्द के योग के साथ वर्तमान पुंवाचक शब्द स्त्री और पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि, ब्राह्मणस्तस्य स्त्री ब्राह्मणी । ' ब्राह्मणः ' पुंलिङ्ग है उसकी भार्या को ' ब्राह्मणी ' कहते हैं । शूद्रः पुमांस्तस्यभार्या शूद्री । पुरुष शूद्र उसकी स्त्री को ' शूद्री ' कहते हैं । मल्लक आदि भी स्त्री पुंलिङ्ग में होते हैं । जैसे कि मल्लकः=सामर्थ्य धारनेवाला या पहलवान । मल्लिका=चमेली या बेला, मछली, मिट्टी का पात्र यानी ' मलैया ' या मटुकी का नाम है ॥ ३७ ॥

यती, कौड़ी, नक्षत्र, चन्दन, कालीपादरि, मन्त्र, घरिया, परिमाण, बेरी, लाठी, साड़ी, कमर, झोपड़ी.

मुनिर्वराटकः स्वातिर्वर्णको झाटलिर्मनुः ।
मूषा सूपाटी कर्कन्धूर्यष्टिः शाटी कटी कुटी ॥ ३८ ॥

मुनिः=वसिष्ठादि ऋषि, तपस्वी, तपी, ज्ञानी, सातकी संख्या, यती, बुद्ध, इङ्गुदी, पियाल या अगस्त्य वृक्षभेद या पलाश का नाम है । कहीं " ऊर्मिस्तरङ्गः " यह भी पाठ है । वराटकः=कमलगट्टा, रस्सी । स्त्रीलिङ्ग में वराटिका=कपर्दिका या कौड़ी । स्वातिः=नक्षत्रभेद या चन्द्रमा की एक स्त्री । वर्णकः=चन्दन या विलेपन " वर्णकश्चारणे स्त्री तु चन्दने च विलेपने । द्वयोर्नील्यादिषु स्त्री स्यादुत्कर्षे काञ्चनस्य च" (इति मेदिनी) झाटलिः=काली पाढ़रि । कहीं ' जाटलिः ' या ' पाटलिः ' भी पाठ है । जाटलिः=मूर्वावृक्ष । पाटलिः=पाढ़रि जोकि पलाश के समान होती है । मनुः=आदिराजा या मन्त्र का नाम है । मूषा=स्वर्णादिधातु गलाने का पात्र या घरिया । सूपाटः, स्त्री सूपाटी=परिमाणभेद । कर्कन्धूः=बेरवृक्ष । यष्टिः=लाठी या

मुलेठी । शाटी=वस्त्रभेद या साड़ी । कटः=मुर्दा, कमर, चटाई या हाथी का गाल । कटी या कटिः=शरीर का मध्यभाग या कमर[१]। कुटी=झोपड़ी या मठी का नाम है ॥ ३८ ॥

इति स्त्रीपुंससंग्रहविवरणम् ॥

अथ स्त्रीनपुंसकसंग्रहो व्याख्यायते ॥

ष्यञ, वुञ्, "**स्त्रीनपुंसकयो" भावक्रिययोः 'ष्यञ्' क्वचिच्च 'वुञ्' ।**

उचित, मिताई. **औचित्यमौचितीमैत्री मैत्र्यं 'वुञ्' (प्रागुदाहृतः)॥३९॥**

"स्त्रीनपुंसकयोः" इसका अधिकार किया जाता है । भावकर्म में विधान किया हुआ 'ष्यञ्' और 'वुञ्' कहीं स्त्री नपुंसक में होता है । जैसे कि, उचितस्य भावः, औचित्यम्-यहां "गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च" से ष्यञ् हुआ । स्त्रीलिङ्ग में 'औचिती' । मित्रस्य कर्म-मैत्र्यम् । यहां कर्म में 'ष्यञ्' हुआ । स्त्री में मैत्री=मिताई । समग्रस्य भावः, सामग्र्यम्=समग्रका होना । स्त्रीलिङ्ग में सामग्री=पूजा आदिकी सामग्री । अर्हतोभावः आर्हन्त्यम् । स्त्री में आर्हन्ती=योग्यता । पहले द्वितीयकाण्ड में 'वुञ्' का उदाहरण दे चुके हैं । जैसे कि अहोपुरुषस्य भावः, आहोपुरुषिका=हमीं पुरुष हैं या हमीं लड़ेंगे । "शैष्योपाध्यायिका" चेला-गुरु का होना । गार्गिका=गर्गगोत्रत्वसे प्रशंसा का होना । कहीं स्त्रीलिङ्ग नहीं होता है । जैसे कि मनोज्ञस्य भावो, मानोज्ञकम्=सुन्दरता का होना । रमणीय का होना या कर्म उसे 'रामणीयकम्' कहते हैं । "भावे" ऐसा क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो 'चातुर्वर्ण्यम्' ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य और शूद्र इन चारो वर्णों का होना । यहां स्वार्थ में 'ष्यञ्' नपुंसक में हुआ । स्त्रीलिङ्ग में नहीं होता है ॥ ३९ ॥

सेना, छाया, शाला आदि, **षष्ठ्यन्तप्राक्पदाः सेनाच्छायाशालासुरानिशा ।**

मनुष्यों की सेना, कुत्तों की रात. गायगोठ. **स्याद्वा नृसेनं श्वनिशं गोशालमितर च (दिक्)॥ ४० ॥**

जिनके पूर्वपद षष्ठ्यन्त होते हैं वे सेना-छाया-शाला-सुरा-निशा शब्द तत्पुरुष समास के होजाने पर स्त्रीनपुंसक में रहते हैं । यानी षष्ठ्यन्त से परे सेना आदि शब्द तत्पुरुषके होने पर स्त्रीनपुंसक में होते हैं । जैसे कि नृणां सेना, नृसेना=मनुष्यों की सेना । वृक्षस्य + छाया, वृक्षच्छाया=वृक्षों की छाया । गवां शाला, गोशाला=गौओं का स्थान या गोष्ठ । यवानां सुरा, यवसुरा=जवों की मदिरा ।

---

१ "कटधूमस्य सौरभ्यमवघ्राय व्रजौकसः" (इति भागवतम्) ॥

शुनां निशा, श्वनिशा=कुत्तों की रात । त्रिकल्पपक्ष में " त्रिभाषा सेनासुराच्छाया-शालानिशानाम् " इस सूत्र से नपुंसकता होती है । जैसे कि नृसेनम्=नरों की फ़ौज । वृक्षच्छायम्=वृक्षों की छाया । गोशालम्=गोशाला, यवसुरम्=जौ की मदिरा या शराब । श्वनिशम्=कुत्तों की रात्रि—ये नपुंसक हैं । इसी प्रकार अन्य भी उदाहरण बनालेना चाहिये । जैसे कि " छाया बाहुल्ये " छायान्त तत्पुरुष नपुंसक होताहै । जब कि पूर्वपदार्थ का बाहुल्य हो । जैसे कि ' इक्षूणां छाया, इक्षुच्छायम्=ईखों या गन्नों की छाया । " विभाषासेना— " इस विकल्प का यह अपवाद शास्त्र है " इक्षुच्छायानिषादिन्यः " इस में आङ्का प्रश्लेष जानना चाहिये । यह उदाहरण है ॥ ४० ॥

आबन्नन्तोत्तरपदो द्विगुश्चापुंसि नश्च लुप् ।
त्रिखट्वं च त्रिखट्वी च त्रितक्षं च त्रितक्ष्यपि ॥ ४१ ॥

इति स्त्रीनपुंसकसंग्रहः ।

आबन्त उत्तरपद और अन्नन्त उत्तरपद द्विगुसमास पुंलिङ्ग में नहीं होते हैं । किन्तु स्त्री नपुंसक में होते हैं । अन्नन्त उत्तरपद का जो अन्त्यनकार उसका लुप् यानी लोप भी होजाता है । आबन्तोत्तर पद जैसे कि तिसृणां खट्वानां समाहारस्त्रिखट्वी । यहां " आबन्तोवा " से स्त्रीलिङ्ग की विकल्पता है । पक्षमें 'त्रिखट्वम्' भी होता है । एवं पञ्चखट्वाः समाहृताः, पञ्चखट्वी । पक्ष में ' पञ्चखट्वम् ' नपुंसक भी होता है । अन्नन्तोत्तरपद जैसे कि, त्रयाणां तक्ष्णां समाहारस्त्रितक्षी । यहां "अनोनलोपश्च" से नलोप और " द्विगोः " से ङीप् हुआ । पक्ष में ' त्रितक्षम् ' नपुंसक भी हुआ । एवं पञ्चतक्षाणः समाहृताः, पञ्चतक्षी । पक्ष में पञ्चतक्षम नपुंसक भी हुआ ॥ ४१ ॥

इति स्त्रीनपुंसकसंग्रहविवरणम् ॥

अथ त्रिलिङ्गशेषोऽव्याख्यायते ॥

पात्र, दोना, बाटी, पेटारा, कमल या बेरफल, अनार.

" त्रिषु " पात्री पुटी वाटी पेटी कुवलदाडिमौ ।

इति त्रिलिङ्गशेषः ॥

अब " त्रिषु " इसका अधिकार किया जाता है—पात्र आदि ' दाडिम ' पर्यन्त शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं । जैसे कि पात्रः, पात्री, पात्रम् " पात्रं तु कूलयोर्मध्ये पर्णे नृपतिमन्त्रिणि । योग्यभाजनयोर्यज्ञभाण्डे नाट्यानुकर्तरि " (इति हैमः). दोनों किनारों का मध्यभाग, पत्ता, राजमन्त्री, योग्य, भाजन=(आबखोरा आदि) यज्ञपात्र और नाट्यका अनुकर्ता । पुटः, पुटी, पुटम्=मिट्टी का बना डब्बा, औषध बनाने का पात्रभेद, दूध आदि के पीने का पात्र या दोना आदि । वाटः, वाटी-

वाटम्=रास्ता या मार्ग "वाटः पथिवृतौ वाटं वरण्डे गात्रभेदयोः । वाटी गृहोद्यानकट्योः" (इति हैमः) । पेटः, पेटी, पेटम्=पेटारा या पेटारी । कुवलः–कुवली–कुवलम्=कमल, मोती, बेरफल "कुवलं चोत्पले मुक्ताफलेऽपि बदरीफले" (इति मेदिनी) । दाडिमः, दाडिमी, दाडिमम्=अनार या दाडिमवृक्ष । उसीसे "वियोगिनीमैक्षत दाडिमीमसौ" यह नैषधकाव्य का प्रयोग भी संगत होता है ॥

इति त्रिलिङ्गशेषविवरणम् ॥

द्वन्द्वसमास, तत्पुरुषसमास. **परलिङ्गं स्वप्रधाने द्वन्द्वे, तत्पुरुषेऽपि (तत्) ॥ ४२ ॥**

जहां समस्यमानपदार्थ प्रधान होते हैं उस इतरेतरयोग द्वन्द्वसमास में जो परपदस्थ लिङ्ग रहता है वही होता है । यानी उभयपदप्रधान इतरेतराख्यद्वन्द्वसमास में जो परपद में टिका हुआ लिङ्ग है वही होता है । द्वन्द्वसमास में जैसे कि, कुक्कुटश्च मयूरी च कुक्कुटमयूर्यौ । यहां परपदस्थ मयूरी स्त्रीलिङ्ग है वही लिङ्ग हुआ । मयूरी च कुक्कुटश्च, मयूरीकुक्कुटौ यहां परपदस्थ कुक्कुट पुंलिङ्ग है वही हुआ । वह परलिङ्गता तत्पुरुषसमास में भी होती है । जैसे कि कुलस्य ब्राह्मणः, कुलब्राह्मणः=कुलका ब्राह्मण । यहां परपदस्थ ब्राह्मण पुंलिङ्ग है वही हुआ । ब्राह्मणस्य कुलम्, ब्राह्मणकुलम्=ब्राह्मण का कुल । यहां परपदस्थ कुल नपुंसक है वही हुआ । अर्धं पिप्पल्याः, अर्धपिप्पली=आधा पीपल का । यहां "अर्धं नपुंसकम्" से समास होजाने पर परपदस्थ पिप्पली स्त्रीलिङ्ग है वही हुआ । "क्लीबे किम्" क्लीब क्यों कहा ? यदि न कहोगे तो ग्रामस्य अर्धः, ग्रामार्धः=गांव का आधा । यहां दोष आजावेगा इस लिये कहा है ॥ ४२ ॥

अस्यापवादमाह—

अर्थान्ताः प्राद्यलंप्राप्तापन्नपूर्वाः परोपगाः ।
तद्धितार्थे द्विगुः संख्यासर्वनामतदन्तकाः ॥ ४३ ॥

"अब परवल्लिङ्गता का अपवाद कहते हैं"–कि, जिनके अन्त में अर्थ शब्द हो और जिनके पूर्व प्रादि–अलम्–प्राप्त व आपन्न शब्द हों वे विशेष्यलिङ्ग यानी वाच्यलिङ्ग होते हैं । अर्थान्त जैसे द्विजाय + अयम्, द्विजार्थः सूपः=यह दाल ब्राह्मण के लिये है । द्विजाय + इयम् द्विजार्था यवागूः । यह लप्सी द्विज के लिये है । द्विजाय + इदम्, द्विजार्थं पयः=यह दूध द्विज के लिये है । एवं विप्रार्थो वेदः=यह वेद विप्रके लिये है । विप्रार्था माला=यह माला विप्रके लिये है । विप्रार्थं वस्त्रम्=यह कपड़ा विप्र के लिये है । यहां "अर्थेन नित्यसमासो विशेष्यलिङ्गताचेति वक्तव्यम्" इस वार्तिक से नित्यसमास और वाच्यलिङ्गता जाननी चाहिये । प्रगतः आचार्यः,

प्राचार्यः=प्रगत जो आचार्य उसे 'प्राचार्यः' कहते हैं । यहां "प्रादयोगताद्यर्थे प्रथमया" से समास हुआ । खट्वामतिक्रान्तोऽतिखट्वः=जो खाटको नांघगया है उसे 'अतिखट्वः' कहते हैं । यहां "अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया" से समास हुआ । एवम् 'अतिक्रान्तो मालामतिमालोहारः, अतिमाला इयम्, अतिमालमिदम् । यहां पूर्ववत्समास हुआ । अवकुष्टः कोकिलया, अवकोकिलः=जो कोकिला से अवक्रुष्ट (बिराया या चिढ़ाया गया) है, उसे 'अवकोकिलः' कहते हैं । यहां "अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया" से समास हुआ । अलं कुमार्यै, अलंकुमारिरयम्=यह कुमारी के लिये समर्थ है । अलं कुमारिरियम्=यह रमणी कुमारी के लिये समर्थ है, अलं कुमारि इदम्=यह कुल कुमारी के लिये समर्थ है । अलंजीविकायै, अलंजीविकः=जो जीविकाके लिये समर्थ है उसे 'अलंजीविकः' कहते हैं । अलंजीविका स्त्री, अलंजीविकमिदम् । प्राप्तो जीविकाम्, प्राप्तजीविको द्विजः=जो द्विज जीविकाको पा चुका है उसे 'प्राप्तजीविकः' स्त्री को प्राप्तजीविका, कुल को प्राप्तजीविकम् कहते हैं। एवम् आपन्नजीविको विप्रः, आपन्नजीविका विप्रा, आपन्नजीविकं कुलम् । यहां "द्विगुप्राप्तापन्नालंपूर्वगतिसमासेषु प्रतिषेधो वाच्यः" से परलिङ्गताका प्रतिषेध और इस ज्ञापक सेही समास भी हुआ । तद्धितार्थ में जो द्विगुसमास वह वाच्यलिङ्ग होता है । जैसे कि पांच कपालो में भलीभांति सुधारा हुआ जो पुरोडाश (हविविशेष) उसे 'पञ्चकपालः' स्त्रीलिङ्ग में 'पञ्चकपाला' और नपुंसक में 'पञ्चकपालम्' कहते हैं । यहां "संख्यापूर्वो द्विगुः" से द्विगुसमास "संस्कृतं भक्षाः" से 'अण्' "द्विगोर्लुगनपत्ये" से 'अण्' का 'लुक्' हुआ । संख्या, सर्वनाम और संख्यासर्वनामान्त शब्द वाच्यलिङ्ग होते हैं । संख्या में जैसे कि, एकः पुमान्=एक पुरुष । एका स्त्री=एक स्त्री । एकं कुलम्=एक कुल । द्वौ पुमांसौ=दो पुरुष । द्वे स्त्रियौ, द्वे कुले=दो स्त्रियां या दो कुल । त्रयःपुरुषाः=तीन पुरुष । तिस्रः स्त्रियः=तीन स्त्रियां । त्रीणि कुलानि=तीन कुल । एवं चत्वारो ब्राह्मणाः=इसी प्रकार चार ब्राह्मण । चतस्रो ब्राह्मण्यः=चार ब्राह्मणियां । चत्वारि वस्त्राणि=चार कपड़े । बहवो जनाः=बहुतसे जन । बह्वयो रमण्यः=बहुतसी रमणियाँ । बहूनि धनानि=बहुतसे धन । सर्वनाम जैसे कि, सर्वोदेशः=सारादेश या मुल्क । सर्वा नदी=सारी नदी । सर्वं जलम्=सारा जल । परः पुमान्=उत्तम पुरुष । परा स्त्री=उत्तमा स्त्री । परं कुलम्=उत्तमकुल । संख्यान्तक जैसे कि, ऊनत्रयः जिसमें तीन कम हों । ऊनतिस्रः=जिसमें तीन न्यून हों । ऊनत्रीणि=जिसमें तीन विहीन हों । सर्वनामान्तक जैसे कि परमसर्वः=उत्तमसारा । परमसर्वा=उत्तमसारी । परमंसर्वम्=परम सर्व आदि जानना चाहिये ॥ ४३ ॥

बहुव्रीहि समास, **बहुव्रीहिरदिङ्नाम्नामुन्नेयं (तदुदाहृतम्) ।**

गुण-द्रव्यादि. **गुणद्रव्यक्रियायोगोपाधयः (परगामिनः) ॥ ४४ ॥**

दिशावाचक शब्द से भिन्ननामवालों का बहुव्रीहिसमास वाच्यलिङ्ग होता है। इसके उदाहरण आपसेही विचारना चाहिये। जैसे कि बहुधनं यस्येति बहुधनः= जिसके बहुतसा धन होता है उसे 'बहुधनः' और बहुधनं यस्याः सा बहुधना= बहुतसा धन है जिस स्त्री के उसे बहुधना, कहते हैं, एवं बहुधनं यस्मिँस्तद्बहुधनं गृहम्= जिस घरमें बहुतसा धन होता है उसे 'बहुधनम्' कहते हैं। 'अदिङ्नाम्नाम्' ऐसा क्यों कहा? यदि न कहोगे तो 'उत्तरस्याः पूर्वस्याश्च दिशोरन्तरालं=उत्तर और पूर्वदिशा की जो अन्तराल (बीचकी दिशा) वह 'उत्तरपूर्वा' कहलाती है। यहां "दिङ्नामान्यन्तराले" से बहुव्रीहि समास हुआ। जिनका गुण—द्रव्य—क्रियाओं के योग में उपाधि 'निमित्त' होता है वे वाच्यलिङ्ग होते हैं। जैसे कि, शुक्लः पटः=सफ़ेद कपड़ा। शुक्ला शाटी=सफ़ेद साड़ी। शुक्लं वस्त्रम्=सफ़ेद वस्त्र। दण्डी=दण्डवाला। दण्डिनी=दण्डवाली। दण्डि गृहम्=दण्डवाला घर। पाचकः= पकानेवाला। पाचिका=पकानेवाली। पाचकम्=पकानेवाला घर आदि जानना चाहिये॥ ४४॥

कृत्प्रत्ययान्त, "**कृतः कर्त्रर्यसंज्ञायां" कृत्याः (कर्तरि कर्मणि)।**
कृत्य प्रत्ययान्त,
अणाद्यन्त. **अणाद्यन्ता (स्तेनरक्षाद्यर्थे) नानार्थभेदकाः॥ ४५॥**

असंज्ञा के विषे कर्ता अर्थ में "कर्तरि-कृत्" इत्यादि से विहित कृत्संज्ञक प्रत्यय तदन्त शब्द वाच्यलिङ्ग होते हैं। जैसे कि करोतीति, कर्ता पुमान्=करनेवाला पुरुष। कर्त्री माया=करनेवाली माया। कर्तृ=कलत्रम्=करनेवाला कलत्र (भार्या)। कुम्भकारः=कुम्हार, कुम्भकारी=कुम्हारिन, कुम्भकारं कुलम्=घड़ा का बनानेवाला कुल। 'असंज्ञायाम्' ऐसा क्यों कहा? यदि न कहोगे तो "संज्ञायां भृतृ—" इत्यादि से विहित वाच्यलिङ्ग नहीं होते हैं। जैसे कि विश्वम्भरः=परमेश्वर—इन्द्र, विश्वंभरा भूमिः=विश्वकी भरनेवाली पृथ्वी। यहां दोष आवेगा इस लिये किया है। कर्ता और कर्म में विधान किये हुए कृत्यप्रत्यय तदन्त शब्द वाच्यलिङ्ग होते हैं कर्ता में जैसे कि "भव्यस्तरुः" होनहारवृक्ष। भव्या वराङ्गना=होनहार श्रेष्ठ अंग वाली स्त्री है। भव्यं कलेवरम्=शरीर होनहार या योग्य है। एवं "वसेस्तव्यत्कर्तरि णिच्च" से कर्ता में णित् 'तव्यत्' करने पर वास्तव्योऽयम्=यह बसनेवाला, वास्तव्या सा=वह बसनेवाली, वास्तव्यं तत्=वह बसनेवाला। कर्म में जैसे कि कार्यो घटः= कुम्हार को घड़ा बनाना चाहिये। कार्या सृष्टिः=परमेश्वर को सृष्टि बनाना चाहिये। जगत् कार्यम्=ब्रह्मको जगत् करना चाहिये 'कर्तरीत्यादिकिम्' 'कर्तरि' आदि क्यों किया? "एधितव्यम्—एधनीयम् त्वया" तुमको बढ़ना चाहिये। यहां भाव में एकवचन व नपुंसकलिङ्ग हुआ। असंज्ञामें ही ऐसा होता है इस लिये। भिद्यः नदः=तीरका तोड़नेवाला नद, उज्झत्युदकमिति उद्ध्यः=जलका उछालनेवाला नद

यहां " भित्तोद्धयौ नदे " से क्यप् हुआ और संज्ञा होनेसे ये दोनों वाच्यलिङ्ग नहीं होते हैं । " तेन रक्तं रागात् " इत्यादि अर्थ में विहित अणादितद्धित प्रत्ययान्त वाच्यलिङ्ग होते हैं । जैसे कि " कुङ्कुमेन रक्तः, कौङ्कुमः पटः=कुंकुम से रंगा कपड़ा, कौङ्कुमी शाटी=कुंकुम से रंगी साड़ी । कौङ्कुमं वस्त्रम्=कुंकुम से रंगा वस्त्र । यहां " तेन रक्तं रागात् " से ' अण् ' हुआ । लाक्षिकः पटः=लाखसे रंगा कपड़ा । लाक्षिकी शाटी=लाखसे रंगी साड़ी । लाक्षिकं वस्त्रम्=लाखसे रंगा वस्त्र । यहां " लाक्षारोचनाट्ठक् " से ' ठक् ' हुआ कृत्तिकाभिर्युक्ता, कार्त्तिकी=कृत्तिकासे युक्त राति या पौर्णमासी को ' कार्त्तिकी ' कहते हैं । यहां " नक्षत्रेण युक्तः कालः " से ' अण् ' और " टिड्ढेति " से ङीप् हुआ । वसिष्ठेन दृष्टं, वासिष्ठं साम=वसिष्ठ से देखे हुए सामको ' वासिष्ठं ' कहते हैं । यहां " दृष्टंसाम " से ' अण् ' हुआ । वासिष्ठो मन्त्रः=वसिष्ठ से देखा हुआ मन्त्र ' वासिष्ठः ' कहलाता है । वासिष्ठी ऋक्=वसिष्ठ से देखी हुई ऋचा वासिष्ठी कहलाती है । प्रजापतिना प्रोक्तः प्राजापत्यः=प्रजापति से कहा हुआ ' प्राजापत्यः ' कहलाता है । यहां " तेन प्रोक्तम् " से ' ण्य ' हुआ । " अणाद्यन्ताः " इस आदि पद से ग्रामे भवो, ग्राम्यः=गमेला पुरुष, ग्राम्या स्त्री=गमेली लुगाई । ग्राम्यं वस्त्रम्=गमेला वस्त्र । यहां " ग्रामाद्यखञौ " से ' य ' प्रत्यय हुआ । " रक्ताद्यर्थे " इस आदि शब्द से मथुराया आगतो माथुरः=मथुरा से आया हुआ पुरुष ' माथुरः ' कहलाता है । यहां " तत आगतः " से ' अण् ' हुआ । स्त्रीलिङ्ग में " टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः " से ङीप्, " यस्येति च " से आलोप करने पर " माथुरी " मथुरा से आई हुई लुगाई । आदि प्रयोग जानना चाहिये ॥ ४५ ॥

षट्संज्ञका " त्रिषु " समा युष्मदस्मत्तिङव्ययम् ।
परं विरोधे, शेषं (तु) ज्ञेयं " शिष्टप्रयोगतः " ॥ ४६ ॥

इति लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ॥

षान्त, नान्त और डति प्रत्ययान्त संख्यावाची तथा युष्मद्, अस्मद्, तिङन्त और अव्ययवाचक शब्द ये तीनों लिङ्गों में समान यानी तुल्य होते हैं । इनकी अलिङ्गता से समानता (तुल्यता) होती है, ऐसा जानना चाहिये । जैसे कि–षट् नराः=छह नर । षट् स्त्रियः=छह स्त्रियाँ । षट् कुलानि=छह कुल । पञ्च नराः=पांच नर । पञ्च नार्यः=पाँच लुगाइयां । पञ्च फलानि=पांच फल । कति घटाः=कितने घड़े । कति स्त्रियः=कितनी स्त्रियां । कति गृहाणि=कितने घर । त्वं पुरुषो देवः=तुम पुरुष देव हो । त्वं स्त्री देवी=तुम स्त्री देवी हो । त्वं फलं ब्रह्म=तुम्हीं फलरूप ब्रह्म हो ।

१ मथ्यन्ते रिपवो यस्यांसा मथुरा "मथुरा भगवान्यत्र नित्यं संनिहितो हरिः" (इति भागवतम्) ॥
२ " पत्न्यः कत्यभवन्प्रभोः " (इति भागवतम्) ॥

14190

ऐसेही अहं पुरुषः=हम पुरुष हैं । अहं स्त्री=हम स्त्री हैं । अहं ब्रह्म-फलं वा=हम ब्रह्म या फल हैं । पुरुषः पचति=पुरुष पकाता है । स्त्री पचति=स्त्री पकाती है । कुलं पचति=कुल पकाता है । उच्चैः प्रासादः=ऊँचा देवमन्दिर या राजमहल है । उच्चैः शाला=ऊंची शाला है । उच्चैर्गृहम्=ऊँचा घर है । जब लिङ्गविधायक वचन का विरोध होताहै तब परवचन का ग्रहण किया जाता है । जैसे कि " स्त्रियामीदूद्विरामैकाच् " इसका अवकाश धीः=बुद्धि । भ्रूः=भौंह आदि शब्दों में है । "कृतः कर्तर्यसंज्ञायाम्" इसका अवकाश कर्ता=करनेवाला पाचकः=पकानेवाला आदि शब्दों में है और नयतीति नीः=लेजानेवाला या पहुँचानेवाला । लुनातीति लूः=काटनेवाला इत्यादिकों में दोनों का प्रसङ्ग प्राप्त हुआ इस लिये परत्व से त्रिलिङ्गता होती है । और जो यहां नहीं कहा गया है वह " शिष्टप्रयोगतः " महाकवि या भाष्यकार आदि के प्रयोगों से जानना चाहिये अथवा अनुक्त शब्दों का लिङ्ग शिष्टों के प्रयोगसे जानना चाहिये । लिङ्गविधायक शास्त्रही नहीं कर्तव्य है क्योंकि "लिङ्गमशिष्यं लोकाश्रयत्वा-ल्लिङ्गस्य " लिङ्ग लोकही से जाना जाता है, यह भाष्यकार का संमत है । जैसे कि यहां " चालनी तितउः पुमान् " ' तितउः ' शब्द पुंलिङ्ग में कहा गया है । परं च " तितउ परिवपनं भवति " इस (पस्पशा) भाष्य के प्रयोगसे नपुंसकलिङ्ग भी जानना चाहिये । ऐसेही " ताटङ्कस्ते " इस आचार्य के प्रयोगसे ताटङ्कः=कर्णाभूषण में पुंलिङ्ग है । अथवा " कलिका कोरकः पुमान् " इस उक्त ग्रन्थ में ' कोरकः ' पुंलिङ्ग में कहा गया है । परन्तु " कोरकाणि " इस माघकाव्य के प्रयोग से नपुंसकलिङ्ग भी पण्डितों को जानलेना चाहिये ॥ ४६ ॥

इति लिङ्गादिसंग्रहवर्गविवरणम् ॥

अथोक्तस्यैवोपसंहारमाह—

इत्यमरसिंहकृतौ, नामलिङ्गानुशासने ।
सामान्यकाण्डस्तृतीयः, साङ्ग एव समर्थितः ॥ ४७ ॥

इस प्रकार अमरसिंह के बनाये हुए नाम व लिङ्ग के व्युत्पादक शास्त्र में तीसरा सामान्यकाण्ड अङ्गोपाङ्ग समेतही कहा गया अथवा अमरसिंह के बनाये हुए नाम व लिङ्ग के प्रतिपादक शास्त्र में प्रस्ताव या वर्गसमूह अङ्गों के समेतही कहा हुआ तीसरा सामान्यकाण्ड यानी सामान्यनामक तीसरा काण्ड संपूर्णता को प्राप्त हुआ ॥ ४७ ॥

दो० । अमरसिंहकृत कोषमहँ, काण्डत्रय सु बखान ।
तृतयकाण्ड वर्णन कर्यो, द्विजवर शक्ति सुजान ॥

अथ व्याख्याकृद्वंशवर्णनमाह—

श्रीमत्प्राङ्नरायणेन प्रभुणा स्वाज्ञापितः सादरं
नाम्ना शक्तिधरः सदाशिवपदद्वन्द्वेरतो नित्यशः ।
चक्रे चामरके प्रशस्तविवृतिं विद्वज्जनानां मुदे
नानाकोषयुतां विशुद्धिसहितां सद्भाषयालंकृताम् ॥ १ ॥
शाके शैलगुणाष्टभूपरिमिते वर्षे द्विगोत्राङ्कको
पौषे मास्यसिते हरीशतिथिके श्रीभास्करे वासरे ।
सर्वेषां सुखबोधनाय रचिता व्याख्या रसाला मया
तां नित्यं प्रविलोकयन्तु सुधियो हृष्यन्तु स्वान्ते स्वके ॥ २ ॥
पुरे मुरादाबादाख्ये शुक्लवंशोद्भवः सुधीः ।
आसीद्दुर्गाप्रसादाख्यो बलभद्रस्तु तत्सुतः ॥ ३ ॥
तस्यात्मजः शक्तिधरः शिवपादार्चने रतः ।
कृतवान्सर्वतोषाय विस्पष्टार्थप्रबोधिनीम् ॥ ४ ॥

इति श्रीमदमरसिंहविरचिते अमरकोषे आनरेबुलश्रीमद्रायबहादुरभार्गवप्रयागनारायणाज्ञया द्विजवरशक्तिधरसंकलितायां रसालाख्यायां व्याख्यायां तृतीयः काण्डः समाप्तिमगादिति शम् ॥ ३ ॥

समाप्तश्चायं ग्रन्थः ॥